Hindi-I

DHIN101

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY

हिन्दी – 1

Copyright © 2012 Laxmi Publications (P) Ltd.
All rights reserved

Produced & Printed by
LAXMI PUBLICATIONS (P) LTD.
113, Golden House, Daryaganj,
New Delhi-110002
for
Lovely Professional University
Phagwara

पाठ्यक्रम

(SYLLABUS)

हिन्दी – 1

उद्देश्य

- छात्रों में भाषायी कौशलों का विकास करना।
- छात्रों में रचनात्मक विवेक का विकास करना।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित शासकीय पत्रों के प्रारूप का ज्ञान देना।
- छात्रों को उपन्यासकार के कृतित्व से परिचित कराना।
- छात्रों को हिन्दी भाषा के व्यावहारिक पक्ष से अवगत कराना।
- छात्रों को हिन्दी भाषा की गरिमा एवं प्रभावोत्पादकता से परिचित कराना।

Sr. No.	Content
1	कबीरवाणी - केवल साखी भाग (1 से 35 तक) संदर्भ सहित व्याख्या।
2	जीवन परिचय एवं काव्यगत विशेषताएँ।
3	कबीरवाणी - भाषा शैली, कबीरवाणी - समीक्षा।
4	मेरा परिवार - (रेखाचित्र संग्रह) : प्रसंग सहित व्याख्या। महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय।
5	मेरा परिवार - कथावस्तु। पात्र एवं चरित्र-चित्रण। मुख्य उद्देश्य।
6	भाषा का अर्थ एवं परिभाषा। भाषा के आधार एवं प्रकृति।
7	वर्ण विचार - हिन्दी स्वर और व्यंजन ध्वनियों का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण। शब्द विचार - शब्दों का वर्गीकरण। मुहावर लोकोक्तियाँ - अर्थ एवं वाक्य निर्माण।
8	समानार्थक शब्द। विपरीतार्थक शब्द। पर्यायवाची शब्द।
9	अपठित गद्यांश। अनुवाद - अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी।
10	निजी पत्र-लेखन। पारिभाषिक शब्दावली - जन संचार माध्यम सम्बन्धी शब्द - कार्यालय तथा बैंक सम्बन्धी - शिक्षा सभा और सम्मेलन सम्बन्धी - पदनाम सम्बन्धी।

विषय-सूची

इकाई (Units) **(CONTENTS)** **पृष्ठ संख्या (Page No.)**

1.	कबीर वाणी	1
2.	कबीर : जीवन परिचय एवं काव्यगत विशेषताएँ	17
3.	कबीर वाणी : भाषा–शैली	53
4.	कबीर वाणी : समीक्षा	66
5.	मेरा परिवार (रेखाचित्र संग्रह) : सभी पाठों की प्रसंग सहित व्याख्या	73
6.	मेरा परिवार : महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय	106
7.	मेरा परिवार : कथावस्तु	116
8.	मेरा परिवार : पात्र एवं चरित्र–चित्रण	128
9.	मेरा परिवार : मुख्य उद्देश्य	155
10.	भाषा का अर्थ एवं परिभाषा	163
11.	भाषा के आधार एवं प्रकृति	170
12.	वर्ण विचार : हिन्दी स्वर और व्यंजन ध्वनियों का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण	181
13.	शब्द विचार : शब्दों का वर्गीकरण	187
14.	मुहावरे : अर्थ एवं वाक्य निर्माण	204
15.	लोकोक्तियाँ : अर्थ एवं वाक्य निर्माण	223
16.	समानार्थक शब्द	235
17.	विपरीतार्थक या विलोमार्थक शब्द	247
18.	पर्यायवाची शब्द	268
19.	अपठित गद्यांश	295
20.	अनुवाद : अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी	309
21.	निजी पत्र–लेखन	334
22.	पारिभाषिक शब्दावली	347

नोट

इकाई–1: कबीर वाणी

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

1.1 कबीर वाणी का महत्त्व

1.1.1 केवल साखी भाग (1 से 20 तक) संदर्भ सहित व्याख्या

1.1.2 केवल साखी भाग (21 से 35 तक) संदर्भ सहित व्याख्या

1.2 सारांश (Summary)

1.3 शब्दकोश (Keywords)

1.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- कबीर की वाणी का अध्ययन करने हेतु।
- कबीर वाणी पर विचार करने में।
- कबीर की वाणी के संबंध में भाषाविदों के मत जानने हेतु।
- कबीर वाणी का तर्कयुक्त प्रयोग करने में।

प्रस्तावना (Introduction)

कबीर वाणी का स्वरूप विविधताओं से युक्त था। उसको किसी ने भोजपुरी, किसी ने अवधी, किसी ने साधुक्कड़ी, किसी ने राजस्थानी भाषाओं के पुट से युक्त ब्रजभाषा बताया है। कबीर भाषा पूरब की अधिक हो सकती है क्योंकि उनका सम्पूर्ण जीवन शिवपुरी काशी में व्यतीत हुआ। मुख्य रूप से हमें पूर्वी हिन्दी (अवधी) व्याकरण के रूप ही मिलते हैं। कहीं-कहीं खड़ी बोली, पंजाबी और ब्रज का भी रूप दिखाई देता है। कबीर की मूल भाषा का बहुत-सा अंश उनकी मातृभाषा बनारसी में लिखा गया था किन्तु उनके पदों का पछांह की साहित्यिक भाषाओं में रूपांतरण कर दिया गया। कबीर ग्रन्थावली भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन डॉ. महेन्द्र ने डॉ. पारसनाथ तिवारी द्वारा यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है–संज्ञा, परसर्ग, सर्वनाम, क्रिया और अव्ययों में अवधी, बज्र तथा खड़ी बोली–इन तीनों के रूपों का अत्यधिक मिश्रण है। कबीर को भाषा पर पूर्ण अधिकार था कबीर की भाषा सर्वत्र ही उनके भावों को वहन करने में सर्वथा सक्षम एवं पूर्णतया समर्थ है। कबीर ने गम्भीर से गम्भीर विषय का विवेचन सरल भाषा में किया है।

नोट

1.1 कबीर वाणी का महत्त्व

1.1.1 केवल साखी भाग (1 से 20 तक) संदर्भ सहित व्याख्या

1. राम नाम के पटतरै, देबे कौं कछु नाँहि।
क्या ले गुरु संतोषिए, हौंस रही मन माँहि॥1॥

शब्दार्थ–पटतरै = बदले में, प्रतिदान में। हौंस = इच्छा।

संदर्भ–प्रस्तुत पद में कबीर ने यह भाव व्यक्त किया है कि राम-नाम का गुरु मंत्र प्रदान करने वाले गुरु के ऋण से उऋण नहीं हुआ जा सकता।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मेरे गुरु ने राम-नाम के गुरु-मंत्र के रूप में मुझे जो अनमोल हीरा प्रदान किया है, उसके प्रतिदान में मैं उन्हें क्या वस्तु प्रदान करके संतुष्ट करूं? मेरी यह इच्छा, इच्छा मात्र ही रह गयी है। भाव यह है कि इस गुरु-मन्त्र के उपयुक्त गुरु-दक्षिणा चुकाने के लिए मुझे कोई ऐसा उचित पदार्थ ही नहीं दिखाई देता, जिसे मैं आज स्व-गुरु को सौंप कर अपनी इच्छा-पूर्ति कर सकूं–उस गुरु-मन्त्र का मूल्य ही नहीं आंका जा सकता।

(*i*) **विशेष**–शिष्य की गुरु के प्रति श्रद्धा-भाव की इन पंक्तियों में बड़ी ही मार्मिक व्यंजना हुई।

(*ii*) **अलंकार** = छेकानुप्रास।

2. सतगुरु सवां न को सगा, सोधी सई न दाति।
हरिजी सवां न हो हितू, हरिजन सई न जाति॥2॥

शब्दार्थ–सवां = समान। सगा = सम्बन्धी, अपना। सोधी = तत्वशोधक सई = समान। दाति = दाता। हितू = उपकारी।

सन्दर्भ–इस दोहे में कबीर ने सद्गुरु; तत्वशोधक, हरि तथा हरिभक्तों की महत्ता पर प्रकाश डाला है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मेरे लिए इस संसार में सद्गुरु के समान कोई भी निकट सम्बन्धी नहीं है, तत्व-शोधकों की भाँति कोई भी अन्य दाता नहीं है, ईश्वर के समान कोई अन्य हितकारी नहीं है, तथा हरिभक्तों की जमात से बढ़कर और कोई जाति नहीं है। भाव यह है कि सद्गुरु द्वारा ईश्वर से साक्षात्कार कराने, तत्वशोधक द्वारा मर्म की बातें बताने, ईश्वर द्वारा मोक्ष प्रदान करने तथा हरि-भक्तों द्वारा ईश्वर-प्रेम जाग्रत् करने के कारण, इनकी समता में कोई भी सम्बन्धी, दाता, हितैषी या जाति (ब्राह्मण आदि) नहीं ठहरते।

अलंकार–उपमान, लुप्तोपमा, वृत्यनुप्रास।

3. चौंसठि दीवा जोइ करि चौदह चंदा माँहि।
तिहि घर किसकौं, चाँदनौं, जिहि घर सतगुरु नाँहि॥3॥

शब्दार्थ–दीवा = दीपक। जोई करि = जलाकर। चौदह चन्दा = दूज से लेकर पूर्णमासी तक के चन्द्रमा। तिहि = उसके।

संदर्भ–सन्दर्भगत साखी में कबीर ने सद्गुरु की महत्ता का प्रतिपादन किया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि जिस व्यक्ति के घर में सद्गुरु के सदुपदेश-रूपी दीपक का प्रकाश नहीं है उसके गृह में अन्धकार ही छाया रहता है, चाहे उसके घर में चौंसठ विद्याओं-रूपी चौंसठ दीपकों तथा चौदहों चन्द्रमाओं का प्रकाश क्यों न कर दिया जाए। यह है कि चौंसठ विद्या या कलाओं में पारंगत होते हुए भी प्राणी का अंधकार दूर नहीं होता जो किसी सद्गुरु से उपदेश ग्रहण नहीं करता।

विशेष–(*i*) सद्‌गुरु की महत्ता बताते हुए कबीर ने अन्यत्र भी कहा है–

"पीछैं लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।
आगै थैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि॥

(*ii*) **अलंकार**–रूपकातिशयोक्ति, रूपक से व्यक्तिरेक अलंकार ध्वनित है।

4. सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपगार।
लोचन अनन्त उघाडिया, अनन्त दिखावणहार॥4॥

शब्दार्थ–उपगार = भलाई। अनन्त = ईश्वर। दिखावणहार = दिखाने वाला।

संदर्भ–सद्‌गुरु की असीम महिमा का बखान किया गया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मेरे सद्‌गुरु की महत्ता अपार-असीम अर्थात अवर्णनीय है। उन्होंने मेरे ऊपर जो उपकार किए हैं वे भी असीम हैं। उन्होंने मेरे नेत्रों से अज्ञान और भ्रम के पर्दों को हटाकर मुझे उस अनन्त-असीम परम सत्ता के दर्शन करा दिए हैं, जिसके दर्शन कड़ी-से-कड़ी साधना करने पर भी नहीं हो पाते।

विशेष–(*i*) कबीर ने अन्यत्र सद्‌गुरु को ईश्वर से भी बढ़कर बताया है। प्रस्तुत साखी का भाव भी उसी प्रकार का है। सद्‌गुरु ही जीव के अज्ञानांधकार को मिटाकर उसका ईश्वर से साक्षात्कार कराता है, अत: उसकी महिमा का बखान नहीं किया जा सकता।

(*ii*) **अलंकार**–अनन्त शब्द का भिन्नार्थ प्रयोग होने से यमक।

5. सतगुरु के सदकैं करूं, दिल अपणीं का साँच (सांछ)।
कलियुग हम स्यूं लड़ि पड्या, मुहकम मेरा बाँच (बाँछ)॥5॥

शब्दार्थ–सदकैं करूं = वार-वार चरणों में गिरता हूँ, बलिहारी जाता हूँ मुहकम = मुस्तैद, दृढ़, पक्का, चढ़ाई।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने सदगुरु की महत्ता पर यह भाव व्यक्त करते हुए प्रकाश डाला है कि उन्हीं की कृपा के कारण मैं कलियुग के विकारों से लड़ सका हूँ।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मैं अपने हृदय को साक्षी करके स्वयं को अब-गुरु के चरणों पर न्यौछावार करना चाहता हूँ, क्योंकि जब कलियुग से विकारों ने मुझ पर चढ़ाई (मुहिम) की थी तो मेरा मुहरा (मोर्चा) सद्‌गुरु की अनुकम्पा के कारण ही सुरक्षित बचा था–अर्थात् मैंने उन्हीं के प्रताप से कलि-विकारों (माया-मोह आदि) का सामना किया है।

अलंकार–वृत्यनुप्रास।

> *नोट्स* कबीर वाणी का स्वरूप विविधताओं से युक्त था।

6. सतगुरु हमसूं रीझि करि एक कह्या परसंग।
वरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग॥6॥

शब्दार्थ–रीझि करि = प्रसन्न होकर। परसंग = प्रसंग।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने सद्‌गुरु की कृपा से ईश्वर-प्रेम की वर्षा होने और उसमें अपने अंगों के सराबोर हो जाने का वर्णन किया है।

नोट

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मुझसे सद्‌गुरु ने प्रसन्न होकर और अनुकम्पा करते हुए मुझे ईश्वर प्रेम सम्बन्धी रसमयी वार्ता सुनाई। उन्होंने ईश्वर प्रेम सम्बन्धी जो ज्ञानोपदेश प्रदान किया, उससे मुझ पर ईश्वर प्रेम रूपी जल की-सी वर्षा हुई कि उसमें मेरे अंग-प्रत्यंग भीग गये अर्थात् मेरा तन-मन ईश्वर प्रेम से सराबोर हो गया।

विशेष–(*i*) कबीर ने इन पंक्तियों में इस तथ्य का उद्‌घाटन किया है मेरे हृदय में जो ईश्वर विषयक दृढ़ प्रेम-भाव है, यह सद्‌गुरु के ज्ञानोपदेश का प्रतिफलन हैं।

(*ii*) **अलंकार–**रूपक, छेकानुप्रास।

7. चकई बिछुरि रैंणि की आइ मिलै परभाति।
जे जन विछरे राँम सौं, ते दिन मिलें न रातिं॥7॥

शब्दार्थ–रैंण = रात्रि। परभाति = प्रभात। जे = जो। चकई = चकवी चकवाक पक्षी।

संदर्भ–कवि ने इस साखी में जीवात्माओं की ईश्वर से बिछुड़ने की विरह व्यथा का मार्मिक अंकन किया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि यदि चकवी अपने प्रियतम से रात्री आगमन पर बिछुड़ जाती है तो उसका स्व-प्राणेश्वर से प्रभात होते ही पुनर्मिलन हो जाता है। इसके सर्वथा विपरीत बेचारी जीवात्माओं की इतनी दयनीय दशा है कि वे राम से बिछुड़कर उनसे न तो दिन के समय मिल पाती हैं और न रात्रि के समय ही मिल पाती हैं। भाव यह कि उन्हें ईश्वर के अखंड वियोग की दुस्सह व्यथा सहन करनी पड़ती है।

विशेष– ऐसी कवि-प्रसिद्धि है कि चकवा और चकवी एक-दूसरे से रात्रि होते ही बिछुड़ जाते हैं और नदी या तालाब के अलग-अलग तटों पर रुदन करते रहते हैं।

क्या आप जानते हैं कबीर को भाषा पर पूर्ण अधिकार था कबीर की भाषा सर्वत्र ही उनके भावों को वहन करने में सर्वथा सक्षम एवं पूर्णतया समर्थ है।

(*i*) कबीर का अभिव्यंग्य यह है कि चकवा और चकवी तो रात्रि का भी वियोग नहीं सह पाते जबकि जीवात्माओं को ईश्वर का सतत् वियोग सहन करना पड़ता है।

(*ii*) **अलंकार–**व्यतिरेक, छेकानुप्रास।

8. बिरहा बिरहा मत कहौ बिरहा है सुल्तान।
जेहि घट बिरहा न संचरै सो घट सदा मसान॥8॥

शब्दार्थ–घट = हृदय। मसान = श्मशान।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने ईश्वर सम्बन्धी विरह-भाव को सभी भावों में सर्वोपरि सिद्ध किया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि जीवात्मा के परमात्मा के प्रति विरह-भाव को उपेक्षा की दृष्टि से कहीं देखना चाहिए क्योंकि यह जीवात्मा के ईश्वर सम्बन्धी समस्त भावों का राजा (सिरमौर) है। मुख्य बात तो यह है कि उस व्यक्ति और उसके हृदय को तो श्मशान-भूमि की भाँति वीरान समझना चाहिए। जिसमें ईश्वर के प्रति विरहाग्नि नहीं सुलगती रहती।

विशेष–(*i*) विरहानुभूति से पूर्व होना आवश्यक है, अत: जिस जीव के हृदय में ईश्वर के प्रति तीव्र विरहानुभूति का उद्रेक नहीं हो तो उसका ईश्वर के प्रति प्रेम भी नहीं स्वीकार किया जा सकता। कबीर ने इसीलिए विरह को सब भावों का सुल्तान घोषित किया है।

अलंकार–उपमा, वृत्यनुप्रास।

9. सब रंग तंत रबाब तन, विरह बजावै नित।
और न कोई सुणि सकै, कै साई के चित्त॥9॥

नोट

शब्दार्थ—तंत = तांत। रबाब = सारंगी। के = या तो।

संदर्भ—हरि-वियोग की असहाय व्याकुलता का वर्णन किया गया है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि हरि-प्रेम के रंग में रंगे हुए मेरे शरीर की, उनके वियोग के कारण तांत के समान दशा हो गयी है। मैं सूख-सूखकर कांटा हो गया हूँ। हरि के वियोग में मेरी हृत्तंत्री सदैव सारंगी की भाँति बजती रहती है। हाँ मेरी इस हृदय-रूपी वीणा से निकलने वाली प्रिय-प्रिय की ध्वनि को या तो मेरा अंतर्मन सुन पाता है, या मेरे स्वामी राम जी ही सुन पाते हैं।

विशेष—(*i*) भावसाम्य के लिए तुलनीय है—

"हाड़ भए सब किंगरी, नसैं भईं सब तांति।
रोम-रोम ते धुनि उठैं, कहौ बिथा केहि भाँति।।" (जायसी)

(*ii*) **अलंकार**—(क) सांगरूपक। (ख) छेकानुप्रास, अन्त्यानुप्रास।

10. परबति परबति मैं फिर्‌या नैन गँवाया रोय।
सो बूँटी पाऊँ नहीं जातैं जीवन होय॥10॥

शब्दार्थ—परबति = पर्वत। बूँटी = संजीवनी औषधि, सार तत्व।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने इस संसार में ईश्वर प्रेम-रूपी बूटी न मिल पाने की व्यथा का मार्मिक अंकन किया है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि ईश्वर प्रेम-रूपी बूँटी की खोज में मैं वन-वन और पर्वत-पर्वत की खाक छानते हुए रुदन करता रहा हूँ और रोते-रोते मेरे नेत्रों की ज्योति भी क्षीण पड़ गई है, किन्तु अभी तक मुझे वह प्रेम-रूपी संजीवनी नहीं मिल सकी है, जिसके अनुपान से मैं अमर हो जाऊँ—मेरा ईश्वर से साक्षात्कार हो जाए।

अलंकार—(*i*) प्रथम पंक्ति में पुनरुक्तिप्रकाश।

(*ii*) द्वितीय पंक्ति में छेकानुप्रास।

11. "अंखड़ियाँ झांई परी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला परा, राम पुकारि-पुकारि"॥11॥

शब्दार्थ—अंखड़ियाँ = आँखों में। झांई = आँखों के नीचे काले-काले निशान पड़ जाना, पुतलियों पर परत-सा छा जाना। जीभड़ियाँ = जिह्वा में।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने विरहिणी जीवात्मा की परमात्मा से मिलन हेतु उत्कट तत्परता का वर्णन किया है।

भावार्थ—प्रियतम के आगमन के मार्ग की ओर देखते-देखते दुर्बलता के कारण आँखों के नीचे झाइयाँ पड़ गई हैं या आँखों के आगे अंधकार छा गया है और उनके नाम की रट लगाते-लगाते अर्थात् पिउ-पिउ पुकारते हुए जिह्वा में छाले पड़ गये हैं। भाव यह है कि प्रियतम ईश्वर की प्रतीक्षा करते-करते जीवात्मा की शोचनीय दशा हो चुकी है, किन्तु फिर भी उससे मिलन की उत्कट लालसा ज्यों-की-त्यों बनी हुई है।

विशेष—(क) विरह-विकल जीवात्मा की दयनीय दशा का मार्मिक वर्णन किया गया है। हाँ उसमें कुछ ऊहात्मकता अवश्य है।

(ख) **अलंकार**—(*i*) निहारि-निहारि और पुकारि-पुकारि''में पुनरुक्तिप्रकाश।

(*ii*) प्रथम पंक्ति में (परी, पंथ) छेकानुप्रास।

नोट

12. नैनां नीझर लाइया, रहट बसै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबरु मिलहुगे राम॥12॥

शब्दार्थ–नीझर = झड़ी, वर्षा।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने अपनी विरहिणी आत्मा के ईश्वर के वियोग में अहिनिशि तड़पते रहने का वर्णन किया है।

भावार्थ–हे राम! आपके वियोग में तड़पती हुई मैं (कबीर स्वयं को ईश्वर की पत्नी मान लेते हैं) निरन्तर रुदन करती रहती हूँ और मेरे नेत्रों से अहिनिशि आँसुओं की झड़ी लगी रहती है, या ऐसा प्रतीत होता है मानो मेरे अन्तर्मन में अरहट चलती रहती हो और उसका जल मेरे नेत्रों से प्रवाहित हो रहा है। मैं पपीहे की भाँति निरन्तर पिउ-पिउ (प्रिय-प्रिय) रटती रहती हूँ, फिर भी हे निष्ठुर आपने अभी तक मेरी सुध नहीं ली। मुझे शीघ्र बताइए कि आप मुझसे कब मिलकर मेरी विरहाग्नि को परिशान्त करेंगे?

विशेष–(*i*) प्रस्तुत साखी में विरह की दस काम-दशाओं में से प्रलयदान का अंकन हुआ है।

(*ii*) भाव साम्य के लिए तुलनीय है–

"हाड़ भए सब किंगरी नसें भई सब तांति।
रोम-रोम ते धुनि उठै, कहौ बिथा किहि भाँति।।" (जायसी)

(*ii*) **अलंकार–**(क) 'पिव-पिव' में वीप्सा। (ख) प्रथम पंक्ति में 'रहट के बहने' में गम्योत्प्रेक्षा और उपमा अलंकारों की संसृष्टि हुई है। (ग) द्वितीय पंक्ति में उपमा।

13. सोई आँसू साजणां, सोई लोक बिड़ांहि।
जे लोइण लोंही चुबै, तौ जाणौं हेतु हियाहि॥13॥

शब्दार्थ–साजणां = शोभा देते हैं, प्रियतम के लिए। लोंही = रक्त। हेत = लिए। बिड़ांहि = दिखावटी।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने सच्चे हरि-भक्तों द्वारा ईश्वर के विरह में करुण क्रंदन करने वाले, रक्त के आँसू बहाने के तथ्य पर बल दिया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि इस संसार में प्रियतम के वियोग में सच्चा या अन्तर्मन से भी रुदन किया जाता है और बहुत से नर-नारी दिखावटी आँसू भी बहाते हैं। ईश्वर का सच्चा प्रेमी तो उसी को कहा जा सकता है; जब उसके नेत्रों से हरि-वियोग में रक्त के आँसू बहने लगें।

विशेष–(*i*) जायसी से भाव साम्य।

(*ii*) **अलंकार**–वृत्यनुप्रास।

14. "कबीर सूता क्या करै जागि न जपै मुरारि।
इक दिन सोवन होइगा लाम्बे गोड पसारि"॥14॥

शब्दार्थ–सोवन = सोना। पसारि = फैलाकर।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने प्राणियों को निद्रालस त्यागकर शीघ्रातिशीघ्र हरि-स्मरण की ओर उन्मुख होने की चेतावनी दी है।

भावार्थ–अरे प्राणी! तू बेखबर क्यों सोया रहता है, सचेत होकर हरि-स्मरण क्यों नहीं करता? तू यह क्यों भूल जाता है न जाने कब वह दिवस आ जाए, जब तू लम्बे पाँव पसारकर सोने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर पाएगा–अर्थात् तेरी मृत्यु हो जायेगी।

विशेष–(*i*) इस साखी का मूल भाव कबीर की निम्नांकित चेतावनी के अनुरूप है–

"कालि करै सौ आजु करि, आजु करै सौ अब्ब।
पल में परलै होइगी, बहुरि करैगौ कब्ब।।"

(*ii*) (क) प्रथम पंक्ति में वृत्यनुप्रास।

(ख) द्वितीय पंक्ति में 'लम्बे गोड़ पसारकर सोना' इस लोकिक्ति का बड़ा ही सुष्ठु प्रयोग किया गया है।

टास्क कबीर वाणी का स्वरूप विविधताओं से युक्त क्यों था तथा कबीर की मूल भाषा का अंश उनकी मातृभाषा में क्यों लिखा गया था? वर्णन कीजिए।

15. तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझ में रही न हूँ।
वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ।।15।।

शब्दार्थ–तूँ तूँ करता = राम-नाम का जाप करते हुए। हूँ = अहं-भाव। वारी = न्यौछावर। बलि = कुर्बान; समर्पित। फेरी = फिर।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने अद्वैतावस्था का वर्णन करते हुए यह भाव व्यक्त किया है राम-नाम का स्मरण करते हुए वे भी राममय हो गए हैं।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि हे राम! या हे ब्रह्म आपके नाम का जप करते हुए समस्त ब्रह्मांड में आपका ही अस्तित्व मानते हुए मैं भी अपना अहंभाव खोकर ब्रह्म हो गया हूँ। स्वयं को आपके प्रति समर्पित और आप पर न्यौछावर करने की भावना का यह परिणाम निकला है कि अब मुझे सर्वत्र आपका ही अस्तित्व प्रतिभासित होता है।

विशेष–(*i*) कबीर ने अन्यत्र भी लिखा है–

"लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, खुद भी हो गई लाल।।"

(*ii*) **अलंकार–**मीलित, वृत्यनुप्रास।

16. "कबीर चंदन के बिड़ै, बेघे ढाक पलास।
आपु सरीखे करि लिए, जे होते उन पास"।।16।।

शब्दार्थ–बिड़ै = बेड़े, वृक्षसमूह के पास। बेधे = बिद्ध हुए, उनमें सुगंध प्रविष्ट हुई। ढाक-पलास = दोनों शब्दों का एक ही अर्थ है–ढाक के वृक्ष। सरीखे = समान। जे = जो।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने सत्संगति की महत्ता का प्रतिपादन चन्दन के वृक्ष के समीप स्थित ढाकों के भी सुगन्धित हो जाने के माध्यम से किया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि संत-जन अपने समीप रहने वाले निर्बुद्धि और सांसारिक विषयों की ओर प्रलुब्ध लोगों रूपी ढाक के वृक्षों के हृदय को बेधकर अर्थात् प्रभावित करते हुए उनको ईश्वर प्रेम की सुगन्धि से ओत-प्रोत कर देते हैं, जैसे चंदन का वृक्ष अपने बेड़े के (वृक्षों के झुंड के) पलाश वृक्षों को भी अपने समान ही सुगन्धित कर लेता है।

नोट

नोट्स प्रस्तुत साखी का भाव यह है कि सहजन अपनी संगति में रहने वालों के हृदय में साधुत्व एवं ईश्वर-प्रेम का उद्रेक कर देते हैं।

विशेष–(*i*) यह एक अनुभूत तथ्य है कि चन्दन-वन के निकटवर्ती वृक्षों की भी लकड़ी से चन्दन की गन्ध आने लगती है।

(*ii*) **अलंकार–**(क) 'चन्दन और ढाक' में रूपकातिशयोक्ति। (ख) अन्योक्ति अलंकार (क्योंकि कवि का इष्ट साधु-संगति का प्रभाव दिखाना है)। (ग) प्रथम पंक्ति में छेकानुप्रास।

17. मेरे संगी दोइ जणां, एक वैष्णों एक रांम।
वो है दाता मुकति का, वो सुमिरावै नांम॥17॥

शब्दार्थ–दोइ जणां = दो लोग। मुकति = मोक्ष।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने वैष्णवों और राम, मात्र इन दो को ही अपना साथी बताया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि इस संसार में मेरे तो मात्र दो साथी हैं–प्रथमत: वे वैष्णव-जन जिनकी संगति में रहते हुए राम-नाम का स्मरण आता रहता है और दूसरे साथी वे राम हैं जो मुझको मोक्ष प्रदान करेंगे।

विशेष–(*i*) कबीर ने अन्यत्र भी यह भाव व्यक्त किया है कि वैष्णव चाहे चांडाल भी हो, तो भी उससे सप्रेम गले लगाना चाहिए–

"साकत बांह्मण मति मिलै, वैष्णों मिलै चंडाल।
अंकमाल दै भेंटिगे, मांनौ मिले गोपाल।।"

(*ii*) **अलंकार–**पुनरुक्तिप्रकाश, अंत्यानुप्रास।

18. राम नांम जिन चीन्हिया, झीणां पंजर तास।
नैंन न आवै नींदड़ी, अंगी न चढ़ई भास॥18॥

शब्दार्थ–चीन्हिया = पहचान लिया है। भीणां = दुर्बल, झीण। पंजर = शरीर। तास = उसका। नींदड़ी = निद्रा। अंगी = शरीर पर।

संदर्भ–प्रस्तुत पद में कबीर ने मन्दिर-मस्जिद-गुरुद्वारों में मुफ्त के माल उड़ा-उड़ाकर हट्टे-कट्टे और तोंदू बन जाने वाले पुजारी, मौलवी और ग्रन्थियों की खबर ली है।

भावार्थ–मोटे-ताजे पुजारी-मौलवियों की ओर संकेत करते हुए–उनका उपहास करते हुए कबीर कहते हैं कि अरे तोंदुओं! जिन लोगों को वास्तव में ही राम-नाम की पहचान होती है, वे तुम्हारी तरह मोटे नहीं होते अपितु बड़े ही क्षीणकाय होते हैं। उनके नेत्रों में तुम्हारी तरह नींद नहीं भरी रहती और न उनके शरीर रांगों पर मांस और चरबी ही चढ़ा करती है।

विशेष–(*i*) कबीर ने इन पंक्तियों में सच्चे साधक और ढोंगी एवं भोगी पुजारियों का अन्तर स्पष्ट किया है।

अलंकार–दोनों पंक्तियों में छेकानुप्रास।

19. राम वियोगी बिकल तन, इन्ह दुषकै मति कोइ।
छूते ही मरि जायेंगे, ताला बेली होइ॥19॥

शब्दार्थ–दुषके = दु:खाओ। ताला बेली = घबड़ाहट, तड़पना।

संदर्भ—हरि के वियोग में तड़पने वाले साधकों की स्थिति का वर्णन किया है।

भावार्थ—कबीर सांसारिक लोगों को गरजते हुए कहते हैं कि उन साधकों को जो पहले से ही राम की विरह-व्यथा के कारण व्याकुल हैं, उन्हें और अधिक दु:ख मत दो—दु:खियों को दु:ख देना अच्छी बात नहीं है। यदि तुम इन्हें सताने की चेष्टा करोगे, इनको सांसारिक विषय भोगों का प्रलोभन देना चाहोगे, तो ये तुम्हारे द्वारा ऐसा प्रयास करते ही तड़प कर मर जाएंगे।

अलंकार—छेकानुप्रास।

20. लालंण की ओबरी नहीं, हंसण की नहिं पांति।
सिंहण के लेहड़ा नहीं, साधु न चलैं जमाति॥20॥

शब्दार्थ—लालंण = लालों की। ओबरी = कोठरी। लेहड़ा = झुंड, समूह। जमाति = समूह, झुंड।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने सच्चे संतों की विरलता का उद्घाटन किया है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि सच्चे साधु उसी प्रकार किसी स्थान पर इकट्ठे नहीं मिलते जैसे लालों की कहीं कोठरी नहीं होती अपितु, कहीं कोई एक लाल मिला करता है, हंसों के झुंड नहीं होते तथा सिंह भी वन में दो एक ही होते हैं, उनके समूह या झुंड नहीं हुआ करते। भाव यह है कि यदि कहीं साधुओं की टोली दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि उनमें से अधिकांश सच्चे संत न होकर भोजन-भट्ट मात्र हैं।

विशेष—(*i*) प्रस्तुत साखी पर निम्नांकित श्लोक का प्रभाव है—

"शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधको नहिं सर्वत्र चन्दनम् न बने बने।।"

अलंकार—अन्त्यनुप्रास।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)—

1. कबीर कहते हैं कि जिस व्यक्ति के घर में सदगुरु के ········ दीपक का प्रकाश नहीं है उसके घर में अंधकार छाया रहता है।
2. ········ ही जीव के अज्ञानाधंकार को मिटाकर उसका ईश्वर से साक्षात्कार कराता है।
3. स्वयं को आपके प्रति समर्पित और आप पर ········ करने की भावना का यह परिणाम निकला है कि मुझे अब सर्वत्र आपका ही अस्तित्व प्रतिभासित होता है।

1.1.2 केवल साखी भाग (21 से 35 तक) संदर्भ सहित व्याख्या

21. भगति हजारी कापड़ा, तामैं मल न समाइ।
साषित कारी कांमरी, भावै तहाँ बिछाइ॥21॥

शब्दार्थ—हजारी कापड़ा = बहुमूल्य एवं महीन वस्त्र विशेष। तामै = उसमें। साषित = शाक्त लोग।

संदर्भ—सन्दर्भगत साखी में कबीर ने भक्तजनों (वैष्णवभक्तों) की प्रशंसा करते हुए शाक्तों की निंदा की है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि वैष्णव या हरि के भक्त तो उस स्वच्छबहुमूल्य कपड़े की भाँति हैं जिसमें मलिनता नहीं समाती क्योंकि उसे मलिनताओं से बचाकर रखा जाता है। बहुमूल्य वस्त्र की विशेष देखभाल आवश्यक होती

नोट

है। इसके विपरीत शाक्त लोग उस काली कामरी (कम्बल) की भाँति होते हैं जिसे चाहे जहाँ बिछा लिया जाता है और इस तरह यह मलिनता का पुंज बन जाता है।

विशेष–(*i*) कबीर ने वैष्णवों की अनेक स्थलों पर प्रशंसा और शाक्तों की निंदा की है। प्रस्तुत पंक्तियों में भी उन्होंने वैष्णों को हजारी कपड़े से तथा शाक्तों को काले कम्बल से उपमित करके इसी प्रकार का भाव व्यक्त किया है।

अलंकार–उपमा, छेकानुप्रास।

22. "ऐसा कोई नां मिलै, जासौ रहिए लागि।
सब जग जरता देषिया, अपनी अपनी आगि"॥22॥

शब्दार्थ–जासौं = जिससे। रहिए लागि = मिलकर साथ रहिए।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने यह भाव व्यक्त किया है कि प्राय: सभी प्राणी विषय-विकारादि की अग्नि में जल रहे हैं, अत: समस्या यह है कि मैं किसके साथ मिलकर रहूँ?

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मुझे ऐसा कोई भी प्राणी नहीं दिखाई देता, मैं जिसके साथ मिलकर रह सकूं और जो मेरे हृदय की ज्वाला को शान्त कर सके। मैं तो जिसे देखता हूँ वह अपनी ही किसी न किसी प्रकार की चिन्ताग्नि में दग्ध हो रहा है–किसी को कनक की चिन्ता है तो किसी को कामिनी की, कोई धन संग्रह पर जान देता है, तो कोई विषय-विकारों का दास बना हुआ है। अत: मेरे हृदय में ईश्वर विरह की जो आग सुलग रही है, उसे कोई भी अपने सदुपदेश रूपी जल से बुझाने में समर्थ नहीं है।

विशेष–(*i*) कबीर की भावाभिव्यक्ति इस दृष्टि से पूर्णत: उपयुक्त है कि जो स्वयं ही जल रहा हो, वह दूसरे की आग बुझाने की क्या चिन्ता करेगा। लोग पहले अपनी दाढ़ी की ही आग बुझाया करते हैं।

(*ii*) **अलंकार**–'जग-जरता…' में छेकानुप्रास, 'अपनी अपनी' में पुनरुत्तिप्रकाश।

23. सारा सूरा बहु मिलै, घायल मिलै न कोइ।
घाइल ही घाइल किलै, तब राम भक्ति दिढ़ होइ॥23॥

शब्दार्थ–सारा सूरा = सांसारिक वैभव से परिपूर्ण। घाइल = रामभक्ति के कारण व्याकुल। दिढ़ = दृढ़।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने यह भाव व्यक्त किया है कि इस संसार में राम-विरह से व्याकुल लोग बहुत कम मिल पाते हैं।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि सांसारिक वैभव से पूर्ण तथा लौकिक दृष्टि से अच्छे लोग तो बहुत मिलते हैं किन्तु राम-भक्ति के तीक्ष्ण शरों से आहत हुए भक्त लोग कम मिल पाते हैं। राम की भक्ति तभी दृढ़ हो सकती है जबकि उनके प्रेम में तड़पते लोगों की संगति की जाए।

अलंकार–छेकानुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश।

24. हम घर जाल्या आपणां, लिया मुराड़ा हाथि ।
अब घर जालौं तास का जे चलै हमारे साथि ॥24॥

शब्दार्थ–मुराड़ा = मशाल। तासका = उसका।

संदर्भ–प्रतीक पद्धति में माया-मोह को जला डालने का वर्णन किया गया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मैं तो अपना घर जला चुका हूँ अर्थात् मायामोह और काम-विकारों से छुटकारा पा चुका हूँ और अब ज्ञान-रूपी मशाल लिये खड़ा हूँ। जो कोई मेरे साथ चलना चाहेगा (मेरे मार्ग का अनुकरण करेगा) अब मैं उसका घर जलाऊंगा अर्थात् उसके भी विषय-विकारादि को जला (विनष्ट) दूँगा।

अलंकार–रूपक, छेकानुप्रास।

नोट

25. **मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कछु है सो तेरा।**
मेरा तुझको सौंपता, क्या लागै है मेरा॥25॥

शब्दार्थ—सरल है।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने प्राणी को कुछ भी न मानते हुए ईश्वर को ही उसका सर्वस्व बताया है।

भावार्थ—कबीर-कातर स्वर में निवेदन करते हैं कि ये प्रभु! मुझमें मेरा अपना तो कुछ भी नहीं है। मेरा जो कुछ भी है वह सभी आपके अनुग्रह का फल है—अर्थात् मेरा मनसावाचा-कर्मणा अस्तित्व आपकी अनुकम्पा का ही परिणाम है। इसलिए यदि मैं स्वयं को आपके प्रति मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पित कर देता हूँ, तो इसमें मेरा क्या लगता है?

विशेष—(*i*) कबीर की यह आत्म-समर्पण की भावना बड़ी ही मार्मिक है कि प्राणी का जो कुछ भी है वह ईश्वर-प्रदत्त ही है, अतः उसको ईश्वर को सौंपने में प्राणी को रंचमात्र भी संकोच नहीं करना चाहिए। उन्होंने अन्यत्र भी ऐसे ही भाव व्यक्त किये हैं।

(*ii*) **अलंकार**—छेकानुप्रास।

26. **जद का माइ जनमियाँ, कदे न पाया सुख।**
डाली डाली मैं फिर्‌या, पातैं-पातैं दुख॥26॥

शब्दार्थ—जदका = जबसे। माइ = माता। कदे = कभी।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने जन्मकाल से ही मिलाप से संत्रस्त्र रहने का वर्णन करते हुए प्रकारान्तर से हरिस्मरण की प्रेरणा दी है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि मैंने जब से माता की कोख से जन्म लिया है, तभी से लेकर मुझे कभी भी सुख नहीं मिला है। यदि मैं सुख की खोज में डाली-डाली पर मारा-मारा फिरता रहा तो मुझे पत्ते-पत्ते पर दुःख परिव्याप्त मिला। भाव यह है कि ईश्वर की अनुकम्पा के अभाव में इस संसार में जीव को अनेकानेक प्रकार के दुःख सहन करने पड़ते हैं।

विशेष—(*i*) प्रस्तुत साखी की भाषा में पंजाबी शब्दावली (जद, कदे) का पुट है।

(*ii*) **अलंकार**—पुनरुक्तिप्रकाश, अन्त्यानुप्रास।

27. **कस्तूरी कुण्डलि बसै मृग ढूंढ़ै वन माँहिं।**
ऐसै घट घट राम हैं, दुनियाँ देखे नाँहिं॥27॥

शब्दार्थ—कुंडलि = नाभि में।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने ईश्वर की सर्वव्यापकता तथा सभी प्राणियों के हृदय में निवास करने के तथ्य पर प्रकाश डाला है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि जैसे हिरण की नाभि में कस्तूरी हुआ करती है, किन्तु वह उसकी खोज में, उसकी सुगन्धि से व्याकुल होकर जंगलों में भटकता फिरता है, उसी प्रकार जीव भी राम की खोज में तीर्थ, मन्दिर, वन, गुफाओं आदि में भटकते फिरते हैं और यह नहीं समझते कि राम तो उनके हृदय में ही निवास करते हैं। भाव यह है कि हरि के दर्शनों के लिए कहीं भी न जाकर प्राणी को अंतर्मन में ही उनका साक्षात्कार करना चाहिए।

विशेष—(*i*) प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर ने हरि से साक्षात्कार के लिए लाह्य-साधना के स्थान पर अंतर्मुखी साधना की महत्ता पर जोर दिया है—

नोट

(*ii*) भावसाभ्य के लिए कबीर की ही यह उक्ति अवलोकनीय है–

"ज्यों तिल माँही तेल है, ज्यों चकमक में आगि।
तेरा साँई तुज्झ में जागि, सकै तो जागि।।"

(*iii*) **अलंकार**–(क) उदाहरण। (ख) 'कस्तूरी-कण्डलि' में छेकानुप्रास, 'घट-घट' में पुनरुक्तिप्रकाश।

**28. ज्यूँ नैनूँ मैं पूतली, त्यूँ खलिक गठ माँहि।
मूरिख लोग न जाँगहीं, बाहरि ढूढण जाँहि॥28॥**

शब्दार्थ–नैनूं = आँखों में। त्यूँ = वैसे ही। खालिक = ईश्वर, ब्रह्म। घट-घट माँहि = हृदय में।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में ईश्वर की घट-घट में व्याप्ति पर प्रकाश डालते हुए उसे हृदय में ही खोजने की प्रेरणा दी गई है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि जिस प्रकार प्राणी के नेत्रों में उसकी पुतलियाँ होती हैं, उसी प्रकार उसके हृदय में ईश्वर निवास करता है। किन्तु मूर्ख लोग इस तथ्य को नहीं जानते और उसे मन्दिर-मस्जिद और तीर्थादि में खोजते-फिरते हैं।

विशेष–(*i*) कबीर ने अन्यत्र भी कहा है–

"कस्तूरी कुण्डलि बसै मृग ढूढ़ै वन माँहि।
तैसेहि घट-घट राम हैं, दुनियाँ देखे नाँहि।।"

(*ii*) **अलंकार**–उदाहरण, छेकानुप्रास।

**29. "जाके मुँह माथा नहीं, नाहीं रूप अरूप।
पुहुप बास थैं पातला, ऐसा तत्त अनूप॥29॥**

शब्दार्थ–जाके = जिसके। पुहुप बास = पुष्प की सुगंध। थैं = से। अनूप = अनोखा।

संदर्भ–प्रस्तुत दोहे में कबीर ने ईश्वर के निर्गुण-निराकार या अरूप–अरेख स्वरूप का वर्णन किया है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि उस परम ब्रह्म परमेश्वर के न तो मुँह है न मस्तक, न रूप है और न रेख किन्तु साथ ही वह अरूप भी नहीं है। अभिप्राय यह कि न तो उसे रूपमय कहा जा सकता है और न रूप-विहीन ही। वह अनोखा तत्व तो पुष्प-गंध से भी पतला है–अर्थात् पुष्प गंध की भाँति उसका अस्तित्व है तो सही किन्तु उसे देखा नहीं जा सकता।

विशेष–(*i*) प्रस्तुत पंक्तियों में ईश्वर का वर्णन वेदों की नेति-नेति शैली में भी किया गया है और उसके साथ ही स्वीकारात्मक शैली में भी।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. किस साखी में कबीर ने यह मान व्यक्त किया है कि सभी प्राणी विषय-विकरादी की अग्नि में जल रहे हैं?

   (*a*) ऐसा कोई नां मिलै (*b*) मेरा मुझमें कोई नहीं

   (*c*) दीण है तो कस कहूँ (*d*) कबीर जायन जाइय

नोट

5. यह कथन किसका है कि इस परम ब्रह्म के न तो मुँह है न मस्तक, न रूप है और न रेख किन्तु साथ ही वह अरूप भी है?

   (*a*) तुलसीदास (*b*) स्वामी रामानन्द

   (*c*) कबीरदास (*d*) सूरदास

6. खालिक शब्द का क्या अर्थ है?

   (*a*) दूत (*b*) देवता

   (*c*) ईश्वर (*d*) मानव

(*ii*) **अलंकार**—छेकानुप्रास, उपमा।

30. भारी कहौं तो बहु डरौं, हलका कहूं तो झूठ।
मैं का जाणौं राम कूं, नैनूं कबहूँ न दीठ॥30॥

शब्दार्थ—जाणौं = जानता हूँ। दीठ = देखा।

संदर्भ—इस साखी में कबीर ने ईश्वर के अलख-प्ररूप स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उसकी अनिवर्चनीयता पर बल दिया है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि मैंने राम को कभी अपने नेत्रों से देखा नहीं हैं, अत: उन्हें भारी बताते हुए मुझे यह भय रहता है कि कही मेरा यह कथन मिथ्या न हो। उसी प्रकार असत्य भाषण के भय से मैं उन्हें हल्का भी नहीं बता सकता। उनके दर्शन न कर पाने के कारण यही स्वीकार कर लेना अधिक उपयुक्त है कि मैं राम को नहीं जानता।

विशेष—(*i*) यही तो कबीर का फक्कड़पन और मस्ती है कि कहीं तो वे राम के देख लेने का भाव व्यक्त करते है''

"दीठा है तो कस कहूँ, कह्या व को पतियाइ।

और कहीं यह कह देते हैं कि "मैं का जाणौं राम कूँ, नैनूँ कबहूँ न दीठ।"

हाँ उनके कथनों का मूलभाव यही है कि ईश्वर का स्वरूप वर्णनातीत है।

(*ii*) **अलंकार**—छेकानुप्रास, अन्त्यानुप्रास।

31. दीठा है तो कस कहूं, कह्या न को पतियाइ।
हरि जैसा है तैसा रहै, तू हरिष हरिष गुण गाइ॥31॥

शब्दार्थ—दीठा = देखा। कस = कैसे। कह्या = कहने पर। पतियाइ = विश्वास करेगा।

संदर्भ—प्रस्तुत साखी में कबीर ने ईश्वर की अनिर्वचनीयता पर बल देते हुए उसके स्वरूप को अनुभवगम्यं बताया है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि मैंने ईश्वर को देखा तो है, किन्तु उसका वर्णन किस प्रकार करूं, यह एक विकट समस्या है। एक समस्या यह भी है कि यदि मैं ईश्वर का वर्णन करूँगा भी तो लोग मेरे उस वर्णन पर विश्वास नहीं करेंगे। ऐसी दशा में यही उत्तम है कि मैं परमेश्वर के स्वरूप का वर्णन न करूँ—वह जैसा है वैसा बना रहे; मैं तो अपने जीवन का लक्ष्य उसके गुणों का प्रसन्न मन से गान करते रहना ही मानता हूँ।

विशेष—प्रस्तुत साखी में ईश्वर का स्वरूप वर्णन 'स्वलक्षणम् स्वलक्षणम्' की पद्धति पर हुआ है।

अलंकार—विशेषोक्ति, वीप्सा, वृत्यनुप्रास।

नोट

32. नां कछु किया न करहिंगे, नां करनै जोग सरीर।
जो कछु किया सो हरि किया, भया कबीर कबीर।।32।।

शब्दार्थ–जोग = योग्य। कबीर = महान्।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने स्वयं को कुछ भी न मानते हुए अपना सर्वस्व ईश्वर को बताया है, जिसका मूल-भाव 'नरचाही ना होती है, प्रभु चाही तत्काल' के अनुरूप है।

भावार्थ–कबीर कहते हैं कि मैंने अब तक न तो कुछ किया ही है और न मेरा शरीर ही इस योग्य है कि वह कुछ कर सके। मैं तो जो कुछ हूँ वह ईश्वर की कृपा का ही परिणाम हूँ और उन्हीं की अनुकम्पा के कारण मुझे महान् कबीर कहा जाता है अथवा चतुर्दिक मेरे नाम का अर्थात् कबीर-कबीर का शोर मचा रहता है।

विशेष–(*i*) इन पंक्तियों में कबीर ने जगत् के समस्त प्रकार के कर्मों का कर्त्ता ईश्वर को ही सिद्ध किया है। व्यक्ति का अस्तित्व तो अधिक से अधिक उस माध्यम के समान है, जिसके द्वारा ईश्वर अपने अभीष्ट कार्यों का सम्पादन करता है।

अलंकार–(क) 'भया कबीर कबीर' में यमक (ख) दोनों ही पंक्तियों में वृत्यनुप्रास।

33. हेरत हेरत हे सखी, रह्या कबीर हिराइ।
बूँद समानी समद मैं सो कत हेरी जाइ।।33।।

शब्दार्थ–हेरत-हेरत = देखते-देखते। हिराइ = छिप गया, खो गया। हेरी = देखी। कत = कैसे।

संदर्भ–प्रस्तुत साखी में कबीर ने अपनी जीवात्मा का परमात्मा के साथ साक्षात्कार या विलीनीकरण होने का वर्णन किया है।

भावार्थ–कबीर की अथवा कोई जीवात्मा दूसरी जीवात्मा से कहती है कि हे सखि! ईश्वर का साक्षात्कार करते-करते–उसे देखते-देखते मैं स्वयं उसी में विलीन हो गई हूँ। जब जीवात्मा रूपी बूँद परमात्मा रूपी सागर में मिल गई तो फिर उसे कैसे देखा जा सकता है? अर्थात् मेरे पृथक् अस्तित्व का लोप हो गया है।

विशेष–कबीर ने अन्यत्र भी 'अहं ब्रह्मस्मि' या ईश्वर-मिलन का भाव व्यक्त किया हैं–

अलंकार–(*i*) मीलित, वृत्यनुप्रास

(*ii*) द्वितीय पंक्ति में छेकानुप्रास।

34. साईं मैं तुझ वाहिरा, कौड़ी हू न लहाउँ।
जौ सिर ऊपरि तुम धनीं, तो लाषौ मोल कराउँ।।34।।

शब्दार्थ–बाहिरा = विपरीत रहते हुए। लहाउँ = लूँगा, समझा जाऊँगी। धनी = स्वामी। लाषौं = लाखों का।

संदर्भ–ईश्वर में अनुग्रह की सर्वोपरिता का प्रतिपादन किया गया है।

भावार्थ–ईश्वर को सम्बोधित करते हुए कबीर कहते हैं कि हे प्रभु! आपसे विमुख रहते हुए मैं कौड़ी भी प्राप्त नहीं कर सकता, जब कि यदि मेरे सिर पर आप-सा स्वामी हो, तो मैं लाखों का मोल-भाव कर सकता हूँ।

अलंकार–अन्त्यानुप्रास।

35. "कबीर जांचन जाइथा, आगै मिला अंजय।
लै चाला घर आपनै, भारी पाया संच।।35।।

शब्दार्थ–जांचन = माँगने। अंजय = किसी से न माँगने वाला अर्थात् ईश्वर, इतना देने वाला कि फिर किसी से माँगने की आवश्यकता ही न रहे। संच = सत्य।

नोट

संदर्भ—प्रस्तुत दोहे में कबीर ने अपने आराध्य राम से ही याचना करने पर बल दिया है क्योंकि उनकी दृष्टि में वे ही सुख-समृद्धि की अक्षयनिधि है।

भावार्थ—कबीर कहते हैं कि मैं इस संसार के जिस-तिस व्यक्ति तथा अन्य देवों से माँगता फिरा करता था किन्तु कोई भी मेरी इच्छापूर्ति करने में समर्थ नहीं हुआ। सौभाग्यवश मेरा साक्षात्कार राम से हो गया, जो मुझे अपने यहाँ ले गये और मुझे सत्य-रूपी महान् निधि प्रदान कर दी है। अब मुझे किसी से कुछ भी माँगने की आवश्यकता नहीं है।

विशेष—(*i*) कवि ने स्व-आराध्य राम को सुख-समृद्धि और सत्य-ज्ञान की अक्षयनिधि चित्रित किया है।

(*ii*) **अलंकार**—छेकानुप्रास, अन्त्यानुप्रास।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. कबीर ने अन्यत्र सदगुरु को ईश्वर से भी बढ़कर बताया है।
8. कबीर ने वैष्णवों की अनेक स्थलों पर प्रशंसा और शाक्तों की निंदा की है।
9. साई में तुझ वाहिरा, कोडी हू न लहाऊँ। तुलसीदास द्वारा लिखित दोहा है।

1.2 सारांश (Summary)

- कबीर की भाषा सर्वत्र ही उनके भावों को वहन करने में सर्वथा सक्षम एवं पूर्णतया समर्थ है। कबीर ने गम्भीर से गम्भीर विषय का विवेचन सरल भाषा में किया है।
- संज्ञा, परसर्ग, सर्वनाम, क्रिया और अव्ययों में अवधी, बज्र तथा खड़ी बोली—इन तीनों के रूपों का अत्यधिक मिश्रण है। कबीर को भाषा पर पूर्ण अधिकार था कबीर की भाषा सर्वत्र ही उनके भावों को वहन करने में सर्वथा सक्षम एवं पूर्णतया समर्थ है। कबीर ने गम्भीर से गम्भीर विषय का विवेचन सरल भाषा में किया है।

1.3 शब्दकोश (Keywords)

उपकार : भलाई

घट : हृदय, दिल

सुख-समृद्धि : सुख के साथ जीवन व्यतीत करना, खुशहाल

1.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. कबीर की भाषा-शैली का वर्णन कीजिए।
2. कबीर ने अपने दोहों में किस भाषा का अधिक प्रयोग किया है? उल्लेख कीजिए।
3. भाषाविदो के कबीर के भाषा प्रयोग के प्रति क्या तर्क थे? समझाइए।

नोट

उत्तरः स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. सदुपदेश-रूपी	2. सदगुरु	3. न्यौछावर
4. (*a*)	5. (*c*)	6. (*c*)
7. सही	8. सही	9. गलत।

1.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. कबीर वाणी (पारसनाथ तिवारी) अनीता प्रकाशन, नई सड़क, नई दिल्ली।

नोट

इकाई–2: कबीर : जीवन परिचय एवं काव्यगत विशेषताएँ

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

2.1 जीवन परिचय

2.2 काव्यगत विशेषताएँ

2.3 कबीर : खण्डनात्मक दृष्टिकोण एवं सहज धर्म की प्रतिष्ठापना

2.4 सारांश (Summary)

2.5 शब्दकोश (Keywords)

2.6 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

2.7 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- कबीर का जीवन परिचय जानने हेतु।
- कबीर की काव्यगत विशेषताएँ जानने हेतु।
- कबीर के खण्डनात्मक दृष्टिकोण एवं सहज धर्म की प्रतिष्ठापना जानने में।
- कबीर की भाषा-शैली तथा अलंकारों का प्रयोग जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

कबीर के यथासाध्य प्रामाणिक जीवनवृत्त का परिचय : भारतीय मनीषियों में पुरातन काल से ही आत्म-गोपन की प्रवृत्ति रही है, जिससे भावी पीढ़ियाँ उनके प्रामाणिक जीवन-वृत्तांत से अपरिचित ही रह जाती हैं। हाँ भूले-भटके अपने जीवन के विषय में जो उद्‌गार व्यक्त कर बैठते हैं उस अंत:साक्ष्य सामग्री, तथा उनके समसामयिक या परवर्ती साहित्यकार उनके विषय में जो उल्लेख करते हैं, उस बहि:साक्ष्य सामग्री के आधार पर, उनके जीवन-वृत्तांत के विषय में नाना तथ्यों के निर्धारण का प्रयास किया जाता है। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर रीतिकाल तक के प्राय: सभी कवियों के विषय में यही स्थिति है–न हमें कालिदास का प्रामाणिक जीवन-वृत्त ज्ञात है और न कवि शिरोमणि सूर और तुलसी और बिहारी आदि का। हमारे आलोच्य कवि कबीर भी इस तथ्य के अपवाद नहीं है, जिनका जन्म-काल, माता-पिता, जाति-कुल, गुरु, पत्नी-पुत्रादि सभी के नामों के विषय में विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के मत व्यक्त किए हैं।

नोट

2.1 जीवन परिचय

जन्म-काल : सन्त कबीर की जन्म-तिथि विद्वानों के मध्य विवाद का विषय रही है। यद्यपि **डॉ. रामकुमार वर्मा** ने यह मत व्यक्त किया है कि–''कबीर-पंथ के गुणों में कबीर के जीवन के विषय में जितने अवतरण या संकेत मिलते हैं, उनमें जन्म का उल्लेख नहीं है।'' तथापि कबीर की जन्म-तिथि के विषय में कबीर पंथियों में निम्नलिखित पद्य प्रसिद्ध है जिसे कबीर के प्रधान शिष्य धर्मदास द्वारा रचित माना जाता है–

''चौदह सौ पचपन साल गये, चंद्रवार एक ठाठ ठए
जेठ सुदी बरसायत कै पूरनमासी तिथि प्रगट भए
घन गरजे दामिनि दमके बूंदें बरषै झर लाग लए
लहर-तलाब में कमल खिलै, तहं कबीर भानु प्रकट भए।।''

इन पंक्तियों में प्रयुक्त 'गये' शब्द का अर्थ 'व्यतीत हुआ' ग्रहण करके **डॉ. श्यामसुन्दर दास** ने कबीर का जन्मकाल संवत् 1456 वि. सिद्ध किया है, किन्तु गणित के निष्कर्ष पर यह तिथि खरी नहीं उतरती, क्योंकि सं. 1456 की ज्येष्ठ-पूर्णिमा को चन्द्रवार नहीं पड़ता । **डॉ. माताप्रसाद गुप्त** ने एस.आर. पिल्ले की 'इंडियन क्रौनोलोजी' के आधार पर गणित (तिथि गणना) करते हुए स्पष्ट किया है कि सं. 1455 की ज्येष्ठ पूर्णिमा को सोमवार (चंद्रवार) ही पड़ता है, अत: उनका जन्म काल सं. 1455 की ज्येष्ठ पूर्णिमा, दिन चन्द्रवार को मानना चाहिए। **'कबीर-चरित्र-बोद्य'** नामक ग्रन्थ में भी कबीर का जन्म 'चौदह सौ पचपन विक्रमी, ज्येष्ठ-सुदी पूर्णिमा सोमवार' बताया गया है।

मिश्रबन्धु, हरिऔध, मेकालिफ, भंडारकर, आचार्य क्षितिमोहन सेन, डॉ. रामकुमार वर्मा तथा डॉ. सरनाम सिंह शर्मा ने भी उनकी यही जन्म-तिथि स्वीकार की है, अत: इसी तिथि को उनका जन्म-काल मानना चाहिए।

जन्म-स्थान : कबीर की जन्म-तिथि की भाँति उनका जन्म-स्थान भी विद्वानों में मत्-वैभिन्नय का निमित्त रहा है। उनके जन्म के विषय में जो किंवदंती प्रसिद्ध है, उससे उनका जन्म-स्थान काशी सिद्ध होता है, क्योंकि वे वहीं के लहरतारा नामक तालाब के किनारे पड़े पाए गए बताए जाते हैं। जिसकी पुष्टि कबीर की ही निम्नलिखित उक्तियों से होती है–

''तू ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा बूझहु मोर गियाना।''
''कासी में हम प्रगट भये हैं रामानन्द चिताए''
''सकल जन्म सिवपुरी गंवाया''

धनी धरमदास ने उनके विषय में लिखा है–

''प्रगट भए कासी में दास कहाया''

तो अनन्तदास की परचई में भी यह उल्लेख मिलता है–

''सांचौ भगत कबीर है कासी प्रगट्यौ आई।''

इस प्रकार कबीर का जन्म-स्थान काशी होने के विषय में अन्त:साक्ष्य और बहि:साक्ष्य दोनों ही मिलते हैं, किन्तु इन्हें पूर्णतया आश्वस्त भाव से सत्य नहीं स्वीकार किया जा सकता। उदाहरणार्थ कबीर का यही कहना कि 'तू बाह्मण मैं कासी का जुलाहा' अथवा 'सकल जन्म सिवपुरी गंवाया' यह तो प्रकट करता है कि वे काशी में रहे थे, किन्तु इसके आधार पर यह सिद्ध नहीं होता कि उनका जन्म भी वहीं हुआ था। उनकी एक पंक्ति इस प्रकार भी है कि–

''पहले दरसन मगहर पायौ पुनि कासी वसे आई।''

जिससे यह ध्वनित होता है कि वे मगहर में पैदा हुए थे और बाद में काशी में आकर निवास करने लगे थे। इस पंक्ति में प्रयुक्त 'दरसन' शब्द भी विवादास्पद रहा है। जो विद्वान उनका जन्म-स्थान काशी मानते हैं, वे इसका अर्थ

ईश्वर-दर्शन ग्रहण करते हैं, जबकि वे विद्वान् जो उनका जन्म-स्थान मगहर स्वीकार करते हैं, वे इस शब्द का अर्थ जन्म लेना मानते हैं।

कबीर के जन्म-स्थान के विषय में निम्नलिखित स्थलों का ज्ञान होता है–

1. **मगहर :** डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत और डॉ. रामकुमार वर्मा कबीर का जन्म-स्थान मगहर मानते हैं।

2. **काशी :** डॉ. सरनाम सिंह शर्मा, कबीर-पंथियों में प्रचलित मत तथा कबीर की कुछ उक्तियों से उनका जन्म-स्थान काशी सिद्ध होता है।

3. **मिथिला :** डॉ. सुभद्र झा ने कबीर की जन्मस्थली मिथिला सिद्ध की है।

4. **आजमगढ़ जिले का बेलहर गांव :** पं. चन्द्रबली पांडेय आदि कुछ विद्वानों ने कबीर का जन्म-स्थल आजमगढ़ जिले का बेलहरा नामक गांव स्वीकार किया है।

5. **मगहर और काशी का मध्यवर्ती जंगल :** डॉ. रामजी सहायक ने गौने के बाद मगहर से काशी आती हुई नीमा के मार्ग में प्रसव होने का अनुमान व्यक्त किया है।

6. **चन्दवार :** डॉ. पारसनाथ तिवारी ने यह तो स्पष्ट नहीं किया कि यह चन्दवार किस जिले में स्थित था, किन्तु बहि:साक्ष्यों के आधार पर उनका जन्म-स्थान चन्दवार मानने पर बल दिया है।

7. **टक्क-प्रदेश या कुरह :** डॉ. माताप्रसाद ने कबीर की जन्म-स्थली पूर्वी पंजाब का टक्क प्रदेश या कुरह होने का मत व्यक्त किया है।

इस विषय में हमारा विनम्र मत यह है कि परम्परागत अनुश्रुति शिशु कबीर का काशी के लहरतारा नामक तालाब के समीप मिलना मानने के पक्ष में है। उनकी बहुत-सी उक्तियों से भी यही ध्वनि निकलती है कि वे काशी में उत्पन्न हुए थे, तथा डॉ. सरनामसिंह शर्मा ने उनकी जन्मस्थली काशी मानने के विषय में जो तर्क दिए हैं वे अपेक्षाकृत अधिक सबल है, अत: कबीर की जन्म-स्थली काशी ही स्वीकार करनी चाहिए।

माता-पिता और जाति : कबीर के माता-पिता के निर्धारण से ही उनकी जाति का प्रश्न जुड़ा हुआ है। कबीर-पंथियों के ग्रंथों में तो वे दिव्य पुरुष सिद्ध किए गए हैं। जैसे–

(क) "हम **प्रगटे** चन्दवारे जाई। पूरब प्रमल सब्द गुहराई।
बरसायत दिन हम **प्रगटाना**। ताल मांहि पुरइन भल जाना।" (निर्भय ज्ञान)

(ख) "आसन कर आयो चन्दवारा, चन्दन साहु तहां पग धारा
बाल रूप धर आयो तहंवा, आठे पहर रह्यौ मैं जहंवा।
कछु दिन **काया धरि** दुख पाया।" (ज्ञान सागर)

(ग) "जेठ सुदी बरसात को, पूरनमासी **प्रगट भए।**" (चरित्र बोध)

किन्तु आधुनिक वैज्ञानिक युग में उपर्युक्त धारणा को स्वीकार नहीं किया जा सकता। इसके विषय में तो मात्र यही कहा जा सकता है कि जैसे अन्य धार्मिक सम्प्रदायों ने अपने धर्म या पन्थ के प्रतिष्ठापकों की उत्पत्ति को दिव्य मानने वाली कल्पित कथाएँ गढ़ ली हैं, वैसा ही प्रयास कबीर-पन्थियों ने भी किया है।

जनश्रुति के रूप में यह कथा बड़ी प्रसिद्ध रही है कि कबीर किसी विधवा ब्राह्मणी की सन्तान थे। इस विषय में यह कथा भी घड़ ली गई है कि उस विधवा को रामानन्द ने भूल-वश अर्थात् उसे सधवा जानते हुए, पुत्रवती होने का आशीर्वाद प्रदान कर दिया था, जो फलीभूत होकर ही रहा। कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि वे योनिज सन्तान न होकर हथेली से उत्पन्न हुए थे और इसीलिए उन्हें आरम्भ में 'करवीर' कहा जाता था, जो बाद में बिगड़कर कबीर बन गया। जो लोक लज्जा के कारण उन्हें काशी के लहरतारा नामक तालाब के किनारे छोड़ गई थी, जहाँ से उन्हें नीरू और नीमा नामक जुलाहे उठा ले गये थे। डॉ. सरनामसिंह ने इस किंवदन्ती का खंडन करते हुए लिखा है–

नोट

"इस किंवदन्ती से यह बात कि 'कबीर नीमा के औरस पुत्र थे' विवाद में पड़ जाती है। विधवा ब्राह्मणी के पुत्र होने की बात न तो अन्त: साक्ष्य से पुष्ट होती है और न बहि:साक्ष्य से ही। हो सकता है कि इस किंवदन्ती का आधार कबीर की यह उक्ति रही हो–

'पूरब करम हम ब्राह्मण होते, ओछ करम तपहीना'

क्या 'पूरब जनम' का अर्थ 'जन्म के प्रारंभ में' ग्रहण किया जा सकता है? मैं समझता हूँ कि इसका अर्थ स्पष्टत: यह है–'हम पूर्वजन्म में ब्राह्मण थे। अधर्म कर्म होने से हमें इस जन्म में जुलाहा बनना पड़ा।' इस प्रकार इस अर्थ के समक्ष किंवदन्ती निरस्त हो जाती है। फिर यह क्यों न मान लिया जाए कि कबीर नीमा के औरस पुत्र ही थे? कबीर का विधवा ब्राह्मणी का पुत्र होना असंभव नहीं है। अतएव यही मानना समीचीन है कि कबीर नीमा के औरस पुत्र थे।

क्या आप जानते हैं कबीर की जाति आदि के संबंध में डॉ. सरनाम सिंह शर्मा का अपना मत यह है कि कबीर मुसलमान जाति के जुलाहे थे। उनके परिवार में पद जोगियों के संस्कार थे। संभवत: उनके पूर्वज जुग्गी या जोगी जाति के थे, जिनका व्यवसाय कोरी का था। इन लोगों ने धर्म बदलने पर भी अपने वंश-व्यवसाय को नहीं बदला।

यहाँ हम डॉ. विद्यावती मालविका के 'हिन्दी साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव' शीर्षक शोध-प्रबंधन में कबीर की जाति के विषय में जो एक नया प्रकाश डाला गया है, उसे प्रस्तुत करना भी आवश्यक समझते हैं। डॉ. विद्यावती मालविका के अनुसार–"कोरी अथवा कोली वस्तुत: 'कोलिय' के ही विकृत रूप हैं। प्राचीन युग में यह एक प्रसिद्ध जाति रही है। स्वत: सिद्धार्थ गौतम की माँ महामाया कोलिय राजवंश की थीं। कोलियों का अपना एक जनपद था जिसकी राजधानी देवदह थी। पालि ग्रंथों में इस जाति का विस्तृत परिचय दिया हुआ है जिसके अनुसार इनका मुख्य उद्यम खेती करना और वस्त्र बनाना था। इस कुल की महारानियाँ तक सूत कातती और बुनती थीं। एक ग्रंथ में गौतम बुद्ध को महाप्रजापति गौतमी द्वारा अपने काते बुने वस्त्र भेंट करने का उल्लेख मिलता है। कालान्तर में यह कोलिय जाति सम्पूर्ण देश में फैल गई थी और आज भी सम्पूर्ण भारत में इस जाति के लोग हैं, जो अछूत न होते हुए भी अछूत माने जाते हैं। मध्य युग में यवन आक्रमणों से बौद्धों को बड़ा कष्ट भोगना पड़ा था, वे या तो इस देश से भाग गये या हिन्दू धर्म में घुल-मिल गये अथवा मुसलमान हो गये। "कबीर के पूर्वज यही कोलिय राजपूत थे जो मुसलमान हो गये थे। यही कारण है कि कबीर की वाणियों में बौद्ध, हिन्दू और इस्लाम धर्मों की विचारधारा के प्रमाण दीख पड़ते हैं। कबीर के परिवार वाले नये-नये मुसलमान बने थे, किन्तु संस्कार उनके बौद्ध धर्म के थे। अत: वे हिन्दुओं तथा मुसमलमानों की अनेक धार्मिक भावनाओं पर आघात करते थे।" उनके ही शब्दों में–"संक्षेप में कहा जा सकता है कि कबीर की जाति कोरी जाति थी जो प्राचीन कोलिय जाति से सम्बद्ध थी और जिसे जुलाहा नाम से भी पुकारा जाता था। इसीलिए कबीर ने अपने को जुलाहा और कोरी कहा है तथा इनमें भेद नहीं माना है।"

नामकरण : कबीर के नामकरण के संबंध में डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने यह मत व्यक्त किया है–

"कबीर ने अपनी रचनाओं में सर्वत्र अपने कबीर नाम का उल्लेख किया है। इस कबीर नाम के संबंध में बहुत-सी जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध हैं। एक किंवदन्ती है कि कबीरदास जी का जन्म हाथ के अंगूठे से हुआ था, इसलिए उन्हें करवीर या कबीर कहा जाने लगा। इस संबंध में एक दूसरी किंवदन्ती भी है। कहते हैं कि कबीर के नामकरण के अवसर पर काजी ने जब नाम निश्चित करने के लिए कुरआन खोला तो उसे सबसे प्रथम कबीर शब्द दिखाई पड़ा इसलिए उसने इसका नाम कबीर रख दिया। कबीर का 'कबीर' नाम पूर्ण सार्थक भी था। अरबी भाषा में कबीर का अर्थ महान होता है। यह प्राय: ईश्वर के विशेषण के रूप में ही प्रयुक्त होता है। कबीर ने जहाँ अपनी रचनाओं में अपने नाम की मुहर लगाने के लिए इस नाम का प्रयोग किया है, वहीं उन्होंने अपने वास्तविक अर्थ 'महान' के अर्थ में भी प्रयुक्त किया है–

कबीर तू ही कबीरु तू तोरो नाम कबीर।
राम रतन तब पाइकै जड़ पहिलै लजहि शरीर।

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा ने कबीर शब्द का उपदेशक, व्याख्याता, प्रबोधक, सम्बोधक, प्रश्नकर्ता, आह्वानकर्ता के रूप में प्रयोग दिखाते हुए, जैसे–

1. उपदेशक :

"कहै कबीर राजा राम न छोड़ौं
सगल ऊंच ते ऊंचा।"

2. व्याख्याता :

"या जोगी की जुगति जो जानै,
सो सतगुरु को चेला।
कहै कबीर उन गुरु कृपा थैं,
तिनि सब भरम पछेला।"

3. प्रबोधक :

"कहि कबीर मैं कहि कहि हार्यौ,
अब मोहि दोस न लाई।"

4. सम्बोधक :

(क) लोक सम्बोधक :

"परिहरि काम राम कहि बौरे,
सुनि सिख-बुध मोरी।
हरि को नांव अभयपद दाता,
कहै कबीरा कोरी।"

(ख) परमात्म-सम्बोधक :

"जन कबीर तेरी पनह संमाना।
भिस्त नजीक राखि रहिमांना।"

(ग) आत्म-सम्बोधक :

"दास कबीर भजि सारंगपानि।"

5. प्रश्नकर्ता :

"आवै गगनां अंते गगनां, मधे गगनां माई।
कहै कबीर करम किस लागै, झूठी संक उपाई।"

6. आह्वानकर्ता :

"कहै कबीर दास मैं चेला, जिनि यहु तरुकर पेष्या।"

अंततः यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है–

"इस पर्यवेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि कबीर ही मौलिक नाम है इसके साथ 'दास' और 'जन' शब्दों का प्रयोग भावना का द्योतक है। जिस प्रकार 'जन कबीर' उसी प्रकार 'दास कबीर' के प्रयोग से अपनी वाणी में कबीर ने अपने भगवद्दासत्व की ओर ही इंगित किया है। कबीरदास, कबीरसाहब नामों का प्रयोग आदर व्यक्त करने

नोट

के लिए कबीर के अनुयायियों ने किया है। श्रद्धालु आलोचकों (जैसे श्री परशुराम चतुर्वेदी) ने भी इस आदर-भाव को अक्षुण्ण रखा है।"

कबीर नाम से जिस प्रकार उनके व्यक्तित्व का परिचय मिल जाता है, उसी प्रकार उनकी जाति के संबंध में भी संकेत मिल जाता है। जिस प्रकार नीरू या नूरी शब्द मुसलमान नाम के द्योतक हैं उसी प्रकार कबीर नाम भी मुसलमान नाम का ही संकेतक है। वह बिजली खां, फिदाई खां, सिकन्दर खां आदि नामों की सूची में अर्थात्: भले ही गुरुतर हो, किन्तु जातित: हीनता का ही बोधक है।....."मैं समझता हूँ जो काम अपने आसन से कबीर ने किया उसको अकबर अपने सिंहासन से भी न कर सका। समाज, धर्म अध्यात्म के क्षेत्र में कबीर ने जिस क्रान्ति को जन्म दिया उससे उसका नाम सार्थक हो गया।"

पत्नी-पुत्रादि: कबीर ने पत्नी-पुत्रादि के विषय में विभिन्न प्रकार के मत प्रचलित हैं। डॉ. सरनामसिंह शर्मा के शब्दों में–

"कुछ लोगों का, विशेषत: कबीर-पंथियों का विश्वास है कि कबीर अविवाहित थे। उनके अनुसार लोई, जिसे कबीर की पत्नी मानते हैं, कबीर की शिष्या थी। अन्त:साक्ष्य से कबीर के गृहस्थ-जीवन का ज्ञान होता है। अपनी रचनाओं में कबीर ने अनेक स्थलों पर 'लोई' शब्द का प्रयोग किया है। लोई के संबंध में यह प्रवाद है कि वह किसी वनखंडी महात्मा को लोई में लिपटी मिली थी। उसी ने कन्या का लालन-पालन किया और बड़ी होने पर कबीर के साथ उसका विवाह कर दिया। 'लोई' शब्द का प्रयोग कबीर-वाणी में 'लोग' और 'लोई' (व्यक्तिवाचक संज्ञा) दोनों के अर्थों में हुआ है। लोई कबीर की पत्नी थी" इसका प्रमाण कबीर के ही ये शब्द है–

हम तुम बीच भयौ नहीं कोई, तुमहि सुकंत नारि हम सोई।
कहत कबीर सुनहु रे लोई, जब तुमरी परतीति न होई॥

ऐसे ही प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि कबीर विवाहित थे। लोई उनकी शिष्या नहीं वरन् पत्नी थी।

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने इस विषय में यह मत व्यक्त किया है कि–

"कबीर वैरागी होते हुए भी गृहस्थ थे। उन्होंने वैवाहिक जीवन व्यतीत किया था तथा ससन्तान भी थे। अब प्रश्न यह है इनकी स्त्री का क्या नाम था, वे कौन थीं? अनेक किंवदन्तियों के आधार पर परंपरा लोई को इनकी स्त्री मानती आ रही है। कबीर ने अपनी रचनाओं में कई बार लोई शब्द का प्रयोग किया है; वह भी अधिकतर सम्बोधन में है। **जिस प्रकार शिवजी ने पार्वती को** उपदेश दिये थे, सम्भवत: उसी प्रकार कबीर ने अपने बहुत से उपदेश लोई, जो सम्भवत: उनकी स्त्री ही थी, को सम्बोधित कर प्रवर्तित किये थे। लोई के संबंध में प्रवाद है कि वे किसी वनखंडी वैरागी को लोई में लिपटी हुई नवजात कन्या के रूप में गंगाजी के तट पर मिली थी।.....बड़ी होने पर उसका विवाह कबीर से हो गया। **संबंध बड़ा उपयुक्त और सम था। अगर वर के पिता का पता न था तो दुलहिन के माता-पिता दोनों ही अज्ञात थे।** एक अन्य किंवदन्ती है कि लोई पहले तो कबीर की शिष्या थी किंतु बाद में उनकी पत्नी बन गयी थी। कुछ भी हो, परंपरा के आधार पर हम कबीर की पत्नी का नाम लोई मान सकते हैं।"

नोट्स सन्त कबीर की जन्म-तिथि विद्वानों के मध्य विवाद का विषय रही है।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने कबीर की एक के स्थान पर दो पत्नियों का अनुमान करते हुए कहा है कि "उनमें से पहली कुरूप थी और उसकी जाति-पांति का कोई पता नहीं था (यह बात लोई के संबंध में घटित होती है।) उसमें गार्हस्थ्य के भी कोई लक्षण न थे। दूसरी स्त्री सम्भवत: सुन्दर और सुलक्षणा थी। पहली का नाम लोई और दूसरी का धनिया था। लोग इसे रमजनिया भी कहते थे।" कबीर के नाम से प्रसिद्ध निम्नांकित दोहे का इंगित उनके द्वारा लोई के परित्याग की ओर माना जा सकता है–

"नारी तो हम भी करी, कीया नहीं विचार।

जब जानी तब परिहरि, नारी बड़ा विकार॥"

इस संदर्भ में यह तथ्य विशेषत: ध्यातव्य है कि मुसलमानों में पत्नी को तलाक देना बहुत आसान है, और थोड़ी सी भी अच्छी आर्थिक स्थिति के लोग चार-चार, पाँच-पाँच विवाह करते रहे हैं। एकाधिक पत्नियाँ होना तो उनमें आम बात रहती आयी है और अब भी है, जिसके मूल में यह विश्वास क्रियाशील रहता आया है कि जितने भी अधिक बच्चे पैदा किये जाएँ उतना ही उत्तम है, क्योंकि जितनी बड़ी तादाद में अल्लाह का नाम लेने वाले पैदा हों, धर्म-प्रचार की दृष्टि से उतना ही श्रेयस्कर है।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने यह भी अनुमान किया है कि सम्भवत: रमजनिया वेश्या थी। इस विरोध में डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत का कथन है कि–

"इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि कबीर की दो स्त्रियाँ रहीं, किन्तु उनमें से एक वेश्या थी, यह नहीं कहा जा सकता। कबीर भक्त थे। उनकी दोनों स्त्रियों में जो भक्तिन होगी, कबीर को वह अधिक प्रिय होगी। उसी को वे सुलक्षणा और सुन्दर भी मानते होंगे। मेरी समझ में रमजनिया का अर्थ वेश्या न लेकर भक्तिन लेना अधिक उपयुक्त है।"

कबीर की दो पत्नियों का होना स्वीकार करते हुए भी डॉ. सरनामसिंह शर्मा भी उनमें से एक का वेश्य होना स्वीकार नहीं करते। उनके ही शब्दों में–

"यह संभव हो सकता है कि कबीर की दो पत्नियाँ रही हों, किन्तु उनमें से एक वेश्या थी, यह नहीं कहा जा सकता। कबीर-ग्रंथावली में दो पद (पृ. 165/229 तथा पृ. 305/136) ऐसे हैं जिनसे डॉ. रामकुमार वर्मा के इस अनुमान की पुष्टि होती है कि कबीर की दो पत्नियाँ थीं।"

कबीर के पुत्र-पुत्रियों के संदर्भ में उनके कमाल नामक पुत्र तथा कमाली नामक पुत्री का होना स्वीकार किया जाता है। कबीर अपने पुत्र से संतुष्ट न थे, जैसाकि उनकी इस उक्ति से स्पष्ट है–

"डूबा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल।"

कबीर न तो अपनी पत्नी लोई की ओर से संतुष्ट थे और न पुत्र की ओर से ही, जिससे उनके असंतुष्ट पारिवारिक जीवन का संकेत मिलता है। एक स्थल पर कबीर ने अपनी इस असंतुष्टि का स्पष्ट उल्लेख किया भी है–

"जादि का भाई जनमिया, कहूं न पाया सूख।

डाली-डाली मैं फिरौं पाती-पाती दु:ख॥"

कबीर के दीक्षा-गुरु: कबीर के विद्या-गुरु का प्रश्न तो इस तथ्य की दृष्टि से उपेक्षणीय ही है कि उन्होंने स्वयं ही यह कहकर कि–

"मसि कागद छूऔ नहीं, कलम गही नहीं हाथ।"

इस तथ्य का स्पष्टीकरण कर दिया है कि उन्होंने किसी पाठशाला में शिक्षार्जन नहीं किया था। जहाँ तक उनके दीक्षा-गुरु का प्रश्न है, इस विषय में निम्नांकित मत प्रसिद्ध हैं–

1. कबीर का कोई भी दीक्षा-गुरु नहीं था।
2. वे शेख तकी के मुरीद (शिष्य) थे।
3. उनके दीक्षा-गुरु रामानंद थे।
4. उनके दीक्षा-गुरु पीताम्बर पीर थे।

1. कबीर का कोई गुरु न मानने वालों में कबीर-पंथियों और डॉ. मोहन सिंह का नामोल्लेख किया जा सकता है।

नोट

2. शेख तकी : मैलकाम साहब, वेस्कट साहब और डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी ने मौलाना गुलाम सरवर के खजीन तुला असफिया के निम्नांकित साक्ष्य के आधार पर शेख तकी को दीक्षा गुरु या उन्हें शेख तकी का मुरीद (शिष्य) स्वीकार किया है–

"शेख कबीर जुलाहा शेख तकी के उत्तराधिकारी तथा शिष्य थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने परमेश्वर और उसकी सत्ता के विषय में हिन्दी में लिखा। धार्मिक सहनशीलता के कारण हिन्दू और मुसलमान दोनों ने उन्हें अपना नेता माना.....उनकी मृत्यु सन् 1594 ई. में हुई और उनके पीर शेख तकी सन् 1575 ई. में मरे थे।"

मौलाना गुलाम सरवर का यह कथन इस दृष्टि से ही संदेहास्पद है कि इसमें कबीर का निधन काल बहुत बाद में अर्थात् संवत् 1651 वि. में दिखाया गया है जबकि अधिकांश विद्वान उसे 1575 वि. मानते हैं।

डॉ. गोविंद त्रिगुणायत, डॉ. पारस नाथ तिवारी, डॉ. सरनामसिंह शर्मा और रामचन्द्र शुक्ल ने इस मत का खण्डन किया है।

3. स्वामी रामानंद : विद्वानों का एक बृहत् वर्ग स्वामी रामानन्द को ही कबीर का दीक्षा-गुरु स्वीकार करता है, जिनमें डॉ. भंडारकर, मिस्टर मेकालिक, डॉ. श्यामसुन्दर दास, पं. रामचंद्र शुक्ल, डॉ. बड़थ्वाल और डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत और डॉ. सरनामसिंह शर्मा के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

डॉ. सरनाम सिंह ने सात प्रकार के प्रमाणों के आधार पर रामानन्द को ही कबीर का दीक्षा गुरु सिद्ध किया है। ये प्रमाण हैं–

1. जनश्रुति
2. समकालीनता
3. कबीर की निजी उक्ति
4. अन्य महात्माओं की वाणियाँ तथा प्राचीन कृतियाँ
5. उर्दू-फारसी के ग्रंथ
6. कबीर के औक्तिक संकेत
7. राम-नाम के प्रति कबीर का आग्रह

1. इस संदर्भ में उन्होंने वही गंगा-घाट की सीढ़ियों पर कबीर के लेट जाने और स्वामी रामानंद जी का कबीर पर पैर पड़ जाने की दशा में राम-राम कह उठने की जनश्रुति प्रस्तुत की है। इस जनश्रुति के अंतिम भाग को इस रूप में प्रस्तुत करते हुए–

"कबीर ने चट उठकर उनके पैर पकड़ लिए और कहा कि राम-नाम का मंत्र देकर आज आप मेरे गुरु हो गये। रामानन्द जी से कोई उत्तर देते न बन पड़ा। तभी से कबीर ने अपने को रामानन्द का शिष्य प्रसिद्ध कर दिया।"

अपनी यह राय व्यक्त की है–

"यह ठीक है कि जनश्रुतियों का कोई प्रमाण नहीं होता, किन्तु वे बिल्कुल निराधार नहीं होती हैं। अतएव रामानन्द और कबीर के संबंध को जनश्रुति कहकर झुठलाया नहीं जा सकता।"

2. द्वितीय तर्क 'समकालीन' के रूप में डॉ. शर्मा ने कबीर और स्वामी रामानन्द की समकालीनता का विरोध करने वाले मत का नाना प्रमाणों से खंडन करते हुए, उनकी समकालीनता सिद्ध की है।

3. कबीर की उक्तियाँ : डॉ. सरनाम सिंह शर्मा भी स्वीकार करते हैं कि कबीर-ग्रंथावली में रामानन्द और कबीर का संबंध दिखाने वाली उक्तियाँ नहीं मिलतीं, तो भी उन्होंने इस विषय में कबीर वचनावली की निम्नांकित उक्ति प्रस्तुत की है–

"कासी में हम प्रगट भये हैं रामानन्द चेताए।
समरथ का परवाना लाए, हंस उबारन आए॥"

वे कहते हैं कि इस उक्ति को कबीर की रचना मानने का कोई पुष्ट कारण तो नहीं है, फिर भी इसे किंवदन्ती का बल प्राप्त है। रामानन्द की मृत्यु का उल्लेख करते हुए कबीर ने बीजक के एक पद में उनकी महिमा इस प्रकार गाई है–

"आपन आस किये बहुतेरा, काहु न मरम पाव हरिकेरा।
× × × ×
रामानन्द राम राम माने, कहहिं कबीर हम कहि कहि थाके।"

इस उक्ति में गुरु-शिष्य संबंधी कोई भाव न होने पर भी स्वामी रामानन्द की महत्त्व स्वीकृति को वे उनके गुरुत्व का सूचक मानते हैं।

4. अन्य महात्माओं की वाणी : इस संदर्भ में उमा शर्मा ने नाभादास कृत भक्तमाल की निम्नांकित छप्पय उद्धृत किया है–

"श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जागरतन कियौ
अनन्तानन्द कबीर सुखा सुरसुरा पद्मावति नरहरि।
पीपा भावानन्द, रैदास, धना सेन सुरसर की थरहरि
औरों शिष्य प्रेंशिष्य एक ते एक उजागर
विश्व मंगल आधार सर्वानन्द दशधर के आगर।
बहुत काल बदु धारि कै प्रनत जनन को पाशदियौ।
श्री रामानन्द रघुनाथ ज्यों दुतिय सेतु जगतरन कियौ।"

भक्तमाल की टीका में डॉ. सरनामसिंह शर्मा के अनुसार कबीर का विस्तृत जीवन-वृत्त दिया हुआ है, जिससे पाँच बातों पर प्रकाश पड़ता है–

1. कबीर रामानन्द के शिष्य थे।
2. कबीर सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। सिकन्दर लोदी ने उन पर अत्याचार किए थे और वह काशी भी भाग गया था।
3. उन्होंने अपनी अलौकिक शक्ति से सुल्तान और उसकी बेगम को आश्चर्यचकित कर दिया था।
4. वे जुलाहे का व्यवसाय करते थे। राम-भजन में निमग्न रहने के कारण उन्होंने अपने धंधे को तिलांजलि दे दी थी।
5. मगहर फूलों पर लेटकर वे हरि में लीन हो गये थे।

इसी प्रकार अनन्तदास की कबीर साहब की परचई, दरिया साहब के ज्ञान-दीपक, हरिराम शुक्ल, कबीर के कट्टर भक्त गरीबदास आदि लोगों ने रामानन्द का कबीर के गुरु के रूप में उल्लेख किया है। अनन्तदास के अनुसार–

"भाग बड़े गुरु रामानन्द पाया। जा मन मरन का भरम गंवाया।"

श्री गरीबदास के शब्दों में–

"गरीब रामानन्द से लख गुरु तारे चेला माई
चेलों की गिनती नहीं, पद में रहे समाइ।"

नोट

5. उर्दू-फारसी के ग्रंथ : दविस्ता ने मजहब औद तजनीरुल फुकरा, खजीन, स्वामी रामानन्द को ही कबीर का गुरु बताया है।

6. कबीर के औक्तिक संकेत : डॉ. शर्मा के अनुसार कबीर ने अपनी वाणी में कई स्थानों पर ऐसे संकेत किए हैं जिनके लक्ष्य रामानन्द ही हैं, जैसे–

1. "कबीर गुरु गुर बसै बनारसी, शिष्य समदां तीर।
   बिसरया नहीं बीसरै, जै गुण होइ सरीर।"
2. "निज धन व्यान भगति गुरु दीनी,
   तासु सुमति मन लागी।",
3. "वैष्णव की कूकरि भली, साकत की बुरी माई।"
4. "भगति नारदीं रिदै न आई काछि काछे तन दीन्हा।"
5. "मेरी जिभ्या विस्न नैन नराइंन, हिरदे ज्यों गोविन्दा।"

उनके अनुसार उक्त उद्धरणों की मीमांसा करने पर ये तथ्य सामने आते हैं–

1. कबीर के गुरु बनारस में रहते थे।
2. कबीर को गुरु ने ज्ञान, भक्ति का धन दिया, जिसके प्रति उनकी सुमति जागृत हुई।
3. कबीर वैष्णव को उत्तम मानते थे।
4. कबीर का झुकाव नारदी (प्रेमा) भक्ति की ओर था।
5. कबीर अपने गुरु की भाँति वैष्णव भक्त थे।

इन संकेतों के आधार पर रामानन्द कबीर के गुरु रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हो जाते हैं।

7. राम-नाम के प्रति आग्रहः रामानन्द ने अपनी भक्ति में राम-नाम को प्रतिष्ठत किया था। यही राम-नाम उन्होंने कबीर को दिया, जिसे कबीर ने बड़ी दृढ़ता से अपनाया। गुरु-प्रदत्त धन होने के नाते कबीर ने राम-नाम को केवल अपनाया ही नहीं वरन् उसको अपना र्स्वस्व बना लिया। इसीलिए वे स्थान-स्थान पर राम-नाम का गुणगान करते हैं।

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा का निष्कर्ष है कि "इस पूर्ण विवेचन के आधार पर यही निष्कर्ष निकलता है कि कबीर के गुरु रामानन्द ने ही कबीर को राम नाम का मंत्र देकर प्रेम-भक्ति में दीक्षित किया।"

मृत्यु तिथि : कबीर की मृत्यु के विषय में चार पद्यात्मक उक्तियाँ प्रसिद्ध हैं–

(क) संवत् पन्द्रह सौ औ पाँच भौ मगहर कियौ गमन।
अगहन सुदी एकादसी, मिले पवन में पवन।

(ख) संवत् पन्द्रह सौ पछत्तरा, कियो मगहर को गवन।
माघ सुदी एकादसी रलो पवन में पवन।

(ग) संत पन्द्रह सौ उनहत्तरा आई।
सतगुरु चले उठ हंसा धाई।

(घ) पन्द्रह सौ उनचास में मगहर कीनौ गौन।
अगहन सुदी एकादसी, मिली पवन में पवन।

उपर्युक्त उद्धरणों में इस तथ्य की तो प्राप्ति होती है कि अपनी मृत्यु की घड़ी समीप आने पर कबीर मगहर चले गये थे जिससे उस अंधविश्वास का खंडन हो सके कि मगहर में मरने वालों को सद्‌गति नहीं मिलती, किन्तु उनकी मृत्यु संख्या 1505, 1575, 1569 और 1549 में प्रदर्शित की गई है। कबीर के जन्म काल के संदर्भ में दिए गए विभिन्न विद्वानों के मतों संबंधी आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सर्वश्री वेस्टकाट, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और डॉ. श्यामसुन्दर दास, मेकालिफ और भंडारकर कबीर का मृत्यु काल संवत् 1575 वि. मानते हैं और हमें भी यही तिथि स्वीकार्य है।

चरित्र एवं स्वभाव की विशेषताएँ : श्री परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार, "कबीर बड़े सरल एवं निश्छद्म साधु थे। वे जो भीतर थे वही बाहर थे। भीतर और बाहर के विरोध को वे घृणा करते थे।" उन्होंने उनके जीवन में सहजता और सादगी की प्रधानता दिखाते हुए कहा है कि–

"सहज उनका सिद्धांत था, सादगी उनका जीवन था। दाल रोटी से तृप्त रहने वाले उस साधु को न तो नाना प्रकार के सरस व्यंजनों की कामना थी और न दूध तथा फलों के आहार का आग्रह। अन्न छोड़ने वाले को ये अच्छा नहीं समझते थे।"

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा के शब्दों में–

"नाम-जप की भाँति वे अन्न-जप का भी उपदेश देते हैं। वे न तो महल मेंड़ी चाहते थे और न गिलम-गेंदुआ। उन्होंने एक पद में सामान्यतम जीवन की आवश्यकताएँ निवेदित करके अपनी सादगी को प्रमाणित कर दिया है।"

उनके चरित्र एवं स्वभाव के विषय में डॉ. सरनाम सिंह शर्मा ने लिखा है–

"कबीर एक सरल मनुष्य, ऊंचे संत तथा विकट आलोचक थे। विनय, स्पष्टवादिता, निर्भयता और परदु:खकातरता उनकी सरलता के प्रमुख अंग थे, उनकी सरलता में भक्ति का भी योग था। उनके स्वभाव के विकास में कामुकता, हीनता की ग्रन्थि और मृत्यु के भय का स्थान अविस्मरणीय है। उनकी सादा रहन-सहन और सादा खुराक थी। वे सत्य प्रेमी और दयालु प्रकृति के मनुष्य थे। वे अनुभव को छिपा नहीं सकते थे।

कबीर की सन्तता में उनकी हीनता की ग्रन्थि का बड़ा योग रहा था। उनकी ओछी जाति और ऊंचे कर्मों के समझौते के लिए भक्ति या सन्तता ही उपयुक्त स्थली है। भक्ति कबीर की सन्तता का भूषण थी। वे मृत्यु से भीत थे। मृत्यु-पंथ ने उन्हें विरक्ति दी और विरक्ति ने संसार की आसक्ति, कामुकतादि से मुक्ति दी। उसके सन्तत्व में भक्ति का आग्रह परोपकारिता, अहिंसकता, परदु:खकातरता, समता की भावना तथा कथनी और करनी का समुचित संयोग है।"

उनके चरित्र एवं स्वभाव की मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित थीं–

(क) अक्खड़पन : कबीर की उक्तियों में उनके स्वभाव के अक्खड़पन की स्पष्ट झलक मिलती है। जहाँ कहीं वे किसी अवधूत या पंडित मौलवी से बातें करते हैं, उनके स्वर में अक्खड़पन का स्वत: समावेश हो जाता है। डॉ. रामजीलाल सहाय ने उचित ही कहा है कि–

"अक्खड़पन कबीर का गुण नहीं था वरन् परिस्थितियों की मांग थी, जिसकी पूर्ति कबीर को करनी पड़ी।" एक अन्य आलोचक के शब्दों में–

"कबीर की अक्खड़ता का विग्रह रूप तब सामने आता है कि जब वे किसी अवधूत से बात करते हैं, क्योंकि वे जानते थे कि यदि किसी अवधूत के सामने विनम्रतता से बात की गई तो वह उसके सिर पर चढ़कर बोलेगा और यदि एक बार उसे अपने व्यक्तित्व को ऊपर उठा ले जाने की छूट दे दी गई तो उससे पार पाना कठिन है। इसलिए अवधूत से बात करते समय वे निर्भयता से इस प्रकार अपने मत की स्थापना किया करते थे–"

नोट

"अवधू अच्छर हूंसों न्यारा।
जो तुम पवना जंगना चढ़ावो, करो गुफा में वासा
गगना, पवना दोनों विनसै, कहं गया जोग तुम्हारा।

× × × ×

इगला बिनसै, पिंगला बिनसै, सुषमनि नाड़ी।
जब उनमनि की तारी टूटै, तब कहं रही तुम्हारी।"

इसी प्रकार वे ब्राह्मण-पंडित से दबते नहीं हैं, किन्तु अपने ज्ञान पर गर्व करते हुए उसे चुनौती देते हैं–

"तू ब्राह्मन मैं कासी का जुलाहा बूझहु मोर गियाना।"

इसी प्रकार पंडित को सम्बोधित करते हुए वे कहते हैं–

"पांडे कौन कुमति तोहि लागी,
वेद पुरान पढ़त अरु पांडे, खर चन्दन जैसे मारा।

× × × ×

जीव बधत अरु धरम कहत हो, अधरम कहाँ है भाई
आपनि तो मुनिजन है बैठ, कासनि कहौं कसाई।"

इसी प्रकार काजी को ललकारते हुए वे अक्खड़तापूर्वक कह उठते हैं–

"पढ़त-पढ़त केते दिन बीते, गति एकै नहिं जानै।

× × × ×

जानि कतेब राम कहि काजी, खून करत हौ भारी।"

कबीर की इस अक्खड़ता के विषय में डॉ. सरनाम सिंह शर्मा के इस कथन से हम भी सहमत हैं कि–

"कबीर की उक्तियों में यह प्रखरता तथाकथित योगियों और वैष्णवों के प्रति ही नहीं, नर-नारियों के प्रति भी व्यक्त हुई है। शाक्तों के दुराचार के प्रति तो कबीर ने प्रखरतम उक्ति-प्रहार किए हैं। इससे कबीर की विनयशीलता कलंकित नहीं होती है। कबीर सत् के प्रति झुकते हैं, असत् प्रति नहीं। कबीर का अक्खड़पन उनके विनय को सुरक्षित रखता है। सत्य समर्थ को स्पष्टवादिता का योग मिल जाने से कबीर के अक्खड़पन का प्रादुर्भाव होता है, जो उनके शील का लांछन नहीं है।"

(ख) फक्कड़ एवं मस्तमौला : डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर के विषय में उचित ही लिखा है–

"वे सिर से पैर तक मस्तमौला थे। मस्त, जो पुराने कृत्यों का हिसाब नहीं रखता, वर्तमान कर्मों को सर्वस्व नहीं समझता और भविष्य में सब-कुछ झाड़ फटकार कर निकल जाता है।"

यह तथ्य कबीर के फक्कड़पन और मस्तमौलापन का अच्छा परिचायक है कि वे हमें यह घोषणा करते मिलते हैं कि मैंने अपना घर तो जला ही दिया है (यह माया सम्बन्धी अर्थ के साथ-साथ अभिधार्थ में भी सत्य ही है क्योंकि उनके द्वारा गृह के काम-काज छोड़कर साधु संतों की संगति में रहने के कारण उनकी माता, पत्नी पिता आदि सभी परेशान रहते थे।) और अब उनका घर मैं जलाऊंगा जो मेरे साथ चलेगा–

"हम घर जारा अपना, लिया मुराड़ा हाथ।
अब घर जारों तासुका, जो चलै हमारे साथ।"

× × × ×

"कबीरा खड़ा बजार में लिए लकुटिया हाथ।
जो घर जारों आपनों, सो चले हमारे साथ।"

कबीर के मस्तमौलापन की निम्नांकित पद में कैसी सुस्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है—

"हमन हैं इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहे आजाद या जग से, हमरन दुनिया से यारी क्या।
× × × ×
हमारा यार है हममें, हमन को इन्तजारी क्या।
खलक सब नाम अपने को बहुत कर सर पटकता है।
हमन गुरु नाम सांचा है, हमें दुनिया से यारी क्या?
× × × ×
कबीरा इश्क का मारा, दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाजुक है, हम सिर बोझ भारी क्या?"

(ग) विनम्रता : कबीर एक ओर जहां अवधूत, पंडित-मौलवियों के प्रति अक्खड़ मिलते हैं, वहीं सच्चे सन्तों का वे स्वयं को दासानुदास तथा चरण-तल की घास घोषित करते हुए अपने स्वभाव की विनम्रता का प्रकटन कर देते हैं—

"कबीर चेरा सन्त का, दासनि का परदास।
कबीर ऐसे है रहया, ज्यू पाऊं तल घास।"

हां, कबीर की इस विनम्रता के विषय में "यह अनुमान लगाने की भूल नहीं होनी चाहिए कि कबीर 'ओछे-कुल' और कमीन-जाति में उत्पन्न एवं पालित-पोषित होने के कारण इतने दीन और विनम्र थे। वस्तुत: यह उनका सत्संग जन्य गुण था। वे परम संत प्रेमी थे। सन्त सेवा को वे अपना परम सौभाग्य समझते थे।"

(घ) क्रान्तिकारिता : "कबीर ऐसी परिस्थितियों में जन्मे थे जब विषमताएँ नैराश्य, विश्वासघात, नृशंसता और विध्वंस अपना ढोल पीट-पीटकर हिन्दुओं के दुर्बल मन को भयभीत कर रही थीं। समाज में कुत्सित विचार एवं बाह्याडम्बरों का प्राबल्य था। धर्म के दावेदार मठाधीश बनकर अनाचार की लीलाएँ कर रहे थे। सामाजिक विषमताओं से तंग आकर लोग जाति परिवर्तन को उतारू हो गये थे तथा आर्थिक संकट से सामान्य जनता की रीढ़ ही टूट गई थी। भावुक कबीर से समाज की यह विषम दशा न देखी गई। बाह्यआडम्बर, असत्य अनाचार, व्यभिचार, वर्णविभेद आदि के प्रति उद्‌भूत यही प्रतिक्रिया ही कबीर के हृदय की वास्तविक क्रान्ति-भावना थी। उनकी यह क्रान्ति-भावना घृणा अथवा राग द्वेष से परे की वस्तु तथा बहुत ऊंची थी। वस्तुत: यह उनकी अहिंसक क्रान्ति भावना थी। चूंकि उनकी क्रान्तिवादी विचारधारा किसी स्वार्थ पर टिकी हुई नहीं थी इसलिए वे जिस भी कुरीति पर चोट करते थे, बड़े धडल्ले से करते थे।" उनके क्रान्तिकारी विचारों में व्यंग्य भाव की प्रधानता है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में तो—

"आज तक हिन्दी में ऐसा जबरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ है।"

उनके कतिपय ऐसे क्रान्तिकारी विचार अवलोकनीय है, जिसमें व्यंग्य का भी ऐसा तीव्र पुट है कि सुनने वाला तिलमिला जाए—

(क) मूंड़ मुड़ाए हरि मिलैं सब कोई लेइ मुंड़ाई।
बार-बार के मूंड़ते भेइ न बैकुंठ जाइ।

नोट

(ख) ना जाने तेरा साहब कैसा है?
मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहब तेरा बहिरा है।
× × × ×
पंडित होइ के आसन मारे, लम्बी माला जपता है।
अन्दर तेरे कपट-कतरनी सो भी साहब लखता है।

(ग) बकरी पाती खाति है ताकी काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात है, तिनको कौन हवाल?

(ङ) आत्मविश्वासी और स्वाभिमानी : कबीर की रचनाओं से उनके आत्मविश्वासी और स्वाभिमानी स्वभाव का स्पष्ट परिचय मिलता है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, "जहाँ कबीर में लापरवाही और मस्ती थी वहाँ अखंड आत्मविश्वास की भावना भी थी। अत: अपनी इन विशेषताओं के बल पर इन्होंने लोभन रहित भावना से हिन्दु और मुसलमान दोनों की विषाक्त परम्पराओं पर वज्रपात किये और पूरे स्वाभिमान की कुत्सित रूढ़ियों का विरोध करते हुए पूरे आत्मविश्वास के साथ यह बताया कि जिस शरीर को 'सुर, नर, मुनि' ने ओढ़कर मैला कर दिया था उसे कबीरदास ने बड़े यत्न से ओढ़ा और जैसा का तैसा रख दिया।

क्या आप जानते हैं जनश्रुति के रूप में यह कथा बड़ी प्रसिद्ध रही है कि कबीर किसी विधवा ब्रह्माणी की सन्तान थे।

डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने आगे लिखा है–

"ऐसे थे कबीर। सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के आगे प्रचंड, दिल के साफ, दिमाग से दुरुस्त, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वन्दनीय उनके आत्मविश्वास की परिचायक निम्नांकित उक्ति अवलोकनीय है जिसमें स्व-राम को वेद-शास्त्रों से भी बढ़कर बताते हैं–

"मेरा तेरा मनुआ कैसे इक होइ रे
मैं कहता हूं आंखन की देखी
तू कहता कागद की लेखी
मैं कहता सुरझावनहारी,
तू राख्यो असझाउ रे।"

(च) नारी के प्रति अनुदार दृष्टिकोण : वैसे तो कबीर द्वारा गृहस्थ जीवन व्यतीत करने का ही नहीं, उनके दो पत्नियां होने का अनुमान किया जाता है, फिर भी नारियों के विषय में उनका दृष्टिकोण बड़ा अनुदार मिलता है। इसका कारण कदाचित् यही है कि वे नारी को माया का प्रतिरूप समझते थे और जहाँ कहीं उन्होंने नारी-निन्दा की उसके मूल में उसे साधना में बाधक समझने की भावना क्रियाशील रही है। उनकी कुछ उक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

(क) एक कनक अस कामिनी दुर्गम घाटी दोय।

(ख) एक कनक अस कामिनी, विष फल कीए उपाइ।
देखे ही में विष चढ़े, खाये सूं मरि जाइ।

(ग) नारी की झांई परत अंधा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति जे नित नारी के संग।

(घ) नारी नसावै तीनि सुख, जाना पासै होई।

भगति मुगति निज ग्यान में पैसि न सकइ कोई।

(छ) परदु:खकातरता: कबीर का हृदय परदु:खकातरता से ओत-प्रोत रहता था। जब वे देखते हैं कि संसार पर दु:ख के अंगार बरस रहे हैं और वह उनसे दग्ध हुआ जा रहा है तो उनका हृदय करुणा-प्लावित हो उठता है–

"ऊंनमि विसाई बादली, बर्सण लगे अंगार।
उठि कबीरा धाह दे, दाझत है संसार।।"

(ज) परोपकार की भावना: कबीर के स्वभाव में सच्चे सन्तों जैसी परोपकारी भावना के दर्शन होते हैं। वे तो अपकारी का भी उपकार करने पर बल देते हैं–

"जो तोकू कांटा बुवै ताहि बोइ तू फूल।
तोकू फूल के फूल हैं बाकू हैं तिरसूल।"

उन्होंने गो-वध की इस दृष्टि से बड़ी निन्दा की है कि जिस गाय का माता के समान दूध पीते हैं, अहमक उसका ही वध करने में लज्जित नहीं होते–

"गाफिल गरब करैं अधिकाई,
स्वारथ अरथि बधैं ए गाई।
जाको दूध धाइ करि पीजै,
ता माता कौ वध क्यों कीजै।
लहुरे थकें दूहि पीया खीरो,
ताका अहमक भखैं सरीरो।"

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा के शब्दों में हम कह सकते हैं–

"कबीर अपने समय के सच्चे प्रतिनिधि थे। उनका वास्तविक रूप साधक का था। वे एक ही साथ निर्भिक, स्पष्टवादी और विनीत थे। दंभ और पाखंड उनको अरुचिकर थे। अहंकार और अनाचार को वे शत्रु मानते थे। पतितों और पीड़ितों को भक्ति का आकर्षण देकर वे उन्हें प्रेरणा और प्रोत्साहन देते थे। वे लोक-जीवन के अति निकट थे। सामन्य व्यक्ति को उनका चरित्र अति सामान्य प्रतीत हो सकता है, वस्तुत: वह बहुत ऊँचा था। उनके स्वभाव का सही परिचय 'सन्त' शब्द से ही दिया जा सकता है। सन्तता उनके व्यक्तित्व की सरलतम अवस्था थी।"

वे आगे लिखते हैं–

"कबीर का व्यक्तित्व जितना गूढ़ प्रतीत होता है उतना ही सरल था और जितना सरल दीखता है उससे कहीं अधिक गूढ़ था। जिस प्रकार नारियल या बादाम" को ऊपर से देखकर उसके भीतरी स्वरूप का विश्लेषण नहीं किया जा सकता उसी प्रकार कबीर के बाह्य रूप को देखकर, उनकी भर्त्सनामयी कठोर वाणी को पढ़कर उनके कोमल दयालु अन्तर का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। सच तो यह है कि वह एक सन्त, ऊँचे दर्जे के महात्मा थे। इसलिए उनके व्यक्तित्व की भावनाओं में सरल और गूढ़ दोनों रेखाओं का अनूठा मिलन है।"

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने थोड़े से ही शब्दों में उनके व्यक्तित्व का बड़ा सुष्ठु अंकन किया है–

"सत्य के उस अनन्य उपासक में श्रेष्ठ दार्शनिक बुद्धिवादिता और चिन्ता, कट्टर क्रांतियों की क्रांति और कठोरता, अनन्य भक्त की विनम्रता और प्रेम अनुभूति, सच्चे आलोचक की स्पष्टता, सच्चे साधु की आचरण प्रियता, आदर्श पुरुष की कर्तव्य पराणयता, योगियों की अक्खड़ता तथा पक्के फकीर की साधना थी।"

डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उचित ही कहा है–

"हजार वर्ष के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ।"

नोट

कृतियाँ–यह तो प्रसिद्ध है कि कबीर ने–

मसि कागद छूऔ नहीं कलम गही नहिं हाथ।

अत: उनकी रचनाएँ उनके शिष्यों द्वारा लिपिबद्ध की गयी हैं। कहा जाता है कि गुरु मुख से निकले शब्दों में कबीर के शिष्यों ने अपनी रचनाएँ भी मिला दी हैं। इसके साथ ही कोई प्रामाणिक लिपिबद्ध रूप न होने के कारण उनमें पाठ-भेद भी बहुत मिलता है। पं. परशुराम चतुर्वेदी ने कहा है कि–

"गाने वालों के मुख में पड़कर उनका रूप भी एक-सा नहीं रह गया है। अत: कबीर की प्रामाणिक रचनाओं और उनके शुद्ध पाठ का पता लगाना कठिन कार्य है।"

प्रो. एच.एच. विल्सन ने कबीर की मात्र आठ रचनाएँ बताई थीं, जबकि पादरी वेस्टकाट ने इस संख्या को बढ़ाकर बयासी तक पहुंचा दिया। हाँ, संख्या में उन्होंने कबीर की जीवनी या कबीर पन्थ से सम्बन्धित ग्रन्थों को भी सम्मिलित कर लिया था तथा कुछ ग्रन्थों को भूल से दो या तीन बार भी गिन लिया था। मिश्रबन्धुओं ने कबीर के नाम से रचित 75 ग्रन्थों की नामावली दी है, तो स्वर्गीय रामदास गौड़ ने 71; डॉ., रामकुमार वर्मा ने भी कबीर द्वारा रचित ग्रन्थों की लम्बी सूची दी है। गौड़ साहब और डॉ. वर्मा की सूचियों में निम्नलिखित रचनाओं का उल्लेख दोनों ही विद्वानों ने किया है–

1. अनुरागसागर	2. अठपहरा
3. अमरमूल	4. अर्जनामा
5. अक्षर खण्ड की रमैनी	6. अलिफनामा
7. आरती	8. अक्षर भेद की रमैनी
9. उग्र सीता	10. उग्र गान
11. मूल सिद्धान्त	12. कबीर और धरमदास की गोष्ठी
13. कबीर अष्टक	14. कबीर की वाणी
15. कबीर गोरख गोष्ठी	16. कबीर जी की साखी
17. कर्मकाण्ड रमैनी	18. कबीर-परिचय की साखी
19. कायापजी	20. चौका पर की रमैनी
21. छप्पय	22. चौंतीसा
23. जन्म बोध	24. तीसा मन्त्र
25. निर्भय ज्ञान	26. नाम महातम की साखी
27. पिथ पहचानवे कौ अंग	28. पुकार
29. बीजक	30. बीजक
31. भक्ति कौ अंग	32. ब्रह्मनिरूपण
33. रमैनी	34. भक्ति कौ अंग
35. रामरक्षा	36. राम सार
37. विचारमाला	38. रेखता
39. शब्द अहलटुक	40. विवेकसार

नोट

41. सन्त कबीर
42. शब्द वंशावली
43. सतनामा
44. बदी छोर
45. साधो कौ अंग
46. हंसमुक्तावली
47. हिंडौरा
48. ज्ञान गूदड़ी
49. ज्ञान सरोदय
50. ज्ञान सागर
51. ज्ञान स्रोत
52. ज्ञान सबोध

इन दोनों विद्वानों की सूचियों में भिन्न-भिन्न नाम वाली निम्नांकित रचनाएँ भी कबीर रचित बताई गई हैं। गौड़ साहब की सूची में दिए नाम इस प्रकार हैं–

1. दोहे
2. पद
3. कबीर पैजी
4. सुखनिधान
5. रामानन्द गोष्ठी
6. बल तक की रमैनी
7. आनन्द सागर मंगल
8. अनाथ मंगल
9. अनाथ मंगल
10. मुहम्मद की बानी
11. बसन्त होली
12. मखहोम
13. झूलना
14. चांचरा
15. खसरा
16. आगम और शब्द पारखा
17. ज्ञान बत्तीसी

डॉ. रामकुमार वर्मा की सूची के नए नाम इस प्रकार हैं–

1. भावों खण्ड चौंतीस
2. बलख की पैज
3. मंगल शब्द
4. मुहम्मद बोध
5. शब्द राग ग्लैरी और राग भैरव
6. शब्द राग काफी और फंगुव
7. ज्ञान चौंतीसी
8. सुरतिसंवाद

उपर्युक्त 52 ग्रन्थों में गौड़ साहब की सूची के 17 तथा डॉ. वर्मा की सूची के ग्रन्थों के नाम मिलाकर कबीर-रचित ग्रन्थों की संख्या 77 हो जाती है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'कबीर पन्थी साहित्य' नामक कृति में कबीर रचित बताई जाने वाली उपर्युक्त पुस्तकों की जांच की है और यह निर्णय दिया है कि "इनमें अधिकांश पुस्तकें निश्चित रूप से दूसरों की लिखी हुई हैं।"

आजकल अधिकांश आलोचक कबीर बीजक, कबीर ग्रन्थावली, कबीर वचनावली, कबीर के पद, सत्य कबीर की साखी आदि कुछ ही रचनाओं में प्रामाणिक स्वीकार करते हैं। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'कबीर' शीर्षक कृति में बीजक, कबीर ग्रन्थावली (नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित) कबीर वचनावली (ना.प्र.स. द्वार प्रकाशित) और कबीरदास की शब्दावली का अधिक प्रयोग किया है तथा बीजक के सम्बन्ध में लिखा है–

"जो हो बीजक कबीरदास के मतों का पुराना और प्रामाणिक संग्रह है, इसमें सन्देह नहीं।" वे कबीर ग्रन्थावली के विषय में कहते हैं कि–

"इस पुस्तक को एकमात्र प्रामाणिक ग्रन्थ स्वीकार किया जा सकता है। इस पुस्तक में मैंने बीजक को निस्संकोच प्रमाण-रूप में स्वीकार किया है, पर स्वयं बीजक ही इस बात का प्रमाण है कि साखियों को सबसे अधिक प्रामाणिक

नोट

समझना चाहिए, क्योंकि स्वयं बीजक ने ही रमैनियों की प्रामाणिकता के लिए साखियों का हवाला दिया है। इसलिए कबीरदास के सिद्धान्तों की जानकारी का सबसे उत्तम साधन साखियाँ हैं।" उनके अनुसार साखियों की भांति ही बीजक के शब्द भी बहुत प्रामाणिक हैं।

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने मत व्यक्त किया है कि–

"प्रामाणिकता की दृष्टि में वे ही रचनाएँ कुछ विश्वसनीय मानी जा सकती है। जो कबीर के युग की हों या उनके मृत्युकाल के कुछ वर्ष बाद की प्रतिलिपि हों। इस दृष्टि से कबीर की वाणियों के प्रकाशित संग्रहों में डॉ. श्यामसुन्दर दास द्वारा संकलित 'कबीर-ग्रन्थावली' और 'सन्त कबीर' ही प्रामाणिक माने जा सकते हैं।"

सन्त साहित्य के मर्मज्ञ भी परशुराम चतुर्वेदी ने कबीर की रचनाओं की विशेषतया तीन ग्रन्थों की चर्चा की है–

1. कबीर ग्रन्थावली (ना.प्र.स. द्वारा प्रकाशित)
2. आदि ग्रन्थ
3. बीजक।

टास्क कबीर के यथासाध्य प्रमाणिक जीवनवृत्त एवं काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

डॉ. सरनामसिंह शर्मा ने कबीर की रचनाओं के सम्बन्ध में विवेचना-विश्लेषण करने के बाद अधिक प्रामाणिक रचनाओं के विषय में जो निम्नांकित मत व्यक्त किया है, उससे हम भी सहमत हैं–

"इस पूर्व विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 'कबीर बानी' (सं. 1561 वाली प्रति) जिसके आधार पर बाबू श्यामसुन्दर दास द्वारा अनुमोदित कबीर ग्रन्थावली तैयार की गयी है और आदि ग्रन्थों में संगृहीत कबीर ही अधिक प्रामाणिक है। बीजक चाहे इतना अधिक प्रामाणिक नहीं, कबीर का महत्त्वपूर्ण धर्मग्रन्थ होने के कारण उपेक्षणीय नहीं है क्योंकि उसमें कबीर सिद्धान्तों को अधिक श्रद्धा और ईमानदारी मिली होने की सम्भावना है।"

2.2 काव्यगत विशेषताएँ

कबीर की भक्ति-भावना

कबीर के भक्ति सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालिए।

भक्ति की महत्ता-सम्बन्धी निम्नांकित उद्गारों को व्यक्त करने वाले पद देखिये–

(क) कबीर धनि वे सुन्दरि, जिन जाया वैस्नो पूत।
राम समुरि निरभै हुआ, सब जग गया अऊत।।

(ख) भाव भगति बिसवास बिन, कटै न संसै सूल।
कहै कबीर हरि भगति बिन, मुक्ति नहीं रे मूल।।

(ग) धावत जोति जनम भ्रमिं थाके
अब दुखकैं हम हाट्यौ रे।
कहि कबीर गुरु मिलत महारस,
प्रेम-भगति बिस्तार्‌यौ रे।।

(घ) जब लगि भाव भगति नहीं करिहों,

तब लगि भवसागर क्यों तरिहों।

(ङ) ब्रह्मै कथि-कथि अन्त न पाया,

राम भगति बैठे घर आया।

"भक्त-प्रवर संत कबीर को मध्ययुग की साधारण धर्म-प्राण जनता को सिद्धादि की विविध बीभत्स साधनाओं के दलदल से तथा नाथों की नीरस यौगिक प्रक्रियाओं के पंकिल-गर्त से निकालकर भाव-भक्ति की अलौकिक एवं पावन पयस्विनी में अवगाहन कराने का पूर्ण श्रेय है। यह भावभक्ति उनके अंतर्जगत् की अन्यतम विभूति थी, उनके गुरु की दिव्य देन थी। इसी को पाकर कबीर हुए थे। आज भी उनकी भाव-भक्ति-भरित भारती भारत के हृदय का हार है।"

निम्नांकित उक्ति जिसमें भक्त प्रवर कबीर द्वारा भक्ति-भावना को सात द्वीप और नव खण्ड में प्रसारकर्ता घोषित किया गया है, जानमार्गी स्वीकार किए जाने वाले कबीर की भक्ति-भावना की उद्घोषणा के साथ-साथ उनकी स्वीकृति भी व्यंजित हो रही है–

भक्ति द्राविड़ उपजी लाए रामानन्द।
परगट किया कबीर ने सात द्वीप नौ खण्ड॥

कबीर की भक्ति-भावना के संदर्भ में डॉ. पारसनाथ तिवारी ने तो यह विचार व्यक्त किया है कि–

"पाश्चात्य शैली के शिक्षित समुदाय के सम्मुख सर्वप्रथम कबीर का विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने वाले ईसाई मिशनरी थे और आरंभ में कबीर की प्रामाणिक रचनाओं के नाम पर उनके हाथ 'बीजक' का ही संकलन लगा जिसमें खण्डनात्मक उक्तियों की प्रधानता होने के कारण लोग कबीर के समाज-सुधारक रूप को ही ले उड़े और बहुत समय तक उनके संबंध में यह भ्रान्तिपूर्ण धारणा चलती रही। किन्तु कालान्तर में प्रकाशित उनकी अन्य वाणियों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि कबीर सबसे पहले वस्तुतः भक्त हैं–बाद में वे चाहे जो कुछ भी हों। परंपरा से भक्ति-साहित्य में एक दोहा प्रचलित रहा है जो इस प्रकार है–भक्ति द्रविड़ नौ खण्ड।"

"इससे यह ज्ञात होता है कि साधारण जनता में कबीर उसी भक्ति के प्रचारक माने जाते रहे हैं जिसका आंदोलन द्रविड़ देश (दक्षिण भारत) में उभार पर आया और जिसे दूसरे शब्दों में वैष्णव भक्ति कह सकते हैं। 'गुरु ग्रंथसाहब' आदि प्राचीन सन्तवाणी-संग्रहों में भी कबीर के साथ 'भगत' विशेषण जुड़ा हुआ मिलता है, जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि मध्यकाल से ही कबीर की ख्याति भक्त के रूप में अधिक थी, समाज-सुधारक या योगी के रूप में नहीं।"

किन्तु जैसा कि डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने विचार व्यक्त किया है कि कबीर की भक्ति-भावना के संबंध में यह प्रश्न उठता है कि निर्गुण अद्वैत के साथ भक्ति कैसे चल सकती है?–

"कबीरदास की इस भक्ति की व्याख्या करने का प्रयास बहुतों ने किया है। पर या तो उन्हें अनपढ़ गंवार समझकर इस प्रकार समाधान कर लिया गया है कि उन्हें निर्गुण-सगुण और द्वैत-अद्वैत आदि किसी भी विषय का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं था, या फिर उन्हें सर्वज्ञ सर्वनियन्ता समझकर उनके नाम पर विचित्र-विचित्र बातों का 'सागर' निर्माण किया गया है और मनमानी कथाएँ तैयार करके सम्प्रदाय के लोगों को भुलावा देने का प्रयत्न किया गया है। दोनों ही राहें गलत हैं। प्रथम पक्ष तो यही नहीं समझ पाता कि निर्गुण अद्वैत के साथ भक्ति कैसे चल सकती है?.. कबीर तात्विक दृष्टि से अद्वैतवादी नहीं थे और उनके 'निर्गुण राम' में और वेदान्तियों के पारिभाषिक 'निर्गुण ब्रह्म' में मौलिक भेद है। फिर भी, इसमें तो कोई संदेह नहीं कि कबीरदास राम को रूपरेखा, आकार-प्रकार, द्वैत-अद्वैत, भाव-अभाव से परे समझते थे। प्रश्न यह है कि क्या ऐसा रूपातीत भगवान् भक्ति का विषय हो सकता है?"

नोट

इस प्रश्न के समाधान-स्वरूप डॉ. द्विवेदी ने निम्नांकित तथ्य प्रस्तुत किए हैं–

(i) "सर्ववादि सम्मत यह है कि भक्ति भगवद्विषयक प्रेम को ही कहते हैं।"

(ii) "अद्वैत-भावना भक्ति के मार्ग में बाधक नहीं है, इसके प्रमाण हैं तुलसीदास, शंकराचार्य और अन्यान्य बहुतेरे शैव और तान्त्रिक साधक। इस भावना के अनुसार जीवन वस्तुतः भगवान् का ही रूप है, जो भ्रमवश अपने को पृथक् समझ रहा है। इस अंश की अपने स्वाभाविक रूप में फिर जाने की जो चेष्टा है, वह अभेदमूलक आकर्षक है। नदी के प्रवाह का प्रत्येक बिन्दु जो समुद्र की महान सत्ता में विलीन होने के लिए दौड़ लगा रहा है, वह इसी अभेद-प्रतीत जन्य प्रेम के कारण।"

(iii) भक्ति के आचार्य मानते हैं कि भगवान का स्वरूप मानवीय चिन्तन-शक्ति के वश का नहीं है। वह अचिन्त्य है। अनन्त है उसकी शक्ति और अगम्य है उसकी मूर्ति। कबीरदास ने इसी बात को समझाने के लिए भगवान को अविगत-अकल-अनुपम कहा है।

(iv) भक्त लोग मानते हैं कि इस अचिन्त्य भगवान को सच्चिदानंद कहकर यद्यपि विधिरूप से कथंचित समझाया जा सकता है (क्योंकि श्रुतियों में नेति-नेति कहकर उसे निषेधरूप में ही समझाया गया है, केवल सत्-चित् आनंद कहकर ही उसके विधिरूप की ओर इशारा किया गया है)फिर भी हम नहीं जानते कि सत्ता (सत्), चैतन्य (चित्) और आनंद के अतिरिक्त उसमें और क्या है। कितने ही भक्त होते हैं जो उसके अंश-विशेष के साथ ही अपनी अभिन्नता अनुभव करके आत्माराम हो रहते हैं। वे भगवान के केवल चैतन्य-अंश के साथ अपने चित्स्वरूप को अभिन्न समझ लेते हैं। ऐसे ही भक्त अद्वैत-वेदान्ती हैं। यद्यपि वे अपने को ज्ञानमार्गी कहते हैं तथापि वे भी वस्तुतः भगवान के परम प्रेम के ही साधक हैं।

(v) भक्तों का यह भी दावा है कि वेदान्त में जिसे ब्रह्म-जिज्ञासा या ब्रह्म की जानकारी की इच्छा कहा गया है वह वस्तुतः भक्ति ही है, क्योंकि कठोपनिषद् (2122) में साफ-साफ कहा गया है कि 'परमात्मा में जिसकी भक्ति-श्रद्धा है उसी से परमात्मा प्रसन्न होते हैं, और वे जिससे प्रसन्न होते हैं वही जिज्ञासा आदि के द्वारा उन्हें प्राप्त करता है... इसीलिए मानो 'वेदान्त दर्शन' के प्रथम सूत्र अथातो ब्रह्म जिज्ञासा' की कमी को पूरा करने के लिए ही भक्ति सूत्रकार ने कहा है–

अथातो ब्रह्म जिज्ञासा। सा परानुरक्तिरीश्वरे

(अर्थात् ब्रह्म-जिज्ञासा और कुछ नहीं है, ईश्वर विषयक परम-अनुरक्ति ही है)।

(vi) जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है, हरि भी अनन्त है, उनकी कथा भी अनन्त है और श्रुति तथा सन्त उसका अनन्त भाँति से भजन भी करते हैं–

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता।
बहु प्रकार गावहिं श्रुति सन्ता।।

श्री गुरुपदाश्रम प्रभृति जो भेद भक्ति शास्त्रों में बताए गए हैं वे अन्तिम और पूर्ण नहीं हैं। श्रवण कीर्तन आदि प्रकार भी उपलक्षण भर ही हैं। भक्ति के लिए केवल एक ही बात आवश्यक है–अनन्य भाव से भगवान् की शरणागति, अहेतुक प्रेम, बिना शर्त आत्म-समर्पण। कबीरदास में इन बातों की चरम परिणति हुई है। वह गोविन्द को बार बार पुकारकर–

गोब्यंदे, तुम्ह थैं डरपों भारी।
सरणाई आयौ क्यूं गहिए, यह कौन बात तुम्हारी।

भक्ति की परिभाषाएँ: भक्ति के विविध आचार्यों ने अनेक प्रकार से परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। 'नारद भक्ति सूत्र' में अनेक आचार्यों के मत दिए गए हैं। यथा–व्यास जी के अनुसार पूजा आदि में प्रगाढ़ प्रेम होना ही भक्ति है–**पूजादिष्वनुराग इति पाराशर्य:।**

मुनि गर्ग के अनुसार ईश्वर के गुण-कीर्तन आदि के प्रति प्रगाढ़ प्रेम ही भक्ति है–**कथादिष्विति गर्ग:।**

'शाण्डिल्यभक्ति-सूत्र' के अनुसार ईश्वर में परम अनुरक्ति का नाम ही भक्ति है–**सा परानुरक्तिरीश्वरे।**

स्वामी रामानुजाचार्य के अनुसार स्नेहपूर्वक किए गए भगवद्-ध्यान को भक्ति कहा जाता है–

'स्नेहपूर्वकमनुध्यानं भक्तिरित्युच्यते बुधै:।' तथा–**'ध्रुवानुस्मृतिरेव भक्तिशब्देन अभिधीयते'**–अर्थात् परमात्मा के निरन्तर स्मरण को भक्ति कहते हैं।

नारद ने ईश्वर के प्रति परम-प्रेम को भक्ति माना है–

"सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा, अमृतस्वरूपा च। ... यल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धो भवति, अमृतो भवति, तृप्ती भवति।"
भक्तराज प्रह्लद के शब्दों में–

या प्रीतिरिविवेकानां विषयेष्वनपायिनी।
त्वामनुस्मरत: सा मे हृदयान्मापसर्पतु।।

अर्थात् अविवेकी पुरुष की जैसी तीव्रासक्ति इन्द्रिय-विषयों के प्रति होती है, उसी प्रकार की प्रभु-स्मरण के प्रति आसक्ति होना भक्ति है।

कहना न होगा कि इन परिभाषाओं में भक्ति के लिए ईश्वर के प्रति शरणागति, प्रेम, अनन्य-निष्ठा और आत्म-समर्पण की उन्हीं भावनाओं पर बल दिया गया है, जिनका पीछे डॉ. द्विवेदी ने कबीर काव्य में प्राचुर्य होने का मत व्यक्त किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भक्ति सम्बन्धी यह आधुनिक परिभाषा द्रष्टव्य है–

"**श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।** जब पूज्यभाव की वृद्धि के साथ श्रद्धाभाजन के समीप्य लाभ की प्रवृत्ति हो, उसकी सत्ता के कई रूपों में साक्षात्कार की वासना हो, तब हृदय में भक्ति का प्रादुर्भाव होता है। जब श्रद्धेय के दर्शन, श्रवण, कीर्तन, ध्यान आदि में आनन्द का अनुभव होने लगे–जब उससे सम्बन्ध रखने वाले श्रद्धा के विषयों के अतिरिक्त बातों की ओर भी मन आकर्षित होने लगे तब भक्तिरस का संचार समझना चाहिए।"

कबीर की भक्ति भावना–कबीर की भक्ति भावना नारदी-भक्ति से प्रभावित है, जिन्होंने परमात्मा के प्रति परम-प्रेम को भक्ति बतलाया है स्वयं कबीर के ही शब्दों में–

भगति नारदी मगन सरीर।
इहि विधि भव तिर कहै कबीरा।

प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर ने स्वयं को जहाँ नारदी-भक्ति मार्ग का पथिक बताया है, वहाँ प्रेमा-भक्ति-जो प्रकारान्तर से नारदी भक्ति ही सिद्ध होती है, के लिए निम्नलिखित आत्मोदगार व्यक्त किए हैं–

हिंडोलनां तहां झूलै आतमरांम।
प्रेम भगति हिंडोलनां, तब सन्तनि को विश्रामं।

तथा

प्रेम भक्ति ऐसी कीजिए, मुनि अंमृत बरिषै चंद।
आपही आप बिचारिये, तब केता होइ अनंद रे।।

कबीर मूर्ति पूजा के तो विरोधी थे ही, उनकी भक्ति भावना में वैधी भक्ति या साकारोपासना के लिए कोई स्थान नहीं रहा है।

नोट

डॉ. त्रिगुणायन ने कबीर की भक्ति-भावना पर नारदी भक्ति के प्रेमतत्त्व तथा सूफियों के इश्क और खुमार का प्रभाव बताते हुए यह व्यक्त किया है–

"भक्ति के क्षेत्र में कबीर पर नारद का बहुत प्रभाव पड़ा है। उन्होंने बार-बार नारदी भक्ति का उपदेश दिया है। नारदी-भक्ति का प्रेमतत्त्व कबीर की भक्ति का भी आधारभूत तत्त्व है–

कहु कबीर जन भये खलासी प्रेम भगति जिन जानी।"

नारद के अतिरिक्त कबीर पर सूफियों का भी प्रभाव पड़ा है। उनकी प्रेम-भावना सूफियों के इश्क और खुमार के असरात से भी सराबोर है। कबीर ने कई स्थानों पर 'प्रेम-पियाले' तथा 'तज्जनित खुमार' की चर्चा की है–

हरिरस पीया जानियै, कबहुं न जायं खुमार।

प्रेम को रसायन-रूप में कल्पित करने की इच्छा उनमें सूफियों के अनुकरण पर ही उत्पन्न हुई होगी–

राम रसायन प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।

कबीर की भक्ति का यह मधुरतम प्रेमतत्त्व ही प्रियतम के साक्षात्कार के द्वार खोलता है–

ममिता मेरा क्या करै, प्रेम उधाड़ी पौलि।
दरसन भया दयाल का, सूल भई सुख सौड़ि॥

कबीर ने प्रेम में अनन्यता और त्याग पर विशेष बल दिया है–

जो जावौ (ध्यावों) तो केवल रांम।
आन देव सूं नांहीं कांम।

त्याग के सम्बन्ध में तो वे यहाँ तक कहते हैं कि यदि तेरे हृदय में प्रेम की साध है तो अपना सिर काटकर छिपा लें–

कबीर जो तुइ साध पिरम की, सीस काटि कर गोइ।

कबीर ने अन्यत्र भी कहा है–

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नांहिं।
सीस उतारै भुइ धरैं, तब पैठे घर मांहिं॥

कबीर ने यह भाव भी व्यक्त किया है कि भक्तों के वशीभूत होकर ईश्वर अवतार भी धारण करता है–

ओहि पुरुष देवाधिदेव।
भगति हेत नरसिंह भेव॥

ऐसे गोविन्द की सेवा को उन्होंने राज्य-सुख से बढ़कर बताया है–

जो सुख प्रभु गोविन्द की सेवा।
सो सुख राज न लहिये।

कबीर की भक्ति-भावना श्रीमद्भागवत की नवधा-भक्ति के स्थान पर जिनमें भक्ति के निम्नांकित नौ अंग बताए गए हैं–

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।
अर्चनं वंदनं दास्यं, सख्यम् आत्मनिवेदनम्॥

अर्थात् 1-श्रवण 2-कीर्तन 3-स्मरण 4-पाद सेवन 5-अर्चन 6-वंदन 7-दास्य 8-सख्य और 9-आत्मनिवेदन, नारदीय भक्ति से साम्य रखती है। 'नारद भक्ति' सूत्र में भगवान् के प्रति ग्यारह प्रकार की आसक्तियाँ बताई गई हैं, जिनमें से कुछ नवधा भक्ति से साम्य भी रखती हैं–

नोट

1-गुणमाहात्म्यासक्ति, 2-रूपासक्ति, 3-पूजासक्ति, 4-स्मरणासक्ति, 5-दास्यासक्ति, 6-सख्यासक्ति, 7-कान्तासक्ति, 8-वात्सल्यासक्ति, 9-तन्मयासक्ति, 10-परम विरहासक्ति, और 11-आत्मनिवेदनासक्ति। कबीर की भक्ति भावना में इनमें से प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम और ग्यारहवीं आसक्तियाँ परिलक्षित होती है, उदाहरण आगे दिए जा रहे हैं–

1. गुणमाहात्म्यासक्ति–

निरमल निरमल राम गुण गावै, सो भगता मेरे मन भावै।
जे जन लेहिं राम को नाऊं, ताकी मैं बलिहारी जाऊं।।

2. रूपासक्ति–

अविनासी की सेज का कैसा है उनमान,
कहिबे कूं सोभा नहीं, देखे ही परमान।
अविनासी की सेज पर करै आनन्द।
कहै कबीर वा सेज पर, विलसत परमानन्द।।

3. पूजासक्ति–

"जो पूजा हरि नाही भावै,
सो पूजन हार चढ़ावै।
जेहि पूजा हरि मन भावै,
सो पूजन हार न जानै।।"

इसमें कबीर द्वारा पूजा करने का स्पष्ट उल्लेख तो नहीं है, हां यह इंगित अवश्य है कि हरि को पूजा भाती है।

4. स्मरणासक्ति–

काम परे हरि सिमरियै ऐसा सिमिरौ नित्त।
अमरापुर बासा करहु हरि गया बहोरे वित्त।।

5. दास्यासक्ति–

कबीर कूता राम का मूतिया मेरा नाऊं।
गले राम की जेवड़ी जित खींचै तित जाऊं।।

6. वात्सल्यासक्ति–

हरि जननी मैं बालक तोरा।
काहे न अवगुन बकसहु मोरा।।

7. कान्तासक्ति–

कबीर की भक्ति-भावना में कान्तासक्ति और परम विरहासक्ति की ही प्रधानता है। ईश्वर को कान्ता-भाव से स्मरण करते हुए अर्थात् स्वयं को पत्नी और ईश्वर को पति मानते हुए कवि ने अनेकानेक पदों में ईश्वर के साथ अपना दाम्पत्य सम्बन्ध स्थापित किया है। उदाहरण अवलोकनीय है–

दुलहिन गावहु मंगलाचार।
हम घर आएहु, राजा राम भरतार।।

8. तन्मयासक्ति–कबीर ने जिन स्थलों पर ऐसा भाव व्यक्त किया है कि उन्होंने आँखों-रूपी कोठरी में, पुतलियाँ रूपी पलंग बिछाकर तथा पलकों-रूपी चिक डालकर प्रियतम को रिझा लिया है–

आंखिन की करि कोठरी, पुतरी पलंग बिछाइ।
पलकनि की चिक डारिके पिय को लिया रिझाइ।।

नोट

9. परम-विरहासक्ति–कबीर की भक्ति भावना में परम विरहासक्ति की भावना का ही प्राधान्य है और अपनी इस भावना के कारण ही वे प्रेम की पीर के गायक सूफियों के समकक्ष माने जाते हैं। ईश्वर को पति और जीवात्मा को विरहिणी पत्नी मानते हुए कबीर ने अनेक पदों में जीवात्मा की जिस तड़पन को अभिव्यक्त किया है, वह उनकी परम विरहासक्ति की भावना की ही अभियव्यंजक है–

आइ सकों न तुज्झ पै, सकौं न तुज्झ बुलाइ।
जियरा योंही लेहुगे, विरह तपाइ तपाइ।।

10. आत्मनिवेदनासक्ति–इस भावना की भी कबीर की अनेक उक्तियों में अभिव्यंजना हुई है, जो मार्मिकता की दृष्टि से भक्त-शिरोमणि तुलसी और सूर के समतुल्य है–

माधौ मैं ऐसा अपराधी, तेरी भगति हेत नहिं साधी।
कारन कवन आइ जग जनम्यो, जननि कवन सचु पायो।।

भक्ति के प्रेरक कारण–'नारद भक्ति-सूत्र' के अनुसार भगवत्प्रेम और भक्ति की जागृति के मूलाधार निम्नांकित तथ्य हैं–

(क) विषयों का परित्याग,
(ख) कुसंग से बचना,
(ग) अखण्ड भजन करना,
(घ) महात्माओं की संगति और अनुकम्पा,
(ङ) भगवान् का अनुग्रहं,

कबीर ने संदर्भगत सभी तथ्यों पर बल दिया है–

(क) विषयों का परित्याग–

पुत्र कलत्र लच्छमी माया इहै तजौ जिय जानी रे।
कहत कबीर सुनहु रे सान्तो मिलि है सारंग पानी रे।।

(ख) कुसंग से बचना–

मारे मरु कुसंग की कैला काठै बेरि।
वो हालै वो चीरिए, साषित संग न बेरि।।

(ग) अखण्ड भजन करना–

काम परे हरि सिमरियै ऐसा सिमरौ नित।
अमरापुर बासा करहु हरि गया बहोरे वित्त।।

(घ) महात्माओं की संगति और अनुकम्पा–

कबीर सेवा को दुइ भले इक सन्त एक राम।
राम जो दाता मुकति को सन्त जपावै नाम।।

(ङ) भगवान् का अनुग्रह–

पहली बुरी कमाई करि बांधी विष की पोट।
कोटि करम पलै पलक मैं जब आया हरि ओट।।

भक्ति की विशेषताएँ–डॉ. त्रिगुणायत के शब्दों में "कबीर की भाव-भक्ति की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता प्रपत्तिपरता है। यों तो प्रपत्ति-भाव का वर्णन गीता तथा उपनिषदों तक में मिलता है किन्तु उसके

प्रमुख प्रचारक स्वामी रामानुजाचार्य थे। प्रपत्ति का रूढ़ अर्थ है आत्म-निवेदन। भक्ति-क्षेत्र में प्रपत्ति शब्द शरणागति के अर्थ में प्रयुक्त होता है। भक्त का सब धर्म और साधनों को छोड़कर भगवान् की शरण में जाना प्रपत्ति है।"

रामानुज की शिष्य-परम्परा में होने के कारण कबीर ने प्रपत्ति-मार्ग को पूर्णतः अपनाया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में स्थान-स्थान पर भगवान् की शरण में जाने का उपदेश दिया है। वे कहते हैं—

जन कबीर तेरी सरन आयो राखि लेहु भगवान।

तथा कहत कबीर सुनहु रे प्रानी, छाड़हू मन के भरमा।

केवल नाम जपहू रे प्रानी, परहु एक की सरना।।

यह प्रपत्ति की भावना ही कबीर की भक्ति भावना का प्राण है। इस प्रपत्ति में जात-पांत की बाधकता का कोई प्रश्न नहीं है। कबीर ने स्वयं कहा है—

कबीर का स्वामी अनद विनोदी जाति न कोई की मानी।

इस प्रपत्ति भावना के छः अंग बताए गए हैं जो निम्नलिखित हैं—'अहिर्बुधन्य संहिता' में कहा गया है—

आनुकूलस्य संकल्पः प्रतिकूलस्य वर्जनम्।

रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्वे वरणं तथा।

आत्मनिक्षेपकार्पण्ये षड्विधा शरणागतिः।

अर्थात् आराध्य की इच्छा के अनुकूल कार्य करना, उसके प्रतिकूल कार्य न करना, उसके रक्षक-रूप में पूर्ण प्रतीति रखना, एकांत में उसके गुणों का वर्णन करना, आत्मसमर्पण तथा कार्पण्य या दैन्य भाव की अभिव्यक्ति-प्रपत्ति के ये छः अंग हैं। निम्नलिखित उदाहरण से ज्ञात हो जाएगा कि कबीर की भक्ति में ये सभी अंग विद्यमान हैं—

(क) अनुकूल का संकल्प—

प्रीति रीति तौ तुज्झ सौं, मेरे बहु गुनियाले कंत।

जौं हंसि बोलूं और सौं, तो नील रंगाऊं दंत।

(ख) प्रतिकूल से बचना—

मूरखि संग न कीजिए, लोहा जल न तिराइ।

(ग) ईश्वर के रक्षक-रूप में विश्वास—

चिन्ता छांड़ि अचिन्त रहु, सांई है समरत्थ।

(घ) एकान्त में गुण-वर्णन—

बहु बिचारि करि देखिया, कोहु न सारिख राग।

(ङ) आत्म-समर्पण—

कहा करउं कैसे तिरउं भव जलनिधि भारी।

राखि राखि मेरे बीठुला जनु सरनि तिहारी।।

(च) दीनता-प्रदर्शन—

डॉ. त्रिगुणायत के शब्दों में—

(प्रपत्ति का) छठा अंग कार्पण्य है। इसका अर्थ है दीनता। अपनी दीनता दिखलाकर ही भक्त भगवान् की शरण में जाता है। इसके अन्तर्गत ही आत्म-निवेदन भक्त की अकिंचनता एवं क्षुद्रता और भगवान् की महानता आदि के वर्णन आते हैं। अन्य भक्तों की भाँति कबीर में इस अंग के भी अच्छे उदाहरण मिलते हैं। भक्त की अनन्यता और नम्रता का एक उदाहरण देखिए—

सुपनेहु बरराई के, जिहि मुख निकसे राम।
ताके पग की पावरी मेरे तन को चाम।।

कबीर की भक्ति कृपासाध्य अधिक है, क्रियासाध्य कम। कबीर सदैव ही इसे भगवान् की कृपा का ही परिणाम समझते हैं। इसीलिए उन्होंने प्रपत्ति को साधनों से ऊंचा स्थान दिया है। कबीर द्वारा रचनाओं में स्थान-स्थान पर भक्ति की कृपासाध्यता ही ध्वनित की गई है–

कहि कबीर उबरै द्वै तीनि जा परि गोविन्द कृपा कीन्ह।

डॉ. त्रिगुणायत के अनुसार कबीर की भक्ति की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता उसकी योग विशिष्टता है। बहुत से स्थलों पर कबीर ने भक्ति और योग का मिश्रण कर दिया है–

प्रेम भंगति हिडोलनां सब संतन कौ विश्राम।
चन्द सूर दोइ सम्भवा, बंक नालि की डोरि।
झूले पंच पियारियाँ, तहाँ झूले जीय मोरि।

कबीर के भक्ति भाव की तीसरी विशेषता सदाचरण पर बल मानी जा सकती है। 'नारद भक्ति सूत्र' में कहा गया है कि "स्त्री, धन और नास्तिकों की बातें कभी नहीं सुननी चाहिए" और कबीर ने भी स्त्री और धन (कंचन) की भरपूर निन्दा की है–

एक कनक अरु कामिनी दुर्गम घाटी दोय।
अथवा नादि नसावै तीन सुख जा नर पास होय।
भगति मुकति निज ग्यान में, पैसि न सकई कोय।।

मन के विकारों को दूर करने–

मन मारे बिन भगति न होई।

तथा काया को अनावश्यक कष्ट न देने के तथ्य को महत्त्व देने को उनकी भाव भक्ति की अन्य विशेषताएँ माना जा सकता है–

भूखे भगति न कीजै, यह माला अपना लीजै।

कबीर की भक्ति भावना के संबंध में व्यक्त किए गए डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के इस अभिमत से हम पूर्णतया सहमत हैं कि–

"कबीर की भक्ति के उपास्य निर्गुण 'सुनि मण्डलवासी' पुरुष के होते हुए भी सगुण और साकार हो गए हैं। ज्ञान क्षेत्र में जो परात्पर हैं, वे ही भक्ति क्षेत्र में 'तीन लोक की पीर जानने वाले गरीब निवाज' बन जाते हैं। कबीर का यह उपास्य 'अनद विनोदी ठाकुर' है। वे जातिगत भक्ति भावना में विश्वास नहीं करते। उनकी भक्ति की इस विशेषता ने उसके प्रचार और प्रसार में बड़ी सहायता पहुँचाई है।" कबीर की भक्ति की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। वह नारदी होकर भी सार्वलौकिक, सार्वकालिक और सार्वभौमिक हैं। वह अत्यन्त सहज और सरल होकर भी 'खाँडे की धार' के समान कठिन और कष्टसाध्य है।

नोट्स कबीर अपने समय के सच्चे प्रतिनिधि थे, उनका वास्तविक रूप साधक का था।

इसका कारण यही है कि वह भावप्रधान है। बाह्य विधि-विधानों का उसमें कोई स्थान नहीं है। इसमें सर्वत्र सदाचरण, सत्याचरण, सहजोपासना आदि पर ही विशेष जोर दिया गया है। कनक और कामिनी उनकी भक्ति के

सबसे बड़े बाधक हैं। भक्ति या भगवान् की सेवा में उन्होंने कामना या फलेच्छा को बाधक माना है (जब तक भगति सकामता तब तक निष्फल सेव)। उनकी भक्ति भागवती और निष्काम है।

"कबीर ने अपनी भक्ति में प्रपत्ति पर विशेष बल दिया है। प्रपत्ति भारतीय देन है। 'वायु पुराण' में वर्णित प्रपत्ति के सभी अंगों का विकास कबीर की वाणी में मिलता है। कबीर की भक्ति में मन साधना, मानसिक पूजा, मानसिक जप तथा सत्संगति को विशेष महत्त्व दिया गया है। अपनी इन विशेषताओं के साथ कबीर की भक्ति अपने युग की सबसे बड़ी देन थी। इनके अभाव में हिन्दू-समाज न मालूम किस अवस्था को पहुँच गया होता।"

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. कबीर की भक्ति की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं वह ········ होकर भी सार्वलौकिक, सार्वकालिक और सार्वभौमिक हैं।
2. तू ब्रह्मण में कासी का जुलाहा ·········· मोर गियना।
3. कबीर का कोई ········ गुरु नहीं था।
4. कबीर ·········· के शिष्य थे।

2.3 कबीर : खण्डनात्मक दृष्टिकोण एवं सहज धर्म की प्रतिष्ठापना

कबीर-काव्य का अध्ययन करते हुए यह तथ्य स्पष्ट रूप में उभरकर सामने आता है कि उनके दृष्टिकोण में समन्वय और सहनशीलता की अपेक्षा खंडन का आधिक्य है। चाहे जाति-प्रथा हो या ऊँच-नीच की भावना, चाहे मूर्तिपूजा हो या बांग लगाना, चाहे शून्य-साधना हो या हठयोग की क्रियाएँ–सभी के प्रति उनके दृष्टिकोण में खंडन का बाहुल्य दृष्टिगत होता है। इसके मूलत: दो कारण रहे हैं। प्रथमत: तो उनका यह दृष्टिकोण है कि–

"सो ज्ञानी जो आप विचारै।"

अर्थात् उन्होंने परंपरागत आस्था-विश्वासों को स्वीकार करने के स्थान पर निजी दृष्टिकोण को बल दिया है। द्वितीयत:, वे बाह्याचारों के कट्टर विरोधी और मूलतया सहज-साधनों में आस्था रखते थे, अत: अपने समकालीन सभी धार्मिक सम्प्रदायों की बाह्यचार-बहुल साधना-पद्धतियों से वे सहज ही संगति नहीं बिठा सके हैं, और जैसा कि किसी बात को लाग-लपेटकर कहने का उनका स्वभाव नहीं था, उन्होंने काजी, मुल्ला, पंडित ब्राह्मण, अवधूत, योगी, शाक्त आदि सभी को खरी-खरी सुनाई है। उनकी लट्ठ-मार शैली में कही गई बातें हृदय का स्पर्श तो नहीं कर पातीं, किन्तु बाह्याचारों में मग्न लोगों को चेतना के लिए कबीर के समक्ष इसके अतिरिक्त और कोई विकल्प भी नहीं था कि वे अपने समकालीन, प्राय: सभी धार्मिक सम्प्रदायों के बाह्य आचारों का खंडन करते हुए, स्व-मत अर्थात् सहज साधना पर बल देते। यह उनके युग की एक प्रकार से आवश्यकता भी थी।

कबीर को यह विश्वास था कि उन्होंने वास्तविक सत्य समझ लिया है। इसलिए वह उस सत्य के विपरीत आचरण करने वालों को फटकार कर सीधे रास्ते पर लाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने यत्र-तत्र अनेक धार्मिक सम्प्रदायों की भ्रमपूर्ण आस्थाओं का खंडन किया है और साथ ही सब की अच्छाइयों को अपने सिद्धांतों में सम्मिलित कर लिया है।

कबीर ने स्व-काल में प्रचलित सभी धार्मिक मतों को परखकर देखा था और उनकी सारपूर्ण बातों को अपनाते हुए भी उनके बाह्याचारादि का खंडन किया है। उनके निम्नांकित पद में कबीर कालीन विविध धार्मिक सम्प्रदायों की उस प्रवृत्ति का निरूपण हुआ है, जिसमें वे स्व-मत को श्रेष्ठ और दूसरे धार्मिक सम्प्रदायों की बातों को निंद्य समझते थे–

नोट

इक जंगम इक जटाधर, इक अंग विभूति करै अपार।
इक मुनियर इक मन हूँ, लीन ऐसे होत जग जात खीन।।
इक अराधै सकति सीव, इक पड़दा दे दे बधै जीव।
इक कुल देव्यां को जपहि जाप, त्रिभुवनपति भूले त्रिविध ताप।।
इक पढ़हि पाठ इक भ्रमैं उदास, इक नगन निरंतर रहे निवास।
इक जोग जुगति तन इहि खीन, ऐसौ राम नाम संग रहे न लीन।।
इक हूँ हि दीन इक दे हि दान, इक करै कपाली सुरापान।
इक तंत्र-मंत्र औषध बान, एक सकल सिध राखैं अपान।।
इक तीर्थ व्रत करि काया जीत, ऐसे राम नाम से करैं न प्रीत।
इक धोम घोंटि तनहूँ हि स्याम, यूं मुकति नहिं बिन राम नाम।।
पंडित जन माते पढ़ि पुरान, जोगी माते धरि धरि धियान।
संन्यासी माते अहमेव, तपा जुमाते तप कै भैव।।
सब मत माते कोउ न जाग, संग ही चोर घर मुसन लाग।।

"उपर्युक्त वर्णित सम्प्रदायों के व्यक्तियों को सत्यान्वेषी कबीर उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। इसका वास्तविक कारण यही था कि इन सम्प्रदायों में आडम्बर अधिक था, सत्य तथा वास्तविकता की कमी थी। इधर कबीर इनसे बिल्कुल आडम्बरशून्य तथा सत्य एवं वास्तविकता से पूर्ण थे। उनकी कथनी और करनी में भेद नहीं था। वह जो कहते, वही सोचते और वही करते थे। इसलिए उन्होंने नाना प्रकार के सम्प्रदायों का खण्डन करके उन्हें सन्मार्ग पर आने के लिए उपदेश दिया था। जिनको उन्होंने इस योग्य समझा है कि वे बेचारे समझ की कमी के कारण ऐसा आचरण करते हैं। उनके प्रति दयाभाव रखते हुए व्यंग्यात्मक उक्तियाँ कहीं है और जिनको उन्होंने किसी सम्प्रदाय विशेष का अच्छा ज्ञाता होते हुए भी पथभ्रष्ट पाया है उनको अधिक डांट-फटकर कर सीधे मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया है। फलतः पंडित और मुल्लाओं के लिए कही गई उनकी उक्तियाँ अधिकतर व्यंग्यात्मक हैं और अवधूत आदि के प्रति कही गई उनकी उक्तियाँ डांट-फटकार और किसी तत्व अथवा तथ्य को विधिवत अपने सिद्धांतानुसार बतलाने की कोशिश की है।"

आगे हम कबीर द्वारा अपने समकालीन धार्मिक सम्प्रदायों के प्रति व्यक्त किए गए खंडनात्मक विचारों पर प्रकाश डाल रहे हैं–

वैष्णव सम्प्रदाय : यद्यपि कबीर ने स्थल-स्थल पर वैष्णवों की प्रशंसा की है। जैसे–

मेरे संगी दोइ1 जणां एक वैष्णों एक राम।

× × × ×

वैष्णों की छपरी भली ना साकत बड़ गाउं।

तो भी उन्होंने वैष्णवों की मूर्ति पूजा, तीर्थ-यात्रा, तिलक, माला तथा ऊंच-नीच की भावनाओं का खण्डन किया है। उदाहरण के लिए उनकी निम्नांकित उक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

(क) पत्थर पूजैं हरि मिलै तो मैं पूजूं पहार।
घर की चकिया कोई न पूजै पीस खाय संसार।।

(ख) मन मथुरा दिल द्वारिका, काया काशी जांणि।
दसवां द्वारा देहुरा, तामैं जोति पिछांणि।

(ग) सेबैं सालिगराम कूं, मन की भ्रान्ति न जाइ।
सीतलता सुपनै नहीं, दिन-दिन अधकी लाइ।।

इस प्रकार जाति-पांति की दृष्टि से ऊंच-नीच की भावना का विरोध करते हुए एक ओर तो उन्होंने यह कहा है कि–

साांई के सब जीव है, कोरी कुंजर दोइ। तथा
एक जोति से सब उतपन्ना, का बामन का सूद्रा।

तो दूसरी ओर वे ब्राह्मणों को ललकारते हुए कहते हैं–

तू ब्राह्मण मैं काशी का जुलाहा चीन्ह न मोर गियाना।

उनके इस तर्क के समक्ष कोई क्या कह सकता था कि–

जो तू ब्राह्मण ब्राह्मणी जाया, और राह है क्यों ना आया।

इसी प्रकार पंडितों को वे यह कहकर ललकारते हैं कि जब तक तुम्हारे हृदय में निर्गुण राम के प्रति प्रेम नहीं उत्पन्न होता, तब तक तुम्हारा राम-राम रटते रहना व्यर्थ है–

पंडित बाद बदै सो झूठा।
राम कहै दुनिया गति पावै, खांड कहें मुख मीठा।

कबीर ने वैष्णवों की बैकुंठ संबंधी धारणा का खंडन करते हुए साधुओं की संगति को ही बैकुंठ बताया है–

चलन चलन सब कोई कहत है नां जानौं बैकुंठ कहां है।।टेक।।
जोजन एक परिमिति नहिं जानैं, बातनि ही बैकुंठ बखानें।।1।।
जब लगि मनि बैकुंठ का आंसा, तब लगि नहिं हरिचरन निवासा।।2।।
कहे सुने कैसे पति अइऐ, जब लगि तहां आप नहीं जाइऐ।।3।।
कहे कबीर यहु कहिऐ काहि, साध संगति बैकुंठहि आहि।।4।।

इसी प्रकार उन्होंने इस धारणा का कि काशी में शरीर-त्याग करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, जबकि मगहर में मरने से गधे की योनि प्राप्त होती है, वचनों द्वारा ही नहीं, अपने आचरण द्वारा भी खंडन किया था–

सगल जनम सिवपुरी गंवाया, मरती बार मगहर उठि आया।
बहुत वरिस तपु कीया कासी, मरत भया मगहर को बासी।।

काशी के विषय में उपर्युक्त धारणा रखने वाले लोगों को भोले (मूर्ख) बताते हुए उन्होंने कहा है–

लोगा तुम हौ मति के भोरा।
जड कासी तनु तजहि कबीरा, तो रामहिं कौन निहोरा।।

× × × ×

कबीर की राम नाम के मर्म संबंधी धारणा भी वैष्णवों से भिन्न रही है जो कबीर के अनुसार निर्गुण निराकार है तथा वैष्णवों द्वारा दशरथ के पुत्र माने जाने वाले राम से भिन्न हैं–

निर्गुन राम जपहु रे भाई, अविगत की गति लखी न जाई।

कबीर द्वारा निर्दिष्ट राम का जो मर्म नहीं जानते हैं, ऐसे पंडित जिन वेद पुराणों का पाठ करते हैं, उन्हें कबीर मतिहीन तथा चन्दन के बोझ से लदे गधे के समान बताते हुए कहते हैं–

पंडिआ, कवन कुमति तुम लागे?
बूड़हुगे परिवार सकल सिंउ राम न जपहु अभागे।
वेद पुरान पढ़े का क्या गुन खर चंदन जस भारा,
रामं नांम की गति नहिं जांनी कैसे उतरसि पारा?

नोट

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि यद्यपि कबीर ने अपनी समकालीन शाक्त, शैव, तांत्रिक, हठयोगी तथा मुस्लिम साधनाओं में से वैष्णव धर्म के अनुयायियों को अपने सर्वाधिक निकट बताया है–

मेरे संगी दोइ जना एक वैष्णों एक रांम।

तथापि वैष्णवों के भी उन्होंने प्रायः समस्त बाह्याचारों का खंडन किया है। उन्हें न मूर्तिपूजा में आस्था थी और न तीर्थाटन में। वे न बैकुंठ में विश्वास रखते थे और न वेद-पुराणों के पठन में। उन्होंने उनके जप-तप, पूजा-पाठ आदि सभी के प्रति खण्डनात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया है।

मुस्लिम धर्मावलम्बी : कबीर का जहाँ अपने समकालीन अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के प्रति खण्डनात्मक दृष्टिकोण रहा है, वहाँ उन्होंने तत्कालीन शासकों के मजहब के बाह्याचारों का खण्डन करने में भी कोई कमी नहीं छोड़ी है और कहा जाता है कि तदर्थ असहिष्णु मुस्लिम शासकों के हाथों उन्हें नाना प्रकार की यातनाएँ भोगनी पड़ी थीं। हिन्दू और मुसलमानों को एक ही लाठी से हांकते हुए उन्होंने दोनों के ही बाह्याचारों का तीव्र शब्दों में खण्डन किया है–

अल्लह रांम जिऊं तेरे नाईं।
बंदे ऊपरि मिहरि करौ मेरे साईं।।टेक।।
क्या लै मूंडी भुइं सौं मारें क्या जल देह न्हवाएं।
खून करै मिसकीन कहावै गुनही रहे छिपाएं।।
क्या उजू जप संजम कीएं क्या मसीति सिरु नाएं।
दिल महिं कपट निवाज गुजारै क्या हज की बैजाएं।
बाम्हन ग्यारसि करै चौबीसौं काजी माह रमजांना।
ग्यारह मास कहौ क्यूं खाली एकहि मांह नियांना।।
जौ रे खुदाई मसीति बसतु है और मुलुक किस कैरा।
तीरथि मूरति रांम निवासी दुहु महिं किनहुं न हेरा।।
पूरब दिसा हरी का बासा पच्छिम अलह मुकांमां।
दिन महिं खोजि दिलै दिलि खोजहु इहइं रहीमां रामां।।
जेते औरति मरद उपाने सो सभ रूप तुम्हारा।
कबीर पंदगर अलह रांम को सोइ गुर पीर हमारा।।

यदि कबीर की दृष्टि में हिन्दुओं की मूर्ति-पूजा निरर्थक रही है, तो मुसलमानों का मस्जिद पर चढ़कर बांग लगाना भी है। वे कैसा मार्मिक प्रश्न करते हैं कि अरे मुसलमानों! क्या तुम्हारा खुदा बहरा है जिससे मुल्ला मस्जिद पर चढ़कर जोर-जोर से बांग लगाया करता है?–

कंकर पत्थर जोरि कर, मस्जिद लई बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

कीड़ी से लेकर कुंजर तक को उसी सांईं का जीव मानने वाले कबीर की दृष्टि में मांस-भक्षणार्थ जीव-हत्या घोर अपराध रहा है, अतः वे दिन भर रोजा रखकर रात्रि में गो-हत्या करके मांस भक्षण करने वाले मुसलमानों से पूछते हैं कि तुम्हारे ऐसे आचरण से खुदा कैसे प्रसन्न हो सकता है?–

दिन में रोजा रखत हैं, रात हनत है गाय।
यह तो खून वह बन्दगी कैसी खुशी खुदाय।।

कबीर की दृष्टि में मुसलमान होने के लिए सुन्नत या खतना कराना भी पूर्णतया निस्सार रहा है। उनका तर्क है कि यदि खुदा को यही इष्ट होता तो फिर वह मुसलमानों का गर्भावस्था में खतना करके उन्हें क्यों नहीं उत्पन्न करता?–

जौ तू तुरक तुरकनी जाया, भीतर खतना क्यों न कराया?

यदि कबीर के आक्रोश के पात्र पंडित और ब्राह्मण रहे हैं, जो उनकी दृष्टि में धार्मिक बाह्याचार कराने के मूल कारण हैं, तो मुसलमानों में उन्होंने मुल्ला और काजी को अपने आक्रोश का पात्र बनाया है। मुल्ला को धार्मिक बाह्याचारों के लिए डपटते हुए उनका कथन है–

मुल्ला करि ल्यौ न्याव खुदाई,
इहि विधि जीव का भरम न जाई।
सरजीव आंनै देह बिनासै, माटी बिसमिल कीता।
जोति सरूपी हाथ न आया, कहौ हलाल क्या कीता।।

इसी प्रकार वे काजी को फटकारते हुए कहते हैं कि तुम्हें कुरान पढ़ते-पढ़ते बहुत दिन बीत चुके हैं, किन्तु तुम मर्म की एक भी बात नहीं जानते–

काजी, तैं कवन कतेब बखांनी?
पढ़त-पढ़त केते दिन बीते गति एकौ नहिं जांनीं।।
सकति सनेह पकरि करि सूनति मैं न बदउंगा भाई।
जौ रे खुदाय तुरुक मोहिं करता तौ आपहिं कटि किन जाई।।
सुनति कराई तुरुक जो होनां तो औरति कौं का कहिए।
अरध सरीरी नारि न छूटै तातैं हिन्दू रहिए।।
हिन्दू तुरक कहां तैं आए किन एहु राह चलाई।
दिल महिं खोजि दिलहिं में देखो भिस्ति कहां किन पाई।।
छांडि कतेब रांम भजु बउरे जुलम करत है भारी।
कबीरै पकरी टेक रांम की तुरुक रहैं पचि हारी।।

शाक्तों के प्रति खण्डनात्मक दृष्टिकोण : यदि कबीर ने किसी धार्मिक सम्प्रदाय का सर्वाधिक खण्डन किया है तो वह शाक्त मत है। कदाचित् इसका मूल कारण यही रहा है कि अहिंसा-प्रिय कबीर की दृष्टि में शाक्तों की बलि प्रधान पूजा-पद्धति निन्दनीय रही है। यही कारण है कि वैष्णवों के बाह्याचारों का खण्डन करते हुए भी जहाँ उन्होंने वैष्णवों की प्रशंसा की है, वहाँ शाक्तों की निन्दा में भी अनेक दोहे लिखे हैं और उनकी जननियों तक को धिक्कारा है। कुछ उदाहरण अवलोकनीय हैं–

(क) बेस्नौं की कूकरि भली, साकत की बुरी माइ।
वह बैठी हरिजस सुनै वह पाप बिसाहन जाइ।।

(ख) साकत ते सूकर भला, राखैं सूचा गांउं।
साकतं वपुरा मरि गया कोई न लेइ है नांउं।।

(ग) कबीर साकत को नहीं, सबै वैश्नों जाणि।
जा मुख राम न ऊचरै, ताही तन की हांणि।।

शाक्त से सूअर भला बताने, उसकी माता से कुतिया को उत्तम बताने, शाक्त के बड़े गाँव की अपेक्षा वैष्णवों की छपरी को भली बताकर कबीर ने अपने शाक्तों संबंधी निन्दात्मक दृष्टिकोण को रंचमात्र भी छिपाने की चेष्टा नहीं की है।

नोट

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Mutiple Choice Questions)–

5. कबीर ने किसके पैर पकड़ लिए?

   (*a*) सत्यानन्द (*b*) पीर शेख तुर्की

   (*c*) स्वामी रामानन्द (*d*) खजीन

6. कबीर अपने समय के सच्चे प्रतिनिधि थे। उनका वास्तविक रूप कैसा था?

   (*a*) साधक (*b*) निर्भिक

   (*b*) स्पष्टवादी (*d*) या इनमें से सभी थे।

7. किंवदंती शब्द का क्या अर्थ है?

   (*a*) कही सुनी बातें (*b*) प्रमाणित बातें

   (*c*) सच्ची बातें (*d*) दिखावटी बातें

हठयोगी साधना का खण्डन : कबीर की रचनाओं में इड़ा-पिंगला, सुषुम्ना, गगन-गुफा, प्राणायाम, सहस्र कमल आदि का उल्लेख मिलता है, किन्तु उनके बाह्याचारों के विरोधी अन्तर्मन ने इनको भी निस्सार ही घोषित किया है–

सो जोगी जाके मन में मुद्रा, राति दिवस ना करई निद्रा।।
मन मैं आसण मन मैं रहणां, मन का जप-तप मनसूं कहणां।।
मन मैं खपरा मन मैं सींगी, अनहद बेन बजावै रंगी।।
पंच परजारि भसम करि भंका, कहै कबीर सौ लहसै लंका।।

इसी प्रकार उनके निम्नांकित उद्‌गार द्रष्टव्य हैं–

बाबा जोगी एक अकेला, जाकै तीरथ बरत न मेला।
झोली पत्र बिभूति न बटवा, अनहद बीन बजावै।
मांगि न खाइ न भूखा सौवै, घर अंगना फिरि आवै।।

उनकी निजी धारणा यह थी कि–

सहज-सजह सब की कहैं, सहज न चीन्हैं कोई।
जो कबीर विषया तजै, सहज कहीजै सोइ।।

अर्थात् वे तो ईश्वर-प्राप्ति के लिए सहज साधना को आवश्यकता समझते थे। उनकी यह सहज साधना सहजिया सम्प्रदाय की सम्प्रदायगत रूढ़ियों से भी अछूती है। डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के निम्नांकित उद्‌गार उचित ही हैं कि–

"उन्होंने देश में, धर्म में, समाज में, दर्शन में, साधना में, सभी क्षेत्रों में क्रान्ति की जो धारा बहाई थी, उससे निश्चय ही उन क्षेत्रों के कालुष्य बह गए थे।"

अन्ततया डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का यह मत उल्लेखनीय है, जिससे हम भी पूर्णत: सहमत हैं–

"मिथ्याडम्बरों के प्रति प्रतिक्रिया कबीर का जन्मजात गुण था। वे वही कहते थे जिसे उनकी आत्मा सत्य-तत्व की कसौटी पर परख कर युक्तिसंगत स्वीकार करे, किन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि वे हठवादी थे। वास्तव में सहज सत्य को सहज ढंग से वर्णन करने में कबीर अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं जानते।"

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के शब्दों में–"कबीर का सहज धर्म अध्यात्म का पुट लिए हुए था। उसकी उत्पत्ति अनुभूति के ही सांचे में ढलकर हुई थी। कबीर का सारा जीवन सत्य के प्रयोगों में बीता था। वे सब प्रयोग स्वानुभूति के

नोट

सहारे हुआ करते थे। इन प्रयोगों से जो सत्य खण्ड निकलते थे, वे ही महात्मा कबीर को मान्य थे। इनमें भी उन्होंने अधिकतर उन्हीं को महत्त्व दिया है, जिनका स्वरूप उन्हें और सरलतम प्रतीत होता था। कबीर का सहज धर्म ऐसे ही सरलतम सत्य खण्डों से बना हुआ है। कबीर के सहज धर्म में दर्शन का जो अंश है, वह भी सरलतम ही है। उसमें तर्कजाल का इन्द्रजाल नहीं मिलता। दर्शन में वे तर्क की पूर्ण अप्रतिष्ठा समझते थे। स्पष्ट कहा है"—

'कहत कबीर तरक दुइ साधे, तिनकी मति है मोटी।'

कबीर का यह अनुभूतिमूलक सारा दर्शन अद्वैतवादी है। उन्हें ब्रह्माण्ड के अणु-अणु में ब्रह्मा के दर्शन होते थे। उन्होंने पूर्ण रूप से अनुभव कर लिया था—

'जामे हम सोई हम ही में नीर मिले जल एक हुआ।'

तथा

'हम सब मांहि सकल हम पै और दूसरा नाहीं।'

यही कबीर का अद्वैतवाद है, यही उनके सहज धर्म का आधार है। इसी से वह आस्तिक हैं, किन्तु इस आस्तिकता का आधार भी सहज तत्व है। वह सहज तत्व न हिन्दुओं को ईश्वर से मिलता है और न मुसलमानों को अल्लाह से, योगियों के गोरख से उसकी कोई समता नहीं हो सकती। वह 'सहज' घट-घट-व्यापी भी है। मोक्ष का स्वरूप भी पूर्ण अद्वैत माना है—

'सहजै रहै समाय, न कहुं आवै न जाय।'

ठीक भी है, जब सब-कुछ 'सहज' ही है, और आत्मा भी उसी का अंश है तब आने-जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। यही 'सहज' कबीर के सहजवाद का प्राण है। के चारों ओर उनकी सारी साधना केन्द्रित है—

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ने आगे स्पष्ट किया है कि—

(*i*) कबीर की सहज-साधना में स्वानुभूति के साथ-साथ बुद्धिवाद का भी पुट है जिसके द्वारा उन्होंने सभी धर्मों के बाह्याचारों का खण्डन किया है। उन्होंने कहा है—

एक न भूला दोय न भूला, भूला सब संसार।

और उन्होंने अपनी खण्डनात्मक उक्तियों द्वारा इन्हीं धार्मिक भूलों के सुधार की चेष्टा की है।

(*ii*) सन्त कबीर के विश्वासों की प्रथम भूमिका ध्वंसवादी है, किन्तु उनके ये विरोध जड़तामूलक न होकर बुद्धिवादी है। वे सहज धर्म में जप-व्रतादिक पसंद नहीं करते—

तीरथ व्रत सब वेलही, सब जग मेल्या छाय।
कबीर मूल निकन्दिया, कौन हलाहल खाय।।

(*iii*) उनका सहज धर्म, हृदय की निष्कपटता, चरित्र की आचार-प्रवणता और मन की शुद्धता पर आधारित है—

सांई सेंती सांच चलि, औरा सूं सुध भाई।
भावै लंबे केस करि, भावै धुरणि मुड़ाई।।

(*iv*) निश्चय ही महात्मा कबीर का सहज धर्म आन्तरिक शुद्धता पर आधारित है। यदि मन शुद्ध है, हृदय निष्कपट है, विचार पवित्र हैं और आचरण सात्विक है तो धार्मिक कहलाने में बाधा नहीं पड़ सकती। कबीर ने धर्म में मन की शुद्धता पर जोर दिया है। मन शुद्ध होने पर सहज ज्ञान बिना पढ़े ही प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार उनका विश्वास है—भगवान् की प्राप्ति जो प्रत्येक धर्म का लक्ष्य है, बिना हृदय की शुद्धता के नहीं हो सकती। कबीर ने स्पष्ट घोषणा की है—

नोट

हरि न मिले बिन हिरदै सूधे।

मन पवित्र हो, हृदय शुद्ध हो, साथ ही साथ विचार भी सात्विक हों तभी मनुष्य धार्मिक कहला सकता है। विचारों का सच्चा और पवित्र होना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि, धर्म के प्रधान अंग नीतिशास्त्र और अध्यात्मशास्त्र के प्राणतत्व ये विचार ही होते हैं। यदि विचार शुद्ध और पवित्र नहीं हैं तो धर्म भी शुद्ध और पवित्र नहीं हो सकता।

(v) वास्वत में कबीर का सहज धर्म 'मानव धर्म' ही है जिसकी स्थिति हितवाद की भूमिका पर है। इसीलिए उसे हित धर्म भी कहा जाता है। सच्चा मानव धर्म या विश्व धर्म सदैव ही उन नैतिक आचरणों पर आधारित रहता है जिनमें मनुष्य की धारणा होती है और जो समाज की स्थिति के कारण होते हैं। इन नैतिक आचरणों में कुछ विधि रूप में होते हैं और कुछ निषेध-रूप में। महात्मा कबीर ने दोनों स्वरूपों का निर्देश किया है। "विधि रूप में पाए जाने वाले नैतिक आचरणों में सत्याचरण, सारग्राहिता, समदर्शिता, शील, क्षमा, दया, दान, धीरज, सन्तोष, परोपकार, अहिंसा आदि प्रमुख हैं। निषिद्ध आचरणों में मद्य, मांस, काम, क्रोध, लोभ, मान, कपट, तृष्णा आदि प्रमुख हैं। कबीर ने सर्वत्र ही अपने धार्मिक विचारों में सदाचार के पालन और निषिद्ध वस्तुओं एवम् आचरणों के परित्याग पर जोर दिया है। इस प्रकार उनका सहज धर्म सच्ची नैतिकता की भूमि पर खड़ा हुआ है। प्रत्येक धर्म का एक पक्ष 'रहनी' होता है। इन नैतिक आचरणों का सम्बन्ध धर्म के रहनी स्वरूप से हैं।"

(vi) कबीर के सहज धर्म के 'रहनी' स्वरूप में मध्य मार्गानुसरण का भी ऊंचा स्थान है। मध्यममार्ग सदैव ही श्रेयस्कर होता है–

कबीर मधि अंग जेको रहैं, तौ तिरत न लागै बार।
दुहु दुहु अंग सो लागि करि, डूबत है संसार।।

उन्होंने मध्य-मार्ग को इतना महत्त्व क्यों दिया? इसका प्रमुख कारण यही है कि एक अन्त का ग्रहण विरोध का कारण बन जाता है। यदि वे हिन्दुओं के मार्ग का अनुसरण करते तो मुसलमानों का विरोध सहना पड़ता; और यदि मुसलमानों का मार्ग ग्रहण करते तो हिन्दुओं की विरोध भावना जगती। इस द्वन्द्व को बचाने के लिए मध्य मार्गानुसरण और भी अधिक श्रेयस्कर था।

(vii) कबीर ने अपने सहज धर्म में समरसता को भी विशेष महत्त्व दिया है। वे जीवन में, समाज में, धर्म में, साधना में, सर्वत्र एक सरसता चाहते थे। इसीलिए उन्होंने जीवन में सुख-दु:ख और मानापमान आदि को समाज में जातिगत ऊंच-नीच की भावना को, साधना में कथनी और करनी को, धर्म में अनुराग और विराग को समभूमि पर प्रतिष्ठित किया है।

(viii) कबीर के सहज धर्म की साधना का मार्ग भी सहज ही है। उसके प्राणभूत उपादान **सहज ज्ञान, सहज वैराग्य, सहज योग और सहज भक्ति थे।** सहज वैराग्य और सहज ज्ञान, सहज साधना के प्रारम्भिक सोपान है। वैराग्य शब्द का प्रयोग कबीर ने प्रचलित अर्थ में नहीं किया था। वे गेरुआ वस्त्र पहन कर जंगल चले जाने को वैराग्य नहीं मानते थे। उनकी वैराग्य-धारणा में वासना क्षय को विशेष महत्त्व दिया गया है। वास्तव में वैराग्य के लिए मन का विकार-रहित होना जितना आवश्यक था उतना वनवास नहीं। कबीर ने स्पष्ट कहा है कि–

बनह बसे का कीजिए जो मन नहीं तजे विकार।

इस प्रकार मन का संयम ही सच्चा वैराग्य है। कबीर ऐसे ही वैरागी थे, अपने सहज धर्म में उन्होंने ऐसे ही वैराग्य की प्रतिष्ठा की है। "सहज मार्गी शनै:-शनै:" सहज भाव से सब सांसारिक वस्तुओं से उदासीन होते-होते राम में लीन हो जाता है–

सहजै सहजै सब गए सुत वित कामिनी काम।
एकमेक ह्वै मिलि रह्या दास कबीरा राम।।

अपने समय में प्रचलित विविध धर्म-साधनाओं के बाह्याचारों और अन्ध-विश्वासों का खंडन करते हुए कबीर ने जिस मानवता-प्रधान सहज धर्म की प्रतिष्ठापना की है, उसके संदर्भ में डॉ. पारसनाथ तिवारी का यह मत उचित ही है–

"सच्ची बात यह है कि हिन्दी-साहित्य में कबीर से बड़ा मानवतावादी कोई नहीं हुआ। उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज में प्रचलित समस्त अन्धविश्वासों, रूढ़ियों तथा मिथ्या सिद्धान्तों द्वारा प्रचारित सामाजिक विषमताओं का मूलोच्छेद करने का बीड़ा उठाया और निर्ममतापूर्वक सभी पाखंडों का प्रहार किया। कबीरदास जी ने तत्कालीन सामन्तों तथा शासकों को लक्ष्य कर ऐसी अनेक बातें कही हैं जिनसे भौतिक ऐश्वर्यों पर आधारित उनके झूठ अभियान का मूलोच्छेद हो।"

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

8. कबीर द्वारा भक्ति-भावना को सात द्वीप और नव खण्ड में प्रसारकर्ता घोषित किया गया है।
9. आजकल अधिकांश आलोचक कबीर बीजक, कबीर ग्रंथावली, कबीर वचनावली के पद, सत्य, कबीर साखी आदि रचनाओं में प्रमाणिक स्वीकार नहीं करते।
10. कबीर नाम से जिस प्रकार उनके व्यक्तित्व का परिचय मिल जाता है, उसी प्रकार उनकी जाति के सम्बन्ध में भी संकेत मिल जाता है।

2.4 सारांश (Summary)

- कबीर के जीवन के विषय में जितने अवतरण या संकेत मिलते हैं, उनमें जन्म का उल्लेख नहीं है।
- "कबीर का व्यक्तित्व जितना गूढ़ प्रतीत होता है उतना ही सरल था और जितना सरल दीखता है उससे कहीं अधिक गूढ़ था।
- कबीर ने स्व-काल में प्रचलित सभी धार्मिक मतों को परखकर देखा था और उनकी सारपूर्ण बातों को अपनाते हुए भी उनके बाह्याचारादि का खंडन किया है।
- कबीरदास जी ने तत्कालीन सामन्तों तथा शासकों को लक्ष्य कर ऐसी अनेक बातें कही हैं जिनसे भौतिक ऐश्वर्यों पर आधारित उनके झूठ अभियान का मूलोच्छेद हो।"

2.5 शब्दकोश (Keywords)

स्वभाव : आदत

आकर्षण : किसी वस्तु का आकर्षण, मोह

प्रचलित : प्रसिद्ध

2.6 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. कबीर के पारिवारिक जीवन का वर्णन कीजिए।
2. धर्म के प्रति कबीर की क्या आस्था थी? उल्लेख कीजिए।
3. समाज की किन कुरूतियों पर कबीरदास ने कठोर प्रहार किए हैं और क्यों?

नोट

उत्तरः स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. नारदी
2. बुझहु
3. दीक्षा
4. शेख तकी
5. (*c*)
6. (*d*)
7. (*a*)
8. सही
9. गलत
10. सही

2.7 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. कबीर वाणी (पारसनाथ तिवारी) अनीता प्रकाशन, नई सड़क, नई दिल्ली।

नोट

इकाई–3: कबीर वाणी : भाषा-शैली

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

3.1 कबीर की भाषा शैली

3.2 कबीर की भाषाभिव्यक्ति की क्षमता

3.3 सारांश (Summary)

3.4 शब्दकोश (Keywords)

3.5 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

3.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- कबीर की भाषा शैली जानने हेतु।
- कबीर की भाषा अभिव्यक्ति को समझने में।
- कबीर द्वारा भाषा का प्रयोग जानने हेतु।
- कबीर की भाषा में संज्ञा तथा विशेषण-रूपों का प्रयोग को जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

कबीर-काव्य की भाषा के स्वरूप के निर्धारण का प्रश्न विद्वद्वर्ग के मध्य मत-वैविध्य का अच्छा निदर्शन रहा है और उसको किसी ने अवधी, किसी ने भोजपुरी, किसी ने सधुक्कड़ी किसी ने राजस्थानी तथा किसी ने विविध भाषाओं के पुट से युक्त ब्रजभाषा बताया है। इस मतवैभिन्नय का एक कारण तो कबीर की रचनाओं का प्रामाणिक पाठ न मिलना रहा है, अर्थात् उनकी रचनाओं के संग्रह मिलते हैं उनमें प्रयुक्त भाषा एक-दूसरे से साम्य नहीं रखती, किसी प्रति के क्रियापद और शब्द-रूप किसी भाषा से अधिक साम्य रखते हैं तो किसी प्रति के किसी अन्य भाषा के क्रियाओं और शब्द रूपों से।

3.1 कबीर की भाषा शैली

कबीर भाषा के सूक्ष्म भेदों के प्रति अधिक सचेत भले ही न रहे हों किंतु तत्कालीन संतों द्वारा ब्रजभाषा और खड़ी बोली से अपनी निजी बोली का भेद तो वे पहचानते ही रहे होंगे। संभवत: कबीर ने सर्वमान्य भाषा (ब्रज) में अपने पूर्वी प्रयोग के संबंध में स्पष्टीकरण देते हुए स्वीकार किया कि पूर्व का होने के कारण उनकी भाषा में पूरबी का

नोट

भी कुछ प्रभाव आ गया है वैसे कबीर के कई पद भोजपुरी या अवधी में भी दिखाई पड़ते हैं। रमैणी की भाषा में अवधी का प्रभाव स्पष्ट है।

साखियों की भाषा में, जिसे रामचन्द्र शुक्ल ने सधुक्कड़ी कहा है, खड़ी बोली में राजस्थानी और पंजाबी का पुट है। इस भाषा का विवेचन खड़ी बोली और ब्रज के सम्बन्ध को सामने रखकर ही किया जा सकता है। यद्यपि दोनों भाषाओं के उद्गम, विकास और पारस्परिक सम्बन्धों पर बहुत विवाद हो चुका है किन्तु तथ्य यह है कि ब्रजभाषा की धारा प्राचीनतर है। इसके अतिरिक्त खड़ी बोली ब्रजभाषा के मूल से कुछ विशेष तात्त्विक शक्तियों का संकलन करके प्रस्फुटित हुई है। ब्रजभाषा के व्यापक क्षेत्र में खड़ी बोली का क्षेत्र भी अंतर्भूत हो जाता है यह बात भी अमान्य नहीं है। यदि दोनों भाषाओं के विकास क्षेत्र को अलग करके देखें तो भी दोनों पड़ोसी बोलियाँ है। इसलिए भी इनमें समता अधिक और भिन्नता कम है।"

बोली हमारी पूरब की, हमें लखै नहीं कोय।
हमको तो सोई लखै, धुर पूरब का होय।।

इस दोहे के अर्थ को लेकर भी विद्वानों के दो वर्ग हो गए हैं, जिनमें से एक इसके आध्यात्मिक अर्थ को प्रधानता देता है तो दूसरा वर्ग इसके भौगोलिक अर्थ को। उनकी भाषा के संबंध में व्यक्त किए मत इस प्रकार हैं–

(*i*) "बीजक की भाषा ठेठ प्राचीन पूर्वी है।" –विचारदास शास्त्री

(*ii*) "इसकी (साखी की) भाषा सधुक्कड़ी अर्थात् राजस्थान पंजाबी मिली खड़ी बोली है, पर 'रमैणी' और 'सबद' में काव्य की ब्रजभाषा और कहीं-कहीं पूरबी बोली का भी व्यवहार है।"

–रामचन्द्र शुक्ल

(*iii*) "कबीर की बोली 'पूरबी' ही अधिक होनी चाहिए, क्योंकि उन्होंने कहा भी है कि उनका सारा जीवन शिवपुरी (काशी) में व्यतीत हुआ। प्रधान रूप से हमें पूर्वी हिन्दी (अवधी) व्याकरण के रूप ही मिलते हैं। कहीं-कहीं खड़ी बोली, पंजाबी और ब्रज का भी रूप दिखाई देता है।"

–डॉ. रामकुमार वर्मा

किन्तु डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने 'हिन्दी साहित्य' का आलोचनात्मक इतिहास में यह मत व्यक्त किया है–

"कबीर ने अपनी भाषा पूरबी लिखी है, पर नागरी प्रचारिणी सभा ने कबीर ग्रन्थावली का जो प्रामाणिक संस्करण प्रकाशित किया है, उसमें पूरबीपन किसी प्रकार भी नहीं है। इसके पर्याय उसमें पंजाबीपन बहुत है।"

(*iv*) श्री सिद्धनाथ तिवारी ने कबीर की भाषा में बनारसी का अधिक पुट बताते हुए यह मत व्यक्त किया है–

"केशव ने नहर के बीच से अपनी काव्य-धारा को दौड़ाया था। मीरा ने पहाड़ी नदी की तरह कल-कल गुंजार किया था। संत कवियों में प्रायः सभी को मीरा की आत्मा मिली थी-निश्छल, निष्कपट, अकृत्रिम। संतों की भाषा सधुक्कड़ी होते हुए भी काफी प्रांजल और सरस है। × × × यह सधुक्कड़ी भाषा एक मिश्रित भाषाभाषी के रूप में हमारे सामने आती हैं जिसका सौन्दर्य इसलिए भी अधिक बढ़ गया है कि इसमें अनेक बोलियों के कहीं-कहीं एकत्र दर्शन होते हैं और कथन में नाटकीयता आ जाती है। अजायबघर देखने से जो आनन्द मिलता है वह आनन्द संतकाव्य की भाषा का अध्ययन करने पर मिलता है। × × × जिस संत का निवास जिस प्रदेश में अधिक दिनों तक हुआ उस पर उसका प्रभाव विशेष रूप से पड़ा और प्रदेश की भाषा उसकी वाणी में घर कर गई। यही कारण है कि कबीर की बोली बनारसी अधिक है।"

नोट

(*v*) "कबीर की भाषा पंचमेल खिचड़ी है।" —डॉ. श्यामसुन्दरदास

(*vi*) "कबीर अवधी के प्रथम संत कवि हैं" —डॉ. बाबूराम सक्सेना

(*vii*) "कबीर की रचना में हमें मुख्यत: ब्रजभाषा मिलती है लेकिन इसमें कोसली या पूर्वी हिन्दी का कुछ-कुछ मेल पाया जाता है और खड़ी बोली का रूप भी यथेष्ट मात्रा में मिलता है।"

—डॉ. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

उन्होंने अन्यत्र यह मत व्यक्त किया है कि—

"कबीर की भाषा हिन्दी (हिन्दुस्तानी) तथा ब्रजभाषा का एक मिश्रित रूप है।"

(*viii*) "कबीर की भाषा राजस्थानी है एवं कबीर को वैसा ही राजस्थानी कवि कहा जा सकता है जैसा कि 'ढोला मारूरा' के कर्त्ता को।" सूर्यकरण पारीक

क्या आप जानते हैं कबीर की मूल वाणी का बहुत अंश उनकी मातृभाषा बनारसी बोली में ही लिखा गया था किन्तु उनके पदों का पछांह की साहित्यिक भाषाओं में रूपांतरण कर दिया गया।

(*ix*) डॉ. सरनामसिंह शर्मा के अनुसार—"इसलिए हमें यही स्वीकार करना पड़ेगा कि कबीर की भाषा का मूलाधार 'ब्रज बोली' ही है, किन्तु मुसलमानों के सम्पर्क से और कुछ-कुछ मध्यप्रदेश की शब्दावली का सहारा लेकर तथा मेरठ और दिल्ली की आसपास की बोली के वैयाकरणिक रूपों को सहेजकर जो भाषा आविर्भूत हो रही थी, वह भी साहित्य में सम्मान प्राप्त करने लग गई थी। इस संदर्भ में अमीर खुसरों की भाषा विशेष रूप में देखने योग्य है।

कबीर की भाषा में ब्रज और खड़ी बोली के प्राधान्य के साथ अन्य भाषाओं का पुट भी मिलता है।"

(*x*) डॉ. शिवप्रसाद सिंह के अनुसार कबीर ने भिन्न-भिन्न प्रकार के भावों को भिन्न-भिन्न शैलियों में व्यक्त किया और विभिन्न शैलियों में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया। उनके अनुसार कबीर की खंडनात्मक रचनाओं में प्राय: खड़ी बोली या रेखता का प्रयोग किया गया है। भक्तिपरक रचनाओं में ब्रजभाषा है।, जबकि रमैनियों में अवधी की प्रधानता है।

विद्वानों के उपर्युक्त मतों से निम्नांकित निष्कर्ष निकलते हैं—

1. उनकी भाषा बनारसी है क्योंकि वह बनारस के रहने वाले थे।

2. उनकी काव्य-भाषा राजस्थानी है।

3. उनकी काव्य-भाषा ब्रज है किन्तु उसमें अनेक बोलियों का पुट भी है।

4. उनकी काव्य-भाषा खड़ी बोली है जिसमें अनेक बोलियों का पुट है।

5. उनकी काव्य-भाषा पंचमेल खिचड़ी है जिसमें राजस्थानी, पंजाबी, ब्रज, खड़ी बोली (रेखता) और पूर्वी हिन्दी (अवधी) की शब्दावली का मिश्रण है।

इन मतों में से भी विद्वानों का झुकाव कबीर की काव्य-भाषा को ब्रज भाषा मानने की ओर अधिक है और हमें भी यही समुचित प्रतीत होता है। उनकी काव्य-भाषा में अनेक बोलियों का सम्मिश्रण होने की दशा में उसके निश्चित नामकरण के लिए 'प्राधान्येन व्यपदेशा: भवन्ति' के सूत्र का सहारा लिया जा सकता है अर्थात् उसमें जिस भाषा में क्रिया-रूपों और शब्दों का सर्वाधिक प्रयोग मिले, उस भाषा को ही कबीर की काव्य-भाषा मानना चाहिए, इस दृष्टि से कबीर-काव्य में सर्वाधिक मात्रा ब्रजभाषा के ही क्रिया-रूपों और शब्दावली की मिलती है। हाँ, कबीर-कालीन ब्रजभाषा का स्परूप परवर्ती ब्रजभाषा के स्वरूप से भिन्न था, इस तथ्य को विस्मृत नहीं करना चाहिए। इस संदर्भ में हमें डॉ. सरनामसिंह शर्मा के निम्नांकित उद्‌गार उपयुक्त प्रतीत होते हैं—

नोट

टास्क   कबीर को भाषा पर कैसा अधिकार था? अपने मत का प्रयोग कीजिए।

"विद्वानों ने कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी कहा है, सम्भवत: इसलिए कि उनकी भाषा नये और पुराने शब्दों को ही संकलित करके नहीं चलती थी अपितु, प्रादेशिक संकीर्णताओं को भी तोड़ती चलती थी। इस सधुक्कड़ी भाषा का जो ढाँचा हमारे सामने आ रहा है उसमें ब्रज और खड़ी बोली का एक मिलाजुला रूप है, अथवा यह कह देना अनुचित न होगा कि ब्रजभाषा के गर्भ से दिल्ली और मेरठ के आसपास की भाषा के कुछ कारक और क्रिया रूपों को लेकर फारसी और अरबी शब्दों के सहयोग से जो भाषा उदित हो रही थी, कबीर ने उसी का प्रयोग किया है। इसका आधुनिक नाम खड़ी बोली हो सकता है, किंतु उसका रूप इससे कहीं भिन्न था।"

डॉ. सरनामसिंह शर्मा का झुकाव कबीर की काव्य-भाषा को ब्रज और खड़ी बोली का मिश्रित रूप मानने की ओर है–

"किन्तु कबीर ने ब्रज और खड़ी बोली के मेल से जिस भाषा का प्रचलन किया वह कुछ ऊबड़-खाबड़ दीखती हुई भी मिश्र-भाषा है। कबीर न तो ब्रज-भाषा को भुला सकते थे जिसका इतना व्यापक क्षेत्र था, और न वे खड़ी बोली के उस रूप को ही भुला सकते थे जिसको राजकीय प्रोत्साहन मिलने से व्यापकता की दिशा मिल रही थी।"

कबीर की काव्य-भाषा में ब्रज का अधिक पुट मानने के संदर्भ में डॉ. शिवप्रसादसिंह का भी यह मत अवलोकनीय है–

"नामदेव से लेकर नानक तक अर्थात् 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर 16वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध, तक के संतों की जो वाणियाँ 'गुरु ग्रन्थ साहब' में संकलित है यदि उनके भी पूरे परिणाम का विश्लेषण ध्यान से किया जाय तो ज्ञात होगा कि उसमें 50 प्रतिशत से भी अधिक रचनाएँ ब्रजभाषा की हैं और इनकी भाषा में गड़बड़ या विशृंखलता नहीं है।"

कबीर-काव्य पर भाषाशास्त्रीय और वैयाकरणिक दृष्टिकोण से जो शोध कार्य हुआ है, उनमें से भी विद्वानों का बहुमत कबीर-काव्य में ब्रजभाषा का बाहुल्य सिद्ध करता है। उदाहरण के लिए डॉ. भगवतप्रसाद दुबे ने अपने शोध-ग्रन्थ 'कबीर-काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन'–में निष्कर्ष के रूप में जो सारणियाँ प्रस्तुत की हैं, उनमें से संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि सम्पूर्ण आवृत्तियों की परिचायक तालिका दृष्टव्य है–

(सम्पूर्ण आवृत्तियाँ, सारणी नं. 15)

	खड़ी बोली मि. अमि.		ब्रज मि. अमि.		राजस्थानी मि. अमि.		अवधी मि. अमि.		भोजपुरी मि. अमि.	
संज्ञा	202	–	568	168	172	31	397	70	322	–
विशे	24	40	63	79	27	–	29	27	–	1
परसर्ग	1001	–	1020	59	628	14	875	58	102	–
सर्व.	749	161	1571	138	357	1	1474	159	349	1
क्रिया	3907	311	3610	592	1359	–	3816	217	1050	23
कुल आवृत्तियाँ	5883	512	6847	1036	2543	46	6591	531	1825	

नोट

डॉ. भगवतप्रसाद दुबे ने अपना निष्कर्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

क. ग्रं. (डॉ. पारसनाथ तिवारी के सम्पादन में हिन्दी-परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित) के खड़ी बोली, ब्रज, राजस्थानी, अवधी और भोजपुरी के व्याकरणिक रूपों की (सारणी द्वारा निर्णीत) प्रयोगवृत्तियों के सापेक्षिक आधिक्य के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि उसमें ब्रजभाषा के अमिश्रित (विशिष्ट रूपों का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है। ब्रजभाषा के रूप में किसी भी एक बोली के विशिष्ट रूपों की अपेक्षा अधिक प्रयुक्त हुए हैं। और सभी बोलियों के अमिश्रित रूपों (खड़ी 512, राज., 46, अवधी 531 भोजपुरी की 25) की सम्मिलित आवृत्तियों (1, 114) की लगभग समान मात्रा में प्राप्त होते हैं। ब्रज के रूपों के साथ यदि राजस्थानी (अधिक समानता के कारण) के रूपों को मिला दिया जाए तो ब्रज के रूपों की संख्या और अधिक हो जाएगी।

ब्रजभाषा के अमिश्रित रूपों का प्रयोग संज्ञा, विशेषण, परसर्ग और क्रिया में सर्वाधिक हुआ है, केवल सर्वनाम में खड़ी बोली की 161, अवधी की 159 तथा ब्रज की 138 आवृत्तियाँ प्राप्त हुई है, जिनमें ब्रज की आवृत्तियाँ कुछ कम पड़ती है। किन्तु इतना कम अन्तर विशेष महत्त्व नहीं रखता क्योंकि सम्पूर्ण कबीर ग्रन्थावली के रूप सभी व्याकरणिक रूपों में प्राय: ब्रज के रूपों का ही प्रयोग अधिक मिलता है। इसे दृष्टि में रखते हुए सर्वनाम में (खड़ी बोली और अवधी) की कुछ आवृत्तियों के आधिक्य को विशेष महत्त्व नहीं देना चाहिए।

अमिश्रित रूपों के अतिरिक्त जिन दो, तीन, चार, पांच और कई बोलियों में एक ही व्याकरणिक रूप का मिश्रण हुआ है उनमें भी ब्रजभाषा के रूपों की ही प्रधानता है। तात्पर्य यह कि जो रूप दो या दो से अधिक बोलियों में समान रूप से प्रयुक्त हुए हैं, उनमें अधिकांश रूप ब्रजभाषा में अवश्य प्रयुक्त हुए हैं, इसी कारण मिश्रित रूपों में भी ब्रज के रूपों के प्रयोग की प्रधानता है।

इस प्रकार क.ग्रं. में अमिश्रित और मिश्रित दोनों रूपों में ब्रज के रूपों का स्पष्ट रूप से सर्वाधिक प्रयोग देखकर यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि उसकी मूलाधार बोली ब्रज है।

इसी प्रकार डॉ. महेन्द्र ने भी डॉ. पारसनाथ तिवारी द्वारा सम्पादित कबीर ग्रन्थावली भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करके यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है–

"संज्ञा, परसर्ग, सर्वनाम, क्रिया और अव्ययों में अवधी, ब्रज तथा खड़ी बोली–इन तीनों के रूपों का अत्यधिक मिश्रण है। प्रयोगवृत्ति की दृष्टि से संज्ञा तथा क्रिया में ब्रज के रूप अधिक है, परसर्ग और अव्यय अवधी के अधिक हैं तथा सर्वनाम खड़ी बोली के। वैसे रूपों के वैविध्य की दृष्टि से अवधी के रूप अपेक्षतया अधिक पाए जाते हैं। भाषा-निर्णय करते हुए इस तथ्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती। × × × फिर भी, केवल अवधी को कबीर की भाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के रूपों का इतना अधिक मिश्रण है कि इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इस कारण कबीर को किसी एक भाषा का कवि अथवा क.ग्रं. की भाषा कोई एक बोली स्वीकार करना वैज्ञानिक नहीं है। कबीर की भाषा में अवधी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली, इन तीन भाषाओं का मिश्रण मानना ही अधिक न्याय संगत तथा वैज्ञानिक होगा। इन तीनों के मिश्रित रूप के साथ राजस्थानी, भोजपुरी तथा पंजाबी के रूपों का सहायक रूप में प्रयोग हुआ है।"

कबीर की काव्य-भाषा के निर्धारण के विषय में आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि डॉ. तिवारी द्वारा सम्पादित कबीर ग्रन्थावली के आधार पर ही किए गए भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर तीन शोधकर्ताओं ने परस्पर विरोधी मत व्यक्त किए हैं। डॉ. दुबे उसमें ब्रजभाषा के शब्द-रूपों का आधिक्य सिद्ध करते हैं तो डॉ. महेन्द्र के मत के आधार पर उसमें अवधी के शब्द-रूपों की अधिकता होने की ध्वनि निकलती है। इसके सर्वथा विपरीत श्री माताबदल जायसवाल के अध्ययन के आधार पर उसमें खड़ी बोली के संज्ञा, विशेषण, क्रियाओं तथा परसर्गों का अधिक्य सिद्ध होता है। इन तीनों विद्वानों में से जायसवाल के मत को किञ्चित् वरीयता देते हुए, डॉ. पारसनाथ तिवारी ने उनकी शोध के कुछ तथ्य इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं–

नोट

संज्ञा और विशेषणों की दृष्टि से–कबीर ग्रन्थावली में संज्ञा तथा विशेषण-रूपों में प्राय: आकारान्त रूपों की प्रधानता है। जैसे–

(*i*) पियारा (खड़ी बोली) का तीन बार प्रयोग मिलता है। 'पियारो' (ब्रज.) का एक बार 'पियार' (अवधी, भोजपुरी) का एक बार भी प्रयोग नहीं मिलता।

(*ii*) अकेला (खड़ी बोली) की चार बार आवृत्ति हुई है, अकेला (अवधी, भोजपुरी) का एक बार प्रयोग मिलता है जबकि ब्रजभाषा के अकेलो का एक बार भी प्रयोग नहीं मिलता।

(*iii*) भला (खड़ी बोली) की तेरह बार आवृत्ति हुई है। भला (अवधी, भोजपुरी) की पांच बार तथा भला (ब्रजभाषा) की दो बार आवृत्ति मिलती है।

(*iv*) इसी प्रकार ऐसा की चौंतीस, ऐसो की एक तथा ऐस की एक भी आवृत्ति नहीं मिलती। इस संदर्भ में यह तथ्य उल्लेखनीय है कि पश्चिमी हिन्दी की खड़ी बोली में जो शब्द आकारान्त होते हैं, अधिकांशत: वे ब्रज और राजस्थानी में ओकारन्त या औकारान्त और अवधी तथा भोजपुरी में प्राय: लघ्विन्त या व्यंजनान्त होते हैं। अत: संज्ञा तथा विशेषणों की दृष्टि से हिन्दी-परिषद् द्वारा प्रकाशित कबीर ग्रंथावली की भाषा में कबीर की भाषा का झुकाव खड़ी बोली की ओर अधिक है।

संबंधकारक परसर्गों की दृष्टि से: हिन्दी परिषद् द्वारा प्रकाशित कबीर ग्रंथावली के आधार पर संबंधकारक परसर्गों की दृष्टि से यह तथ्य और भी अधिक उभरकर सामने आता है कि कबीर की काव्य-भाषा खड़ी बोली के निकट है। उदाहरण के लिए उसमें 'का' (खड़ी बोली) की आवृत्ति 135 बार मिलती है तो ब्रजभाषा के संबंधकारक परसर्ग कौ की आवृत्ति मात्र 25 बार ही मिलती है। इसी प्रकार 'क' (अवधी) की आवृत्ति 25 बार तथा 'केर' और 'केरा' (अवधी) की आवृत्ति क्रमश: 21 बार हुई है तो ब्रजभाषा का 'मेरो' की 10 बार मोर, मोरा (अवधी, भोजपुरी) की 10-10 बार आवृत्ति हुई है। 'तेरा' की आवृत्ति यदि 15 बार हुई है तो 'तेरो' की 3 बार तथा तोर, तोरा और तुम्हारा तीनों को मिलाकर 11 बार आवृत्ति हुई है।

सहायक क्रियाओं की दृष्टि से: सहायक क्रियाओं की दृष्टि से भी कबीर-ग्रंथावली में खड़ी बोली की सहायक क्रियाओं का अधिक प्रयोग मिलता है। जैसे–

(*i*) 'था, थे'(खड़ी बोली) दोनों की 11 बार आवृत्ति हुई है, जबकि 'हते' ब्रजभाषा की मात्र एक बार आवृत्ति हुई है।

(*ii*) हुआ, हूआ, भया (खड़ी बोली) की 81 बार आवृत्तियाँ हुई हैं, 'भयौ' (ब्रजभाषा) की 17 बार तथा 'भवा' और 'भएउ' (अवधी) की मात्र 2 बार आवृत्ति हुई है। यदि ब्रजभाषा रूप भयौ को अवधी भएउ के रूप में मान लिया जाए, क्योंकि थोड़ा-सा उच्चारण-भेद है, तो भी पूर्वी हिन्दी सहायक क्रियाओं की कुल 19 आवृत्तियाँ होती हैं, जबकि पश्चिमी सहायक क्रियाओं के 81 अर्थात् चार गुने से अधिक रूप हैं।

भूत तथा भविष्यत्कालिक क्रियाओं की दृष्टि से: भूत तथा भविष्यत्कालिक क्रियाओं की दृष्टि से भी खड़ी बोली का ही पक्ष सबल है। उदाहरण के लिए उक्त कबीर ग्रंथावली में खड़ी बोली की 'इया' अथवा 'आ' प्रत्ययान्त क्रियाएँ–जैसे पाया, मिलिया आदि की यदि 150 बार आवृत्ति हुई है तो ब्रज की इयौ, यौ तथा औ प्रत्ययान्त क्रियाओं की 30 बार आवृत्ति हुई है। अवधी की या, एउ तथा एहु प्रत्ययान्त क्रियाओं की 13 बार तथा भोजपुरी की ला, ल प्रत्ययान्त क्रियाएँ मात्र 5 बार प्रयुक्त हुई हैं। डॉ. पारसनाथ तिवारी ने इस संदर्भ में जो मत व्यक्त किया है वह हमें भी स्वीकार्य है–

"है लगाकर भविष्य निश्चयार्थ क्रिया की रचना खड़ी ब्रज और अवधी तीनों में मिलती है। क.ग्रं. में भी ये रूप पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। स-लगाकर कबीर की वाणियों में नाद-बिन्दु और अनहद का प्राय: नाथ-पंथियों के अर्थ में प्रयोग किया गया है। सूर्य को चन्द्र से मिलाने की स्थिति के विषय में वे कहते हैं कि तब अनहद-वेणु सुनाई देने लगता है–

ससिहद सूर मिलावा, तब अनहद वेन बजावा।
जब अनहद बाजा बाजै, तब साईं संगि विराजै।।

इसी प्रकार उनके निम्नांकित उद्गार अवलोकनीय हैं—

अवधू नादै व्यंद गगन, गाजै सबद अनहद बोलै।
अंतगति नहिं देखै बैड़ा, ढूढंत बन-बन डोलै।।

डॉ. गोविंद त्रिगुणायत ने यह मत व्यक्त किया है कि कबीर ने नाद-बिन्दु का गोरखनाथ के अर्थ में प्रयोग करते हुए भी इस साधना को गौण ही स्वीकार किया है—"नाद-बिन्दु शब्दों का प्रयोग कबीर ने भी किया है। इन शब्दों को वे प्राय: उन्हीं अर्थों में ग्रहण करते थे जिन अर्थों में गोरखनाथ जी। बिन्दु-संरचना उन्हें भी मान्य थी, किन्तु इसे वे उपासना मात्र मानते थे साध्य नहीं। उनकी मूल साधना तो भगवद्-भक्ति थी। इस बात को उन्होंने इस रूपक से स्पष्ट करने की चेष्टा की है—

नाद ब्यंद की नाव री, राम नाम कनिहार।
कहै कबीर गुण गाहले, गुरु गमि उतरौं पार।।

यहाँ पर स्पष्ट ही उन्होंने राम-नाम की अपेक्षा नाद ब्यंद को गौण-रूप माना है। जिस प्रकार से नदी पार करने वाला पथिक पहले तो एक नाव की खोज करता है। नाव मिलने पर उसके खेने और कर्णधार की चिन्ता होती है। साथ ही एक पथ-प्रदर्शक की भी आवश्यकता पड़ती है तथा इन तीनों के प्राप्त हो जाने पर वह प्रसन्नतापूर्वक गीत गाता हुआ नदी के पार पहुँच जाता है। उसी प्रकार जीवरूपी पथिक को भवसागर के पार जाने के लिए नाद बिन्दु साधना के रूप में एक नाव की आवश्यकता होती है। उस साधना को सफल बनाने के लिए राम नाम रूपी कर्णधार अपेक्षित होता है। पथ-प्रदर्शक गुरु के बिना तो काम ही नहीं चल सकता। इन तीनों के मिल जाने पर वह सफलतापूर्वक भगवान का कीर्तन करते हुए उस पार जा सकता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि कबीर कोरी नाद बिन्दु-साधना को नाव के समान शुष्क और जड़ मानते थे। वही भक्ति-भावना से समन्वित होकर भवसागर के पार ले जाने वाली वस्तु बन जाती है। कोरी बिन्दु-साधना की इसीलिए उन्होंने एक दूसरे स्थल पर निन्दा की है।

बिन्दु राख जो तरयै भाई, खुसरै क्या न परम गति पाई।।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कबीर ने नाद-बिन्दु साधना को अधिक महत्त्व नहीं दिया है। परम्परा पालन के रूप में ही इनमें यह शब्द मिलते हैं। नाद से कबीर का अभिप्राय अधिकतर अनहद नाद होता है। बिन्दु का यह साधारण अर्थ ब्रह्मचर्य पालन ही लेते हैं। कहीं-कहीं पर नाथ पंथियों के अनुसरण पर उन्होंने नाद को परमात्मा और बिन्दु को जीवात्मा के अर्थ में भी प्रयुक्त किया है। गोरखनाथ और कबीर की बिन्दु-साधना में इतना ही अन्तर था कि गोरखनाथ ज्ञानपूर्वक की गई नाद बिन्दु-साधना को महत्त्व देते थे और कबीर भक्तिपूर्वक की गई नाद बिन्दु-साधना को।"

कबीर द्वारा प्रयुक्त इसी प्रकार के अन्य शब्द हैं—सहज, उन्मनि, निरंजन आदि। 'सहज' शब्द को कबीर ने डॉ. गोविंद त्रिगुणायत के अनुसार निम्नांकित अर्थों में प्रयुक्त किया है—

"कबीर का सहज अद्वैतवादियों का सर्वव्यापी अव्यय तत्व है। कहीं-कहीं यह सहज शब्द समाधि और नादस्वरूपी ब्रह्म का पर्यायवाची भी प्रतीत होता है, पर ऐसे स्थल कबीर की वाणियों में कम हैं। इस प्रकार कबीर की सहज-साधना सात्विक भक्ति विशिष्ट अद्वैतमूलक है।"

'उन्मनि' को वे समाधि का बोधक स्वीकार करते हैं—

"हमारी समझ में नाथपंथी हठयोगियों की 'उन्मनि' पातंजल योग में वर्णित समाधि का ही रूपान्तर है।" कबीर उसे आनन्दावस्था मानते हैं—

अवधू मेरा मन मतवारा, उम्मीन चढ़ा गगन रस पीवै।

नोट

निरंजन शब्द के विषय में डाक्टर हजारी प्रसाद द्विवेदी ने यह स्पष्टीकरण किया है कि कबीर-पंथ में वह शैतान के रूप में चित्रित किया गया है और उसके कबीरदास, जिन्हें कबीर-पंथी सत्यपुरुष मानते हैं–के साथ काफी झगड़े होते रहे हैं। उनके निम्नांकित उद्‌गारों में निरंजन के इसी रूप की ओर संकेत है–

अवधू निरंजन जाल पसारा।
स्वर्ग पाताल-जीव-मृत-मण्डल तीन लोक विस्तारा।

इस संदर्भ में अन्ततः डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के ये उद्‌गार द्रष्टव्य हैं–

"वे विकासवादी थे। उनकी विचारधारा धीरे-धीरे विकसित हुई थी। यही कारण है कि उनमें प्रत्येक शब्द, प्रत्येक प्रयोग और विचारधारा के विकसित होते हुए विविध स्तर दिखाई पड़ते हैं।"

भविष्यकालिक क्रिया का निर्माण अपभ्रंशकालीन पद्धति की ओर संकेत करता है, यद्यपि आजकल उसे पंजाबी की विशेषता माना जाता है। क. ग्रं. में इस प्रकार के भी अनेक रूप मिलते हैं। जैसे-होसी, करसी, लाएसी आदि। किन्तु-ग् भविष्यत् स्पष्ट रूप से खड़ी बोली तथा ब्रज की विशेषता है। इनमें भी गा खड़ी बोली के हैं और गो, गौरूप ब्रज के। क. ग्रं में गा रूप (जैसे जाइगा, होइगा आदि) 25 बार मिलते हैं जबकि-गो-गौ रूप केवल चार × × × बार।

क्रिया किसी बोली या भाषा का सर्वाधिक निर्णायक तत्त्व है, इसीलिए क्रियापद वाक्य का कलश या शीर्ष माना जाता है। क्रियापदों में भी भूत निश्चयार्थ एकवचन रूप किसी भी रचना की बोलीगत विशेषता को पहचानने में सबसे अधिक सहायक होते हैं। ऊपर हमने देखा कि इस दृष्टि से क. ग्रं. में खड़ी, ब्रज, अवधी तथा भोजपुरी के क्रियारूपों का अनुपात 150, 30, 13, 5 है। अतः उसमें खड़ी बोली रूपों की प्रधानता स्वतः सिद्ध है।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि यद्यपि विद्वानों का बहुमत कबीर-काव्य की भाषा को मूलतः 'ब्रज' मानने के पक्ष में है, किन्तु उसे खड़ी-बोली तथा अवधी सिद्ध करने वाले दावेदार भी हैं। स्वयं डॉ. तिवारी ने इस विषय में कोई स्पष्ट मत व्यक्त नहीं किया है, अपितु यह कहकर समस्या को उलझा ही छोड़ दिया है–

"उपर्युक्त दोनों विद्वानों (डॉ. दुबे और जायसवाल) के मतों में यद्यपि हम कुछ वैभिन्य पाते हैं, किन्तु उनसे इतना तो अवश्य ही निर्धारित हो गया है कि क. ग्रं. की मूलाधार बोली खड़ी अथवा ब्रज में से ही कोई एक है। प्रसन्नता इस बात की है कि कबीर का भाषाशास्त्रीय अध्ययन भी उक्त दोनों विद्वानों के प्रयास से पर्याप्त दृढ़ भूमि पर प्रतिष्ठित हो चुका है। अब आवश्यकता इस बात की है कि कोई तीसरा व्यक्ति, जो इस विषय में निष्णात हो, सूक्ष्मता से इन मतों की निष्पक्ष जांच करे। सम्भव है, निकट भविष्य में इस प्रकार का भी कोई प्रयास हो जाए। × × × "

सन् 1928 ई. में ना. प्र. सभा की कबीर ग्रन्थावली का सम्पादन करते समय डॉ. श्यामसुन्दरदास ने कहा था कि कबीर की भाषा का निर्णय करना टेढ़ी खीर है। हम देखते हैं कि पैंतालीस वर्षों के बाद भी यह समस्या ज्यों की त्यों टेढ़ी खीर बनी हुई है।"

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. बीजक की भाषा ठेठ ……… पूर्वी है।
2. कबीर ने ……… को अधिक महत्त्व नहीं दिया है।
3. कबीर की भाषा का निर्णय करना ……… खीर है।

3.2 कबीर की भाषाभिव्यक्ति की क्षमता

नोट

कबीर की काव्य-भाषा की भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से क्षमता-अक्षमता के विषय में विद्वानों का बहुमत उसकी क्षमता का प्रशंसक है। डॉ. श्यामसुन्दरदास के अनुसार–

"कहीं-कहीं उनकी भाषा बिल्कुल गंवारू लगती है, पर उनकी बातों में खरेपन की मिठास है जो उन्हीं की विशेषता है और उसके सामने यह गंवारूपन डूब जाता है।

श्री सिद्धनाथ तिवारी ने कबीर आदि सन्त कवियों की काव्य-भाषा को भाषा की लैबोरेटरी बताते हुए कहा है–

"कबीर आदि सन्तों की भाषा को अनेक विद्वानों ने अशक्त एवं निकम्पा कहा है, पर ध्यान से देखने पर सन्तों की भाषा में भाव प्रकटीकरण की जो तीव्रता है, अपने को स्पष्ट करने की जो शक्ति है, वह शायद हिन्दी साहित्य में अन्यत्र नहीं मिल सके।"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तो कबीर को भाषा का डिक्टेटर माना है– भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया है–बन गया है तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर।

नोट्स कबीर की भाषा में ब्रज और खड़ी बोली के प्राधान्य के साथ अन्य भाषाओं का पुट भी मिलता है।

भाषा कुछ कबीर के सामने लाचार-सी नजर आती है। उसमें मानो ऐसी हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ की किसी फरमाइश को नाहीं कर सके। और अकह कहानी को रूप देकर मनोग्राही बना देने की जैसी ताकत कबीर की भाषा में है, वैसी बहुत कम लेखकों में पाई जाती है। × × × सीधी भाषा में वे ऐसी गहरी चोट करते हैं कि चोट खाने वाला केवल धूल झाड़कर चल देने के सिवा और कोई रास्ता ही नहीं पाता।"

डॉ. पारसनाथ तिवारी ने कबीर की अभिव्यंजना-शैली की प्रशंसा करते हुए कहा है–

कबीर की भाषा यद्यपि सादी, अलंकार विहीन और कहीं-कहीं अनगढ़ या अपरिष्कृत भी है, किन्तु उसमें अभिव्यक्ति की आश्चर्यजनक क्षमता है। उनका वर्ण्य-विषय आध्यात्मिक है। किन्तु उनके चिन्तन में बासीपन बिल्कुल नहीं है बल्कि उसमें स्वानुभूति की प्रधानता है। यदि उन्होंने दूसरों की विचार-शैली अपनाई भी है तो उसमें उनका निजी चिन्तन बोलता रहता है। उनकी सरलता तथा प्रभावोत्पादकता का मूल कारण यही ज्ञात होता है।

झगरा एक निबेरहु रांम जे तुम्ह अपनैं जन सौं कांम।
ब्रह्म बड़ा कि जिन रे उपाया। वेद बड़ा कि जहाँ तैं आया।।
यहु मन बड़ा कि जोहिं मन मानैं। राम बड़ा कि रांमहि जानैं।
कहैं कबीर हौं भया उदास। तीर्थ बड़ा कि हरि का दास।।

उन्हें हरि-भक्त को तीर्थ से बड़ा बताना है। वे नितान्त भोलेपन से इस प्रकार कहते हैं–'ऐ मेरे राम, एक झगड़े का निबटारा करो, अगर तुम्हें अपने विवेक से कुछ भी सरोकार है। ब्रह्म बड़ा है कि वह जिसने ब्रह्म को बताया। वेद बड़ा है कि वह जहाँ से वेद आया? यह मन बड़ा है कि वह जिसे मन मान जाए? राम बड़ा है कि जो राम को जान जाए? कबीर कहता है कि यह सोचकर मैं उदास हुआ जा रहा हूँ कि तीर्थ बड़ा है या हरि का भक्ति (जो तीर्थ बनाने वाला है)? इस कथन में ऊपर से देखने में तो सरलता है, किन्तु तर्कों की शैली और

नोट

विवेचना-पद्धति यह बता रही है कि इस कथन के पीछे एक आत्मविश्वासी गंभीर चिन्तक का स्वर छिपा हुआ है जो हमें सोचने के लिए मज़बूर कर देता है। ऐसी विशिष्ट सादगी में ऊंची से ऊंची बात कह देने में कबीर माहिर हैं।

कबीर की गूढ़ की गूढ़ बात को अत्यधिक सरल-सहज शब्दावली में अभिव्यक्त कर देने की क्षमता की प्रशंसा करते हुए उनकी निम्नांकित उक्तियों को उद्‌धृत करके–

सो जीवन भला कहाही, बिनु मूएं जीवन नाही।

× × × ×

जहां नहीं तहां कछु जांनि। जहां नहीं तहां लेहु पिछांनि।

× × × ×

गावन ही मैं रोष है, रोवन ही मैं राग।

डॉ. पारसनाथ तिवारी ने इनमें प्रथम पंक्ति में परमानुभूति का, द्वितीय में सहजावस्था का तथा तृतीय में गृहस्थ और वैरागी के सूक्ष्म अन्तर का वर्णन बताते हुए यह मत व्यक्त किया है।

"इन पंक्तियों में एक भी क्लिष्ट शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है, किन्तु मात्र अन्वय कर देने से इन पंक्तियों की गंभीरता नहीं आंकी जा सकती। वस्तुत: बिना सत्य का आमने सामने साक्षात्कार किए इस प्रकार का उक्ति-वैचित्र्य आ ही नहीं सकता। कबीर का साक्षात्कार ऐसा ही था। इतने गूढ़ विषय को इतने अधिकार पूर्ण सरलता से सुस्पष्ट करने की क्षमता उनमें इसीलिए है कि उनकी अभिव्यक्ति में शास्त्र-ज्ञान की तोतारटन्त शैली का प्रभाव एकदम नहीं है। उनमें नख-शिख की ताजगी है।"

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

1. किस पर कबीर ने खंडन किया है?

   (*a*) नारियों (*b*) बनावटी आडम्बरों

   (*c*) सामाजिक कुरुतियों (*d*) ब्रह्माचार

5. उन्मनि का क्या अर्थ है?

   (*a*) बेमन (*b*) उदार

   (*c*) पाखंडी (*d*) खुश

6. कबीर आदि संतों की भाषा को विद्वानों ने क्या कहा है?

   (*a*) निकम्पा (*b*) अनुकम्पा

   (*c*) गवांरू (*d*) सधुक्कड़ी

उनके अनुसार कबीर की भाषा की अन्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(*i*) उसकी मार बड़ी तेज है और वह इतनी जीवन्त है कि पाठक या श्रोता को झकझोर देती है। जहाँ पर उन्होंने बाह्याचार आदि का खण्डन किया है, वहाँ उनकी भाषा का यह गुण और निखर गया है।

(*ii*) शास्त्रीय पद्धति पर (Academic) परिष्कृत और परिमार्जित ढंग से अपने विचार व्यक्त करने वालों की भाषा में तेज धार एकदम नहीं होती। किन्तु कबीर के संस्कार ऐसे थे कि भाषा की धार-कोर बिल्कुल दुरुस्त थी, उसके कुण्डित होने का कोई प्रश्न ही नहीं था।

(*iii*) कबीर सामाजिक विषमता के स्वयं भुक्तभोगी थे। इस संस्कार ने उस धार पर सान चढ़ाने का काम किया। उनके शब्द सामाजिक विषमता का गरल पान करने वाले और भक्ति-गंगा को मस्तक पर धारण करने वाले नीलकण्ठ भूतनाथ के डमरू के शब्द थे जिनके श्रवण मात्र से प्रपंचबुद्धि लोग मौन धारण कर लेते थे।

(*iv*) कबीर की भाषा में एक विशेष प्रकार की ऊर्जा अथवा उठान है जिसके पीछे संस्कारगत ईमानदारी बोलती है। भाषा की इस विशेषता की थोड़ी बहुत झांकी हिन्दी में या तो उनके थोड़े समय बाद होने वाले जायसी में मिलती है या फिर उनके बहुत समय बाद केवल मुंशी प्रेमचन्द की रचनाओं में देखने को मिलती है।

(*v*) कबीर की भाषा को देखकर उस ग्रामीण नायिका (उसे वचनविदग्धा, रूपगर्विता, प्रगल्भा, क्या-क्या कहा जाए) का स्मरण हो आता है, जो निहायत सादगी और आत्मविश्वास के साथ कहती है–

ग्रामरुहास्मि ग्रामे वसामि नगरस्थितिं न जानामि।
नागरिकाणां पतीन् हरामि या भवामि या भवामि।।

अर्थात् 'गाँव में पैदा हुई, गाँव में ही रहती हूँ। जानती भी नहीं कि नगर कहाँ होता है? इतना अवश्य है कि नागरिकाओं के पति आकर यहाँ की खाक छान जाया करते हैं। वैसे कहने को जो भी हूँ सो हूँ।'

डॉ. पारसनाथ तिवारी का निष्कर्ष है–

"कबीर की भाषा भी कहने के लिए उजड़, गंवई, गंवारू चाहे जो कुछ भी कह ली जाए, उसकी अभिव्यक्ति के छलकते सौन्दर्य पर बड़े-बड़े नागर और परिष्कृत कवियों की भाषा निछावर की जा सकती है।"

डॉ. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी ने कबीर की भाषा की अग्रलिखित सामान्य विशेषताओं का उल्लेख किया है–

1. कबीर ने लोक-भाषा की संदेश-वाहक शक्ति को पहचानकर उसे ही अपनाया। उसमें खड़ी बोली, ब्रजभाषा, राजस्थानी, पंजाबी अवधी तथा फारसी बोलियों का सुखद संयोग है। सामान्य काव्य-भाषा से पृथक् साधुओं की इस भाषा को सधुक्कड़ी भाषा कहा गया है।
2. कबीर द्वारा व्यवहृत भाषा यद्यपि विशेष परिष्कृत और परिमार्जित नहीं है। तथापि कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है।
3. प्राचीन क्रिया-रूपों, विशृंखल वाक्य-विन्यास, बोलचाल के अत्यधिक शब्दों तथा श्लेष के फलस्वरूप उनकी भाषा अपेक्षाकृत जटिल हो गई है।
4. कबीर की भाषा में व्याकरण के नियमों की उपेक्षा पाई जाती है।
5. कबीर की भाषा में नागरिकता का अभाव है। आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में–"वह ऊबड़-खाबड़ और सधुक्कड़ी है।"
6. भाषा पर कबीर का पूर्ण अधिकार था। कबीर की भाषा सर्वत्र ही उनके भावों को वहन करने में सर्वथा सक्षम एवं पूर्णतया समर्थ है। कबीर ने गम्भीर से गम्भीर विषय का विवेचन सरल भाषा में किया है। शब्दों को मूर्त रूप देने में कबीर सिद्धहस्त है।
7. कबीर की भाषा में संगीतात्मकता का सफल समावेश है। इनकी संगीतात्मक भाषा में अभिव्यंजना की लगभग सभी पद्धतियाँ देखने को मिलती हैं।
8. साखियों में भाषा की व्यंजना-शक्ति का पूर्ण प्रस्फुटन हुआ है। साखियों में बिम्बों को निर्मित करने वाले अलंकारों का आकर्षक प्रयोग दिखाई देता है। रूपक तथा रूपकातिशयोक्ति के मिश्रण से कबीर की अभिव्यंजना का यह मनोरम रूप द्रष्टव्य है–

नोट

राम रसाइन प्रेम रस पवीत अधिक रसाल।
कबीर पीवण दुलभ है, मांगे सीम कलाल।।

9. कबीर की भाषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि उसकी प्रेषणीयता है। उसमें कला की काट-छाँट भले ही न हो परन्तु अनुभूति का तीक्ष्ण पौरुष उसमें सर्वत्र व्याप्त है जिसने उसे अत्यन्त प्रभावोत्पादक और आदरणीय बना दिया है। अनुभूति सत्य के इस प्रखर पौरुष के कारण ही कबीर "मसि कागद न छू कर भी वाणी के डिक्टेटर बन गए हैं।"

उपर्युक्त विवेचन के प्रकाश में कहा जा सकता है कि यद्यपि कबीर की भाषा में ग्रामीण बोलचाल के शब्दों की प्रधानता है, तथा व्याकरण विरुद्ध प्रमाण भी मिलते हैं, किन्तु जहाँ तक उसकी भाव-वहन की क्षमता का प्रश्न है डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के ये उद्गार उचित ही है–"भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा, उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया है–बन गया है तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर। भाषा कबीर के सामने कुछ लाचार सी नजर आती है। इसमें मानो हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ की किसी फरमाइश को ना कर सके और अकथ कहानी को रूप देकर मनोग्राही बना देने की जैसी ताकत कबीर की भाषा में है वैसी बहुत कम लेखकों में पाई जाती है।"

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. साखया का भाषा में, जिसे रामचन्द्र शुक्ल ने सधुक्कड़ी कहा है, खड़ी बोली में अंग्रेजी और फारसी का पुट है।
8. भाषा कबीर के आगे कुछ लाचार सी नजर आती है।
9. कबीर की भाषा की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि उसकी प्रेणियता है।

3.3 सारांश (Summary)

- संभवत: कबीर ने सर्वमान्य भाषा (ब्रज) में अपने पूर्वी प्रयोग के संबंध में स्पष्टीकरण देते हुए स्वीकार किया कि पूर्व का होने के कारण उनकी भाषा में पूरबी का भी कुछ प्रभाव आ गया है वैसे कबीर के कई पद भोजपुरी या अवधी में भी दिखाई पड़ते हैं। रमैणी की भाषा में अवधी का प्रभाव स्पष्ट है।
- कबीर की भाषा में अवधी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली, इन तीन भाषाओं का मिश्रण मानना ही अधिक न्याय संगत तथा वैज्ञानिक होगा। इन तीनों के मिश्रित रूप के साथ राजस्थानी, भोजपुरी तथा पंजाबी के रूपों का सहायक रूप में प्रयोग हुआ है।"
- कबीर की भाषा भी कहने के लिए उजड़, गंवई, गंवारू चाहे जो कुछ भी कह ली जाए, उसकी अभिव्यक्ति के छलकते सौन्दर्य पर बड़े-बड़े नागर और परिष्कृत कवियों की भाषा निछावर की जा सकती है।

3.4 शब्दकोश (Keywords)

पथ-प्रदर्शक : रास्ता दिखाने वाला

सधुक्कड़ी : साधुओं की भाषा

परिमार्जित : संशोधन करना

नोट

3.5 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. कबीर ने समाज की किन कुरूतियों पर अधिक प्रहार किए हैं? वर्णन कीजिए।
2. कबीर की भाषा प्रयोग पर विद्वानों का क्या मत है? समझाइए।
3. कबीर की भाषा की क्या मुख्य विशेषताएँ थी? उल्लेख कीजिए।

उत्तर: स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. प्राचीन	2. नाद-बिन्दु भावना	3. टेढ़ी
4. (*c*)	5. (*a*)	6. (*a*)
7. गलत	8. सही	9. गलत

3.6 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. कबीर वाणी (पारसनाथ तिवारी) अनीता प्रकाशन, नई सड़क, नई दिल्ली।

नोट

इकाई–4: कबीर वाणी : समीक्षा

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

4.1 कबीर वाणी की समीक्षा

4.1.1 निर्गुण ईश्वर में विश्वास

4.1.2 रूढ़ियों और आडम्बरों का विरोध

4.1.3 लोक संग्रह की भावना

4.2 सारांश (Summary)

4.3 शब्दकोश (Keywords)

4.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

4.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- कबीर वाणी की समीक्षा करने में।
- कबीर वाणी का मूल्यांकन करने हेतु।
- कबीर वाणी की विशेषता समझने में।
- कबीर के साहित्य में एक नवीन धारा की सृष्टि जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

कुछ विद्वान् कबीर को ही सन्त-मत का प्रवर्तक स्वीकार करते हैं, जो उचित नहीं है। डॉ. रामकुमार वर्मा ने उसका उद्‌भव सिद्धों और नाथों के साहित्य से मानते हुए यह मत व्यक्त है–"धार्मिक विचारों में परिवर्तन होने का सूत्रपात एक ऐसे रूप में आरंभ हुआ। जिसने हमारे साहित्य में एक नवीन धारा की सृष्टि कर दी। यह नवीन काव्य-धारा 'सन्त-काव्य' के रूप में प्रवाहित हुई। यह पहले से चले आते हुए सिद्ध साहित्य और 'नाथ साहित्य' का स्वाभाविक रूप से विकसित रूप थी।"

इसी प्रकार सिद्धनाथ तिवारी ने निर्गुण-पंथी कवियों की 'बानियों' के स्रोतों को बहुत प्राचीन बनाते हुए कहा है–"यह धारा वेदों से निकली और उपनिषदों एवं परवर्ती युगों के तट का स्पर्श करती हुई जैन और बौद्ध काल में विस्तृत होती हुई चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी में इन सन्तों के ज्ञान-क्षेत्रों में सिमट गई।"

नोट

डॉ. शिवकुमार शर्मा के अनुसार भी सन्त-काव्य बौद्ध धर्म और उसके साहित्य से अनुप्राणित है। उनके ही शब्दों में–"बौद्ध धर्म से महायान तथा हीनयान नामक सम्प्रदायों का आविर्भाव हुआ, महायान से मंत्रयान और मंत्रयान से वज्रयान और इसी वज्रयान की घोर तांत्रिक प्रक्रिया में नाथ सम्प्रदाय का उदय हुआ, और नाथ सम्प्रदाय के प्रेरणामूलक तत्वों को लेकर सन्त-मत अवतरित हुआ। बौद्ध धर्म से लेकर नाथ सम्प्रदाय तक इस प्रक्रिया में जो जीवन तत्व उभरे, उन सब का समावेश सन्त मत में हुआ। जब सन्त मत का उदय उत्तरी भारत में हो रहा था उस समय नाथ पन्थ अपनी अव्यावहारिकता के कारण ह्रासोन्मुख था। उत्तरी भारत में उस समय स्वामी रामानन्द दक्षिण के भक्ति आंदोलन का उन्नयन कर रहे थे। उनकी शिष्य परम्परा में सगुण और निर्गुण दोनों प्रकार के भक्त थे। स्वामी रामानन्द की भक्ति में ऊंच नीच, जाति पांति एवं छुआछूत की भावनाएँ नहीं थीं। महात्मा कबीर स्वामी रामानन्द की शिष्य परंपरा में थे।"

बहुत से विद्वानों ने हिन्दी साहित्य में सन्त मत का प्रवर्तक कबीर को माना है किन्तु यह सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं है। महाराष्ट्र के विट्ठल सम्प्रदाय में, जो कि कालक्रम में कबीर से पहले ठहरता है, सन्त सम्प्रदाय के प्राय: सभी बीजों का वपन हो चुका था जो कि बाद में सन्त काव्य में पल्लवित और पुष्पित हुए।

क्या आप जानते हैं कबीर को सन्त सम्प्रदाय का प्रवर्तक सिद्ध करने वालों का कहना है कि कबीर से पहले अनेक निर्गुणभाव के साधक हुए किन्तु सन्त मत की जो सहज धारा हिन्दी साहित्य की कविता में प्रवाहित हुई उसका आरंभ कबीर से हुआ।

कबीर से पूर्व महाराष्ट्र के कुछ निर्गुण भाव के साधकों की कविताएँ मिलती हैं। इनमें मुख्य हैं–महाराज सोमेश्वर (1127 ई.), चक्रधर महाराज (शक 1194), नामदेव (1267 ई.), ज्ञानेश्वर, मुक्ताबाई आदि। नामदेव की भांति एक पुराने भक्त कवि जयदेव के, जो गीतगोविन्दकार जयदेव से भिन्न हैं, कुछ निर्गुण भाव के पद मिलते हैं। नामदेव ने हिन्दी भाषा में भी काफी लिखा। उन्होंने प्राय: उत्तरी भारत का भ्रमण भी किया था। नामदेव की कुछ कविताएँ गुरु ग्रन्थसाहिब में भी गृहीत हैं। हमारे विचार से सन्त काव्य का प्रवर्तक कबीर की अपेक्षा नामदेव को मानना अधिक उपयुक्त है। यह दूसरी बात है कि नामदेव के व्यक्तित्व में मृदुता है और कबीर में प्रखरता, जिसके कारण वे प्रकाश में आ सके।

यह स्वीकार करते हुए भी कि सन्त मत के प्रवर्तक नामदेव हैं, यह तथ्य निर्विवाद है कि सन्त कबीर को ही इस काव्य धारा का प्रमुख कवि होने का गौरव प्राप्त है। सन्त काव्य की जो निम्नांकित प्रमुख विशेषताएं स्वीकार की जाती हैं–

(क) निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास।

(ख) बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध।

(ग) सद्गुरु का महत्त्व।

(घ) जाति-पांतिगत भेदभाव का विरोध।

(ङ) रूढ़ियों और आडम्बरों का विरोध।

(च) रहस्यवादी विचारधारा।

(छ) भजन तथा नाम स्मरण का बल।

(ज) मार्मिक विरह भावना।

(झ) लोक संग्रह की भावना।

(ञ) नारी के प्रति घृणात्मक निन्दापरक दृष्टिकोण।

नोट

ये सभी विशेषताएं कबीर के काव्य में मिलती हैं। यही नहीं, यह कहना अधिक संगत है कि सन्त-काव्य की अधिकांश विशेषताओं का निर्धारण सन्त कबीर की मान्यताओं के आधार पर ही किया गया है, जैसा कि निम्नांकित उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगा–

4.1 कबीर वाणी की समीक्षा

4.1.1 निर्गुण निराकार ईश्वर में विश्वास

सभी सन्त कवियों ने ईश्वर को सगुण-साकार मानने के स्थान पर उसे निर्गुण-निराकार स्वीकार किया है। कबीरदास ने भी राम की उपासना पर बल देते हुए उन्हें निर्गुण निराकार माना है–

निर्गुन राम जपहु रे भाई।
अविगत की गति लखी न जाई।।

उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि उनके राम दशरथ के पुत्र नहीं हैं, अपितु उनका मर्म तो कुछ दूसरा ही है–

दसरथ सुत तिंहु लोक बखाना,
राम नाम का मरम है आना।

कबीर के राम तो वैसे ही घट-घट में विराजमान हैं जैसे कस्तूरी मृग की नाभि में रहती है और व्यर्थ ही उसे वन में ढूँढ़ने के लिए भटकता फिरता है। इसी प्रकार से घट-घट व्यापी राम को बाहर ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है–

कस्तूरी कुण्डिल बसै मिग्र ढूँढै वन माहि।
तैसे ही घट-घट राम हैं, दुनिया देखै नाहिं।।

उनके अनुसार वह परम तत्त्व पुष्प गन्ध से भी पतला है, तथा उसके मुंह, मस्तक या रूप-रेख कुछ भी नहीं है–

जाके मुंह माथा नहीं, नाहीं रूप-कुरूप।
पुहुप बास ते पातरा, ऐसा तत्त्व अनूप।।

टास्क सभी सन्त कवियों ने ईश्वर को सगुण साकार मानने के स्थान पर उसे निर्गुण निराकार क्यों स्वीकार किया है? उल्लेख कीजिए।

(ख) बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोधः सन्त कवियों ने बहुदेववाद और अवतारवाद का विरोध किया है। चरनदास तो यहाँ तक कह देते हैं कि मेरा सिर अवतारी राम के समक्ष नहीं झुक सकता, चाहे वह टूटकर गिर जाए–

यह सिर नवे न राम कू, चाहे गिरियो टूट।
आन देव नहिं परसिये, यह तन जायो छूट।।

कबीरदास भी स्पष्ट कर देते हैं कि उनके राम–

ना जसरथ घर औतारि आया, ना लंका का राव सताया।

उनका तर्क है कि कर्ता, कर्मों से परे होता है। अतः यदि तुम राम को ही ईश्वर मान लेते हो तो उनके पिता दशरथ को तथा दशरथ के पिता और राम के बाबा को किसने सिरजा था?

साधो, करता करम तें न्यारा!
आवै न जाइ, मरै नहिं जनमै, ताका करो विचार।

'राम को पिता' जसरथ कहिये, जसरथ कौने जाया।
जसरथ पिता राम कौ दादा कह्यौ कहाँ ते आया।।

(ग) सद्‌गुरु का महत्त्व: प्राय: सभी सन्त कवियों ने साधना में सद्‌गुरु की महत्ता का प्रतिपादन किया है। यों तो सगुण भक्त कवियों ने भी सद्‌गुरु की महत्ता स्वीकार की है किन्तु सन्त कवि तो उसे एक प्रकार से ईश्वर का स्थानापन्न ही मानते हैं। कबीर के निम्नांकित दोहे में सद्‌गुरु को ईश्वर से भी बढ़कर स्वीकार किया गया है–

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूं पायं।
बलिहारि गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

(घ) जाति-पांतिगत भेदभाव का विरोध: सिद्धों और नाथों की भाँति सन्त कवियों ने भी जाति-पांतिगत भेद-भाव का विरोध किया है, जो एक प्रकार से उनके लिए आवश्यक भी था। कारण यह था कि सिद्धों और नाथों की भाँति सन्त कवियों में से भी अधिकांश निम्न जातियों से सम्बन्धित थे। कबीर ने भी कहा है–

जाति-पांति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।

इसके साथ ही उन्होंने उच्च वर्ग के लोगों अर्थात् ब्राह्मणों को चुनौती देते हुए कहा है–

तू ब्राह्मन, मैं कासी का जुलाहा, चीन्ह न मोर गियाना।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. कुछ विद्वान कबीर को ही .... का प्रवर्तक स्वीकार करते हैं।
2. कबीरदास ने भी राम की उपासना पर बल देते हुए उन्हें .... निराकार माना है।
3. कबीर बहुदेववाद तथा .... का विरोध करते थे।

4.1.2 रूढ़ियों और आडम्बरों का विरोध

सिद्धों, विशेषतया नाथों ने धार्मिक बाह्याचारों और रूढ़ियों का तीव्र विरोध किया है, जिसे सन्त कवियों ने और भी उग्र रूप में अपना लिया है। प्राय: सभी सन्त कवियों ने मूर्तिपूजा, तीर्थ, व्रत, रोज़ा, नमाज़, हिंसा (बलि) आदिक धार्मिक बाह्याचारों का विरोध किया है और कबीर का स्वर तो इस दिशा में सबसे अधिक प्रखर है। उनकी कुछ उक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

(क) कंकर पत्थर जोरि के, मस्जिद लियो बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।।

(ख) पत्थर पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार।
तासे तो चकिया भली, पीसि खाय संसार।।

(ग) मूंड मुड़ाए हरि मिलैं, सब कोई लेय मुड़ाय।
बार-बार के मूंड़ते, भेड़ न बैकुंठ जाय।।

(च) रहस्यवादी विचारधारा: डॉ. शिवकुमार शर्मा के अनुसार, "सन्त सम्प्रदाय में प्रेमाशक्ति और रहस्यमयता की प्रवृत्तियाँ विट्ठल सम्प्रदाय से आईं। प्रणयानुभूति के क्षेत्र में पहुंचकर ये खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति को भूल जाते हैं और इनका मृदुल एवं पेशल हृदय तरल हो जाता है। विरहानुभूतियों की अभिव्यक्ति में इन्हें पर्याप्त सफलता मिली हैं सन्त-काव्य में मुख्यत: अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई जिसे रहस्यवाद की संज्ञा दी गई है। सन्तों का रहस्यवाद एक ओर तो शंकर के अद्वैतवाद से प्रभावित है–

जल में कुम्भ कुम्भ में जल है, भीतर बाहर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहिं समाना, यह तत कहो गियानी।।

नोट

कहीं-कहीं पर इनके रहस्यवाद पर योग का भी स्पष्ट प्रभाव है। जहाँ कि इंगला-पिंगला और सहस्र दल कमल आदि प्रतीकों का प्रयोग है। उपर्युक्त दोनों प्रकार की ब्रह्मानुभूति योगात्मक रहस्यवाद के अन्तर्गत आएगी। इनमें विशुद्ध भावात्मक रहस्यवाद भी मिलता है जहाँ प्रणयानुभूति की निश्चल अभिव्यक्ति हुई है–

"कुछ विद्वानों ने इनके रहस्यवाद को सूफी मत से प्रभावित माना है किन्तु हमारे विचारानुसार इस दिशा में सूफियों का कोई प्रभाव नहीं है। इन दोनों की प्रणय-भावना में मौलिक अन्तर है जिसमें साम्य की अपेक्षा वैषम्य अधिक है। सन्तों का रहस्यवाद बिल्कुल भारतीय परम्परा अनुकूल है।"

(छ) भजन तथा नाम स्मरण का बल: प्राय: सभी सन्तों ने भगवद्-भजन और नाम-स्मरण पर बल दिया है। यद्यपि गोस्वामी तुलसीदास ने भी यह कहकर कि–

कलियुग केवल नाम अधारा।

भगवान् के नाम-स्मरण की महत्ता का प्रतिपादन किया है, किन्तु सभी सन्तों ने ईश्वर के सहज भाव से नाम स्मरण पर इससे भी अधिक बल दिया है। कबीर के शब्दों में–

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोई।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होइ।।

तथा

धरती सब कागद करौं, लेखनि सब बनराइ।
सात समंद की मसि करौं, हरि गुन लिखा न जाइ।।

(ज) मार्मिक विरह भावना: यद्यपि सन्त कवियों ने ईश्वर को निर्गुण-निराकार माना है किन्तु जहाँ तक प्रेम भाव का संबंध है उन्होंने ईश्वर पर पति का और जीवात्मा पर पत्नी का अध्यारोप करते हुए विरह-भावना की बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति की है। कबीर भी इस दिशा में किसी से पीछे नहीं हैं–

विरहिन ऊभी पंथ सिर, पंथी बूझै धाइ।
एक शब्द कहि पीव का कबरे मिलैंगे आइ।।
आइ सकौं नहिं तुज्झ पै, सकूं न तुज्झ बुलाइ।
जियरा यों ही लेहुगे बिरह तपाइ-तपाइ।।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. बहुदेववाद शब्द का क्या अर्थ है?
   (*a*) कुछ देवो की पूजा करना (*b*) बहुत से देवो की पूजा करना
   (*c*) ब्रह्मा की पूजा करना (*d*) या इनमें से कोई नहीं
5. रूढ़ियों और आडम्बरों से क्या अभिप्राय है?
   (*a*) नई परम्पराओं को मानना (*b*) नई विचार धाराओं को मानना
   (*c*) पुरानी सभ्यता की समीक्षा करना (*d*) या इनमें से कोई नहीं
6. सन्त मत का उदय भारत के किस क्षेत्र में हो रहा था?
   (*a*) दक्षिण भारत में (*b*) पूर्वी भारत में
   (*c*) दक्षिणी भारत में (*d*) उत्तरी भारत में

4.1.3 लोक संग्रह की भावना

नोट

डॉ. शिवकुमार शर्मा ने इस संदर्भ में यह उचित ही मत व्यक्त किया है कि–"इस वर्ग के सभी कवि पारिवारिक जीवन व्यतीत करने वाले थे, नाथपंथियों की भांति योगी नहीं। यही कारण है कि इनकी वाणी में जीवनगत अनुभव की सर्वांगीणता है। सन्तों की साधना में वैयक्तिकता की अपेक्षा सामाजिकता अधिक है। सन्तों ने आत्म-शुद्धि पर बहुत बल दिया है किन्तु वह ही समाज को दृष्टि में रखकर चली है। नाथ-सम्प्रदाय की साधना व्यक्तिगतता और पद्धति शास्त्रीय थी जबकि संतों की साधना सामाजिक और पद्धति स्वतंत्र है। वहाँ एक ओर ये लोग सन्त, कवि और भक्ति आंदोलन के उन्नायक हैं वहाँ समाज-सुधारक भी। **आलोचकों का कबीर को अपने युग का गांधी कहना सर्वथा उपयुक्त है।** सन्तों ने कृष्ण-भक्त कवियों के समान समाज और राजनीति के प्रति आँखें नहीं मूँद रखी थीं। सन्तकाव्य में उस समय का समाज प्रतिबिम्बित है। कर्मण्यता इनकी बानी की सार है।"

नारी के प्रति निन्दापरक दृष्टिकोण: यद्यपि कबीर ने पतिव्रता नारियों की प्रशंसा भी की है–

पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर बारों कोटि सरूप।।

किन्तु सन्तों का नारी-विषयक दृष्टिकोण अधिकांशतया निन्दापरक ही रहा है। नारी की निन्दा का कारण यह है कि सन्तों की दृष्टि में नारी माया का प्रतिरूप और हरि-स्मरण में बाधक रही है। कबीर ने भी नारी के विषय में बड़े निन्दात्मक उद्‌गार व्यक्त किए हैं। जैसे–

(क) नारी की झांई परत, अंधा होत भुजंग।
कबिरा तिन की कौन गति जे नित नारी संग।।

(ख) एक कनक अरु कामिनी, दुर्गम घाटी दोय।

(ग) नारी तो हम भी करी, कीया नहीं बिचार।
जब जानी तब परिहरी, नारी बड़ा विकार।

नोट्स सधुक्कड़ी भाषा, गेय मुक्तक शैली, प्रतीकात्मकता आदि कतिपय अन्य शैलीगत विशेषताएं भी, जो सन्त-काव्य की विशेषताएं हैं, कबीर-काव्य में भी उपलब्ध होती हैं।

अत: यह कहा जा सकता है कि कबीर-काव्य में सन्त-मत की सभी प्रमुख विशेषताएं विद्यमान हैं और वे सन्त कवि-माला में सुमरु की भांति महत्त्वपूर्ण हैं।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. सभी सन्त कवियों ने ईश्वर को सगुण-साकार मानने के स्थान पर उसे निर्गण-निरकार स्वीकार किया हे।
8. सिद्धों, विशेषतया नामों ने धार्मिक बाह्यचारों और रूढ़ियों का विरोध नहीं किया है।
9. कबीर-काव्य में सन्त-मत की सभी प्रमुख विशेषताएँ विद्यमान है।

नोट

4.2 सारांश (Summary)

- धार्मिक विचारों में परिवर्तन होने का सूत्रपात एक ऐसे रूप में आरंभ हुआ। जिसने हमारे साहित्य में एक नवीन धारा की सृष्टि कर दी। यह नवीन काव्य-धारा 'सन्त-काव्य' के रूप में प्रवाहित हुई। यह पहले से चले आते हुए सिद्ध साहित्य और 'नाथ साहित्य' का स्वाभाविक रूप से विकसित रूप थी।
- बहुत से विद्वानों ने हिन्दी साहित्य में सन्त मत का प्रवर्तक कबीर को माना है किन्तु यह सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं है। महाराष्ट्र के विट्ठल सम्प्रदाय में, जो कि कालक्रम में कबीर से पहले ठहरता है, सन्त सम्प्रदाय के प्रायः सभी बीजों का वपन हो चुका था जो कि बाद में सन्त काव्य में पल्लवित और पुष्पित हुए।
- सिद्धों और नाथों की भाँति सन्त कवियों ने भी जाति-पांतिगत भेद-भाव का विरोध किया है, जो एक प्रकार से उनके लिए आवश्यक भी था। कारण यह था कि सिद्धों और नाथों की भाँति सन्त कवियों में से भी अधिकांश निम्न जातियों से सम्बन्धित थे।
- **आलोचकों का कबीर को अपने युग का गांधी कहना सर्वथा उपयुक्त है।** सन्तों ने कृष्ण-भक्त कवियों के समान समाज और राजनीति के प्रति आँखें नहीं मूँद रखी थीं। सन्तकाव्य में उस समय का समाज प्रतिबिम्बत है। कर्मण्यता इनकी बानी की सार है।

4.3 शब्दकोश (Keywords)

मूर्तिपूजा : मूर्ति की पूजा करना

तीर्थ : तीर्थ स्थान पर जाना

व्रत : उपवास रखना, रोजा रखना

4.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. कबीर वाणी की समीक्षा की आवश्यकता क्यों है?
2. कबीर की जातिगत भेदभाव के प्रति क्या भावना थी? उल्लेख कीजिए।
3. विद्वानों ने हिन्दी साहित्य में सन्त मत का प्रर्वतक कबीर को क्यों माना है?

उत्तर: स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. सन्त मत	2. निर्गुण निराकार	3. बहुदेववाद/अवतारवाद
4. (*b*)	5. (*d*)	6. (*d*)
7. सही	8. गलत	9. सही।

4.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. कबीर वाणी (पारसनाथ तिवारी) अनीता प्रकाशन, नई सड़क, नई दिल्ली।

नोट

इकाई–5: मेरा परिवार (रेखाचित्र संग्रह) : सभी पाठों की प्रसंग सहित व्याख्या

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

5.1 मेरा परिवार (रेखाचित्र संग्रह)

5.1.1 गिल्लू

5.1.2 सोना हिरनी

5.1.3 दुर्मुख खरगोश

5.1.4 गौरा गाय

5.1.5 नीलू कुत्ता

5.1.6 निक्की, रोजी और रानी

5.2 सारांश (Summary)

5.3 शब्दकोश (Keywords)

5.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

5.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- महादेवी वर्मा का प्राणियों के प्रति प्रेम भावना जानने हेतु।
- लेखिका के इस पाठ में प्राणियों के लिए करुणा और ममता जानने में।
- पशु-पक्षियों की निरीहता असहायता इनके निर्दोष अकेलेपन का मानव की निष्ठुरता की पृष्ठभूमि जानने में।
- मेरा परिवार पाठ की समीक्षा करने में।

प्रस्तावना (Introduction)

छायावादी युग की महान कवयित्री होने का गौरव महादेवी वर्मा को प्राप्त है। महादेवी वर्मा ने इस युग में गद्य-लेखक की विविध विधाओं में उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय देकर इन विधाओं को समृद्ध किया है। छायावादी कवयित्री जो तीव्र संवेदनाओं के आवेग में मर्मस्पर्शी काव्य-रचना करके हृदयानुभूतियों की प्रबल प्रतिष्ठा करती हैं। गद्य-लेखिका

नोट

के रूप में महादेवी जी की सफलता का यही रहस्य है कि वे कवित्व-संवेदनाओं को संतुलित करते हुए गद्य-लेखन के समय आंतरिक चिंतन के माध्यम से विभिन्न बौद्धिक समस्याओं के हल, विकल्प एवं विवेचन प्रस्तुत कर पाती हैं। इस पाठ में महादेवी जी ने विचारात्मक शैली एवं व्यंग्यात्मक कथनों द्वारा हमारी मान्यताओं की व्यर्थता तथा दोगलेपन को उभारा है। पक्षिजगत में ही नहीं, पशुजगत में भी मनुष्य की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है। इस पाठ में लेखिका के द्वारा पशुओं के अबोध और निश्छल स्नेह को वर्णित करने का प्रयास किया गया हे। जो भेदभाव करना नहीं जानते।

5.1 मेरा परिवार (रेखाचित्र संग्रह)

5.1.1 गिल्लू

1

यह काकभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है। एक साथ समादरित, अनादरित अति सम्मानित, अति अवमानित। हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

प्रसंग–यह गद्यांश 'गिल्लू' रेखाचित्र में से अवतरित है। इस अंश में लेखिका कौवों के विषय में भारतीय मान्यताओं, धारणाओं और अविश्वासों का वर्णन करती हैं।

व्याख्या–कौवों को गमले के आस-पास खेलते देखकर महादेवी कौवों के सम्बंध में भारतीय मान्यताओं पर विचार करते हुए कहती हैं कि यह काकभुशुण्डि अर्थात् कौवा भी हमारे भारतीय समाज में विचित्र ढंग से व्यवहृद होता रहा है। एक ही साथ हम उसका आदर भी करते हैं और अपमान भी उसी क्षण कर देते हैं।

क्या आप जानते हैं कौवा हमारी मान्यताओं के कारण जितना सम्मान पाता है उतना कोई भी अन्य पक्षी नहीं। और दूसरी ओर अपशकुनों एवं अंधविश्वासों पर विचार करने की दृष्टि से भी कौवों का जितना अपमान होता है, जितने अपशब्द उसको कहे जाते हैं कदाचित् किसी अन्य पक्षी को नहीं कहे जाते।

जब पितृ पक्ष में हम अपने पुरखों की आत्मा की शान्ति के लिए दान करते हैं, विभिन्न माध्यमों से उनको भोजन करवाने की अपनी आस्था को पूर्ण करते हैं तब भी हमारी प्राचीन मान्यता यही होती है कि वे कौवों के रूप में आकर ही अपना भोजन आदि प्राप्त करते हैं तथा संतुष्ट होते हैं। हमारी प्राचीन मान्यताओं के अनुसार हमारे पूर्वज न तो गरूड़ का रूप धारण कर सकते हैं और न सुंदर मोर एवं शुभ हंस का। वे कौवे का रूप धारण करके ही पितृपक्ष में हमसे कुछ प्राप्त कर सकते हैं। वहीं कौवे जिनको हम सामान्यत: दुतकारते हैं और उपेक्षा से देखते हैं, पितृपक्ष में हमारे लिए समादृत हो जाते हैं इतना ही नहीं, हमारे अंधविश्वासों के अनुसार जब कौवा किसी के घर की मुन्डेर पर चाहे कर्कश स्वर में ही सही, काँव-काँव करता है तो हम उसकी काँव-काँव से अपने किसी दूर बसे हुए प्रियजन के आगमन के मधुर संदेश को प्राप्त करते हैं। यद्यपि हमारे कितने सारे कार्य इन कौवों द्वारा ही किये जाते हैं तथापि यदि हमें किसी का अपमान करना हो तो हम उसके लिए कौवे और काँव-काँव का उपमान देकर उसका उपहास करते हैं। इस प्रकार कौवा हमारी परम्पराओं से सम्मान पाता है तथा हमारे व्यवहार से अपमान भी सहन करता है।

विशेष–1. इस अंश में महादेवी महादेवी ने विचारात्मक शैली एवं व्यंग्यात्मक कथनों द्वारा हमारी मान्यताओं की व्यर्थता तथा दोगलेपन को उभारा है। वस्तुत कौवा भी अन्य पक्षियों के ही समान एक प्राणी है अत: वह उपेक्षित क्यों हो। जब हम अपने अंधविश्वासी स्वार्थो के लिए कुछ विशेष अवसरों पर उसका सम्मान करते हैं तो उसी सम्भासित जीव का अगले क्षण हम अपमान एवं उपेक्षा क्यों करते हैं। इस विचाराणीय प्रश्न को लेखिका ने बड़ी मार्मिकता के साथ उभारा है।

2. विपरीतार्थक शब्दों का एक साथ प्रयोग करके लेखिका ने शब्दों के मित-प्रयोग द्वार गहन भावों की मर्मस्पर्शी व्यंजना की है जिससे पाठक स्वयं विचार करने पर विवश हो उठता है।

3. विचारों के साथ व्यंग होने के कारण निबंध–शैली का प्रयोग हुआ है।

2

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अत: गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया, न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वहीं उँगली पकड़कर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

प्रसंग–'गिल्लू' रेखाचित्र से उद्धत इस गद्यांश में लेखिका ने मरणासन्न गिलहरी गिल्लू के अंत का वर्णन किया है।

व्याख्या–गिलहरी के जीवन की अवधि प्राकृतिक रूप से प्राय: दो वर्ष की ही होती है। गिल्लू भी जब महादेवी के स्नेही पालन-पोषण में पलकर दो वर्ष का होता गया तो उसके जीवन का अंत भी समीप आ गया। उसने महादेवी के स्नेह में शैशवावस्था में मृत्यु से संघर्ष में जीतकर जीवन प्राप्त किया था तथा अपनी आयु व्यतीत कर जीवन यात्रा के अन्तिम पड़ाव पर आ पहुँचा था। जिस दिन उसकी मृत्यु हुई, उस दिन उसने न भोजन किया और न ही गिलहरियों के साथ क्रीड़ा करने के लिए जाली से बाहर गया। रात को जब उसका अंत समय निकट आया तो वह यातना को भुगतते हुए भी महादेवी की उँगली पकड़कर महादेवी के बिस्तर पर पहुँचा तथा अपने ठंडे पंजों से उस उँगली को पकड़कर उनके हाथ से चिपक गया जिस उँगली के स्नेह स्पर्श से ही उसने शैशवस्था की मरणासन्न स्थिति को जीतकर नवजीवन को पाया था और अन्त समय में भी मानों अपने स्नेह का प्रतिदान देता हुआ उसी उँगली के माध्यम से मातृवत् महादेवी का स्नेह प्राप्त करता रहा। मृत्यु के निकट आने के कारण उसके शरीर की उष्णता धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही थी तथा उसके पंजे ठंडे होते जा रहे थे, उसको गर्माहट देने के लिए महादेवी ने रात्रि में हीटर जलाया तथा उसके शरीर को कृत्रिम उष्णता देने का प्रयास किया। किन्तु उनका प्रयास विफल ही रहा। अगले दिवस की सुबह सूर्य की प्रथम रश्मि के विकीर्ण होते ही उसकी आत्मा शरीर छोड़कर नवजीवन प्राप्त करने के लिए परमात्मा में विलीन हो गई।

विशेष–1. यह अंश गिलहरी और महादेवी के मातृ-पुत्र सम्बंध के स्नेह की व्यंजना करता है। मृत्यु की यातना में रहकर भी गिल्लू महादेवी के निकट उनके स्पर्श का स्नेह प्राप्त करता रहा, यह अपनी पालिका के प्रति उसके गहन प्रेम का परिचायक है।

2. महादेवी उसके अंत की व्यंजना उसके मरण का समाचार देकर नहीं करतीं अपितु उसके किसी ओर जीवन में जागने का कथन कर अपने अतीव स्नेह का प्रदर्शन करती हैं।

3. भाषा अत्यंत सहज एवं सरल है। अंतिम पंक्तियों में दार्शनिकता के पुट के साथ काव्यगत कलात्मकता है।

नोट

5.1.2 सोना हिरनी

1

परन्तु उस बेचारे हरिण शावक की कथा तो मिट्‌टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। वह न किसी दुर्लभ खान के अमूल्य हीरे की कथा है और न अथाह समुद्र के महार्घ मोती की।

निर्जीव वस्तुओं के मनुष्य अपने शरीर का प्रसाधन मात्र करता है; अत: उसकी स्थिति में परिवर्तन के अतिरिक्त कुछ कथनीय नहीं रहता। परंतु सजीव से उसे शरीर या अहंकार का जैसा पोषण अभीष्ट है, उससे जीवन-मृत्यु का संघर्ष है, जो सारी जीवन-कथा का तत्त्व है।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण 'सोना हिरणी' रेखाचित्र से लिया गया है। सोना हिरणी का आगमन कोई सामान्य घटना नहीं थी। यह मनुष्य की अमानवीय प्रकृति थी जिसके कारण सोना जैसे हरिण शावक का अपनी माँ के स्नेह से वंचित होकर, स्वजाति सांद्धिय से दूर होकर मनुष्यों के बीच अपना जीवन बिताना पड़ा। इस निरीह पशु की कथा के पीछे मानव की यही अमानवीय प्रवृत्ति जो मात्र स्वयं को प्रसन्न करना जानती है।

व्याख्या–सोना हिरणी की कथा मात्र एक पशु की कथा नहीं है। जिसे पशु–कथा कहकर उपेक्षित कर दिया जाये। इसकी पृष्ठभूमि में है मानव की वह निष्ठुरता वह कठोरता और अमानवीय आखेट-प्रवृति जिसके कारण कितने ही पशु–शावक अपने परिवार से बिछुड़ जाते हैं। इस हिरण–शावक की कथा तो मिट्‌टी की वह करुणमूर्ति है जिसे मनुष्य की निष्ठुर प्रवृत्ति द्वारा निर्मित किया गया है। मिट्‌टी की इस व्यथा–मूर्ति का वस्तुत: कोई मोल नहीं है जबकि प्रत्येक प्राणी इसी से जीवन पाता है तथा मृत्यु के उपरांत मिट्‌टी में ही मिल जाता है। इस प्रकार हरिण शावक की कथा किसी दुर्लभ खान से निकाले गये अनमोल हीरो अथवा गहरे समुद्र से प्राप्त मूल्यवान मोती की भाँति नहीं है जिसे मनुष्य की निष्ठुरता स्पर्श भी न कर सके। प्राय: मनुष्य निर्जीव वस्तुओं से अपने शरीर का विभिन्न प्रकार अलंकरण करता है जब उन निर्जीव वस्तुओं की स्थिति मात्र में तनिक परिवर्तन भर होता है। इन वस्तुओं के बाहरी परिवर्तन के अतिरिक्त और कुछ ऐसा नहीं होता जिसका वर्णन किया जाये। किन्तु सजीव वस्तुओं का जब वह अपने हित–साधन के लिए अपने शरीर के पोषण के लिए अथवा अपने अहंकार के लिए कि वह सृष्टि में सर्वाधिक शक्ति के लिए उपयोग अथवा अपने अहंकार के लिए कि वह सृष्टि में सर्वाधिक शक्ति के लिए उपयोग अथवा दुरूपयोग करता है तब उस सजीव वस्तु की स्थिति में ही नहीं, उसके सम्पूर्ण जीवन में परिवर्तन आ जाता है। विश्व की प्रत्येक वस्तु पर अधिकार कर लेने की इच्छा के कारण मनुष्य ने प्रकृति के समस्त उपकरणों पर अपनी इच्छा के कारण उसने पशु–पक्षियों का आखेट करना प्रारंभ किया जिसका कोई वृहद–उद्देश्य होने के स्थान पर मात्र मनोरंजन प्रियता थी। उसका सर्ववियजी होने का अहंकार अधिक पुष्ट हो हेतु उसे पशु पक्षियों के अधिकाधिक हनन की ओर प्रवृत करने लगा। इस प्रवृति से इन निरीह पशुओं में जीवन मृत्यु का संघर्ष प्रारम्भ हुआ और उनकी जीवन कथा मनुष्य की इस निष्ठुर प्रवृत्ति की नींव पर बनने अथवा समाप्त होने लगी।

विशेष–1. इस अंश में महादेवी जी भावात्मक विचारों को तरंग शैली में प्रतिपादित करती हैं।

2. पशु की व्यथा, कथा की मिट्‌टी से तुलना अत्यंत मर्मस्पर्शी है क्योंकि मिट्‌टी मनुष्य के जीवन में आदि से अंत तक उपयोगी होती है किन्तु मूल्यहीन समझी जाती है।

3. विचारात्मक शब्दों का संयोजन किया गया है। जिसमें आलंकारिक सौंदर्य भी उभर पड़ता है।

2

जिन्होंने हरीतिमा में लहराते हुए मैदान पर छलांगें भरते हुए हिरनों के झुण्ड को देखा होगा, वही उस अद्‌भुत, गतिशील सौंदर्य की कल्पना कर सकते हैं। मानो तरल मरकत के समुद्र में सुनहले फेनवाली लहरों का उद्वेलन हो। परन्तु जीवन के इस चल सौंदर्य के प्रति शिकारी का आकर्षण नहीं रहता।

नोट

मैं प्रायः सोचती हूँ कि मनुष्य जीवन की ऐसी सुन्दर ऊर्जा को निष्क्रिय और जड़ बनाने के कार्य को मनोरंजन कैसे कहता है।

प्रसंग—पूर्व-प्रसंग को अधिक स्पष्ट करते हुए महादेवी ने प्रकृति के इन सुंदर जीवों की गत्यात्मक क्रियाओं के सौंदर्य को प्रकट करके उसकी पृष्ठभूमि पर मनुष्य की हिंसात्मक प्रवृति पर विचार किया है।

व्याख्या—हरी-भरी घास एवं पेड़ पौधों से भरे मैदानों में जब हिरणों के समूह प्रसन्नता पूर्वक कुलांचे भरते हैं तथा एक दूसरे से क्रीड़ा करते हैं, तब इस दृश्य का जो अवलोकन करता है, वही उस दृश्य के गत्यात्मक सौंदर्य और अद्भुत रूप को जान सकता है, उसकी कल्पना कर सकता है, कुलांचे भरते हुए हिरणों की इस गति-शोभा का वर्णन यदि शब्दों में किया भी जाये तो कोई व्यक्ति तब तक उस सौंदर्य की कल्पना नहीं कर सकता जब तक उसने उस दृश्य को स्वयं देखा न हो। इस दृश्य को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों मरकत मणि के हरित सागर में सुनहरे फेन वाली लहरे बार-बार उठा गिर रही हों। इस अद्वितीय सजीव सौंदर्य के प्रति सामान्य मानव आकर्षित हुए बिना नहीं रहता तथा भाव-विभोर हो जाता है। किन्तु शिकारी का आकर्षण अथवा कोई लगाव हिरणों की इस सजीव एवं सुन्दर गतिविधियों के प्रति नहीं रहता। इसी कारण वह इस सौंदर्य को नष्ट करने में एक क्षण भी नहीं लगाता। लेखिका कहती हैं कि वस्तुतः मनुष्य प्रकृति के जीवन की ऊर्जा से परिपूर्ण इस सुन्दर दृश्य को जो अपनी गत्यात्मकता में ही ही उभरता है, निष्किय गतिहीन एवं जड़ बनाने का कार्य कैसे करता है? इन सुन्दर गतिशील निरीह प्राणियों का असमय जीवनांत करके प्रकृति के सौंदर्य को नष्ट करने से वह किस भाँति मनोरंजन प्राप्त करता है? यह सोचकर दुःख और आश्चर्य होता है।

विशेष—1. भावात्मक के साथ महादेवी ने प्रकृति के विराट सौंदर्य को प्रकट किया है तथा उसकी पृष्ठभूमि पर मनुष्य की निष्ठुर एवं ध्वसंक प्रवृत्ति का वर्णन किया है।

2. विचारों में भावात्मक का समावेश होने के बावजूद शैली चिंतनप्रधान है। अतः निबंध शैली है।

3. मानो मरहल मरकत के समुद्र में सुनहले फेनवाली लहरों का उद्वेलन हो' में उत्प्रेक्षा अलंकार प्रयुक्त हुआ है।

4. इस अंश के दृश्य में सजीवता है जो आलंकारिकता के प्रयोग द्वारा हृदयस्पर्शी हो गई है।

5. इस गद्यांश में दृश्य बिंब, वर्ण बिंब और गत्वर बिंब महादेवी की संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यंजना करते हैं।

6. भाषा में तत्सम शब्दावली का लालित्य द्रष्टव्य है जो आलंकारिकता के योग से और भी कलात्मक एवं संप्रेषणीय हो गया है।

3

मनुष्य मृत्यु को असुंदर ही नहीं, अपवित्र भी मानता है। उसके प्रियतम आत्मीय जन का शव भी उसके निकट अपवित्र, अस्पृश्य तथा भयजनक हो उठता है। जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है, तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं है, यह मैं समझ नहीं पाती।

प्रसंग—इन पंक्तियों में महादेवी ने मनुष्य की उस आदिम प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है जिसके वशीभूत होकर वह अन्य प्राणियों के प्राण हर लेता है। जिस कार्य को वह स्वयं के लिए अपवित्र एवं असुंदर मानता है, वह दूसरों के प्रति करता है तो वह अन्याय ही है।

व्याख्या—मनुष्य सदा से ही मृत्यु से दूर भागता है, वह उसे दुःखप्रद, कुरूप एवं भयानक मानता है। मृत्यु को मात्र असुंदर ही नहीं अपितु अपवित्र भी माना जाने लगा है। मृत्यु की यह अपवित्रता मनुष्य को चेतना इतनी अधिक हावी हुई कि कोई भी मृत शरीर उसे अपवित्रता प्रतीत होने लगा। इसी कारण जिन प्रियजनों को वह उनके जीवनकाल में अत्यंत स्नेह करता है, उनसे तनिक भी दूर नहीं रह पाता, उनकी मृत्यु होने पर उन्हें छूना भी अनुचित समझते हैं, तथा शीघ्रतिशीघ्र उनके क्रिया-संस्कार का प्रयास करता हैं वस्तुतः मनुष्य ने मृत्यु को सदैव अशुभ माना है तथा

नोट

मृत्यु उसके निकट सदैव अकाम्य रही है, इसी कारण वह उसे अपवित्र भी मानता रहा है। किंतु जब इस अशुभ, अकाम्य, दु:खद कुरूप, भयंकर, अपवित्र मृत्यु को मनुष्य स्वयं के लिए स्वीकार नहीं करता तो वह उसे अन्य प्राणियों में क्यों अनवरत बांटता रहता है, जब वह अपने मनोरंजन के लिए अपनी स्वार्थ-पूर्ति हेतु दूसरे प्राणियों को मृत्यु प्रदान करता है, क्या – तब मृत्यु उसे असुंदर और अपवित्र नहीं प्रतीत होती।

क्या आप जानते हैं मृत्यु का भयानक रूप जानते हुए भी वह पशु-पक्षियों का निस्संकोच वध करता रहता है। अपने इस कार्य को गलत और अपवित्र नहीं मानता वह कितनी आश्चर्यजनक स्थित है।

विशेष–1. मृत्यु के प्रति मनुष्य के विपरीत विचार और अन्य प्राणियों को निस्संकोच मृत्यु बांटने की प्रवृत्ति पर लेखिका ने प्रश्न चिन्ह लगाकर वस्तुत: प्रकृति के संरक्षण के उद्देश्य को उभारा है जो उनकी विश्वव्यापी करूणा का परिचायक है।

2. इस अंश में शैली चिंतन प्रधान है जिसमें भावात्मकता का समावेश है।

3. भाषा तत्सम बहुल होते हुए भी सहजतायुक्त एवं बोधगम्य है।

4

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, बंशी, मुरज, जलतरंग आदि का वृन्दवादन (आर्केस्ट्रा) बजाते हुए पक्षी कितने सुन्दर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बन्दूक उठायी, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी धरती पर ढेले के समान आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंचवाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुन्दर पंजे टेढ़े हो गये हैं और किसी के इन्द्रधनुषी पंख बिखर गये हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृतअर्धमृत लघुगातों में न अब संगीत है, न सौंदर्य, परन्तु तब भी मारने-वाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।

प्रसंग–पूर्व प्रसंग को ही आगे बढ़ाते हुए महादेवी प्रकृति के अद्भुत गतिमान सौंदर्य का वर्णन एवं मनुष्य की पाशविक प्रकृति के कारण इस सौंदर्य के ध्वंस का उल्लेख करती हैं।

व्याख्या–जब आकाश में विभिन्न प्रजातियों के पक्षी उड़ाने भरते हैं तो अपने विविध रंगों के कारण उड़ते हुए वे पक्षी आकाश में छायी हुई रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं की भांति प्रतीत होती हैं। जब वे आकाश में उड़ान भरते हुए विविध प्रकार की ध्वनियाँ गुँजरित करते हैं तो हर्षोल्लास से निकली हुई इन ध्वनियों को सुनकर ऐसा जान पड़ता है मानो वीणा, बांसुरी, मिरज जलतरंग आदि अनेक वाद्य सम्मिलित होकर कोई धुन बजा रहे हों और इन ध्वनियों से वृन्द वादन का सही रस मिलता है। इस प्रकार ये सौंदर्य के विविध-रूपों से अंकित पक्षी कितने सुन्दर प्रतीत होते हैं। यद्यपि इन सभी स्वरों में प्रकृति-प्रदत्त भिन्नता युक्त हैं। किन्तु इनका जीवनोल्लास, सक्रिय ऊर्जा और इन ध्वनियों से उत्पन्न नैसर्गिक संगीत एक मोहक दृश्य उपस्थित कर देता है। इसी सुन्दर दृश्य को नष्ट करने में मनुष्य को मात्र एक क्षण का समय लगता है। बंदूक उठाकर वह निशाना साधता है और निशाना लगते ही यह मोहक सजीव दृश्य निर्जीव होकर ध्वंस हो जाता है। गोली लगते ही रंग-बिरंगे पुष्पों के समान उड़ते जाते अनेक पक्षी निर्जीव पत्थरों की भाँति पृथ्वी पर आ गिरते हैं जो वातावरण उनकी उड़ान क्रियाओं एवं नैसर्गिक ध्वनि संगीत से गुंजायमान था, वहीं मनुष्य की पाशविक प्रवृति के कारण स्तब्ध और जड़ सन्नाटे से परिपूर्ण हो जाता है। इस स्तब्ध जड़ता में किसी पक्षी की लाल-पीली चोंच वाली सुन्दर ग्रीवा उसके शरीर से अलग हो जाती है, किसी के पीतवर्ण सुन्दर पंजे टेढ़े होकर कुरुप बन जाते हैं, और किसी सुन्दर से पक्षी के विविध इन्द्रधनुषी रंगों से युक्त पंख बिखर जाते हैं। मनुष्य की इस अंधविनाशकारी प्रवृत्ति के कारण अनेक पक्षियों के सुन्दर शरीर मृत प्राय: हो जाते हैं। उनके शरीर के अंग

रक्त से नहाकर क्षतविक्षत हो जाते हैं और उनके मरणासन्न नन्हें शरीरों में न अब कोई संगीत रह जाता है और न किसी प्रकार का सौंदर्य शेष रह जाता है, किन्तु इस भयानक दृश्य को देखकर मनुष्य का ह्रदय द्रवित नहीं होता। वह अपनी ध्वसांत्मक प्रवृत्ति की विजय पर अपनी सफलता पर रोमांचित होकर, अति प्रसन्न होकर झूम उठता है।

विशेष–1. इस अंश में पक्षियों के प्रति महादेवी की असीम करूणा सागर बनकर बह उठी है।

2. पक्षियों के सौंदर्य वर्णन में महादेवी की अद्‌भुत कल्पना शक्ति एवं कवित्व क्षमता का ज्ञान होता है।

3. इस अंश में महादेवी ने 'रंग बिरंगे फूलों की घटाओं' के प्रयोग से विभिन्न वर्णों के पक्षियों का बोध कराया है जो वर्ण बिंब उत्पन्न करता है। इसी प्रकार वृन्दवादन में ध्वनि बिंब उत्पन्न होता है। मनुष्य के निशाना साधने से लेकर पक्षियों के सुंदर अवयवों के क्षत-विक्षत होने में सुंदर एवं भावपूर्ण दृश्य बिंब का आयोजन हुआ है।

4. वीणा, वंशी, मुरज, जलतरंग आदि वाद्य यंत्रों को लेखिका ने पंक्षियों की चहचहाहट के उपमान के रूप में प्रयोग किया है जो ध्वनि-साम्य और माधुर्य पर आधारित है।

5. भाषा शैली में चित्रात्मकता, भावात्मकता एवं कलात्मकता है तथा दृश्य उत्पन्न करने की प्रभावी शक्ति है।

5

पक्षिजगत में ही नहीं, पशुजगत में भी मनुष्य की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है। पशुजगत में हिरन-जैसा निरीह और सुन्दर दूसरा पशु नहीं है–उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि हैं। परन्तु इसका भी गतिमय, सजीव सौंदर्य मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है। मानव को, जो जीवन का श्रेष्ठतम रूप है, जीवन के अन्य रूपों के प्रति इतनी वितृष्ण और विरक्ति और मृत्यु के प्रति इतना मोह और आकर्षण क्यों?

प्रसंग–पूर्व प्रसंग के अनुसार महादेवी ने वर्णित किया था कि मनुष्य किस प्रकार उड़ते-गाते पक्षियों के जीवन को पल भर में मिटा डालता है। इस अंश में महादेवी निरीह पशु के प्रति भी उसकी निष्ठुरता को अनावृत करती हैं।

व्याख्या–मनुष्य केवल प्रकृति की इस कोमल सुन्दर रचना इन उड़ते-गाते पक्षियों का वध करके ही संतुष्ट नहीं हो पाता। उसे निष्ठुरता पूर्वक पशुओं की हत्या करके भी अपनी प्रवृति की संतुष्टि का सुख प्राप्त होता है। वह खेलते-कूदते निर्दोष पशुओं का शिकार मात्र मनोरंजन हेतु करता है। यदि वह मात्र हिंसक पशुओं का आखेट करे तो किसी सीमा तक उचित भी है क्योंकि वे अन्य प्राणियों अथवा मनुष्य को हानि पहुँचाते हैं। किन्तु हिरण जैसा निरीह निर्दोष, सुन्दर आकर्षक पशु तो पूरे पशु जगत में नहीं है, फिर मानव हिरणों का वध क्यों करता है। हिरण की सुन्दरता मोहक और आकर्षक होती है, उसकी कुलांचे और विभिन्न गत्यात्मक क्रियायें एक अद्‌भुत सौंदर्य को उत्पन्न करती हैं। वह अपनी करूणापूर्ण आँखों से और सुंदरता से सभी के मन को मोहने वाला होता है। किन्तु मनुष्य इस गतिमय, सजीव सौंदर्य को समझ नहीं पाता और न ही उसकी आँखों में तैरती करूणा की चित्रलिपि ही पढ़ पाता हैं। यह अति सुन्दर गत्यात्मक क्रियाओं का आह्लाद से सम्पन्न जीव अपने जीवन में मनुष्य का मनोरंजन नहीं कर पाता। इसका आखेट करके ही मानव को संतुष्टि मिलती है। मानव सृष्टिकर्ता की सर्वोत्तम कृति है किन्तु स्वयं सर्वोत्तम होने पर भी सृष्टि के अन्य प्राणवान रूप के प्रति इतना घृणा से पूर्ण और प्रेम से रहित कैसे है। जीवन के अन्य रूपों के प्रति घृणा एवं मृत्यु के प्रति मानव के ह्रदय में मोह और आकर्षण कैसे है।

विशेष– 1. इस अंश में भावपूर्ण विचारों के नियोजन के कारण शैली चिंतन प्रधान है। प्रश्नात्मक शैली में मानव की आदिम हिंसक प्रवृति को पशुओं की निरीहता के परिप्रेक्ष्य में उभारा गया है।

2. भाषा में 'उसकी आँखें तो मानो करूणा की चित्रलिपि हैं। हिरण की आँखों की उपमा भावसाम्य पर आधारित है। भाषा भावानुकूल, सहज तथा तत्सम प्रधान होकर भी बोधगम्य हैं

नोट

6

कविगुरु कालिदास ने अपने नाटक में मृगी-मृग शावक आदि को इतना महत्त्व क्यों दिया है, यह हिरन पालने के उपरांत ही ज्ञात होता है।

पालने पर वह पशु न रहकर ऐसा स्नेही संगी बन जाता है, जो मनुष्य के एकांत शून्य को तो भर देता है, परंतु खीझ उत्पन्न करने वाली जिज्ञासा से उसे बोझिल नहीं बनाता। यदि मनुष्य दूसरे मनुष्य से केवल नेत्रों से बात कर सकता, तो बहुत से विवाद समाप्त हो जाते, परन्तु प्रकृति को यह अभीष्ट नहीं रहा होगा।

सम्भवत: इसी से मनुष्य वाणी द्वारा परस्पर किए गए आघातों और सार्थक शब्दभार से पीड़ित अपने प्राणों पर इन भाषाहीन जीवों की स्नेह तरल दृष्टि का चंदन लेप लगाकर स्वस्थ और आश्वस्त होन चाहता है।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण में महादेवी ने यह वर्णित किया है कि मनुष्य जब अपनी ही जाति के मनुष्यों से पीड़ित हो जाता है तो वह पशुओं में ही अपने हृदय का सम्बल पाता है!

व्याख्या–लेखिका कहती हैं कि हिरण में कुछ-न-कुछ ऐसी विशेषताएं होती हैं जिसके कारण कालिदास जैसे प्राचीन संस्कृत कवियों ने अपने नाटक-साहित्य में मृग और मृगी को इतना अधिक महत्व दिया है। कदाचित् करुणापूर्ण एवं व्यथा के भावों की अभिव्यक्ति में हिरण ही सक्षम होता है। किन्तु इस तथ्य का ज्ञान किसी को तभी हो सकता है, जब वह स्वयं हिरन को पालता है, तभी उसकी भावाकुल चेष्टाओं, उसके भावपूर्ण नेत्रों की भाषा समझ पाता है। जब हम हिरण को पालते हैं तो हिरण पालित पशु न रहकर मनुष्य का ऐसा स्नेही मित्र और सहचर बन जाता है जो आपका स्नेह पाकर स्वयं भी आपको उतना ही स्नेह प्रदान करेगा। हिरण ऐसा अभिन्न सहचर बनने में मानव से इस प्रकार भिन्न है कि जब हम किसी मनुष्य को अपना मित्र बनाते हैं ताकि उसके साथ कुछ क्षण बैठकर अपने हृदय की, अपने सुख-दु:ख की बातें कर सकें तो वह मित्र अपने अस्तित्व का उसी भाँति मान कराता हुआ हमारे जीवन पर, हमारी प्रत्येक वस्तु, क्रिया, गतिविधि पर अपना अधिकार समझता है, हमारे व्यक्तिगत विषयों में हस्तक्षेप कहीं न कहीं जिज्ञासा से परिपूर्ण होकर खीझ उत्पन्न कर देता है और जिस मन को हम हल्का करना चाहते हैं, वहीं मित्र के प्रति रूष्ट होकर और भी अधिक बोझिल हो जाता है। वस्तुत: प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ ऐसा घटित होता है जिसे वह नितांत व्यक्तिगत रखना चाहता है और किसी से भी नहीं बांटना चाहता। इसीलिए वह मनुष्य मित्र की जिज्ञासा प्रवृत्ति से बचने के लिए हिरण जैसे पशु को अपना स्नेही सहचर बनाता है। इस भोले भाले पशु से मनुष्य अपने हृदय की हर बात कह सकता है, अपने एकाकीपन को भर सकता है। हिरण भी ऐसा मित्र होने का कर्तव्य निभाता है जो अबोध मित्र की भाँति उसकी संपूर्ण गाथा सुन लेता है और अपने नेत्रों के माध्यम से अपना मूक स्नेह भी प्रदर्शित कर देता है किंतु मनुष्य-मित्र के समान जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछ पूछकर मित्रता को बोझिल नहीं बनाता। इसीलिये यदि मनुष्य इन पशुओं की भाँति यदि मौखिक भाषा के स्थान पर नेत्रों की भाषा में परस्पर वार्ता कर पाते तथा एक दूसरे के हृदय की भावनाओं को परस्पर नेत्रों के माध्यम से समझ पाते तो आज दुनिया में जो विवाद उठ रहे हैं वे स्वत: कभी के समाप्त हो जाते। किन्तु प्रकृति की इच्छा कदाचित् उसे विशिष्ट बनाने की ही रही थी इसीलिए अन्य पशुओं को वाणी न देकर केवल उसे ही वाणी-क्षमता प्रदान की। इस विशिष्ट क्षमता का प्रयोग करके मनुष्य कटु वाणी द्वारा एक दूसरे पर आघात करते हैं। फिर इन आघातों को भरने के लिए तथा और शब्दाघातों से बचने के लिए वह पशुओं को ही अंतत: अपना सहचर बनाता है तथा अपने घावों पर इन भाषाहीन जीवों की स्नेह की चिकनाई से युक्त दृष्टि का मानों चंदन जैसा शीतल लेप लगाकर उन्हें भरना चाहता है तथा स्वयं आश्वस्त होना चाहता है।

विशेष–1. इस अंश के द्वारा महादेवी यह सिद्ध करती हैं कि मनुष्य सृष्टि के जिस जीवन्त सौंदर्य का अपने हाथों से अंत करता है, अंत में शान्ति और स्नेह पाने के लिए भी इन्हीं पशुओं के पास आता है, उन्हीं को अपना सहचर बनाता है। जो मनुष्य से भी अधिक प्रिय और स्नेही सिद्ध होते हैं।

2. इस सत्य की व्यंजना महादेवी ने अत्यंत भावपूर्ण ढंग से की है कि यदि मनुष्य आपस में केवल नेत्रों के माध्यम से बात कर पाते तो विश्व में कोई विवाद ही उत्पन्न न होता।

3. 'स्नेह तरल दृष्टि के चन्दन लेप' में गहन स्पर्श युक्त भावपूर्ण उपमा है। भाषा विचारात्मक, भावपूर्ण एवं अलंकार सौंदर्य से युक्त है।

7

पशु-मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं। यह सत्य मुझे सोना से अनायास प्राप्त हो गया।

अनेक विद्यार्थिनियों की भारी-भरकम गुरुजी से सोना को क्या लेना-देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी, जिन्होंने यत्नपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगायीं थी।

प्रसंग—इस अवतरण में लेखिका ने मनुष्य और पशु की प्रकृति में अंतर स्पष्ट किया है। मनुष्य के लिए एक दूसरे की सामाजिक स्थिति का महत्व होता है किन्तु पशु मात्र उनके स्नेह को ही पहचानते हैं।

व्याख्या—पशु अपने पालनकर्त्ता के निश्छल स्नेह को ही जानते हैं और वे उस स्नेह का प्रतिदान अपने अगाध स्नेह द्वारा देते हैं। उनकी सामाजिक स्थिति का पशु के लिए कोई महत्व नहीं है। चाहे उनका पालनकर्त्ता राजा हो अथवा रंक, वे उसको समान ही स्नेह और अपनत्व देंगे। मनुष्य में प्रायः यह प्रवृत्ति होती है कि वह मात्र उन्हीं लोगों से सम्बंध रखता है जिनका सामाजिक स्थान ऊँचा हो। इसी कारण निम्नवर्गीय लोगों को घृणा एवं उपेक्षा ही प्राप्त होती है। किन्तु पशु, चाहे उसका पालनकर्ता सामाजिक दृष्टि से किसी भी वर्ग अथवा स्थान का हो, सबको अपना समान एवं निश्छल स्नेह और आदर प्रदान करता है। महादेवी कहती हैं कि समता का यह ज्ञान उन्हें अपने द्वारा पालित सोना हिरणी से प्राप्त हुआ था। महादेवी वर्मा अनेक विद्यार्थिनियों की गुरुजी थीं जिस कारण लोग उनका आदर करते थे। किन्तु सोना महोदेवी के इस रूप से तथा उनके मिलने वाले आदर से अनभिज्ञ थी। वह तो अपनी पालनकर्त्ता माता के रूप में लेखिका को जानती थी, वह लेखिका के नेत्रों में अपने लिए स्नेह प्राप्त कर लेती थी तथा उस स्नेही स्पर्श को अपनी शैशवस्था से जानती थी जब महादेवी ने उसकी माता के अभाव में उसके मरणासन्न जीवन को बोतल द्वारा यत्नपूर्वक दूध पिलाकर बचाया था। वह तो केवल महादेवी के इस स्नेह को ही जानती थी उनके गुरु-रूप के गुरुत्व को समझ पाना उस पशु के लिए कठिन था।

विशेष—1. यहाँ पर पशुओं के अबोध और निश्छल स्नेह को वर्णित करने का प्रयास किया गया है जो भेदभाव करना नहीं जानता।

2. गहन भावात्मक शब्दों में सोना हिरणी के निश्छल स्नेह की अभिव्यक्ति की गई है।

3. गद्य की कथात्मक शैली का प्रयोग है तथा भाषा सहज एवं सरल बन पड़ी है।

8

कुत्ता स्वामी और सेवक का अन्तर जानता है और स्वामी के स्नेह या क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्‌गद्‌ होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है।

पर हिरन यह अन्तर नहीं जानता, अतः उसका अपने पालनेवाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाये तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालनेवाले की दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा।

नोट

मानो पूछता हो, क्या यह उचित है? वह केवल स्नेह पहचानता है, जिसकी स्वीकृति जताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

प्रसंग–इस प्रसंग में लेखिका ने कुत्ते और हिरण दोनों की प्रवृत्ति में अंतर को स्पष्ट किया है।

व्याख्या–कुत्ता और हिरन दोनों ही यद्यपि पालित पशु हैं। किन्तु दोनों की प्रकृति में अन्तर है। कुत्ता मनुष्य के अधिक निकट होने के कारण उसके मनोभावों एवं क्रियाओं से परिचित रहता है। वह अपने स्वामी के स्नेह को भी जानता है और क्रोध को भी पहचानता है। वह अपने स्वामी के प्रति स्वामिभक्त सेवक की भाँति होता है तथा उसकी क्रियाएँ भी अपने स्वामी की मन-स्थिति की भांति बदल जाती हैं। उसी कारण जब उसका स्वामी प्रसन्न मुद्रा में उसे स्नेह से बुलाता है तो वह गद्‌गद् भाव से मानों कृतार्थ होकर स्वामी के निकट आ जाता है और जहाँ उसका स्वामी क्रुद्ध होता है वह स्वामी से भयभीत होकर तथा दयनीय भाव से एक ओर दुबककर बैठ जाता है। किन्तु हिरण अपने पालनकर्त्ता की मुद्राओं के इस अंतर को नहीं जान पाता, वह स्वामिभक्ति नहीं जानता, वह सेवक की भाँति भयभीत होना भी नहीं जानता। यदि उस पर क्रोध किया जाये अथवा उसे डाँट दिया जाये तो वह क्रोध को समझ नहीं पायेगा भयभीत होकर दुबकेगा भी नहीं और ना ही दयनीय मुद्रा बनायेगा। ऐसी स्थिति को न समझ पाने के कारण वह अपने नेत्रों में विस्मय का भाव भरकर अपने पालने वाले की ओर निष्कपट देखता रहेगा। उसका दृष्टि से दृष्टि मिलाकर अबोध भाव से देखना ऐसा प्रतीत होता है मानो पूछ रहा हो कि उस निर्दोष पर क्या यह क्रोध करना वास्तव में उचित हैं। वस्तुत: हिरण स्नेह की भावना को ही पहचानता है। जिसकी स्वीकृति वह अपनी विशिष्ट क्रियाओं जैसे खुशी में कुलांचे भरना आदि से प्रकट करता हुआ मानो मानव-स्नेह का प्रतिदान देता है।

विशेष– 1. लेखिका ने इस अंश में मनोवैज्ञानिक ढंग से कुत्ते और हिरण की प्रकृति के अंतर को स्पष्ट किया है। इससे ज्ञात होता है कि लेखिका इन मानवेतर जीवों के कितना निकट होकर आत्मीयता पूर्वक उनके स्वभाव का निरीक्षण करती थीं।

2. भाषा में वर्णन शैली का प्राधान्य है और यह वर्णन मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों पर आधारित होने के कारण इतिवृतान्तक नहीं अपितु भावपूर्ण बन पड़ा है।

3. भाषा सहज, प्रांजल एवं बोधगम्य बन पड़ी है।

9

वर्ष भर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोयें ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगें अधिक सुडौल औंर खुरों के कालेपन में चमक आ गई। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में भराव वाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी। परन्तु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जल कोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

प्रसंग–उपर्युक्त अवतरणों में लेखिका ने सोना हिरणी के उस बाह्य रूप-रंग का वर्णन किया है जब वह शावक से विकसित होकर पूर्ण हिरणी का रूप धारण करने लगी।

व्याख्या–जब सोना हिरणी महादेवी के पास आई थी तब यह शैशवावस्था में थी। जब एक वर्ष पश्चात् वह विकसित होकर पूर्ण हिरणी के रूप में परिवर्तित होने लगी तो उसका बाह्य रूप-रंग भी अधिकाधिक निखरने लगा। वह और सुंदर दिखाई देने लगी। उसके शरीर के पीली आभा वाले रोये और भी चमकीले होकर ताम्र वर्ण की आभा को आभासित करने लगे। उसकी पतली लम्बी टांगे अधिक सुडौल हो उठी तथा उसके खुरों के श्यामवर्ण में अधिक चमक का आभास होने लगा। उसका कंठ अधिक बंकिम और लोच से भरा हुआ हो गया। उसकी पीठ का अंश

नोट

और अधिक भर गया तथा पीठ का उतार-चढ़ाव अधिक स्पष्ट होने लगा और उसमें स्निग्धता लक्षित होने लगी। किन्तु उसके शरीर के विकास से अधिक उसकी दृष्टि में एक नवीनता और आकर्षण उत्पन्न हुआ था। उसकी आँखों की कोट मानों काजल से सजी हुई थी तथा उस श्यामवर्णी कोर के भीतर नेत्र गोलक और उसकी दृष्टि ऐसी आभासित होती थी मानों नीले बल्बों में चमकीली बिजली बार-बार चमक उठती हो।

विशेष– 1. इस अंश में महादेवी ने सोना हिरणी के बाह्य रूप-चित्रण द्वारा उसमें यौवनागमन का संकेत किया है।

2. रूप का चित्रण करते समय महादेवी ने चित्रात्मकता एवं विविध वर्णों के प्रयोग द्वारा शब्दों से ही रंग-बिरंगा चित्र खींच दिया है।

3. वर्णन शैली के साथ आलंकारिकता का प्रयोग होने से निबंध शैली का आभास होता है। शैली में चित्रात्मकता एवं भावात्मकता स्पष्ट है।

4. 'मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो' में नवीन उपमा का प्रयोग किया गया है जो दैनिक जीवन से गृहीत है।

10

सम्भवतः वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गई थी। पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमने वाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानों इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनन्दोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर के आर-पार चौकड़ी भरती रही। पर कुछ दिनों के उपरांत जब यह आनन्दोत्सव पुराना पड़ गया, तब उसकी शब्दहीन, संज्ञाहीन प्रतीक्षा की स्तब्ध घड़ियाँ फिर लौट आई।

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका ने शैशवावस्था को पार कर चुकी सोना हिरणी के शरीर में आये परिवर्तनों के साथ उसकी प्रकृति में आ रहे परिवर्तनों को भी लक्षित किया, जो कि स्वाभाविक एवं प्राकृतिक हैं।

व्याख्या–सोना के शरीर में विकास के सभी लक्षण उभर रहे थे। आयु के साथ-साथ उसकी प्रकृति में भी परिवर्तन आया था जो प्रकृति प्रदत्त था। वय-विकास एवं शारीरिक विकास के साथ प्रकृति उसके हृदय में स्वच्छंद वन-संचरण की कामना जगाने लगी थी। तभी उसमें अपनी जाति के प्राणियों के साथ स्वच्छंद विहार करने की इच्छा जागकर उसे स्तब्ध करने लगी थी मानो स्मृति में कोई पुराना और अपना-सा संसार जागृत होकर उसको आमंत्रित कर रहा हो। प्रकृति जनित इन कामनाओं के कारण सोना प्रायः सूने मैदान में खड़ी रहती तथा गर्दन ऊँची करके वह किसी आहट की इस भाँति प्रतीक्षा करती जैसे उसका कोई सहचर उसके साथ क्रीड़ा करने के लिए आने वाला हो। जब वंसत ऋतु मादक हो उठती तथा इस ऋतु में हवा बहकर हृदय की कामनाओं को और भी अधिक तरंगायित कर देती, तो किसी सहचर के लिए उसकी यह भाषाहीन प्रतीक्षा और भी मार्मिक हो उठती, उसकी अधीनता और उदासीनता और भी बढ़ जाती। शैशव के सभी साथी कुत्ते, बिल्ली आदि के साथ उछल कूद करके पहले जैसा मनोरंजन उसकी इस वय में नहीं हो जाता था, इसी कारण उसकी दीर्घ प्रतीक्षा अधीरता में परिणत हो जाती थी और अधीरता उदासीनता में।

विशेष– 1. विकसित होने के पश्चात् सोना हिरणी में स्वचारित के साथ स्वच्छंद संचरण करने की जो गहरी कामना जागी थी उसका अत्यंत मनोवैज्ञानिक एवं भावस्पर्शी चित्रण लेखिका ने किया है। वसंत ऋतु की पृष्ठभूमि में प्रकृति दत्त इन कामनाओं की संवदेनीयता को और भी उभारा गया है।

2. शैली में भावात्मकता है चाहे वह वर्णनप्रधान ही है।

3. भाषा भाववाहिनी एवं मर्मस्पर्शिनी है।

नोट

11

पिल्लों के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमने वाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानो इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनन्दोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर के आर पार चौकड़ी भरती रहती। पर कुछ दिनों के उपरांत जब यह आनन्दोत्सव पुराना पड़ गया, तब उसकी शब्दहीन, संज्ञाहीन प्रतीक्षा की स्तबध घड़ियाँ फिर लौट आई।

प्रसंग–इन पंक्तियों में सोना के परोक्ष मातृत्व भाव को लेखिका ने उभारा है। जिसके भीतर उसकी वय-कामनाये कुछ छण के लिए दमित हो गई थी। फ्लोरा कुत्तिया के बच्चों को मातृवत् स्नेह देने के कारण तथा अहिंसक प्रकृति की होने के कारण फ्लोरा अपने नन्हें शिशुओं को उसके सान्निध्य में छोड़ देती थी।

व्याख्या–फ्लोरा कुत्तिया के इन बच्चों के थोड़ा बड़े हो जाने पर तथा आस-पास की दुनिया के प्रति आश्वस्त हो जाने पर सोना ने इन नन्हें शिशुओं को भी अपने पीछे घूमने वाली सेना में अपने साथ क्रीड़ा करने हेतु शामिल कर लिया। उसके साथियों में इन पिल्लों के आ जाने से वृद्धि हुई थी, इससे प्रसन्न होकर सोना अपने हर्ष की अभिव्यक्ति करना चाहती थी, इसलिए नवागंतुकों के आगमन पर हर्षोल्लास मनाने के लिए ही मानो वह अपनी पालिका महादेवी के सिर के ऊपर से बार-बार देर तक चौकड़ी भरती रहती। उसकी चौकड़ी भरना उसके स्नेह के साथ आनन्दोल्लास का भी प्रतीक था। किन्तु उसका यह उल्लास अधिक दिन न बना रह सका और प्रकृति पुनः उसमें वय के अनुकूल स्वजातिगत सहचरों के संचरण एवं विहार की कामनायें जगाने लगी तो वह पुनः उसी भाँति मूक प्रतीक्षा करने लगी तथा स्तब्ध एवं संज्ञाहीन-सी होकर किसी सहचर के आगमन की इच्छा करने लगी।

विशेष– 1. इस उद्धरण में सोना के मातृत्व-भाव तथा अन्य जाति के बच्चों के प्रति उसके निश्छल एवं व्यापक स्नेह की व्यंजना हुई है।

2. इस उद्धरण में हिरण की विभिन्न संवेदनाओं का मनोवैनिक एवं गहन मर्मस्पर्शिता के साथ लेखिका ने अंकन किया है।

3. शैली वर्णनात्मक होते हुए भी बोझिल नहीं है अपित भावपूर्ण है। भाषा की कलात्मकता द्रष्टव्य है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. इस प्रकार कौवा हमारी परम्पराओं से सम्मान पाता है तथा हमारे ········ से अपमान भी सहन करता है।
2. मनुष्य केवल प्रकृति की इस कोमल सुन्दर रचना इन उड़ते-गाते पक्षियों का ········ करके संतुष्ट नहीं हो पाता।
3. जब सोना हिरणी ········ के पास आई थी तथा यह शैशवस्था में थी।

5.1.3 दुर्मुख खरगोश

1

किसी को विश्वास न होगा कि बोल-चाल के 'लड़ाकू' विशेषण से लेकर शुद्ध संस्कृत की 'दुर्मुख', 'दुर्वासा' जैसी संज्ञाओं तक का भार सँभालने वाला एक कोमल प्राणी खरगोश था। परन्तु यथार्थ कभी-कभी कल्पना की सीमा नाप लेता है।

प्रसंग–रेखाचित्र 'दुर्मुख खरगोश' से अवतरित इन पंक्तियों में लेखिका ने संक्षिप्त शब्दों में खरगोश की प्रवृत्ति को उसके नाम के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

व्याख्या–दुर्मुख खरगोश के सम्बंध में बताने से पूर्व लेखिका बताती है कि कदाचित् आप किसी को विश्वास भी नहीं होगा कि व्यवहार में जिस 'लड़ाकू' शब्द का प्रयोग ऐसे प्राणी के लिए किया जाता है जो सदा लड़ने में प्रवृत्त रहता हो, उस शब्द का प्रयोग एक कोमल से खरगोश के लिए किया गया था। इसी प्रकार 'दुर्मुख' एवं 'दुर्वासा' भी ऐसे पौराणिक प्रतीक हैं जो स्वभाव में क्रोधी एवं मेलजोल न रखने वाले लोगों के लिए प्रयुक्त होते हैं। इन प्रतीकों को भी एक सुकुमार नन्हें से खरगोश के स्वभाव के कारण उसके लिए प्रयुक्त किया गया था, वस्तुत: सभी को यह तथ्य सुनने में अविश्वसनीय प्रतीत होगा। किन्तु कभी-कभी सत्य की सीमा कल्पना से भी आगे निकल जाती है। अर्थात् हम इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि कोई खरगोश क्रोधी, भयरहित एवं लड़ाकू रख दिया और उसे किसी से भी, मेलजोल न रखने के कारण तथा उसके अकारण क्रोध के कारण उसका नाम दुर्मुख एवं दुर्वासा रख दिया।

विशेष–1. इस अंश के द्वारा महादेवी ने खरगोश के स्वभाव का पूर्व संकेत दे दिया है। 'किसी को विश्वास न होगा' कथन द्वारा इस पूर्वसंकेत को वे नाटकीय बनाकर रेखाचित्र को प्रारंभ से कुतुहलवर्धक बना देती हैं।

2. 'परन्तु यथार्थ कभी-कभी कल्पना की सीमा नाप लेता है' जैसी सूचित इस स्थिति को अच्छे ढंग से व्यंजित कर पाई है।

2

दुर्मुख से तो मैं स्वयं भी रुष्ठ हूँ। यह मर्यादा पुरुषोत्तम राम का गुप्तचर था और रजक द्वारा सीता सम्बंधी अपवाद की बात राम से कहकर उसने सीता-निर्वासन की भूमिका घटित की थी। राजा अपने शत्रु राजाओं के क्रिया-कलाप की जानकारी के लिए गुप्तचर रखता है, प्रजा के प्रत्येक घर में दम्पत्ति की रहस्य-वार्त्ता जानने के लिये नहीं और यह तो सर्वविदित है कि पति-पत्नी क्रोध में एक दूसरे से न जाने क्या-क्या कह डालते हैं। फिर क्रोध का आवेग समाप्त हो जाने पर 'अजी जाने दो, वह तो क्रोध में बिना सोचे-समझे मुँह से निकल गया था"– कह कर परस्पर क्षमा माँग लेते हैं। प्रत्येक गृहस्वामी अपने गृह का राजा और उसकी पत्नी रानी है। कोई गुप्तचर, चाहे देश के राज का ही क्यों न हो, यदि उनकी निजी वार्ता को सार्वजनिक घटना के रूप में प्रचारित कर दे, तो उसे गुप्तचर का अनधिकार दुष्टाचरण ही कहा जायगा।

प्रसंग–इस अवतरण में लेखिका ने अपने पालित खरगोश को दुर्मुख नाम से अभिहित करने के साथ दुर्मुख के दुष्टाचरण के कारण राम द्वारा सीता के निर्वासन के अनौचित्य को भी स्पष्ट किया है।

व्याख्या–खरगोश के लिए दुर्मुख नाम के प्रयोग का औचित्य लेखिका दुर्मुख के दुराचरण द्वारा सिद्ध करते हुए कहती है कि दुर्मुख वास्तव में दुष्ट प्रकृति का व्यक्ति था जिसका सम्मान वे कभी नहीं कर सकतीं। वास्तव में दुर्मुख मर्यादा पुरुषोत्तम का गुप्तचर था तथा गुप्तचर का वास्तविक कार्य करने के स्थान पर उसने एक धोबी और धोबिन की पारस्परिक वार्ता को राम तक पहुँचाया था। इसका परिणाम गर्भवती सीता के अकारण निर्वासन के रूप में हुआ था। इस प्रकार उसने राम और सीता के पुन: वियोग में मुख्य भूमिका निभाई थी। प्रत्येक राजा अपने राज्य में गुप्तचर भी नियुक्त करता है जिनका मुख्य कार्य शत्रु-राजाओं के क्रिया कलाप की जानकारी अथवा भेद प्राप्त करना होता है, और इस प्रकार राजा और राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करता है। गुप्तचर का कार्य यह कदापि नहीं है कि वह अपने राज्य के प्रत्येक घर में पति पत्नी की व्यक्तिगत बातों का भेद लेकर उसे राजा के समक्ष प्रकट करें। पति-पत्नी की अपनी व्यक्तिगत बातें होती हैं। एक दूसरे पर समान अधिकार होता है। वे क्रोध में एक दूसरे से न जाने क्या-क्या कह जाते हैं। किन्तु वह अस्वाभाविक और आपत्तिजनक तो नहीं। जब उसका क्रोध समाप्त हो जाता है तो वे एक दूसरे से सहज होकर क्षमा भी माँग लेते हैं। इन दोनों का अपने घर में वही स्थान है जो किसी देश के राजा और

नोट

रानी का। ऐसी स्थिति में यदि कोई गुप्तचर, चाहे वह देश के राजा का ही भेदी क्यों न हो, यदि पति–पत्नी की निजी बातों को सार्वजनिक रूप से प्रचार करता फिरे और उसका परिणाम सीता–निष्कासन जैसी दु:खद घटना के रूप में हो तो इस गुप्तचर का कर्त्तव्य–अतिक्रमण एवं दुष्ट आचरण ही कहा जाना चाहिए।

विशेष– 1. यहाँ पर लेखिका ने एक ऐसे प्रश्न को पौराणिक प्रतीक के माध्यम से उठाया है जो आज भी विवादग्रस्त है। साथ ही वे पति–पत्नी के सम्बंध एवं उनकी वार्ता की गोपनीयता में किसी अन्य व्यक्ति के अनधिकृत प्रवेश को बुरा मानती हैं।

2. महादेवी ने इस प्रश्न पर बड़े भावपूर्ण एवं तर्कसंगत ढंग से अपने विचारों को प्रकट किया है।

3. भाषा जन व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली से निर्मित होने के कारण सहज एवं बोधगम्य है।

3

इससे स्पष्ट है कि पैने दाँतों के दुरुपयोग में पटु खरगोश का दुर्मुख नाम रखकर भी हमने राम के दुष्ट गुप्तचर का कोई अपमान नहीं किया। परंतु महर्षि दुर्वासा के नाम का ऐसा धृष्टतापूर्ण उपयोग करने के लिए मुझे उनकी रुद्र स्मृति से बराबर क्षमा याचना करनी पड़ी। वे महर्षि निर्वाण को प्राप्त होकर निर्विकार ब्रह्म में क्रोध की तरंगें उठा रहे हैं या किसी अन्य लोकवासियों को शाप से कम्पायमान कर रहे हैं, यह जान लेने का कोई साधन नहीं है। सम्भवत: अन्तर्दृष्टि से यह जान लेने के उपरांत कि उस शशक की क्रोधी प्रकृति को व्यक्त करने का सामर्थ्य केवल उन्हीं के नाम में निहित है, उन्होंने मुझे क्षमा कर दिया है, अन्यथा मेरी धृष्टता अब तक शापमुक्त न रहती।

प्रसंग–इस अवतरण में महादेवी ने खरगोश को दुर्वासा संज्ञा से अभिहित करने का औचित्य सिद्ध किया तथा नम्रतापूर्वक उसने क्षमा माँगी है।

व्याख्या–दुर्मुख गुप्तचर के दुष्टाचरण का पूर्व प्रसंगों में उल्लेख करने के पश्चात् लेखिका कहती है कि जिस प्रकार यह खरगोश अन्य सजातीय खरगोशों के विपरीत अपने पैने दाँतों का दक्षता से दुरुपयोग करता था, उसको देखते हुए इस खरगोश का दुर्मुख नाम रखकर वस्तुत: उन्होंने राम के दुष्ट गुप्तचर का कोई अपमान नहीं किया क्योंकि इन दोनों में ही व्यवहार और प्रवृति साम्य देखने को मिलता था। किन्तु उस क्रोधी खरगोश की क्रोधी प्रवृति के कारण उसे दुर्वासा नाम देना कदाचित घृष्टता थी जिसके लिए वह स्मृति में उभरी उनकी क्रुद्ध मुद्रा से क्षमा–याचना करती हैं। दुर्वासा अत्यंत महान तपस्वी एवं तेजयुक्त ऋषि थे। उनमें मात्र एक दुर्गुण था–उनका उग्र क्रोध। छोटी–छोटी बातों पर उत्तेजित होकर वे श्राप दे डालते थे जिसका कारण देवादिगण भी उनसे भयभीत रहते थे। उनके क्रोधी स्वभाव को प्रतीक बनाकर क्रोधी मनुष्य को दुर्वासा कहा जाता है। खरगोश का दुर्वासा नाम उसके क्रोधी स्वभाव के कारण पड़ा था। यद्यपि ऋषि दुर्वासा निर्वाण को प्राप्त कर चुके हैं। तथापि यदि वे महादेवी की इस धृष्टता से कुपित होकर विकाररहित ब्रह्माण्ड में क्रोध की तरंगें उठा रहे हों, अथवा किसी अन्य लोक के निवासियों को उनके क्रोध का शाप झेलना पड़ रहा हो, यह जान लेना तो वास्तव में सम्भव नहीं है। किन्तु परम तपस्वी होने के कारण कदाचित् उन्होंने अर्न्तदृष्टि से यह जान लिया है कि उस खरगोश की क्रोधी प्रकृति की व्यंजना केवल उनका ही नाम कर सकता है और महादेवी को क्षमा भी कर दिया होगा। अन्यथा महादेवी अभी तक उनके नाम का उपयोग खरगोश के लिए करने की धृष्टता के कारण उनके शाप से बची नहीं रह सकती थीं।

विशेष– 1. इस अंश में महादेवी के पौराणिक ज्ञान का परिचय मिलता है। इसके साथ ही उनकी कल्पना की विराटता का भी ज्ञान होता है।

2. दुर्वासा से अपनी धृष्टता की क्षमा माँगने में महादेवी की विनम्रता झलकती है जो उनके सौम्य व्यक्तित्व का एक अंग है।

3. भाषा तत्सम बहुल होकर भी रोचक एवं संप्रेषणीयता में सक्षम है।

नोट

4

वस्तुतः खरगोश बहुत निरीह जीव है। दाँत होने पर भी वह किसी को काटता नहीं, पंजे होने पर भी वह किसी को नोंचता-खरोंचता नहीं। भय उसका स्थायीभाव है। नवपालित शशक हमारी धारणाओं के सर्वथा विपरीत था। दूध-भात देर से मिलने पर वह पंजों से कटोरी उलट देता, देने वाले के हाथ में या हाथ पहुँच से बाहर होने पर पैर में अपने नन्हें पर पैने दाँत चुभा देता और कमरे भर में दौड़-दौड़कर जो कुछ उसकी पहुँच में होता उसे फेंकता-उलटता हुआ घूमता। उसके भय से छिपकली क्या अन्य कीट-पतंग तक मेरे कमरे से दूर रहते थे।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण में लेखिका ने सामान्य खरगोश की प्रकृति का वर्णन करके उसके परिप्रेक्ष्य में दुर्मुख की विपरीत प्रकृति का चित्रण किया है।

व्याख्या–खरगोश की साधारण प्रकृति का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वह अत्यंत निरीह एवं भययुक्त प्राणी होता है। यद्यपि प्रकृति ने उसे पैने दाँत दिये हैं। किन्तु वह किसी को काटकर क्षति पहुँचाने का प्रयास नहीं करता, तीक्ष्ण पंजे होने पर भी वह भयाकुल स्वभाव होने के कारण कभी किसी को नोंचता-खसोटता नहीं है। खरगोश में भय का भाव सदैव विराजमान रहता है तथा किसी अपरिचित आहट को भी सुनकर वह भयभीत होकर छिप जाता है। किन्तु महादेवी ने जिस शशक शावक को पाला था वह सामान्य खरगोश की निरीह एवं भयपूर्ण प्रवृति से पूर्णतः भिन्न एवं विपरीत स्वभाव का प्राणी था। वह इतना क्रोधी एवं लड़ाकू स्वभाव का था कि यदि उसे क्षुधा सता रही हो और उसे उसी समय दूध भात देने में यदि विलम्ब हो जाये तो कुपित होकर अपने पंजों से दूध भात की कटोरी ही उलट कर सारा दूध-भात गिरा देता था। इतना ही नहीं, अपने गुस्से की अभिव्यक्ति के लिए वह दूध भात देने वाले के हाथ में अथवा हाथ यदि उसकी पहुँच से बाहर हुआ तो पैर में अपने छोटे-छोटे और पैने दाँतों को चुभा कर पीड़ा देता था। क्रोधी की तरंगों को दुर्वासा के समान महादेवी के पूरे कक्ष में प्रसारित करता हुआ पूरे कमरे में इधर उधर दौड़कर प्रत्येक उस वस्तु को इधर उधर उलटता फेंकता घूमता जो भी उसके सामने पड़ जाती थी। उसके क्रोधी स्वभाव के कारण छिपकली और अन्य कीट पतंगे भी भय खाते थे और महादेवी के कमरे में प्रवेश करने का साहस नहीं करते थे।

विशेष–1. इस प्रसंग में खरगोश के साधारण स्वभाव के परिप्रेक्ष्य में दुर्मुख खरगोश के चरित्र की विशेषताओं को उभारा गया है जो उसका दुर्गुण होकर भी अद्भुत थी।

2. शैली में वर्णनात्मकता के साथ-साथ चित्रात्मकता भी है। महादेवी ने साधारण शब्दों में दुर्मुख की विविध क्रियाओं द्वारा उसके स्वभाव की विशेषताओं को ही नहीं उभारा, अपितु उन क्रियाओं का एक-दृश्य उपस्थित कर दिया है।

5

ऐसे वह अन्य खरगोशों के समान प्रियदर्शन था, परन्तु एक विशेषता के साथ। कुछ बड़े-बड़े सघन, कोमल और चमकीले फर के रोमों से उसका शरीर आच्छादित था, पूँछ छोटी और सुन्दर और पंजे स्वच्छ थे, जिनसे वह हर समय अपना मुख साफ करता रहता था। कान विलायती खरगोशों के कानों के समान कुछ कम लम्बे थे, परन्तु उसकी सुडौलता और सीधे खड़े रहने में विशेष मोहक सौंदर्य था। विशेषता यह थी कि एक कान काला था और एक सफेद। काले कान के ओर की आँख काली थी और सफेद कान के ओर की लाल। सामान्यः सफेद खरगोशों की आँखें लाल और काले या चितकबरों की काली होती है। परन्तु इस खरगोश की दोनों आँखों ने अपने दो भिन्न रंगों से उसे नियम का अपवाद उपस्थित कर दिया था। कभी-कभी लगता मानो दो भिन्न खरगोशों का आधा-आधा शरीर जोड़कर एक बना दिया गया हो और आँखों में एक ओर नीलम और दूसरी ओर रूबी का चमकीला मनका जड़ दिया हो। स्वजाति की सतर्कता और आतंकित मुद्रा का उसमें सर्वथा अभाव था।

नोट

प्रसंग–इस अवतरण में महादेवी ने दुर्मुख के बाह्य रूप-रंग की विशेषताओं का वर्णन किया है। बाह्य सौंदर्य में भी वह साधारण खरगोशों से भिन्न तथा विशिष्टता लिये हुए है।

व्याख्या–क्रोध और लड़ाकू स्वभाव का होने के बावजूद दुर्मुख अन्य खरगोशों की भाँति सुन्दर और प्यारा सा था। इतना ही नहीं, साधारण खरगोशों से अलग उसके बाहरी सौंदर्य में कुछ अन्य विशेषतायें भी थीं। उसके शरीर के रोम सामान्य खरगोशों से थोड़े बड़े-बड़े घनापन लिए हुए, कोमलस्पर्शी एवं चमकीली आभा लिए हुए झालर की भाँति थे। जिनमें आच्छादित होकर उसका पूरा शरीर अत्यंत सुंदर प्रतीत होता था। उसकी पूँछ आकार में लघु तथा देखने में मोहक थी। उसके पंजे स्वच्छ थे जिनसे वह हर समय अपना मुख साफ करने का कार्य करता रहता था। उसके कान विदेशी खरगोशों के कानों की भाँति आकार में कुछ कम लम्बे थे किन्तु वे इतने सुडौल और सीधे खड़े रहते थे कि अत्यंत मोहक एवं विशेष आकर्षण युक्त प्रतीत होते थे। उसके कानों की विशेषता यह भी थी कि उसका एक कान श्वेत वर्ण का था तथा दूसरे कान का वर्ण पूर्णत: विपरीत काले रंग वाला था। उसके काले कान की ओर के नेत्र का वर्ण भी काला था किन्तु उसके सफेद कान की ओर के नेत्र का वर्ण रक्तिम था, सामान्यत: सफेद खरगोशों के नेत्रों का वर्ण रक्तिम होता है तथा काले अथवा चितकबरे शरीर वाले खरगोशों का नेत्र काला होता है। परंतु इस खरगोश की दोनों आँखे साधारण खरगोश की आंखों से सर्वथा भिन्न दो रंगों वाली थी जिससे वह प्रकृति के नियम का अपवाद प्रतीत होता था। उसकी आंखों को देखकर ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी ने दो भिन्न खरगोशों के शरीर के आधे-आधे हिस्सों को जोड़कर एक खरगोश बना दिया हो तथा उसके दोनों नेत्रों में से एक में नीलम जड़ दिया हो तथा दूसरे में रक्तिमवर्णी रूबी का चमकीली आभा वाला नग जड़ दिया हो। इस खरगोश में साधारण खरगोश से बाह्य रूप-रंग में ही वैशिष्ट्य नहीं था अपितु खरगोश जाति की सतर्कता एवं आतंकित हो जाने की निरीहता एवं भयाकुलता भी इस खरगोश में तनिक भी प्राप्य नहीं थी।

विशेष–1. खरगोश के बाह्य रूप-रंग की विशेषताओं का वर्णन होने के कारण इस अंश में चित्रात्मकता उभरी है। बाह्य रूप-रंग के साथ-साथ उसकी आंतरिक प्रवृत्ति की विशेषताओं का संक्षिप्त संकेत भी लेखिका अंत में कर देती है।

2. खरगोश के दो भिन्नवर्ण नेत्रों का वर्णन करते हुए लेखिका अद्‌भुत कल्पना करती है, जिसमें दो खरगोशों के आधे-आधे शरीर जोड़ दिये गये हों। इस कल्पना में चित्रात्मकता भी है।

3. शैली में वर्णनात्मकता के साथ आलंकारिकता भी शामिल है।

6

दुर्मुख ने पहले तो मिट्टी खोदकर अपने रहने के लिए सुरंग जैसा घर बनाया और उस निर्माण-कार्य से अवकाश मिलते ही जालीधर के अन्य निवासियों से 'युद्ध देहि' करना आरम्भ किया। उसके झपटने और काटने के कारण कबूतर, मोर आदि का दाना चुगने के लिए नीचे उतरना कठिन हो गया। वे तब तक अपने अड्डों और झूलों पर बैठे रहते, जब तक दुर्मुख अपने भोजन से तृप्त होकर सुरंग-घर में विश्राम के लिए न चला जाता। कभी कभी सुरंग में भी जब उसे अपने प्रतिद्वन्द्वियों के नीचे उतरने की आहट मिल जाती तब वह अचानक उन पर आक्रमण कर किसी की गर्दन और किसी के पैरों में अपने दाँत गड़ा देता और वे आर्त्त स्वर में कोलाहल करते हुए ऊपर उड़ जाते।

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका ने दुर्मुख के लड़ाकू एवं कटखन्ने स्वभाव का वर्णन किया है जिसके कारण वह अन्य जन्तुओं से तनिक भी मेल जोल नहीं रख पाया।

व्याख्या–जब खरगोश कुछ बड़ा हो गया तो उसके स्वाभाविक विकास को बनाये रखने के लिए महादेवी ने उसे बड़े जालीघर में अन्य पशुपक्षियों के साथ रहने के लिए पहुंचा दिया। वहां पर दुर्मुख ने सर्वप्रथम अपने रहने के लिए

नोट

कच्ची मिट्टी वाले स्थान को खोदकर सुरंग जैसा घर बनाया। तथा सुरंग बनाने का कार्य जैसे ही समाप्त हुआ, उसने जालीघर में पहले से रहने वाले निवासी पशु–पक्षियों से लड़ना प्रारंभ कर दिया। जालीघर में उसका लड़ाकू स्वभाव अधिक अभिव्यक्ति पाने लगा। किसी भी पशु पक्षी में इतना साहस नहीं था जो उसके पैने दाँतों का सामना कर पाते। इससे खरगोश का दुस्साहस बढ़ गया था। उसके जब तब आक्रमण के कारण स्थिति इतनी गंभीर हो गई थी कि उसकी उपस्थिति में कबूतर और मोर आदि अपने घोंसले से उतरकर दानों भी चुगने में असमर्थ थे। वे तब तक अपने अड्डों और झूलों पर बैठे प्रतीक्षा करते रहते जब तक दुर्मुख भोजन करके तृप्त न हो जाता तथा विश्राम के लिए अपने सुरंग घर में न पहुंच जाता। उसके सुरंग में जाने के बाद ही वे निरीह पक्षी भोजन करने उतर पाते थे। किंतु यदि अपनी सुरंग में भी दुर्मुख को इन पक्षियों के नीचे उतरकर दागा चुगने की आहट लग जाती थी तो वह उसी क्षण पुन: बाहर आकर उन पर आक्रमण कर देता था। कभी वह किसी की गर्दन पर कभी किसी के पैरों पर अपने दांतों से घाव करके उन्हें घायल कर देता था, इसी कारण वे पक्षी भूखे प्यासे ही अपने प्राण दुर्मुख के घातक आक्रमण से बचाकर दीन भाव से चिल्लाते हुए अपने–अपने निवास स्थान पर लौट जाते थे।

विशेष–1. इस अंश में खरगोश के क्रोधी स्वभाव का चित्रण लेखिका ने किया है। साथ ही उसका मेलजोल रहित स्वभाव अन्य पक्षियों के लिए दु:ख का कारण भी बन चुका था, इसका भी चित्रण किया है।

2. यहाँ वर्णन में भी चित्रात्मकता का गुण है और दुर्मुख के आक्रमण एवं पक्षियों के आर्त्तक्रन्दन का दृश्य सजीव हो उठता है।

3. भाषा में सहजता एवं कलात्मकता का गुण विद्यमान है।

7

प्राय: खरगोश की गंध से साँप आ जाते हैं; क्योंकि वह उसके प्रिय खाद्यों में से एक है। सम्भवत: साँप का बच्चा गन्ध से जाली के भीतर घुस आया हो, क्योंकि बड़े साँप का तो उस जाली में प्रवेश करना कठिन था। दुर्मुख अपने स्वभाव के कारण ही उस पर झपट पड़ा होगा। वह जालीघर में बने चबूतरे पर भी चढ़ सकता था। जिस पर साँप न चढ़ पाता और सुरंग में बड़े जालीघर में भी जा सकता था, जहाँ मोरी के कारण साँप न प्रवेश कर पाता, परंतु उसकी चिर लड़ाकू प्रकृति से बचाव का कोई साधन स्वीकार नहीं किया। क्रोधी प्रकृति में भी पार्थिव रूप से मारक, विष नहीं रहता, इसी से बेचारा दुर्मुख सँपोले का भी दंशन-विष नहीं सह सका, परंतु मृत्यु से पहले उसने शत्रु के दो खण्ड करके अपना प्रतिशोध तो ले ही लिया।

प्रसंग–उपयुक्त वर्णन में लेखिका ने दुर्मुख के जीवनांत का वर्णन किया है। यहां वे दर्शाती हैं कि उसका लड़ाकू एवं क्रोधी स्वभाव ही उसकी मृत्यु का कारण भी बना।

व्याख्या–दुर्मुख की मृत्यु के विषय में बताते हुए महादेवी कहती हैं कि सांप खरगोश को बड़े चाव से खाता है इसलिए जहां खरगोश की गंध मिलती है वहीं सांप पहुँच जाते हैं। जालीघर यद्यपि इस प्रकार बनाया गया था कि बड़े सांप का उसमें प्रवेश कठिन था। किंतु जाली में बने संधों से कदाचित सांप का कोई छोटा बच्चों उसमें प्रवेश कर गया होगा। दुर्मुख स्वभाव से पहले से ही क्रोधी और कटखन्ना था इसलिए इस नये जीव का प्रवेश उसे अखरा होगा और वह स्वभावित उस सांप के बच्चे पर झपट पड़ा होगा। सांप को देखकर दुर्मुख यदि सामान्य खरगोश होता तो वह जालीघर में बने बड़े चबूतरे पर चढ़ सकता था तथा इस प्रकार सांप की पहुंच से बाहर हो सकता था। अथवा जो सुरंग उसे बड़े जालीघर में जाने के लिए बनाई थी उसके द्वारा वह बड़े जालीघर में भी जा कर स्वयं को बचा सकता था जहां मोरी होने के कारण सांप प्रवेश करने में असमर्थ था। किंतु वह तो दुर्मुख था–अत्यंत क्रोधी एवं लड़ाकू। वह संपोले से भी कैसे हार सकता था अथवा पीठ दिखाकर मैदान छोड़कर कैसे भाग सकता था। उसने अपनी प्रकृति के अनुरूप संपोले पर आक्रमण कर दिया खरगोश क्रोधी अवश्य था किंतु क्रोधी होने पर भी उसके

नोट

शरीर में सांप की भांति प्राणघातक विष नहीं था इसी कारण दुर्मुख उस सांप से युद्ध करके भी उसके विष के दंश को सहन नहीं कर पाया तथा अंतत: मृत्यु को प्राप्त हुआ किंतु उसके क्रोधी स्वभाव ने मृत्यु का प्रतिशोध ले लिया।

विशेष–1. क्रोधी स्वभाव साधारण समझ पर भी आवरण डाल देता है, इसका प्रमाण दुर्मुख खरगोश है जो अपने क्रोधी स्वभाव के कारण सांप के विष को भी भूल गया तथा अपने बचाव के स्थान पर उससे लड़कर अपने प्राण गंवा बैठा।

2. दुर्मुख का यह दुखद अंत उसके क्रोधी स्वभाव के परिणाम की भयंकरता की व्यंजना करता है।

3. शैली वर्णन प्रधान है।

8

मेरे माली का आज भी निश्चिंत मत है कि उस खरगोश पर पहलवान जी की छाया थी, नहीं तो भला कोई खरगोश साँप से लड़कर उसके टुकड़े कर सकता है। पहलवान की समाधि कहीं पास ही है और उनकी शक्ति की इतनी ख्याति है कि दूर-दूर से ग्रामवासी मनौतियां माँगने आते हैं।

पर मुझे आज भी वह छोटा, मैगनोलिया के फूल-सा कोमल श्वेत शशक-शावक स्मरण हो आता है, जिसके जीवन के आरम्भ में ही उस पर दुर्योग से मार्जारी की निष्ठुर छाया आ पड़ी थी। यदि वह अन्य शावक के समान खेलता-खाता माँ की स्नेह-छाया में बड़ा होता तो पता नहीं कैसा होता।

प्रसंग–दुर्मुख के इस असाधारण स्वभाव तथा उसके दुखद अंत के सम्बंध में महादेवी उसकी शैशवस्था की पूर्व स्मृतियों का ध्यान करने लगती हैं।

व्याख्या–दुर्मुख का यह स्वभाव और सर्प से उसका प्रतिशोध वस्तुत: एक असाधारण घटना थी। इसी कारण महादेवी का भोला अशिक्षित माली यह निश्चित रूप से मानता है कि उस खरगोश पर किसी पहलवान जी की छाया थी। यदि ऐसा नहीं होता तो क्या वह साधारण खरगोशों से पूर्णत: विपरीत इतना लड़ाकू और क्रोधी होता और क्या कभी कोई खरगोश किसी साँप से लड़कर उसको मारकर दो खण्ड कर सकता है। यह संभव हुआ है तो इसी कारण हुआ है कि उस खरगोश पर पहलवान जी का साया पड़ा हुआ था। उन पहलवान जी की समाधि कहीं आस-पास ही है तथा उनकी महिमा इतनी अधिक है, उनकी शक्तियाँ इतनी प्रसिद्ध हैं कि दूर-दूर से गाँव के लोग मनौतियाँ मनाने के लिए समाधि पर आते हैं। किन्तु महादेवी जी इस असाधारण खरगोश के शिशु रूप का स्मरण करती हैं जब वह उन्हें प्राप्त हुआ था। वह छोटा-सा शशक शिशु मैगनोलिया के फूल की भाँति श्वेत वर्णी, सुकुमार और कोमल प्रतीत होता था। किन्तु उसके जीवन के प्रारंभ में दुर्भाग्य से किसी हिंसक बिल्ले का निष्ठुर प्रभाव आ पड़ा था जिसने उसके सम्पूर्ण परिवार को अपनी हिंसा का शिकार बना दिया था। यदि यह खरगोश अन्य शावकों के समान अपनी शशक माँ के स्नेह वात्सल्य में पला और बड़ा होता तो कदाचित् वह वास्तव में इतना क्रोधी न होकर उतना ही कोमल और प्यारा-सा होता, और कदाचित् उसका इतना दुखद असामयिक अन्त न होता।

विशेष– 1. माली की मान्यता के माध्यम से लेखिका ने ग्रामीण अशिक्षित जन के अंधविश्वास को अंकित किया है।

2. शशक-शावक को महादेवी ने 'छोटा मैगनोलिया के फूल-सा कोमल श्वेत' कहा है। इसमें उपमा के साथ-साथ स्पर्श बिंब भी है।

3. महादेवी ने संवेदनात्मक शब्दों में उसके क्रोधी स्वभाव का कारण बताने का प्रयास भी किया है।

5.1.4 गौरा गाय

नोट

1

वैसे खाद्य की किसी समस्या के लिए पशु-पक्षी पालना मुझे कभी नहीं रुचा। बकरी, कुक्कुट, मछली आदि पालने के मूल उद्देश्य का ध्यान आते ही मेरा मन विद्रोह करने लगता।

प्रसंग—यह अवतरण 'गौरा गाय' रेखाचित्र से गृहीत है। पूर्व-प्रसंग के अनुसार महादेवी वर्मा की बहन ने उन्हें गाय पालने का सुझाव दिया, जिसका कुछ उपयोग हो। यहाँ महादेवी यह विचार प्रकट करती हैं कि उपयोग की दृष्टि से वे जीव-जन्तुओं को नहीं पालती।

व्याख्या—पशु एवं पक्षी पालने की उपयोगिता के बारे में महादेवी अपने विचार रखती हुई कहती हैं कि उन्होंने यदि पशु-पक्षी पाले हैं, तो केवल उनके संरक्षण के उद्देश्य से तथा उनमें अपनी ममता एवं स्नेह का प्रसार करने के लिए। इसलिए जब उनकी बहन दूध की समस्या के लिए गाय पालने का सुझाव देती हैं तो वह यही सोचती हैं कि उन्होंने खाने अथवा पेय पदार्थों की किसी समस्या को ध्यान में रखते हुए कभी पशु-पक्षियों को नहीं पाला। उपयोगितावादी दृष्टि उन्हें कभी नहीं भाई, क्योंकि उसमें पशु के प्रति स्नेह कम और मानव का निजी स्वार्थ अधिक निहित होता है। इसी बारे में आगे विचार करते हुए वे कहती हैं कि जो लोग उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए बकरी, मुर्गा, मछली आदि का पालन करते हैं तो क्या उनका स्वार्थ इसमें निहित नहीं होता और क्या वे इन पालतू प्राणियों के प्रति वास्तव में कोई स्नेह करते हैं क्योंकि इनका मूल उद्देश्य अंततः इन प्राणियों का वध करके ग्राहकों को खाद्य-व्यंजनों की संख्या बढ़ाने के लिए बेचना होता है। करुणामयी, ममतामयी महादेवी ऐसे उपयोगितावादी पशु पालन को सहन नहीं कर पातीं और उनका हृदय इससे विद्रोह कर उठता है। इसी कारण वे चिड़ियावाले से कई पक्षी खरीद लाती हैं क्योंकि इनके हिंसक उपयोग की कल्पना भी उनके लिए असहनीय है।

टास्क महादेवी जी ने पशु-पक्षियों तथा उनकी उपयोगिता के किस पक्ष को उजागर किया है? विस्तार से उल्लेख कीजिए।

विशेष—1. यहाँ महादेवी के व्यक्तित्व का वह पक्ष परोक्षतः उद्घाटित होता है जहाँ वे अन्य मानवों की तरह किसी स्वार्थवश पशु-पक्षियों का पालन न करके उन्हें अपना मातृवत् संरक्षण देने तथा उनमें अपना प्यार बाँटने के लिए पालती हैं।

2. निरीह पशुओं के प्रति हिंसा, अथवा अपनी किसी खाद्य समस्या के लिए उनका वध करने के उद्देश्यों के प्रति उनका ममतायुक्त मन विद्रोह करने लगता है।

2

गाय जब मेरे बंगले पर पहुँची तब मेरे परिचितों और परिचालकों में श्रद्धा का ज्वार-सा उमड़ आया। उसे लाल-सफेद गुलाबों की माला पहनायी, केशर-रोली का बड़ा-सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखा दिया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही-पेड़ा खिलाया गया। उसका नामकरण हुआ गौरांगिनी या गौरा। पता नहीं, इस पूजा-अर्चना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा, परन्तु वह बहुत प्रसन्न जान पड़ी। उसकी बड़ी, चमकीली और काली आँखों में जब आरती के दिये की लौ प्रतिफलित होकर झिलमिलाने लगी, तब कई दियों का भ्रम होने लगा। जान पड़ा, जैसे रात में काली दिखनेवाली लहर पर किसी ने कई दिये प्रवाहित कर दिये हों।

नोट

प्रसंग–उपर्युक्त अवतरण में महादेवी गौरा गाय के अपने बंगले पर आगमन का वर्णन करती हैं। जहाँ धार्मिक भावनाओं के कारण महादेवी के परिचितों और परिचारकों द्वारा उसका स्वागत पूजा-अर्चना से किया गया।

व्याख्या–महादेवी ने गौरा को पालने का निश्चय कर लिया। जब गौरा गाय को उनके बंगले पर अन्य पशुओं में शामिल करने के लिए लाया गया तब महादेवी के परिचितों तथा उनके सेवकों ने धार्मिक भावना एवं अत्यंत श्रद्धा से भरकर उस गाय का स्वागत अत्यंत सम्मानपूर्वक किया। उसके कंठ में लाल और श्वेत वर्ण के सुन्दर गुलाबों की माला पहनाई गई, तत्पश्चात् केसर-रोली का बड़ा-सा तिलक उसके मस्तक पर लगाया गया, चौमुखे दिये में घी की बाती जलाकर उसके आगमन एवं आशीर्वाद हेतु उसकी आरती उतारी गई तथा नैवेध के रूप में उसे दही-पेड़ा खिला कर पूजा सम्पन्न की गई। गौरा अत्यंत प्रियदर्शिनी एवं श्वेतवर्णा थी। इसी कारण उसको गौरांगिनी एवं गौरा नाम दिये गये। कदाचित् इन परिचारकों की श्रद्धा भावना को गौरा भी समझ गई थी। इस पूजा-अर्चना को अपना सम्मान समझकर वह अत्यंत प्रसन्न दिखाई देने लगी थी। महादेवी उसकी प्रसन्नता के साथ उसके नेत्रों का वर्णन करते हुए कहती हैं कि जब आरती की जा रही थी तो उसकी बड़ी चमकीली आभा युक्त एवं श्यामवर्ण आँखों में आरती के दिये की लौ प्रतिबिंबित होकर झिलमिलाने लगी तब ऐसा भ्रम होने लगा मानों कई दिये एक साथ प्रज्जवलित हो उठे हों। ऐसा प्रतीत होने लगा कि रात्रि में जब नदी की लहरे भी काली दिखाई देने लगती है तब उन लहरों पर किसी के असंख्य दीपों को प्रवाहित कर दिया हो और वे उस लहर पर प्रवाहित होते हुए झिलमिला रहे हों।

विशेष– भारतीय परम्परा में गाय को पूजनीय माना गया है उसे देवत्व प्रदान किया गया है।

1. इसी कारण गाय के आगमन पर महादेवी के परिचितों एवं परिचारिकों में धार्मिक भावना उभर आती है जो श्रद्धा के रूप में व्यक्त होती है।

2. पशु की भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयास महादेवी ने किया है। गाय इतनी प्रसन्न हुई कि उसके नेत्रों में आरती के दीये की लौ प्रतिबिंबित होने लगी।

3. नेत्रों के वर्णन में आलंकारिता एवं बिंबात्मकता द्रष्टव्य हैं। संदेह और उत्प्रेक्षा अलंकार के दृश्य बिंब को अधिक मनोहरी बना दिया है। रात में काली दिखने वाली लहर से गौरा के नेत्रों के साथ उन नेत्रों की तरलता भी द्योतक होती है।

3

गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शनी थी, विशेषतः उसकी काली-बिल्लौरी आँखों का तरल सौंदर्य तो दृष्टि को बाँधकर स्थिर कर देता था। चौड़े उज्जवल माथे और लम्बे साँचो में ढले हुए से मुख पर आँखें बर्फ में नीले जल के कुण्डों के समान लगती थीं। उनमें एक अनोखा विश्वास का भाव रहता था। गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता हैं। उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है, परन्तु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आतंक।

प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका ने गाय के सुन्दर रूप और उसके नेत्रों के वर्णन के साथ उसमें निहित भावों की व्यंजना की है।

व्याख्या–गौरा का रूप अत्यंत सुन्दर आकर्षक एवं मोहक था। उसके उज्ज्वल चमकीलें वर्ण के कारण उसका नाम गौरांगिनी पड़ा था। यद्यपि वह थी ही अति सुन्दर एवं प्रियदर्शनी तथापि उसके संपूर्ण रूप में सर्वाधिक सौंदर्ययुक्त थी उसकी काले एवं बिल्लौरी वर्ण वाली आँखें। इन आँखों में एक तरलता थी जिसका सौंदर्य लक्षित करके देखने

वाला उसके नेत्रों को स्थिर दृष्टि से देखे बिना नहीं रहता था। शुभ्रवर्ण गौरा के विशाल उज्ज्वल मस्तक तथा मानों सांचो में निर्मित लम्बे मूख पर उसकी तरल एवं बिल्लौरी आँखें ऐसी प्रतीत होती थी मानों हिम के भंडार में दो नीले जल-कुंड उपस्थित हों। इन नेत्रों की सुन्दरता से भी अधिक विशेष उसकी आँखों में छाया हुआ विश्वास का एक अपूर्व भाव था जो दूसरे को सहज ही आकृष्ट करने में सक्षम था। हिरणों के नेत्रों में एक चकित विस्मय का भाव स्थायी रूप से विद्यमान रहता है। किन्तु गाय के नेत्रों में विस्मय का भाव नहीं होता उसके नेत्रों में सदैव एक आत्मीयता से पूर्ण विश्वास रहता है—जो कभी समाप्त नहीं होता। गाय के नेत्रों में झलकते इस विश्वास को कोई भी समाप्त नहीं कर पाता यद्यपि इस पशु को मनुष्य हर तरह से यातना देता है, यहाँ तक कि निर्मन मृत्यु भी उसे मनुष्य के कारण मिलती है तथापि मृत्यु पर्यन्त उसके नेत्रों में यही विश्वास का भाव विद्यमान रहता है, न तो उसके नेत्रों में हिरण की भाँति विस्मय उपजता है और न ही यातना पाने का आतंक उभरता है अकल्पनीय घट जाने पर भी उसके नेत्रों का यह स्थायी भाव कभी विलीन नहीं होता।

विशेष—1. इस अंश में गाय के मनोविज्ञान एवं उसके विश्वास की भावना का सूक्ष्म अंकन किया गया है। यहाँ पर गौरा गाय के करुण अंत का भी पूर्व संकेत लेखिका ने कह दिया है कि निर्मम यातना एवं असमय मृत्यु प्राप्त करके भी गौरा के नेत्रों में मानव के प्रति विश्वास का भाव कभी समाप्त नहीं हो सका।

2. इसमें गाय के नेत्रों का सौंदर्य वर्णन करने में लेखिका अलंकारों एवं बिंबों को प्रयोग करती हैं उज्ज्वल लम्बे बाल एवं मुख पर आँखों की उपमा बर्फ में नीले जल कुण्डों से देकर वे नेत्रों की तरलता एवं श्याम-सौंदर्य को उद्घाटित करती हैं।

3. वर्णन में चित्रात्मकता और भावस्पर्शिता है।

नोट्स मेरा परिवार पाठ के इस अंश में गाय के मनोविज्ञान एवं उसके विश्वास की भावना का सूक्ष्म अंकन किया गया है।

4

गौरा की अलस मंथर गति से तुलना करने योग्य कम वस्तुए हैं। तीव्र गति में सौंदर्य है, परन्तु वह मन्थर गति के सौंदर्य को नहीं पाता। बाण की तीव्र गति क्षण भर के लिए दृष्टि में चकाचौंध उत्पन्न कर सकती है, परंतु मन्द समीर से फूल का अपने वृत्त पर हौले-हौले हिलना दृष्टि का उत्सव है।

प्रसंग—इस अवतरण में गौरा की मंथर गति के सौंदर्य को वर्णित किया गया है।

व्याख्या—गौरा जिस धीमी और अलसाई हुई चाल से चलती थी उसकी तुलना करने के लिए उपमायें भी नहीं मिलती। ऐसी बहुत वस्तुएं हैं जो उसकी मंथर गति से तुलना करने में सक्षम हो। अधिकांशतः तीव्र गति में सुंदरता मानी जाती है। गति की तीव्रता में चाहे सौंदर्य निहित है लेकिन मंथर गति में जो सौंदर्य होता है, उससे तीव्र गति के सौंदर्य का आकर्षण भी फीका पड़ जाता है। बाण की तीव्र गति सौंदर्य के प्रति नहीं, अपितु गति की चकाचौंध से उत्पन्न होता है जो क्षण भर के लिए दृष्टि को बांध लेती है। इसके विपरीत शाखा पर खिला हुआ पुष्प जब धीमी हवा के झोंके से धीरे-धीरे हिलता है तो दर्शक उसके इस धीमे-धीमे हिलने से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता और यह दृश्य दृष्टि का उत्सव बन जाता है। आँखें इस दृश्य, इस मंद गति के सौंदर्य को देर तक निहारे बिना नहीं रह पातीं। इस प्रकार मंद गति का सौंदर्य तीव्र गति के सौंदर्य से अधिक आकर्षक एवं मोहक होता है तथा गौरा की अलसा: मंथर गति इसका प्रमाण है।

नोट

विशेष– 1. महादेवी ने इसमें उपमानों-उदाहरणों के द्वारा मन्द गति के सौंदर्य के आकर्षण को उभारने का सफल प्रयास किया है।

2. यहाँ पर काव्यात्मक भाषा का सुन्दर प्रयोग किया गया है। सूक्तिपूर्ण उक्ति का उदाहरण के साथ स्पष्टीकरण किया गया है।

5

एक वर्ष के उपरांत गौरा एक पुष्ट सुन्दर वत्स की माता बनी। वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरू का पुतला-जैसा जान पड़ता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे मानो गेरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो। बछड़े का नाम रखा गया लालमणि; परंतु उसे सब लालू के संबोधन से पुकारने लगे। माता-पुत्र दोनों निकट रहने पर हिम राशि और जलते अंगारे का स्मरण कराते थे।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण में लेखिका ने गौरा द्वारा पुत्र को जन्म देने तथा गौरा की तुलना में उसके पुत्र के रूप-रंग का वर्णन किया है।

व्याख्या–महादेवी के गृह आगमन के एक वर्ष पश्चात् गौरा ने एक अत्यंत सुन्दर और स्वस्थ बछड़े को जन्म दिया। गौरा के शुभ्र वर्ण के विपरीत इस बछड़े का रंग लाल था जिसको देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि वह बछड़ा नहीं अपितु गेरू का पुतला हो। इस बछड़े के मस्तक पर प्रकृति प्रदत्त पान के आकार का सफेद तिलक जैसा चिह्न था। उसके चार पैरों में खुरों के ऊपर वलय की भाँति गेरू से बने बछड़े की मूर्ति को चाँदी के आभूषण पहना कर सजा दिया गया हो। इस वर्ण के कारण उस बछड़े का नाम लालमणि रखा गया किन्तु प्यार से उसे सभी लालू कहकर पुकारते थे। जब श्वेत वर्णा माता गौरा के निकट उसका गेरुवर्णा वत्स खड़ा होता तो ऐसा प्रतीत होता मानो दुग्ध-ध्वल हिमराशि के समीप लाल ज्वलित अंगारे रख दिये गये हों।

विशेष–1. इस अंश में लालमणि का रूप बिंब प्रस्तुत किया गया है।

2. इस अंश में सुन्दर अलंकारों-उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा का सुन्दर प्रयोग हुआ है जो इस प्रकार है–

उपमा – गेरू का पुतला

रूपक – हिमराशि और जलते अंगारे

उत्प्रेक्षा – मानो गेरू की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो।

3. वर्णन में बिंबात्मकता है तथा भाषा आलंकारिता प्रधान होने के कारण कलात्मक बन पड़ी है तथापि दुर्बोध नहीं है।

6

अब हमारे घर में मानो दुग्ध-महोत्सव आरंभ हुआ। गौरा प्राय: सायं बारह सेर के लगभग दूध देती थी; अत: लालमणि के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आस-पास के बालगोपाल से लेकर कुत्ते-बिल्ली तक सब पर मानो 'दुधो नहाओ' का आशीर्वाद फलित होने लगा। कुत्ते-बिल्लियों ने तो एक अद्भुत दृश्य उपस्थित कर दिया था। दुग्ध-दोहन के समय वे सब गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते और महादेव उनके आगे उनके खाने के लिए निश्चित बर्तन रख देता। किसी विशेष आयोजन पर आमंत्रित अतिथियों के समान वे परम शिष्टता का परिचय देते हुए प्रतीक्षा करते रहते। फिर नाप-नापकर सबके पात्रों में दूध डाल दिया जाता, जिसे पीने के उपरांत वे एक बार फिर अपने-अपने स्वर में कृतज्ञता

ज्ञापन सा करते हुए गौरा के चारों ओर उछलने-कूदने लगते। जब तक वे सब चले न जाते, गौरा प्रसन्न दृष्टि से उन्हें देखती रहती। जिस दिन उनके आने में विलम्ब होता, वह रँभा-रँभाकर मानो उन्हें पुकारने लगती।

प्रसंग–गौरा के बछड़ा होने के उपरांत महादेवी अपने घर में दुग्ध-महोत्सव का वर्णन करती हैं। यद्यपि गौरा पालने का मुख्य उद्देश्य दूध की प्राप्ति नहीं था किन्तु मातृवत् गौरा के दूध के रूप में मानों सबको आर्शीवाद प्राप्त होने लगा।

व्याख्या–गौरा ने जब दूध देना आरंभ किया तो मानो महादेवी के घर में दुग्ध-प्राप्ति के उत्सव का वातावरण बन गया। गौरा प्रातः और साँझ को लगभग बारह सेर दूध देती थी। यह दूध इतनी अधिक मात्रा में होता था कि उसके बछड़े के लिए कई सेर छोड़ने के बाद भी अधिक बच जाता था। बचे हुए दूध को आस-पास रहने वाले बच्चों में भी बाँटकर घर के पालतू पशुओं कुत्ते, बिल्ली तक को इतनी मात्रा में प्राप्त होने लगा मानों स्वयं गाय ने माता बनकर उन्हें 'दूधों नहाओं' का आशीर्वाद दे दिया हो। दूध को प्राप्त करने के लिए इन पशुओं में मानो स्वयमेव अनुशासन उत्पन्न हो गया था। जब गाय का दूध दुहा जाता तो वे सब गौरा के सामने पंक्तिबद्ध होकर बैठ जाते। महादेवी का परिचालक उनके समक्ष उनके खाने के निश्चित बर्तन रख देता था। जब तक महादेव उनको स्वयं अपने हाथों दूध न देती, तब तक वे इस प्रकार शांत और सभ्यता से बैठे रहते मानों वे कुत्ते बिल्ली न होकर किसी विशेष अवसर के आयोजन में आमंत्रित शिष्ट एवं सभ्य अतिथि हों। फिर उनके पात्रों में जब नाप-नाप कर दूध डाल दिया जाता तो वे दूध को पीकर अपने-अपने स्वर में मानों गौरा को धन्यवाद देते तथा प्रसन्नतापूर्वक उसके आस-पास उछलते कूदते रहते। उनकी प्रसन्नता पर गौरा भी प्रसन्न हो जाती तथा जब तक वे तृत्त होकर चले न जाते उनको हर्ष से निहारती रहती। गौरा के लिए ये पशु भी अपने बछड़े के समान ही पुत्रवत् बन गये थे। इसीलिए यदि किसी दिन दूध पीने के लिए यदि उनके आने में विलम्ब होने लगता, तो वह रंभा-रंभा कर मानों उन्हें पुकारती और बुलाती थी।

विशेष–1. यहाँ लेखिका ने पशु-स्नेह का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। गौरा का मातृ-स्नेह अपने बछड़े के लिए ही नहीं अन्य विजातीय पशुओं के लिए भी है। इसीलिए वह अपने गाय से प्राप्त हुए दुग्ध से उनका पोषण कर प्रसन्न होती हैं। इसी प्रकार जहाँ कुत्ते-बिल्ली अपने खाने-पीने के लिए प्रायः एक दूसरे से लड़ते देखे जाते हैं, यह भी पशु-स्नेह का अद्‌भुत प्रभाव है कि वे गौरा का दूध पाने के लिए स्वयं अनुशासन बद्ध होकर मानव तक के लिए उदाहरण उपस्थित करते हैं। यह भी द्रष्टव्य है कि पशु होकर भी वे गौरा के प्रति कृतज्ञता एवं प्रसन्नता ज्ञापित करना नहीं भूलते।

2. मुहावरा 'दूधो नहाओ' का प्रयोग करके महादेवी ने कम शब्दों में अधिक कहने की परम्परा का निर्वाह किया है।

3. इस अंश में अद्‌भुत दृश्य होने के कारण दृश्यात्मकता है। साधारण शब्दों से युक्त होकर भी भाववाहिनी एवं कलात्मक है।

7

अंत में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ जिसकी कल्पना भी मेरे लिए संभव नहीं थी। प्रायः कुछ ग्वाले ऐसे घरों में, जहाँ उनसे अधिक दूध लिया जाता है, गाय का आना सह नहीं पाते। अवसर मिलते ही वे गुड़ में लपेटकर सुई उसे खिलाकर उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर देते हैं। गाय के मर जाने पर उन घरों में वे पुनः दुध देने लगते हैं। सुई की बात ज्ञात होते ही ग्वाला एक प्रकार से अंतर्धान हो गया; अतः संदेह का विश्वास में बदल जाना स्वभाविक था। वैसे उसकी उपस्थिति में भी किसी कानूनी कार्यवाही के लिए आवश्यक प्रमाण जुटाना असम्भव था।

नोट

प्रसंग–उपर्युक्त अवतरण के पूर्व प्रसंग में जब गौरा दिनों-दिन क्षीण होने लगी तो चिकित्सकों से ज्ञात हुआ कि गौरा को किसी ने गुड़ के भीतर सुई रखकर खिला दी है तो रक्त संचार के माध्यम से हृदय तक पहुंचकर कभी भी उसका अंत कर सकती है। ऐसा क्यों हुआ, इसका वर्णन लेखिका ने इस अंश में किया है–

व्याख्या–गाय को सुई खिला देने की बात ज्ञात होने पर एक और सत्य भी महादेवी को ज्ञात हुआ जिसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। गाय की मृत्यु के पीछे भी मानव का द्वेष और स्वार्थ निहित था। केवल अपना हित साधने के लिए मानव एक मूक निर्दोष पशु की यातनामय मृत्यु कितनी सरलता से निश्चित कर देता है, महादेवी स्वयं करुणामयी होने के कारण ऐसी कल्पना भी नहीं कर पाई। गौरा के आगमन से पूर्व जो ग्वाला उनके घर में दूध देता था, दुग्ध-दोहन की समस्या होने पर उन्होंने उसी ग्वाले को अपने घर में दुग्ध-दोहन के लिए नियुक्त कर दिया था। प्रायः ग्वाले जिन घरों में दूध बेचते हैं उन घरों में गाय का आगमन सहन नहीं कर पाते क्योंकि उनके व्यापार को इससे कुछ क्षति होती है। ईर्ष्यावश तथा अपने व्यापार को इस क्षनिक नुकसान से बचाने के लिए वे अवसर ढूंढ कर उस गाय को गुड़ में लपेटकर सुई खिला देते हैं और इस प्रकार उस गाय की असमय मृत्यु निश्चित हो जाती है। जब वह गाय मर जाती है तो वह उन घरों में फिर से दुध देने का कार्य प्रारंभ कर देते हैं। जब इस सत्य का उद्घाटन हुआ, तो दूध दुहने वाला ग्वाला गायब हो गया, इस कारण जो संदेह ग्वाले पर हुआ था वह विश्वास में बदल गया। अर्थात् यह प्रमाणित हो गया था कि गुड़ में सुई लपेट कर उसी के ईर्ष्यावश गौरा को खिलाई थी ताकि वह समयपूर्व मर जाये और वह पुनः महादेवी के घर में दूध देना प्रारंभ कर सकें। अपराध का प्रमाण जुटा कर कोई कानूनी कार्यवाही कर पाना वस्तुतः असंभव ही था।

विशेष–1. यहाँ महादेवी मानव की पैशाचिक प्रवृत्ति की ओर संकेत करती हैं। जब वह अपने किंचित् स्वार्थों को साधने के लिए अन्य प्राणियों की असयम मृत्यु निश्चित कर देता है। उन्हें बिना दोष मार डालता है तथा निर्भय होकर हत्या जैसे निर्मम जघन्य काण्ड को करता जाता है।

2. ऐसे मानवों के हृदयहीन कृत्यों का दंड देने के लिए कानून भी कुछ नहीं कर पाता क्योंकि उसे साक्ष्य की आवश्यकता होती है। इसलिए निश्शंक होकर इन कृत्यों को बढ़ावा मिलता है।

3. वर्णनात्मक शैली में होकर भी कथनों में मार्मिकता एवं करुणा भरी हुई है।

8

अपने पालित जीव जन्तुओं के पार्थिव अवशेष मैं गंगा को समर्पित करती रही हूँ। गौरांगिनी को ले जाते समय मानो करुणा का समुद्र उमड़ आया, परंतु लालमणि इसे भी खेल समझ उछलता-कूदता रहा। यदि दीर्घ-निःश्वास का शब्दों में अनुवाद हो सके, तो उसकी प्रतिध्वनि कहेगी 'आह मेरा गोपालक देश।'

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण में मृत गाय के प्रति अपनी करुण संवेदनाओं की अभिव्यक्ति लेखिका ने की है।

व्याख्या–महादेवी कहती हैं कि जितने भी जीव-जन्तु उन्होंने पाले हैं, उनके मरण पर उनके पार्थिव अवशेषों को उन्होंने गंगा नदी में ही बहाया है। ये सभी पशु उनके लिए अपत्यवत् थे और सभी की मृत्यु पर उन्हें गहन दुःख हुआ था। किन्तु गौरांगिनी ने जिस भाँति मृत्यु से संघर्ष किया था एवं कष्ट और यातनाओं को झेला थी। गौरांगिनी की मृत्यु को लेकर महादेवी के मन में पहले ही गहन मर्मवस्था थी। गौरांगिनी की मृत्यु पर जब लेखिका ने उसका पार्थिव शरीर गंगा में बहाया तो उनके समस्त परिचितों, परिचारकों के हृदय में करुणा उमड़ आई जो अश्रुओं का समुद्र बन कर बह उठी। उसके करुण अंत को सभी ने समझा था किन्तु उसका अबोध वत्स जो माँ से वंचित हो गया था इस करुण तथ्य को समझने योग्य नहीं था। गौरा की अंतिम यात्रा को भी वह क्रीड़ा समझ कर उछलता कूदता रहा। महादेवी अपने हृदय के दुःख को इन शब्दों में व्यक्त करती हैं कि क्या यही मेरा देश है जहाँ गौओं का पालना पूजा समझी जाती है।

विशेष–1. इस अंश में भावाकुल शब्दों में गौरा की अंतिम यात्रा का वर्णन किया गया है। गौरा ने अपने स्नेह से मानव एवं मानवेतर प्राणियों को जीत लिया था इसी कारण उसकी मृत्यु सभी के अंतःकरण पर आघात के समान थी।

2. अबोध वत्स की बाल क्रीड़ाओं का वर्णन करते हुए महादेवी उसके उस दुःख को व्यक्त करती हैं जिसका उसे आभाव तक नहीं है।

3. 'आह मेरा गोपालक देश' इन शब्दों में करुणा, मर्मवेदना और व्यंग्य एक साथ उभरे हैं।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. दुर्मूख खरगोश किस प्रवृत्ति का था?
   (*a*) शांत प्रवृत्ति (*b*) क्रोधी
   (*c*) एकांत (*d*) या इनमें से कोई नहीं
5. गौरा के बछड़े का क्या नाम रखा गया?
   (*a*) नीलमणि (*b*) सोनमणि
   (*c*) पारसमणि (*d*) लालमणि
6. ग्वाले ने गौरा को गुड़ में क्या मिलाकर खिलाया था?
   (*a*) पोटाश (*b*) जहर
   (*c*) घतुरा (*d*) सुई

5.1.5 नीलू कुत्ता

1

उसकी अल्सेशियन माँ उत्तरायण में लूसी के नाम से पुकारी जाती थी। हिरणी के समान वेगवती साँचे में ढली हुई देह, जिसमें व्यर्थ कहने के लिए एक तोला माँस भी नहीं था। ऊपर काला आभास देनेवाले भूरे पीताभ रोम, बुद्धिमानी का पता देनेवाली काली पर छोटी आँखें, सजग खड़े कान और सघन, रोयेंदार तथा पिछले पैरों के टखनों को छूनेवाली लम्बी पूँछ, सब कुछ उसे राजसी विशेषता देता था। थी भी वह सामान्य कुत्तों से भिन्न।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण रेखाचित्र 'नीलू कुत्ता से गृहीत है। इसमें नीलू की माँ लूसी से बाह्य रूप-रंग को लेखिका ने उभारा है।

व्याख्या–नीलू की माँ अल्सेशियन प्रजाति की कुतिया थी जिसे उत्तरायण में लूसी के नाम से पुकारा जाता था। वह सामान्य कुत्तों की भाँति नहीं थी। कुत्ते प्रायः बहुत तीव्र गति से नहीं दौड़ पाते किन्तु लूसी हरिणी के समान तीव्र गति वाली थी। उसकी देह इतनी सुडौल थी मानो विधाता ने उसे साँचे में डालकर गड़ा हो। उसके शरीर में स्थूलता का नामोनिशान भी नहीं था। उसके शरीर में तोला माँस भी व्यर्थ नहीं था जो उसे बेडौल बना देता। उसके शरीर के ऊपर छोटे-छोटे रोम आच्छादित थे जो ऊपर से देखने में काले लगते थे किन्तु वे पीली आभा वाले भूरे रंग के थे। उसकी आँखें काले रंग की तथा आकार में छोटी थीं जिससे उसकी बुद्धिमानी का पता चल जाता था। वह सदैव सतर्क रहती थी इसका आभास उसके चौकन्ने खड़े कान देते थे।

नोट

क्या आप जानते हैं प्राय: कुत्तों की पूँछ लम्बी और सघन नहीं होती किन्तु लूसी की पूँछ अत्यंत घनी, रोयों से युक्त तथा पिछले पैरों के नाखूनों को छू लेने वाली लम्बाई से परिपूर्ण थी। उसे सामान्य कुत्तों से ऊँचा और भिन्न सिद्ध कर देने वाला रूप वस्तुत: राजसी सा प्रतीत होता था।

विशेष– 1. चरित्र रेखांकन कला में महादेवी निपुण है। वे चरित्र की विशेषताओं को चित्र की भाँति उभारती जाती हैं, यह अंश इसका उदाहरण है।

2. 'हिरणी के समान वेगवती' में उपमा प्रयुक्त हुई है।

2

एक संध्या के झुटपुटे में लूसी ऐसी गई कि फिर लौट ही नहीं सकी। बर्फ के दिनों में साँझ ही से सघन अंधकार घिर आता है और हवा ऐसी तुषार बोझिल हो जाती है कि गंध भी वहन नहीं कर पाती। इसी से प्राय: शीतकाल में घ्राणशक्ति के कुछ कुंठित हो जाने के कारण कुत्ते लकड़बग्घे के आने की गंध पाने में असमर्थ रहते हैं और उसके अनायास आहार बन जाते हैं। सवेरे बर्फ पर कई बड़े-छोटे पंजों के तथा आगे पीछे घसीटने-घिसटने के चिन्ह देखकर निश्चय हो गया कि लूसी ने बहुत संघर्ष के उपरांत ही प्राण दिये होंगे। बर्फ पर रक्त के पनीले धब्बे ऐसे लगते थे मानों किसी बालक की ड्राइंग पुस्तिका के सफेद पृष्ठ पर लाल स्याही की दावात उलट गई हो।

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश के पूर्व प्रसंग के अनुसार बर्फ पड़ने पर आवागमन के रास्ते बंद हो जाने पर उत्तरायण के निवासी लूसी के माध्यम से दुकानदारों से सामान मँगवाते थे। ऐसे ही एक दिन दुकान से लौटते हुए लूसी लकड़बग्घे का शिकार बन गई। उसके अंत का वर्णन करते हुए महादेवी लिखती हैं–

व्याख्या–एक दिन उत्तरायण के किसी निवासी का सामान लाने के लिए लूसी शाम के धुँधलके में दुकान की तरफ गई लेकिन वापिस नहीं लौट सकी। जब बर्फ गिरती है तो ऐसे दिनों में शाम के समय ही घना अँधेरा हो जाता है कि कुछ दिखाई नहीं देता। हवा में ओस की नमी इतनी इतनी अधिक हो जाती है कि हवा किसी प्रकार की गंध नहीं बहा पाती। शीतकाल में इसी ओस की नमी के कारण कुत्तों में सूंघकर किसी चीज का पता लगा लेने की जो प्रकृति प्रदत्त क्षमता होती है वह भी कम हो जाती है। शीतकाल में लकड़बग्घे भी आहार की खोज में ऊँचे पर्वतों से नीचे उतर आते हैं। कुत्ते उनका प्रिय आहार होते हैं। प्राय: कुत्ते अपनी घ्राणशक्ति से लकड़बग्घे के आने की गंध पा लेते हैं तथा भागकर अपने प्राण बचा लेते हैं। किंतु शीतकाल में यह शक्ति कुंठित होने के कारण वह लकड़बग्घे की गंध सूंघ पाने में असमर्थ रहते हैं और लकड़बग्घे का शिकार बन जाते हैं। कदाचित लूसी के साथ भी ऐसा ही हुआ। सौदा लेने गई लूसी जब रात बीतने पर भी वापस नहीं लौटी तो लोगों ने सुबह उसकी खोजबीन की। तब बर्फ पर अनेक बड़े छोटे पंजों के निशान दिखाई दिये जिससे अनुमान लगाया गया कि लूसी लकड़बग्घे का ही आहार बनी है। बर्फ पर आगे पीछे घिसटने के भी निशान थे जिससे यह बोध हुआ कि लूसी ने अत्यंत संघर्ष करके ही अपने प्राण दिये हैं। बर्फ पर उसके रक्त के धब्बे धुलकर इस भाँति प्रतीत होते थे मानो किसी छात्र की ड्राइंग की पुस्तिका के सफेद धवल पृष्ठ पर किसी ने लाल स्याही की दवात उलट दी हो और उसके धब्बे सफेद पृष्ठ पर धुल से गये हों।

विशेष–1. इसमें अल्सेशियन लूसी के संघर्ष का अनुमानित वर्णन किया गया है। कुत्तों की घ्राणशक्ति सम्बंधी लेखिका के ज्ञान का परिचय मिलता है।

2. अंतिम पंक्तियों में चित्रात्मक उत्प्रेक्षा अलंकार है।

नोट

नोट्स कुत्ते अपनी घ्राणशक्ति से लकड़बग्घे के आने की गंध शीतकाल में नहीं सूंघ पाते।

3

आकृति की विशेषता के साथ उसके बल और स्वभाव में भी विशेषता थी। ऊँची दीवार को भी वह एक छलाँग में पार कर लेता था। भले का स्वर इतना भारी, मन्द और गूँजनेवाला था कि रात्रि में उसका एक बार भौंकना भी वातावरण की स्तब्धता को कम्पित कर देता था। अन्य कुत्तों के समान खाने के लिए लालायित रहना, प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए पूँछ हिलाना, कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए चाटना, याचक के दीनभाव से स्वामी के पीछे-पीछे घूमना, अकारण भौंकना, काटना आदि प्रकृतिदत्त स्वान-गुणों का उसमें सर्वथा अभाव था।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण में लेखिका ने नीलू कुत्ते के चरित्र की विशेषताओं को उद्घाटित किया है जो साधारण कुत्तों से पूर्णतः भिन्न था।

व्याख्या—नीलू आकृति में अपने भूटिया पिता तथा अल्सेशियन माँ का मिश्रण होने के कारण विशिष्ट था। किंतु आकृति के साथ-साथ उसकी शक्ति में एवं स्वभाव में भी अन्य कुत्तों से भिन्न कुछ विशेषतायें थीं जो उसे असाधारण ठहराती थीं। उसके बल का वर्णन करती हुई लेखिका कहती हैं कि वह अन्य कुत्तों की भाँति दीवार पर चढ़ता नहीं था, अपितु एक छलांग में ऊँची दीवार को पार कर लेता था। उसके गले का स्वर भारी एवं मंद था किंतु उसके स्वर में ऐसी गूँज थी यदि रात्रि की नीरवता में वह एक बार भौंक दे तो वातावरण की स्तब्धता बिखर जाती थी। वह अन्य कुत्तों के समान दैत्य की भावना से पूर्णतः मुक्त था। सामान्यः कुत्ते किसी भी खाद्य वस्तु को देखकर उसे पाने के लिए लालायित रहते हैं तथा कुछ अंश पाने के बाद या तो प्रसन्नतापूर्वक अपनी पूँछ हिलाते हैं या फिर कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए स्वामी को चाटते हैं। वे भिखारी की भाँति दैन्ययुक्त होकर अपने स्वामी के पीछे-पीछे घूमते रहते हैं। ऐसे किसी भी श्वान-सुलभ निम्नकोटि के गुण का नीलू में अभाव था। वह अकारण भौंकने वाले कुत्तों में से नहीं था। उसमें हिंसक प्रवृति का भी अभाव था इसी कारण वह किसी को काटता भी नहीं था। उसकी ये विशेषतायें उसे साधारण कुत्तों से भिन्न, अपूर्ण एवं असाधारण बना देती थी।

विशेष—1. रेखाचित्र में वर्णित पात्र के चरित्र की उन विशेषताओं का वर्णन किया जाता है जो सामान्य से विशिष्ट हों इस में नीलू कुत्ते के स्वभाव की ऐसी ही असाधारण विशेषताओं को लेखिका ने दर्शाया है।

2. शैली में वर्णनात्मकता है। वातावरण की स्तब्धता को कम्पित करने में बिंबात्मकता है।

4

जीवन के समान उसकी मृत्यु भी दैत्य से रहित थी 'कुत्ते की मौत मरना' कहावत है, परंतु यदि नीलू के समान शांत निर्लिप्त भाव से कोई मृत्यु का सामना कर सके, तो ऐसी मृत्यु मनुष्य को भी काम्य होगी।

मेरे पास अनेक जीव-जन्तु हैं, परंतु जिसके बुरा मान जाने की मुझे चिन्ता हो, ऐसा अब कोई नहीं है।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण में नीलू के विशिष्ट जीवन और उसकी शांत मृत्यु का वर्णन करते हुए महादेवी उसके प्रति अपना स्नेह प्रदर्शित करती हैं।

व्याख्या—नीलू ने अपना सम्पूर्ण जीवन श्वान-सुलभ दीनता से रहित होकर तथा एक असाधारण दर्प एवं स्वाभिमान के साथ बिताया। वह हिंसक प्रवृति से रहित असहाय जीवों का संरक्षक भी था। उसने दर्प एवं गौरव के साथ अपना जीवन बिताया और किसी साधक की भाँति अंत समय में जीवन के हर मोह से विरक्त होकर शांत भाव के साथ

नोट

मृत्यु का वरण भी किया। महादेवी कहती हैं कि 'कुत्ते की मौत मरना' एक कहावत है। मनुष्य अत्यन्त पीड़ा और यातना के साथ अपमान सहता हुआ मरता है, तो उसे कुत्ते की मौत मरना कहा जाता है। किंतु नीलू मृत्यु के समय जिस शांत और निर्लिप्त भाव से रहा, उसे देखकर तो यही इच्छा होती है कि नीलू कुत्ते की भाँति ही हम भी शांत एवं विरक्त भाव से मृत्यु को स्वीकार कर पायें। नीलू की मृत्यु के पश्चात् महादेवी कहती हैं कि यद्यपि उन्होंने अनेक जीव-जन्तु पाल रखे हैं, किंतु नीलू जिस प्रकार झिड़क दिये जाने पर बुरा मान जाता था और महादेवी के बहुत मनाने के बाद ही मानता था, ऐसे किसी के रूठ जाने की चिंता महादेवी को नीलू के बाद अब नहीं है।

विशेष–1. महादेवी नीलू के जीवन और मरण दोनों की विशेषताओं को व्यक्त करते हुए उसे असाधारण बनाती हैं। अंत में अपने स्नेह के द्वारा भी उसे अपने पालित अन्य जीव-जन्तुओं से विशिष्ट बता देती हैं।

2. 'कुत्ते की मौत मरना' कहावत की व्यंजना द्वारा महादेवी ने नीलू की मृत्यु को और भी असाधारण एवं प्रभावी बना दिया है।

5.1.6 निक्की, रोजी और रानी

1

बाल्यकाल की स्मृतियों में अनुभूति की वैसी ही स्थिति रहती है, जैसी भीगे वस्त्र में जल की। वह प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देता किन्तु वस्त्र के शीतल स्पर्श में उसकी उपस्थिति व्यक्त होती रहती है। इन स्मृतियों में और भी विचित्रता है। समय के माप से वे जितनी दूर होती जाती हैं, आत्मीयता के परिमाण में उतनी ही निकट आती जाती है।

प्रसंग–प्रस्तुत गद्यांश 'निक्की रोजी और रानी' रेखाचित्र से उद्धत है। रेखाचित्र के आरंभ के इस अंश में लेखिका ने बाल्यकाल की स्मृतियों का महत्व अंकित करते हुए उस समय की अनुभूतियों में आत्मीयता का अधिक संस्पर्श दिखाया है।

व्याख्या–बाल्यकाल में किसी बालक के जीवन में जो कुछ घटित होता है वह उसके बाल-मस्तिक पर एक गहन-स्मृति के रूप में अंकित होता है। उस समय के अनुभव और अनुभूतियाँ उसके मन-मस्तिष्क पर गहरे अंकित हो जाते हैं जिन्हें वह जीवन-पर्यन्त विस्मृत नहीं कर पाता। इन स्मृतियों में जो अनुभूतियाँ तीव्रता से जुड़ी हैं उन्हें वह जब वयस्क होकर भी याद करता है तो स्मृतियों के साथ उस समय की अनुभूतियाँ भी उसके मानस पटल पर उभर कर उसे हिलाने लगती हैं। बाल्यकाल की इन स्मृतियों में उनसे जुड़ी अनुभूतियों की स्थिति ऐसी ही होती है जैसे पानी से भीगे वस्त्रों में जल विद्यमान रहता है यद्यपि भींगे कपड़े में जल दिखाई नहीं देता तथापि जब वस्त्र को स्पर्श किया जाये तो उसकी शीतलता इस बात का आभास कराती है कि भींगे वस्त्र में जल उपस्थित है। इसी प्रकार बाल्यकाल की स्मृतियों में भी अनुभूति का यह तत्व इतनी तीव्रता से घुल मिल जाता है कि हम उसे अलग से तो अनुभव नहीं कर पाते किंतु जब ये स्मृतियाँ हमारे मानस पटल पर पुनरांकित होती हैं इन अनुभूतियों का स्पर्श भी हृदय को स्वयं मिलने लगता है। ये स्मृतियाँ एक ओर कारण से भी विचित्र हैं। वयस्क होने पर कोई तत्कालीन स्मृति समय के अंतराल में भूलती सी चली जाती है। किंतु बाल्यकाल की स्मृतियाँ अपनी इसी स्थिति में विचित्र भी है और विशिष्ट भी कि समय का अंतराल जितना अधिक बढ़ता जाता है, उनके प्रति हमारी आत्मीयता उतनी ही बढ़ती जाती है।

विशेष–1. बाल्यकाल की स्मृतियों की गहनता का महादेवी ने संक्षिप्त शब्दों में भी गहन विवेचन कर दिया है।

2. बाल्यकाल की स्मृतियों की अनुभूति की स्थिति की तुलना महादेवी ने भींगे वस्त्र में जल की स्थिति से की है। यह उपमा अत्यंत गहन एवं भावस्पर्शी बन पड़ी है।

3. यहां भावात्मक विचार वर्णन के साथ-साथ आलंकारिकता होने से गद्य की निबंध-शैली प्रयुक्त हुई है।

नोट

2

हमें बेचारे नकुल शिशु से बड़ी सहानुभूति हुई। छोटे-से-बिल में रात-दिन पड़े माता-पिता के सामने बैठे रहने में जो कष्ट बच्चे को हो सकता है, उसका हम अनुमान कर सकते थे। यदि एक छोटे कमरे में हमें सामने बैठाकर बाबूजी रात-दिन पढ़ाते रहें और माँ सिलाई-बुनाई में लगी रहें, तो हमारा क्या हाल होगा। ऐसी ही कोई अप्रिय स्थिति बिल में रही होगी, नहीं तो यह इतना छोटा बच्चा भागता ही क्यों! अतः नकुल शिशु के बिल और बिल-निवासी माता-पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गये और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे।

प्रसंग–उपर्युक्त अवतरण के पूर्व प्रसंग में बाल्यकाल में महादेवी और उनके सहोदरों को क्रीड़ा करते हुए नेवले को एक शिशु प्राप्त हुआ जिसे वे अपनी माँ के पास ले गये। माँ ने उस नन्हें जीव को वापस उसके बिल में रख आने का आदेश बच्चों को दिया। उस समय की अपनी बाल मानसिता तथा कल्पना के ढंग का वर्णन लेखिका इस अंश में करती है–

व्याख्या–जब माँ ने उस नकुल शिशु को उसके माता-पिता के पास छोड़ आने का आदेश दिया तो महादेवी और उनके सहोदर उस बच्चे की दीन दशा पर अत्यंत सहानुभूति से विचार करने लगे। वास्तव में यह छोटा-सा नेवले का बच्चा एक छोटे से बिल में दिन रात अपने माता-पिता के सामने उसके कठोर अनुशासन में बंधकर बैठा रहता होगा तो सचमुच इसे कितना कष्ट होता होगा। वे स्वयं उसके दुःख से आत्मीयता प्रकट करते हुए अपने बारे में कल्पना करने लगे कि मानो यदि किसी छोटे कमरे में हम बच्चों को अपने सामने बिठाकर दिन रात बाबूजी पढ़ाते रहें और मां प्यार करने के स्थान पर सिलाई बुनाई के कार्य में व्यस्त रहे, तो हमें कितना कष्टपूर्ण जीवन जीना पड़ेगा। ऐसा ही कष्टपूर्ण जीवन इसने भी अपने माता-पिता के कारण झेला होगा तभी यह इतना छोटा होकर भी अपने घर से निकल भागा। यदि स्थिति असहनीय नहीं होती तो यह बेचारा भी क्यों भागता। अंततः बच्चे उस नन्हें नेवले के माता-पिता तथा उसके घर को ढूंढ़ने के लिए अनिच्छापूर्वक गये क्योंकि मां का आदेश था। जब उन्हें नकुल-शिशु का बिल एवं माता-पिता नहीं मिले तो इस असफलता से ये बालकगण निराश न होकर प्रसन्न हो गये क्योंकि नेवले के रूप में उन्हें एक साथी और मिल गया था।

विशेष–1. इस अवतरण में लेखिका ने अपने बाल्यकाल की स्मृतियों को तो उभारा ही है, बाल मनोविज्ञान का भी सफल निदर्शन कर पाई है।

2. वर्णन में अबोध विचारात्मकता के कारण कोमल हास्य का समावेश हुआ है जो मर्मस्पर्शी भी है, अतः यहां कथात्मकशैली प्रयुक्त हुई है।

3. भाषा बाल-विचारों के अनुरूप भावाहिनी एवं सरल है।

3

उस समय हमारे परिवार में छोटी लड़कियों की वेशभूषा में गोटे-पट्टे से सजा गरारा, कुर्त्ता और दुपट्टा विशेष महत्त्व रखता था, जिसमें वे मध्यकालीन बेगमों के लघु संस्करण जान पड़ती थीं। कभी-कभी प्रगतिशीलता का प्रमाण देने के लिए उन्हें फ्रॉक भी पहनाये जाते थे, जिसके कॉलर, लेस, झालर आदि के घटाटोप में वे क्वीन विक्टोरिया की संगनियों का भ्रम उत्पन्न करके मानो पूर्व-पश्चिम दोनों का प्रतिनिधित्व करती थीं। हमारे जूते तक पूर्व पश्चिम में विभाजित थे। पूर्व के वेश के साथ हल्की और जरी के काम वाली जूतियाँ पहनकर हम घिसटते हुए चलते और पश्चिमीय वेश के साथ घुटने के ऊपर तक काले या सफेद मोजे चढ़ाकर ऊँची एँड़ीवाले और तस्मे से कसे-बँधे जूते पहनकर डगमगाते हुए चलते थे। हमारे मन और पैर दोनों ही इस संचरण पद्धति से विद्रोह करते थे, क्योंकि वह न हमें करौंदे की झाड़ियाँ लाँघने देती और न दौड़ने।

नोट

प्रसंग–प्रस्तुत उद्धरण में लेखिका ने अपने बाल्यकाल में समाज की मानसिकता एवं तदनुरूप वेशभूषा का संक्षिप्त निदर्शन किया है।

व्याख्या–महादेवी अपने बाल्यकाल की वेशभूषा की विशेषताओं के बारे में बताते हुए कहती हैं कि जब वे छोटी थीं तब उनके परिवार में छोटी-छोटी लड़कियों को गोटे एवं चमकीले पट्टे से सजा गरारा, कुर्ता एवं दुपट्टा पहनाये जाते थे। यह वेशभूषा धनी परिवारों में आभिजान्य की सूचक होती थी। इस वेशभूषा ें वे छोटी-छोटी लड़कियां मध्यकाल की बेगमों का छोटा रूप दिखाई पड़ती थी। महादेवी के बाल्यकाल में भारत पर अंग्रेजों का शासन था। भारतीय स्वयं को प्रगतिशील दिखाने के लिए अंग्रेजों की वेशभूषा को धारण करने लगे। अपने घर में भी इसी मानसिकता का परिचय देती हुई महादेवी लिखती हैं कि कभी-कभी उन्हें ऐसे फ्रॉक भी पहनाये जाते थे जिनमें कॉलर तथा लैस की झालरे होती थी जिससे वे इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया की संगीनियां प्रतीत होती थी। इन दोनों वेशभूषाओं को ग्रहण करके ये लड़कियां मानो पूर्व और पश्चिम की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती थीं। उन्हें जूते भी ऐसी ही वेशभूषा के अनुरूप पहनने पड़ते थे। पूर्व की वेशभूषा अर्थात् गरारे दुपट्टे के साथ छोटी हल्की तथा ज़री की सुनहरी सज्जा वाली जूतियां पहननी पड़ती थी जिससे बाल्यकाल में तीव्रगति से भागने के स्थान पर उन्हें घसीट के चलना पड़ता था। औ पश्चिम की झालरदार फ्रॉक के साथ घुटनों से ऊपर तक काले या सफेद मोजे पहन कर ऊँची एड़ी वाले एवं तस्मों से कसकर बांधे गये जूते पहनने पड़ते थे जिन्हें पहनकर वे डगमगाकर चलती थीं। इन दोनों ही प्रकार के जूतों में महादेवी स्वच्छंदता से घूमने-फिरने में स्वयं को असमर्थ महसूस करती थीं क्योंकि इन जूतों के कारण वे न तो उछल कर करौंदे की झाड़ियां लाँघ पाती थीं और न ही तीव्र गति से दौड़ने पाती थीं। अत: वह हृदय से इस वेशभूषा को पसंद नहीं करती थीं।

विशेष–1. इस अंश में तत्कालीन समाज की मानसिकता तथा तथाकथित प्रगतिशीलता का चित्रण हुआ है।

2. वर्णन में चित्रात्मकता है। मध्यकालीन बेगमों का लघु संस्करण एवं क्वीन विक्टोरिया की संगिनियों का भ्रम उत्पन्न करने में बिंबात्मकता है।

3. भाषा में परोक्ष व्यंग्यात्मकता निहित है।

4

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का अधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को टट्टूओं या सफेद गधों (जिनकी जाति के सम्बंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्द्धन किया था।) पर घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दण्ड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे पर बैठने का दण्ड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ यह वाहन नहीं है।

प्रसंग–प्रस्तुत अवतरण में महादेवी अपने बाल्यकाल में इंदौर के तत्कालीन वातावरण का तथा उस वातावरण के बच्चों पर प्रभाव का अंकन करती हैं।

व्याख्या–एक रियासत होने के कारण इंदौर में घोड़ों को रखना शान की बात मानी जाती थी। इसी कारण इंदौर में शानदार घोड़े और उनके सवार यत्र-तत्र दिखाई देते थे। अंग्रेजों के बच्चे उन दिनों छोटे घोड़ों पर अथवा सफेद घोड़ों पर घूमते थे। रामा ने सफेद घोड़ों की नस्ल के बारे में बच्चों की जिज्ञासा को यह कहकर शांत किया था कि ये घोड़े नहीं वस्तुत: सफेद गधे हैं। बच्चों के बालमानस पर गधे के संबंध में एक और चित्र अंकित था कि रामा जो कहानियां सुनाता है, उनके अनुसार तो राजा जब अपराधियों को दण्ड देता है तो उन्हें गधे पर चढ़ाकर उन्हें देश निकाला दे देता है। जब ये अंग्रेजों के बच्चो इतनी प्रसन्नता के साथ गधे पर बैठकर घूमते हैं तो यह संभव नहीं जान पड़ता कि इन्हें राजा ने गधे पर चढ़ाकर देश निकाले का दण्ड दिया है। रामा बच्चों की प्रत्येक बाल जिज्ञासा

को शांत करना जानता था। उसके अनुसार विलायत में गधे नहीं होते इसलिए उन बच्चों को दण्ड भुगतने के लिए भारत भेजकर गधे पर चढ़ाया गया है।

विशेष—1. इस अंश में बाल्यकाल की उत्सुकता एवं जिज्ञासा मुखर होकर व्यक्त हुई है। यह जिज्ञासा किसी भी भाँति अपना समाधान चाहती है और रामा इन बच्चों को किसी भी भाँति शांत करने में कुशल था।

2. इस अंश में कथात्मक शैली है जिसमें तत्कालीन सामाजिक स्थिति के वर्णन के साथ बालसुलभ रोचक एवं हास्ययुक्त जिज्ञासाओं का भी अंकन बिना किसी लागलपेट के किया गया।

5

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में बसी जैसी है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग, जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी, काली, स्वच्छ और पारदर्शी जैसी आँखें। लाल नथुने जिन्हें फुला-फुलाकर वह चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी होठोंवाला लम्बा मुँह, जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक थी। सुडौल, मज़बूत पैर और सघन पूँछ, जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोर-छल के समान उठती-गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की वृद्धि नहीं थी, परन्तु इतने दीर्घ काल के उपरांत भी स्मृतिपट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती हैं, जैसे किसी अदृश्य स्याही में लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत अवतरण में महादेवी ने अपनी बाल्यकाल की स्मृतियों के आधार पर रानी घोड़ी की चरित्र की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उसके बाह्य रूप-रंग को अंकित किया है।

व्याख्या—बचपन में बच्चों की घुड़सवारी के लिए जो घोड़ी पाली गई थी वह इतनी सुंदर थी कि सौंदर्य की स्मृति आज तक भी उनके मनोमस्तिष्क में समाई हुई है। उसकी सुंदर आकृति, रूप रंग को वे वयस्क होकर भी नहीं भूल पाई हैं। चाकलेटी वर्ण की चमकदार होने के कारण आकर्षक प्रतीत होती थी जिस पर दृष्टि टिकते-टिकते रह जाती थी। उसके छोटे कान सजग खड़े रहते थे जिनके बीच में उसके माथे पर अयाल का गुच्छा झूलता रहता था जो उसके आकर्षण को अधिक बढ़ा देता था। उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी काले रंग वाली स्वच्छ और पारदर्शी आँखें थी जो आर्कषक होने के साथ स्नेह की तरलता का परिचय भी देती थी। उसके नथूने लाल रंग के थे जिन्हें फुला-फुलाकर अपने आस-पास के वातावरण की गंध ग्रहण करती थी। उसके दाँत श्वेत वर्ण थे, ओंठ गुलाबी थे जिसमें लाल जीभ की झलक बार-बार मिलती थी। गुलाबी ओठों के आकर्षण वाला उसका मुँख लम्बा था जिसे लोहा चबाने पर भी किसी प्रकार की क्षति अथवा घाव नहीं पहुँचता था। जितनी रानी घोड़ी की ऊँचाई थी उसके अनुपात में उसकी पीठ अधिक चौड़ी थी। उसके पैर अत्यन्त सुडौल और शक्तिशाली थे। उसकी पूँछ में घने बाल थे जिससे वह मक्खियाँ उड़ाया करती थी। पूँछ से मक्खियाँ उड़ाते हुए ऐसा प्रतीत होता था मानों मोर पंखों के चंवर गिरकर उसे हवा कर रहे हों। रानी के इस सुंदर रूप और गुणों को यद्यपि महादेवी अपने बाल्यकाल में कदाचित् नहीं समझ पाई, किन्तु इसका रूप और गुण इतना प्रभावपूर्ण था कि महादेवी उसकी स्मृति को कभी नहीं भुला पाई। किन्तु अब वयस्क होने के बाद महादेवी के मानस में वे स्मृतियाँ इतनी गहन हैं और इतनी तीव्रता से उसके रूप-सौंदर्य की स्मृतियाँ उभर आती हैं मानों किसी कागज पर किसी ने अदृश्य स्याही से कुछ अक्षर लिखे हों और वे अग्नि का ताप पाकर प्रखर हो उठे हों।

विशेष—1. इस अंश में महादेवी का रानी घोड़ी के प्रति अत्यधिक स्नेह प्रकट हुआ है जो बाल्यकाल की स्मृतियों का आधार लेकर विस्तृत होता चला गया है।

नोट

2. रानी के चरित्र-अंकन में चित्रात्मकता का सौंदर्य उभर पड़ा है। साथ ही महादेवी का उससे घनिष्ट रागात्मक सम्बंध भी व्यक्त हुआ है।

3. अन्त में प्रयुक्त उत्प्रेक्षा स्मृति के संदर्भ में अत्यन्त मार्मिक बन पड़ी है।

4. भाषा में आलंकारिकता के सौंदर्य के कारण वह कलात्मक एवं मर्मस्पर्शिनी भी हो उठी है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. नीलू महादेवी जी के हिरणी का नाम रोज़ी था।
8. कुत्ते अपनी घृणाशक्ति से लकड़बघे के आने की गंध नहीं पा सकते।
9. बाल्यकाल में किसी बालक के जीवन में जो कुछ घटित होता है वह उसके बाल-मस्तिक पर एक गहन-स्मृति के रूप में अंकित होता है।

5.2 सारांश (Summary)

- मनुष्य प्रकृति के जीवन की ऊर्जा से परिपूर्ण इस सुन्दर दृश्य को जो अपनी गत्यात्मकता में ही ही उभरता है, निष्क्रिय गतिहीन एवं जड़ बनाने का कार्य कैसे करता है? इन सुन्दर गतिशील निरीह प्राणियों का असमय जीवनांत करके प्रकृति के सौंदर्य को नष्ट करने से वह किस भाँति मनोरंजन प्राप्त करता है? यह सोचकर दु:ख और आश्चर्य होता है।
- मानव सृष्टिकर्ता की सर्वोत्तम कृति है किन्तु स्वयं सर्वोत्तम होने पर भी सृष्टि के अन्य प्राणवान रूप के प्रति इतना घृणा से पूर्ण और प्रेम से रहित कैसे है। जीवन के अन्य रूपों के प्रति घृणा एवं मृत्यु के प्रति मानव के हृदय में मोह और आकर्षण कैसे है।
- हिरण स्नेह की भावना को ही पहचानता है। जिसकी स्वीकृति वह अपनी विशिष्ट क्रियाओं जैसे खुशी में कुलांचे भरना आदि से प्रकट करता हुआ मानो मानव-स्नेह का प्रतिदान देता है।
- इन प्राणियों का वध करके ग्राहकों को खाद्य-व्यंजनों की संख्या बढ़ाने के लिए बेचना होता है। करुणामयी, ममतामयी महादेवी ऐसे उपयोगितावादी पशु पालन को सहन नहीं कर पातीं और उनका हृदय इससे विद्रोह कर उठता है। इसी कारण वे चिड़ियावाले से कई पक्षी खरीद लाती हैं क्योंकि इनके हिंसक उपयोग की कल्पना भी उनके लिए असहनीय है।
- बच्चे उस नन्हें नेवले के माता-पिता तथा उसके घर को ढूंढ़ने के लिए अनिच्छापूर्वक गये क्योंकि मां का आदेश था। जब उन्हें नकुल-शिशु का बिल एवं माता-पिता नहीं मिले तो इस असफलता से ये बालकगण निराश न होकर प्रसन्न हो गये क्योंकि नेवले के रूप में उन्हें एक साथी और मिल गया था।

5.3 शब्द कोश (Keywords)

काकभुशुण्डि : कौवा

अवधि : समय

अहंकार : घमंड करना

नोट

5.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. इस पाठ में महादेवी वर्मा ने मानव की किस निष्ठुरता तथा कठोरता का वर्णन किया है?
2. दुर्मुख खरगोश के चरित्र का वर्णन कीजिए।
3. गौरा गाय की मृत्यु के प्रति लेखिका की करूण संवेदना का वर्णन कीजिए।

उत्तर: स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. व्यवहार	2. वध	3. महादेवी
4. (*b*)	5. (*d*)	6. (*d*)
7. गलत	8. गलत	9. सही

5.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. मेरा परिवार (महादेवी वर्मा) लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

नोट

इकाई–6: मेरा परिवार : महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)
प्रस्तावना (Introduction)
6.1 महादेवी वर्मा का सर्जनात्मक गद्य परिचय:
6.1.1 महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय
6.1.2 अतीत के चलचित्र
6.1.3 स्मृति की रेखाएँ
6.1.4 पथ के साथी
6.1.5 मेरा परिवार
6.2 सारांश (Summary)
6.3 शब्दकोश (Keywords)
6.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)
6.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय जानने हेतु।
- गद्य-लेखिका के रूप में महादेवी जी की सफलता को जानने में।
- महादेवी जी को संस्मरणात्मक रेखाचित्र का पहला संग्रह जानने हेतु।
- महादेवी जी के पशु प्रेम उनके ममत्व, करूणा एवं प्राणी-मात्र लिए स्नेह-संवेदना जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

महादेवी वर्मा छायावाद युग की महान कवयित्री तो हैं ही, उन्होंने इस युग में गद्य-लेखन की विविध विधाओं में उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय देकर इन विधाओं को समृद्ध किया है। उनके द्वारा रचित 'शृंखला की कड़ियाँ', 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध', 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'क्षणदा' आदि गद्य-कृतियाँ इस युग के चिरस्मरणीय गद्य पंथ हैं। महादेवी वर्मा मूलत: कवयित्री हैं–छायावादी कवयित्री जो

तीव्र संवेदनाओं के आवेग में मर्मस्पर्शी काव्य-रचना करके हृदयानुभूतियों की प्रबल प्रतिष्ठा करती हैं। काव्य-रचनाओं में वैचारिकता का पक्ष दुर्बल रहता है। इसके विपरीत गद्य-रचनाओं में वैचारिकता का पक्ष दुर्बल रहता है इसके विपरीत गद्य-रचनाओं में वैचारिकता का पक्ष दुर्बल रहता है इसके विपरीत गद्य-रचनाओं में वैचारिकता का आश्रय लेकर हृदय तत्व को गौण स्थान दिया जाता है। वैचारिकता का निर्वाह करने के कारण गद्य-लेखक को पद्यकार की अपेक्षा अधिक सावधानी, संयम और संतुलन से काम लेना पड़ता है। गद्य-लेखिका के रूप में महादेवी जी की सफलता का यही रहस्य है कि वे कवित्व-संवेदनाओं को संतुलित करते हुए गद्य-लेखन के समय आंतरिक चिंतन के माध्यम से विभिन्न बौद्धिक समस्याओं के समाधान, विकल्प एवं विवेचन प्रस्तुत कर पाती हैं। इसी कारण उनके गद्य-साहित्य में भाव और विचार, बुद्धि और हृदय, संकल्प और विकल्प आदि का सामंजस्य मिलता है और कहीं भी गरिष्ठता, क्लिष्टता एवं उबाऊपन का दोष उत्पन्न नहीं होता।

6.1 महादेवी वर्मा का सर्जनात्मक गद्य-परिचय

6.1.1 महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय

महादेवी का गद्य-साहित्य तीन रूपों में निःसृत हुआ है। प्रथम विवेचनात्मक गद्य जिसमें वे चिंतन-मनन, विचार-विश्लेषण और परीक्षण-मूल्यांकन करती हैं। इसके अन्तर्गत उनके द्वारा लिखी गई काव्य-संग्रह की भूमिकाएँ, निबंध-संग्रह 'साहित्यकार की आस्था और अन्य निबंध' एवं 'क्षणदा' आते हैं। द्वितीय विचारात्मक गद्य जो उनकी यथार्थ-प्रेरित प्रखर वैचारिक चेतना को उभारते हैं। इसके अंतर्गत 'शृंखला की कड़ियाँ' शीर्षक निबंध-संग्रह में आता है। इस कृति में महादेवी जी ने नारी को केन्द्र में रखकर सामाजिक जीवन के वैषम्य को अंकित किया है। भारतीय नारी के प्रति अपार सहानुभूति व्यक्त करते हुए वे उस सामाजिक व्यवस्था के प्रति क्षोभ और आक्रोश व्यक्त करती हैं जो नारी व्यक्तित्व को निष्प्राण और जड़ बनाना चाहती है। इस कृति के माध्यम से महादेवी वर्मा ने न केवल भारतीय नारी का उद्‌बोधन दासता की शृंखला की कड़ियों को काटने के लिए किया है वरन् उसे सामाजिक विकास में पुरुष की सक्रिय सहयोगिनी बनने के लिए भी प्रेरित किया है।

महादेवी जी की गद्य-रचना का तृतीय स्वरूप संवेदनशील स्मृति-चित्र अथवा रेखा-चित्र हैं जिनका विकास 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार' में हुआ है। प्रायः आलोचकों का मानना है कि आधुनिक हिन्दी गद्य-साहित्य में छायावादी गद्य की उपलब्धियों का महत्त्व असाधारण है, किंतु सर्जनात्मक गद्य की दृष्टि से छायावाद की अधिकांश रचनाएँ बहुत सशक्त नहीं मानी जा सकतीं। किंतु जब हम महादेवी वर्मा के रेखचित्रों को देखते हैं तो वे इस मान्यता का अपवाद जान पड़ते हैं। हिन्दी गद्य की समृद्धि की दिशा में महादेवी के इस विशिष्ट चित्र-विधान का विशेष योगदान है। 'गद्य की काव्यात्मकता' का गुण महादेवी के रेखाचित्रों में अत्यंत विकसित रूप में दिखाई देता है। आलोचक-विद्वान रामदेव शुक्ल के शब्दों में—"यदि रेखाचित्रों का फॉर्म जो महादेवी के लेखन ने बनाया है, भारतीय उपन्यास को मिल जाता तो अपनी जातीय पहचान के अनुरूप कोई विधा अवश्य विकसित हो जाती। स्पष्टतः इनके रेखाचित्रों में हमारे संस्कार, स्मृतियाँ, समय, जीवन और मृत्यु का बोध शामिल है।"

महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य के वस्तु-विधान अथवा संवदेना-पक्ष पर दृष्टिपात करें तो उनका विद्रोही स्वर अत्यंत मुखरित होता दृष्टिगत होता है। अत्यंत दरिद्र, उपेक्षित, अछूत और कठोर परिश्रम से किसी तरह जीविका के नाम पर एक सूखी रोटी अर्जित कर पाने वालों से लेकर वंचिता, विधवा या परित्यक्ता नारियाँ तथा मनुष्य की क्रूरता के शिकार पशु-पक्षी तक महादेवी के गद्य-साहित्य का विषय बने हैं। वस्तुतः महादेवी के समस्त कृतित्व का बीज भाव करुणा है जो कविता में यदि अश्रु रूप में बहा है तो गद्य में क्षोभ बनकर आक्रोश एवं व्यंग्य के रूप में प्रस्फुटित हुआ है। जीवन के रूप एवं सौंदर्य में सामंजस्य प्राप्त करने की भावना के मूल में भी यही करुणा है।

नोट

किंतु यह करुणा विवश बन्ध्या करुणा नहीं है जो क्षुधा-पीड़ित अथवा अत्याचार से मृत्यु शैया तक पहुंचे किसी प्राणी के दु:ख पर अश्रु-विमोचन करके एवं दो करुण शब्द लिखकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेती है। वे दुखी प्राणियों के उद्धार के लिए समाज की अवहेलना करके स्वयं उन्हें अपनाती हैं तथा उनके जीवन को जीने योग्य बनाने के प्रयास करती हैं।

क्या आप जानते हैं अपने गद्य-साहित्य में महादेवी जी जिन उत्पीड़ित जनों के मध्य पहुंचती हैं वे प्राय: देहाती क्षेत्र के हैं। गांव के निर्धन कृषकों के झोंपड़ों, कच्चे घरों, मिट्टी के बर्तन, पारम्परिक किंतु सीमित गहने-कपड़े, भरपूर मेहनत और निरंतर अभावयुक्त जीवन को अपना विषय बनाकर महादेवी वर्मा ने युगानुरूप नवीन यथार्थवादी सौंदर्य दृष्टि का परिचय दिया है। जनजीवन की झाँकी प्रस्तुत करने के साथ-साथ उन्होंने ग्रामीण परिवेश एवं लोगों के रहन-सहन को भी यथार्थ रूप में रेखांकित किया है।

एक स्थल पर गंगा पार भूसी के खंडहर तथा आस-पास के गांवों का चित्र उन्होंने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है–"दूर-पास बसे हुए, गुड़ियों के बड़े-बड़े घरौंदों के समान लगने वाले कुछ लिपे-पुते, कुछ जीर्ण-शीर्ण घरों से स्त्रियों का झुंड पीतल-तांबे के चमचमाते मिट्टी के नए लाल पुराने भदरंग घड़े लेकर गंगा जल भरने आता है, उसे में पहचान गयी हूँ। उनमें कोई बूरेदार लाल, कोई कुछ सफेद और कोई मैल और सूल में अद्वैत स्थापित करने वाली, कोई कुछ नई और कोई छेदों से छलनी बनी हुई धोती पहने रहती है।" ग्राम्य जीवन के बाह्य रूप के साथ-साथ उसके आंतरिक स्वरूप को महादेवी वर्मा उनके यथार्थ रूप में ही अभिव्यक्ति देती हैं। उनके रेखाचित्रों के अधिकांश चरित्र परिवार के अन्त:संघर्ष के मध्य चित्रित हुए हैं। इस अन्त:संघर्ष में पितृसत्तात्मक समाज के अमानवीय बंधनों को महादेवी तिलभर भी घटाकर प्रस्तुत नहीं करतीं। 'मुन्नू की माई' रेखाचित्र में इस समाज की निरंकुशता इन शब्दों में व्यक्त हुई है–"जीना दो दिन का है, मरने की कोई सीमा नहीं। यदि दो दिन मिट्टी के बिल जैसे घर में रहकर, घिसी चक्की में चना, जौ पीसकर और रेंड़ के धुएँ से धुआंई रोटी ससुर और उसके निठल्ले लड़के को खिलाकर, वह मरने के उपरांत स्वर्ग की रानी होने का अधिकार प्राप्त कर लेती है, तो वही लाभ में रही...।"

विविधरूपा युगजीवन के यथार्थ को अपने साहित्य में समेटने के साथ-साथ चिंतन अथवा विवेचना के धरातल पर महादेवी वर्मा ने साहित्य की समसामयिक प्रवृत्तियों अर्थात् प्रगतिशीलता, यथार्थवाद, गीतिकाव्य, छायावाद और विविध शास्त्रीय समस्याओं यथा काव्य और कला तथा अन्य आध्यात्मिक व दार्शनिक चिंतनों जैसे विज्ञान, जीवन, संघर्ष, आनंद, प्रत्यक्ष, परोक्ष आदि से संबद्ध प्रश्नों पर विचार-विमर्श किया है। यहाँ उनकी तथ्यान्वेषिणी प्रवृत्ति कवि की अन्त: प्रतीति के साथ लोक-जीवन का स्पर्श करती है। वे जीवन की मार्मिक अनुभूति के कारण संवेदना और रसात्मक अभिव्यंजना द्वारा अपने दुरूह विषय को भी प्रेषणीय बना देती है। युग के प्रति एक असह्य वेदना, एक व्यापक प्रतिक्रिया और विकल मानसिक अशान्ति की अभिव्यक्ति जो काव्य में नहीं हो सकी थी, उसके लिए महादेवी जी गद्य का आश्रय लेकर पुन: अवतरित होती हैं।

महादेवी वर्मा का गद्य-सृजन विषय-वस्तु एवं भाव-सम्पदा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण तो है ही, शिल्प और संरचना की दृष्टि से भी रचनाकर्त्री की प्रायोगिक प्रवृत्ति का परिचायक है। उनके गद्य-चित्र विषय-वस्तुओं के बहुरंगी चित्र हैं जो विषम स्थिति का तीक्ष्य अनुभव कराते हैं और अपने अभिव्यक्ति-कौशल एवं भाव-भंगिमा द्वारा नूतन शिल्प की सृष्टि करते हैं।

भाषा की दृष्टि से महादेवी वर्मा गद्य में भावानुकूला समक्ष भाषा का निर्माण करती हैं। हास्यपूर्ण प्रसंगों में उनका प्रत्येक शब्द क्रीड़ायुक्त हैं। 'भक्तिन' के कर्मकांड और दिनचर्या के वर्णन में सरस शब्दावली प्रयुक्त हुई है तो संवदेना की अभिव्यक्ति में वही शब्द अन्त:क्रंदन करते से प्रतीत होते हैं। उनके गद्य की शब्दिक प्रकृति

तत्सम-प्रधान है। इसीलिए वे 'बछड़ा' के स्थान पर 'वत्स' का प्रयोग करती हैं। 'चंवर' की जगह 'चामर', 'रोयां' के स्थान पर 'रोम' और गर्मी की छुट्टियों के लिए 'ग्रीष्मावकाश' का प्रयोग करना उन्होंने अधिक उचित समझा है। उनकी समास-रचना भी संस्कृत पद्धति की है। 'तुषारद्युति', 'अरण्यरोदन', 'कंकालशेयाम', 'क्षेपकों', 'विच्छिन्नता-जनित', 'ईषत्-लक्ष्य', 'पार्श्वभूमि', 'कुलावतस', 'स्मृत्यावर्तन', 'दुग्ध-चूर्ण', 'स्वजातिशून्य', 'दुग्ध दोहन' जैसे शब्द प्रयोग अपनी तत्सम प्रवृत्ति के कारण उनकी छायावादी काव्य-शब्दावली का स्मरण करते हैं। संस्कृत के साथ-साथ महादेवी अंग्रेजी के आवश्यक उपयोगी और उचित शब्दों का प्रयोग बेहिचक करती हैं। उन्होंने 'स्प्रिंगदार', 'ज़ू', 'स्टूल', 'ड्रामा', 'ऑपरेशन', 'फोटो', 'एन्लार्जमेंट', 'सप्लाई', 'डेड लेटर', 'ऑफिस', 'क्ले मॉडल' आदि अनेक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग सटीक एवं व्यावहारिक भावाभिव्यक्ति के लिए किया है। इन गद्य-कृतियों में ग्रामीण एवं देशज शब्द भी सहज रूप में उपस्थित हुए हैं। 'चौपाल', 'ओसारा', 'खटिया', 'खटोला', 'दुलरुआ', 'लबार', 'बकुचा', 'गदनदा', 'पहलौठी', 'उगराना', 'पेरना', 'कण्डा', 'मचिया', 'कक्का' आदि ग्रामीण शब्द अपने ठेठ रूप में महादेवी के गद्य-साहित्य की शब्द-सम्पदा को समृद्ध करते हैं।

गद्य-साहित्य में शिल्पकला की दृष्टि से सबसे आकर्षक एवं उत्कृष्ट उपादान उपमान-विधान की सहायता से महादेवी वर्मा द्वारा कल्पना-चित्रों की बहुरंगी रचना है। उनकी बड़ी विशेषता चित्राधार और चित्ररचना का पूर्ण सामंजस्य है। महादेवी किसी भी व्यक्ति, वस्तुस्थिति, गति, मन-स्थिति को अलग-अलग या संश्लिष्ट रूप में चित्रित करते हुए उसके ठीक समानांतर उचित उपमान-विधान के द्वारा जो अनुभूति प्रेरित कल्पना-चित्र उकेरती हैं, वह उपमेय को उसकी समग्रता और संश्लिष्टता में साकार ही नहीं करता, उसे रेखांकित करता भी चलता है। इस प्रकार महादेवी ने उपमा, रूपक, निदर्शना, उदाहरण और उत्प्रेक्षा जैसे अलंकारों के माध्यम से अपने चित्र-विधान को सुसज्जित किया है। उनका अलंकार-विधान कथ्य को गद्य में सार्थक बनाने में भी अत्यन्त सहायक सिद्ध हुआ है। यथा—महादेवी के नौकर 'रामा' की सफेद हथेली सांप के पेट जैसी है, उसकी उंगलियाँ पेड़ की टेढ़ी-मेढ़ी गांठदार टहनियों जैसी। इसी प्रकार उनकी कल्पना विस्मृति को पानी की काई के समान देखती है, तो समाधि जैसे घर में बंद मारवाड़ी की विधवा बहू लोहे के प्राचीर से घिरे फूल के समान प्रतीत होती है। सोना हिरनी का शरीर सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गांठ के समान और गौरा गाय का नवजात वत्स गेरू के पुतले जैसा दिखाई पड़ता है। 'गोधूली' को देखकर वे कल्पना करती हैं कि संध्या के लाल सुनहरी आभा वाले उड़ते हुए दुकूल-पर रात्रि ने मानो छिपकर अंजन की मूठ चला दी है। संध्या के धुंधलके में दूर से आता हुआ घीसा उन्हें बादामी कागज पर काले चित्र के समान प्रतीत होता है और परदे को हटाकर कमरे में प्रवेश करती हुई स्त्री परदे की पार्श्व भूमि पर एक रंगीन चित्र का आभास देती है। इस प्रकार अलंकार-विधान के माध्यम से वे सहज-सुलभ चित्रों की स्वाभाविक रचना कर लेती है।

महादेवी की कल्पना अपने काव्य की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए उचित संदर्भों की खोज में ऐतिहासिक अतीत के पृष्ठ उलटती हुई प्रायः रामायण, महाभारत, पुराण, बौद्ध साहित्य एवं लौकिक संस्कृत की श्रेष्ठ काव्य-कृतियों से पात्रों एवं घटनाओं का चयन करती हैं। यत्र-तत्र शुक्राचार्य, विश्वकर्मा, मय दानव, मनु, संजय, धृतराष्ट्र, भीष्म, कृष्ण, द्रोणाचार्य, दुर्मुख, दुर्वासा, कण्व, शकुन्तला, तपस्यारत शूद्र, एकलव्य आदि पात्र महादेवी के पात्र-चरित्रों की विशेषताओं के लिए उपयुक्त उपमान बन पाए हैं जहाँ महादेवी के पात्र बहुत हल्के या छोटे हैं। वहाँ पुराणों के भारी-भरकम पात्रों के मेल में उनकी उपस्थिति स्वयं हास्य की सृष्टि में सहायक हुई है। इस प्रकार पौराणिक संदर्भों से भी महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य को विशिष्ट महिमा प्राप्त हुई है।

चित्रभाषा पद्धति को सभी छायावादी कवियों ने अपनी रचनाओं में उत्कृष्टता प्रदान की है किन्तु गद्य में चित्र-विधान की दृष्टि से महादेवी का योगदान अप्रतिम है। काव्य में अप्रस्तुत को अलंकार के माध्यम से एक शब्द में रखकर प्रस्तुत का चित्र खींचना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य है, किन्तु गद्य में यही कार्य कठिन और दुष्कर है जिसे महादेवी वर्मा ने बड़ी सहजता और कुशलता के साथ अपने गद्य-साहित्य में कर दिखाया है। उदाहरणतः काशी-प्रयाग

नोट

में स्नान करके और घाटों के पास सैकड़ों की संख्या में बिछे हुए भिक्षार्थियों के कपड़ों पर छोटे-से-छोटा सिक्का या एकाध मुट्ठी अन्न फेंककर पुण्य लूटने वालों के लिए महादेवी 'पुण्य अहेरी' का प्रयोग करती हैं। इसी प्रकार वे निराला के संस्मरण में 'घटा भरी अश्रुमुखी पूर्णिमा' और लपटों में साँस लेने वाली दोपहरी के चित्र उपस्थित करती हैं जिसमें प्रकृति के मूर्तन की शक्ति जिस रूप में है उसी रूप में निराला के आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व को प्रकाशित करने की भी।

इस प्रकार महादेवी वर्मा का सर्जनात्मक गद्य और उसमें सहज रूप में आया हुआ चित्र-विधान हिन्दी गद्य को गद्य की काव्यात्मकता और जातीय स्मृति के अनुकूल 'फॉर्म' के अनुरूप अभिव्यक्ति क्षमता दोनों प्रदान करने में सफल हुआ है। महादेवी की चित्ररचना की सबसे बड़ी विशेषता संभवतः यह है कि अपने रचाव में वैयक्तिक होते हुए भी ये चित्र पूरी आधुनिक समाज व्यवस्था और उसकी मानसिकता के समक्ष प्रश्न बनकर उपस्थित हैं।

महादेवी जी का गद्य-साहित्य उनके काव्य साहित्य की भाँति विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण है। उनका गद्य अलंकृत होकर भी सहज, वक्र होकर भी सरल है। उसकी वक्रता और आलंकारिता वक्तव्य और कथ्य को अधिक संवेदनीय बनाने में योगदान देती है। उनके चिंतनमूलक गद्य में भी एक अपूर्व संतुलन दिखाई देता है। शिल्प का प्रत्येक उपादान नपा-तुला, व्यंजक एवं प्रभावपूर्ण रूप में प्रयुक्त हुआ है। गद्य-लेखन में वे अपने कवित्व को छिपाने के प्रयास नहीं करतीं। उनके विचारों में अध्ययन के साथ-साथ अनुभूति-प्रवणता भी शामिल है। उनके विचारात्मक गद्य में रागात्मक औदात्य एवं गरिमा है तथा स्मृति संदर्भों की रेखाओं में हृदय को आर्द्र कर देने वाली तरलता है। अपने गद्य-साहित्य में भी वे काव्य-रचना की भाँति 'स्व' से 'पर' की ओर ऊर्ध्वगमन करके अधिक व्यापक भाव-भूमि की प्रतिष्ठा करती है तथा विश्व की अनेकरूपता के अनुकूल अपनी अभिव्यक्ति को विविधा बनाकर हृदयस्पर्शी कर देती हैं। उनके गद्य-साहित्य ने कथ्य और शिल्प दोनों ही स्तर पर विचार एवं भावों का संतुलित समन्वय करके आधुनिक युग की गद्य-विधाओं को समृद्ध किया है तथा प्रयोग के स्तर पर आगामी गद्य-लेखकों के लिए नवीन आयाम उद्घाटित किए हैं।

टास्क महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय विस्तार के साथ दीजिए।

महादेवी वर्मा अपने कवि रूप में व्यक्ति प्रधान हैं। उनके छायावादी गीतिकाव्य में प्रकृति के विराट सौंदर्य, जड़ में चेतन के स्पन्दन का अनुभव है, चेतन के यथार्थ रूप जनजीवन का इसमें अभाव है। वर्तमान समाज में व्याप्त दुख, दीनता, वैषम्य और उत्पीड़न की झलक उनकी काव्य रचनाओं में नहीं मिलती। इसके विपरीत महादेवी के रेखाचित्रों में समाज के प्रति आकर्षण, सामाजिक यथार्थ का पूर्ण आविर्भाव है। उनकी कविता में जो कला व्यक्ति-प्रधान थी, रेखाचित्रों में समाज-प्रधान हो गई है। जन जीवन में व्याप्त दुःख, दैन्य और उत्पीड़न के चित्रों को उन्होंने शब्दों की रेखाओं द्वारा चित्रित किया है। इन रेखाचित्रों में उनकी अनुभूति काव्य की प्रणयानुभूति की परिधि से बाहर आकर मातृत्व की ममता, बहन का स्नेह एवं नारीत्व की विविध अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करती है। महादेवी वर्मा की रचनाओं में जनजीवन और समाज का वास्तविक प्रतिबिंब इन्हीं रेखाचित्रों में ही मिलता है, इसलिए ये विशिष्ट हो जाते हैं।

इन रेखाचित्रों की विशिष्टता का कारण यह भी है कि इनका संबंध स्वयं लेखिका के जीवन से है। इन पात्रों की अवस्थिति लेखिका की जीवन-कथा से जुड़ी हुई है। 'अतीत के चलचित्र' की भूमिका में उन्होंने लिखा है।

"इन स्मृति चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है। यह स्वाभाविक थी था। अंधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश की धुंधली या उजली परिधि में लाकर ही देख पाते हैं, उसके बाहर तो वे अनन्त अंधकार के अंश हैं। मेरे जीवन की परिधि के भीतर खड़े होकर चरित्र जैसा परिचय दे जाते हैं, वह बाहर रूपान्तरित हो जायेगा।"

नोट

आत्मप्रकाशन अथवा स्वजीवन से जुड़े संदर्भों से ये रेखाचित्र अधिक यथार्थ एवं भाव-समन्वित हो उठे हैं। महादेवी वर्मा के रेखाचित्र संग्रह 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'पथ के साथी' और 'मेरा परिवार' प्रकाशित हो चुके हैं। इन सभी संग्रहों का विषय एवं शिल्प की दृष्टि से हिन्दी गद्य साहित्य में अन्यतम स्थान है। परिचयात्मक दृष्टि से इनका उल्लेख नीचे किया है।

6.1.2 अतीत के चलचित्र

यह महादेवी जी के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का पहला संग्रह है। इसमें रेखाचित्रों के साथ संस्मरण के गुण भी विद्यमान हैं। इस संग्रह में ग्यारह शब्दचित्र हैं। जिनमें दीन-हीन पीड़ित, विवश, परित्यक्त, समाज से प्रताड़ित पात्रों की जीवन गाथाएँ हैं। इन शब्दचित्रों में चार चित्र नायक प्रधान हैं—रामा, घीसा, अलोपी एवं बदलू। तथा शेष सभी सात रेखाचित्रों में, नारी की व्यथा को चित्रांकित किया गया है।

इस संग्रह का पहला रेखाचित्र एक श्रमजीवी नौकर रामा से संबंधित है, जो बालपन में घर से भाग जाता है तथा लेखिका के घर में बाल्यकाल से प्रौढ़ावस्था तक कार्य करता है। दूसरे रेखाचित्र में बाल-विधवा भाभी का चित्रण है जो परिवार के अत्याचार एवं उपेक्षापूर्ण रूढ़िवादी वातावरण में मूक रहकर घुटती हुई अपना जीवन बिताने को विवश है। तीसरे रेखाचित्र में विमाता के दुर्व्यवहार से पीड़ित एक निरीह बालिका का यथार्थ चित्र है। चौथा रेखाचित्र दलित समाज की कर्मठ नारी सबिया से संबंधित है जो अशिक्षित और पीड़ित होते हुए भी उत्सर्ग की महान भावना से अनुप्राणित है। पाँचवां शब्दचित्र एक बालविधवा का है जो 30 वर्षीय वृद्ध की पत्नी बनती है और कुछ वर्ष पश्चात् पुन: वैधव्य को प्राप्त होती है। छठे रेखाचित्र में एक ऐसी बाल विधवा की करुण कहानी है जो 18 वर्ष की वय में कामुक पुरुष की वासना का शिकार बनकर असमय संतान की माँ बनती है। सातवां रेखाचित्र घीसा जैसे एक नन्हे अबोध एवं भावुक बालक से संबंधित है। आठवां रेखाचित्र एक वेश्या-पुत्री की करुण कहानी है जिसने समाज का विरोध कर किसी की पत्नी बनने का साहस किया और समाज की अवहेलना एवं पति की मृत्यु के बावजूद वेश्या बनना स्वीकार नहीं किया। नवां रेखाचित्र अंधे अलोपी की करुणामय गाथा है। अंधा किन्तु कर्तव्यपरायण, पुरुषार्थी एवं परिश्रमी अलोपी निम्नवर्ग का होकर भी असाधारण है। दसवां रेखाचित्र कुम्हार दम्पति बदलू और रधिया से संबंधित है। ग्यारहवां रेखाचित्र कर्मठ पहाड़ी महिला लखया का है जो हंसी में आँसुओं को छुपाए रहती है।

इस संग्रह में समाज के विभिन्न पक्षों को लेखिका ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जहाँ एक ओर ग्रामीण नौकरों के गुणदोषों का विवेचन है वहीं दूसरी ओर विमाताओं के दुर्व्यवहार तथा सामाजिक रूढ़ियों से प्रताड़ित निरीह बालिकाओं एवं बाल-विधवाओं के जीवन के करुण चित्र हैं। हृदयहीन स्वार्थी समाज के अत्याचारों की चक्की में पिसते, तिल-तिलकर जीवन को समाप्त कर देने वाले पात्रों की मूक गाथा है। समाज के इस निरंकुश अत्याचारी रूप के प्रति महादेवी वर्मा का हृदय आक्रोश एवं विद्रोह से भर उठता है—"यदि स्त्रियाँ अपने शिशु को गोद में लेकर साहस से कह सकें कि बर्बरों! तुमने हमारा नारीत्व, पत्नीत्व सब ले लिया, पर हम अपना मातृत्व किसी प्रकार न देंगी, तो इनकी समस्याएँ तुरंत सुलझ जाएं"। सहानुभूति एवं करुणा तुच्छ को भी अमर बना सकती है, इसका प्रमाण इस संग्रह से मिलता है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. महादेवी जी का गद्य-साहित्य ········ रूपों में नि:सृत हुआ है।
2. भाषा की दृष्टि से महादेवी जी गद्य में भावानुकूल ········ का निर्माण करती है।
3. अतीत के चलचित्र महादेवी जी के संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का ········ संग्रह है।

नोट

6.1.3 स्मृति की रेखाएँ

यह महादेवी वर्मा का द्वितीय संग्रह है। इसमें संस्मरणात्मक शैली में लिखे गए सात रेखाचित्र हैं जिनमें महादेवी का चित्रकार, पर्यटक प्रधानाध्यापिका आदि रूप उभरकर आए हैं। ग्राम निवासियों की सरलता, भावुकता और उनका भोलापन, सादगी चित्रित करना ही इन रेखाचित्रों का उद्देश्य है।

'स्मृति की रेखाएँ' संग्रह में पहला रेखाचित्र एक देहाती वृद्ध महिला का है जो अशिक्षा एवं अज्ञान के अंधकार से जन्में कुछ दुर्गुणों के साथ अनेक ऐसे मानवीय गुण रखती है जो उसके व्यक्तित्व को असाधारण बना देते हैं। द्वितीय रेखाचित्र एक चीनी फेरी वाले का है जो स्वदेश छोड़कर अपनी खोई हुई बहन को खोजने के लिए कपड़े की फेरी लगाता है। यह रेखाचित्र चीनी वाले की अश्रुसिक्त करुण व्यथा तथा लेखिका के प्रति उसके अगाध स्नेह एवं विश्वास की सुंदर अभिव्यक्ति है।

तीसरा रेखाचित्र दो पहाड़ी कुलियों जंग बहादुर और धनसिंह से संबंधित है जो अत्यंत निर्धन होने पर भी मानवीयता के गुण से ओतप्रोत हैं। चतुर्थ रेखाचित्र ब्राह्मण परिवार की परिश्रमी कुलवधु-मुन्नू की माई का चित्र है जो अपने निठल्ले श्वसुर और पति की सेवा में जी-जान से लगी रहती है। पाँचवां रेखाचित्र यद्यपि कल्पवासी ठकुरी बाबा से संबंधित है तथापि इस रेखाचित्र की परिधि में अन्य छोटे-छोटे रेखाचित्र भी आत्मसात हो गए हैं जो ग्रामीणों के अपनत्व और स्नेह के साथ उनके कठिन जीवन का परिचय देते हैं। छठे रेखाचित्र में लेखिका ने पुरुष समाज द्वारा तिरस्कृत नारी के रूप में बिबिया नाम की धोबिन की करुण कहानी प्रस्तुत की है। अंतिम रेखाचित्र उस गूंगी नारी का है जिसने समाज के समक्ष नारी होने की विवशता को सहा तथा ममत्व की साक्षात् मूर्ति बनी।

भारतीय जीवन के समाज-प्रताड़ित, शोषित, अशिक्षित, दीन-हीन किन्तु सरल पात्रों के सजीव चित्र 'स्मृति की रेखाएँ' में प्राप्त होते हैं। इसमें विमाता का दुर्व्यवहार 'अनमेल विवाह' के दुष्परिणाम तथा कुव्यसनों में फंसे पति के व्यवहार से प्रताड़ित नारियों के मार्मिक चित्र हैं। इन सभी पात्रों में दुःखवाद की प्रधानता है। इन करुणात्मक रेखाचित्रों पर टिप्पणी करते हुए हंस (मई, 1944) में प्रसिद्ध आलोचक अमृतराज जी ने लिखा था–"उन्होंने अधिकांश में उन व्यक्तियों के संस्मरण दिए हैं जो बिना कान-पूँछ हिलाए गऊ के समान सब अत्याचार सहन कर लेते हैं।"

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. स्मृति की रेखाएँ महादेवी जी का कौन-सा संग्रह है?
   (*a*) प्रथम (*b*) द्वितीय
   (*c*) तृतीय (*d*) चतुर्थ
5. भारतीय समाज-प्रताड़ित, शोषित, अशिक्षित, दीन-हीन किन्तु सरल पात्रों के सजीव चित्र किसमें प्राप्त होते हैं?
   (*a*) विस्मृति की रेखाएँ (*b*) विकृत की रेखाएँ
   (*c*) स्मृति की रेखाएँ (*d*) या इनमें से कोई नहीं।
6. "उन्होंने अधिकांश में उन व्यक्तियों के संस्मरण दिए हैं जो बिना कान-पूँछ हिलाए गऊ के समान सब अत्याचार सहन कर लेते हैं।" किस प्रसिद्ध आलोचक ने लिखा है?
   (*a*) अमनराज (*b*) ऋषिराज
   (*c*) अमृतराज (*d*) रविराज

6.1.4 पथ के साथी

नोट

यह महादेवी वर्मा का तीसरा संग्रह है जिसमें इन्होंने 'रेखाएँ' शीर्षक से अपने समकालीन साहित्यकारों के रेखाचित्र प्रस्तुत किए हैं। प्रारंभ में 'प्रणाम' शीर्षक के अन्तर्गत रवीन्द्रनाथ टैगोर का काव्यात्मक भाषा में रचित रेखाचित्र है। प्रथम रेखाचित्र राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व को उभारता है जिसमें उनकी कर्मनिष्ठा, संवेदनशीलता, स्पष्टवादिता, सरलता आदि गुणों को अभिव्यक्ति दी गई है। द्वितीय रेखाचित्र सुभद्राकुमारी चौहान का है। वात्सल्यमयी कवयित्री की ममता, स्नेह एवं आत्मीयता का रेखांकन इस चित्र में बड़ी कुशलता से हुआ है। तृतीय रेखाचित्र में निराला, उनकी उदारता, दानवृत्ति, अतिथिप्रेम विशेष रूप से व्यक्त किया गया है। इनका संपूर्ण रेखाचित्र निर्धनता के परिवेश में है। प्रसाद का रेखाचित्र प्रसाद की प्रतिभा और उनके अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व का मिश्रण है जिसमें एकाध हास्ययुक्त प्रसंगों का समायोजन भी किया गया है। सुमित्रानंदन पंत के बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व की रेखाएँ पंत जी के रेखाचित्र में स्पष्ट उभरी हैं। उनकी सुकुमारता की अभिव्यक्ति महादेवी ने काव्यात्मक शब्दों में की है। छठा रेखाचित्र सियारामशरण गुप्त का है जिसमें उन्होंने गुप्तजी को जीवन संघर्ष एवं सत्यान्वेषण में रत दिखाया है।

इन रेखाचित्रों में संस्मरणात्मक शैली में इन समकालीनों के जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं तथा उनके स्वभाव का रेखांकन किया गया है। रेखाचित्र शिल्प की सीमा के कारण इन विभूतियों की विविधरूपा पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में इन रेखाचित्रों को लेखिका प्रस्तुत नहीं कर पाई हैं। तथापि साहित्यिक वर्ग के इन विशिष्ट व्यक्तित्वों से घनिष्ठता होने के कारण महादेवी ने इन पात्रों के आंतरिक गुणों का खुलकर प्रकाशन किया है। बाह्य आकार-प्रकार, उनमें लक्षित होने वाली आंतरिक चेतना, इस चेतना के भीतर कारण रूप में विद्यमान जीवन संघर्ष और इन संघर्षो की प्रतिक्रिया में उभरने वाले मानसिक प्रभाव ये सब शब्दचित्रों में साकार हो उठे हैं। अपने समकालीनों के व्यक्तित्व को उभारने के लिए महादेवी ने जो समानांतर उपमान की कल्पना की है वह अपने प्रभाव में अनुपम है। निराला के व्यक्तित्व की व्यंजना वे इन शब्दों में करती हैं–"वे उस झंझा के समान हैं जो हल्की वस्तुओं के साथ भारी वस्तुओं को भी उड़ा ले जाती है।" वस्तुतः लेखिका की दृष्टि के आलोक में उनके पथ-साथियों की जो प्रतिमाएँ रेखाचित्रित हुई हैं, वे अपने दिव्यत्व, पूर्णत्व एवं औदात्य में अद्वितीय होने के साथ यथार्थ भी हैं। उन्होंने इन रेखाचित्रों में अपने भावुक हृदय के स्पर्श से एक विचित्र माधुर्य भर दिया है। उनकी शैली में हास्य, व्यंग्य का चुटीलापन एवं सूक्ति शैली की गंभीरता का सुंदर मिश्रण उपलब्ध होता है।

6.1.5 मेरा परिवार

पिछले तीन रेखाचित्र संग्रहों में महादेवी वर्मा ने मानव-जीवन के विभिन्न पक्षों, उसके चारित्रिक गुणों, अवगुणों के विभिन्न चित्र एकत्रित किए थे। महादेवी वर्मा का यह रेखाचित्र-संग्रह पशु-पक्षी की मूक संवेदना को उनकी दृष्टि, उनकी क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं के जरिए समझने एवं समझाने का प्रयास इस संग्रह में स्मृति-संदर्भों के सहारे जिनकी कथा अंकित की गई है, वे हैं–नीलकंठ (मोर), गिल्लू (गिलहरी), सोना (हिरनी), दुर्मुख (खरगोश), गौरा (गाय), नील (कुत्ता) और निक्की (नेवला), रोजी (कुतिया) और रानी (घोड़ी)। इन सभी प्राणियों की जीवन-कथा मर्मस्पर्शी करुण कथा है। महादेवी वर्मा की सहानुभूति और करुणा मानव-जगत की परिधि को तोड़कर पशु-पक्षियों तक प्रसारित होती है। इसी कारण ये पशु-पक्षी उनके परिवार के अंग बन गए हैं जिन्हें महादेवी का मातृ-स्नेह प्राप्त हुआ है। पशु-पक्षियों से प्रेम हमारी कृषिजीवी जातीय संस्कृति का ही एक अंग है। महादेवी वर्मा का पशु प्रेम उनके ममत्व, करुणा एवं प्राणी-मात्र के लिए स्नेह-संवेदना से एकाकार होकर इन रेखाचित्रों में साकार हो गया है। मानव की तुलना में पशु-पक्षियों का स्नेह कितना गहन, निस्वार्थ एवं प्रबल होता है, इसका ज्ञान 'मेरा परिवार' रेखाचित्र संग्रह से होता है। इस संग्रह के रेखाचित्रों का विस्तार में विवेचन बाद के पृष्ठों में किया गया है।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र की कला एक पद्धति के रूप में प्रयुक्त होती है। वे सबसे पहले प्रथम परिचय के नाटकीय संदर्भ को उपस्थित करते हुए रेखाचित्रित होने वाले पात्र की रूप-रेखा तथा उससे व्यंजित होने वाली उसकी मनोवृत्ति का चित्रण करती हैं। इसके बाद उसके जीवनवृत्त और स्वभाव में कारण-कार्य संबंध स्थापित करते हुए उसकी

नोट

आवश्यक जीवन कथा कहती हैं। इसी क्रम में उस पात्र की वर्गगत या परिवेशगत स्थिति का अंकन करती हैं और अपनी स्थिति से उसकी दूरी का उल्लेख करते हुए उसके द्वारा स्वयं पर पड़े प्रभावों का चित्रण करती है। अपने को यथा संभव तटस्थ करती हुई वे उसके गुण-दोषों का विवेचन करती हैं और समाज द्वारा उसके प्रति किए गए उचित-अनुचित व्यवहार का मूल्यांकन करते हुए उसके प्रति अपने व्यवहार और संबंध का विश्लेषण करती हैं। अंत में उस पात्र के जीवन की किसी अविस्मरणीय मार्मिक कथा या अपने स्मृतिपट पर अंकित उसकी किसी विशिष्ट भंगिमा या उसके व्यक्तित्व की किसी अन्यतम विशेषता का उल्लेख करके उससे इस प्रकार अलग होती हैं मानो अपने शरीर के ही किसी सहजात अंग से अलग हो रही हो। स्मृति चित्रों को अंकित करने वाली वर्तुल शब्द-रेखा का यह अंत अत्यन्त करुण और सजल होता है। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की सबसे बड़ी विशेषता संभवतः यह है कि अपने रचाव में वैयक्तिक होते हुए भी ये चित्र पूरी आधुनिक समाज-व्यवस्था और उसकी मानसिकता के समक्ष प्रश्न बनकर उपस्थित है।

नोट्स महादेवी अपने रेखाचित्रों में स्थूल एवं सूक्ष्म दोनों तत्वों का सतर्क निरीक्षण एवं संगठन करके मूक अनुभूतियों को भी शब्द दे डालती हैं।

महादेवी जी अपने हरेक पात्र का आंतरिक एवं बाह्य निरूपण, उसका कल्पनायुक्त रूपांकन और उनकी मानसिक ग्रंथियों का उद्घाटन करने में सक्षम सिद्ध हुई हैं। इन रेखाचित्रों में पात्रों की एकरूप जीवनघटना, दिनचर्या, परिवेश और आकृतिपूर्ण नाटकीयता, गतिशीलता और यथार्थ संवेदना के साथ अभिव्यक्ति हुई है। दीर्घ काव्यात्मक एवं ललित रूपकों में रचना-कौशल का आभास होता है–'पथ के साथी' में महादेवी की कवित्वपूर्ण उद्भावनाएँ अत्यन्त सुंदर बन पड़ी हैं यह वर्णन साकार एवं सजीव हो उठा है। 'कपड़े की शिकन जैसी चीनी की नाक' कथन चित्र को साक्षात् कर देता है।

इस प्रकार महादेवी ने अपने रेखाचित्रों में विविध भावों एवं विचारों का समन्वय करके उनके शिल्प में काव्यात्मकता, आलंकारिकता का सौन्दर्य गढ़कर हिन्दी रेखाचित्र-विधा को नवीन स्वरूप प्रदान किया है। उनकी गद्य गरिमा ने हिन्दी के गद्य युग को अपनी अनमोल वाग्विभूति से समृद्ध किया है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. पथ के साथी महादेवी का पाँचवां संग्रह है।
8. महादेवी वर्मा के रेखाचित्र की कला एक पद्धति के रूप में प्रयुक्त होती है।
9. महादेवी वर्मा की गद्य गरिमा ने हिन्दी के गद्य युग को अनमोल वाग्विभूति से समृद्ध किया है।

6.2 सारांश (Summary)

- इस कृति के माध्यम से महादेवी वर्मा ने न केवल भारतीय नारी का उद्बोधन दासता की शृंखला की कड़ियों को काटने के लिए किया है वरन् उसे सामाजिक विकास में पुरुष की सक्रिय सहयोगिनी बनने के लिए भी प्रेरित किया है।
- ग्राम्य जीवन के बाह्य रूप के साथ-साथ उसके आंतरिक स्वरूप को महादेवी वर्मा उनके यथार्थ रूप में ही अभिव्यक्ति देती हैं। उनके रेखाचित्रों के अधिकांश चरित्र परिवार के अन्तःसंघर्ष के मध्य चित्रित हुए हैं।

नोट

- जहाँ महादेवी के पात्र बहुत हल्के या छोटे हैं। वहाँ पुराणों के भारी-भरकम पात्रों के मेल में उनकी उपस्थिति स्वयं हास्य की सृष्टि में सहायक हुई है। इस प्रकार पौराणिक संदर्भों से भी महादेवी वर्मा के गद्य-साहित्य को विशिष्ट महिमा प्राप्त हुई है।

6.3 शब्दकोश (Keywords)

निष्प्राण : जिसमें प्राण न हो

भिक्षार्थी : भीख माँगने वाला

करूणात्मक : दुख से भरा हुआ

6.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. महादेवी का गद्य-साहित्य किन तीन रूपामें में निःसृत हुआ है और क्यों हुआ है।
2. महादेवी जी की रेखाचित्रों की विशिष्टता तथा इसका संबंध लेखिका के जीवन से है इन पात्रों की अवस्थिति लेखिका की जीवन-कथा से कैसे जुड़ी हुई है?
3. महादेवी जी के रेखाचित्रों की सबसे बड़ी विशेषता संभवत: क्या है?

उत्तर: स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. तीन	2. सक्षम भाषा	3. पहला
4. गलत	5. सही	6. सही
7. (*b*)	8. (*c*)	9. (*c*)

6.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. मेरा परिवार (महादेवी वर्मा) लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

नोट

इकाई–7: मेरा परिवार : कथावस्तु

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

7.1 मेरा परिवार पाठ की कथावस्तु

7.1.1 नीलकंठ

7.1.2 गिल्लू

7.1.3 सोना हिरनी

7.1.4 दुर्मुख खरगोश

7.1.5 गौरा गाय

7.1.6 नीलू कुत्ता

7.1.7 निक्की, रोजी और रानी

7.2 सारांश (Summary)

7.3 शब्दकोश (Keywords)

7.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

7.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- इस पाठ की कथावस्तु जानने में।
- लेखिका के पशु-पक्षियों के प्रति सहृदय और करुणाशील वर्णन करने हेतु।
- लेखिका के मेरा परिवार की मुख्य विचारधारा को समझने हेतु।
- लेखिका द्वारा पशुओं के मार्मिकता का वर्णन जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

इस पाठ के अंतर्गत महादेवी वर्मा जी ने पक्षी और पशुओं के निश्चल प्रेम के प्रति मानव के निष्ठुरता चित्रण बड़े ही सरलता के साथ किया है। इस रेखाचित्र में लेखिका ने अपने घर में पाले हुए पालतू पशु-पक्षियों के अंत घटना तथा दुर्घटना का अक्षर लेकर किया है। इस पाठ में महादेवी ने निबंधात्मक शैली को अपनाया है। इसमें

नोट

इतिवृत्तात्मकता भी है और आलंकारिकता भी। इस रेखाचित्र में महादेवी ने विविध शैलियों के अपनाया है। रेखाचित्र की शैली का अनन्य गुण उसमें चित्रात्मकता का सौन्दर्य अथवा बिंबों की अवस्थिति हैं इस पाठ में महादेवी ने भाषा के सहज सरल रूप में तद्भव रूप शब्दों तथा वातावरत के अनुरूप विदेशी भाषा के शब्दों और वाक्यों का प्रयोग किया है। इस पाठ में महादेवी ने अपने घर में पाले हुए पशु-पक्षियों की जीवन तथा अंत से जुड़ी हुई समस्त घटनाओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया।

7.1 मेरा परिवार पाठ की कथावस्तु

7.1.1 नीलकंठ

परिचय: प्रस्तुत रेखाचित्र में एक ऐसे मोर का रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है जो बाह्य रूप से अत्यन्त सुंदर होने के साथ लेखिका के चिड़ियाघर के दूसरे प्राणियों के प्रति स्वेच्छा से संरक्षण का उत्तरदायित्व संभालता था। स्वजाति से इतर प्राणियों के प्रति यह उत्तरदायित्व और अपने प्राण देकर भी इसका निर्वाह करने की चेतना उसमें सहज भाव से आयी थी। किन्तु यह पक्षी इतना अधिक संवेदनशील था कि वह निश्छल प्रेम को ही स्वीकार कर पाता था; ईर्ष्या और द्वेष की भावनाओं को यह सह ही नहीं सकता था। लेखिका ने इसे तथा राधा मोरनी को शैशवावस्था में इलाहाबाद के नखास कोने में चिड़ियावाले से पाया था। लेखिका पशु-पक्षियों के प्रति सहृदय और करुणाशील होने के कारण बड़े मियां चिड़ियावाले की दुकान पर पिंजड़ों में बंद पक्षियों के कष्टों को किसी सीमा तक दूर करने का प्रयास करती थीं। ऐसे ही प्रयास में उन्होंने इन दोनों मोर शावकों को बड़े मियां से खरीद लिया और ये दोनों पक्षी महादेवी के पालित पशु-पक्षियों के समूह में शामिल हो गये।

बाह्य रूपरेखा: जब नीलकंठ शावक से पूर्ण मयूर के रूप में परिवर्तित होने लगा तो उसके सौन्दर्य में अपूर्व निखार आने लगा। "उसके सिर की कलगी और सघन ऊंची तथा चमकीली हो गयी। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गयी, गोल आँखों में इन्द्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लम्बी लील-रहित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछांहीं तरंगे उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में स्लेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूंछ लम्बी हुई और उसके पंखों पर चन्द्रिकाओं के इन्द्रधनुषी रंग उदीप्य हो उठे। रंगरहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गर्दन ऊंची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीचा कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौन्दर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है।" इन सुंदर शब्दों में लेखिका ने नीलकंठ का बाह्य रूपांकन किया है। नीलिमायुक्त गर्दन के सौन्दर्य को लक्षित करते हुए इस मोर का नामकरण 'नीलकंठ' किया गया।

मोरों की शैशवावस्था: बड़े मियां की दुकान से लाकर इन मोर शावकों को लेखिका ने अपने अध्ययन कक्ष में रखा। पिंजड़े से मुक्त ये शावक प्रसन्न होकर पहले लुकाछिपी खेलते रहे फिर इन्होंने रद्दी कागजों की टोकरी को अपना निवास स्थान बनाया। जब वे लेखिका के प्रति आश्वस्त हो गये तो उनसे हिलने-मिलने लगे। कुछ दिनों पश्चात् इनको जाली के बड़े घर में पहुँचाया गया जहाँ पर इनका परिचय अन्य जीव-जन्तुओं से हुआ। इनके आगमन से अन्य पशु-पक्षी विस्मित भी हुए और फिर धीरे-धीरे एक दूसरे के मित्र बन गये।

अन्य प्राणियों के संरक्षण की भावना: नीलकंठ ने बड़े होते ही स्वयं को लेखिका के चिड़ियाघर के निवासियों का सेनापति और संरक्षक मान लिया। वह उनको अपने अनुशासन के अन्तर्गत रखता था और जहाँ किसी ने गड़बड़ की वहीं उस पर तीखी चोंच का प्रहार करता था। यह दण्ड विधान उसने स्वयं ही निश्चित किया था। दण्ड के साथ वह अन्य जाति के जीवों में प्रेम-वितरण करने से भी नहीं चूकता था। मिट्टी में पंख फैलाकर वह बैठ जाता और छोटे-छोटे जीव उसकी लम्बी पूंछ और सघन पंख में छिपकर खेलते रहते। इतना ही नहीं, एक बार उसने एक खरगोश शिशु के प्राण भी बचाये जो सांप की पकड़ में आ गया था। उसकी सहज बुद्धि ने सहज बुद्धि से यह जान लिया कि सांप के फन पर प्रहार करने से खरगोश को भी क्षति पहुँच सकती है, इसलिए उसने सांप के फन के पास पंजों

नोट

से दबाकर चोंच से प्रहार करके उसे अधमरा कर दिया तथा भय-संतप्त शशक-शावक को अपने पंखों के नीचे किसी माँ की भांति उष्णता प्रदान की।

आह्लाद के क्षण: नीलकंठ को वर्षा ऋतु अत्यन्त प्रिय थी। मेघ के गर्जन की ताल पर वह तन्मय होकर नाचता एवं राधा उसकी सहयोगिनी बनती। मेघों के आगमन पर वह अपने पंखों को मंडलाकार बनाकर इस प्रकार नाचता जैसे कोई साधनारत नर्तक हो। मेघ की गर्जन और वर्षा की बूंदों की तीव्रता के साथ-साथ उसके नृत्य का भी वेग बढ़ता जाता। राधा मोरनी होने के कारण यद्यपि नीलकंठ के समान नृत्य नहीं कर पाती थी किन्तु वह उसके नृत्य में साथ देती हुई मानो उसकी परिक्रमा करती रहती थी। यह नृत्य केवल वर्षा तक ही सीमित नहीं था, अपनी पालिका लेखिका को प्रसन्न करने के लिए भी वह नृत्य की भंगिता में खड़ा हो जाता था। यहाँ तक कि इस नृत्य भंगिमा द्वारा उसने लेखिका के घर आये हुए अतिथियों को सम्मान भी दिया था। राधा उसकी सहयोगिनी ही नहीं, उसकी प्रेयसी और जीवन संगिनी भी थी। वसंत ऋतु में जब आम के वृक्ष पर मंजरियाँ आती थीं तो वह मुक्त विहार करने के लिए अधीर हो जाता था तथा इस मुक्त विहार के लिए राधा को भी यदि उसके साथ मुक्त न किया जाता तो वह रूठकर खड़ा हो जाता था।

आनंदमय जीवन में विघ्न का आगमन: नीलकंठ और राधा अन्य प्राणियों के साथ मिलकर प्रसन्नतापूर्वक जीवनयापन कर रहे थे कि उनके जीवन में कुब्जा नामक मोरनी के आगमन ने तुषारापात कर दिया। कुब्जा को भी लेखिका बड़े मियां चिड़ियावाले से ही खरीद लाई थी। इस मोरनी के दोनों पंजों की उंगलियाँ इस प्रकार टूट गई थी कि वह खड़ी नहीं हो पाती थी। महादेवी के देख-रेख ने उसे ठूंठ जैसे पंजों पर चलने लायक बनाया। कुब्जा नीलकंठ और राधा के शांत और स्नेही स्वभाव के पूर्णत: विपरीत थी। उससे नीलकंठ और राधा का एक साथ रहना सहन नहीं हो पाया। ईर्ष्यावश उसने चोंच मारकर राधा को घायल किया, इतना ही नहीं उसने राधा के अंड़ों को भी तोड़-फोड़कर सब तरफ छितरा दिया। वह नीलकंठ के साथ किसी और को नहीं देख पाती थी तथा नीलकंठ उससे दूर भागता था। कुब्जा की कलहप्रियता के कारण तीनों मोरों को अलग-अलग रखना पड़ा। राधा से अलग रहकर नीलकंठ की प्रसन्न्ता मानो खो ही गई। वह बार-बार इधर-उधर भागने और छिपने का प्रयास करता। अब उसके नृत्य में पूर्ववत आह्लाद और प्रसन्नता का आवेग शेष नहीं रह गये थे। राधा के वियोग और कुब्जा के ईर्ष्या और द्वेष पर झगड़ों ने उसके हृदय को विदीर्ण कर डाला।

नीलकंठ का अंत: इस अनवरत दु:ख को तीन-चार मास तक सहने के कारण नीलकंठ ने अंतत: प्राण त्याग दिये। उस संवेदनशील पक्षी की मृत्यु का कोई भी बाह्य कारण नहीं था अपितु उसके भीतर की ही व्यथा थी जो शूल की भांति उसके हृदय को भेद गई। लेखिका ने उसके मृत शरीर को गंगा की धारा में प्रवाहित कर दिया। कुब्जा उसको खोजने का प्रयास करते-करते एक दिन अपनी कलहप्रियता के कारण ही अपने प्राण गंवा बैठी किन्तु राधा सत्य ज्ञात न होने के कारण आजीवन उसकी प्रतीक्षा करती रही और मेघों के आच्छादन के समय वाणी को तीव्र कर करके उसको बुलाती रहती।

वास्तव में इन पक्षियों ने एक जाति का होकर भी लेखिका को विचित्र प्रवृत्तियों का परिचय दिया है जो कि मानवीय संवेदनाओं के निकट थीं।

7.1.2 गिल्लू

परिचय: गिल्लू एक गिलहरी का नन्हा-सा बच्चा था जो घोंसले से गिर पड़ा था। कौओं का आहार बनने से बचाने के लिए यह गमले और दीवार के बीच में जा छिपा था। कौओं की चोंच के घाव लगने के कारण उसका जीवित बचना कठिन था जिसे लेखिका ने कई घंटे के उपचार के पश्चात् बचाया। तीन दिन के पश्चात् वह स्वस्थ हो गया तथा लेखिका के स्नेह-भाव से भी परिचित हो गया। इसका नाम इस जाति गिलहरी के आधार पर गिल्लू रखा गया।

बाह्य रूपरेखा: उसका बाह्य रूप-रंग भी आकर्षक था। नन्हें शरीर पर स्निग्ध रोएं और धब्बेदार पूंछ थी। सबसे अधिक आकर्षक उसकी चमकीली-चंचल आँखे थीं। जो नीले कांच के मोतियों का आभास देती थीं।

नोट

रहन-सहन: नन्हें गिल्लू के लिए लेखिका ने फूल रखने की हल्की डलिया में रुई बिछा कर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। इस घर के भीतर वह हिल-हिलकर झूलता रहता। लेखिका से स्नेह हो जाने के कारण वह उनको आकर्षित करने के विभिन्न प्रयास करता रहता। भूख लगने पर वह चिक-चिक की ध्वनि द्वारा लेखिका को सूचित करता एवं काजू या बिस्कुट मिलने पर अपने पंजों से पकड़कर कुतर-कुतर कर खाता।

यौवनावस्था: जब गिल्लू युवा वय में आया तो वह अपनी प्रजाति के अन्य जन्तुओं के प्रति आकर्षित होने लगा। तब लेखिका ने उसे मुक्त कर दिया तथा कीलें निकाल कर खिड़की की जाली का एक कोना खोल दिया। गिल्लू मुक्त होकर आनन्दित तो हुआ किन्तु महादेवी का साथ वह अपने सहज सरल स्वभाव के कारण नहीं छोड़ पाया। महादेवी के कमरे से बाहर जाने पर वह भी खिड़की की खुली जाली से बाहर निकल जाता तथा अन्य गिलहरियों के साथ खेलता कूदता तथा शाम को ठीक चार बजे महादेवी के आते ही कमरे में वापस आ जाता। कभी वह उनसे खेलता और कभी उन्हें चौंकाने का प्रयास करता।

पालिका के प्रति स्नेह का अतिरेक: इस नन्हें से जीव में अपनी पालिका महादेवी के प्रति इतना अधिक प्रेम था कि वह उनकी थाली में खाना खाकर उनका अधिक स्नेह पाने का प्रयास करता। लेखिका की थाली के पास बैठकर वह चावल के दाने खाता रहता। एक बार जब लेखिका मोटर दुर्घटना में आहत हुई तो दु:ख के कारण उसने अपने प्रिय खाद्य पदार्थ काजू को भी नहीं खाया। महादेवी की रुग्णावस्था में वह उनके तकिये के सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उनका सिर सहलाता। गिल्लू को महादेवी की निकटता इतनी अधिक प्रिय थी कि वह गर्मी में उनके पास रखी सुराही पर लेट जाता जिससे वह लेखिका का सामीप्य भी पा लेता और गर्मी से भी बच जाता।

जीवन का अंत: दो वर्ष का जीवन बिताने के पश्चात् उसका अंत निकट आ पहुँचा। दिन भर वह लेखिका के ही निकट रहा, कुछ खाद्य भी ग्रहण नहीं किया, तथा लेखिका की उंगली से चिपक कर, उनका स्नेह-स्पर्श प्राप्त करते हुए उसने अपने प्राण त्याग दिये। सोनजुही की जिस लता के नीचे लेखिका को गिल्लू मिला था, और जो लता उसे भी अत्यन्त प्रिय थी, उसी के तले गिल्लू को समाधि दे दी गई।

इस नन्हें से मूक प्राणी ने महादेवी से केवल स्नेह प्राप्त ही नहीं किया वरन् नन्हें से शरीर में विशाल स्नेही हृदय होने का परिचय देकर लेखिका को भी उसका प्रतिदान दिया।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. नीलकंठ शावक से पूर्ण मयूर के रूप में परिवर्तित होने लगा तो उसके सौन्दर्य में ········ निखार आने लगा।
2. इस अनवरत दु:ख को ········ मास तक सहने के कारण नीलकंठ ने प्राण त्याग दिये।
3. गिल्लू एक ········ का नन्हा-सा बच्चा था जो घोंसले से गिर पड़ा था।

7.1.3 सोना हिरनी

परिचय: सोना को महादेवी ने किसी शिकारी परिवार से प्राप्त किया था। शिकारियों की निमर्म आखेट का शिकार हुई सोना की सद्य:प्रसूता हिरणी माँ ने अपने नव शिशु को बचाने के प्रयास में अपने प्राण दे दिये थे। शिकारी उस जीवित मृग-शिशु को उठा लाये तथा उसे महादेवी वर्मा को सौंप दिया। महादेवी वर्मा ने उसे दूध पिलाने की शीशी से बकरी का दूध बड़ी कठिनाई से पिलाकर उसका जीवन बचाया।

शैशवावस्था: सोना हिरनी जब महादेवी को प्राप्त हुई थी, तब उसका लघु शरीर सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गांठ के समान कोमल था। उसके छोटे-छोटे से मुख पर बड़ी-बड़ी चमकीली आँखें बिजली की क्षीण लहर का आभास देती थीं। जब उसने दूध की बोतल से दूध पीना आरंभ किया तो उसका उस बोतल से भी ऐसा स्नेह स्थापित हुआ मानो वह उसकी सजीव मित्र हो। धीरे-धीरे वह विद्यालय एवं छात्रावास की छात्राओं से भी हिल-मिल गई तथा

नोट

छात्रावास में पहुँचकर उनसे खेलने का प्रयास करती। अपने कार्यों में 'व्यस्त छात्राएँ भी उसके लिए कुछ क्षण निकाल लेतीं और उसे कुछ न कुछ खिलाती-पिलाती रहतीं, महादेवी के भोजन के समय वह उनके आस-पास रहती थी तथा उनसे खाद्य-पदार्थ लेकर अपने स्नेह का प्रदर्शन करती।

मानवों से स्नेह-भाव: सोना हिरनी छोटे बच्चों से अत्यन्त प्रसन्न भाव से खेलती। वे पंक्तिबद्ध होकर खड़े हो जाते तथा वह उनके ऊपर से छलांग लगा-लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। लेखिका के प्रति उसका प्रेम अपरिमित था। अपने स्नेह-प्रदर्शन हेतु वह कभी उनके सिर के ऊपर से इस प्रकार अपने पैरों को सिकोड़कर छलांग लगाती कि महादेवी को चोट लगने की जरा भी संभावना नहीं रहती। कभी वह अपनी पालिका के पैरों से अपना शरीर रगड़ती और कभी-कभी चुपचाप उनकी चोटी ही चबा डालती। लेखिका उसके इस कृत्य पर कभी डांटती तो वह हैरानी से उसका मुख देखती रहती। इस मृगी-शावक का स्नेह महादेवी के स्नेह को ही पहचानता था। लेखिका के पालित अन्य जीवों बिल्ली और कुत्तों से भी उसने मित्रता स्थापित कर ली और उनके साथ खेलने में भी व्यस्त रहती। वे भी उसके साथ मस्त होकर क्रीड़ा करते।

स्वरूप में परिपूर्णता: एक वर्ष की होने पर सोना पूर्ण हरिण का रूप धारण करने लगी। उसके शरीर में पीले रोयें ताम्रवर्ण की झलक देने लगे। उसके पैर अधिक सुडौल हो गये तथा खुरों की कालिमा में चमक उत्पन्न हो गयी। उसकी गर्दन अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में मांसलता युक्त उतार-चढ़ाव और कोमलता का आभास होने लगा। यौवन का आभास उसके शरीर से अधिक उसकी दृष्टि से छलकता था। यौवनावस्था के ही कारण वह स्वजाति के संसर्ग एवं अरण्य प्रदेश में रहने के लिए व्याकुल रहने लगी। अब वह अपने शैशव के मित्रों के साथ क्रीड़ा करने में अधिक आनन्द नहीं पाती थी। फ्लोरा कुतिया द्वारा चार बच्चों को जन्म देने पर वह उन बच्चों को भी अपने ममत्व का पोषण देती थी, उसके बीच में जाकर लेट जाती थी। उन बच्चों को भी उसने अपने खेलों में शामिल कर लिया तथा अपने उत्साह के प्रदर्शन के लिए वह लेखिका के सिर के आर-पार छलांगे मारती रही। किन्तु इस खेल से कुछ ही समय बाद वह अपने स्वजाति-संसर्ग की स्मृति में लौट आई तथा स्तब्ध-सी रहने लगी।

सोना का करुण-अवसान: उस वर्ष महादेवी का बद्रीनाथ यात्रा का कार्यक्रम बना। अन्य जीव-जन्तु तो महादेवी की ऐसी यात्राओं के कारण उनकी अनुपस्थिति के अभ्यस्त थे और वे उनके जाने के समय अपनी क्रियाओं द्वारा उनसे न जाने का अनुरोध करते और जाने पर उनके लौटने की प्रतीक्षा करते। सोना को ऐसा कोई अनुभव नहीं था, अत: वह अत्यन्त निराश और विस्मित हो गई थी। इसके अतिरिक्त छात्रावास एवं विद्यालय बंद था। वह छात्रों एवं बच्चों के साथ क्रीड़ा भी नहीं कर सकती थीं। महादेवी अपनी यात्रा के दौरान फ्लोरा कुतिया को साथ ले गई थीं। लेखिका एवं अपनी सखी फ्लोरा के अभाव में सोना अस्थिर होकर गृह-क्षेत्र से बाहर निकल जाती। उसके मारे जाने के खतरे को देखकर माली ने उसे मैदान में एक लम्बी रस्सी से बांधना शुरू किया। स्तब्धता और अस्थिरता के ऐसे ही क्षणों में एक दिन सोना रस्सी के बंधन को विस्मृत कर बहुत ऊंचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुंह के बल जमीन पर आ गिरी। इस प्रकार उसके करुण एकाकी जीवन का अंत हो गया।

7.1.4 दुर्मुख खरगोश

परिचय: लेखिका को दुर्मुख खरगोश शिशु के रूप में पड़ोस के एक दम्पत्ति से प्राप्त हुआ। इस दम्पत्ति ने खरगोश का एक जोड़ा पाला था जो उनके आंगन में सुरंग जैसे स्थान में निवास करता था। रात में गृहिणी उस सुरंग के द्वार पर डलिया एवं सिल रखकर उन्हें सुरक्षित कर देती थी। एक दिन वह द्वार ढंकना भूल गई तथा वह शशक परिवार मार्जारी का आहार बन गया। इस परिवार में मात्र एक शिशु बचा जिसे पालने हेतु लेखिका को सौंप दिया गया। इस बच्चे को रुई की बत्ती से दूध पिला-पिलाकर पाला जाने लगा। महादेवी ने उसके सोने का स्थान अपने कमरे में ही बना दिया।

नामकरण: इस शशक-शावक की कोमलता के बिल्कुल विपरीत इसका नाम दुर्मुख अथवा दुर्वासा रखा गया। किसी भी जीव से मेल न रखने के कारण इसको ऐसा नाम दिया गया था जो उसकी क्रोधी एवं क्रूर प्रवृत्ति की उचित व्यंजना करता था।

नोट

बाह्य रूपरेखाः दुर्मुख देखने में अन्य खरगोशों के समान ही सुंदर था। उसके शरीर पर घने, कोमल, चमकीले फर के रोम छाये हुए थे, उसकी पूंछ छोटी और सुंदर तथा पंजे स्वच्छ थे, जिनसे वह हर समय अपना मुंह साफ करता रहता था। उसके कान थोड़े कम लंबे होने के बाद भी अत्यन्त सुडौल थे और सीधे खड़े रहते थे। उसका एक कान काला था और एक सफेद। अन्य खरगोशों से पूर्णतः भिन्न उसकी आँखें लाल थी। जब वह खरगोश बड़ा हो गया तो महादेवी ने उसे अन्य पशु-पक्षियों के लिए बड़े जालीघर में पहुँचा दिया। वहाँ पर पहले दुर्मुख ने अपना सुरंग-गृह बनाया तथा इस कार्य से निवृत्त होते ही अपने झगड़ालू एवं क्रोधी स्वभाव के कारण अन्य सभी पशु-पक्षियों से बैर मोल लेना आरंभ कर दिया है। उसके डर के कारण कबूतर और मोर दाना चुगने से भी डरते थे।

मादा खरगोश हिमानी का आगमनः दुर्मुख के क्रोधी स्वभाव का कारण उसका स्वजाति शून्य एकाकीपन समझकर महादेवी ने उसका साथ देने के लिए एक मादा खरगोश को खरीदा जिसका नाम हिमानी रखा गया। किन्तु दुर्मुख ने उसे अपने क्रूर स्वभाव का शिकार बना दिया। वह उसे अपने सुरंग में तो प्रवेश करने ही नहीं देता था उसके द्वारा निर्मित गृह पर भी अपना अधिकार जमाने लगा। कुछ दिनों तक तो हिमानी का संसर्ग पाकर उसके स्वभाव में कुछ अंतर लक्षित हुआ। किन्तु जब हिमानी के छः शावक उत्पन्न हुए तो उसका क्रोधी एवं क्रूर स्वभाव अधिक तीव्र हो गया उसने स्वयं अपने बच्चों को भी नहीं बख्शा वे बच्चे उसकी हिंसा-प्रवृत्ति का शिकार होकर नित्य रक्तरंजित रहने लगे। उसके क्रोध ने ही उसके अपने दो शावकों के प्राण ले लिये। ऐसी गंभीर स्थिति को लक्षित कर महादेवी ने उसे अन्य पशुओं से अलग जालीघर में रख दिया। इससे दुर्मुख उन पर आक्रमण तो नहीं कर पाया किन्तु क्रोध में आकर उसने अपने जालीघर से बड़े जालीघर में जाने के लिए एक बेहद लंबी सुरंग खोद डाली। माली ने जब इस सुरंग के द्वार को पत्थर से बंद कर दिया तो उसने नयी-नयी सुरंग खोदनी आरंभ कर दी और बड़े जालीघर में प्रवेश कर वहाँ के निवासियों से लड़ता रहता।

दुर्मुख का अंतः अपने क्रोधी स्वभाव के ही कारण दुर्मुख सांप का शिकार बन अपने प्राण गंवा बैठा। सांप के बच्चे के उसके जालीघर में प्रवेश करने पर दुर्मुख ने उसकी विषदंशन-प्रवृत्ति को अनदेखा कर अपनी रक्षा करने के स्थान पर उस पर झपट्टा मारा। किन्तु वह उसे संपोले के दंशन विष पर अपने क्रोध का प्रभाव न दिखा सका तथापि उसने उस संपोले के शरीर के भी दो टुकड़े करके अपनी मृत्यु का प्रतिशोध ले लिया और इस प्रकार दुर्मुख जैसे विचित्र क्रोधी खरगोश का जीवनांत हुआ।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. सोना हिरनी को महादेवी ने किससे प्राप्त किया था?
   (*a*) शिकारी परिवार हो (*b*) शर्मा परिवार से
   (*c*) बन्सल परिवार से (*d*) लाल परिवार से
5. एक वर्ष की होने पर सोना पूर्ण हरिण का रूप धारण करने लगी। उसके शरीर में किस रंग रोयें ताम्रवर्ण की झलक देने लगे?
   (*a*) हरे रंग के (*b*) नीले रंग के
   (*c*) पीले रंग के (*d*) काले रंग के
6. लेखिका को दुर्मुख खरगोश शिशु के रूप में किससे प्राप्त हुआ था?
   (*a*) पड़ोस के एक दम्पत्ति से (*b*) किसी मित्र से
   (*c*) किसी संबंधी से (*d*) या किसी जंगल से

नोट

7.1.5 गौरा गाय

परिचयः गौरा गाय महादेवी वर्मा की छोटी बहन श्यामा की पालतू गाय की बछिया थी। बहन के उपयोगितावादी एवं व्यावहारिक सुझाव पर महादेवी वर्मा ने उसे अपने पालतू पशुओं में शामिल कर लिया। यद्यपि महादेवी वर्मा अपनी किसी आवश्यकता हेतु किसी पशु–पक्षी को नहीं पालती, किन्तु बहन की उचित सलाह और इस बछिया में विशेष स्नेहाकर्षण को देखकर उन्होंने उसको पालने का निर्णय कर लिया।

बाह्य रूपरेखाः गौरा गाय देखने में सुदर्शना थी। उसके पैर पुष्ट एवं लचीले थे पीठ चिकनी एवं भरी हुई, ग्रीवा भी लंबी एवं सुडौल थी। यौवन–पदार्पण की झलक देते निकलते हुए छोटे–छोटे सींग और कानों के भीतर की लालिमा देखकर ऐसा लगता था मानो कमल की दो अधखुली पंखुडियाँ हों। उसकी पूंछ लंबी थी तथा पूंछ के अंतिम छोर पर लटकते घने काले बाल चामर की भांति प्रतीत होते थे। उसके रोमों की सफेदी में इतनी चमक थी मानों उसके रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मला हुआ हो जिसके कारण जिधर आलोक पड़ता था, उधर विशेष चमक उत्पन्न हो जाती थी।

गौरा का लेखिका के घर में आगमनः हिन्दू संस्कृति में गाय पूजनीय पशु है। जब गौरा गाय महादेवी के बंगले में पहुँची तो उनके परिचितों एवं नौकरों ने श्रद्धा के साथ उसका स्वागत किया। उसे लाल और सफेद गुलाबों का हार पहनाया गया, रोली का टीका लगाकर घी के दिये से उसकी आरती उतारी गई तथा दही–पेड़े का नैवेद्य अर्पित किया गया। इस पूजा अर्चना से वह गाय भी अत्यन्त प्रसन्न प्रतीत हुई।

अन्य पशुओं तथा महादेवी के प्रति ममत्वपूर्ण स्नेहः महादेवी के घर में आने के पश्चात् उसने सभी प्राणियों से कुछ ही दिनों में स्नेह संबंध स्थापित कर लिया। सभी पशु–पक्षी सब तरह के भेद भूलकर उससे खेलने लगे। महादेवी तथा अन्य परिजनों के पैरों की आहट भी वह पहचानने लगी थी। उनके निकट आने पर अपनी गर्दन को सहलाने के लिए बढ़ा देती थी तथा दूर जाने पर उदास होकर गर्दन घुमा–घुमा कर देखा करती।

बछड़े का जन्मः महादेवी के घर में आने के पश्चात् गौरा ने एक बछड़े को जन्म दिया। इसका रंग लाल था तथा उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक था और खुरों के ऊपर गोलाई में सफेद धारियां थीं। इसका नाम लालमणि रखा गया। बछड़े के उत्पन्न होने के बाद गौरा ने प्रतिदिन बारह सेर दूध देना प्रारंभ किया जिससे आस–पड़ोस के बच्चों के साथ अन्य जीव जन्तुओं का दुग्ध–पोषण भी होने लगा। उसका दूध प्राप्त करने के लिए कुत्ते–बिल्ली मानो सभ्य मनुष्यों की भाँति पंक्तिबद्ध होकर बैठ जाते तथा शांतिपूर्वक अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करते। दूध पीने के बाद वे पशु गौरा के चारों तरफ उछल कूद कर अपनी प्रसन्नता एवं कृतज्ञता ज्ञापित करते। अपना दूध सब में बाँटकर गौरा गाय भी अत्यंत प्रसन्न होती। गाय के दूध दोहने का कार्यभार उस ग्वाले ने संभाल लिया था जो उसके आगमन से पूर्व महादेवी के घर में दूध दे रहा था।

गौरा का मृत्यु से संघर्षः इस दुग्ध–महोत्सव के प्रारंभ होने के दो तीन माह पश्चात् ही गौरा का खाद्य धीरे–धीरे कम होता चला गया तथा गौरा दुर्बल और शिथिल होने लगी। लेखिका ने उसे पशु–चिकित्सकों को दिखाया। उनसे ज्ञात हुआ कि गाय को सुई खिलाई गई है। जो उसके रक्त संचार के साथ हृदय के पास पहुँच गई है। जिस दिन भी यह गाय के हृदय के पार हो जायेगी तब रक्त संचार रूकने से उसकी मृत्यु हो जायेगी इसके साथ उन्हें यह भी पता चला था कि जिस ग्वाले को उन्होंने गाय के दुग्ध–दोहन के लिए रखा था, उसी ने ईर्ष्यावश गाय को गुड़ की बड़ी डली के भीतर सुई, रखकर खिला दी थी जो रक्त संचार में मिलकर उसके हृदय तक पहुँच गई थी। इस प्रकार उस ग्वाले ने अपने स्वार्थ हेतु उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर दी थी। इस सत्य का पता चलते ही वह ग्वाला भी गायब हो गया। डाक्टरों ने सुझाव दिया कि गाय को सेब का रस पिलाने पर सुई पर कैल्शियम जमने और उसके न चुभने की संभावना है। नित्य प्रति गौरा को कई सेर सेबों का रस नली के माध्यम से पिलाया जाता। उसे लम्बे इंजेक्शन लगाये जाते और बोतल भर दवा पिलाई जाती जोकि कष्टमय क्रिया थी और जिसे गौरा ने शांतिपूर्वक सहन किया। गौरा इतनी दुर्बल हो चुकी थी कि वह उठने में असमर्थ थी किंतु महादेवी के पास पहुँचने पर वह प्रसन्न

नोट

हो जाती थी। लालमणि इतना अबोध था कि मां की व्याप्ति एवं निकट मृत्यु के सत्य को वह नहीं समझ पाता था। वह अपनी मां से खेलना चाहता था और इसके लिए वह उसके आस-पास ही उछलता कूदता रहता।

गौरा का अंत: क्षण-क्षण मृत्यु की प्रतीक्षा करती गौरा के इस रोग का निदान कोई पशु-विशेषज्ञ नहीं बता पाया। गौरा की आँखें धीरे-धीरे आभाहीन होने लगी तथा सेब का रस पी पाना भी उसके लिए कठिन होने लगा। अब उसका अंत निकट था। महादेवी दिन और रात में कई-कई बार उसे देखने जाती रहती। एक दिन सुबह जब वे गौरा को देखने गई तो उसने अंतिम बार अपना मुख लेखिका के कंधे पर रखा और अपने प्राण-त्याग दिये। अन्य पशुओं की भाँति उन्होंने गौरा के पार्थिव शरीर को भी गंगा में समर्पित करवाया किंतु इस मूक ममत्व-युक्त सहिष्णु गाय को अन्तिम विदा देना नितांत मर्मभेदक था। गौरा की पूजा करने वाले और उनका पालन करने वाले देश में गाय का ऐसा अंत मानव की निष्ठुरता की ही देन है।

7.1.6 नीलू कुत्ता

परिचय: नीलू कुत्ता लुसी कुत्तिया नामक अल्सेशियम कुत्तिया से उत्पन्न हुआ था। लूसी उत्तरायण के निवासियों के लिए सहचरी एवं सहायिका थी। शीतकाल में जब उत्तरायण में बर्फ भर जाती थी तथा दुकानों तक आवागमन की पगडंडी पर आना जाना असंभव हो जाता था तो उत्तरायण के निवासी लूसी के कंठ में रुपये और सामग्री की सूची अंगोछे या चादर के साथ बाँधकर उससे सामान मंगवाते थे। लूसी इस कार्य को तत्परता से पूरी करती थी तथा कर्त्तव्य को निभाने में वह दिन में कई चक्कर घूस भाँति लगाया करती थी। ऐसी ही आवागमन में एक बार उसकी भेंट एक भूटिया श्वान से हुई और वह उसकी सहचरी बन गई। लूसी ने दो बच्चों को जन्म दिया जिनमें से एक शिशु शीत से मर गया। इन बच्चों को जन्म देने के चार पाँच दिन बाद लूसी दुकान पर आने जाने के अपने कर्त्तव्य को पुन: संभालने लगी। और ऐसे ही आवागमन में एक दिन वह लकड़बग्घे का आहार बन गई। शीतकाल में प्राणशक्ति दुर्बल हो जाने के कारण वह लकड़बग्घे के आने की गंध न पा सकने के कारण उसका शिकार बनी और कुछ देर संघर्ष करके प्राण दे दिये। लूसी का यह अंत अत्यंत करूण था और समस्या थी उसके नन्हें श्वान-शिशु की जिसे मां के अभाव का ज्ञान भी न था। उसे दुग्ध चूर्ण का दूध पिलाकर उसकी प्राण रक्षा की गई। वहाँ से आते समय महादेवी उसे अपने साथ अपने निवास स्थान ले आईं।

बाह्य रूपरेखा: नीलू कुत्ता न पूर्ण रूप से अल्सेशियन था और न ही भूटिया। वह अपने माता-पिता का मिला जुला रूप था। उसके रोमों का वर्ण भूरे, पीले, काले रंगों का सम्मिश्रण था जो विभिन्न रोशनियों में अलग अलग झलक देते थे। उसके कानों का चौड़ापन और नुकीलापन भी विशिष्ट था। सिर का ऊपरी भाग अन्य कुत्तों से थोड़ा बड़ा और चौड़ा था तथा नीचे का भाग लम्बा किंतु सुघड़ था। उसकी पूंछ सघन रोमों से युक्त किंतु ऊपर की ओर मुड़ी हुई थी। उसके पैरों की बनावट भी अल्सेशियन एवं भूटिया कुत्तों के पैरों की बनावट का मिला-जुला रूप था। पैर अल्सेशियन कुत्ते के पैरों की भाँति लम्बे थे किंतु उसके पंजे भूटिया श्वानों के पंजों के समान मजबूत, चौड़े एवं मुडे हुए नाखूनों वाले थे। उसके शरीर का ऊपर का भाग चौड़ा था किंतु नीचे का भाग पतला पेट युक्त हल्का था जो कि उसके तीव्र गति से भागने में सहायक था। उसकी गोल और काली कोट वाली आँख का रंग शहद के रंग की भांति था जो धूप में सुनहला प्रतीत होता था। यह कुत्ता अत्यंत समझदार प्राणी था तथा अन्य श्वानों की भांति दैत्य के भाव से रहित एवं स्वाभिमान की भावना से युक्त था। वह महादेवी के कमरे के बाहरी बरामदे में ऊपरी सीढ़ी पर बैठकर आगन्तुकों का चुपचाप से निरीक्षण करता। किसी विशेष अतिथि के आने की सूचना वह लेखिका को उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ा होकर देता। नीलू इतना समझदार था कि वह किसी की भाषा को मनुष्य की भांति समझता था। यदि कोई उसे कह देता कि लेखिका उसे ढूंढ़ रही थी तो वह तीव्रगति से महादेवी के पास आ खड़ा होता। अन्य कुत्तों की भांति वह हिंसक भी नहीं था। उसका हिंसा भाव ही नहीं उसका अन्य प्राणियों के प्रति

नोट

अपनापन और स्नेहभाव भी अद्‌भुत था। एक बार उसने घोंसले से गिरे हुए गौरया के बच्चों को भी हिंसक प्राणियों से न केवल बचाया बल्कि लेखिका द्वारा उन बच्चों को पुनः घोंसले में रखे जाने तक वह सतर्क होकर उनका संरक्षक बना रहा। पक्षियों को दाना देने के समय भी वह लेखिका के साथ रहता और प्रत्येक जालीघर का और उसके निवासियों का निरीक्षण करता रहता। इसी प्रकार वह रात्रि भर पूरे घर की और पशुपक्षियों की जालीघर की पहरेदारी करता। एक दिन नीलू की सजगता ने खरगोशों के भी प्राण बचाये। खरगोशों ने धरती के भीतर सुरंग जैसे बिल खोद डाले–जिसका द्वार पड़ोसियों के आवास में खुला। इस द्वार से बाहर निकलते ही कई खरगोश जंगली बिल्ले का आहार बन गयें अन्य खरगोश भी मारे जाते यदि सौभाग्य से सजग नीलू कूदकर पड़ोसियों के प्रांगण में न पहुँच गया होता। उसके आते ही बिल्ला भाग गया किंतु खरगोश को सुरंग से बाहर निकलने से रोकने के लिए वह रात भर ठंड से सुरंग के मुहाने पर खड़ा रहा जिसके फलस्वरूप उसे न्यूमोनिया हो गया। महादेवी के प्रति उसका स्नेह इतना गहना था कि जब वे मोटर दुर्घटना में आहत होकर अस्पताल में भर्ती हुई तो उसे इसका आभास हो गया। वह अत्यंत उदास हो गया तथा तीन दिन तक उसने अन्न-जल ग्रहण नहीं किया। जब उसने अस्पताल में महादेवी को देख लिया तो ही आश्वस्त हुआ।

नीलू चौदह वर्ष की आयु तक जीवित रहा। सबसे स्नेह करते हुए भी वह अपने जीवन में एकाकी ही रहा। वह कजली का साहचर्य चाहता था जबकि कजली कुतिया बादल की सहचरी थी। अंततः एकाकी जीवन जीते हुए उसने शांत भाव से ही मृत्यु को ग्रहण किया।

7.1.7 निक्की, रोजी और रानी

निक्की नेवला, रोजी कुतिया और रानी घोड़ी महादेवी के बाल्यकाल के ऐसे साथी थे जिनकी स्मृति अत्यंत आत्मीयता के साथ लेखिका ने अपने स्मृति कोष में संजो रखी है। रोजी शिशु अवस्था में लेखिका को उपहारस्वरूप उनके पिताजी के किसी विद्यार्थी द्वारा प्रदान की गई थी। बाल्यकाल की संगिनी होने के कारण रोजी दूध पीने, सोने, खेलने और घूमने-हर क्रीड़ा में उनका साथ देती थी। उनकी यह संगिनी तेरह वर्ष तक उनके साथ रही। महादेवी एवं उनके भाई बहन दोपहर का समय खेलने कूदने में बिताते थे। दोपहर भी बया चिड़ियों के घोंसले तोड़ते बबूल की सूखी छीमियाँ बीनते। इनका यह कार्य किसी भी ऋतु में बाधित नहीं होता था। थक जाने पर आम के वृक्ष से घिरे पोखर के ऊपर झूलती हुई आम की शाखाओं पर बैठ जाते थे। रोजी इनके भ्रमण कार्यों में पूरी वफादारी से साथ देती। गर्मी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी बड़ी अंबियां जब हवा के झोंकों से टूटकर सूखे पोखर में गिरती तो उनके गिरने के आहट के साथ रोजी भी सूखे पोखर में कूदती और उन्हें ढूंढकर ले आती थी। दोपहर के इस भ्रमण कार्य हेतु महादेवी एवं अन्य बालकवृन्द खिड़की की राह से निकलते थे। खिड़की से पहले रोजी को उतारते, फिर एक एक करके तीनों भाई बहन बगीचे में उतर कर उसी क्रीड़ा स्थल पर पहुँच जाते। इस चोरी छिपे की क्रीड़ा को रोजी भी समझ गई थी। तथा खिड़की से उतरते समय यदि कोई बच्चा उस पर गिर भी पड़ता तो वह पीड़ायुक्त होकर भी रहस्य को बनाये रखने के लिए जरा भी आवाज नहीं करती थीं। एक बार भ्रमण-विचरण के दौरान आम खोजते हुए रोजी पोखर के भीतर से नेवले के एक शिशु को ऊपर ले आई। इस नकुल-शिशु को पाकर ये बालकवृन्द इतना प्रसन्न हुआ कि उसे लेकर वे तुरंत घर भागकर मां के पास पहुँचे। इस उत्तेजना में उन्हें अपना रहस्य खुल जाने का भय भी विस्मृत हो गया। किंतु मां ने उनसे कुछ न पूछकर नेवले को वापस उसके बिल में रख आने का आदेश दिया। इस आदेश से अप्रसन्न बच्चे नकुल-शिशु के निवास एवं माता-पिता की खोज में गये। जब यह खोज असफल सिद्ध हुई तो नकुल को पास रखने की आशा में वे अत्यंत प्रसन्न होकर घर लौट आये। रामा की देख देख में नकुल-शिशु का पालन पोषण प्रारंभ हुआ। निक्की प्रायः महादेवी के समीप्य में रहता था। उन दिनों लड़कियों की वेशभूषा में पूर्व एवं पश्चिम दोनों संस्कृतियों का संगम हो रहा था। कभी वे गोटे से सज्जित गरारा, कुर्ता, दुपट्टा पहनती तो कभी लेस झालर से सजा फ्रॉक। इस वेश के अनुरूप ही उनके जूते भी होते थे जिन्हें पहनकर चलने,

नोट

दौड़ने एवं करौंदे की झाड़ियाँ लांघने में महादेवी को असुविधा होती थी। अत: वे उन्हें उतारकर नंगे पैर कंकड़-पत्थरों पर दौड़ लगाती थीं। इस भ्रमण कार्य में अब निक्की भी उनका साथ देने लगा। वह महादेवी के दुपट्टे की चुन्नट में या चोटी में छिपकर बैठता और चारों ओर की गतिविधियाँ ध्यान से देखता। एक दिन रोजाना की तरह खिड़की से इन बच्चों के उतरने पर उसने गुलाब की क्यारी के पास एक लम्बे काले सांप को लक्षित कर लिया तथा कूदकर वह वहाँ पहुँचा तथा उससे बिजली की भांति संघर्ष करने लगा। सांप बार-बार अपनी कुण्डली में लपेटने का प्रयास कर रहा था और वह तेजी से उछल-उछल कर सांप के फन पर अपने पैर दांतों का प्रहार कर रहा था। अंतत: सांप को कई खंडों में विभाजित कर उसका जीवनांत कर दिया। बच्चों के शोर मचाने पर रामा भी वहां पहुँचा तथा उसने निक्की के मुंह को विष लगने के भय से पानी में डुबा डुबाकर धोया।

इस घटना के बाद महादेवी को उनके पिता ने शहर के मिशन स्कूल में भर्ती कर दिया। जब वे पुस्तकें लेकर तथा शिकरम में बैठकर स्कूल पहुँची तो निक्की भी शिकरम की छत पर बैठकर उनके साथ स्कूल पहुँच गया। स्कूल में लेखिका की सहपाठिनियाँ उसे देखकर चिल्लाने लगीं तब विवश होकर निक्की को आंगन में फैली लता में बिठाना पड़ा। इसके बाद प्रतिदिन निक्की महादेवी के साथ स्कूल आता उनके पढ़ने का समय वह फाटक की लता में या बाग में घूमकर बिताता। छुट्टी होते ही वह महादेवी के कंधे पर आ बैठता।

> *टास्क* बाल्यकाल में महादेवी के कौन साथी थें जिनकी स्मृति अत्यन्त आत्मीयता के साथ लेखिका ने अपने स्मृति कोष में संजो रखी थी? विस्तार से वर्णन कीजिए।

इसके बाद महादेवी के घर में रानी घोड़ी का प्रवेश हुआ। रियासतों में अंग्रेज के बच्चे छोटे टट्टुओं पर बैठकर घूमते थे जिसके विषय में रामा ने बच्चों को बताया था कि इंग्लैण्ड से अपराधियों को गधे पर बैठने का दण्ड देकर वहाँ के राजा ने भारत भेजा है। एक दिन इन बच्चों ने अपने पिता से सवारी के लिए छोटे घोड़े की मांग की। फलस्वरूप एक छोटा-सा-टट्टू घर में लाया गया। उसके आवागमन के लिए दीवार में एक नवीन द्वार बनाया गया तथा उसकी देखभाल हेतु साइस भी रखा गया। प्रारंभ में ये बच्चे उससे रूष्ट रहे किंतु बाद में उसके प्रति करूणा और स्नेह भाव से आप्लावित हो गये। उन्होंने उसके अस्तबल को ही अपना क्रीड़ास्थल बना लिया तथा वहां बनी अल्मारी में अपने खिलौनों को स्थापित किया। वे रानी की गर्दन में झूलते, उसे फूलों से सजाते और उसे बिस्कुट मिठाई खाने को देने लगे। उनकी इन क्रियाओं से रानी और इन बच्चों में इतनी आत्मीयता स्थापित हो गई कि यदि वह उन्हें न देखती तो अस्थिर हो जाती। बच्चों की घुड़सवारी के लिए विशेष जीन बनवाई गई। ये तीनों भाई-बहन बारी-बारी से उसकी सवारी करते थे और इस दौरान छुट्टन उनके साथ दौड़ता था। किंतु इस अनुशासित सवारी ने इन बच्चों के विद्रोह को फिर जगा दिया। छुट्टी के दिन दोपहर को वे रानी को खोलकर उसे बाहर ले आये तथा उसकी नंगी पीठ की सवारी करने लगे। रानी इनकी शरारतों और क्रीड़ाओं को समझती थी। इसलिए अपनी नंगी पीठ पर अयाल पकड़कर बैठने वाले बच्चों को वह धीमी चाल से इधर उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी किंतु महादेवी के भाई द्वारा एक बार उसके पैरों पर संटी मार देने पर वह अचानक तीव्र वेग से दौड़ पड़ी। उस समय उस पर महादेवी स्वयं बैठी हुई थी। इतने वेग से दौड़ने पर महादेवी गिर पड़ी और उन्हें चोट भी लगी। महादेवी के गिरते ही रानी का क्रोध हवा हो गया तथा उसे पश्चाताप हुआ। जब महादेवी स्वस्थ होकर उसके पास गई तो वह करूणा एवं पश्चाताप भरी दृष्टि से उन्हें देखकर हिनहिनाने लगी। रानी के हृदय में अपने लिए आत्मीयता का गहन भाव देखकर लेखिका भी रो पड़ी।

एक बार महादेवी के भाई के जन्मदिन पर बच्चों की नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। बाल सुलभ चंचलता में वह उन कड़ों को रानी के कानों में पहना आया तथा सब बच्चें कड़ों की बात भूल गये। शाम को मां द्वारा पूछताछ करने पर जब कड़ों की खोज की गई तो रानी ने अपने खुरों और हिनहिनाहट से कड़ों के एक स्थान पर छिपे होने

नोट

का संकेत किया। उस स्थान को खोदने पर वे कड़े मिल गये। इस घटना के बाद रानी की इस समझदारी के प्रति सबके हृदय में आदर बढ़ गया।

एक दिन रानी के पास एक नन्हें अश्व को पाकर ये बालगण हैरान हो गये। रामा से पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह जीव रानी के पेट में दाना चारा खाकर सो रहा था। उसके पेट में अभी भी ऐसा जीव होगा, ऐसी कल्पना कर बच्चों ने योजना बनाई कि रानी का पेट चीर कर उसे भी निकाल लें ताकि छोटे घोड़ों पर छोटे भाई बहन सवारी करें और रानी महादेवी की सवारी बनेगी। किंतु ऐसा दुस्साहस करने के अलावा उसका पेट सीने की समस्या भी थी। यह प्रस्ताव कार्यान्वित नहीं हुआ तथा कुछ दिनों में अश्व शिशु भी बड़ा होकर इस बालवृन्द की क्रीडा का साथी बन गया।

कुछ समय पश्चात् सब बच्चों को शिक्षा पाने के लिए घर से बाहर भेजा गया तथा इस प्रकार उनकी बालसुलभ शरारतों का अंत हुआ। जब अवकाश के दिनों में ये बच्चे घर लौटे तो इनके पशु सहचर बिछुड़ चुके थे। निक्की मर चुका था। रानी और उसका शावक पवन किसी और को भेंट कर दिये गये थे और अपने साथियों के अभाव में दुर्बल एवं एकाकी हो चुकी रोजी कुतिया ही बची थी जो अपने आत्मीयों को दीर्घावधि के बाद पाकर उनके पैरों से लिपट कर रोने लगी थी।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. गौरा गाय महादेवी वर्मा की छोटी बहन श्यामा की पालतू गाय की बछिया नहीं थी।
8. नीलू कुत्ता लुसी कुतिया नामक अल्सेशियन कुत्तिया से उत्पन्न हुआ था।
9. निक्की नेवला, रोजी कुतिया और रानी घोड़ी महादेवी के बाल्यकाल के ऐसे साथी थे जिनकी स्मृति अत्यन्त आत्मीयता के साथ लेखिका ने अपने स्मृति कोष में संजो रखी है।

7.2 सारांश (Summary)

- लेखिका ने नीलकंठ मृत शरीर को गंगा की धारा में प्रवाहित कर दिया। कुब्जा उसको खोजने का प्रयास करते-करते एक दिन अपनी कलहप्रियता के कारण ही अपने प्राण गंवा बैठी किन्तु राधा सत्य ज्ञात न होने के कारण आजीवन उसकी प्रतीक्षा करती रही और मेघों के आच्छादन के समय वाणी को तीव्र कर करके उसको बुलाती रहती।
- गिल्लू जैसे मूक प्राणी ने महादेवी से केवल स्नेह प्राप्त ही नहीं किया वरन् नन्हें से शरीर में विशाल स्नेही हृदय होने का परिचय देकर लेखिका को भी उसका प्रतिदान दिया।
- अपने क्रोधी स्वभाव के ही कारण दुर्मुख सांप का शिकार बन अपने प्राण गंवा बैठा। सांप के बच्चे के उसके जालीघर में प्रवेश करने पर दुर्मुख ने उसकी विषदंशन-प्रवृत्ति को अनदेखा कर अपनी रक्षा करने के स्थान पर उस पर झपट्ठा मारा। किन्तु वह उसे संपोले के दंशन विष पर अपने क्रोध का प्रभाव न दिखा सका तथापि उसने उस संपोले के शरीर के भी दो टुकड़े करके अपनी मृत्यु का प्रतिशोध ले लिया और इस प्रकार दुर्मुख जैसे विचित्र क्रोधी खरगोश का जीवनांत हुआ।
- नीलू चौदह वर्ष की आयु तक जीवित रहा। सबसे स्नेह करते हुए भी वह अपने जीवन में एकाकी ही रहा। वह कजली का साहचर्य चाहता था जबकि कजली कुतिया बादल की सहचरी थी। अंततः एकाकी जीवन जीते हुए उसने शांत भाव से ही मृत्यु को ग्रहण किया।

नोट

7.3 शब्दकोश (Keywords)

छात्रावास : छात्राओं के रहने का स्थान

क्रूर : झगड़ालू

पार्थिव शरीर : मृत शरीर

7.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. मेरा परिवार पाठ में महादेवी जी का पशुओं तथा पक्षियों के प्रति प्रेम का विस्तार से उल्लेख कीजिए।
2. मेरा परिवार पाठ की कथावस्तु से क्या तात्पर्य है? उल्लेख कीजिए।
3. नीलकंठ, सोना हिरनी गौरा गाय तथा नीलू कुत्ते का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

उत्तर: स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. अपूर्व	2. तीन चार	3. गिलहरी
4. (*a*)	5. (*c*)	6. (*a*)
7. गलत	8. सही	9. सही

7.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. मेरा परिवार (महादेवी वर्मा) लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

नोट

इकाई–8: मेरा परिवार : पात्र एवं चरित्र-चित्रण

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

8.1 मेरा परिवार पाठ के पात्र एवं उनका जीवन परिचय

8.1.1 नीलकंठ

8.1.2 गिल्लू

8.1.3 सोना हिरनी

8.1.4 दुर्मुख खरगोश

8.1.5 गौरा गाय

8.1.6 नीलू कुत्ता

8.1.7 निक्की, रोजी और रानी

8.2 सारांश (Summary)

8.3 शब्दकोश (Keywords)

8.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

8.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- मेरा परिवार के पात्र एवं चरित्र चित्रण को जानने में।
- इस पाठ में पशु-पक्षियों की चरित्रगत विशेषताओं को जानने में।
- इस पाठ से संबंधित वास्तविक घटनाओं के आधार पर पात्र का चरित्र चित्रण समझने हेतु।
- इस पाठ की चित्रात्मक, भावात्मक, सांकेतिक एवं संक्षिप्त शैली जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

मेरा परिवार पाठ में महादेवी ने अपने घर में पले पशु-पक्षियों के पात्र एवं चरित्र चित्रण का चित्रण बड़े ही सरल एवं सहजता से साथ किया है। इस पाठ में पशुओं और पक्षियों की चरित्रगत विशेषताएँ, रेखाचित्रों के ततवों के

नोट

आधार पर समीक्षा, चित्रात्मक एवं सांकेतिक शैली के संदर्भ में चित्रांकित किया है। लेखिका के संरक्षण एवं पालन पोषण में घर के पशुओं-पक्षियों की पालन-पोषण का बड़े ही सजीव ढंग से चित्रण प्रस्तुत किया है।

8.1 मेरा परिवार पाठ के पात्र एवं उनका जीवन परिचय

8.1.1 नीलकंठ

चरित्रगत विशेषताएँ

प्राय: पक्षियों में मोर को ही सर्वाधिक सुंदर पक्षी माना जाता है। उसका नीलाभ वर्ण एवं उसका अपने रंगीन चमकीले पंखों को मंडलाकार बनाकर वर्षा ऋतु में आह्लादक नृत्य करना आदि उसके सौन्दर्य को द्विगुणित करते हैं। आलोच्य रेखाचित्र में महादेवी ने नीलकंठ मोर की चरित्रगत विशेषताओं को और भी विशिष्ट बनाते हुए उसके संदर्भ में यह कथन लिखा है–"नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था।" इस कथन के आधार पर उसके चरित्र की विशिष्टताओं की समीक्षा की जा सकती है।

बाह्य रूप: महादेवी ने जब इन मोर शावकों को पक्षी वाले से खरीदा था तब इनका रूप तीतरों की भांति था। धीरे-धीरे जब वे विकसित होने लगे तो उनका रंग अधिक आभामय और सौन्दर्ययुक्त हो गया। नीलकंठ के बाह्य स्वरूप का चित्र अंकित करती हुई महादेवी लिखती हैं, "मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊंची तथा चमकीली हो गयी। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई, गोल आँखों में इन्द्रनील की नीलाभ द्युति झलकने लगी। लंबी लील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछांही तरंगे उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में स्लेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूंछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इन्द्रधनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंगरहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गर्दन ऊंची कर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीचा कर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ी कर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौन्दर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है।" कंठ का वर्ण नीली आभायुक्त होने के कारण ही इसका नाम नीलकंठ रखा गया था। जब वर्षा-समय में सघन मेघ छाने लगते थे तो उनके आगमन पर प्रसन्न होकर वह इन्द्रधनुष के गुच्छे जैसे अपने पंखों को मण्डलाकार बनाकर किसी कुशल नर्तक की भांति नृत्य करता था। उसके नृत्य में एक सहज लय-ताल उपस्थित रहता था। आगे-पीछे, दाहिने-बाएँ घूमकर वह मानो किसी ताल के सम पर रूक जाता था। राधा मोरनी उसके आगे-पीछे परिक्रमा करती हुई उसके नृत्य को पूर्णता प्रदान करती थी। वर्षा ऋतु इन दोनों ही मोरों की प्रिय ऋतु थी और वर्षा के आगमन का आभास वे हवा से प्राप्त कर लेते थे और उनकी केका मन्दू से तीव्र होने लगती थी। फिर मेघ के गर्जन के ताल पर वे नृत्य आरंभ करते। मेघों का गर्जन, बिजली की चमक और बूदों की रिमझिम जितनी बढ़ती उतने ही वेग से नीलकंठ का नृत्य भी बढ़ता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पंजे पर बायाँ पंख फैलाकर उन्हें सुखाता।

आंतरिक गुण–मोर का बाह्य सौंदर्य तो इस प्रजाति के प्रत्येक पक्षी में कमोवेश रूप से पाया ही जाता है किन्तु नीलकंठ में मानवीय साहचर्य के कारण मानो मानवीय गुणों का स्वयमेव उद्रेक हो गया था। नीलकंठ में बड़े होने के उत्तरदायित्व की भावना स्वयमेव उत्पन्न हुई। उसने स्वयं को स्वयमेव ही लेखिका के पालित पशु-पक्षियों का सेनापति एवं संरक्षक मान लिया तथा उनकी पूरी तरह देखभाल करता। खरगोश, कबूतरों को एकत्रित करके वह उन्हें दाना खिलाने ले जाता तथा जब वे दाना खा रहे होते तो घूम घूमकर उनकी रखवाली करता। यदि उनमें से कोई भी गड़बड़ करता तो वह उन्हें तीखे चंचु प्रहार द्वारा उनकी शरारतों का दंड देता। खरगोश के शरारती शावकों को उनके कान अपनी चोंच से पकड़कर उठा लेता था उनके रोने तक उन्हें इसी प्रकार लटका कर रखता। ऐसे दंड-विधान

नोट

से कभी–कभी शशक शावकों के कान छिद तक जाते थे किन्तु यह दंड ऐसा था कि उसके बाद कोई शावक शरारत करने का साहस भी नहीं करता था।

उसकी देखरेख में अनुशासन और दंड ही नहीं, उसका प्रेम एवं आत्मीयता भी शामिल थी। खरगोश के उन्हीं नन्हें शावकों के साथ क्रीड़ा करते हुए वह प्राय: जमीन पर अपने पंख फैलाकर बैठ जाता और वे नन्हें शावक उसकी लंबी पूंछ और घने पंखों में छिपकर आपस में लुका–छिपी का मजा लेते रहते। उसका यह वात्सल्य भाव मात्र क्रीड़ा तक ही सीमित नहीं था, वह पिता की भांति इन विजातीय पुत्रों की रक्षा भी करता था। एक बार जालीघर के भीतर एक सांप पहुँच गया तथा एक शिशु खरगोश को उसने पकड़ लिया। खरगोश का पिछला आधा शरीर सांप के मुँह में दबा था और शेष आधार बाहर था और नन्हा शावक भयाकुल होकर चिल्ला भी नहीं पा रहा था। संकट की इस घड़ी का नीलकंठ को आभास हो गया तथा वह तीव्रता से अपने झूले पर से नीचे आ गया। मोर सांप को मारने में सक्षम होता है किन्तु नीलकंठ ने सांप को मारने से पूर्व इव वस्तुस्थिति को समझ लिया था कि सर्प के फन पर चोंच मारने से उस शावक को भी क्षति पहुँच सकती है। इसलिए उसने सांप के फन को पंजों से दबाया और उस पर इतने चंचु प्रहार किए कि उसके प्राण निकल गए। उसके ढीला पड़ते ही शशक शावक सर्प के मुख से निकल तो आया किन्तु भयभीत होकर वहीं निश्चेष्ट–सा हो गया। सांप को मारकर नीलकंठ ने इस खरगोश के पास जाकर उसे अपने पंखों के नीचे संभालकर उसका भय दूर किया। यह उसके पितृ–स्नेह का अद्‌भुत प्रमाण था।

नीलकंठ को लेखिका से भी अत्यन्त स्नेह था और अपने स्नेह की अभिव्यक्ति वह उनके समक्ष उसी नृत्य द्वारा करता था जिसे वह प्राय: वर्षा ऋतु में ही करता था। वस्तुत: उसका यह नृत्य महादेवी को अत्यन्त भाता था और इस तथ्य को नीलकंठ उनके बिना बताये जान गया था। जब लेखिका के साथ उनका कोई अतिथि भी होता और उनके समक्ष जब नीलकंठ अपने सतरंगी पंखों को मंडलाकर रूप से तानकर नृत्य भंगिमा बनाता था वे इस नृत्य को अपने प्रति सम्मान समझते थे। उसके इस कृत्य पर विदेशी महिलाओं द्वारा उसे 'परफैक्ट जेन्टिलमैन' की उपाधि भी प्राप्त हुई।

नीलकंठ में कठोरता एवं कोमलता का संगम था। सर्प को जिस नुकीली और पैनी चोंच के प्रहार से उसने मार डाला था, उसी चोंच से वह लेखिका की हथेली पर से भुने चने अत्यन्त कोमलता से और धीरे–धीरे उठाकर खाता था।

नीलकंठ का अपनी सहचरी राधा के प्रति भी अनन्य प्रेम था। वह वसंत में, जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक में नये लाल पत्ते सघन हो जाते थे तब उसे जालीघर से मुक्त करना पड़ता था और यदि राधा को भी साथ ही मुक्त न किया जाए तो मानों वसंत ऋतु के आनंदोत्सव में बांधा पड़ने से वह रूठ कर दरवाजे पर खड़ा रहता। राधा के प्रति उसके एकनिष्ठ प्रेम का प्रमाण कुब्जा मोरनी के आगमन के पश्चात् मिलता है। कुब्जा नीलकंठ का साथ चाहती थी और राधा से ईर्ष्या करती थी किन्तु नीलकंठ कलहप्रिय कुब्जा से दूर ही रहना चाहता था। कुब्जा की इस कलह प्रियता के कारण इन तीनों मोरों को अलग अलग जालीघरों में बंद करना पड़ता। अब तक जीव जंतुओं का संरक्षक रहा नीलकंठ कुब्जा के कलह–क्रोध को सहन नहीं कर सका। इससे भी अधिक राधा से दूर रहना उसके लिए असहनीय था। चिड़ियाघर के शांत, अनुशासित वातावरण के स्थान पर कलह–कोलाहल उपस्थित होने से तथा इसके साथ राधा के सान्निध्य के अभाव ने नीलकंठ पर बुरा प्रभाव डाला जिससे वह क्षीण और शिथिल होता गया और अंतत: उसने प्राण दे दिए। नीलकंठ एक मूक पंक्षी होकर भी उन उच्च संवेदनाओं से संपन्न था जो उसे मानव से भी ऊंचा स्थान दे देती हैं। अपने पालक के प्रति उसका स्नेह तो स्वाभाविक था किन्तु विजातीय जीव–जंतुओं के प्रति उसने जैसे अगाध अपत्य स्नेह एवं उनके संरक्षण के उत्तरदायित्व का परिचय दिया वह अभूतपूर्व है और ये गुण उसके चरित्र को अन्यतम बना देते हैं।

नोट्स नीलकंठ में कठोरता एवं कोमलता का संगम था तथा नीलकंठ का अपनी सहचरी राधा के प्रति अनन्य प्रेम था।

नोट

रेखाचित्र की समीक्षा: किसी रेखाचित्र की समीक्षा निम्नलिखित तत्वों के आधार पर की जाती है–

1. वर्णित पात्र का स्वयं रेखाचित्रकार से घनिष्ट संबंध (जिसकी अभिव्यक्ति संस्मरणों द्वारा होती है।)
2. पात्र से संबंधित वास्तविक घटनाओं के आधार पर पात्र का चरित्र-विकास
3. चित्रात्मक, भावात्मक, सांकेतिक एवं संक्षिप्त शैली
4. भाषा-वैशिष्ट्य

इन तत्वों के आधार पर नीलकंठ रेखाचित्र की समीक्षा की जा सकती है।

वर्णित पात्र संबंधी संस्मरण: नीलकंठ लेखिका द्वारा पालित पक्षी था जिसे वे पक्षियों के प्रति सदय होने के कारण चिड़िया वाले से खरीद लाई थीं। पालित होने के कारण नीलकंठ को लेखिका का ममत्व प्राप्त हुआ, नीलकंठ की विशिष्टताओं के कारण स्वयं लेखिका भी उसको विस्मृत नहीं कर पाती। नीलकंठ से संबंधित उनका यह संस्मरण मानव और पक्षी के मध्य सहज भाव से उत्पन्न हुए सहज भाव से सम्बद्ध है। नीलकंठ प्राय: वर्षा ऋतु में ही आनंदमग्न होकर नृत्य करता था और उस समय उसका नृत्य अत्यन्त मोहक प्रतीत होता था। नीलकंठ ने अनायास ही यह जान लिया था कि उसका नृत्य उसकी पालिका को बहुत भाता है इसलिए एक दिन वह उनके जालीघर के पास पहुँचते ही झूले से नीचे उतर आया तथा अपने सतरंगी पंखों को मंडलाकर तानकर मानो उनका चित्त प्रसन्न करने के लिए नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। इसके अतिरिक्त उसके स्वभाव के दो विरोधी गुणों के बारे में बताते हुए उनका यह संस्मरण उन्हीं के शब्दों में द्रष्टव्य है, "जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुए भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हंसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे। वसंत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढंक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता था कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता। पर जब तक राधा को भी मुक्त न किया जाए वह दरवाजे के बाहर की उपालंभ की मुद्रा में खड़ा रहता।" नीलकंठ से संबंधित ये संस्मरण उसके प्रति लेखिका के घनिष्ठ रागात्मक संबंध के द्योतक तो हैं साथ ही नीलकंठ के चरित्र की विशेषताओं को साकार करने में भी समक्ष है।

घटनाओं का आधार: रेखाचित्र में यद्यपि कथानक का उतार-चढ़ाव अपेक्षित नहीं होता, न ही क्रमबद्ध घटनाओं का संयोजन किया जाता है। तथापि वर्णित पात्र के चरित्र विकास एवं उसकी विशिष्टताओं के अंकन के लिए लेखक उसके जीवन से संबंधित घटनाओं की पृष्ठभूमि, जितनी आवश्यक हो, उतनी ग्रहण करता है। घटनाओं का यह आधार रेखाचित्र को इतिवृत्तात्मक बोझिलता से निकाल कर उसे रोचकता प्रदान करता है। नीलकंठ के चरित्र की विशिष्टताओं को दर्शाने के लिए महादेवी ने भी घटना का यथास्थल आश्रय लिया है। नीलकंठ में विजातीय पशु-पक्षियों के नन्हें शावकों के प्रति कितना गहन अपनत्व स्नेह था, इसको दर्शाने के लिए महादेवी एक अद्‌भुत घटना का वर्णन करती हैं। एक बार जालीघर में पानी की निकासी के लिए बनी नालियों के भीतर से एक सांप जालीघर में प्रवेश कर गया। उसे देखकर अन्य जीव-जन्तु भागकर इधर-उधर छिप गए किन्तु एक शशक शिशु उसकी पकड़ में आ गया। सांप ने उसे निगलने के प्रयास में उसके शरीर का पिछला भाग मुँह में दबा रखा था। शेष आधे शरीर जो उसके मुख के बाहर था, उससे वह सहायता के लिए पुकार नहीं पा रहा था। तथापि दूर झूले में सो रहे नीलकंठ ने आसन्न संकट को पहचान लिया तथा चौकन्ना होकर नीचे उतर पड़ा। खरगोश का ध्यान रखते हुए उसने पहले सांप के फन को पंजों से दबाया और उस पर चोंच से इतने प्रहार किए कि वह अधमरा हो गया। फन के ढीले पड़ते ही खरगोश का बच्चा सांप के मुख से निकल तो आया किन्तु भयातंकित होकर निश्चेष्ट-सा पड़ा रहा। सांप के दो टुकड़े कर उसके प्राण लेने के पश्चात् वह उस शिशु खरगोश के पास पहुँचा तथा रात भर उसे अपने पंखों के नीचे रखकर उसे सुरक्षा प्रदान की। नीलकंठ की सक्षमता को जानने वाली राधा ने अपनी मंद केंका से सबको जगाकर मानों इस घटना की सूचना दी।

नोट

उपर्युक्त घटना तो नीलकंठ के चरित्र के विशेषताओं के उद्घाटन के संबंध में थी किन्तु इस रेखाचित्र के प्रारंभ में भी वह घटना का ही आश्रय लेती है। यह घटना ही उनके जीवन में नीलकंठ के प्रवेश की भूमिका तैयार करती है–

"उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुँचाकर लौट रही थी कि चिड़ियों खरगोशों की दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राइवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियां के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे से पिंजड़े तक पहुँची जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। मोर हैं, यह जान लेना कठिन था। अस्तु, तीस चिड़ीमार के नाम के और बड़े मियां के नाम के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजरा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखटे का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी-शावकों के छटपटाने से लगता था, मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।"

चित्रात्मक एवं संक्षिप्त शैली: रेखाचित्र का अभिप्राय ही शब्दों द्वारा वर्णित व्यक्ति, वस्तु का चित्र तैयार करना है। इसलिए रेखाचित्र में चित्रात्मक शैली का प्राधान्य होता है। नीलकंठ रेखाचित्र में महादेवी जी का कवित्व भी उभर कर आता है और बाह्य रेखाओं में कल्पना के रंग भर कर रंगीन चित्र तैयार कर देता है, यथा–"मंजरियों के बीच उसकी नीलाभ झलक संध्या की छाया से सुनहले सरोवर में नीले कदल-दलों का भ्रम उत्पन्न कर देती थी। हवा से तरंगायित अशोक के रक्तिमाभ पत्तों में तो वह मूंगे के फलक पर मरकत से बना चित्र जान पड़ता था।" यह चित्र नीलकंठ के अद्वितीय सौंदर्य की आभा को बिखेरता-सा प्रतीत होता है। नीलकंठ के पार्थिव शरीर को गंगा को अर्पित करते समय भी महादेवी वर्मा उसके प्रति स्नेह के अतिरेक के कारण चित्रात्मक सौंदर्य को उभारे बिना नहीं रह पातीं–"जब गंगा की बीच धारा में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित-प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो गया।"

शैली में भावात्मक सौंदर्य उस स्थल पर प्रकट हुआ है जहां महादेवी ने नीलकंठ की संवेदनाओं का मानवीकरण किया है। कुब्जा द्वारा चिड़ियाघर के जीव-जंतुओं से वैर-भाव रखने के कारण वहाँ कलह का वातावरण उपस्थित हो गया जिससे नीलकंठ अत्यंत क्षुब्ध हो गया। "इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया। कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकार कर मैंने उतारा। एक बार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा। मेरे दाना देने जाने पर वह सदा के समान अब भी पंखों को मंडलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी।"

महादेवी की शैली में संक्षिप्तता है। यद्यपि रेखाचित्र में वर्णन ही अधिक होते हैं तथापि महादेवी ने वर्णनात्मकता का अल्प प्रयोग करते हुए शैली में चित्रात्मकता एवं भावात्मकता को ही अधिक स्थान दिया है। एकाध स्थान पर वे स्वयं शैली में संक्षिप्तता का संकेत करती है, यथा–"सारांश यह कि सात रुपये देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आयी और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्तपाल बना।"

भाषा-शैली: महादेवी ने गद्य-विद्या के अनुरूप इस रेखाचित्र में साधारण व्यवहार की भाषा का ही आयोजन किया है। अलंकार रहित सपाट बयानी युक्त उनकी भाषा का साधारण रूप इस अंश में द्रष्टव्य है–

"पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उसका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाजा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी जैसे पिंजड़े से निकल कर कमरे में मानों खो गए। कभी मेज के नीचे घुस गए, कभी अलमारी के पीछे, अंत में इस लुका-छिपी से थककर, उन्होंने मेरी रद्दी कागजों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया।" भाषा के इस रूप में मोरों की क्रीड़ाएँ, उनका डर नए परिवेश से पहचान आदि स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त हो गए हैं।

नोट

इसके साथ ही लेखिका ने अति सुंदर आलंकारिक भाषा का चित्रात्मक सौंदर्य के साथ प्रयोग किया है। मोरों के आगमन पर अन्य जीव-जंतुओं में क्या प्रतिक्रिया होती है, इसकी सूक्ष्म अभिव्यक्ति लेखिका ने अप्रस्तुत-विधान संजोकर की है—"दोनों नवागंतुकों ने पहले से रहने वालों में वैसा ही कुतूहल जगाया, जैसा नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े और उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटर्गूं-गुटर्गूं की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम से बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछल-कूद मचाने लगे। तोते मानो भली-भाँति देखने के लिए एक आंख बंद करके उनका निरीक्षण करने लगे। ताम्रचूड़ झूले से उतरकर और दोनों पंखों को फैलाकर शोर करने लगा। उस दिन मेरे घर में मानो भूचाल आ गया।"

महादेवी के उपर्युक्त उद्धरणों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी भाषा का रूप चाहे साधारण हो या आलंकारिक, उसमें सर्वत्र एक तरलता एवं प्रबल भाव-संप्रेषणीयता निहित रहती है तथा चित्रोपमता एवं मार्मिकता का समावेश भी स्वयमेव हो जाता है।

आलंकारिक एंव चित्रात्मक बिंबों के साथ महादेवी ने पौराणिक प्रतीकों का भी प्रयोग किया है जो उनके रेखाचित्र के पात्रों को विशिष्टता प्रदान करते हैं। नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम राधा रखा गया। सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीक है कुब्जा जिसका नाम ढूँढ़ जैसे पंजों पर डगमगा कर चलने के कारण रखा गया। इस प्रतीक को अधिक व्यापक संदर्भ देते हुए तथा वर्णनात्मकता से बचने के लिए महादेवी ने लिखा है—"कुब्जा नाम के अनुरूप स्वभाव से भी वह कुब्जा प्रमाणित हुई।"

उन्होंने इस रेखाचित्र में गद्य शैली के कथात्मक रूप का प्रयोग किया है। इसलिए उनकी भाषा में एकाध स्थल पर व्यंग्यात्मकता भी आ गई है। जो हमारे समाज के यथार्थ को स्पष्ट करती हुई आज की अमानवीय स्थितियों पर कटु व्यंग्य प्रहार करती है—"हमारे देश में अस्पताल साधारण जन को अंतिम यात्रा में संतोष देने के लिए ही तो हैं किसी प्रकार घसीटकर, टांगकर उस सीमा-रेखा में पहुंचा आने पर बीमार और उसके परिचारकों को एक अनिर्वचनीय आत्मिक सुख प्राप्त होता है। इससे अधिक पाने की न उसकी कल्पना है, न मांग। कम-से-कम इस व्यवस्था ने अंतिम समय मुख में गंगाजल, तुलसी, सोना डालने की समस्या तो सुलझा ही दी है।" भाषा का यह सशक्त रूप हमारे समाज में मानवीयता के घटते सतर का साक्षात् प्रतिबिंब है।

शैली में एकाध स्थल पर उन्होंने संवादों का भी आश्रय लिया है जो कि एकलस्वरूप के हैं, यथा—"घर पहुँचने पर सब कहने लगे, तीतर है, मोर कहकर ठग लिया है। कदाचित अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा "मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं।" है तो पक्षी ही। और तीतर-बटेर क्या लंबी पूंछ न होने के कारण उपेक्षा योग्य पक्षी हैं?"

निष्कर्षत: नीलकंठ रेखाचित्र में रेखाचित्र के तत्त्वों का संपूर्ण एवं सफल समावेश हुआ है। महादेवी की काव्यात्मक शैली उनकी आत्मीय अनुभूतियों से मिलकर और निखर उठी हैं जिससे नीलकंठ का चरित्र किसी मानव की भाँति विशिष्ट और विस्मरणीय बन गया है।

8.1.2 गिल्लू

चरित्रगत विशेषताएँ

गिल्लू गिलहरी शिशु-रूप में महादेवी को प्राप्त हुआ था जो घोंसले से गिर पड़ा था और कौओं का आहार बनने वाला था। उस समय की उसकी शिशु अवस्था का वर्णन करते हुए महादेवी ने उसका चित्रांकन इन शब्दों में किया है—"रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हें से मुंह पर लगाई, पर मुंह न खुल सका और दूध की बूंदें दोनों ओर ढुलक गईं। कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुंह में एक बूंद पानी टपकाया जा सका। तीसरे

नोट

दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उंगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले कांच के मोतियों जैसी आंखों से इधर-उधर देखने लगा।" उपर्युक्त वर्णन उसकी शैशवावस्था का है। महादेवी वर्मा ने उसके बाह्य रूप के संबंध में अधिक नहीं लिखा है। तीन-चार मास में जब वह बड़ा हुआ तो उसके रूप-रंग का तनिक संकेत लेखिका इन शब्दों में देती हैं–"तीन चार मास में उसके स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूंछ और चंचल चमकीली आंखें सबको विस्मित करने लगीं।"

उसका नन्हा शरीर होने पर भी वह बेहद चंचल था, उसकी शरारतों को बंद करने के लिए महादेवी उसको एक लंबे लिफाफे में इस प्रकार रख देती थीं कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त उसका शेष लघु शरीर उस लिफाफे के भीतर ही बंद रहता। महादेवी उसके क्रिया-कलापों का वर्णन करती हुई लिखती हैं–"इस अद्‌भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर अपनी चमकीली आँखों से मेरा क्रिया-कलाप देखा करता। भूख लगने पर चिक-चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।"

गिल्लू के आंतरिक गुणों में सबसे अधिक सराहनीय उसकी तीव्र बुद्धि और समझ थी। लेखिका का पालित होने के कारण वह लेखिका से पुत्रवत् स्नेह करता था और जिस प्रकार बालक अपनी माता का ध्यान बार-बार आकर्षित करने के लिए विभिन्न बालक्रीड़ाएँ करते हैं, उसी प्रकार वह भी लेखिका का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए उनके पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक वे उसे पकड़ने के लिए न उठतीं। लेखिका को चौंकाने के लिए वह कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

लेखिका के प्रति उसका स्नेह कितना गहन था, इसका प्रमाण इस घटना से मिलता है–जब लेखिका ने उसके बड़े होने पर अन्य गिलहरियों के संग क्रीड़ा करने के लिए उसे मुक्त कर दिया तथापि वह लेखिका को छोड़कर नहीं गया। लेखिका के बाहर जाने के समय वह गिलहरियों के संग दिन-भर खेलता किन्तु लेखिका के आने के समय पर ठीक चार बजे कमरे के भीतर उपस्थित होता। इतना ही नहीं, उसे महादेवी की रुग्णावस्था में उनके कष्ट का भी बोध था, "मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।"

उसके स्नेह और समझदारी ने ही उसे लेखिका के अधिक निकट ला दिया था। महादेवी के प्रति उसकी आत्मीयता जीवन के अंतिम क्षणों तक बनी रही। उसने शैशवावस्था में लेखिका के स्नेह स्पर्श से पुनर्जीवन पाया था, उसी स्नेह-स्पर्श की उष्णता में उसने अपना मरण भी प्राप्त किया। "गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया, न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वही उंगली पकड़कर मेरे बिस्तार पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उंगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणावस्था में पकड़ा था।"

रेखाचित्रों के तत्वों के आधार पर समीक्षा

वर्णित पात्र संबंधी संस्मरणः गिल्लू नामक इस नन्हीं गिलहरी के प्रति महादेवी के हृदय में भी ममत्व एवं स्नेह गहनता से विद्यमान था। इसी के कारण उसके दुस्साहस को भी वे स्नेह से स्मरण करती हुई उसका एक संस्मरण सुनाती है–"मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परन्तु उनमें से किसी को मेरे पास मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई हो, ऐसे मुझे स्मरण नहीं आता। गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आंगन की दीवार तथा बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।"

नोट

घटनाओं का आधार: गिल्लू गिलहरी के रेखाचित्र में एकाध स्थल पर ही महादेवी ने घटना का आश्रय लिया है। गिल्लू उन्हें कैसे प्राप्त हुआ, इस घटना को वे कथात्मक शब्दों में अंकित करती है—"अचानक एक दिन सवेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा कि कौवे गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ-छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है, एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित। × × × मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का एक छोटा-सा बच्चा है, जो संभवत: घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं। काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अत: वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था। सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अत: ऐसे ही रहने दिया जाए। परन्तु मन नहीं माना—उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया।"

रेखाचित्र में घटनाओं का आश्रय अथवा उनकी पृष्ठभूति वर्णित पात्र के चरित्र की विशेषताओं को उभारने के लिए ली जाती है। लेखिका गिल्लू में आत्मीयता, स्नेह एवं सेवाभाव को दर्शाने के लिए स्थाल पर अपने मोटर दुर्घटना में आहत होकर अस्पताल में कुछ दिन रहने की घटना को पृष्ठभूमि में लेती हैं तथा अपनी अस्वस्थता में गिल्लू का परिचारिका के समान नन्हें-नन्हें पंजों से उनका सिर सहलाने का वर्णन करती हैं।

चित्रात्मक एवं सांकेतिक शैली: चित्रात्मकता रेखाचित्र का अनिवार्य गुण है जिसके द्वारा लेखक वर्णित पात्र की रूप-रेखा खींचता है। गिल्लू के उपचार के दौरान उसके शैशव-जनित क्रियाओं का चित्र लेखिका ने इन शब्दों में अंकित किया है—"कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुंह में एक बूंद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उंगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले कांच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।"

शैली में सांकेतिक गुण का प्रयोग भी महादेवी ने किया है। गिल्लू के यौवन-आगमन का सीधे-वर्णन न करके वे सांकेतिक शैली प्रयोग करती है, "फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीलम चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक-चिक करके न जाने क्या कहने लगीं।"

भावात्मक शैली का गुण भी इस रेखाचित्र में दर्शनीय है जो वर्णित पात्र के प्रति रेखाचित्रकार की आत्मीयता का तथा उसके बिछुड़ने पर उसके दु:ख की अभिव्यक्ति करने में सक्षम है, "सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी, इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासन्ती दिन जुही के पीताभ छोटे फूल में खिलजाने का विश्वास मुझे संतोष देता है।"

इस प्रकार प्रस्तुत रेखाचित्र में शैली के तीनों गुण—चित्रात्मकता, भावात्मकता एवं सांकेतिकता प्राप्त होते हैं।

भाषा वैशिष्ट्य: रेखाचित्रों के अनुरूप महादेवी ने प्राय: व्यवहारोपयोगी किन्तु भावानुकूल प्रवाहिनी भाषा का प्रयोग किया है। इसमें प्राय: तद्भव शब्दों एवं साधारण वाक्य-बंधों का प्रयोग किया गया है, यथा—

"आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कालेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।"

भाषा में काव्यात्मक गरिमायुक्त एवं माधुर्य युक्त तत्सम शब्दों का प्रयोग भी महादेवी ने कुछ स्थलों पर किया है। ऐसे प्रयोग उनकी भाषा शैली को विविधता प्रदान करते हैं, यथा—"सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया जो इस लता की सघन हरितिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते की कंधे पर कूदकर मुझे चौका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।"

नोट

उपर्युक्त उद्धरण में भाषा का तेवर अत्यन्त कोमल संवेदनायुक्त है किन्तु भाषा का हास्य-व्यंग्यात्मक रूप भी इस रेखाचित्र में मुखर हो उठा है जो लेखिका के भाषिक प्रयोगों को मर्मस्पर्शिता प्रदान करने के साथ-साथ सफल भी बना रहा है। "यह काकभुशुण्डि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित। हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेह इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौआ और कांव-कांव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रेखाचित्र के स्वरूप संबंधी सभी तत्वों का समावेश इस रेखा चित्र में हुआ है। चित्रात्मकता एवं भावात्मकता तो इस रेखाचित्र की शैली के विशेष गुण हैं ही, रेखाचित्र में संस्मरणात्मकता एवं घटनाओं का आश्रय लेकर लेखिका ने इसे न केवल वर्णनात्मक बोझिलता के दोष से बचाया है, अपितु इसमें किंचित् रोचकता का समावेश भी कर दिया है। भाषा पर तो महादेवी वर्मा का अप्रतिम अधिकार है ही।

स्व-मूल्यांकन (Sefl Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका ········ भी गया था।
2. उसका नन्हा शरीर होने पर भी वह बेहद चंचल था, उसकी शरारतों को बंद करने के लिए महादेवी उसको एक ········ में इस प्रकार रख देती थी कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त उसका शेष लघु शरीर उस लिफाफे के भीतर ही बंद रहता।
3. गिल्लू नामक इस नन्हीं गिलहरी के प्रति महादेवी के हृदय में भी ········ गहनता से विद्यमान था।

8.1.3 सोना हिरनी

चरित्रगत विशेषताएँ

सोना हिरनी के चरित्र की अनेक विशेषताओं को महादेवी वर्मा ने उसकी जातिगत विशेषताओं के संदर्भ में तथा उसके अपने अन्य गुणों के आधार पर चित्रांकित किया है। सोना के शैशवकाल में उसके बाह्य रूप का चित्रण करती हुई वे लिखती हैं "सुनहरे रंग के रेशमी लच्छों की गांठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था, छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती थी तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। उनमें प्रसुप्त गति की बिजली की लहर आँखों में कौंध जाती थी।"

लेखिका का संरक्षण एवं पालन-पोषण पाकर सोना हिरनी बड़ी होने लगी। वर्ष भर के बाद सोना जब पूर्ण हिरनी का रूप धारण करने लगी तो उसके बाह्य रूप में सौन्दर्यमय परिवर्तन उपस्थित हुआ। युवा हरिणी के रूप में लेखिका ने उसके बाह्य रंग-रूप का चित्र इस प्रकार खींचा है–

"वर्ष भर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएं ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टांगें अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गई। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई। पीठ में भराव वाला उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखाई देने लगी। परन्तु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जल कोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।"

नोट

सोना बाह्यरूप से ही सुंदर और चंचल नहीं थी, उसके अंतर में भी विचित्र स्नेही गुणों का समावेश था। छात्रावास की छात्राएँ अथवा छोटे बच्चे अथवा महादेवी के पालतू पशु, उसने सभी से अपनापन जोड़ लिया था, छात्रावास की विद्यार्थिनियों की वह एक ऐसी प्रिय साथी बन गई थी कि जिसके बिना उनका किसी काम में मन नहीं लगता था। अपने कार्य करते-करते कोई छात्रा उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देती, कोई गले में रिबन बांध देती और कोई पूजा के बताशे खिला देती। छोटे बच्चों के साथ वह प्रसन्नता से खेलती रहती। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर उसे पुकारते और वह उनके ऊपर छलांग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। उसने महादेवी के पालतू पशुओं गोधूली, बिल्ली, फ्लोरा कुतिया और कुत्ते हेमंत बसंत के साथ भी मैत्री कर ली। वह घास पर लेट जाती और कुत्ते-बिल्ली उस पर उछलते, कूदते रहते। कोई उसके कान खींचता, कोई पैर और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते तब वह अचानक चौकड़ी भरकर उन्हें चौंकाती हुई भागती और उसके मित्र गिरते-पड़ते उसके पीछे भागते-फिरते।

सोना के पूर्ण हरिण बन जाने पर उसमें स्वजाति के संसर्ग की नैसर्गिक इच्छा जागने लगी थी जो धीरे-धीरे उसके हृदय की रिक्तता में परिवर्तित होने लगी थी। इस रिक्तता को सोना ने फ्लोरा कुतिया के बच्चे को अपना ममत्व देकर भरा। सोना के स्नेही और हिंसा रहित स्वभाव को फ्लोरा ने भी समझ लिया था। लेखिका इन दो विजातीय पशुओं के परस्पर विश्वास और स्नेह की अभिव्यक्ति करते हुए सोना के ममत्व की अभिव्यक्ति इन शब्दों में करती है, "एक दिन देखा, फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गई है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चित लेटी हैं पिल्ले आँख बंद रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे। तब से सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच में लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा, हेमंत, बसंत या गोधूली को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी, परन्तु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।"

इन बच्चों पर उसका स्नहे यहीं तक सीमित नहीं था, उनके थोड़ा बड़े होने पर उसने अपनी क्रीड़ाओं में सम्मिलित कर लिया।

हिरण की आंखों में निश्छल स्नेह और विस्मय का भाव सदैव विराजमान रहता है। सोना जब छोटी थी तब उसे अपनी दूध की बोतल के प्रति भी स्नेहासक्ति थी। अपनी संरक्षिका के प्रति सोना में अत्यंत स्नेह विद्यमान था। अपने स्नेह का प्रदर्शन करने के लिए वह लेखिका के सामने या पीछे से छलांग लगाती और उनके सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। यह छलांग लगाते समय महादेवी को कहीं चोट न लगे, इसका ध्यान रखते हुए वह अपने पैरों को सिकोड़े रखती थी। उसके स्नेह की अभिव्यक्ति महादेवी इन शब्दों में करती हैं, "अनेक विद्यार्थिनियों की भारी-भरकम गुरुजी से सोना को क्या लेना-देना था। वह तो उसी दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी, जिन्होंने यत्नपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगाई थी।" वस्तुतः सोना हिरनी का चरित्रांकन करते हुए लेखिका ने उसके बाह्य स्वरूप के सौंदर्य के साथ उसके अंतर की गहन एवं कोमल संवेदनाओं का भी मानवीकरण कर दिया है जो कि इस रेखाचित्र को विशिष्ट एवं अविस्मरणीय बना देता है।

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर समीक्षा

इस रेखाचित्र के अंतर्गत भी उन सभी तत्वों का समावेश लेखिका ने किया है जो रेखाचित्र के स्वरूप-गठन हेतु अनिवार्य हैं–

वर्णित पात्र से सम्बंधित संस्मरणः लेखिका की पालित और शैशवावस्था से ही लेखिका के मातृवत् संरक्षण में होने के कारण लेखिका का भी सोना के प्रति अतिरिक्त स्नेह होना स्वभाविक ही था। सोना के अपने प्रति मूक स्नेह को अभिव्यक्ति करती हुई वे संस्मरण सुनाती है कि सोना अपनी पालिका के प्रति अपने स्नेह का प्रदर्शन विभिन्न

नोट

तरीकों से करती थी। जब महादेवी प्रांगण में खड़ी होतीं तो वह सामने से या पीछे से छलांग लगाती और उनके ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती उसकी इस छलांग को देख कर अन्य दर्शक डर जाते थे कि कहीं इस उछाल में उसके पैरों से लेखिका को चोट न लग जाए। किंतु वह समझदारी से छलांग लगाने के दौरान अपने पैरों को इस प्रकार समेट लेती थी तथा उसके सिर के ऊपर से इतनी ऊँचाई से छलांग लगाती थी कि महादेवी को चोट लग ही नहीं सकती थी। इसी प्रकार उसके स्नेह की अभिव्यक्तियों की अन्य क्रियाओं का वर्णन महादेवी इस संस्मरण के अंतर्गत करती है।–"भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुंह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डांटने पर वह अपनी बड़ी गोल और चकित आंखों से ऐसी अनिवर्चनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हंसी आ जाती।"

घटनाओं का आधार: रेखाचित्र में वर्णित पात्र के जीवन अथवा उसके चरित्र की विशिषताओं के अंकन हेतु महादेवी प्राय: उस पात्र के जीवन से संबंधित एकाध घटना का आश्रय लेती हैं जो कि उस पात्र को सम्पूर्ण रूप से जानने-समझने के लिए आवश्यक भी होती है। सोना के शिशु-वय में अपने घर में आगमन की घटना को शब्दांकित करते हुए महादेवी ने पाठकों की जिज्ञासा का भी समाधान किया है तथा इन मूक पक्षियों के प्रति मानव जाति की निष्ठुरता का भी संकेत किया है, यथा–"बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव समाज में आ पड़ी थी। प्रशांत वनस्थली में जब अलग भाव में रोमंथन करता हुआ मृगसमूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की मां सद्य प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्य:जात मृगशिशु तो भाग नहीं सकता था, अत: मृगी मां ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दे दिए। × × × पता नहीं, दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ उसके रक्त से सने और ठंडे स्तनों से चिपटे हुए शावक को जीवित उठा लाए। उनमें से किसी के परिवार की सद्गृहणियों और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिला कर दो-चार दिन जीवित रखा। × × × सुष्मिता बसु के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह अनाथ शावक को मुमूर्ष अवस्था में मेरे पास ले आई।"

सोना का अंत भी अत्यंत करुण था और महादेवी की अनुपस्थिति में उनके अभाव से अस्थिर होकर ही उसने स्तब्ध ता की स्थिति में अपने प्राण त्यागे थे। उसके करुण एवं मार्मिक अंत की घटना का वर्णन करते हुए वे लिखती हैं–

"इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसमें खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बांधना आरंभ कर दिया था। एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वह उसकी अंतिम सांस और अंतिम उछाल थी।"

शैलीगत विशेषताएँ: लेखिका ने इस रेखाचित्र में तरंग शैली को अपनाया है जिसमें विभिन्न भावों की अभिव्यक्ति गहन संवेदनशीलता एवं मर्मिकता के साथ होती है। लेखिका ने मूक प्राणियों के प्रति अपने ममत्व का परिचय देते हुए इनके कष्टों के पीछे मानव को उत्तरदायी माना है, "परंतु उस बेचारे हरिण शावक की कथा तो मिट्‌टी की ऐसी व्यथा-कथा है जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। वह न किसी दुर्लभ खान के अमूल्य हीरे की कथा है और न अथाह समुद्र के महार्घ मोती की। निर्जीव वस्तुओं से मनुष्य अपने शरीर का प्रसाधन मात्र करता है, अत: उनकी स्थिति में परिवर्तन के अतिरिक्त कुछ कथनीय नहीं रहता। परन्तु सजीव से उसे शरीर या अहंकार का जैसा पोषण अभीष्ट है, उससे जीवन-मृत्यु का संघर्ष है, जो सारी जीवन-कथा का तत्व है।"

इसी रेखाचित्र के अंतर्गत निबंधात्मक शैली का प्रयोग भी मिलता है जहाँ भाव एवं विचारों के साथ आलंकारिता का भी समावेश होता है उदाहरण द्रष्टव्य है–"संभवत: इसी से मनुष्य वाणी द्वारा परस्पर किए गए आघातों और सार्थक शब्दभार से पीड़ित अपने प्राणों पर इन भाषाहीन जीवों की स्नेह तरल दृष्टि का चंदन लेप लगाकर स्वस्थ और आश्वस्त होना चाहता है।"

नोट

रेखाचित्र की वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत किसी प्राकृतिक दृश्य, समाज अथवा देश की स्थिति का वर्णन किया जाता है। लेखिका ऋषियुगीन समाज में मृगों के पालने का उल्लेख करती हुई महाकवि कालिदास के अभिज्ञान शांकुतलम् का संदर्भ प्रयुक्त करती हैं, "सरस्वती वाणी से ध्वनित प्रतिध्वनित कण के आश्रम में ब्रह्मर्षियों-ऋषि-पत्नियों, ऋषि-कुमार-कुमारिकाओं के साथ मूक अज्ञान मृगों की स्थिति भी अनिवार्य है। मंत्रपूत कुटियों के द्वारा नीवारकण चाहने वाले मृग रुंध लेते हैं। विदा लेती हुई शकुन्तला का गुरुजनों के उपदेश-आशीर्वाद से बोझिल अंचल उसका अपत्यवत् पालित मृगछौना थाम लेता है।"

रेखाचित्र को सजीव बनाने के लिए उसके शैली-शिल्प की सबसे बड़ी विशेषता उसमें चित्रात्मकता एवं भावात्मकता का सौन्दर्य है जो निर्जीव चित्र को भी स्पंदनयुक्त बना देता है, यथा–"आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की घटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी, मुरज, जलतरंग आदि का वन्दवादन (आर्केस्ट्रा) बजाते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठाई, निशाना साधा और कई गाते-उड़ते पक्षी धरती पर ढेले के समान आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंचावाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुंदर पंजे टेढ़े हो गए हैं और किसी के इन्द्रधनुषी पंख बिखर गए हैं। क्षत्-विक्षत् रक्तस्नात उन मृत-अर्धमृत लघुगातों में न अब संगीत है, न सौन्दर्य, परन्तु तब भी मारनेवाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।"

भाषा-वैशिष्ट्य: महादेवी की गद्य भाषा में सहजता और सरलता का वह गुण है जिससे साधारण पाठक भी उसमें व्याप्त रसानुभूति का पूर्ण रसास्वादन कर पाता है। इन रेखाचित्रों में महादेवी मूक प्राणियों को अपने हृदय की सम्पूर्णता, संवेदना, सहानुभूति और प्रेम देती हैं, इसलिए भाषा का सहज रूप ही अपनाती हैं तथापि इस सहजता में भी कलात्मकता है जो मन को बांध लेती है। उनकी भाषा में चित्रात्मकता, भावात्मकता एवं पात्रानुकूलता है। उनकी भाषा-शैली में प्रचलित भाषा के सरल शब्दों, कहावतों तथा मुहावरों का प्रयोग एवं छोटे-छोटे वाक्यों तथा उपयुक्त शब्दों का चयन हैं, यथा–"सवेरे छात्रावास में विचित्र सी क्रियाशीलता रहती है, कोई छात्रा हाथ-मुँह धोती है, कोई बालों में कंघी करती है, कोई साड़ी बदलती है, कोई अपनी मेज की सफाई करती है, कोई स्नान करके भीगे कपड़े सूखने के लिए फैलाती है और कोई पूजा करती है। सोना के पहुँच जाने पर इस विविध कर्म-संकुलता में एक नया काम और जुड़ जाता था। कोई छात्रा उसके माथे पर कुमकुम का बड़ा-सा टीका लगा देती, कोई गले में रिबन बाँध देती और कोई पूजा के बताशे खिला देती।"

इसके साथ महादेवी की भाषा में आलंकारिकता का समावेश भी अनायास हो जाता है, उनकी कोमल संवेदनाएँ उनकी भाषा को स्वयमेव काव्यात्मक बना देती हैं, यथा–"जिन्होंने हरातिमा में लहराते हुए मैदान पर छलांग भरते हुए हिरण के झुंड को देखा होगा, वही उस अद्भुत, गतिशील सौन्दर्य की कल्पना कर सकते हैं। मानो तरल मरकत के समुद्र में सुनहले फेनवाली लहरों का उद्वेलन हो परन्तु जीवन के इस चल-सौन्दर्य के प्रति शिकारी का आकर्षण नहीं रहता।"

महादेवी अपने विचारों एवं अनुभूतियों को सूक्ति शैली में अभिव्यक्ति देती हैं–

1. परंतु उस बेचारे हरिण शवक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है।
2. पशुजगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि हैं।

इस प्रकार महादेवी की अभिव्यक्ति-भाषा अत्यन्त सहज, सुगम तथा साधारण स्तर के पाठकों के लिए भी बोधगम्य है। निष्कर्षत: इस रेखाचित्र में सोना हिरनी का रेखाचित्र अपने सम्पूर्ण बाह्य आंतरिक विशिष्टताओं के साथ उजागर हुआ है। महादेवी वर्मा के शिल्पविधान में वैविध्ययुक्त शैलियों एवं प्रयोगों ने इस रेखाचित्र को संवेदना और संरचना दोनों दृष्टियों से अप्रतिम बना दिया है।

नोट

8.1.4 दुर्मुख खरगोश

चरित्रगत विशेषताएँ

दुर्मुख खरगोश एक नन्हा कोमल-सा खरगोश था किन्तु उसकी विशेषता यह थी कि वह न केवल बाह्य रूप से अन्य खरगोशों से भिन्न था अपितु उसका स्वभाव एवं क्रियाएँ तक शशक-जनित सामान्य स्वभाव एवं प्रवृत्तियों से भिन्न थी। उसकी बाह्य रूप-रेखा का वर्णन करते हुए महादेवी ने उसकी विशेषताओं को वर्णित करते हुए लिखा कि यद्यपि वह अन्य खरगोशों के समान ही प्रियदर्शन था किन्तु उसमें एक विशेषता यह थी कि उसका शरीर कुछ बड़े-बड़े घने और चमकीले रोमों से आच्छादित था, उसकी पूंछ छोटी और सुंदर तथा पंजे साफ थे जिनसे वह प्रायः अपना मुख साफ करता रहता था। उसके कान विदेशी खरगोशों की भांति आकार में यद्यपि कम लंबे थे तथापि सुडौल थे और उनके सीधे खड़े रहने में एक अलग आकर्षण था। उसके कान इस बात में भी विशिष्ट थे कि एक कान काला था और एक सफेद! उसके काले कान के ओर के नेत्र का वर्ण श्याम था तथा सफेद कान के ओर का नेत्र रक्तिम था। इस खरगोश की दोनों आँखों के विपरीत वर्णों का यह वैशिष्ट्य उसे अन्य खरगोशों से भिन्नता प्रदान करता था क्योंकि सामान्यतः सफेद खरगोशों की आँखें लाल होती हैं और काले या चितकबरे खरगोशों के नेत्र काले होते हैं। उसकी आँखों को देखकर एक ऐसा प्रतीत होता था मानो दो भिन्न खरगोशों के आधे-आधे शरीर को जोड़कर उसको निर्मित किया गया है और दूसरी ओर रूबी का चमकीला मनका जड़ दिया गया हो। उसके आंतरिक स्वभाव का वर्णन करते हुए महादेवी बताती हैं कि यद्यपि खरगोश निरीह जीव होता है और शीघ्र ही भयभीत और आंतकित हो जाने के कारण वह सतर्क रहता है। न वह किसी को दांतों से कांटता है और न ही पंजे होने पर नोचता। किन्तु शशक-शावक के रूप में दुर्मुख इस स्वभाव से पूर्णतः विपरीत था। यदि उसे दूध-भात देर से दिया जाता तो वह पंजे से कटोरी उलट देता और देने वाले के हाथ या पैर में अपने नन्हें और पैने दांत चुभा देता और कमरे भर में दौड़-दौड़कर जो कुछ उसकी पहुँच में होता, उसे फेंकता-उलटता हुआ घूमता। उसके भय के कारण कीट-पतंगे भी लेखिका के कमरे में प्रवेश करने का साहस नहीं कर पाते। दुर्मुख बिल्ली और कुत्तों से भी नहीं डरता था। यदि महादेवी के ये पालतू पशु उनके कमरे के जालीघर दरवाजे के बाहर खड़े हो जाते थे, तो उन्हें देखकर डरकर भागने के स्थान पर क्रोधित मुद्रा में जाली के पास आकर उन्हें घूरता अथवा पिछले दोनों पैर पर खड़ा होकर मुख से विचित्र क्रोध भरा स्वर निकालता।

दुर्मुख के इसी क्रोधी स्वभाव ने उसे किसी भी अन्य पशु-पक्षी से मेल-मिलाप नहीं करने दिया। अपने बैरयुक्त स्वभाव के कारण वह हर जीव-जंतु पर झपटता और उन्हें काटने का प्रयास करता। उसके इस कटखन्ने-स्वभाव से भय खाकर कोई भी पक्षी उसके समक्ष दाना चुगने का साहस भी नहीं कर पाता था। जब उसके संग-साथ के लिए मादा शशक-हिमानी आई तो उसने स्वजाति की संगिनी के प्रति भी वही दुष्ट क्रोधी भाव अपनाया। यद्यपि हिमानी के सान्निध्य से उसके स्वभाव में थोड़ा-सा अंतर आया किन्तु हिमानी के बच्चे उत्पन्न होते ही वह पहले से भी अधिक विध्वसंक हो गया तथा अपने बच्चों के प्रति भी सदस्यता न अपना सका। प्रायः सृष्टि के हर प्राणी में अपनी संतान के प्रति ममता होती है जो कि अन्यतम नैसर्गिक भावना है। किन्तु दुर्मुख में इस कोमल भावना का भी नितांत अभाव था या यों कहें कि उसके बैर-द्वेष और क्रोध ने मिलकर उसके अपत्यस्नेह को उभरने से पहले ही नष्ट कर डाला। इसी कारण स्वयं पिता होकर भी उसने अपने दो शावकों की कोमल गर्दन अपने दांतों से क्षत-विक्षत कर डाली कि वे बचाए ही न जा सके। इस प्रकार उसका कलहप्रिय स्वभाव एवं चिर-लड़ाकू प्रवृत्ति जो उसके अंत का भी कारण बनी, वस्तुतः दुर्गुण होकर भी यह उसके चरित्र की अद्‌भुत विशेषता ही थी।

रेखाचित्रों के तत्वों के आधार पर समीक्षा

वर्णित पात्र से संबंधित संस्मरण: वर्णित पात्र के चरित्र की रेखाओं को स्पष्ट करने के लिए लेखिका उससे अपने स्नेह की अभिव्यक्ति करती हुई संस्मरण सुनाती है, पालिका होने के कारण महादेवी के हृदय में तो उसके लिए

नोट

स्नेह भाव था किंतु अत्यधिक क्रोधी होने के कारण वह उन्हें भी कदाचित् अपना स्नेह नहीं दे सका। उसके चरित्र की रेखाओं को स्पष्ट करते हुए महादेवी ने यह संस्मरण अंकित किया है–"अंत में यह सोचकर कि दुर्मुख के क्रोधी स्वभाव के कारण सम्भवत: उसका स्वजातिशून्य अकेलापन है, मैं नखास कोने में बड़े मियां से एक शशक-वधू खरीद लाई। वह हिम-खण्ड जैसी चमकीली, शुभ्र और लाल विद्रुम जैसी सुंदर आंखों वाली थी, इसी से उसे हम हिमानी कहने लगे। पर मेरी धारणा कि दुर्मुख उसके साथ शिष्ट खरगोश के समान व्यवहार करेगा भ्रांत सिद्ध हुई। अपनी काली-लाल आंखों में मानो धूम और ज्वाला मिलाकर आग्नेय दृष्टि से उसने नवागता को देखा और फिर आक्रमण कर दिया। बड़ी कठिनाई से हम उस बेचारी की रक्षा कर सकें।" उसके क्रोधी स्वभाव तथा अपने ही बच्चों पर प्राणघातक आक्रमण करने के कारण महादेवी ने उसे एक छोटे जालीघर में अन्य पशु-पक्षियों से अलग करके बंद कर दिया ताकि वह उन पर आक्रमण न कर सके। किंतु उसने इसका भी उपाय ढूंढ़ लिया। उसने धरती के नीचे बड़े जालीघर तक लंबी सुरंग खोद डाली और वहाँ पर जाकर वहाँ के प्राणियों से लड़ता। जब माली ने उस द्वार को बंद कर दिया तो उसने नई सुरंगें खोद डालीं और जाली घर को रणक्षेत्र बना डाला। उसके पुत्र भी इसका स्नेह न पा सके और उसके क्रोध का शिकार होते रहे। इस तथ्य का वर्णन करती हुई महादेवी कहती हैं, "यदि मृत्यु उसे न जीत लेती तो वह क्रम निरंतर चलता रहता।"

घटनाओं का आधार: शशक-शावक के रूप में दुर्मुख लेखिका को कैसे प्राप्त हुआ इसकी पृष्ठभूमि में एक घटना का वर्णन करते हुए महादेवी ने लिखा है, "उस शशक दुर्वासा की प्राप्ति एक दुर्योग ही कही जाएगी। पड़ोस के एक सज्जन दम्पति ने खरगोश का एक जोड़ा पाल रखा था, जिसने उसके आंगन में मिट्टी के भीतर सुरंग जैसा अपना निवास बना लिया था संध्या होते ही गृहणी उस सुरंग के द्वार पर डलिया ढंककर उस पर सिल रख देती थी। एक रात वह सुरंग का द्वार मूंदना भूल गई और निरंतर ताक-झांक में रहने वाली मार्जारी ने बिल में घुसकर दोनों खरगोशों और उनके तीन बच्चों को क्षत-विक्षत कर डाला। केवल एक शशक-शिशु माँ के पैरों के बीच छिपा रहने के कारण जीवित बच गया।"

इसी प्रकार उसका अंत भी महादेवी ने घटना अथवा दुर्घटना का आश्रय लेकर ही किया है, "फिर एक दिन जाकर देखा कि दुर्मुख निश्चेष्ट और ठंडा पड़ा है और एक संपोले की पूंछ की ओर का भाग उसके दाँतों में दबा हुआ है। संपोले के मुख की ओर का भाग उसके पंजों के नीचे था।" जाली में प्रवेश कर गए सांप के बच्चे से बचने के स्थान पर दुर्मुख ने अपनी लड़ाकू प्रवृत्ति के कारण आक्रमण कर दिया और उसके दशंन-विष का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

शैलीगत विशेषताएँ: महादेवी ने इस रेखाचित्र के प्रारंभ में निबंधात्मक शैली को अपनाया है। इसमें इतिवृत्तात्मकता भी है और आलंकारिकता भी। निबंधात्मक शैली के उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित उद्धरण द्रष्टव्य है–"पैने दाँतों के दुरुपयोग में पटु खरगोश का दुर्मुख नाम रखकर भी हमने राम के दुष्ट गुप्तचार का कोई अपमान नहीं किया। परन्तु महर्षि दुर्वासा के नाम का ऐसा धृष्टतापूर्ण उपयोग करने के लिए मुझे उनकी सद्स्मृति से बराबर क्षमा याचना करनी पड़ी। वे महर्षि निर्वाण को प्राप्त होकर निर्विकार ब्रह्म में क्रोध की तरंगे उठा रहे हैं या किसी अन्य लोकवासियों को शाप से कंपायमान कर रहे हैं, यह जान लेने का कोई साधन नहीं है। सम्भवत: उक्त दृष्टि से यह जान लेने के उपरांत कि उस शशक की क्रोधी प्रकृति को व्यक्त करने का सामर्थ्य के बल उन्हीं के नाम में निहित हैं, इन्होंने मुझे क्षमा कर दिया है, अन्यथा मेरी घृष्टता अब तक शापमुक्त न रहती।"

दुर्मुख की कुप्रवृत्तियों को अंकित करते समय महादेवी ने कथात्मक शैली का भी आश्रय लिया है तथा इसमें सीधे भावाभिव्यक्ति के स्थान पर लाक्षणिक शब्दावली का प्रयोग भी प्रभावोत्पादकता के लिए किया है, यथा–"दुर्मुख ने पहले तो मिट्टी खोदकर अपने रहने के लिए सुरंग जैसा घर बनाया और उस निर्माण कार्य से अवकाश मिलते ही जालीघर के अन्य निवासियों से 'युद्ध देहि' कहना आरंभ किया।"

नोट

ग्रामीण मान्यताओं की अभिव्यक्ति के लिए भी महादेवी ने कथात्मक शैली का ही उपयोग किया है जो अशिक्षित ग्रामवासियों के भोले विश्वास का भी प्रतीक है, यथा–"मेरे माली का आज भी निश्चित मत है कि उस खरगोश पर पहलवान जी की छाया थी, नहीं तो भला कोई खरगोश सांप से लड़कर उसके टुकड़े कर सकता है। पहलवान की समाधि कहीं पास ही है और उनकी शक्ति की इतनी ख्याति है कि दूर-दूर से ग्रामवासी मनौतियाँ मनाने आते हैं।"

चित्रात्मकता के साथ भावात्मकता का गुण मिलकर शैली में एक अपूर्व सौंदर्य आ जाता है जिससे चित्र की प्राणवत्ता के साथ पाठकों से गहन संपृक्ति हो जाती है–"पर मुझे आज भी वह छोटा, मैगनोलिया के फूल-सा कोमल श्वेत शशक-शावक स्मरण हो जाता है जिसके जीवन के आरंभ में ही उस पर दुर्योग से मार्जारी की निष्ठुर छाया आ पड़ी थी। यदि वह अन्य शावक के समान खेलता-खाता मां की स्नेह छाया में बड़ा होता तो पता नहीं कैसा होता।"

भाषा-शैली: इस रेखाचित्र की भाषा-शैली में शब्दावली स्वरूप एवं गुणों की विविधता तो है ही, पौराणिक संदर्भों से युक्त करके तथा उनका प्रतीक रूप में विवेचन करके अपने शिल्प विधान को लेखिका ने विशिष्ट बना लिया है, यथा–"किसी को विश्वास न होगा कि बोलचाल के 'लड़ाकू' विशेषण से लेकर शुद्ध संस्कृत की दुमुर्ख, दुर्वासा जैसी संज्ञाओं तक का भार संभालनेवाला एक कोमल-प्राण खरगोश था। दुर्मुख से तो मैं स्वयं भी रुष्ट हूं। यह मर्यादा पुरुषोत्तम राम का गुप्तचर था और रजक द्वारा सीता संबंधी अपवाद की बात राम से कहकर उसने सीता-निर्वासन की भूमिका घटित की थी।" भाषा का सहज, सरल एवं कलात्मक प्रयोग प्रायः सम्पूर्ण रेखाचित्र में प्राप्त होता है। सहज वर्णनात्मक सरल एवं प्रवाहमयी भाषा का सौंदर्य इस उद्धरण में द्रष्टव्य है, "उसके झपटने और काटने के कारण कबूतर मोर आदि का दाना चुगने के लिए नीचे उतरना कठिन हो गया। वे तब तक अपने अड्डों और फूलों पर बैठे रहते, जब तक दुर्मुख अपने भोजन से तृप्त होकर सुरंग घर में विश्राम के लिए न चला जाता। कभी-कभी सुरंग में भी जब उसे अपने प्रतिद्वंद्वियों के नीचे उतरने की आहट मिल जाती तब वह अचानक उन पर आक्रमण कर किसी की गर्दन और किसी के पैरों में अपने पैने दांत गड़ा देता और वे आर्तस्वर में कोलाहल करते हुए ऊपर उड़ जाते।"

एकाध स्थल पर लेखिका ने दृश्य-बिंब, वर्ण-बिंब एवं गद्य-बिंब का संश्लिष्ट प्रयोग किया है। उदाहरण प्रस्तुत है–"कदम्ब के फूले हुए वे कोमल बच्चे रक्त से रंग-बिरंगे हो उठते। हिमानी भी अपनी संतान की रक्षा के प्रयत्न में नित्य ही घायल होने लगी। लोरैक्सन मरहम, नेबासल्फ पाउडर, रुई आदि की गंध से अशोक वृक्ष की छाया में मालती लता से छाया चिड़ियाघर भी अस्पताल का स्मरण दिलाने लगा।"

निष्कर्षतः दुर्मुख खरगोश का रेखाचित्र न केवल उसकी चरित्रगत विशिष्टताओं के आधार पर विशिष्ट है अपितु उसमें प्रयुक्त विविध संस्मरण एवं घटनाओं के यथास्थल नियोजन शैली की विविधता, भाषा के विभिन्न स्वरूपों, चित्रमयता एवं आलंकारिकता ने मिलकर इसके शिल्प को भी अद्भुत सौंदर्य से युक्त कर दिया है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. किसने महादेवी के पालतू पशुओं गोधुली बिल्ली, फ्लोरा कुतिया और कुत्ते हेमंत बसंत के साथ भी मैत्री कर ली?

   (*a*) दुर्मुख खरगोश   (*b*) गिल्लू

   (*c*) नीलकंठ   (*d*) सोना हिरनी

5. सोना हिरनी का अंत कैसे हुआ था?

   (*a*) अत्यन्त शांति के साथ (*b*) अत्यन्त आप्रकृतिक रूप में

   (*c*) अत्यन्त करुणा के साथ (*d*) या इनमें से कोई नहीं

6. दुर्मुख के किस स्वभाव ने उसे अन्य पशु पक्षियों से मेल मिलाप नहीं करने दिया?

   (*a*) चंचल स्वभाव ने (*b*) चिड़चिड़े स्वभाव ने

   (*c*) कटखन्ने स्वभाव ने (*d*) या उपरोक्त में से कोई नहीं

नोट

8.1.5 गौरा गाय

चरित्रगत विशेषताएँ: गाय का स्वरूप ही ऐसा होता है कि उसे करुणा एवं ममता की प्रतिमूर्ति माना जाता है। उसके हृदय में अपने पालनकर्त्ता के प्रति स्नेह और विश्वास का भाव सदैव विद्यमान रहता है। गौरा गाय भी ऐसी ही पशु थी जो मानव से अधिक स्नेही, त्यागी एवं सहिष्णु सिद्ध हुई। जिसने मानव के कुकृत्यों को भी शांत भाव से सहा चाहे उसका परिणाम स्वयं उसके मरण में ही हुआ। गौरा गाय की बाह्य रूप-रेखा को महादेवी ने इन शब्दों में रूपांकित किया है–

"पुष्ट लचीले पैर, भरे पुट्ठे, चिकनी भरी हुई पीठ, लम्बी-सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे-छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की दो अधखुली पंखुड़ियों जैसे कान, लंबी और अंतिम छोर पर काले सघन चामर का स्मरण दिलाने वाली पूंछ, सब कुछ सांचे में ढला हुआ-सा था। गाय को मानो इटैलियन मार्बल में तराशकर उस पर ओप दी गई हो। स्वस्थ पशु के रोमों की सफेदी में एक विशेष चमक होती है। गौरा की उज्ज्वलता देखकर ऐसा लगा मानो उसके रोमों पर अभ्रक का चूर्ण मल दिया गया हो जिसके कारण जिधर आलोक पड़ता था, उधर विशेष चमक उत्पन्न हो जाती थीं।"

गौरा देखने में तो प्रियदर्शिनी थी ही किंतु उसकी बड़ी-बड़ी काली आंखों का सौंदर्य और उसमें आत्मीय विश्वास का भाव उसे पूजनीय बना देता है। गौरा में अन्य पशु-पक्षियों के प्रति भी अत्यंत स्नेह एवं आत्मीयता थी। वे सबसे इतनी हिल-मिल गईं कि वे सब उसे अपनी सखी की भांति मानकर उससे खेलते रहते। कुत्ते और बिल्ली उसके पेट के नीचे और पैरों के बीच में क्रीड़ा करते। पक्षी उसकी पीठ और माथे पर बैठकर उसके कान और आंखें खुजलाते। उनकी क्रीड़ा के समय वह स्थिर भाव से खड़ी होकर और आंखें मूंदकर उनके सान्निध्य-स्नेह का आनंद लेती रहती। उसे अपनी पालनकर्त्ता के प्रति भी उतना ही स्नेह था। निकट जाने पर वह सहलाने के लिए गर्दन बढ़ा देती और हाथ फेरने पर अपना मुख कंधे पर रखकर मानो निश्चित होकर आंखे मूंद लेती। लेकिन जब उससे दूर जाने लगते तो उदास होकर गर्दन घुमा-घुमाकर देखती रहती। गौरा गाय की ममता मात्र अपने बछड़े के लिए ही नहीं था, अपितु लेखिका के चिड़ियाघर के अन्य पशु-पक्षियों के प्रति भी थी। वह उन्हें अपना दूध देकर प्रसन्न होती थी और जिस दिन दूध पीने के लिए उनके आने में विलम्ब होने लगता तो रंभा-रंभा कर मानो उन्हें पुकारती जैसे मां अपने बच्चों को बुलाती है। गौरा की सहिष्णुता भी अभूतपूर्व थी। ग्वाले द्वारा द्वेषवश सुई खिला दिए जाने पर उसकी मौत असमय ही निश्चित हो गई थी। दिन-प्रतिदिन उसे शक्ति के इंजेक्शन दिए जाते। "वह इंजेक्शन भी अपने आपमें 'शल्यक्रिया' जैसा यातनामय हो जाता था। पर गौरा अत्यंत शांति से बाहर और भीतर दोनों ओर की चुभन और पीड़ा सहती थी। केवल कभी-कभी उसकी सुंदर पर उदास आंखों के कोनों में पानी की दो बूंदे झलकने लगती थीं।"

नोट

रेखाचित्र के तत्वों के आधारों पर समीक्षा

वर्णित पात्र से संबंधित संस्मरण: गौरा गाय के प्रति स्नेह का अतिरेक तो लेखिका में था ही, गौरा गाय के साथ अन्य पशु पक्षियों के अद्‌भूत क्रिया-कलापों का वर्णन करते हुए वह संस्मरण सुनाती हैं जो अद्‌भूत दृश्य को भी उपस्थित करता है, "अब हमारे घर में मानों दुग्ध-महोत्सव प्रारंभ हुआ। गौरा प्रात:सायं बारह सेर के लगभग दूध देती थी, अत: लालमणी के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आस-पास के बालगोपाल से लेकर कुत्ते-बिल्ली तक सब पर मानो दूधों नहाओं का आर्शीवाद फलित होने लगा। कुत्ते-बिल्लियों ने तो एक अद्‌भूत दृश्य उपस्थित कर दिया था। दुग्ध-दोहन के समय वे सब गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते और महादेव उनके आगे उनके खाने के लिए निश्चित बर्तन रख देता। किसी विशेष आयोजन पर आमंत्रित अतिथियों के समान वे परम शिष्टता का परिचय देते हुए प्रतीक्षा करते रहते। फिर नाप-नापकर सबके पात्रों में दूध डाल दिया जाता, जिससे पीने के उपरांत वे एक बार फिर अपने अपने स्वर में कृतज्ञता ज्ञापन-सा करते हुए गौरा के चारों ओर उछलने-कूदने लगते।"

उसके अंत पर लेखिका तथा उनके सभी परिचारकों एवं परिजनों को अत्यंत दुख हुआ था क्योंकि वह न केवल उनके लिए प्रियजनों के समान आत्मीय तथा उसके दूध से मानव से लेकर जीव-जंतुओं तक का पोषण हो रहा था, बल्कि उसकी मौत का कारण एक मानव का द्वेष था। उसके अंत का स्मरण कर लेखिका लिखती हैं–"मैंने बहुत से जीव-जंतु पाल रखे हैं, अत: उनमें से कुछ को समय-असमय विदा देनी ही पड़ती है। परंतु ऐसी मर्मव्यथा का मुझे स्मरण नहीं है। इतनी हष्ट-पुष्ट, सुंदर, दूध-सी उज्ज्वल पयस्विनी गाय अपने इतने सुंदर-चंचल वत्स को छोड़कर किसी भी क्षण निर्जीव और निश्चेष्ट हो जाएगी, यह सोचकर ही आंसू आ जाते थे।"

घटना का आश्रय: इस रेखाचित्र में घटना का आश्रय लेखिका ने गौरी के अपने घर में आगमन को अंकित करने के लिए लिया है। गाय हिंदू धर्म में पूजनीय है इसलिए हिंदू घरों में उसका सम्मान किसी देवी की ही भांति होता है। महादेवी ने उसके आगमन का घटनात्मक वर्णन करते हुए लिखा है, "गाय जब मेरे बंगले पर पहुँची तब मेरे परिचितों और परिचारकों में श्रद्धा का ज्वार-सा उमड़ आया। उसे लाल-सफेद गुलाबों की माला पहनाई, केशर-रोली का बड़ा-सा टीका लगाया गया, घी का चौमुखा दीया जलाकर आरती उतारी गई और उसे दही-पेड़ा खिलाया गया। उसका नामकरण हुआ गौरंगिनी या गौरा। पता नहीं, इस पूजा-अर्चना का उस पर क्या प्रभाव पड़ा, पर वह बहुत प्रसन्न जान पड़ी? घटना का आश्रय महादेवी उस स्थल पर भी लेती है जब गौरा के उत्तरोत्तर दुर्बल और शिथिल होते जाने के कारण वे उसे चिकित्सकों को दिखाती हैं और उनसे उन्हें ज्ञात होता है कि गाय को गुड़ की डली में सुई रखकर खिला दी गई है। अंत में एक ऐसा निर्मम सत्य उद्‌घाटित हुआ जिसकी कल्पना भी मेरे लिए संभव नहीं थी।" यह कृत्य उस ग्वाले का ही था जो गौरा के आगमन से पूर्व महादेवी के यहाँ दूध देता था और अपने दूध की बिक्री बंद होने पर उसने द्वेषवश गौरा को सुई खिला दी थी।

शैलीगत विशेषताएँ: इस रेखाचित्र में भी महादेवी ने विविध शैलियों को अपनाया है। निबंधात्मक शैली का उदाहरण दृष्टव्य है जहाँ इतिवृत्तात्मक शैली में घटना का वर्णन है तो आलंकारिक एवं भावात्मक शैली में वर्णित पात्र गौरा एवं उसके बछड़े के तुलनात्मक रूप का–"एक वर्ष के उपरांत गौरा एक पुष्ट सुन्दर वत्स की माता बनी। वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरू का पुतला जैसा जान पड़ता था। उसके माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे मानो गेरू की नई वत्समूर्ति को चांदी के आभूषणों से अलंकृत कर दिया गया हो। बछड़े का नाम रखा गया लालमणि, परंतु उसे सब लालू के संबोधन से पुकारने लगे। माता-पुत्र दोनों निकट रहने पर हिमराशि और जलते अंगारे का स्मरण कराते थे।" शैली में चित्रात्मकता एवं भावात्मक का गुण विद्यमान होने से शैली न केवल मर्मस्पर्शी हो जाती है अपतु उसमें चित्रमयता का गुण होने से वर्णन प्राणवान भी हो जाता है। उदाहरण द्रष्टव्य है–"गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शिनी थी, विशेषत: उसकी काली-बिल्लौरी आंखों का

नोट

तरल सौंदर्य तो दृष्टि को बांधकर स्थिर कर देता था। चौड़े उज्ज्वल माथे और लंबे सांचे में ढले हुए मुख पर आंखे बर्फ में नीले जल के कुंडों के समान लगती थीं। उनमें एक अनोखा विश्वास का भाव रहता था। गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता है। उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है, परंतु उसकी आंखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आतंक।" इस शैली के माध्यम से लेखिका इस रेखाचित्र में करुण अंत का पूर्वाभास भी दे देती है।

भाषा-वैशिष्ट्य: रेखाचित्र में लेखक क्योंकि स्वानुभूति की व्यंजना करता है। इसलिए उसकी भाषा में अनायास ही काव्यात्मक सौंदर्य उपस्थित हो जाता है। महादेवी छायावाद की संवेदनशील कवियित्री रही हैं इसलिए उनकी भाषा कल्पना का आश्रय लेकर सुंदरता के नए आयाम उपस्थित कर देती है। गद्यकाव्य की-सी सुललित भावावेगमयी काव्यात्मक भाषा उनके रेखाचित्रों में यत्र-तत्र प्रयुक्त हुई है। गौरा गाय के रेखाचित्र में उसकी मंथर गति के सौंदर्य की अभिव्यक्ति महादेवी काव्यात्मक भाषा में ही करती है, "गौरा की अलस मंथर गति से तुलना करने योग्य कम वस्तुएँ हैं। तीव्र गति में सौन्दर्य है, परन्तु वह मंथर गति के सौन्दर्य को नहीं पाता। वाण की तीव्र गति क्षण भर के लिए दृष्टि में चकाचौंध उत्पन्न कर सकती है, परंतु मंद समीर से फूल का अपने वृत्त पर हौले-हौले हिलना दृष्टि का उत्सव है।"

काव्यात्मक भाषा प्रयुक्त होने के कारण लेखिका के शिल्प में अलंकारों का सौंदर्य स्वयमेव उपस्थित हो गया है। भ्रम और उत्प्रेक्षा अलंकार के माध्यम से गौरा गाय के सुंदर विशाल नेत्रों के सौंदर्य को लेखिका ने द्विगुणित कर दिया है–

"उसकी बड़ी चमकीली और काली आंखों में जब आरती के दिये की लौ प्रतिफलित होकर झिलमिलाने लगी, तब कई दीयों का भ्रम होने लगा। जान पड़ा, जैसे रात में काली दिखने वाली लहर पर किसी ने कई दीये प्रवाहित कर दिए हों।"

लेकिन इस रेखाचित्र में महादेवी ने केवल काव्यात्मक एवं आलंकारिक भाषा को ही नहीं अपनाया बल्कि रेखाचित्र के स्वरूप के अनुरूप सहज-सरल किन्तु कलात्मक भाषा का प्रयोग भी उन्होंने भावों के अनुरूप किया है, यथा–"जब गौरा की सुंदर-चमकीली आंखे निष्प्रभ हो चलीं और सेब का रस भी कंठ में रुकने लगा, तब मैंने अंत का अनुमान लगा लिया। अब मेरी एक ही इच्छा थी कि मैं उसके अंत समय उपस्थित रह सकूं। दिन में ही नहीं, रात में भी कई-कई बार उठकर मैं उसे देखने जाती रही।"

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आलोच्य रेखाचित्र में लेखिका ने गौरा गाय के बाह्य एवं आंतरिक गुण-स्वरूपों का सौंदर्यांकन करते हुए शैली के विभिन्न रूपों को अपनाया है तथा यथावश्यक संस्मरणों एवं घटनाओं को संयोजित कर रेखाचित्र में व्यापक प्रभाव उत्पन्न किया है। इससे गौरा का चरित्र अधिक संवेदनीय तथा उसकी जीवन-कथा अत्यन्त करुण और मर्मस्पर्शिनी बन पाई है।

8.1.6 नीलू कुत्ता

चरित्रगत विशेषताएँ

नीलू कुत्ता न केवल रूप-रंग में अन्य कुत्तों से विशिष्टता लिए हुए था अपितु उसमें कुत्तों के सामान्य स्वभाव का भी अभाव था। नीलू के विशिष्ट बाह्य रूप का चित्रांकन करते हुए महादेवी लिखती हैं कि वह न तो अपनी अल्सेशियन माँ की भांति पूर्ण अल्सेशियन था न ही भूटिये पिता की भांति पूर्ण रूप से भूटिया था। वह इन दोनों के मिश्रित रूप का साकार नमूना था। उसके रोमों में भूरे पीले और काले रंग का सम्मिश्रण धूपछांही वर्ण होने का आभास कराता था। कानों की चौड़ाई और नुकीलेपन में भी एक विशिष्टता थी जो उसे अन्य कुत्तों से भिन्न ठहराती थी। सिर ऊपर की ओर अन्य कुत्तों के सिर से बड़ा और चौड़ा था और नीचे लंबोतरा और सुडौल आकार का था।

नोट

उसकी पूंछ अल्सेशियन की भांति घने रोमों से आच्छादित थी और भूटिया कुत्ते के समान ऊपर की ओर मुड़ी कुंडलीदार थी। उसके पैर भी इन दोनों नस्लों का सम्मिश्रण थे। अल्सेशियन कुत्ते के पैरों के समान लंबे तथा पैरों के पंजे भूटिये समान मज़बूत, चौड़े और मुड़े हुए नाखूनों से युक्त थे। शरीर के ऊपर का भाग चौड़ा और नीचे का भाग हल्का था जो कि उसकी तीव्र गति का सहायक था उसकी आँखें गोल एवं काली कोट वाली थीं जिनका रंग शहद के रंग के समान था। जो धूप में सुनहरी आभासित होती थी। उसका बाह्य रूप रंग ही नहीं उसका स्वभाव भी कुत्तों की प्रकृति से पूर्णतया भिन्न और विशिष्ट था। महादेवी लिखती हैं–"अन्य कुत्तों के समान खाने के लिए लालायित रहना, प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए पूंछ हिलाना, कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए चाटना, याचक के दीन भाव से स्वामी के पीछे-पीछे घूमना, अकारण भौंकना, काटना आदि प्रकृतिदत्त स्वान-गुणों का उसमें सर्वथा अभाव था। मैंने अनेक कुत्ते देखे और पाले हैं, किन्तु कुत्ते के दैन्य से रहित और उनके लिए अलभ्य हर्ष से युक्त मैंने केवल नीलू को ही देखा है। उसके प्रिय से प्रिय खाद्य को भी यदि अवज्ञा के साथ फेंककर दिया जाता, तो वह उसकी ओर देखता भी नहीं, खाना तो दूर की बात है। यदि उसे किसी बात पर झिड़क दिया जाता तो बिना बहुत मनाए वह मेरे सामने ही न आता।" नीलू की एक अनन्य विशेषता यह थी कि उसमें हिंसा प्रवृत्ति नाममात्र को भी नहीं थी। अपने पूर्ण जीवन में उसने कभी किसी पशु-पक्षी पर झपट्टा नहीं मारा। उसके स्थान पर असहाय पशु-पक्षियों के प्रति स्वयं संरक्षण का उत्तरदायित्व वह संभाल लेता था। वह गौरैया के घोंसले से गिरे हुए शावकों के पास सतर्क पहरेदार की भांति तब तक उनकी सुरक्षा करता रहता जब तक महादेवी उन्हें वापिस उनके घोंसलों में न रख देतीं। इसी प्रकार एक बार उसने खरगोशों को जंगली बिल्ले का आहर बनने से बचाया तथा उनकी सुरक्षा करते हुए स्वयं रोग पीड़ित हो गया। महादेवी के प्रति भी उसका स्नेह इतना गहन था कि जब महादेवी अस्पताल में दाखिल हुई तो उसने उनके पास अस्पताल जाने के लिए अनशन प्रारंभ कर दिया और जब तक वह महादेवी को अस्पताल में देखकर आश्वस्त नहीं हो गया तब तक उसने कुछ नहीं खाया-पिया। कुत्तों में अपने पालक के प्रति स्नेह और स्वामिभक्ति उनकी प्रकृति है किन्तु नीलू का गहन स्नेह तथा मानव के साथ-साथ अन्य जीव-जंतुओं के प्रति आत्मीयता उसके चरित्र को विशिष्ट बना देती है।

नोट्स कुत्तों में अपने पालक के प्रति स्नेह और स्वामिभक्ति उनकी प्रकृति है।

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर समीक्षा

वर्णित पात्र संबंधी संस्मरण: पात्र के प्रति अपना घनिष्ठ प्रेम अथवा रागात्मक संबंध दिखाने हेतु लेखक उस पात्र से संबंधित संस्मरणों को भावानात्मक एवं स्वानुभूति के स्तर पर सुनाता है। इन संस्मरणों में प्राय: वर्णित पात्र के चरित्र की ही किसी विशेषता का वर्णन किया जाता है जो उसे विशिष्ट बनाते हैं। नीलू कुत्ते में हिंसा का प्रवृत्ति चिह्न भी नहीं है। अपितु इसके स्थान पर वह नन्हें जीव-जंतुओं का संरक्षण करने में तत्पर रहता था जो उसके मन की सहज प्राणी-मात्र से प्रेम की संवेदना का उदाहरण था जो कि कुत्तों में प्राय: विरल होती है। उसकी इस भावना से संबंधित संस्मरण सुनाते हुए लेखिका ने लिखा है, "मेरे बंगले के रोशनदानों में प्राय: गौरैया तिनकों से घोंसला बना लेती हैं। मुझे उनके परिश्रमपूर्वक बनाए हुए घोंसले उजाड़ना अच्छा नहीं लगता, अत: कालांतर में उनमें अंडों और पक्षी-शावकों की सृष्टि बस जाती है। कुछ-कुछ अंकुर जैसे पंख निकलते ही वे पक्षी-शावक उड़ने के असफल प्रयास में रोशनदानों से नीचे गिरने लगते हैं। इन दिनों नीलू उनके सतर्क पहरेदार का कर्तव्य संभाल लेता था। उसके भय से कोई भी कुत्ता-बिल्ली उन नादान उड़ने-गिरने वालों को हानि पहुँचाने का साहस नहीं कर पाता था। कभी-कभी बहुत छोटे पक्षी-शावकों को पुन: घोंसले में रखवाने के लिए वह उन्हें हौले से मुख में दबाकर मेरे पास ले आता था। जब तक रोशनदान में सीढ़ी लगवाकर मैं उस बच्चे को घोंसले में पहुँचाने की व्यवस्था न कर लेती, तब तक वह या तो बड़ी कोमलता से उसे दबाए खड़ा रहता या मेरे हाथ में देकर प्रतीक्षा की मुद्रा में देखता रहता।"

नोट

घटनाओं का आधार: नीलू कितना त्यागी, दयालु, कर्तव्य के प्रति सावधान एवं चौकन्ना था इसका आभास दिलाने के लिए महादेवी एक अप्रतिम घटना का वर्णन करती है। यह घटना उसके चरित्र की अनन्य विशेषताओं को उभारने में पृष्ठभूमि का कार्य करती है, "एक रात मेरे खरगोश बिल खोदते-खोदते पड़ोस के दूसरे कंपाउंड में जा निकले और उनमें से कई जो इस अभियान में अगुआ थे, जंगली बिल्ले द्वारा क्षत-विक्षत कर दिए गए। सुरंग से बाहर आने वालों का जो हाल होता है, उससे भीतर रहने वाले अनजान रहते हैं, अत: एक के पीछे एक निकलते हुए खरगोशों में सभी को मार्जारी या श्रृगाल का आहार बन जाना पड़ता। किन्तु उनके सौभाग्य से पहरे के नित्यक्रम में घूमते हुए नीलू ने संभवत: पक्षियों की सरसराहट से सजग होकर चहरदीवारी के पास देखा होगा और शीत की कुहराच्छन्न रात की मलिन चांदनी में भी उसने खरगोशों के संकट को पहचान लिया होगा। उसके कूदकर दूसरी ओर पहुँचते ही बिल्ला तो भाग गया, परन्तु खरगोश को बाहर निकलने से रोकने के लिए वह रात भर ओस से भीगता हुआ सुरंग के द्वार पर खड़ा रहा।"

नीलू कुत्ता उन्हें कैसे प्राप्त हुआ इसको बताने के लिए भी लेखिका घटना का आश्रय लेती हैं तथा नीलू की अल्सेशियन माँ लूसी की जीवन कथा और उसके करुण अंत को कुछ घटनाओं के सम्बद्ध नियोजन द्वारा रेखाचित्र के प्रारंभ में अभिव्यक्ति देती है जो कि नीलू के महादेवी के घर आगमन की पृष्ठभूमि बनती है।

शैलीगत विशेषताएँ: इस रेखाचित्र में महादेवी ने तीन प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है—वर्णनात्मक शैली, कथात्मक शैली एवं निबंधात्मक शैली। वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत किसी स्थल, देश अथवा समाज की स्थिति अथवा दृश्य का वर्णन किया जाता है। शीतकाल में उत्तरायण की प्राकृतिक स्थिति को महादेवी ने वर्णनात्मक शैली में अभिव्यक्ति दी है, "उत्तरायण में जो पगडंडी दो पहाड़ियों के बीच से मोटर मार्ग तक जाती थी, उसके अंत में मोटर स्टाप पर ही दुकान थी, जिसमें आवश्यक खाद्य सामग्री प्राप्त हो सकती थी। शीतकाल में यह दो पर्वतीय भित्तियों का अंतराल बर्फ से भर जाता था और उसमें पगडंडी के अस्तित्व का चिह्न भी शेष नहीं रहता था।" कथात्मक शैली के माध्यम से महादेवी घटनाओं को रेखाचित्र के विकास हेतु नियोजित करती है। इस शैली में मार्मिकता और वेदेन शीलता का गुण होता है, "लूसी को मंगवाने वालों के भुलक्कड़पन से कोई शिकायत कभी नहीं रही। गले में कपड़ा बांधते ही वह तीर की तरह दुकान की दिशा में चल देती। उसकी तत्परता के कारण मंगाने वालों में भूलने की प्रवृत्ति बढ़ती ही थी। एक दिन किसी अधिक ऊँचाई पर बने पर्वतीय ग्राम से बर्फ में भटकता हुआ एक भूटिया कुत्ता दुकान पर आ गया और लूसी से उसकी मैत्री हो गई। उन दोनों में आकृति की वही भिन्नता थी, जो एक तराशी हुई सुडौल मूर्ति और अनगढ़ शिलाखंड में होती है, परन्तु दुर्दिन के साथी होने के कारण वे सहचर हो गए। उन्हीं सर्दियों में लूसी ने दो बच्चों को जन्म देकर अपनी वंश-वृद्धि की, किन्तु उनमें से एक तो शीत के कारण मर गया और दूसरा अपनी ही जीवन ऊष्मा के बल पर उस ठिठुराने वाले परिवेश से जूझने लगा।"

इस प्रकार उन्होंने इस रेखाचित्र में निबंधात्मक शैली का भी समावेश किया है। वो इतिवृत्तात्मक शैली में वर्णन करते हुए ही आलंकारिकता का समावेश होने के कारण वर्णन को रोचक एवं सुगम्य बना देता है। निबंधात्मक शैली का उदाहरण द्रष्टव्य है, "एक दिन संध्या के झुटपुटे में लूसी ऐसी गई कि फिर लौट ही नहीं सकी। बर्फ के दिनों मे सांझ ही से सघन अंधकार घिर आता है और हवा ऐसी तुषार बोझिल हो जाती है कि गंध भी वहन नहीं कर पाती। इसी से प्राय: शीतकाल में घ्राणशति के कुछ कुंठित हो जाने के कारण कुत्ते लकड़बग्घे के आने की गंध पाने में असमर्थ रहते हैं। और उनके अनायास आहार बन जाते हैं। सवेरे बर्फ पर कई बड़े-छोटे पंजों के तथा आगे-पीछे घसीटने-घिसटने के चिह्न देखकर निश्चय हो गया कि लूसी ने बहुत संघर्ष के उपरांत ही प्राण दिए होंगे। बर्फ पर रक्त के पनीले धब्बे ऐसे लगते थे मानो किसी बालक की ड्राइंग पुस्तिका के सफेद पृष्ठ पर लाल स्याही की दवात उलट गई हो।"

भाषागत विशेषता: इस रेखाचित्र की भाषा की विशेषता भी यही है कि वह सहज, सरल, सुगम्य और बोलचाल की भाषा होकर भी कलात्मक है, सुष्ठु और प्रांजल है और आलंकारिक है। भाषा की सहज प्रवाह एवं सुबोधता

नोट

इस उद्धरण में द्रष्टव्य है, "विगत बारह वर्षों से उसका बैठने का स्थान मेरे घर का बाहरी बरामदा ही रहा, जिसकी ऊपरी सीढ़ी पर पोर्टिकों के सामने बैठकर वह प्रत्येक आने-जाने वाले का निरीक्षण करता रहता। मुझसे मिलने वालों में वह प्रायः सबको पहचानता था। किसी विशेष परिचित को आया देखकर वह सदा धीरे-धीरे भीतर आकर मेरे कमरे के दरवाजे पर खड़ा हो जाता। उसका इस प्रकार आना ही मेरे लिए किसी मित्र की उपस्थिति की सूचना थी। मुझसे 'आ रही हूं' सुनने के उपरांत वह पुनः बाहर अपने निश्चित स्थान पर जा बैठता।" भाषा में लेखिका ने यत्र-तत्र अलंकारों का भी प्रयोग किया है। अलंकार युक्त भाषा के उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

1. उन दोनों में आकृति की वही भिन्नता थी, जो एक तराशी हुई सुडौल मूर्ति और अनगढ़ शिलाखंड में होती है।
2. बर्फ पर रक्त के पनीले धब्बे ऐसे लगते थे मानो किसी बालक की ड्राइंग पुस्तिका के सफेद पृष्ठ पर लाल स्याही की दवात उलट गई हो।
3. डलिया में वह ऊन की गेंद जैसा ही लगता था।
4. उन गोल और काली कोरवाली आँखों का रंग शहद के रंग के समान था, जो धूप में तरल सुनहला हो जाता था और छाया में जमे हुए मधु-सा पारदर्शी लगता था।

नीलू की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करते हुए वह जन-व्यवहार की कहावतों का प्रयोग करती है, "जीवन के समान उसकी मृत्यु भी दैन्य से रहित थी 'कुत्ते की मौत मरना' कहावत है, परन्तु यदि नीलू के समान निर्लिप्त भाव से कोई मृत्यु का सामना कर सके, तो ऐसी मृत्यु मनुष्य को भी काम्य होगी।"

निकर्षतः नीलू कुत्ता का रेखाचित्र वर्णित पात्र की चरित्रगत विशिष्टताओं एवं उसकी प्रकृति की स्वजातीय प्रकृति से भिन्नता के कारण विशिष्ट बन पड़ा है। और इस विशिष्ट को विशिष्ट बनाने में लेखिका का संरचना-शिल्प भी महत्त्वपूर्ण बन पड़ा है।

8.1.7 निक्की, रोजी और रानी

इस रेखाचित्र के अंतर्गत तीन पात्रों की चरित्र संबंधी विभिन्न विशेषताओं का वर्णन किया गया है।

रोजी की चरित्रगत विशेषताएँ

रोजी कुतिया महादेवी वर्मा को बाल्यकाल में उपहार स्वरूप प्राप्त हुई थी। बाल्यकाल में वह ही उनकी सखी बनी, उनके साथ पली-बढ़ी। वह उनके साथ दूध पीती उनके साथ सोती और उनकी सखी बनकर खेलती। वे मानती हैं कि उनके पशु-प्रेम का आरंभ रोजी के साहचर्य से ही प्रारंभ हुआ। रोजी के बाह्य स्वरूप का अंकन करते हुए वे लिखती हैं, "रोजी सफेद थी किन्तु उसके छोटे सुडौल कानों के कोने, पूंछ का सिरा, माथे का मध्य भाग और पंजों का आग्रांश कत्थई रंग का होने के कारण उसमें कत्थई किनारीवाली सफेद साड़ी की शबल रंगीनी का आभास मिलता है। वह छोटी पर तेज तर्रार जाति की कुत्ती थी, और कुछ प्रकृति से और कुछ हमारे साहचर्य से श्वान-दुर्लभ विशेषताएँ उत्पन्न हो जाने के कारण घर में उसे बच्चों के समान ही वात्सल्य मिलता था।" बाल्यकाल की क्रीड़ाओं में रोजी सदैव महादेवी के साथ रहती थी। एक वफादार, राजदार, संगी की भांति वह सदैव उनका साथ देती थी। उसकी समझदारी का परिचय इन शब्दों में मिलता है, "हमारे अभियान के रहस्य को वह इतना अधिक समझ गई थी कि दोपहर होते ही खिड़की से कूदने को आकुल होने लगती और खिड़की से उतार दिए जाने पर नीचे बैठकर मनोयोगपूर्वक हमारा उतरना देखती रहती। कभी खिड़की से कूदते समय हममें से कोई उसी के ऊपर गिर पड़ता था, पर वह चीं करना भी नियम विरुद्ध मानती थी। रोजी इतनी समझदार थी कि जिस भांति वह पोखर के पत्तों के ढेर में से हवा से गिरे कच्चे आमों को बीन लाती थी उसी प्रकार एक नन्हें नेवले शिशु को भी संभालकर उठा लाई जो श्वानों की हिंसक प्रवृत्ति से भिन्न है।"

नोट

निक्की की चरित्रगत विशेषताएँ

निक्की नेवला महादेवी की रोजी कुतिया द्वारा आम के वृक्षों से घिरे पोखर से प्राप्त हुआ था जो अपने सृजनकर्ताओं के आवास से ऊपर निकल आया था। उसकी बाह्य स्वरूपगत विशेषताओं का वर्णन करते हुए महादेवी लिखती हैं, "आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था, पर आकृति में स्पष्ट अंतर था। भूरा चमकीला रंग, काली कत्थई आँखों, नर्म-नर्म पंजे, गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्हीं सीपियों-से कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना-सा जान पड़ा। रोजी के समान निक्की नेवला भी इनकी बाल क्रीड़ाओं में इनका साथी बन गया। अपने लघु शरीर और फुर्ती एवं तत्परता के कारण वह भयंकर विषधर को मारने एवं उन बच्चों को बचाने में भी सफल हुआ।" निक्की का महादेवी से भी अत्यन्त स्नेह था इसीलिए जब उन्हें पढ़ने के लिए मिशन स्कूल भेजा गया तब वह भी शिकरम की छत पर बैठकर उनके साथ स्कूल पहुँच गया। जब तक महादेवी पढ़ती तब तक वह मिशन के फाटक की लता या बाग में घूम फिर कर समय बिताता, छुट्टी होने के समय उसे स्वयं ही बोध हो जाता था और वह निश्चित समय पर महादेवी के फाटक पर पहुँचते ही उनके कंधे पर बैठ जाता।

रानी की चरित्रगत विशेषताएँ

बच्चों की घुड़सवारी की इच्छा को पूरा करने के लिए रानी घोड़ी का महादेवी के घर में आगमन हुआ था। यह भी महादेवी के मानवेतर क्रीड़ा-सहचरों में शामिल हो गई। इसके बाहरी रूप-रंग का वर्णन करती हुई महादेवी का कथन है, "यह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में बसी रहती है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग, जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी काली स्तब्ध और पारदर्शी जैसी आँखें लाल नथुने जिन्हें फुला-फुलाकर वह चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दांत और लाल जीभ की झलक देती हुई गुलाबी ओठों वाला लंबा मुँह जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक थी। सुडौल मज़बूत पैर और सघन पूंछ, जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती-गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की बुद्धि नहीं थी, परन्तु इतने दीर्घकाल के उपरांत भी स्मृतिपट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती हैं, जैसे किसी अदृश्य स्याही में लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।" महादेवी और उनके सहोदरों ने रानी से ऐसी मैत्री स्थापित कर ली थी कि वह यदि उन्हें न देखती तो व्याकुल होकर पैर पटकती और हिनहिनाने लगती। रानी का उनके प्रति स्नेह का आभास तब होता है जब ये बालगण उस पर स्वतंत्र एवं स्वच्छंद घुड़सवारी करने के उद्देश्य से सबके सो जाने पर उसे दोपहर में खोलकर बाहर ले आते तथा उसकी नंगी पीठ पर सवारी करते। वह समझदारी के साथ इन बालों की शरारतों पर ध्यान न देते हुए इन्हें दुलकी चाल से इधर-उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी। इन मित्रों का परस्पर स्नेह संबंध इनकी क्रीड़ाओं से ज्ञात होता है, "निक्की रानी की पूंछ से झूलने लगता था, रोजी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और नीचे कूदती थी और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हैं।" यह नन्हें मानवों एवं मानवेतर प्राणियों का भेद-भाव रहित सुंदर मेल था जो सृष्टि का अद्भुत दृश्य था।

> *टास्क* नीलकंठ, गिल्लू, सोना, दुर्मुख, गौरा, नीलू और निक्की, रोजी और रानी इन पात्रों का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर समीक्षा

वर्णित पात्रों से संबंधित संस्मरण: इस रेखाचित्र में वर्णित पात्र तीन हैं तथा तीनों से संबंधित संस्मरणों को लेखिका ने अलग-अलग ढंग से वर्णित किया है। प्रारंभ में अपनी मुख्य सहचरी रोजी के संबंध में बताती हुई अपना संस्मरण

नोट

सुनाती हैं–"हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती। जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते वह कगार के सिर पर हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती। जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे-आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकोई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ी की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती, गर्मी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी-बड़ी अंबिया हवा के झोंके से नीचे गिरती रहती और उनके गिरने के स्वर के साथ रोजी सूखे पोखर में कूदती और पत्तियों के सरसराहट भरे समुद्र में से उसे खोज लाती। कच्ची कैरी की चेपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धबीला हो जाता, परन्तु वह इस खोज-कार्य से विरक्त न होती।"

इसी प्रकार महादेवी निक्की नेवले के संबंध में एक रोमांचकारी संस्मरण सुनाते हुए उसकी बहादुरी, फुर्ती का वर्णन करती हैं तथा उसके स्नेह की भी व्यंजना करती हैं कि यदि निक्की उस दिन अपनी सतर्क आँखों से सांप को देखकर उससे लड़कर उसे मार न डालता तो कुछ भी परिणाम हो सकता था–"एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लंबे काले सांप को देख लिया और वह कूदकर उसके पास पहुँच गया। हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की पिछले दो पैरों पर खड़े होकर सांप को मानो चुनौती दे रहा है और सांप भी हवा में आधा उठकर फुफकार रहा है। निक्की को सांप ने मार डाला, समझकर हम सब चीखने-पुकारने और सांप को पत्थर मारने लगे। यदि हमारा कोलाहल सुनकर रामा न आ जाता तो परिणाम कुछ दु:खद भी हो सकता था।"

रानी घोड़ी से संबंधित संस्मरण इन बालकगणों की शरारतों की व्यंजना तो करता ही है किन्तु साथ ही एक थोड़ी-सी भूल पर पश्चाताप करने की घटना रानी के इन बालकों के प्रति अपने मातृवत् स्नेह की अभिव्यक्ति भी करती है। महादेवी और बालकगण जब उसकी नंगी पीठ पर सवारी करते तो वह उनको धीमे-धीमे घुमाकर उन्हें संतुष्ट कर देती थी, "परन्तु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नही थी, परन्तु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दु:खद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी-नाले सब उसे पकड़ बांध रखने का संकल्प किए हों। कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़न खटोले पर संभाला परन्तु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई, जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो।" इस प्रकार ये सभी संस्मरण इन तीनों मानवेतर पात्रों के लेखिका एवं उनके सहोदरों से घनिष्ठ रागात्मक संबंध की व्यंजना करने में भी सक्षम है।

घटनाओं का आधार: बाल्यकाल के इन साथियों का रेखाचित्र खींचते हुए लेखिका ने यथास्थान घटनाओं का पर्याप्त आश्रय लिया है जो रोमांचकारी है बाल्यकाल से संबंधित होने के कारण हंसाती है, मन को गुदगुदाती हैं साथ ही इन वर्णित पात्रों से संबंधित वर्णनों एवं चित्रणों के लिए पृष्ठभूमि का कार्य करती है। निक्की नेवला महादेवी को किस भांति प्राप्त हुआ, इस घटना को बताते हुए महादेवी लिखती हैं–"ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल-झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे, तब एक आम गिरने का शब्द हुआ। रोजी नीचे कूदी। कुछ देर तक पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही। फिर हमने आश्चर्य से देखा कि वह मुँह में किसी जीव को दबाये हुए ऊपर ला रही है। रोजी ने उसे हौले से पकड़ा था, × × × परन्तु बचने के संघर्ष में उसके कुछ खरोंच लग गई थीं। चोट से अधिक भय से वह निश्चेष्ट था। उसे पाकर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि अपना घोंसला, चिकने पत्थर, जंगली कनेर के फूल आदि का विचित्र संग्रहालय छोड़कर उसे लिये हुए घर की ओर भागे। उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए।" रानी घोड़ी इन बच्चों के प्रति कितनी स्नेही तथा उनके परिवार के प्रति कितनी वफादार एवं समझदार थी इसका ज्ञान एक अन्य घटना से होता है जो महादेवी के बाल्यकाल से ही संबंधित है–"एक बार भाई के जन्मदिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यत: हम कोई भी नया कपड़ा या आभूषण पहन कर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुंदर छोटे-छोटे शेर मुँह वाले कड़े

नोट

पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया और न जाने किस प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया। फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछताछ की तब खोज आरंभ हुई। पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला। रानी अपने कोने को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अंत में बाबूजी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने खुट्टन को कोने की मिट्टी हटाने का आदेश दिया। किसी ने कुछ गहरा गड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दंड तो किसी को नहीं मिला, परन्तु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।" इस प्रकार घटना की पृष्ठभूमि में पात्र के आंतरिक गुणों का चित्र अधिक स्वाभाविक विश्वसनीय एवं संप्रेषणीय हो जाता है, यह इस घटना के वर्णन से प्रमाणित है।

शैलीगत विशेषताएँ: इस रेखाचित्र में महादेवी ने गद्य की कई शैलियों का यथास्थान प्रयोग किया है। वर्णनात्मक शैली जिसके अंतर्गत किसी देश, समाज की स्थिति अथवा प्राकृतिक दृश्य का वर्णन किया जाता है, का प्रयोग करते हुए महादेवी ने अपने बाल्यकाल में लड़कियों की वेशभूषा का वर्णन किया है, "उस समय हमारे परिवार में छोटी लड़कियों की वेशभूषा में गोटे पट्टे से सजा गरारा, कुर्त्ता और दुपट्टा विशेष महत्त्व रखता था, जिससे वे मध्यकालीन बेगमों के लघु संस्करण जान पड़ती थीं। कभी-कभी प्रगतिशीलता का प्रमाण देने के लिए उन्हें फ्राक भी पहनाए जाते थे, जिसके कॉलरलेस, झालर आदि के घटाटोप में वे क्वीन विक्टोरिया की संगनियों का भ्रम उत्पन्न करके मानो पूर्व-पश्चिम दोनों का प्रतिनिधित्व करती थीं। हमारे जूते तक पूर्व-पश्चिम में विभाजित थे। पूर्व के वेश के साथ छोटी, हल्की और जरी के कामवाली जूतियाँ पहनकर हम घिसटते हुए चलते और पश्चिमी वेश के साथ घुटने के ऊपर तक काले या सफेद मोजे चढ़ाकर ऊंची एड़ीवाले और तस्में से कसे बंधे जूते पहनकर डगमगाते चलते थे।"

कथात्मक शैली में घटनाओं का सूक्ष्म आश्रय लिया जाता है तथा इस शैली में हास्य-व्यंग्य संवदेनशीलता एवं मार्मिकता का प्राधान्य होता है। बाल्यकाल की स्मृतियों के आधार पर तत्कालीन घटनाओं का आश्रय लेती हुई महादेवी इसी शैली का बहुधा प्रयोग करती हैं—

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इनके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टूओं या सफेद गधों (जिनकी जाति के संबंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्धन किया था) में घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दंड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे पर बैठने का दंड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ वह वाहन नहीं है।" निबंधात्मक शैली एक ओर इतिवृत्तात्मक होती है जिसमें वर्णन प्रधान होता है तथा साथ ही आलंकारिक भी होती है जिसके कारण उसमें रोचकता का समावेश हो जाता है। निबंध शैली का भी एक उदाहरण द्रष्टव्य है—"घूमते-घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय एक आम के वृक्ष से घिरा सूखा पोखर था जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में 8-9 फुट और खूली धूप में 4-5 फुट के लगभग गहरा था। कई आम के पेड़ों की शाखाएँ लंबी नीची और सूखे पोखर पर झूलती-सी थीं। सूखी पत्तियों ने झड़झड़कर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था। हम तीनों डाल पर बैठकर झूलते रहते या रौबिन्सन क्रुसों के समान अपने समतल समुद्र के गहरे टापू की सीमाएँ नापते रहते। घूमने के क्रम में यदि हमें कोई मकोई का पौधा या करौदें की झाड़ी फूली-फली मिल जाती तो नंदन वन की प्रतीति होने लगी।"

महादेवी ने संवादात्मक शैली का प्रयोग अत्यल्प किया है क्योंकि यह शैली कहानी या उपन्यासों की शैली है तथा रेखाचित्र के लिए अनुपयोगी है तथापि इस रेखाचित्र में एक स्थल पर इसका अल्प प्रयोग हुआ है—"एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृतिपत्र/मेमोरेंडम दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है, यदि अन्य बच्चें को घोड़े पर बैठने का अधिकार है तो हमें भी यह अधिकार मिलना चाहिए। बाबूजी ने हंसते हुए पूछा, सफेद टट्टू पर बैठोगे? 'तुम कहो', के साथ ठेलमठाल के उपरांत मैंने अगुआ होकर गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया। 'सफेद ट्टटू तो गधा होता है, जिस पर बैठाकर सजा दी जाती है'।"

नोट

रेखाचित्र की शैली का अनन्य गुण उसमें चित्रात्मकता का सौन्दर्य अथवा बिंबों की अवस्थिति है। महादेवी ने इन मानवेतर पात्रों का वर्णन करते हुए अलंकारों से सजा कर इनके रंग-बिरंगे चित्र उपस्थित किए हैं। किन्तु एक गत्यात्मक दृश्य चित्र का अभूतपूर्व उदाहरण वे इस रेखाचित्र में देती है जो ध्वनिबिंब से मिलकर उसे और भी गहन एवं प्राणवान बना देता है, यथा–"उस दिन प्रथम बार हमें ज्ञात हुआ कि हमारा बालिश्त भर का निक्की कई फुट लंबे सांप से लड़ सकता है। उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल था। निक्की सांप के सब ओर इतनी तेजी से घूम रहा था कि वह एक भूरे और घूमते हुए धब्बे की तरह लग रहा था। सांप फन पटक रहा था, फुफकार रहा था, उसे अपनी कुंडली में लपेट लेने के लिए आगे-पीछे हट बढ़ रहा था, परन्तु बिजली की तरह तड़प उठने वाले निक्की को पकड़ने में असमर्थ था। वह तेजी से उछल-उछल कर सांप के फन के नीचे पैने दांतों से आघात कर रहा था। रामा के कारण इस असमय युद्ध का अंत देखने के लिए हम बाहर खड़े न रह सके, परन्तु जब निक्की खिड़की पर आकर बैठा, तब हमने झांककर सांप को कई खंडों में कटा देखा।"

भाषा-वैशिष्ट्यः रेखाचित्र के अनुकूल महादेवी की भाषा इस रेखाचित्र में भी सहज, सरल एवं बोधगम्य है किन्तु बाल्यकाल की क्रीड़ाओं, उस समय की अबोध समझ के वर्णन के कारण इस रेखाचित्र की भाषा में हास्य एवं रोचकता का समावेश स्वयमेव हो गया है। भाषा के इस रूप का उदाहरण द्रष्टव्य है, "हमें बेचारे नकुल शिशु से बड़ी सहानुभूति हुई छोटे-से बिल में रात-दिन पड़े माता-पिता के सामने बैठे रहने में जो कष्ट बच्चे को हो सकता है, उसका हम अनुमान कर सकते थे। यदि एक छोटे कमरे में हमें सामने बैठाकर बाबूजी रात-दिन पढ़ाते रहे और माँ सिलाई-बुनाई में लगी रहें तो हमारा क्या हाल होगा। ऐसी ही कोई अप्रिय स्थिति बिल में रही होगी, नहीं तो यह इतना छोटा बच्चा भागता ही क्यों। अतः नकुल शिशु के बिल और बिल निवासी माता-पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गए और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे।"

टास्क रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर समीक्षा से क्या तात्पर्य है? उल्लेख कीजिए।

भाषा के सहज सरल रूप में महादेवी वर्मा केवल तद्भव रूप शब्दों का ही प्रयोग नहीं करतीं अपितु वातावरण के अनुरूप विदेशी भाषा के शब्दों और वाक्यों का भी प्रयोग करने में नहीं झिझकती। "परन्तु कक्षा में उसे मेरे पास देखकर जो कोहराम मचा, उसने मुझे स्तंभित और अवाक् कर दिया। शी हैज ब्रॉट एरैप्टाइल थ्रो इट अवे आदि कहकर सिस्टर्स तथा सहपाठिनियाँ चिल्लाने पुकारने लगी।" महादेवी की भाषा में काव्यात्मकता का सौन्दर्य स्वयमेव ही उपस्थित होता है क्योंकि वे अपने रेखाचित्रों में स्वानुभूतियों की व्यंजना कविता के समान गहन संवेदनों से युक्त करके करती हैं–"बाल्यकाल की स्मृतियों में अनुभूति की वैसी ही स्थिति रहती है, जैसे भीगे वस्त्र में जल की। वह प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देता किन्तु वस्त्र के शीतल स्पर्श में उसकी उपस्थिति व्यक्त होती रहती है। इन स्मृतियों में और भी विचित्रता है। समय के माप से वे जितनी दूर होती जाती हैं, आत्मीयता के परिभाषा में उतनी ही निकट आती जाती हैं।" निष्कर्षतः इस रेखाचित्र में महादेवी वर्मा के बाल्यकाल की स्मृतियों की पृष्ठभूमि पर रोजी, निक्की और रानी घोड़ों के चरित्र अपनी सम्पूर्ण विशिष्टताओं के साथ निरूपित हो गये हैं तथा शैली की विविधता ने इन रेखाचित्रों में संस्मरणात्मक आधार एवं घटनाओं के नियोजन को सहायता प्रदान कर उन्हें और भी रोचक बना दिया है, जिससे रेखाचित्र में कथात्मक कौतूहल निरंतर बना रहता है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. अपने पूर्ण जीवन में नीलू ने कभी पशु-पक्षी पर झपट्टा नहीं मारा था

8. ग्वाले द्वारा द्वेषवश सुई खिला दिए जाने पर हिरणी की मौत असमय ही निश्चित हो गई।
9. रोजी, (कुतिया) महादेवी को बाल्यकाल में उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हुई थी।

8.2 सारांश (Summary)

- कथात्मक शैली में घटनाओं का सूक्ष्म आश्रय लिया जाता है तथा इस शैली में हास्य-व्यंग्य संवेदनशीलता एवं मार्मिकता का प्राधान्य होता है। बाल्यकाल की स्मृतियों के आधार पर तत्कालीन घटनाओं का आश्रय लेती हुई महादेवी इसी शैली का बहुधा प्रयोग करती हैं।
- नीलकंठ एक मूक पंक्षी होकर भी उन उच्च संवेदनाओं से संपन्न था जो उसे मानव से भी ऊंचा स्थान दे देती हैं। अपने पालक के प्रति उसका स्नेह तो स्वाभाविक था किन्तु विजातीय जीव-जंतुओं के प्रति उसने जैसे अगाध अपत्य स्नेह एवं उनके संरक्षण के उत्तरदायित्व का परिचय दिया वह अभूतपूर्व है और ये गुण उसके चरित्र को अन्यतम बना देते हैं।
- नीलकंठ रेखाचित्र में रेखाचित्र के तत्त्वों का संपूर्ण एवं सफल समावेश हुआ है। महादेवी की काव्यात्मक शैली उनकी आत्मीय अनुभूतियों से मिलकर और निखर उठी हैं जिससे नीलकंठ का चरित्र किसी मानव की भाँति विशिष्ट और विस्मरणीय बन गया है।
- सोना हिरनी का चरित्रांकन करते हुए लेखिका ने उसके बाह्य स्वरूप के सौंदर्य के साथ उसके अंतर की गहन एवं कोमल संवेदनाओं का भी मानवीकरण कर दिया है जो कि इस रेखाचित्र को विशिष्ट एवं अविस्मरणीय बना देता है।
- सोना हिरनी का रेखाचित्र अपने सम्पूर्ण बाह्य आंतरिक विशिष्टताओं के साथ उजागर हुआ है। महादेवी वर्मा के शिल्पविधान में वैविध्ययुक्त शैलियों एवं प्रयोगों ने इस रेखाचित्र को संवेदना और संरचना दोनों दृष्टियों से अप्रतिम बना दिया है।
- नीलू कुत्ता का रेखाचित्र वर्णित पात्र की चरित्रगत विशिष्टताओं एवं उसकी प्रकृति की स्वजातीय प्रकृति से भिन्नता के कारण विशिष्ट बन पड़ा है। और इस विशिष्ट को विशिष्ट बनाने में लेखिका का संरचना-शिल्प भी महत्त्वपूर्ण बन पड़ा है।

8.3 शब्दकोश (Keywords)

नैसर्गिक : प्राकृतिक

मृगसमूह : हिरनों का समूह

क्रोधित मुद्रा : गुस्से की हालत में

8.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. सोना हिरनी के चरित्र की कौन-सी विशेषताओं को महादेवी वर्मा ने उसकी जातिगत विशेषताओं के संदर्भ में तथा उसके अपने अन्य गुणों के आधार पर चित्रांकित किया है?
2. नीलू के विशिष्ट बाह्य रूप का चित्रांकन करते हुए महादेवी क्या लिखती हैं?
3. मेरा परिवार पाठ के अंतर्गत तीन पात्रों निक्की, रोजी और रानी की चरित्र संबंधी विभिन्न विशेषताओं का वर्णन महादेवी ने कैसे किया है?

नोट

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. मानवीकरण	2. लंबे लिफाफे	3. ममत्व एवं स्नेह
4. (*d*)	5. (*c*)	6. (*d*)
7. सही	8. सही	9. गलत

8.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. मेरा परिवार (महादेवी वर्मा) लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

नोट

इकाई–9: मेरा परिवार : मुख्य उद्देश्य

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

9.1 मेरा परिवार : करुणा और मूक संवेदना की मर्मस्पर्शी कथा

9.1.1 करुणा और वेदना की कवयित्री

9.1.2 मेरा परिवार: जीवों एवं मानवों की प्रवृत्ति का मार्मिक प्रस्तुतीकरण

9.2 सारांश (Summary)

9.3 शब्दकोश (Keywords)

9.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

9.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- लेखिका के मेरा परिवार पाठ के संदर्भ में मुख्य उद्देश्य को जानने में।
- मेरा परिवार पाठ की कथा की करुणा तथा मर्मस्पर्शिता जानने में।
- मेरा परिवार पाठ की मूक संदेवना की मर्मस्पर्शिता को जानने हेतु।
- महादेवी जी के समस्त सृजन का मूल-भाव की करुणा जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

किसी भी कृति का नामकरण या तो उसके प्रमुख विषय अथवा मुख्य पात्र अथवा केन्द्रीय संवेदना पर आधारित होता है। रेखाचित्रों की परंपरा में अधिकांशत: रेखाचित्र संग्रह का नामकरण या तो किसी विशिष्ट रेखाचित्र के नाम पर किया जाता है या समस्त रेखाचित्रों की मूल पृष्ठभूमि की भित्ति पर अथवा मूल प्रतिपाद्य पर। यद्यपि यह स्वयं लेखक पर निर्भर करता है कि वह अपने रेखाचित्र संग्रह का नामकरण किस आधार पर करे। तथापि क्योंकि रेखाचित्र के संग्रह में अनेक रेखाचित्रों का संकलन किया जाता है। अत: संपूर्ण संग्रह के शीर्षक की सार्थकता यही है कि वह सभी रेखाचित्रों का प्रतिनिधित्व उनके प्रतिपाद्य के आधार पर करे। हिन्दी साहित्य के कुछ रेखाचित्रों संग्रह ऐसे भी हैं जिनका नामकरण किसी विशिष्ट संग्रहीत रेखाचित्र के नाम पर दिया गया है तथापि शीर्षक की सार्थकता इसी में है कि संग्रह में संकलित सभी रेखाचित्रों और संस्मरणों का मूल प्रतिपाद्य में सिमटा हो।

नोट

महादेवी जी द्वारा लिखित 'मेरा परिवार' के रेखाचित्र उनके इससे पूर्व लिखे गए रेखाचित्रों से इस बात में विशिष्ट हैं कि इनमें लेखिका ने मानवीय पात्रों के स्थान पर उन पशु-पक्षियों को ग्रहण किया है जो उनके जीवन-पथ में उनके एकान्त के सहचर रहे हैं। इन रेखाचित्रों में उन्होंने सामाजिक वैषम्य एवं असंगतियों की पृष्ठभूमि पर विवश मानवों के चिह्न अंकित करने के स्थान पर मूल मानवेतर प्राणियों की विभिन्न स्थितियों की उनकी संवेदनाओं की कल्पना कर उन्हें महत्व प्रदान किया है। जहाँ मानव-पात्रों के रेखाचित्रों में उन्होंने सामाजिक परिप्रेक्ष्य का विभिन्न दृष्टिकोणों से चयन किया वहीं उन पशु पक्षियों की निरीहता 'असहायता' इनके निर्दोष अकेलेपन को मानव की निष्ठुरता की पृष्ठभूमि पर उद्धृत किया है।

बालपन से महादेवी वर्मा को पशु-पक्षियों का संग-साथ मिला था जो उनकी बाल्य-कीड़ाओं में उनके साथ उल्लास का संचार करते थे और स्नेह की कोमलता और निश्छलता से मानव एवं मानवेतर प्राणियों का भेद मिटा देते थे। पशु-पक्षियों के रेखाचित्र अंकित करने की प्रेरणा उन्हें कैसे प्राप्त हुई, इसके उत्तर में इस रेखाचित्र संग्रह के प्रारंभ में लेखिका द्वारा लिखित आत्मिका के ये अंश उद्धृत किए जा सकते हैं। "स्मृति-यात्रा में पशु-क्षी ही मेरे प्रथम संगी रहे हैं, किन्तु इसे दुर्योग ही कहा जाएगा कि मनुष्य ने उनसे यह प्राथमिकता अनायास छीन ली।...इस प्रकार पशु-पक्षियों की संख्या, रंग, विशेष लक्षण, नाम आदि लिख लिए गए। उस समय ज्ञात नहीं था कि भविष्य में ऐसे स्मृत्यांकन की परम्परा अटूट हो जाएगी। परंतु बालपन की इसी गद्यात्मक अभिव्यक्ति की लय पर मेरे सारे संस्मरण अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित हुए हैं।"

इस संग्रह के अंतर्गत जितने भी रेखाचित्र संकलित हैं, उनके वर्णित पात्र स्वयं महादेवी जी द्वारा पालित हैं और प्राय: ऐसी कठिन स्थितियों में प्राप्त किए गए हैं जिनके अन्तर्गत उनका जीवित बचना कठिन था। उदाहरण के लिए नीलकंठ मोर तथा राधा मोरनी को लेखिका चिड़ियावालों की दुकान से खरीद कर लाई थीं जहां से वे किसी मानवहित उपयोग के लिए मारे भी जा सकते थे। गिल्लू गिलहरी को लेखिका ने शैशवावस्था में कौओं का आहार बनने से बचाया था। सोना हिरनी, दुर्मुख खरगोश, नीलू कुत्ता, निक्की नेवला आदि सभी पशु-पक्षियों को अपनी शैशवावस्था से ही महादेवी वर्मा का संरक्षण एवं ममत्व प्रपत हुआ एवं उन्हीं की देख-रेख में वे पले तथ उनका जीवनांत हुआ। इससे स्पष्ट है कि स्वयं लेखिका ने इन पात्रों को मानवीय शिशुओं से कम नहीं समझा था और उन्हें अपना संपूर्ण मातृत्व स्नेह प्रदान किया था। इन पशु-पक्षियों के चित्रों को जब वे 'मेरा परिवार' शीर्षक देती हैं तो उसका कारण अनायास ही समझ आ जाता है। उनकी करुणा और ममता ने केवल मानव-सृष्टि में ही विस्तार नहीं पाया था उसका व्यापार प्रसार मानवेतर प्राणियों में भी संचारित हुआ था। उन्होंने पशु-पक्षियों को भी मां की ममता दी है, उन्हें पाला है, उन्हें बड़ा किया है, रोगावस्था में उनकी चिकित्सा सेवा की है। वे उनके हर्ष में पुलकित हुईं हैं, दु:ख में व्यथित। उनके जीवनावसान पर उन्होंने किसी प्रियजन संबंधी के मृत्यु के समान ही कष्ट एवं करुणा का अनुभव किया है। ये पशु-पक्षी उनके जीवनसहचर ही नहीं अपितु मिलकर उनके परिवार की सृष्टि करते हैं इसलिए उन्होंने इस रेखाचित्र संग्रह को 'मेरा परिवार' नाम दिया है।

इस संग्रह के नामकरण के विषय में इलाचंद्र जोशी का यह कथन द्रष्टव्य है—"महाकवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ने अत्यंत विनयवश ही अपनी कृति को 'मेरा परिवार' नाम दिया है। वास्तविकता यह है कि इस महाप्राणशीला कवयित्री का परिवार बहुत विशाल है—कल्पनातीत रूप से विशाल। × × × कवयित्री की संवेदना अत्यंत मार्मिक और जन्म-जन्मांतर की मानवीय अनुभूति के शोधन, परिवर्द्धन और परिशोधन के सुदीर्घ योगाभ्यास के फलस्वरूप वर्षाकालीन निबिड़ मेघ के स्वत: स्फूर्त वर्षण और गहन पर्वत-प्रसूत निर्भर के अनिरुद्ध प्रवाह की तरह सहज-विमुक्त और निश्छल सृजनशील प्रकृति की आदिम गतिशीलता की तरह एकांत स्वाभाविक है। अपने एक-एक लघुत्तम और सर्वथा उपेक्षित मानवेतर पात्र की सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदना को पकड़कर जो मनमोहक अभिव्यक्ति दी है, वैसी स्पर्शातीत और स्तरीय भावग्राहिता कोमल से कोमल अनुभूति वाले कवियों में भी अधिक सुलभ नहीं है।

नोट

वस्तुतः इस संग्रह के शीर्षक की सार्थकता मूल में महादेवी की यही असीम ममता, करुणा और गहन संवदेनशीलता है। इस विशिष्ट मानवेतर प्राणियों के प्रति महादेवी ने जिस गहन रागात्मकता एवं एकांत आत्मीयता का परिचय दिया है, वह वास्तव में अपूर्व है। इन पशु-पक्षियों की प्रतिदिन की साधारण क्रीड़ा-कौतुक में महादेवी ने चतुर शिल्पी की भांति केवल अपनी कल्पना द्वारा मानवीय संवेदनाओं का समावेश ही नहीं किया है, अपितु अपनी गहन आंतरिक प्रेम-दृष्टि द्वारा उनकी संवेदनाओं की गहराई को भी समझा है। इन प्राणियों के नेत्रों की भाषा से उनके हृदय की बात को उसी प्रकार समझा है जैसे मां अपने नन्हें शिशु की आवश्यकताओं को उसके बिना कहे समझ जाती है। स्नेह और प्रेम का अभाव इन मूक मानवेतर प्राणियों में भी नहीं था। ये महादेवी के स्नेह को नहीं समझते थे, ऐसी बात नहीं। वे उनके मातृ-साहचर्य की प्रतिपल उपेक्ष करते थे, उसी प्रकार जैसे मानव हर वय में भी माता का आश्रय ढूंढ़ता हैं वे विभिन्न क्रीड़ाओं द्वारा उनके एकांत को भरने का उन्हें प्रसन्न करने का प्रयास करते थे। नीलू कुत्ता जैसे पात्र उनसे रूठते भी थे और उनकी अनुपस्थिति का कारण जानकर उसे मिलने के लिए अनशन करना भी जानते थे। स्नेह एवं प्रेम की कोमल संवेदनाओं के इस परस्पर आदान-प्रदान ने ही मानव-माता एवं मानवेतर-प्राणी शिशुओं के विचित्र परिवार की सृष्टि कर दी है। इसलिए इस रेखाचित्र संग्रह का शीर्षक 'मेरा परिवार' न केवल पूर्णतः सार्थक है अपितु इस रेखाचित्र संग्रह की मूल संवेदना की भी गहन अभिव्यक्ति करने में पूर्णतः सक्षम है।

9.1 मेरा परिवार : करुणा और मूक संवदेना की मर्मस्पर्शी कथा

9.1.1 करुणा और वेदना की कवयित्री

महादेवी जी के समस्त सृजन का मूल-भाव करुणा है। काव्य क्षेत्र में उन्हें करुणा और वेदना की कवयित्री कहा गया है। जो करुणा विवशता में अश्रु बनकर उनके काव्य में बही है वही उनके गद्यसाहित्य में क्षोभ से मिलकर आक्रोश और व्यंग्य के रूप में प्रकट हुई है। जीवन की कुरूपता और सुंदरता में सामंजस्य घटित करने की चेतना के मूल में भी करुणा की ही भूमिका प्रधान है और स्मृति संदर्भों को शब्दों में अंकित करने की अटूट परंपरा का आरंभ भी करुणा की ही प्रेरणा से हुआ हैं दुखवाद उनके कृतित्व में सर्वत्र व्याप्त है। गौतम बुद्ध ने जिस करुणा और दुखवाद के प्रत्यक्ष दर्शन किए थे उसका प्रभाव महादेवी जी के समस्त साहित्य में परलक्षित होता है। भारतीय संस्कृति की व्याख्या करते हुए महादेवी की दृष्टि 'करुणा के संदेश वाहक' (बुद्ध) पर ही जाकर टिकी हैं वैदिक और बौद्ध संस्कृतियों की तुलना करते हुए महादेवी ने कहा है—"एक में शक्ति का गर्व है, सृजन का ओज है—पर अपनी भूलों के ज्ञान से उत्पन्न नम्रता नहीं है, दूसरों की दुर्बलता के प्रति संवेदना नहीं है। दूसरे में मनुष्य की दुर्बलता के परिचय से उत्पन्न सहानुभूति है जीवन की दुःख-बोधजनित करुणा है, परन्तु शक्ति का प्रदर्शन नहीं है, निर्माण का अहंकार नहीं है।" वस्तुतः महादेवी की सृजन चेतना के मूल में जीवन के दुःखबोध से उत्पन्न करुणा ही है।

क्या आप जानते हैं महादेवी वर्मा के काव्य का प्रमुख स्वर व्यक्ति केन्द्रित एवं पीड़ाभिमुख अवश्य रहा है किन्तु गद्य में उनकी दृष्टि समष्टि की ओर जाती हैं गद्य में विशेषतः रेखाचित्रों में उनकी व्यष्टि चेतना एक साक्षात्कारकर्ता का रूप धारणा करती है तथा समाज के विभिन्न वर्गों के व्यक्ति के सुख दुःखों का आत्मीयता से अनुभव करती है तथा इन अनुभवों की यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति करती है। केवल व्याख्याता बने रहने के बावजूद उनकी हृदयगत करुणा का प्रबल आवेग प्रत्येक दीन, पीड़ित, निरीह मानव एवं मानवेतरप्राणी को मानो अपने अंतःकरण का संरक्षण प्रदान करता है।

'मेरा परिवार' में उन मूक प्राणियों के रेखाचित्र हैं जिनके पास अपनी पीड़ा, अपने दु:ख खुशी एवं उल्लास की अभिव्यक्ति के लिए न भाषा है, न ही कोई और साधन। किन्तु उनकी क्रीड़ाएं ही उनके सुख-दुखों की व्यंजना करती हैं जिसे वे स्वयं को स्नेह करने वाली लेखिका के साथ बांट लेना चाहते हैं। इन प्राणियों की इस विधाताप्रदत्त विवशता को महादेवी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–"इस छोटे जीवों को हंसने-रोने के लिए भिन्न ध्वनियां नहीं मिली हैं। अत: इनका महा-कलरव महा-क्रंदन भी हो तो आश्चर्य नहीं।" तथापि संवेदनशील लेखिका ने इन मानवेतर प्राणियों में उपजती संवेदना की कल्पना मानवीय पृष्ठभूमि पर कर उन्हें पार्थिव रूप प्रदान किया है जिससे न प्राणियों की व्यथा और भी अन्तर्भेदी होकर पाठक को स्वार्थी मानवीय समाज के पुनरीक्षण पर विवश करती है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. काव्य क्षेत्र में महादेवी जी को करुणा और वेदना की ········ कहा गया है।
2. मेरा परिवार कथा में उन मूक प्राणियों के रेखाचित्र हैं जिनके पास अपनी पीड़ा, अपने दु:ख, खुशी एवं उल्लास की अभिव्यक्ति के लिए न भाषा है, न ही कोई और ········।
3. इस कथा के मूक पशुओं की ········ उनकी ध्वनि से उत्पन्न नहीं होती अपितु उनके नेत्रों में छाया-छवि बनकर तैरा करती है।

अत्यंत सुदंर मयूर का शिकार मानव अपने हितों को साधने के लिए करता है तथा अहिंसा के हमारे शाश्वत धर्म को भूल जाता है। मानव की इस विकृति का अंकन नीलकंठ मोर के रेखाचित्र में प्राप्त होती है। "शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें, मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आये थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इन्सान का दिल हैं मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़िया को कैसे दे दूं। टालने के लिए मैंने कह दिया गुरुजी ने मंगवाए हैं। वैसे यह कमबख्त रोज़गार ही खराब है। बस, पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो।"

सोना हिरणी को भी मनुष्य की निष्ठुरता के कारण अपने प्राण गंवाने पड़े। शिकारी को तो मात्र उसके शिकार का अर्थ होता है, वह हिरण के कुलांचे भरते झुंड की अद्‌भुत एवं गतिशील क्रियाओं के सौंदर्य के प्रति आकर्षित नहीं होता। लेखिका मनुष्य की हिंसावृत्ति के प्रति आश्चर्यचकित होकर कथन करती है–"मनुष्य मृत्यु को असुन्दर ही नहीं, अपवित्र भी मानता है। उसके प्रियतम आत्मीयजन का शव भी उसके निकट अपवित्र अस्पृश्य तथा भयजनक हो उठता हैं जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुन्दर है तब उसे बांटते घूमना क्यों अपवित्र और असुन्दर कार्य नहीं है, यह मैं समझ नहीं पाती।"

नोट्स पशु-पक्षियों का शिकार मानव अपने हितों को साधने के लिए करता है।

सोना हिरणी को जन्म प्राप्त होते ही मानव समाज की इसी निष्ठुरता के कारण अपनी मां की छाया से अलग होना पड़ा। जंगल के शिकारियों से बचने के प्रयास में जब अन्य मृग भागे तो सोना की मां सद्य:प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। उसने अपने शिशु को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दे दिए। मनुष्य की थोड़ी सी मनोरंजनप्रियता के कारण न केवल सोना को मां की ममता से वंचित होना पड़ा अपितु अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव समाज में पलना पड़ा।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

नोट

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)

4. मनुष्य मछली, मुर्गा, बकरी आदि का पालन किसकी पूर्ति के लिए करता है?
   (*a*) मनोरंजन के लिए की पूर्ति के लिए (*b*) शल्यक्रिया के लिए
   (*c*) खाद्य-हितों (*d*) या इनमें से कोई नहीं
5. महादेवी जी ने इन पशु-पक्षियों के मध्य दाम्पत्य जीवन के किस संवेदनाओं को पहचाना था?
   (*a*) कोमल रागात्मक संवेदनाओं को (*b*) कठोर रागात्मक संवेदनाओं को
   (*c*) मानवीय रागात्मक संवेदनाओं को (*d*) या उपरोक्त में से कोई नहीं
6. मनुष्य ही नहीं, स्वयं नियति भी ..... लिए विपरीत स्थितियाँ उत्पन्न कर देती हैं।
   (*a*) मानवों के लिए (*b*) प्रकृति के लिए
   (*c*) समाज के लिए (*d*) पशुओं के लिए

इन मूक पशुओं की संवेदना उनकी ध्वनि से उत्पन्न नहीं होती अपितु उनके नेत्रों में छाया-छवि बन कर तैरा करती है। पशु जब पालित हो जाता है तो वह पशु न रहकर मानव का सहचर बन जाता है वह उसे निश्छल स्नेह प्रदान करता है और उससे समान प्रतिदान की अपेक्षा करता है। गौरा गाय के अपने प्रति विश्वास भरे नेत्रों में स्नेह की अभिव्यक्ति एवं आशा की व्यंजना लेखिका ने इन शब्दों में की है–"उसका हमसे साहचर्यजनित लगाव मानवीय स्नेह के समान ही निकटता चाहता था। निकट जाने पर वह सहलाने के लिए गर्दन बढ़ा देती, हाथ फेरने पर अपना मुख आश्वस्त भाव से कंधे पर रखकर आंखे मूंद लेती। जब उससे दूर जाने लगते तब गर्दन घुमा-घुमाकर देखती रहतीं। आवश्यकता के लिए उसके पास एक ही ध्वनि थी। पन्तु उल्लास, दु:ख, उदासीनता, आकुलता आदि की अनेक छाया-छवियां उसकी बड़ी और काली आंखों में तैरा करती थीं।"

इस ममता और करुणा की प्रतिमूर्ति गौरा गाय की असमय एवं यातना भरी मृत्यु का उत्तरदायी भी स्वार्थी एवं ईर्ष्या से भरा मनुष्य एक ग्वाला था। जिसने लेखिका के घर में गाय का आगमन सहन न कर पाने के कारण उसे गुड़ में लपेट कर सुई खिला दी थी जो कभी भी उसके हृदय को छेदकर उसकी मृत्यु का कारण बन सकती थी। इस शांत और सहिष्णु प्राणी की मृत्यु के संघर्ष उसकी हृदयविदारक यातनाओं और कष्टों को इन मर्मस्पर्शी शब्दों में लेखिका ने अभिव्यक्ति दी है– "तब गौरा का मृत्यु से संघर्ष आरंभ हुआ जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है। डॉक्टरों ने कहा, गाय को सेब का रस पिलाया जाए तो सुई पर कैल्शियम जम जाने और उसके ने चुभने की संभावना है। अत: नित्य कई-कई सेर सेब का रस निकाला जाता और नली से गौरा को पिलाया जाता। शक्ति के लिए इंजेक्शन पर इंजेक्शन दिए जाते। पशुओं के इंजेक्शन के लिए सूए के समान बहुत लंबी मोटी सिरिंज तथा बड़ी बोतल भर दवा की आवश्यकता होती है। अत: वह इंजेक्शन भी अपने आप में 'शल्यक्रिया' जैसा यातनामय हो जाता था। पर गौरा अत्यंत शान्ति से बाहर और भीतर दोनों ओर की चुभन और पीड़ा सहती थी। केवल कभी-कभी उसकी सुन्दर, पर उदास आंखों के कोनों में पानी की दो बूँदें झलकने लगती थीं।" मनुष्य तो मछली, मुर्गा, बकरी आदि का पालन भी अपने खाद्य-हितों की पूर्ति के लिए करता है तथा उनका आहार बनाने के लिए बेझिझक उन निरपराधों की हत्या कर देता है। किन्तु इस निर्ममता के विपरीत रानी घोड़ी की सहृदयता द्रष्टव्य है जिसने भूलवश महादेवी वर्मा को चोट पहुँचाई और बाद में उसका पश्चाताप भी उसने प्रकट किया– "एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना हीं नहीं थी, परन्तु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दु:खद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो

नोट

सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़ बांध रखने का संकल्प किए हों। कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़न खटोले पर संभाला परन्तु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई, जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो। ××× साथियों की चीख–पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे विछौने पर पड़ा रहना पड़ा। स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चाताप भरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि आंसू आ गए।"

मनुष्य ही नहीं, स्वयं नियति भी इन पशुओं के लिए विपरीत स्थितियाँ उत्पन्न कर देती है। माँ के ममत्व, उसके पोषण के अभाव में पले बच्चे का स्वभाव यदि क्रोधी और ममतारहित हो भी जाए तो क्या आश्चर्य? यही स्थिति दुर्मुख खरगोश के साथ भी हुई जिसके माता–पिता एवं अन्य शावकों को मार्जारी ने अपना आहार बना लिया। अपने माता–पिता एवं सहोदरों के साथ क्रीड़ा–कल्लोल करने के स्थान पर जब ये भिन्न प्रजाति के पशुओं के मध्य रहने आया तो इसके भाव इतने अधिक आतंकपूर्ण एवं आक्रामक हो गए कि यह स्वयं अपने बच्चों तक को घायल कर देता। "वह किसी बच्चे का पांव चबा डालता, किसी का कान कुतर डालता और किसी की पीठ में घाव कर देता। कदम्ब के फूल से फूले वे कोमल बच्चे रक्त से रंग–बिरंगे हो उठते। हिमानी भी अपनी सन्तान की रक्षा के प्रयत्न में नित्य ही घायल होने लगी। लौरेक्सेन मरहम, नेबासल्फ? पाउडर, रुई आदि की गन्ध से अशोक वृक्ष की छाया में मालती लता से छाया चिड़ियाघर भी अस्पताल का स्मरण दिलाने लगा। ××× फिर एक दिन क्रोध में दुर्मुख ने दो शशक–शावकों की कोमल गर्दन अपने तीखे दांत से इतनी क्षत–विक्षत कर डाली कि वे बचाए न जा सके।

ऐसे ही मातृविहीन पशु नीलू कुत्ता एवं लालमणि बछड़ा भी थे जिन्हें अपनी माता का अभाव अधिक ज्ञात न हुआ। नीलू कुत्ता जो महादेवी की ममता की छाया में ही बड़ा हुआ, उनके नियमों को अधिक पहचानने लगा था। प्राय: श्वान मांसभक्षी एवं अहिंसक होते हैं तथा मनुष्य के सामने दीन प्रकृति के। इसके विपरीत नीलू कुत्ते में दीन भाव का अभाव था। उसके हृदय में अन्य मानवेतर प्राणियों के प्रति स्नेह का एवं उन्हें संरक्षण देने का गहन और दृढ़ भाव था जो कि कुत्ता होने के बाद भी उसे मानव से अधिक महान बना देता है। "मेरे बंगले के रोशनादानों में प्राय: गौरेय्या तिनकों से घोंसला बना देती है। मुझे उनके परिश्रमपूर्वक बनाए हुए घोंसले उजाड़ना अच्छा नहीं लगता, अत: कालान्तर में उनमें अण्डों और पक्षी–शावकों की सृष्टि बस जाती है। कुछ–कुछ अंकुर जैस पंख निकलते ही वे पक्षी–शावक उड़ने के असफल प्रयास में रोशनदानों से नीचे गिरने लगते हैं। इन दिनों नीलू उनके सतर्क पहरेदार का कर्तव्य संभाल लेता था। उसके भय से कोई भी कुत्ता–बिल्ली उन नादान उड़ने–गिरने वालों को हानि पहुँचाने का साहस नहीं कर पाता था। कभी–कभी बहुत छोटे पक्षी–शावकों को पुन: घोंसले में रखवाने के लिए वह उन्हें हौले से मुख में दबाकर मेरे पास ले आता था। जब तब रोशनदान में सीढ़ी मंगवाकर मैं उस बच्चे को घोंसले में पहुँचाने की व्यवस्था न कर लेती, तब तक वह या तो बड़ी कोमलता से उसे दबाये खड़ा रहता या मेरे हाथ में देकर प्रतीक्षा की मुद्रा में देखता रहता।"

टास्क मेरा परिवार कथा के द्वारा महादेवी जी का उद्देश्य मानव तथा पशुओं की किस संवेदना को उजागर करता है? उल्लेख कीजिए।

लेखिका ने इन पशु–पक्षियों के मध्य दाम्पत्य जीवन के अदम्य स्नेह, ईर्ष्या, बिछोह आदि की कोमल रागात्मक संवेदनाओं को भी पहचाना था। नीलकंठ मोर और राधा मोरनी के दात्पत्य जीवन के मध्य कुब्जा मोरनी का प्रवेश किसी शांत उपवन में भयानक आंधी के समान था। इन तीनों की अलग–अलग संवेदनाएं एवं तत्संबंधी क्रियाओं को लेखिका ने मानवीय संवेदना का रूप देकर मनोवैज्ञानिक स्तर पर अभिव्यक्ति दी है। कुब्जा की कलहप्रियता के कारण नीलकंठ को राधा के साथ से अलग हो जाना पड़ा। "इस कलह कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा

नोट

की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया। कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहाँ से बहुत पुचकार कर मैंने उतारा। × × × मेरे दाना देने जाने पर वह सदा के समान अब भी पंखों को मंडलाकार बना कर बड़ा हो जाता था, पर उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी।" राधा के बिछोह एवं दाम्पत्य जीवन में खलल पड़ जाने के दु:ख का अतिरेक वह सहन कर सका और उसका जीवानांत हो गया।

9.1.2 मेरा परिवार: जीवों एवं मानवों की प्रकृति का मार्मिक प्रस्तुतीकरण

कोई भी पशु शिशु अवस्था में मनुष्य को अपना पालनहार, अपना सहचर मान लेता है किन्तु जब उसमें यौवनावस्था का पदार्पण होता है जो उसमें अपनी जाति के सदस्यों से मेल-मिलाप एवं आकर्षण बढ़ने लगता है। इस प्रकृतिगत संवेदना की कोमलता एवं मूक विवशता के दर्शन सोना हिरणी के रेखाचित्र में होते हैं– "संभवत: अब उसमें वन तथा स्वजाति का स्मृति-संसार जागने लगा था। प्राय: सूने मैदान में वह गर्दन ऊँची करके किसी की आहट की प्रतीक्षा में खड़ी रहती। वासन्ती हवा बहने पर यह मूक प्रतीक्षा और अधिक मार्मिक हो उठती। शैशव के साथियों और उनकी उछल-कूद से अब उसका पहले जैसा मनोरंजन नहीं होता था। अत: उसकी प्रतीक्षा के क्षण अधिक होते जाते थे।" पशु-पक्षी भी मानव के समान विभिन्न संवेदनाओं से युक्त होते हैं जिसे वे भाषा के अभाव में प्रकट नहीं कर पाते। व्यथा एवं कष्टों को झेलने की क्षमता कदाचित् पशुओं में मनुष्य से ज्यादा होती है।

और यह जानते हुए भी कि उनके कष्टों का, उनके दु:खमय जीवन का प्रमुख कारण स्वयं मनुष्य है, वे उसे अपना निश्छल स्नेह, प्रसन्नता और एकान्त जीवन में साहचर्य प्रदान करते हैं। इन प्राणियों की सरलता और महान भावनाओं के प्रति आत्मीयता से अटकर इसीलिए लेखिका का यह कथन वास्तव में कितना सही एवं मर्मस्पर्शी है।

टास्क मेरा परिवार पाठ पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

"यदि मनुष्य दूसरे मनुष्य से केवल नेत्रों से बात कर सकता तो बहुत से विवाद समाप्त हो जाते, परन्तु प्रकृति को यह अभीष्ट नहीं रहा होगा। ××× संभवत: इसी से मनुष्य वाणी द्वारा परस्पर किए गए आघातों और सार्थक शब्द भार से पीड़ित अपने प्राणों पर इन भाषाहीन जीवों की स्नेह तरल दृष्टि का चन्दन लेप लगाकर स्वस्थ और आश्वस्त होना चाहता है।" यह कथन मानवों एवं जीवों की प्रवृत्ति का तुलना-चित्र प्रस्तुत कर देता है। इन रेखाचित्रों में मूक, निश्छल एवं संवेदनशील पशु की व्यथा-कथा अपनी करुणा, उज्ज्वलता, चांचल्य के साथ साकार हो उठी है जिसे महादेवी वर्मा ने अपनी संवेदनाओं, अपनी असीम ममता के साथ कल्पना का पुट देकर और भी हृदयस्पर्शी बना दिया है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. कोई भी पशु शिशु अवस्था में मनुष्य को अपना पालनहार, अपना सहचर मान लेता हैं।
8. पशु-पक्षी, मानव के समान विभिन्न संवेदनाओं से युक्त नहीं होते हैं।
9. यदि मनुष्य दूसरे मनुष्य से केवल नेत्रों से बात कर सकता तो बहुत से विवाद समाप्त हो जाते।

नोट

9.2 सारांश (Summary)

- स्नेह एवं प्रेम की कोमल संवेदनाओं के इस परस्पर आदान-प्रदान ने ही मानव-माता एवं मानवेतर-प्राणी शिशुओं के विचित्र परिवार की सृष्टि कर दी है। इसलिए इस रेखाचित्र संग्रह का शीर्षक 'मेरा परिवार' न केवल पूर्णत: सार्थक है अपितु इस रेखाचित्र संग्रह की मूल संवेदना की भी गहन अभिव्यक्ति करने में पूर्णत: सक्षम है।
- इन रेखाचित्रों में मूक, निश्छल एवं संवेदनशील पशु की व्यथा-कथा अपनी करुणा, उज्ज्वलता, चांचल्य के साथ साकार हो उठी है जिसे महादेवी वर्मा ने अपनी संवेदनाओं, अपनी असीम ममता के साथ कल्पना का पुट देकर और भी हृदयस्पर्शी बना दिया है।

9.3 शब्दकोश (Keywords)

दाम्पत्य जीवन : विवाहित जीवन

संग्रह : इक्ट्ठा करना, जमा करना

अंत : खत्म हो जाना, समाप्त हो जाना

9.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. मेरा परिवार कथा में महादेवी जी के समस्त सृजन का मूल भाव क्या है?
2. मेरा परिवार करुणा और मूक संवेदना की मर्मस्पर्शी कथा क्यों है?
3. इस कथा (मेरा परिवार) के माध्यम से महादेवी जी क्या संदेश देना चाहती है?

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. कवयित्री	2. साधन	3. संवेदना
4. (*c*)	5. (*a*)	6. (*d*)
7. सही	8. गलत	9. सही

9.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. मेरा परिवार (महादेवी वर्मा) लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

नोट

इकाई–10: भाषा का अर्थ एवं परिभाषा

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

10.1 भाषा की उत्पत्ति, विशेषता, रचना एवं परिभाषा

10.1.1 भाषा की उत्पत्ति

10.1.2 भाषा की विशेषता

10.1.3 भाषा की रचना

10.2 सारांश (Summary)

10.3 शब्दकोश (Keywords)

10.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

10.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- भाषा का अर्थ एवं परिभाषा जानने में।
- भाषा की उत्पत्ति जानने में।
- भाषा की विशेषता का अध्ययन करने हेतु।
- भाषा की रचना जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।" सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे निरंतर समाज के अन्य सदस्यों के विचारों और भावों का आदान-प्रदान करना होता है। भाषा ही प्रमुखतया वह संकेत (कोड) व्यवस्था है, जिसके द्वारा वह सामाजिक प्रयोजनों की सिद्धि के लिए संदेश भेजता और ग्रहण करता है।

मनुष्य सामान्यतया इस कोड-व्यवस्था के मौखिक पक्ष को काम में लाता है–वह मुँह द्वारा बोलता है और ध्वनिबद्ध संदेश को सुनने वाला कानों से सुनता है। यह बात अवश्य है कि दूर स्थित अथवा बाद में आने वाले व्यक्तियों के लिए मनुष्य इस कोड-व्यवस्था के लिखित पक्ष को भी बहुलता से काम में लाता है।

नोट

भाषा को कोड़-व्यवस्था इसलिए कहा गया है क्योंकि इसमें कोडों (संकेतों) का प्रयोग होता है और वह प्रयोग भी व्यवस्थाबद्ध होता है। कोड भिन्न-भिन्न भाषाओं में ध्वनि/वर्ण की दृष्टि से अलग-अलग होते हैं–जैसे एक ही वस्तु के लिए हिन्दी में "जल", तमिल में "तन्नी" उर्दू में "पानी" और अंग्रेजी में "वाटर"। इसी प्रकार ध्वनि/वर्ण की दृष्टि से एक समान कोड (जैसे "कम") भिन्न-भिन्न भाषाओं में अलग-अलग वस्तु व्यवहार के लिए प्रयोग में आता है। उदाहरणार्थ–"कम" हिन्दी में "न्यूनता" है और अंग्रेजी में "आना" क्रिया। ये कोड ध्वनि की दृष्टि से, व्याकरण की दृष्टि से, अर्थ की दृष्टि से सभी प्रकार सुव्यवस्थित होते हैं। हिन्दी के वाक्यों में क्रिया अंत में रहती है, अंग्रेजी में बीच में, हिन्दी में कुछ विशेषण संज्ञा के लिंग के अनुसार प्रयोग में आते हैं (अच्छा लड़का, अच्छी लड़की, अच्छे लड़के) जबकि अंग्रेजी में Good में कोई भिन्नता नहीं आती है।

इस प्रकार भाषा (1) मूलत: ध्वनि संकेतों की एक व्यवस्था है, (2) वह मानव मुख से निकली अभिव्यक्ति है, (3) यह विचारों के आदान-प्रदान का सामाजिक साधन है, और (4) उसके शब्दों के अर्थ रूढ़ होते हैं।

2. भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप

साधारणत: भाषा में अभिव्यक्ति के दो रूप हैं–मौखिक और लिखित। मातृभाषा भाषी को भाषा का मौखिक रूप सहज में ही मिल जाता है, जबकि अन्य भाषा-भाषी को उससे सीखना पड़ता है।

भाषा के लिखित रूप को सीखने के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। समाज में एक-दूसरे को जोड़ने में भाषा के लिखित रूप का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा का लिखित रूप ही ज्ञान के भण्डार को स्थायी रखता है और आने वाली पीढ़ी को सौंपता है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. अध्यात्मवादी विचारक मानते हैं कि भाषा ········ है।
2. शब्द का और अर्थ का मूर्त संबंध यह है शब्द द्वारा हमें पदार्थ या कर्म का ········· होता है।
3. भाषा हमारी संस्कृति का अंग है। इसलिए भाषा के विभिन्न तत्व ········ मात्र न रहकर ········ भी बन जाते हैं।

10.1 भाषा की उत्पत्ति, विशेषता, रचना एवं परिभाषा

10.1.1 भाषा की उत्पत्ति

प्राणि-जगत् में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो भाषा का व्यवहार करता है। इसका कारण क्या है?

अध्यात्मवादी विचारक मानते हैं कि भाषा ईश्वरकृत है। मनुष्य में यह क्षमता नहीं थी कि वह भाषा रचता। धर्म-विशेष के अनुयायी अपनी भाषा को देववाणी कहते रहे हैं। यह देववाणी ही क्रमश: मानव-भाषा बनी। कुछ यहूदी और ईसाई विचारकों का मत रहा है कि जिस भाषा में मानव जाति के, पिता-माता आदम और हौवा बातें करतें थे। उसी से संसार की समस्त भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं। भाषा-वैज्ञानिकों में ईश्वरकृत मूल भाषा की स्थापना का खंडन-मंडन अब अनावश्यक समझा जाता है। जैसे भौतिक विज्ञान में इस स्थापना का खंडन अनावश्यक हो गया है कि मेघों से इन्द्र पानी बरसाता है, वैसे ही भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में उपर्युक्त स्थापना का खंडन भी अनावश्यक है। साथ ही जैसे भौतिक विज्ञान भी जब-तब अध्यात्मवाद से प्रभावित दिखाई देता है, वैसे ही भाषा-विज्ञान पर भी अध्यात्मवाद से प्रभावित दिखाई देता है, वैसे ही भाषा-विज्ञान पर भी अध्यात्मवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। अध्यात्मवाद अब

आत्मा की ही बात करे, यह आवश्यक नहीं है; हेगल की तरह वह बुद्धि और विचार की बात करता है। यह संसार क्या है? विचार का ही मूर्त रूप है। पदार्थ क्या है? चिन्तन का ही घनीभूत रूप है। इसी तरह भाषा की रचना क्यों हुई? इसलिए हुई कि मनुष्य में बुद्धि है, मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है।

नोट्स समाज में एक-दूसरे को जोड़ने में भाषा के लिखित रूप का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इस तरह का मत भाषा-विज्ञानियों में ही नहीं, शरीर विज्ञानियों से भी प्रचलित है। वी. ई नीगस इंग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध शरीर वैज्ञानिक हैं। उन्होंने घोषयंत्र (लैरिन्क्स) के विकास पर एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। पशुओं द्वारा ध्वनि-संकेतों के प्रयोग की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा है: "बहुत से पशु ऐसी ध्वनियाँ करते हैं जिनसे भाषा का विशद् शब्द भंडार बन सके, लेकिन उनमें बुद्धि नहीं है कि वे इस क्षमता से लाभ उठायें जैसे कि मनुष्य उठाता है।" इस धारणा के अनुसार मनुष्य की बुद्धि उसके विकास का परिणाम नहीं है, वरन् उसका विकास उसकी बुद्धि का परिणाम है। भाषा के प्रयोग द्वारा उसने बुद्धि अर्जित और परिष्कृत नहीं की, वरन् अपनी बौद्धिक योग्यता के कारण वह भाषा की रचना कर सका। आत्म-रक्षा, आहार-प्राप्ति, मैथुन, संतान-रक्षा, यूथ सम्पर्क आदि की आवश्यकताएँ मुनष्य के लिए वैसे ही रही हैं जैसे पशुओं के लिए। ध्वनि-संकेतों से काम लेने के आदि कारण मनुष्य के लिए वही हैं जो पशु के लिए। समृद्ध भाषा की रचना हो जाने के बाद भी मनुष्य अनेक ध्वनि-संकेतों से काम लेता है जिन्हें सदा भाषा के अन्तर्गत स्वीकार नहीं किया जा सकता। सड़क पर किसी सुन्दरी को जाते देखकर मनचले युवक सीटी बजाते हैं। उनकी यह क्रिया किसी देश या युग तक सीमित नहीं है। सीटी बजाना एक सनातन और अर्न्तराष्ट्रीय ध्वनि-संकेत है। बम्बई में किसी को बुलाने के लिए लोग सी-की आवाज करते हैं। यह एक तरह की अस्पष्ट ध्वनि है। संकेत सुनने वाले इधर-उधर देखकर जानने का प्रयत्न करते हैं, कोई उन्हें तो नहीं बुला रहा। गाँव के लोग किसी को बुलाते हुए ए, हो, ओ, आदि शब्द करते हैं। ये शब्द भाषा के सार्थक शब्द न होकर सार्थक ध्वनि-संकेत मात्र है। अंग्रेजों का 'हलो' शब्द इसी प्रकार की ध्वनि है जो भारत में अंग्रेजी पढ़े-लिखों का आम सम्बोधन संकेत है। टेलीफोन करने वाले इस 'हलो' के बिना किसी से बातचीत ही नहीं पाते। रणक्षेत्र में सैनिक एक-दूसरे को उत्साहित करने के लिए अनेक सार्थक और निरर्थक शब्द करते हैं। इस ध्वनि-क्रिया का उद्देश्य वहीं होता है जो आक्रमण के समय पशु-यूथ का होता है। जलूस में चलते हुए लोग कभी-कभी ऐसे नारे लगाते हैं जिनका अर्थ वे खुद नहीं समझते। 'मैला आंचल' के लेखक को साक्षी मानें तो लोग इनकलाब को किलकिलाब और जिन्दाबाद को जिन्दाबाघ भी कह सकते हैं। लेकिन इससे उनके उत्साह में कमी नहीं होती। 'किलकिलाब जिन्दाबाघ' निरर्थक शब्दावली होकर भी चहचहाने से खतरे या आनन्द के बोध की बात की थी। चहचहाहट के स्वर-व्यंजन एक ही होंगे, लेकिन उदात्त-अनुदात्त भेद से उनकी व्यंजना भिन्न हो जाती है। भय से मनुष्य की घिग्घी बँध जाती है, तो उसके स्वर से उसकी परिस्थिति को समझने में कठिनाई नहीं होती। क्रोध, भय, घृणा, प्रीति आदि के भाव, शब्दों के अलावा केवल स्वर की विशेषता से पहचाने जा सकते हैं। मनुष्य और पशु से इस प्रकार की स्वर-भिन्नता द्वारा भावव्यंजना की यह प्रणाली सामान्य है।

टास्क भाषा की उत्पत्ति से क्या तात्पर्य है? लिखिए।

शब्द और अर्थ का मूर्त सम्बन्ध यह है कि शब्द द्वारा हमें किसी पदार्थ या कर्म का बोध होता है जिससे वह ध्वनि-संकेत सम्बद्ध हो गया है। शब्द स्वयं वह पदार्थ नहीं है; वह किसी की ओर संकेत भर करता है। इसलिए

नोट

हम उसे बाधित उत्तेजक कहते हैं। जैसे 'माँ' शब्द कहने पर हमें अपनी जन्मदात्री का बोध होता है; अन्य लोगों को यही बोध 'ममी' कहने से होता है। माँ या ममी की ध्वनियों में कोई ऐसा गुण नहीं है जो जननी के गुणों का प्रतिबिम्ब हो। शब्द और अर्थ का सम्बन्ध ध्वनि और उससे सम्बद्ध किये हुए पदार्थ का ही सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध अटूट और अविच्छेद्य नहीं है। एक भाषा से दूसरी भाषा में किसी रचना का अनुवाद करते समय संक्रमण की दशा में विचार की स्थिति कहाँ होती है? यदि शब्द और अर्थ निरपेक्ष रूप में अभिन्न हों, तो एक विचार को एक से अधिक भाषा में प्रकट ही न किया जा सके। अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं की समान शब्दावली जिन वस्तुओं की ओर संकेत करती है वे वस्तुएँ और उनसे हमारे स्नायुतंत्र का सम्बन्ध ही वह मूर्त आधार है जिसके कारण एक भाषा का सहारा छोड़ते हुए दूसरी भाषा की शब्दावली तक पहुँचने की अवधि में 'अर्थ' लुप्त नहीं हो जाता।

शब्द को हम बाधित उत्तेजक मानते हैं किन्तु वह हमारे लिए संकेत मात्र नहीं रह जाता। हमारे लिए सापेक्ष रूप से उसकी एक स्वतंत्र सत्ता कायम हो जाती है। भाषा हमरी संस्कृति का अंग है। इसलिए भाषा के विभिन्न तत्व बाधित उत्तेजक मात्र न रहकर सहज उत्तेजक भी बन जाते हैं। हम अपनी भाषा के शब्दों को इसीलिए प्यार नहीं करते कि वे विभिन्न पदार्थों और व्यापारों की ओर संकेत करते हैं, वरन् इसलिए भी–और मुख्यत: इसीलिए–कि वे हमारे हैं, उनसे हमारा और हमारे पूर्वजों का सम्बन्ध रहा है। इसलिए हिन्दुस्तानी बच्चे जब माँ को मम्मी कहते हैं, जो हमें बुरा लगता है, यद्यपि संकेतित पदार्थ में कोई अन्तर नहीं आता।

10.1.2 भाषा की विशेषता

भाषा की विशेषता यह है कि एक ओर वह सहज और बाधित उत्तेजक है, दूसरी ओर वह सहज और बाधित प्रतिक्रिया भी है। विभिन्न परिस्थितियों में पशु-पक्षी कुछ स्वत: स्फूर्त ध्वनियाँ करते हैं। ये ध्वनियाँ स्वत: स्फूर्त होती हैं, इसलिए वे पशु-पक्षियों की सहज ध्वन्यात्मक प्रतिक्रिया हैं। मनुष्य जब दुख में 'हाय-हाय' करता है, तब यह शब्द उसकी ध्वन्यात्मक प्रतिक्रिया है, न कि दुख को प्रकट करने का ध्वनिसंकेत। भाषा के आदि काल में इस तरह की प्रतिक्रियावाली सहज ध्वनियाँ अधिक रही होंगी। किसी पशु को यह पता चल जाय कि विशेष परिस्थितियों में विशेष परिस्थितियों में विशेष ध्वनि करने से उसका उद्देश्य सफल होगा, तो इस तरह की ध्वनि बाधित प्रतिक्रिया होगी, न कि सहज प्रतिक्रिया। उल्लू कभी-कभी बच्चों के रोने की नकल करता है और शिकारियों को–या घोंसले की ओर आनेवालों को–धोखा देता है। इस तरह की ध्वनि बाधित प्रतिक्रिया मानी जायगी, क्योंकि उल्लू के लिए वह सहज और जन्म जात नहीं है। उसने उसे विशेष परिस्थितियों में सीखा है। अंग्रेज अफसर की ध्वनियों से प्रभावित होकर हिन्दुस्तानी साहब बोलता था–हम खाना मांगटा है। अंग्रेजी राज की विशेष परिस्थितियों में हिन्दुस्तानी साहब की यह बाधित प्रतिक्रिया हुई।

> *क्या आप जानते हैं* भाषा ध्वनि संकेतों की एक व्यवस्था है, वह मानव मुख से निकली अभिव्यक्ति है, यह विचारों के आदान-प्रदान का सामाजिक साधन है, और उसके शब्दों के अर्थ रूढ़ हो जाते हैं।

विशेष कार्यों, कार्य-समूहों या वस्तुओं से कुछ निश्चित ध्वनियों के संसर्ग द्वारा भाषा का निर्माण होता है। यह क्रिया मूलत: वही है जिसमें स्नायुतंत्र बाह्य पदार्थों से स्थायी या अस्थायी सम्बन्ध बनाता है। बाह्य पदार्थों का यह प्रत्यक्ष इन्द्रियबोध प्रथम संकेत-पद्धति हुआ; इन्हीं पदार्थों से ध्वनियों का सम्बन्ध-स्थापन द्वितीय संकेत-पद्धति हुआ। दोनों ही पद्धतियों में मूलभूत एकता है। सम्बन्ध-स्थापना की प्रणाली दोनों में मूलत: एक है। ऐसा होना स्वाभाविक है, क्योंकि भाषा की उत्पत्ति इन्द्रियों की स्वत: स्फूर्त प्रतिक्रिया से होती है। जो इन्द्रियाँ किसी पदार्थ के रूपज्ञान का

नोट

माध्यम हैं, वही उसके नामकरण का माध्यम भी हैं। जैसे रूपज्ञान में पदार्थ से स्थायी और अस्थायी सम्बंध कायम किये जाते हैं, वैसे ही नामकरण में भी कायम होते हैं, यद्यपि यह क्रिया अक्सर हमारी आँखों से ओझल रहती है और हमें लगता है कि ध्वनि और पदार्थ का सम्बन्ध सदा से पूर्व निश्चित है। आजकल हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों की रचना हो रही है। इंद्रियों द्वारा ग्रहीत पदार्थ को हम अंग्रेजी के माध्यम से 'स्टिमुलस' संज्ञा द्वारा अभिहित करते हैं। इनके लिए एक हिन्दी शब्द है उद्दीपक; अन्य शब्द है उत्तेजक। यदि उत्तेजक शब्द का चलन हो जाय तो 'स्टिमुलस' द्वारा ज्ञापित पदार्थ से उसका सम्बन्ध अस्थायी से बदलकर स्थायी हो जायगा और 'उद्दीपक' का सम्बन्ध अस्थायी ही रहकर खत्म हो जायगा। हिन्दी में तीर्थ किसी धार्मिक स्थान को कहते हैं, दक्षिण की वाचक शब्द है; हिन्दी में वह नदी विशेष का सूचक भी है। मृग हरिण के लिए प्रयुक्त होता है; दक्षिण की कुछ भाषाओं में मृग का अर्थ है पशु। हिन्दी में शिक्षा का सम्बंध सीखने-सिखाने से हैं; मराठी में उसका सम्बन्ध ताड़ना से है। हिन्दी में अनर्गल शब्द निरर्थक शब्द प्रवाह का सूचक है; तेलगु में उसकी व्यंजना है—धाराप्रवाह भाषण। इस तरह की सैकड़ों मिसालें एकत्र की जा सकती हैं जिनसे हम देखते हैं कि ध्वनि एक ही है किन्तु उसके द्वारा संकेतित पदार्थ भिन्न-भिन्न हैं। यह तभी सम्भव है जबकि एक स्थिति या काल में ध्वनि और पदार्थ का जो सम्बन्ध स्थायी लगता था, वही अन्य स्थिति और काल में अस्थायी हो जाय और उसका स्थान भिन्न पदार्थ वाला स्थायी सम्बन्ध ले ले। संसार के पदार्थ और क्रियाएँ ही जब परिवर्तनशील हैं, तब ध्वनियों से उनका सम्बन्ध ही कैसे अपरिवर्तनशील रह सकता है? मुख्य बात यह है कि भाषा-रचना का साधारण क्रम यह है कि मनुष्य अंजाने, बिना सोचे-समझे, स्वत: प्रेरित ढंग से ध्वनि और पदार्थ का स्थायी-अस्थायी सम्बंध बनाता है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. विशेष कार्यों, कार्य-सूमहों या वस्तुओं से कुछ निश्चित ध्वनियों के द्वारा किसका निर्माण होता हैं।
   (*a*) संकेत-पद्धति (*b*) ध्वनियों
   (*c*) भाषा (*d*) या इनमें से कोई नहीं
5. हिन्दी में शिक्षा का संबंध किस चीज़ से है?
   (*a*) संशोधन से (*b*) नवीनीकरण से
   (*c*) भाषण देने से (*d*) या सीखने- सिखाने से
6. भाषा-रचना का साधारण क्रम यह है कि मनुष्य अंजाने बिना सोचे-समझे, स्वत: प्रेरित ढंग से ध्वनि और पदाथ का कैसे संबंध बनाता है।
   (*a*) प्राकृति (*b*) अप्राकृतिक
   (*c*) सोचे-समझे (*d*) स्थायी-अस्थायी

10.1.3 भाषा की रचना

मनुष्य ने भाषा की रचना अपनी विशेष बौद्धिक प्रतिभा के कारण नहीं की इसका एक प्रमाण और है। बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? अनेक अस्पष्ट ध्वनियों के बीच वे कुछ निश्चित और स्पष्ट ध्वनियाँ भी करते हैं। इन ध्वनियों से किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों आदि का सम्बन्ध जोड़ना सीखते हैं। यह सम्बन्ध अस्थायी भी होता है। हमारे पड़ोस की एक लड़की को उसके माता-पिता 'बच्चा' कहकर पुकारते थे। लड़की 'बच्चा' को संबोधन मात्र के लिए उपयुक्त समझ कर अपने माता-माता को भी बच्चा कहती थी। ठीक यही क्रिया 'तात' शब्द के साथ घटित हुई थी; पिता

नोट

भी 'तात' है, पुत्र भी 'तात' है। 'तात' ध्वनि के पिता-पुत्र वाले दोनों सम्बन्ध स्थायी हो गये। पड़ोस की लड़की वाले उदाहरण में 'बच्चा' का सनातन सम्बन्ध ही कायम रहा; उस लड़की ने कुछ दिन बाद माता-पिता से उसके अस्थायी सम्बन्ध को भुला दिया। बच्चा स्वयं निरर्थक ध्वनियाँ करता है और इन निरर्थक ध्वनियों में कुछ को सार्थक भी बना लेता है; सुनी हुई और अपनी स्वत:स्फूर्त ध्वनियों से वह वस्तुओं का अस्थायी सम्बन्ध कायम करता है–भाषा के निर्माण की भी यही प्रक्रिया है। जैसे गर्भ में शिशु मानव-विकास की सारी मंजिलें पार करता है, वैसे ही गर्भ से बाहर आने पर वही शिशु भाषा सीखने में भाषा-निर्माण-प्रक्रिया की सारी मंजिलें पार करता है। जैसे गर्भ में वह मानव-पूर्व मंजिलें बहुत जल्दी पार करता है और उसके शेष जीवन की तुलना में यह अवधि बहुत छोटी होती है, वैसे ही जन्म के बाद वह भाषा-निर्माण की प्राथमिक मंज़िलें बहुत जल्दी पार करता है और पूर्वज जो भाषा-निधि अर्जित कर चुके हैं, उससे पूर्ण लाभ उठाता है। प्राथमिक मंजिलें पार करने का महत्व यह है कि भाषा-निर्माण की बुद्धि-निरपेक्ष क्रिया स्पष्ट हो जाती है। आरम्भ में मानव शिशु भाषा के मामले में अन्य पशु-शावकों से बहुत भिन्न नहीं होता।

टास्क भाषा की उत्पत्ति तथा विशेषता का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

मनुष्य का गल-प्रतिस्वनक (Pharyngeal resonator) उसकी अपनी विशेषता है। यह दूसरे स्तन्यों में नहीं होता। मनुष्य का घोषयंत्र गर्दन में धंसा हुआ होता है उसका कंठपिधान कोमल तालु से जुदा होता है। इससे मनुष्य के पास विशद गलगुहा होती है। ध्वनि करने के समय गलगुहा के आकार में काफी परिवर्तन सम्भव होता है। घोषयंत्र की इन सब विशेषताओं के कारण मनुष्य अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक और भिन्न कोटि की ध्वनियाँ कर सका। अन्य पशुओं के समान उसने भी ध्वनि-संकेतों से काम लेना शुरू किया। ध्वनियों की बहुलता से वह नये-नये ध्वनि-संकेत निश्चित कर सका। अपने शारीरिक गठन के कारण जैसे-जैसे परिवेश के विभिन्न पदार्थों से उसका परिचय बढ़ा, वैसे ही उनके लिए वह ध्वनि संकेत भी निश्चित करता गया।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. मनुष्य ने भाषा की रचना अपनी विशेष बौद्धिक प्रतिभा के कारण नहीं की इसका एक प्रमाण और भी है।
8. आरंभ में मानव शिशु भाषा के मामले में अन्य पशु शावकों से बहुत भिन्न होता है।
9. मनुष्य का गल-प्रतिस्वनक उसकी अपनी विशेषता है।

निष्कर्ष यह कि मनुष्य ने अपने सूक्ष्म चिन्तन की विशेषता के कारण भाषा रचना नहीं की। उसके जीवन-यापन की आवश्यकताओं ने उसे ध्वनि-संकेतों का उपयोग करने के लिए विवश किया। अपने शारीरिक गठन के कारण वह अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक ध्वनि संकेतों से काम ले सका। अपने शरीरिक गठन के करण ही आत्मरक्षा के लिए उसे अन्य पशुओं से भिन्न साधन ढूँढने पड़े। वह अस्त्रों का निर्माण करके श्रम करने वाला प्राणी बना। श्रम के साथ ही पशुजगत् के ध्वनि-संकेतों के दायरे से बाहर निकलकर उसने मानवीय भाषा क्षेत्र में प्रवेश किया।

10.2 सारांश (Summary)

- भाषा के लिखित रूप को सीखने के लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ता है। समाज में एक-दूसरे को जोड़ने में भाषा के लिखित रूप का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा का लिखित रूप ही ज्ञान के भण्डार को स्थायी रखता है और आने वाली पीढ़ी को सौंपता है।

नोट

- मनुष्य ने अपने सूक्ष्म चिन्तन की विशेषता के कारण भाषा रचना नहीं की। उसके जीवन-यापन की आवश्यकताओं ने उसे ध्वनि-संकेतों का उपयोग करने के लिए विवश किया। अपने शारीरिक गठन के कारण वह अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक ध्वनि संकेतों से काम ले सका। अपने शरीरिक गठन के करण ही आत्मरक्षा के लिए उसे अन्य पशुओं से भिन्न साधन ढूँढने पड़े। वह अस्त्रों का निर्माण करके श्रम करने वाला प्राणी बना। श्रम के साथ ही पशुजगत् के ध्वनि-संकेतों के दायरे से बाहर निकलकर उसने मानवीय भाषा क्षेत्र में प्रवेश किया।

10.3 शब्दकोश (Keywords)

मौखिक : जुबानी, मुख संबंधी

आत्म-रक्षा : अपनी रक्षा करना

धाराप्रवाह : तेजी के साथ बोलना, शीघ्रता से व्यवहार करना

10.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. भाषा का अर्थ एवं परिभाषा का वर्णन कीजिए।
2. भाषा प्रयोग पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. भाषा में अभिव्यक्ति के दो रूपों (1) मौखिक और लिखित दो रूपों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. ईश्वरकृत	2. बोध	3. बाधित उत्तेजक, सहज उत्तेजक
4. (*c*)	5. (*d*)	6. (*d*)
7. सही	8. गलत	9. सही

10.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–11: भाषा के आधार एवं प्रकृति

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

11.1 भाषा की ध्वनि-प्रकृति एवं भाव-प्रकृति

11.1.1 संस्कृत के नियम

11.1.2 मनुष्य की उच्चारण-सम्बन्धी विशेषताएँ

11.2 सारांश (Summary)

11.3 शब्दकोश (Keywords)

11.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

11.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- भाषा के आधार एवं प्रकृति जानने हेतु।
- भाषा की ध्वनि-प्रकृति एवं भाव-प्रकृति जानने में।
- कुछ विदेशी भाषाओं की प्रकृति समझने हेतु।
- संस्कृत के नियम जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

भाषा की ध्वनि-प्रकृति के समान उसकी एक भाव-प्रकृति होती है जो शब्द-निर्माण, वाक्य-रचना तथा व्याकरण के विभिन्न अंगों में प्रकट होती है। दस के बाद हम गिनते हैं, ग्यारह, बारह, तेरह, बीस के बाद इक्कीस, बाईस, तेईस और इसी तरह इक्यानबे, बानबे, तेरानबे तक। इन संख्यावाचक शब्दों की विशेषता यह है कि दहाई का अंक बाद को आता है और उसमें जितनी वृद्धि होती है, वह अंक पहले रहता है। यही पद्धति संस्कृत में है–एकादश, द्वादश, त्रयोदश इत्यादि। ग्रीक में ग्यारह-बारह के लिए हेन्देका, दोदेका शब्द हैं। तेरह से 'तीन और दस' के लिए 'तेइस काई देका', 'चार और दस' के लिए 'तेत्तारेस काई देका' आदि हैं (काई = और)। पच्चीस के लिए एइकोसी पेन्ते (बीस पाँच), छब्बीस के लिए एइकोसिन हेक्स (बीस छह) आदि रूप हैं।

अंग्रेजी में दस के बाद इलेवन, ट्वेल्व, थर्टीन आदि शब्दों में संस्कृत-हिन्दी के समान दहाई की संख्या बाद में आती है, और जो संख्या जोड़ी जाती है, वह पहले होती है किन्तु बीस के बाद ट्वेंटी-वन, ट्वेंटी-टू, आदि क्रम चलता है जिसमें दहाई पहले और जोड़ी जाने वाली संख्या बाद में आती है।

नोट

केवल भारतीय भाषाओं में जो क्रम ग्यारह-बारह में है, वही इक्कीस-बाईस आदि बाद की संख्याओं में है। भारतीय भाषाओं की यह भाव-प्रकृति हुई—उन भाषाओं का व्यवहार करने वालों को चिन्तन और भाव-व्यंजना की विशेष पद्धति हुई—जिसके अनुसार दहाई का स्थान बाद में होता है और उसके साथ जुड़ने वाली संख्या का पहले। ग्रीक में बारह तक और अंग्रेजी में उन्नीस तक संस्कृत क्रम चलता है, उसके बाद यह क्रम टूट जाता है। अंग्रेजी की सहज भाव-प्रकृति दहाई को पहले रखने की है, जुड़ने वाली संख्या को बाद में रखने की। यही स्थिति ग्रीक में है। ग्रीक और अंग्रेजी में अन्तर यह है कि अंग्रेजी में छब्बीस के लिए 'छह और बीस' न कहेंगे, लेकिन ग्रीक में 'हेक्स काइ एइकोसी' स्वीकृत प्रयोग है। ग्रीक में जब 'काइ' (और) न जोड़ेंगे, तब अंग्रेजों के समान दहाई पहले होगी। 'काई' जोड़ने से दस से छोटी संख्या पहले होगी, दहाई बाद में।

लैटिन में दस के बाद सत्रह तक संख्यावाचक शब्द वैसे ही बनते हैं जैसे संस्कृत हिन्दी में। ग्यारह-बारह-तेरह के लिए ऊनदेकिम्, दुओदेकिम्, त्रेदेकिम् शब्द हैं, किन्तु बीस के बाद वीगिन्ती-ऊनुस्, वीगिन्ती-दुओ आदि रूप आरंभ होते हैं। लैटिन की भी सहज भाव-वृत्ति दहाई के शब्द को पहले रखने की है। जब इस भाषा में दहाई का शब्द बाद में आता है तो ग्रीक की तरह उसमें भी 'एत' (और) आवश्यक हो जाता है। एक और बीस—ऊनुस एत वीगिन्ती, दो और बीस—दुओ एत वीगिन्ती।

साधारणतः यूरोप की भाषाओं में दहाई की संख्या को पहले और जोड़ी जाने वाली संख्या को बाद में रखने की प्रवृत्ति है। कुछ में ग्यारह-बारह, कुछ में पन्द्रह, कुछ में उन्नीस तक संस्कृत जैसा क्रम चलता है। बाद में उनकी मूल प्रवृत्ति प्रकट हो जाती है जो दहाई को पहले रखती है। कुछ भाषाएँ 'और' से काम लेकर दहाई को बाद में रखती हैं। यह सामान्य नियम केवल संस्कृत और उससे संबंधित भारतीय भाषाओं में ही देखा जाता है कि जैसे ग्यारह-बारह रूप बनते हैं, वैसे ही इक्कीस-बाईस। इससे सिद्ध हुआ कि दहाई को बाद में रखना संस्कृत भाषा-परिवार की अपनी भाव-प्रकृति है। यूरोप की भाषाओं में उसकी झलक दिखाई देती है, खास तौर पर ग्यारह से उन्नीस तक की संख्याओं में; वह उनकी सहज प्रक्रिया नहीं है। स्पष्ट है कि ग्रीक-लैटिन, फ्रांसीसी-अंग्रेजी आदि भाषाओं में दो तरह की भाव-प्रकृतियों से संख्यावाचक शब्द-रूपों का गठन हुआ है। एक भाव-प्रकृति बीस-एक, बीस-दो रूप स्वीकार करती है; इसे यूरोपीय भाषाओं की अपनी भाव-प्रकृति कहते हैं। दूसरी भाव-प्रकृति एक-बीस, दो-बीस का क्रम पसंद करती है; इसे हम भारतीय कहते हैं। यूरोप की भाषाओं में यह क्रम अपवाद रूप में है। उत्तर भारत की भाषाओं में यूरोपवाले क्रम की छाया भी नहीं है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जिन 'आर्यों' ने पेंक्वे में 'क' की मूल ध्वनि सुरक्षित रखी थी, उन्होंने 'पंच' कहने वालों पर इस दिशा में कोई असर न डाला? हमारी संख्यावाचक शब्दावली एक नियम से परिचालित होती है और यूरोप के आर्यों की एक से अधिक—परस्पर विरोधी—नियमों से।

परिणाम यह निकलता है कि जिस तरह पंच और दश शब्द पूर्व से पश्चिम गये थे और उनके च्-श्-क् में बदल गये थे, वैसे ही पूर्व की संख्या-पद्धति ने भी ग्रीक-लैटिन-भाषियों को प्रभावित किया। यदि संख्यावाचक शब्दों को पूर्व ने पश्चिम से ग्रहण किया होता तो संभावना यह थी कि उनकी बीस-एक, बीस-दो वाली पद्धति का कुछ असर हमारे यहाँ भी दिखाई देता।

भाषा की भाव-प्रकृति का यह एक उदाहरण हुआ।

दूसरा उदाहरण संस्कृत के विभक्ति-चिह्नों से देते हैं। रामस्य में संबंध वाचक 'स्य' राम के बाद आया है; हिन्दी में भी 'राम का' रूप में संबंध-वाचक 'का' बाद में आता है। अगर 'राम के ऊपर' कोई विपत्ति पड़ी हो तो 'के' के बाद ही ऊपर जोड़ा जाएगा, उसके पहले नहीं। यूरोप की भाषाओं में यह विचित्रता है कि जब वे विभक्ति चिह्न स्वीकार करती हैं, तब वह मूल शब्द के बाद ही आता है, किन्तु जब उन्हें कोई अन्य संबंधवाचक शब्द इस्तेमाल करना होता है, तब वह मूल शब्द के पहले आता है। संबंध सूचक शब्द वही काम करता है जो विभक्ति-चिह्न। वास्तव में विभक्ति-चिह्न स्वतंत्र शब्द ही थे जो संसर्ग-दोष से स्वतंत्र अस्तित्व खोकर चिह्न मात्र रह गये।

नोट

संस्कृत-परिवार की भाषाओं में स्वतंत्र संबंधवाचक शब्दों और विभक्ति-चिह्नों के लिए एक-सा नियम है। ग्रीक, लैटिन, रूसी, जर्मन आदि भाषाओं में दो नियम हैं: विभक्ति चिह्न मूल शब्द के बाद आयेंगे, संबंधवाचक पहले।

ग्रीक में 'शाम को' के लिए कहेंगे 'एइस हेस्पेरान्'। यहाँ 'हेस्पेरान्' स्वयं कर्मकारक है, 'एइस' (को) अलग से जुड़ा हुआ है। 'एथेंस से' – 'अप अथीनोन'; 'अथीनोन संबंध कारक है, अप (अपो) पहले आया है, अलग से।' इसी तरह लैटिन में 'इन पोर्त' (बंदरगाह में), 'कुम एआ लेगिओने' (सेना सहित), 'एलेफान्तुस् अल्तिओर् एस्त् काम् एकुउस्' (हाथी घोड़े से ऊंचा है)–इन मिसालों में संबंधवाचक शब्द इन्, कुम्, काम् विभक्ति-चिह्न-युक्त मूल शब्द के पहले आये हैं। ऐसे ही रूसी में 'व मस्क्वे' (मौस्को में), 'ना स्तोले' (मेज पर), 'ऊ मेन्या' (मेरे यहाँ, मेरे पास)। जर्मन में 'बिनेन आइनेर स्टुन्डे' (एक घंटे में; बिनेन = में) 'ह्वेगेन डेस कीगेस' (युद्ध के कारण; ह्वेगेन = कारण)। यूरोप की भाषाओं में संबंधवाचक शब्द मूल शब्द के बाद में आये तो उसे अपवाद समझना चाहिए। वैसे ही संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में वह मूल शब्द से पहले आये तो उसे अपवाद समझना चाहिए।

इससे दो तरह के भाषा-परिवारों के स्वभाव की भिन्नता प्रमाणित हुई। यूरोपीय भाषाओं को–विशेषकर ग्रीक और लैटिन को–विभक्ति-चिह्न से जब इतना प्रेम था तो अपने स्वभाव के अनुकूल उन्होंने उसे मूल शब्दों से पहले क्यों न बिठाया? इसका एक ही कारण हो सकता है उन पर संस्कृत या उस परिवार की अन्य भाषाओं का गहरा असर पड़ा जिससे विभक्ति-चिह्न उन्होंने शब्दों के बाद ही रखा किन्तु अपनी सहज भाव-प्रकाशन विधि के कारण संबंध वाचक शब्दों को उन्होंने वाक्य में मूल शब्द के पहले रखा। इस तरह का व्याकरण-भेद मूलत: दो तरह की चिन्तन-पद्धतियों का भेद है। यदि शब्द के अन्त में विभक्ति-चिह्नों का प्रयोग यूरोप की भाषाओं की अपनी विशेषता होती तो वे संबंधवाचक शब्दों को भी उसी प्रवृत्ति के अनुसार मूल शब्द के बाद ही रखतीं।

11.1 भाषा की ध्वनि-प्रकृति एवं भाव-प्रकृति

11.1.1 संस्कृत के नियम

संस्कृत में क्रिया, संज्ञा, विशेषण आदि में उपसर्ग जोड़कर मूल शब्द के अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न की जाती है कंप्-प्रकंप्, मत्त-प्रमत्त, स्थान-प्रस्थान, वाद-प्रवाद इत्यादि। ग्रीक, लैटिन, रूसी आदि भाषाओं में उपसर्ग का यही धर्म है। संस्कृत में विशेषण आयेगा तो संज्ञा के पहले, क्रिया-विशेषण होगा तो क्रिया के पहले आयेगा, यदि विशेषण की विशेषता ज्ञापित करने वाला शब्द होगा तो वह भी विशेषण के पहले आयेगा। यह संस्कृत का साधारण नियम है। ग्रीक में विशेषण मूल शब्द के पहले भी आते हैं, बाद को भी। 'निकिन एनीकिसान कल्लिस्तीन' (उन्होंने श्रेष्ठ विजय प्राप्त की, निकिन-विजय पहले हैं, बाद को क्रिया, अन्त में विशेषण कल्लिस्तीन श्रेष्ठ।) 'एगो फिलो मालिस्त' मैं बहुत अधिक प्यार करता हूँ। यहाँ मालिस्त (बहुत अधिक) क्रिया के बाद आया। संबंध-कारक का प्रयोग भी एक प्रकार से वस्तु का संबंध या उसकी विशेषता बताने के लिए होता है। संस्कृत में स्वभाविक रूप से संबंधकारक मूल शब्द से पहले आयेगा–जैसे रामस्य पत्नी। अंग्रेजी में ॲपौस्ट्रोफी एस् से काम न लिया जाए तो 'वाइफ ऑफ राम'–इस तरह का क्रम होगा। ग्रीक में भी यह प्रवृत्ति दिखाई देती है : 'एन आर्खी तोउ लोगोउ' (भाषण के आरंभ में)–यहाँ भाषण के (लोगोउ) अन्त में है और आर्खी (आरंभ) पहले है। इसी प्रकार लेटिन में 'फोर्तिस्सिमूस मीलितुम्'–सैनिकों में श्रेष्ठ। यहाँ 'सैनिकों में'–के लिए षष्ठी विभक्ति (मीलितुम्) का प्रयोग हुआ है और वह मूल शब्द के बाद में है। 'तेम्प्ला देओरुम्'–देवताओं के मंदिर; यह वाक्यांश बिल्कुल अंग्रेजी की तरह है 'टेम्पेल्स ऑफ गौड्स'। इन उदाहरणों से सिद्ध हुआ कि संस्कृत का साधारण नियम विशेषण को मूल शब्द से पहले रखने का है; इसी के अनुरूप उपसर्ग भी शब्द से पहले आता है। ग्रीक-लैटिन आदि भाषाओं में विशेषण पहले भी आता है, बाद को भी; कोई साधारण नियम नहीं है। ऐसी स्थिति में इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि यूरोप की इन प्राचीन भाषाओं में उपसर्ग के प्रयोग पर संस्कृत-पद्धति का प्रभाव पड़ा है।

नोट

संस्कृत का साधारण नियम है कि क्रिया वाक्य के अंत में आती है। ग्रीक और लैटिक में क्रिया वाक्य के अंत में आती है और बीच में भी आ सकती है। 'तो थउमाक्सेइन आर्खी एस्ति तिस सोफिआस'—आश्चर्य आरंभ है ज्ञान का—इस ग्रीक वाक्य में एस्ति क्रिया वाक्य के अन्त में न होकर बीच में है। लैटिन में 'मोन्स एस्त क्रिया वाक्य के अन्त में न होकर बीच में है। लैटिन में 'मोन्स एस्त अल्तिओर'—पहाड़ ऊंचा है; ओप्पिदुम एरात माग्नुम'—नगर विशाल था; इन वाक्यों में एस्त और एरात क्रियाएँ वाक्य के बीच में आयी हैं जैसे वे अंग्रेजी में आता हैं।

नोट्स ग्रीक-लैटिन आदि भाषाओं में विशेषण पहले भी आता है, बाद को भी; इसी अनुरूप उपसर्ग भी शब्द पहले से आता है।

यूरोप की आधुनिक भाषाओं में साधारणत: कर्म क्रिया के बाद आता है। वाक्य के अन्य अंश जिनका क्रिया से संबंध हो, वे भी प्राय: क्रिया के बाद आते हैं। अंग्रेजी में कहेंगे—'दि मैन इज हैप्पी।' फ्रांसीसी में 'ल लीव्र स्यूर ला ताब्ल'—पुस्तक मेज पर है। इतालवी में—'जिउसेप्पे आमा सुआ सोरेल्ला' जिउसेप्पे अपनी बहन से स्नेह करता है। रूसी में 'उचीतेल राज़्दायोत क्नीगी'—अध्यापक पुस्तकें दे रहा है। इस उदाहरणों में क्रिया वाक्य के अन्त में नहीं है, वरन् उसके बाद कर्म या क्रिया से संबंधित अन्य शब्द आते हैं। इसे हम यूरोपीय भाषाओं का साधारण नियम मानते हैं। लैटिन और ग्रीक में भी यह प्रवृत्ति थी। इससे परिणाम यह निकलता है कि ग्रीक और लैटिन में जहाँ कर्म क्रिया से पहले आता है और क्रिया अपने से संबंधित शब्दों के बाद आती है, वहाँ वाक्य-रचना पर संस्कृत या उस परिवार की अन्य भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। यूरोपीय भाषाओं की सहज प्रवृत्ति उनकी वर्तमान वाक्य-रचना में देखी जा सकती है। यह प्रवृत्ति ग्रीक और लैटिन की वाक्य-रचना को भी प्रभावित करने लगी थी। भारत-यूरोपीय परिवार की यूरोपीय भाषाओं में जो आंतरिक समानता है वह उनकी वाक्य-रचना में प्रकट होती है। यह वाक्य रचना विशेष प्रकार की चिन्तन-अभिव्यंजन-पद्धति का परिणाम है जो अत्यंत प्राचीन होगी। इधर भारतीय भाषाओं में संस्कृत तथा उत्तर भारत की अन्य भाषाएँ वाक्यरचना में एक से नियमों का पालन करती हैं: कर्ता पहले, क्रिया के बाद न आकर उससे पहले आयेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि संस्कृत और हिन्दी आदि प्राचीन-नवीन भाषाओं की वाक्य-रचना में मौलिक अन्तर नहीं है। यदि यूरोप से आये हुए 'आर्यो' ने भारतीय भाषाओं को जन्म दिया होता या उन्हें प्रभावित किया होता, तो यहाँ की भाषाओं में भी क्रिया के बाद कर्म को रखने की मिसालें मिलतीं और यूरोप में आधुनिक-प्राचीन उनमें इस साम्य का अभाव है। यही नहीं, ग्रीक-लैटिन की वाक्य-रचना कहीं तो संस्कृत के नियमों के अनुकूल होती है, कहीं आधुनिक यूरोपीय भाषाओं के नियमों के अनुकूल होती है। इसका कारण दो भिन्न भाव-प्रकृतियों वाले भाषा-कुलों का प्रभाव ही हो सकता है।

भाव-प्रकृति की दृष्टि से यूरोप की 'आर्य' भाषाएँ जितना सामी परिवार के निकट हैं, उतना भारतीय भाषाओं के नहीं। जैसे अरबी में सम्बन्धवाचक 'लि' का अर्थ है 'को'; 'लिमलिकिन' का अर्थ हुआ राजा को। अंग्रेजी के समान अरबी का सम्बन्धसूचक शब्द 'प्रिइज़ीशन' होता है, 'पोस्टपोज़ीशन' नहीं। मलिकिन में 'इन' स्वयं सम्बन्धकारक का चिन्ह है। इससे सिद्ध हुआ कि ग्रीक लैटिन, रूसी आदि भाषाओं के समान अरबी में भी दो तरह की भाव-प्रकृति मिलती है। एक और शब्दों के अन्त में सम्बन्धवाचक शब्दांश जुड़े हुए हैं, दूसरी ओर मूल शब्द के पहले भी सम्बन्ध वाचक शब्द का प्रयोग होता है। 'ज़ैदुनिब्नु मुहम्मदिन'— मुहम्मद का पुत्र ज़ैद, यहाँ 'मुहम्मद' के साथ जुड़े हुए विभक्ति-चिह्न से ही काम चल गया, 'का' के लिए अलग से सम्बंधवाचक शब्द का प्रयोग आवश्यक न हुआ। सामी और संस्कृत परिवारों की भाषाएँ बोलनेवालों का किसी समय घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इसलिए ग्रीक और लैटिन के समान अरबी आदि सामी भाषाओं के लिए भी यह अनुमान किया जा सकता है कि विभक्ति-चिह्न के रूप में सम्बंध वाचक शब्द को प्रकृति के बाद में रखना संस्कृत प्रभाव के कारण है; प्रकृति के पहले सम्बंधवाचक शब्द को प्रकृति

नोट

के बाद में रखना संस्कृत प्रभाव के कारण है; प्रकृति के पहले सम्बंधवाचक शब्द का प्रयोग सामी भाषाओं की अपनी विशेषता है। 'फिलहाल' में 'फिल' सम्बन्धवाचक शब्द है जो हाल के पहले आया है; इसी प्रकार 'फिल जुमला' (कुल मिलाकर या संक्षेप में)।

क्या आप जानते हैं यूरोप की भाषाओं और सामी परिवार की भाषाओं में यह जो समानता दिखाई देती है, वह भी आकस्मिक नहीं है। यूरोप की भाषाओं से तात्पर्य यहाँ 'भारत-यूरोपीय' परिवार की ही यूरोपीय भाषाओं से है। यूरोप की ये भाषाएँ एक ओर भारतीय संस्कृत-परिवार से प्रभावित हुई हैं, दूसरी ओर उन पर सामी परिवार का भी असर पड़ा है। ये प्रभाव शब्द-भंडार और भाव-प्रकृति में भी स्पष्टत: देखे जा सकते हैं।

खुदावन्द्-इ-हकीकी–अरबी के इस टुकड़े में विशेष्य खुदावन्द पहले है, विशेषण हक़ीक़ी (वास्तविक) बाद में। 'अल्लाह ताला' में ताला विशेषण (महान्) बाद में है, अल्लाह पहले। शम्-इ-काफ़ूरी (कपूर की बत्ती)–शमा पहले, काफुरी बाद में। इसी प्रकार मुर्ग्-इ-सहर (प्रभात का पक्षी)–सम्बन्धवाचक 'इ' सहर से पहले आया, हिन्दी संस्कृत आदि में वह बाद में आता। 'वलउ शरिब्तु बुहूरा' (चाहे मैं समुद्रों को पी जाऊं)–यहाँ यूरोपीय भाषाओं के साधारण नियम के अनुकूल शरिब्तु क्रिया पहले है, बुहूरा (समुद्रों को) कर्म बाद में है। 'ज़रब ज़ैदुन् अम्रन्' (ज़ैद ने अम्र को मारा)–यहाँ क्रिया वाक्य के आरम्भ में है, कर्म अन्त में। हिन्दी संस्कृत में इस तरह का वाक्य अपवाद होगा। 'अल् फ़क्रु सवादुल वजहि फिद् दारैनी' (ग़रीबी दोनों जहाँ में मुहँ की कालिख है)–इस वाक्य में 'फिद् दारैनी' (दोनों जहाँ में) अंग्रेजी आदि की प्रकृति के अनुकूल वाक्य के अन्त में आया। 'वल्लाहु युहिब्बुल मुहसिनीन' (ईश्वर परोपकारियों से प्रेम करता है)–क्रिया युहिब्बु पहले, कर्म मुहसिनीन बाद में।

फ़ारसी आर्य-परिवार की भाषा है किन्तु उस पर भी अरबी का गहरा असर पड़ा है अज़ सर–आरंभ से, अज़ मा–हम से, दर ख्वाब–नींद में, शहीदम् मन् वले न दर कनान–मैं सुन्दर हूँ लेकिन कनान में नहीं; यहाँ सम्बन्धवाचक अज़ और दर मूल शब्द से पहले आये हैं। फारसी ने यहाँ संस्कृत-परिवार की अपनी प्राचीनतर पद्धति छोड़कर सामी-परिवार की नयी रीति अपनायी है। अरबी रीति से ही आव्-इ-दीदा–दीदा (आंखों) का आब (पानी) जैसे प्रयोगों का चलन हुआ है। फारसी, लैटिन, रूसी, संस्कृत, हिंदी आदि भाषाओं में निश्चयबोधक विशेषण (डेफिनिट आर्टिकल) का प्रयोग साधारण नियम नहीं है। ग्रीक, जर्मन, इतालवी, फ्रांसीसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में उसका प्रयोग साधारण नियम है। इसका कारण भी सामी भाषाओं का प्रभाव मालूम होता है। अरबी में मकान के लिए 'बैतु' कहना काफी नहीं है, निश्चयबोधक् अल् जोड़ कर अल्बैतु कहना आवश्यक होता है।

नोट्स ग्रीक में हो, ही, तो, जर्मन में डेर, डी, डास, अंग्रेजी में दि, फ्रांसीसी में ल, ला, इतालवी में इल, लो, ला आदि निश्चय बोधक शब्द, सामी भाषाओं का प्रभाव सूचित करते हैं।

संस्कृत और यूरोपीय भाषाओं की भिन्नता कुछ धातु रूपों में देखी जा सकती है। संस्कृत में जब भविष्य काल के रूप बनाते हैं, तब मूल धातु में इष् जोड़ देते हैं। इस तरह गम् से गमिष्यति, गमिष्यामि आदि रूप बनते हैं। ग्रीक क्रियाएँ साधारणत: भविष्य काल में धातु के साथ सकार जोड़ती हैं। अकोउओ (सुनना)–अकोउसोमाइ; गेलो (हंसना)–गेलासोमाइ; एपिस्तामाइ (जानना)–एपिस्तिसोमाई। लैटिन धातुएँ–अवधी-भोजपुरी के जाब, खइबे आदि की तरह–कभी-कभी भविष्य काल के लिए 'भू' धातु से काम लेती हैं।

नोट

टास्क संस्कृत भाषा के नियम से क्या तात्पर्य है? समझाइए।

इसी प्रकार सहायक क्रियाओं को जोड़ कर क्रिया के विभिन्न काल प्रकट करने की यूरोपीय पद्धति ग्रीक-लैटिन का अनुसरण नहीं करती। अंग्रेजी में हैज़, हैव, हैड आदि 'बिल' के समान मूल क्रियावाचक शब्द के पहले आयेंगे। यही हाल जर्मन, फ्रांसीसी आदि का है। फ्रांसीसी में भविष्य काल लैटिन पद्धति का अनुसरण करता है, लेकिन सहायक क्रियाओं का व्यवहार उसमें अन्य यूरोपीय भाषाओं के समान ही होता है। 'इल आ व्यू ल र्वा'—उसने बादशाह को देख; यहाँ 'आ' अंग्रेजी के 'हैज़' का समकक्ष है। और 'व्यू' 'सीन' का। इसके विपरीत हिन्दी में 'उठ बैठे थे,' 'चले जा रहे होंगे' आदि वाक्यांशों में क्रियाओं की श्रृंखला बना दें, फिर भी मूल क्रियावाचक शब्द पहले ही आयेगा जो संस्कृत का नियम भी है। ग्रीक-लैटिन की प्रकृति अनेक बातों में यूरोपीय भाषाओं से भिन्न है और संस्कृत के अधिक निकट है। इधर भारतीय भाषाओं और संस्कृत की भाव-प्रकृति में वैसा गहरा भेद नहीं दिखाई देता जैसा यूरोप की आधुनिक और प्राचीन भाषाओं में। इस भेद का कारण पूर्वोल्लिखित सामी प्रभाव हो सकता है।

संस्कृत में क्रिया का वचन और पुरुष वही होता है जो कर्ता का। यही नियम ग्रीक और लैटिन में भी है। किन्तु अंग्रेज़ी में 'आई गो', 'वी गो', 'दे गो' लेकिन 'ही गोज़'। भूतकाल और भविष्य में 'विल गो' आई, ही, दे—सभी के साथ चलता है। लेकिन 'गोइंग' के साथ 'इज, वाज, वेयर, ऐम' आदि विभिन्न क्रियाएँ लगेंगी। इसका अर्थ यह हुआ कि अंग्रेज़ी में दोनों प्रवृत्तियाँ काम करती है; कर्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष बदलते भी हैं और नहीं भी बदलते भी हैं। जर्मन में वर्तमान और भूतकाल में कर्ता के अनुसार क्रिया का पुरुष-वचन बदलता है किन्तु भविष्य, परोक्ष भूत आदि कालों में जहाँ सहायक क्रिया से काम लिया जाता है, वहाँ सहायक क्रिया का वचन-पुरुष ही बदलता है। मूल क्रिया अपरिवर्तित रहती है। 'एर ह्विर्ड लोबेन'—वह प्रशंसा करेगा; 'जी ह्वेर्डेन लोबेन'—वे प्रशंसा करेंगे; इन वाक्यों में लोबेन रूप ज्यों का त्यों रहा। इसके विपरीत हिन्दी में वह गायेगा, वे गायेंगे, मैं गाऊँगा—इन वाक्यों में गाना क्रिया के रूप बदलते रहते हैं। जर्मन भाषा पुरुष-वचन के मामले में ग्रीक-लैटिन से किंचित् समानता रखती है, पूर्ण रूप से उनकी अनुगामिनी नहीं है। फ्रांसीसी में क्रिया पुरुष-वचन में कर्ता का अनुसरण करती है किन्तु सहायक-क्रिया के साथ कभी वह परिवर्तनशील होती है, कभी अपरिवर्तनशील। परिवर्तित होने पर लिंगभेद भी होता है। साइकिल जो कारबारी ने बनाई—'ला बिसिक्लेत कल फ्राब्रिका आ फेत (faite)'; साइकिल जो कि मैंने खुद बनाई है—'ला बिसिल्केत क ज़ म सुई फे (fait) फेयर।' पहले वाक्य में 'फेत' एक वचन और स्त्रीलिंग है; दूसरे में 'फे' अपरिवर्तनशील है, उसके बाद 'फेयर' क्रिया और आती है। रूसी में वर्तमान काल में कर्त्ता के अनुसार क्रिया बदलती है। भूतकाल में वचन के साथ क्रिया में लिंगभेद भी होता है, उसने (पुरुष) लिखा-अन पिसाल; उसने (स्त्री) लिखा-अना पिसाला। भविष्यकाल में जर्मन की तरह सहायक-क्रिया ही बदलती है (सहायक-क्रिया को कुछ लोग मूल क्रिया मानें तो हमें आपत्ति नहीं), मूल क्रिया अपरिवर्तनशील रहती है। पुरुष-वचन के मामले में आधुनिक यूरोपीय भाषाएँ काफी स्वच्छन्दता से काम लेती है; एक सीमा तक ही वे ग्रीक-लैटिन का अनुसरण करती हैं। वर्तमान काल में प्राय: सभी संस्कृत-ग्रीक की पुरुष-वचन-सम्बन्धी संगति को स्वीकार करती है; अन्य कालों में भेद बढ़ते जाते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि भाषा के विकास-क्रम में वर्तमान काल की उखावना पहले हुई, अन्य कालों का वाद में। ग्रीक-लैटिन और संस्कृत के वर्तमान-काल में जितनी समानता है, उतनी भविष्यकाल में नहीं। संस्कृत में अस् धातु के भविष्य काल में वही रूप होते हैं जो भू धातु के, जिसका अर्थ है, अस् धातु के भविष्य काल में अपने रूप होते ही नहीं हैं। उत्तर-भारत की आधुनिक भाषाएँ पुरुष-वचन के मामले में जितना संस्कृत के निकट हैं, उतना यूरोप की आधुनिक भाषाएँ ग्रीक-लैटिन के नहीं है।

नोट

लिंगभेद में यूरोप की आधुनिक और प्राचीन भाषाओं में अधिक समानता है। रूसी में भूतकाल के क्रिया रूप लिंग के अनुसार बदलते हैं; वैसे ही कभी-कभी फ्रांसीसी में। जर्मन में यह परिवर्तन नहीं होता। किन्तु लिंग-भेद का सम्बन्ध उतना क्रिया से नहीं है जितना संज्ञा, सर्वनाम और विशेषणों से। अंग्रेज़ों लिंगभेद से प्राय: मुक्त है यद्यपि 'ही' और 'शी' सर्वनामों में प्राचीन लिंगभेद की शेष स्मृति बनी हुई है। प्राचीन व्याकरणों का अनुसरण करते हुए भले ही विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी में भी शब्दों का लिंगभेद बताने का प्रयत्न किया जाय, पर वास्तविकता यह है कि अंग्रेजी की भाव-प्रकृति लिंगभेद स्वीकार नहीं करती। इस दृष्टि से वह बँगला के समान है। उत्तर-भारत की अधिकांश भाषाओं की तरह फ्रांसीसी, रूसी आदि आधुनिक यूरोपीय भाषाएँ स्त्रीलिंग और पुल्लिग, इन्हीं दों लिंगों को पर्याप्त समझती हैं। जर्मन और मराठी में प्राचीन भाषाओं के समान तीनों लिंग हैं। शब्दों की लिंगहीनता भाषा के अधिक जनतांत्रिक होने का सबूत हो सकती है, किंतु लिंगभेद का सम्बन्ध केवल स्थूल उपादेयता से न होकर सौन्दर्यबोध से भी है। शब्द जिस पदार्थ की ओर संकेत करता है, वह वास्तविक जीवन में किस लिंग का है या लिंगभेद से परे है, यह बात सदा महत्त्वपूर्ण नहीं होती। शब्द की अपनी सापेक्ष स्वतंत्रता है; उसकी ध्वनि और रूप के अनुसार जनता उसका लिंग निश्चित करती है। पुस्तक लैटिन और फ्रांसीसी में (लिबेर, लीव्र) पुल्लिग है, ग्रीक (बिल्बोस) और हिन्दी में स्त्रीलिंग, संस्कृत और जर्मन (बुख) में नपुंसक लिंग। संस्कृत में कलत्र के समान जर्मन में मैड्खेन (कुमारी) नपुंसक लिंग है। हिन्दी में राह अच्छी है और रास्ता अच्छा है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. संस्कृत में क्रिया, संज्ञा, विशेषण आदि में ········ जोड़कर मूल शब्द के अर्थ में कोई ········ उत्पन्न की जाती है।
2. भाव-प्रकृति की दृष्टि से यूरोप की आर्य भाषाएँ जितना ········ परिवार के निकट हैं, उतना भारतीय भाषाओं के नहीं।
3. लिंग भेद में यूरोप की आधुनिक और ········ में अधिक समानता है।

11.1.2 मनुष्य की उच्चारण-संबंधी विशेषताएँ

मनुष्य की उच्चारण-सम्बन्धी विशेषताएँ या भाषा की ध्वनि-प्रकृति सापेक्ष रूप में ही अपरिवर्तनशील हैं। इस परिवर्तनशील संसार में निरपेक्ष रूप से अपरिवर्तनशील भाषा का कोई भी तत्व नहीं है। हिन्दी क्षेत्र के गाँवों में अधिक शिक्षित और सुसंस्कृत दिखने के प्रयत्न में अनेक सज्जन 'जनाव' को 'ज़नाब', 'इच्छा' को 'इक्षा' कहते हुए सुने जाते हैं, यद्यपि ज़ और क्ष की ध्वनियाँ हमारी जनपदीय बोलियों की प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं। मराठी में 'जगह' का 'जोगा' हो ही गया है। बुंबई के एक मित्र 'काज़ी जलील अहमद' का मज़ाक सुनाते थे, जिन्हें एक मराठी भाषी सज्जन 'काजी ज़लील अहमद' कहते थे। जी का नुक्ता हटाकर वे उसे दूसरे ज के नीचे लगा देते थे और अनजान में जलील साहब को ज़लील करते थे।

भाषाओं और बोलियों का सम्बन्ध निश्चित करने, उनका वर्गीकरण और परस्पर शब्दों के आदान प्रदान का इतिहास जानने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण संकेत भाषाओं की ध्वनि-प्रकृति, उनके बोलने वालों की उच्चारण-सम्बन्धी विशेषताओं से मिलते हैं। प्राचीन ही नहीं, आधुनिक भाषाओं और बोलियों की ध्वनि-प्रकृति का अध्ययन करने में अनेक कठिनाइयाँ हैं। प्राचीन भाषाओं के अध्ययन का आधार उनका लिखित रूप है। इस लिखित रूप से यह जानना कि बोलचाल में इनका वास्तविक रूप क्या था प्राय: असंभव है। आधुनिक भाषाओं के बारे में भी–विशेषकर

नोट

भारतीय भाषाओं के बारे में–पर्याप्त सामग्री एकत्र नहीं की गयी। फिर भी जो सामग्री सुलभ है, उसमें भाषाओं की ध्वनि-प्रकृति का अध्ययन करने के लिए बहुत से महत्त्वपूर्ण तत्व मौजूद हैं। उन पर ध्यान देना आवश्यक है।

'हिन्दी' शब्द कैसे बना–इस बारे में प्रचलित मान्यता यह है कि ईरान के लोग सिन्धु (या सिन्ध) को हिन्द कहते थे और वहाँ के निवासियों को हिन्दू, हिन्दुई या हिन्दी कहने लगे। 'स्' का उच्चारण करने में उन्हें कुछ कठिनाई होती होगी, इसलिए उन्होंने 'स्' की जगह 'ह्' कहना शुरू किया। लेकिन फ़ारसी में साल, सादगी, साज़, सागर, सामान, साया, सब्ज़ा, सिपारिश, सिपाही, सितार, सितम, सख्त, सखुन, सर, सर्दी, सिरिश्त (सृष्टि), सर्गना, सरकार, सिरका, सुरमा, सुरूर आदि पचीसों शब्द हैं जिनमें ईरानियों को 'स्' का उच्चारण करने में दिक्कत नहीं होती। यही नहीं, उनके क्रिया-वाचक शब्द भी ऐसे बहुत से हैं जो 'स्' से शुरू होते हैं, जैसे साज़ीदन (बनाना), साईदन (पीसना), सबारीदन (हल जोतना), सिपारीदन (सिफारिश करना), सिपुर्दन (सिपुर्द करना), सितादन (खड़े होना), सितूदन (स्तुति करना), सख़्तन (तौलना) इत्यादि। फ़ारसी में अरबी से बहुत से शब्द आये हैं जो 'स्' से शुरू होते हैं। जैसे साहिल, साअत (सायत), साकिन, सान, सहर, सराय, सतर, सफर, सिफर, इत्यादि। इनमें ईरानियों ने 'स्' के स्थान पर 'ह्' का उच्चारण करना आवश्यक नहीं समझा। इसके सिवा 'श' से आरंभ होने वाले या स-श युक्त सैकड़ों ऐसे शब्द फ़ारसी में हैं जिनके समानान्तर भारतीय भाषाओं के शब्दों ने स-श का स्थान 'ह्' को दे दिया है। इससे सिन्ध का हिन्द ईरान में बना या भारत में–इस समस्या पर प्रकाश पड़ता है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. प्राचीन भाषाओं के अध्ययन का आधार उनका कौन-सा रूप है?
   - (*a*) वर्णित रूप
   - (*b*) वास्तविक रूप
   - (*c*) वगीकृत रूप
   - (*d*) लिखित रूप
5. वैदिक भाषा में एक धातु क्या है?
   - (*a*) नद्ध
   - (*b*) ग्रम
   - (*c*) हस्तग्राम
   - (*d*) या इनमें से कोई नहीं
6. शायद प्राचीन यूनानी .... थे?
   - (*a*) शुद्ध यूरोपियन
   - (*b*) शुद्ध प्रकृति प्रेमी
   - (*c*) शुद्ध देशप्रेमी
   - (*d*) शुद्ध आर्य

टास्क भाषा का स्वरूप, भाव-प्रकृति तथा इसकी विशेषताओं के विषय में वर्णन कीजिए।

सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने कश्मीरी भाषा में 'ह्' ध्वनि की अधिकता पर ध्यान दिया था। वहाँ शरद् हरुद् है, शाक हाख, श्वसुर हिहुर, मूसल मुहुलु, कृष्ण कुहनु, शुष्क हूखू, सांकल (या शृंखला) हांकल, शलभ हालव, श्याम होमु, शमन हमुन, शृंग ह्यंग, श्वापद हापुथ, शिर हीरू, शत हथ्, इत्यादि।

राजस्थानी के सम्बन्ध में हमने एक कहानी सुनी थी: किसी स्थान में शाम को सात बजे स्वामी सत्यानन्द सरस्वती का भाषण होने वाला था; ऐलान करनेवाला ज़ोर-ज़ोर से कहता था, आज हाम को हात बजे ह्वामी हत्यानन्द हरह्वती का भाहण होगा। यह कहानी अतिशयोक्तिपूर्ण लगे तो हम सुप्रसिद्ध भाषाविद् श्री सुनीति कुमार चाटुर्ज्या का मत उद्धृत

नोट

करते हैं। "राजस्थानी भाषा" नाम से संकलित अपने भाषणों में श्री चाटुर्ज्या ने कहा है कि राजस्थान की कुछ बोलियों में च्, छ्, ज्, झ्–इन तालव्य ध्वनियों का दन्त्य उच्चारण सुनाई देता है। "जिन बोलियों में ऐसा दन्त्य उच्चारण आता है, उनमें साथ ही साथ 'स' की ध्वनि 'ह' हो जाती है।" राजस्थानी के समान अन्य भाषाओं में यही विशेषता देखकर आगे श्री चाटुर्ज्या ने कहा है कि "च वर्गीय वर्णों का दन्त्य उच्चारण तथा 'स' का 'ह' में परिवर्तन राजस्थानी के लिए कुछ अनोखी या निराली बात नहीं है। ऐसा उच्चारण और 'स' का ह-भाव पूर्व बंग की बंगला भाषा में तथा आसामी में मिलते हैं। दन्त्य उच्चारण नेपाली (गोरखाली) तथा कुछ अन्य हिमाली बोलियों में भी पाया जाता है। राजस्थानी से सम्बन्धित गुजराती की कुछ उपभाषा या प्रान्तिक रूप (जैसे सुरती गुजराती) में भी दन्त्य उच्चारण तथा 'स'–का 'ह'–भाव आता है। पुरानी मराठी में, और गंजम ज़िले की ओड़िया में यह दन्त्य उच्चारण दिखाई देता है। 'स' का 'ह' उच्चारण मराठी में, बंगला, पछाहीं हिन्दी आदि कुछ भाषाओं में कहीं-कहीं मिलता है–केवल प्राचीन प्राकृत से उपलब्ध कुछ शब्दों में; पर इन भाषाओं में यह विशिष्टिता भाषा की अपनी तखसीस या विशिष्टताओं में नहीं है–यह किसी बाहरी भाषा के प्रभाव से कुछ विशेष शब्द या प्रत्ययों में आया है, ऐसा ही मालूम पड़ता है। पर पूर्वी-पंजाबी और हिन्दकी या लहन्दी में और सिन्धी में 'स' का 'ह' हो जाना निहायत लक्षणीय है।"

इससे सिद्ध हुआ कि सत्यानन्द का हत्यानन्द होना राजस्थान में तो संभव है ही, अन्यत्र भी असंभव नहीं है।

नोट्स असमिया भारत की एक ऐसी भाषा है जिसमें श-स का बहिष्कार है। 'च्' का उच्चारण 'स्' से मिलता-जुलता होता है।

वह अलग बात है। पात नहीं असम शब्द अहम का रूपान्तर है या–जिसकी संभवना अधिक है–असम का रूपान्तर अहम है। यह हकार-प्रेम 'द्रविड़' परिवार की कन्नड़ भाषा में भी पाया जाता है। तेलगु का पकलु कन्नड़ में हगलु (दिन) है, पालु हालु (दूध) है, पवड़ा हवड़ा (प्रवाल) है, पुलि हुलि (बाघ) है, पलैया हुलैया (प्राचीन) है। ज़्यूल ब्लाख ने मराठी भाषा पर अपनी पुस्कत में दुही (दुख का स्थान), माहो (माघ), मेहुडा (मेघ), मेहुण (मैथुन), मोह (मधु) आदि के उदाहरण दिये हैं जिनसे इस भाषा के हकार-प्रेम का पता चलता है।

टास्क मनुष्य की उच्चारण संबंधी विशेषताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

मराठी दहा का तरह हिन्दी में पहाड़ा पढ़ते समय "दस दहम् सौ" में दस के दह रूप की आवृत्ति होती है। इसी से ताश के पत्तों में 'दहला' और उसके सम पर 'नहला' और साधारण व्यवहार में उससे पहले 'पहला' आदि रूप हैं। दस तक गिनती गिनते समय 'छह' में ही हकार प्रतिष्ठित होता है, किन्तु ग्यारह, बारह के बाद अठारह तक यह कम चलता ही रहता है। इक्कीस, इक्तीस, इक्तालीस आदि में अन्त का 'स्' सुरक्षित रहता है; उनहत्तर के बाद इखत्तर (इकहत्तर), बहत्तर, तिहत्तर आदि में आरम्भ का 'स्' 'ह्'–रूप धारण करता चला जाता है। ब्रज-भाषा, अवधी आदि हिन्दी की बोलियों में नहान या हनान (स्नान), पाहन (पाषाण), पुहुप (पुष्प), निहचै (निश्चय), पुहकर (पोखर, पुष्कर), कान्ह (कृष्ण), केहरी (केशरी), आदि रूप इसी प्रवृत्ति के द्योतक हैं। श्, ष्, स् के अतिरिक्त अन्य व्यंजनों का भी ह्-रूप में परिवर्तन देखा जाता है–कोह (क्रोध), बहू (वधू), मुँह (मुख), नँह (नख), गहिर या गहरा (गंभीर) आदि। इस तरह के रूपों को यह कहकर टाला नहीं जा सकता कि वे प्राकृत या अपभ्रंश के कुछ अवरोष मात्र हैं जो आधुनिक भाषाओं में बने हुए हैं। पूर्वी बोलियों में मस्जिद का महजिद रूप प्रचलित है जो एक आन्तरिक ध्वनि-प्रवृत्ति की द्योतक है। इन बोलियों को 'ह्' से इतना प्रेम है कि विदेशी शब्दों को अनुकूल बनाने के लिए,

नोट

किसी अन्य व्यजंन को ह्-रूप दिये बिना भी एक अतिरिक्त 'ह्' जोड़ देते हैं, जैसे लाश के लहास रूप में। रिसौहें (रिसयुक्त), बकरिहा (बकरी वाला), भुतहा (भूतों वाला) आदि शब्दों में 'ह' प्रत्यय इसी प्रवृत्ति का परिचायक है। 'ह्' की यह प्रधानता किसी बाहरी भाषा के प्रभाव के कारण नहीं हो सकती। वह साधु हिन्दी से अधिक हिन्दी की जनपदीय बोलियों की विशेषता है। और हिन्दी में च्, छ्, ज्, झ् का उच्चारण दन्त्य नहीं होता। इसलिए स या अन्य वर्णों के स्थान में ह-का प्रयोग न तो किसी विदेशी भाषा का प्रभाव सूचित करता है, न वह तालव्य ध्वनियों का दन्त्य उच्चारण करनेवाली भाषाओं की ही विशेषता है। इसका एक प्रमाण यह भी है कि यह प्रवृत्ति संस्कृत शब्दों में ही अपना असर दिखाने लगी थी; और वह भी लौकिक संस्कृत में ही नहीं वरन् वैदिक भाषा में भी।

वैदिक भाषा में एक धातु है ग्रभ्। ऋग्वेद के उन सूक्तों में, जिन्हें प्राचीन माना जाता है, ऋ के बाद आने वाले भ् का ह रूप होता है, जैसे हस्तगृह्य में। हस्तग्राभ में यह परिवर्तन नहीं होता। किंतु दसवें मण्डल में प्राचीन रूप जग्राभ का स्थान जग्राह ले लेता है। आज्ञा मध्यम पुरुष एकवचन का 'धि' चिन्ह बाद के मण्डलों में 'हि' रूप धारण करता दिखाई देता है। वैदिक भाषा में दद्धि और देहि, नद्ध और नह्, भवामसि और भवामहे, हन्ति और ध्नन्ति, दुघान और दुहाम्, मेहन्त और मेघमान जैसे रूप इस सत्य को स्पष्ट करते हैं कि स्, ध्, घ् आदि व्यंजनों का स्थान ह् को देने के लिए इस देश की भाषाओं की कोई बहुत ही शक्तिशाली प्रवृत्ति काम कर रही थी। इससे सिद्ध होता है कि हिंद और हिंदी शब्दों का निर्माण भारत में ही हुआ था।

कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इस तरह के ध्वनि-परिवर्तनों का कारण प्राचीन प्राकृतें हैं जो वैदिक भाषा के समय में यहाँ बोली जाती थीं। यह तो निश्चित है कि भिन्न प्रकृति वाली भाषाओं के मिश्रण या अतिदान-प्रदान के बिना उपर्युक्त कोटि के ध्वनि-परिर्वतन नहीं होते। इन परिवर्तनों से यह सिद्ध नहीं होता कि यूरोप के किसी भाग से शुद्ध उच्चारण वाले 'आर्य' यहाँ आकर भ्रष्ट अनार्यों के संसर्ग और उनकी प्राकृतों के प्रभाव से देहि, हन्ति, मेहन्त आदि बोलने लगे।

शायद प्राचीन यूनानी शुद्ध आर्य थे। हृदय के लिए उनके यहाँ कार्दिआ शब्द था, जो लैटिन के कोर के समान श-ध्वनि के 'क' में परिवर्तित होने से बना है। श्रद् जैसा रूप—जिसे अधिक प्राचीन माना गया है—उनके यहाँ नहीं है। इसी प्रकार देश के लिए उनका शब्द है देका। यूनानी भाषा में श की ध्वनि नहीं है, स की है। किन्तु स्वप्न के लिए निद्रा के अर्थ में हुप्नोस शब्द है जहाँ स्पष्ट ही 'स्' 'ह्' में परिवर्ति हुआ है। संस्कृत-हिन्दी की तरह यूनानी में भी 'स्' और 'ह्' दोनों ध्वनियाँ विद्यमान हैं। फिर भी स्वप्न का हुप्नोस जैसा रूप बनना तभी संभव है जब किसी समय दो भिन्न प्रकृति वाली भाषाओं का सम्पर्क हुआ हो।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए—

7. सर जार्ज ग्रियर्सन ने कश्मीरी भाषा में 'ह' ध्वनि की अधिकता पर ध्यान दिया है।
8. असमिया भारत की एक ऐसी भाषा है जिसमें श-स का बहिष्कार नहीं है।
9. कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इसके ध्वनि-परिवर्तनों का कारण प्राचीन प्राकृतें हैं जो वैदिक भाषा के समय में यहाँ बोली जाती थीं।

11.2 सारांश (Summary)

- यूरोपीय भाषाओं को—विशेषकर ग्रीक और लैटिन को—विभक्ति-चिह्न से जब इतना प्रेम था तो अपने स्वभाव के अनुकूल उन्होंने उसे मूल शब्दों से पहले क्यों न बिठाया? इसका एक ही कारण हो सकता है उन पर

संस्कृत या उस परिवार की अन्य भाषाओं का गहरा असर पड़ा जिससे विभक्ति-चिह्न उन्होंने शब्दों के बाद ही रखा किन्तु अपनी सहज भाव-प्रकाशन विधि के कारण संबंधवाचक शब्दों को उन्होंने वाक्य में मूल शब्द के पहले रखा।

- वर्तमान काल में प्राय: सभी संस्कृत-ग्रीक की पुरुष-वचन-सम्बन्धी संगति को स्वीकार करती है; अन्य कालों में भेद बढ़ते जाते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि भाषा के विकास-क्रम में वर्तमान काल की उखावना पहले हुई, अन्य कालों का वाद में। ग्रीक-लैटिन और संस्कृत के वर्तमान-काल में जितनी समानता है, उतनी भविष्यकाल में नहीं।
- आधुनिक भाषाओं के बारे में भी–विशेषकर भारतीय भाषाओं के बारे में–पर्याप्त सामग्री एकत्र नहीं की गयी। फिर भी जो सामग्री सुलभ है, उसमें भाषाओं की ध्वनि-प्रकृति का अध्ययन करने के लिए बहुत से महत्त्वपूर्ण तत्व मौजूद हैं। उन पर ध्यान देना आवश्यक है।

11.3 शब्दकोश (Keywords)

आधुनिक : नवीन, नया

वास्तविकता : सच्चाई, हकीकत

अपरिवर्तनशील : जिसे बदला न जा सके

11.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. भाषा की ध्वनि प्रकृति एवं भाषा के भाव प्रकृति से क्या तात्पर्य है? उल्लेख कीजिए।
2. भारतीय भाषाओं का संस्कृत भाषा से किस प्रकार घनिष्ठ संबंध रहा है।
3. यूरोप की आधुनिक और प्राचीन भाषा तथा अन्य भाषाओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. उपसर्ग, विशेषता	2. सामी	3. प्राचीन भाषाओं
4. (*d*)	5. (*b*)	6. (*d*)
7. सही	8. गलत	9. सही

11.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–12: वर्ण विचार : हिन्दी स्वर और व्यंजन ध्वनियों का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

12.1 वर्ण विचार : हिन्दी स्वर और व्यंजन ध्वनियों का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण

12.1.1 स्वर

12.1.2 व्यंजन

12.2 सारांश (Summary)

12.3 शब्दकोश (Keywords)

12.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

12.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- हिन्दी स्वर और व्यंजन ध्वनियों का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण जानने हेतु।
- स्वरों का उच्चारण जानने में।
- व्यंजनों का उच्चारण समझने में।
- स्वर, व्यंजन तथा व्यंजनों को जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

भाषा के द्वारा मनुष्य अपने भावों विचारों को दूसरों के समक्ष प्रकट करता है तथा दूसरों के भावों विचारों को समझता है। आरम्भ किसी बात को सुरक्षित रखने का एक ही साधन था– याद रखना। अपनी भाषा को सुरक्षित रखने, उसे नेत्रों के लिए दृश्यमान बनाने और भावी सन्तति के लिए स्थान और काल की सीमा से निकालकर अमर बनाने की ओर **मनीषियों** का ध्यान गया। वर्षों बाद मनीषियों ने यह अनुभव किया कि उनकी भाषा में जो ध्वनियाँ प्रयुक्त हो रही हैं, उनकी संख्या निश्चित है और इन ध्वनियों के योग से शब्दों का निर्माण हो सकता है। बाद में इन्हीं उच्चरित ध्वनियों के लिए लिपि में अलग-अलग चिह्न बना लिए गए, जिन्हें वर्ण कहते हैं। इस प्रकार जिन ध्वनियों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है वर्ण कहते हैं। इस प्रकार जिन ध्वनियों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है, **वर्ण** कहते हैं। **उदाहरणार्थ–**अ, इ, उ, क, ख, ग इत्यादि वर्णों के समूह या समुदाय को **वर्णमाला** कहते हैं।

नोट

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	ख	ग	घ	ङ	
च	छ	ज	झ	ञ	
ट	ठ	ड	ढ	ण	
त	थ	द	ध	न	
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व		
श	ष	स	ह		

नोट्स हिन्दी में वर्णों की संख्या 45 है।

संस्कृत वर्णमाला में एक और स्वर **ऋ** है। इसे भी सम्मिलित कर लेने पर वर्णों की संख्या 46 हो जाती है। इसके अलावा हिन्दी में **अँ, ड़, ढ़** और अंग्रेजी से आगत **ऑ** ध्वनियाँ प्रचलित हैं। **अँ अं** से भिन्न है, **ड़, ड से, ढ़ ढ** से भिन्न है, इसी प्रकार **ऑ आ** से भिन्न ध्वनि है। वास्तव में इन ध्वनियों (अँ, ड़, ढ़, ऑ) को भी हिन्दी वर्णमाला में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इनको भी सम्मिलित कर लेने पर हिन्दी में वर्णों की संख्या 50 हो जाती है। हिन्दी वर्णमाला दो भागों में विभक्त है–**स्वर और व्यंजन।**

12.1 वर्ण विचार : हिन्दी स्वर और व्यंजन ध्वनियों का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण

12.1.1 स्वर–जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा मुख-विवर से अबाध गति से निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर दो प्रकार के होते हैं–1. मूल स्वर, 2. सन्धि स्वर।

1. **मूल स्वर**–वे स्वर जिनके उच्चारण में कम से कम समय लगता है, अथार्त् जिनके उच्चारण में अन्य स्वरों की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, मूल स्वर या ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। जैसे–अ, इ, उ, ऋ।
2. **सन्धि स्वर**–वे स्वर जिनके उच्चारण में मूल स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, **संधि स्वर** कहलाते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–

(क) दीर्घ स्वर **(ख) संयुक्त स्वर।**

(क) दीर्घ स्वर–वे स्वर जो सजातीय स्वरों के संयोग से निर्मित हुए हैं, दीर्घ स्वर कहलाते हैं। जैसे–

अ + अ = आ

इ + इ = ई

उ + उ = ऊ

(ख) संयुक्त स्वर–वे स्वर जो विजातीय स्वरों के संयोग से निर्मित हुए हैं, संयुक्त स्वर कहलाते हैं। जैसे–

अ + इ = ए

अ + ए = ऐ

अ + उ = ओ

अ + ओ = औ

क्या आप जानते हैं वे स्वर जिनके उच्चारण में मूल स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, संधि स्वर कहलाते हैं।

स्वरों का उच्चारण

उच्चारण स्थान की दृष्टि से स्वरों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. अग्र स्वर, 2. मध्य स्वर, 3. पश्च स्वर।

1. अग्र स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग ऊपर उठता है, अग्र स्वर कहलाते हैं। जैसे– इ, ई, ए, ऐ।

2. मध्य स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में चिह्वा समान अवस्था में रहती है, मध्य स्वर कहलाते हैं। जैसे–'अ'।

3. पश्च स्वर–जिन स्वरों के उच्चारण में जिह्ववा का पश्च भाग ऊपर उठता है, पश्च स्वर कहलाते हैं। जैसे–आ, उ, ओ, औ।

इसके अलावा अँ (ँ), अं (ं) और अः (ः) ध्वनियाँ हैं। ये न तो स्वर हैं और न ही व्यंजन। आचार्य किशोरीदास बाजपेयी ने इन्हें **'अयोगवाह'** कहा है, क्योंकि ये बिना किसी से योग किए ही अर्थ वहन करते हैं। हिन्दी वर्णमाला में इनका स्थान स्वरों के बाद और व्यंजनों के पहले निर्धारित किया गया है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. संधि स्वर दो प्रकार के होते हैं .... और .... ।
2. तीन विभाजित स्वर हैं, अग्र स्वर, ..., पश्च स्वर।
3. हिन्दी वर्णमाला में इनका स्थान स्वरों के बाद और .... के पहले निर्धारित किया गया है।

टास्क स्वर एवं स्वरों के उच्चारण पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

12.1.2 व्यंजन

जिन ध्वनियों के उच्चारण में हवा मुख-विवर से अबाध गति से नहीं निकलती, वरन् उसमें पूर्ण या अपूर्ण अवरोध होता है, व्यंजन कहलाती हैं। दूसरे शब्दों में वे ध्वनियाँ जो बिना स्वरों की सहायता लिए नहीं उच्चरित हो सकती हैं, व्यंजन कहलाती हैं।

जैसे–**क** = क् + अ।

नोट

सामान्यतया व्यंजन छः प्रकार के होते हैं–

(क) स्पर्श व्यंजन

(ख) अनुनासिक व्यंजन,

(ग) अन्तस्थ व्यंजन,

(घ) ऊष्म व्यंजन,

(ङ) उत्क्षिप्त व्यंजन

(च) संयुक्त व्यंजन।

(क) स्पर्श व्यंजन–जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का कोई न कोई भाग मुख के किसी न किसी भाग से स्पर्श करता है, **स्पर्श व्यंजन** कहलाते हैं। **क** से लेकर **म** तक 25 व्यंजन स्पर्श हैं। इन्हें पाँच-पाँच के वर्गों में विभाजित किया गया है। अत: इन्हें **वर्गीय व्यंजन** भी कहते हैं। जैसे–क से **ङ** तक पाँच व्यंजन **क वर्ग,** च से ञ तक पाँच व्यंजन **च वर्ग, ट** से ण तक ट वर्ग, त से न तक त वर्ग, और प से म तक **प** वर्ग।

(ख) अनुनासिक व्यंजन–जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु नासिका मार्ग से निकलती है, अनुनासिक व्यंजन कहलाते हैं। **ङ, ञ, ण, न और म,** अनुनासिक व्यंजन हैं।

(ग) अन्तस्थ व्यंजन–जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख बहुत संकुचित हो जाता है फिर भी वायु स्वरों की भाँति बीच से निकल जाती है, उस समय उत्पन्न होने वाली ध्वनि **अन्तस्थ** कहलाती है। य, र, ल, व अन्तस्थ व्यंजन हैं।

टास्क व्यंजन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(घ) ऊष्म व्यंजन–जिन व्यंजनों के उच्चारण में एक प्रकार की गरमाहट या सुरसुराहट जैसी होती है, **ऊष्म व्यंजन** कहलाते हैं। श, ष, स और ह उत्क्षिप्त ऊष्म व्यंजन हैं।

(ङ) संयुक्त व्यंजन–जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की उल्टी हुई नोंक ताल को छूकर झटके से हट जाती है, उन्हें **उत्क्षिप्त व्यंजन** कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

(च) उत्क्षिप्त व्यंजन–जिन व्यंजनों के उच्चारण में अन्य व्यंजनों की सहायता लेनी पड़ती है, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। जैसे–

क् + ष् = क्ष (अब उच्चारण की दृष्टि से क् + छ = क्ष)

त + र् = त्र

ज् + ञ् = ज्ञ (अब उच्चारण की दृष्टि से ग् + य् = ज्ञ)

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा को कोई न कोई भाग मुख के के किसी न किसी भाग से स्पर्श करता है, क्या कहलाता है।

(*a*) वर्गीय व्यंजन (*b*) ऊष्म व्यंजन
(*c*) स्पर्श व्यंजन (*d*) उत्क्षिप्त व्यंजन

5. सामान्यतया व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं?
(*a*) आठ (*b*) दस
(*c*) सात (*d*) छः

6. कौन-से व्यंजनों के उच्चारण में अन्य व्यंजनों की सहायता लेनी पड़ती है?
(*a*) संयुक्त व्यंजन (*b*) अन्तस्थ
(*c*) ऊष्म व्यंजन (*d*) उत्क्षिप्त व्यंजन

व्यंजनों का उच्चारण

उच्चारण स्थान की दृष्टि से हिन्दी-व्यंजनों को आठ वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **कोमल तालव्य व्यंजन**—संस्कृत में इन्हें कण्ठ्य व्यंजन कहा गया है। जिन व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा के पिछले भाग से कोमल तालु का स्पर्श होता है, कोमल तालव्य या कण्ठ्य ध्वनियाँ (व्यंजन) कहलाते हैं। क, ख, ग, घ, ङ कोमल तालव्य व्यंजन हैं।
2. **तालव्य व्यंजन**—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग कठोर तालु को स्पर्श करता है, तालव्य व्यंजन कहलाते हैं। च, छ, ज, झ, ञ और श, य तालव्य व्यंजन हैं।
3. **मूर्धन्य व्यंजन**—कठोर तालु के मध्य का भाग मूर्द्धा कहलाता है। जब जिह्वा की उल्टी हुई नोंक का निचला भाग मूर्द्धा से स्पर्श करता है, ऐसी स्थिति में उत्पन्न ध्वनि को मूर्धन्य व्यंजन कहते हैं। ट, ठ, ड, ढ, ण मूर्धन्य व्यंजन हैं।
4. **दन्त्य व्यंजन**—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा की नोंक ऊपरी दांतों का स्पर्श करती है, दन्त्य व्यंजन कहलाते हैं। त्, थ, द्, ध्, स् दन्त्य व्यंजन हैं।
5. **ओष्ठ्य व्यंजन**—जिन व्यंजनों के उच्चारण में दोनों ओष्ठों द्वारा श्वास का अवरोध होता है, ओष्ठ्य व्यंजन कहलाते हैं। प, फ, ब, भ, म ओष्ठ्य व्यंजन हैं।
6. **दन्त्योष्ठ्य व्यंजन**—जिन व्यंजनों के उच्चारण में निचला ओष्ठ ऊपरी दांतों से स्पर्श करता है, दंत्योष्ठ्य व्यंजन कहलाते हैं। 'व्' दंत्योष्ठ्य व्यंजन है।
7. **वर्त्स्य व्यंजन**—जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा ऊपरी मसूढ़ों (वर्त्स) का स्पर्श करती है, वर्त्स व्यंजन कहलाते हैं। जैसे—न्, र, ल्।
8. **स्वरयन्त्रमुखी या काकल्य व्यंजन**—जिन व्यंजनों के उच्चारण में अन्दर से आती हुई श्वास, तीव्र वेग से स्वर यन्त्र मुख पर संघर्ष उत्पन्न करती है, स्वरयन्त्रमुखी व्यंजन कहलाते हैं। जैसे—ह।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए—

7. उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी-व्यंजनों को दस वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।
8. जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग कठोर तालु को स्पर्श करता है, मूर्धान्य व्यंजन कहलाते हैं।
9. स्वरयंत्रमुखी व्यंजन कोकल्य व्यंजन भी कहलाते हैं।

नोट

12.2 सारांश (Summary)

- जिन ध्वनियों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है वर्ण कहते हैं। इस प्रकार जिन ध्वनियों के संयोग से शब्दों का निर्माण होता है, **वर्ण** कहते हैं।

12.3 शब्दकोश (Keywords)

उच्चारण : घोषणा, निर्णय उद्घोषणा

जिह्वा : जीभ

ओष्ठ : होंठ, ओठ

12.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. हिन्दी स्वर व्यंजन ध्वनियों का सामान्य परिचय एवं वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए।
2. स्वर क्या है तथा यह कितने प्रकार के होते हैं? व्याख्या कीजिए।
3. व्यंजन की व्याख्या कीजिए तथा व्यंजन के समस्त रूपों को बताइए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. दीर्घ स्वर/संयुक्त स्वर	2. मध्य	3. व्यंजनों
4. (*c*)	5. (*d*)	6. (*a*)
7. गलत	8. गलत	9. सही

12.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–13: शब्द विचार : शब्दों का वर्गीकरण

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

13.1 शब्द विचार और शब्दों का वर्गीकरण

13.1.1 रचना के आधार पर वर्गीकरण

13.1.2 स्रोत के आधार पर वर्गीकरण

13.1.3 शब्द भंडार

13.1.4 शब्द निर्माण

13.2 सारांश (Summary)

13.3 शब्दकोश (Keywords)

13.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

13.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- शब्द विचार और शब्दों का वर्गीकरण जानने में।
- रचना के आधार पर वर्गीकरण जानने हेतु।
- स्रोत के आधार पर वर्गीकरण समझने में।
- शब्द निर्माण जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

शब्द का स्वरूप

शब्द क्रमबद्ध ध्वानियों का ऐसा समूह है जिसका एक निश्चित अर्थ होता है और जिसकी स्वतंत्र सत्ता होती है। प्रत्येक भाषा में ध्वनियाँ एक निश्चित क्रम में आकर शब्द को एक निश्चित अर्थ प्रदान करती हैं। इन शब्दों का प्रयोग हम भाषा में अलग से स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं। शब्दों की सहायता से वाक्य बनाये जाते हैं। शब्दों के अर्थो का ज्ञान हमें शब्दकोशों से प्राप्त होता हैं।

नोट

इस प्रकार शब्द की निम्नलिखित विशेषताएँ महत्त्वपूर्ण हैं:

(क) निश्चित क्रमबद्धता: शब्दों की रचना ध्वनियों के निश्चित क्रम से आने से होती है। क्रम परिवर्तन करने से शब्द का अर्थ ही बदल जाता है, जैसे कलम तथा कमल। इन दोनों शब्दों में ध्वनियाँ समान हैं। लेकिन ध्वनियों का क्रम बदलने से शब्दों का अर्थ बदल गया है।

(ख) स्वतंत्र प्रयोग: भाषा में शब्दों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है, जैसे-हिन्दी के शब्द लड़का, घोड़ा, किताब, ईमानदार, मिठाईवाला आदि। इसके विपरीत कुछ इकाइयाँ अर्थवान तो होती हैं लेकिन वे हमेशा किसी शब्द के साथ ही जुड़कर आती हैं। उनका भाषा में स्वतंत्र रूप में प्रयोग नहीं होता जैसे **"वाला"** (मिठाईवाला), **"दार"** (ईमानदार) **"अ"** (अज्ञान) आदि।

(ग) अर्थवान इकाई: हर भाषा में शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है। ये अर्थवान शब्द ध्वनियों के निश्चित क्रम में आने से ही बनते हैं। कभी-कभी ध्वनियों का क्रम परिवर्तन करने पर शब्द का अर्थ ही नहीं बदलता बल्कि शब्द निरर्थक भी हो जाते हैं, जैसे–कलम की जगह मकल, लकम।

शब्दों के अर्थ तथा उनकी ध्वनियों में परस्पर कोई संबंध नहीं होता इसलिए संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं में हमें एक वस्तु तथा उसके अर्थ के लिए अलग-अलग शब्द मिलते हैं जैसे-हिन्दी में पेड़, किताब, मेज़ तो अंग्रेजी में "ट्री, बुक, टेबल" आदि।

शब्द और पद

जब शब्द का प्रयोग वाक्य में किया जाता है तब वह "पद" कहलाता है। "पद" के रूप में प्रयुक्त शब्द कोई-न-कोई व्याकरणिक प्रकार्य करता है तथा वाक्य के अन्य पदों के साथ संबंध स्थापित करता है।

उदाहरण के लिए "लड़के ने घोड़े को मारा" वाक्य में "लड़के" "घोड़े" और "मारा" पद क्रमशः कर्त्ता, कर्म और क्रिया का प्रकार्य कर रहे हैं तथा "ने" और "को" के सहयोग से परस्पर एक दूसरे के साथ संबद्ध भी हैं। वाक्य में पदों के इस प्रकार्य से कर्त्ता-कर्म-क्रिया के लिंग, वचन आदि का भी बोध होता है।

13.1 शब्द विचार और शब्दों का वर्गीकरण

13.1.1 रचना के आधार पर वर्गीकरण

रचना या बनावट के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में बाँटा जाता है–रूढ़, यौगिक तथा योग रूढ़।

(क) रूढ़ शब्द: वे शब्द जो किसी अन्य शब्द के योग से न बने हों, जो अपने में स्वतः पूर्ण हों, जैसे–सेना, पुस्तक, घर, दिन, पानी, मिट्टी आदि।

(ख) यौगिक शब्द: दो शब्दों के मेल से बने शब्दों को यौगिक कहते हैं। मूल शब्द या धातु में कोई शब्द या शब्दांश मिलाने से यौगिक शब्द बनते हैं।

यौगिक शब्द इस प्रकार बन सकते हैं–

शब्द + शब्द	जैसे सेना + पति (सेनापति)
शब्दांश + शब्द	जैसे अनु + शासन (अनुशासन)
शब्द + शब्दांश	जैसे लड़ + आई (लड़ाई)

जो शब्दांश रूढ़ के आरंभ में लगते हैं उन्हें उपसर्ग, तथा जो बाद में जुड़ते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

नोट

> *नोट्स* शब्दों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया गया है—रचना के आधार पर तथा स्रोत के आधार पर।

(ग) योग रूढ़: वे यौगिक शब्द जिनके अर्थ रूढ़ हो जाते हैं, "योग रूढ़" शब्द कहे जाते हैं, जैसे—"पंकज"। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है—"पंक से उत्पन्न"। "पंक" का अर्थ "कीचड़" होता है। और "ज" का अर्थ है—जन्म लेने वाला। शंख, कमल सभी कीचड़ में ही उत्पन्न होते है लेकिन हिन्दी में "पंकज" शब्द "कमल" के अर्थ में ही रूढ़ हो गया है। इसी प्रकार के कुछ अन्य योग रूढ़ शब्द हैं नीलांबर, त्रिनेत्र, नीलकंट, लंबोदर आदि।

13.1.2 स्रोत के आधार पर वर्गीकरण

स्त्रोत के आधार पर हिन्दी के शब्दों को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया जाता है—तत्सम, तद्‌भव, देशज और विदेशी।

(क) तत्सम शब्द: जो शब्द अपरिवर्तित रूप में संस्कृत से लिए गए हैं या जिन्हें संस्कृत के मूल शब्दों से संस्कृत के ही प्रत्यय लगाकर नव निर्मित किया गया है ऐसे शब्दों को ही तत्सम शब्द कहा जाता है। "तत्सम" शब्द का शब्दिक अर्थ है तत् (वह) और सम (समान) अर्थात् संस्कृत शब्द के समान जैसे—दुग्ध, घृत, अग्नि, जल विद्युत, सूर्य, वायु, मित्र, पंडित, कृष्ण, ऋषि आदि।

(ख) तद्‌भव शब्द: संस्कृत के जो शब्द प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी आदि से गुजरने के कारण आज परिवर्तित रूप में मिल रहे हैं, वे तद्‌भव शब्द कहलाते हैं। जैसे—

तत्सम	तद्‌भव
अग्नि	आग
घृत	घी
सूर्य	सूरज
दधि	दही
हस्त	हाथ
कर्म	काम
मेघ	मेह
वधू	बहू आदि।

(ग) वे शब्द जिनका स्त्रोत ज्ञात न हो अर्थात् जिनकी उत्पत्ति न तो संस्कृत प्राकृत-अपभ्रंश के स्त्रोत से हुई हो और न ही किसी विदेशी स्त्रोत से। ऐसे शब्द जन साधारण की बोलचाल की भाषा में विकसित तथा प्रचलित हो जाते हैं, जैसे—खिड़की, घपला, पेड़, चूहा, थैला, पेट, खाँसी, लड़का इत्यादि।

कुछ देशज शब्द अनुकरणात्मक भी होते हैं जैसे—म्याऊँ-म्याऊँ, चिपचिपा, पिलपिला, चूँ-चूँ, फटफटिया, गोलमटोल आदि।

(घ) विदेशी शब्द: विदेशी शब्द वे हैं जो किसी दूसरे देश की भाषा से आते हैं। हिन्दी में कई विदेशी भाषाओं जैसे अंग्रेजी, फ़ारसी, अरबी, तुर्की, चीनी, जापानी आदि भाषाओं से शब्द आ गए है, क्योंकि भारत के साथ इन भाषा भाषियों का समाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक संबंध रहा है। विदेशी भाषाओं से आने के कारण ही इन शब्दों को आगत शब्द भी कहा जाता है। हिन्दी में आए विदेशी शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

नोट

अंग्रेजी से आगत शब्दः इंजन, सिगरेट, फिल्म, इंजीनियर, डॉक्टर, बाल, बल्व, स्कूल, कप, प्लेट, टेलीफोन, थर्मामीटर, रेल, प्लेटफॉर्म, टिकट, कॉपी।

अरबी-फ़ारसी से आगत शब्द

(क) अनार, आसान, चपरासी, जरूर, दरवाज़ा, मरीज़, परेशान, हलवा, लिफाफा।

(ख) अमीर, इम्तहान, इलाज, फ़ौज, मुक़दमा, रिश्वत, वकील, बाज़ार, दफ़्तर।

तुर्की से आगत शब्दः कुर्ता, कुली, खच्चर, गलीचा, चाकू, तोप, बहादुर, लाश, दारोगा, कैंची।

पुर्तगाली से आगत शब्दः कमरा, चाबी, तौलिया, संतरा, साबुन, आलपीन, गमला, फीता, बाल्टी।

चीनी से आगत शब्दः चाय, लीची।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. शब्दों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जाता है .... तथा .... ।
2. दो शब्दों के मेल से बने शब्दों को .... कहते हैं।
3. वे यौगिक शब्द जिनके अर्थ रूढ़ हो जाते हैं .... शब्द कहे जाते हैं।

13.1.3 शब्द भंडार

हर भाषा का अपना शब्द भंडार होता हैं। किसी भी भाषा का शब्द भंडार समय के साथ-साथ बढ़ता जाता है। जब उस भाषा से नए ज्ञान का विकास होता है या वह भाषा किसी दूसरी भाषा के संम्पर्क में आती है तो नए शब्दों का सजृन होता है या दूसरी भाषाओं के कुछ शब्दों को ग्रहण कर लिया जाता है। जो भाषा समाज में जितने अधिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होगी उसका शब्द भंडार उतना ही अधिक विकसित और विस्तृत होता जाएगा। किसी कारण प्रयोग से हट जाने के कारण कुछ शब्द लुप्त भी होते हैं, जैसे–सेर, छटाँक, रत्ती, तोला, गज़ आदि शब्द धीरे-धीरे हिन्दी की सक्रिय शब्दावली से लुप्त होते जा रहे हैं। उनकी जगह अब किलो, ग्राम, लीटर, मीटर आदि प्रयुक्त होने लगे हैं।

(क) परंपरा से प्राप्त शब्द

परंपरा से प्राप्त शब्दों में दो प्रकार के शब्द हिन्दी में बड़ी संख्या में मिलते हैं। एक तो संस्कृत के तत्सम शब्द हैं तथा दूसरे अरबी-फ़ारसी के। दोनों ही स्त्रोतों से आए इन शब्दों की यद्यपि अपनी परंपरा रही है किन्तु हिन्दी में आकर ये हिन्दी की अपनी प्रकृति के अनुरूप ढल गए हैं। ये हिन्दी के अपने व्याकरण के भी अंग बन गए हैं। इन शब्दों को देखकर अब हिन्दी भाषा-भाषी का ध्यान इस ओर नहीं जाता कि वे किसी अन्य भाषा स्त्रोत से हिन्दी में आए हैं। उदाहरण के लिए संस्कृत से आए शब्द, जैसे–सुंदर, मान, सम्मान, पुत्र, आदर, उपवन, मंत्री, प्रगति, निबंध, प्राचीन, नवीन, गुण, सुमन, पूर्ण, पुष्प, आदि। अरबी-फारसी से आए शब्द जैसे–क़ानून किताब, कलम, ईमान, शकल, रोज़, साल कमज़ोर, दर्द, खुश्बू, इन्सान, ज़मीन, सफ़र आदि।

इस प्रकार के सैकड़ों शब्द आज हिन्दी में आत्मसात हो गए हैं और हिन्दी शब्द भंडार के अंग बन गए हैं।

(ख) आगत/गृहीत शब्द

इस कोटि में प्रमुखतः अंग्रेजी से आए हुए शब्दों को रखा जा सकता है। यद्यपि ये शब्द भी अरबी-फारसी की ही भाँति विदेशी शब्द हैं लेकिन हमारे यहाँ इनके विकास की कोई परंपरा नहीं रही है। वैसे तो ये शब्द हिन्दी में पर्याप्त

संख्या में प्रचलित हैं, लेकिन हिन्दी भाषी इन्हें विदेशी शब्दों के रूप में ही ग्रहण करता है। अंग्रेजी के इन आगत शब्दों को दो प्रकार से ग्रहण किया गया है—मूल रूप में तथा अनुकूलित रूप में।

मूल रूप से गृहीत शब्द: ऐंजट, राशन, कॉलेज, अपील, रेल, ड्राइवर, टिकट, बैंक, मशीन, फोटो, कॉफी, बस, इंजीनियर, डॉक्टर, मास्टर, नर्स आदि।

अनुकूलित रूप में गृहीत शब्द: अंग्रेजी के वे आगत शब्द जो हिन्दी की अपनी प्रकृति के अनुरूप ढल गए हैं वे इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं जैसे—

मूल अंग्रेजी शब्द	**अनुकूलित शब्द**
टेकनीक	तकनीकी
एकेडमी	अकादमी
ट्रेजेडी	त्रासदी
कॉमेडी	कामदी
ट्रेज़री	तिजोरी
लेंटर्न	लालटेन
गोडाउन	गोदाम
एल्मीरा	अलमारी
कैप्टेन	कप्तान
ग्लास	गिलास
ब्रिटेन	बरतानिया
चाइना	चीन
अमेरिका	अमरीका
रसिया	रूस आदि।

(ग) नवनिर्मित शब्द

क्या आप जानते हैं वैज्ञानिक तथा औद्योगिक विकास के कारण हिन्दी में बहुत से नए शब्द बनाए गए हैं। विज्ञान, प्रशासन, क़ानून, बैंक और चिकित्साशास्त्र आदि अनेक क्षेत्रों से संबंधित विचारों और संकल्पनाओं को व्यक्त करने के लिए हिन्दी में नए शब्द बनाने की आवश्यकता पड़ी। इस प्रकार के शब्दों को "पारिभाषिक शब्द" भी कहते हैं।

हिन्दी में नए शब्द निर्माण की इस प्रक्रिया को निम्नलिखित आधारों पर देखा जा सकता है—

(क) संस्कृत स्त्रोत के आधार पर यह वे नव निर्मित शब्द हैं, जो संस्कृत के उपसर्ग, प्रत्यय और समास पद्धति के आधार पर बनाए गए हैं। जैसें अतिक्रमण, उपाध्यक्ष, उपभोक्ता, प्रदर्शन, प्राचार्य, रचनात्मक, सामाजिक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीकरण, अधिकतम, घोषणा-पत्र, वायु-प्रदूषण, समाज-कल्याण, राजभाषा आयोग आदि।

(ख) तद्‌भव स्त्रोत के आधार पर नवनिर्मित शब्दों के विकास में तद्‌भव शब्दों का भी योगदान है जैसे—आधी छुट्टी, गाड़ी-भाड़ा, महँगाई-भत्ता, बचत-खाता, हथकरघा आदि।

नोट

(ग) **संकर शब्द:** आवश्यकता के अनुसार जब दो भिन्न भाषाओं के शब्दों को मिलाकर कोई नया शब्द बनाया जाता है तब उसे संकर शब्द कहते हैं। हिन्दी में कई प्रकार के शब्द बनाए गए हैं:

(*i*) एक भाषा के उपसर्ग/ प्रत्यय तथा दूसरी भाषा के शब्द को मिलाकर जैसे फ़ारसी के 'बे' उपसर्ग जिसका अर्थ है बिना/ बगैर तथा अरबी, फारसी, तुर्की, हिन्दी के शब्दों को मिला कर–

बे	+	अदब (अरबी)	–	बेअदब
बे	+	काबू (तुर्की)	–	बेकाबू
बे	+	घर (हिन्दी)	–	बेघर

इसी प्रकार फ़ारसी के "दार" प्रत्यय, जिसका अर्थ है–

"रखने वाला/ युक्त" को मिलाकर–

(हिन्दी) काँटे	+	दार	–	काँटेदार
(अरबी) तहसील	+	दार	–	तहसीलदार
(हिन्दी) फल	+	दार	–	फलदार

(*ii*) समास पद्धति के आधार पर भिन्न-भिन्न भाषाओं के दो शब्दों को समास द्वारा जोड़कर भी हिन्दी में इस प्रकार के संकर शब्द बनाए गए हैं जैसे–

खेल-तमाशा	(हिन्दी + अरबी)
माल-गाड़ी	(अरबी + हिन्दी)
रेल-गाड़ी	(अंग्रेजी + हिन्दी)
टिकट-घर	(अंग्रेजी + हिन्दी)
कपड़ा-मिल	(हिन्दी + अंग्रेजी)
लाठी-चार्ज	(हिन्दी + अंग्रेजी)
पार्टी-कार्यालय	(अंग्रेजी + हिन्दी)
बजट-सत्र	(अंग्रेजी + हिन्दी)
बीमा-पॉलिसी	(अरबी + अंग्रेजी)
रेडियो-तरंग	(अंग्रेजी + संस्कृत)
रोज़गार-समाचार	(फ़ारसी + संस्कृत)

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. किसी भी भाषा का शब्द भंडार किसके साथ-साथ बढ़ता जाता है?

   (*a*) ज्ञान (*b*) विज्ञान

   (*c*) समय (*d*) समाज

5. अंग्रेजी के वे आगत शब्द जो हिन्दी की अपनी प्रकृति के अनुरूप ढल गए हैं वह किस वर्ग के अंतर्गत आते हैं?

   (*a*) गृहीत शब्द (*b*) संकट शब्द

   (*c*) परंपरा से प्राप्त शब्द (*d*) या उपरोक्त में से कोई नहीं

नोट

6. अपनी आवश्यकता के अनुसार जब दो भिन्न भाषाओं के शब्दों को मिलाकर कोई नया शब्द बनाया जाता है उसे .... कहते हैं।

(*a*) सार्थक शब्द (*b*) संकट शब्द

(*c*) संस्कृत (*d*) आगत शब्द।

13.1.4 शब्द निर्माण

हिन्दी में शब्द-निर्माण चार प्रकार से किया जाता है–

(*i*) उपसर्गों के द्वारा, (*ii*) प्रत्ययों के द्वारा, (*iii*) समास-प्रक्रिया के द्वारा, (*iv*) संधि के द्वारा।

(*i*) उपसर्गों के द्वारा: उपसर्ग भाषा के ऐसे सार्थक और लघुतम खंड हैं जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं होता। ये हमेशा विभिन्न प्रकार के शब्दों के आरंभ में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं। हिन्दी में अधिकांश उपसर्ग संस्कृत तथा अरबी-फ़ारसी से आए हैं तथा कुछ उपसर्ग हिन्दी के अपने भी विकसित हो गए हैं। संस्कृत से यथावत रूप में आए हुए उपसर्गों को तत्सम उपसर्ग, संस्कृत से विकसित होकर अन्य उपसर्गों को तद्भव उपसर्ग और अंग्रजी, अरबी-फ़ारसी से आए उपसर्गों को विदेशी उपसर्ग कहते हैं। इन तीनों प्रकार के उपसर्गों से निर्मित हिन्दी शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं–

(क) तत्सम उपसर्गों से निर्मित शब्द

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अन–	परे/अभाव/ विपरीत	अनगिनत, अनपढ़, अनुचित
अनु–	पीछे	अनुरूप, अनुकूल, अनुकरण
अप–	बुरा/अनुचित/ विपरीत	अपव्यय, अपयश, अपमान
अव–	अभाव/ विपरीत	अवगुण, अवचेतन
आ–	तक	आजीवन, आरक्षण, आजन्म
कु–	बुरा/ अशुभ	कुकर्म, कुचाल, कुमार्ग
दुर–	बुरा/ कठिन/ अभाव	दुर्गुण, दुर्गम, दुर्बल
वि–	बिना/ विशेष/ दूसरा	वियोग, विज्ञान, विदेश
स–	सहित	सफल, सजीव, सरस
सु–	अच्छा/ बहुत	सुयश, सुपुत्र, सुसम्पन्न आदि।

(ख) तद्भव उपसर्गों से निर्मित शब्द

संस्कृत उपसर्ग	तद्भव उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
उद्–	उ	ऊपर/ ऊँचा	उभरना, उनींदा
अव–	औ	हीन/ नीचे/ दूर	औगुन, औघट
निर्–	नि	रहित	निहत्था, निकम्मा
प्र–	पर	दूसरी पीढ़ी का	परपोता, परदादा
सु–	स	अच्छा	सपूत

नोट

कु–	क	बुरा	कपूत
अर्द्ध–	अध	आधा	अधपका, अधमरा

(ग) विदेशी उपसर्ग

उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
ब–(फ़ारसी)	के साथ/ से	बखूबी, बदौलत
बा–(फ़ारसी)	साथ/ से	बाक़ायदा, बाअदब
बे–(फ़ारसी)	बिना	बेईमान, बेतुका, बेचारा
ला–(अरबी)	नहीं/ अभाव	लाजवाब, लावारिस
हम–(फ़ारसी)	साथ/ बराबर/ आपस में	हमसफर, हमउम्र, हमराज़
बद–(फ़ारसी)	बुरा	बदनाम, बदचलन
हैड–(अंग्रेजी)	प्रमुख	हैड बावर्ची, हैड मिस्त्री

***(ii)* प्रत्ययों के द्वारा:** प्रत्यय भाषा के ऐसे सार्थक और लघुतम खंड हैं जिनका प्रयोग स्वतंत्र रूप में नहीं होता। ये हमेशा शब्द के अंत में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं शब्द-निर्माण की दृष्टि से हिन्दी में प्रत्ययों का प्रयोग सबसे ज्यादा होता है। उपसर्गों की ही भाँति प्रत्ययों को भी स्त्रोत की दृष्टि से तीन भागों में बाँटा जा सकता है–तत्सम प्रत्यय, तद्भव प्रत्यय और विदेशी प्रत्यय।

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–एक वे जो क्रियाधातु के बाद लगकर संज्ञा या विशेषण बनाते हैं (इन्हें कृत्य कहते हैं), जैसे सजावट, पढ़ाई। प्रत्यय के योग से शब्द का व्याकरणिक रूप बदल सकता है जैसे, संज्ञा से विशेषण या विशेषण से संज्ञा दुख-दुखी या अच्छा-अच्छाई। कभी-कभी व्याकरण रूप तो नहीं बदलता लेकिन अर्थ के रूप में परिवर्तन हो जाता है, जैसे बच्चा-बचपन। इसके अलावा शब्दों में जुड़कर प्रत्यय कुछ खास अर्थ व्यक्त करते हैं। इनकी कोटियाँ नीचे दी जा रही हैं:

(क) करने बाला

हार–होनहार

अक्कड़–घुमक्कड़

ऊ–उड़ाऊँ खाऊँ

दार–लेनदार, देनदार

(ख) करने का साधन

–ई = बुहारी, रेती

–नी = मथानी

–ना = ढकना, बेलना

(ग) क्रिया के योग्य होना (विशेषण)

–अनीय = पूजनीय, पठनीय

–य = देय, पेय

(घ) क्रिया करने का स्थान

–क = बैठक

(ड.) क्रिया से संज्ञा (या वस्तु)

–नी = चटनी, सूँघनी

–ना = खाना, बिछौना

(च) क्रिया की प्रक्रिया

–आन = उड़ान, उठान

–आई = पढ़ाई, दिखाई

–आवट = लिखावट, मिलावट

–ना = लिखना, पढ़ना

–ई = हँसी, बोली।

'वाला' का प्रयोग भी प्रत्ययवत होने लगा है, जैसे–गानेवाला, दौड़ने वाला, खानेवाला आदि।

2. संज्ञा या विशेषण के बाद लगने वाले प्रत्यय

हिन्दी में संज्ञा से संज्ञा तथा संज्ञा से विशेषण बनाने वाले प्रत्यय बहुत बड़ी संख्या में हैं। देखिए:

(क) संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय

भाववाचक:	– ई (खेती, दोस्ती)	
	– आई (पंडिताई)	
	– ता (मानवता)	–पन (बचपन)
	– आस (खटास)	–आहट (चिकनाहट)
जीविकावाचक:	– आर (सुनार)	–एरा (सपेरा)
	– वान (गाड़ीवान)	–क (लिपिक)
	– दार (दुकानदार)	–हारा (लकड़हारा)
	– गर (सौदागर)	–कार (कलाकार)
लघुतावाचक:	– (घंटी)	–री (कोठरी)
	– इया (लुटिया)	–ड़ा (बछड़ा)
संस्कृत के शब्दों में	– इमा (मधुरिमा), त्व (पुरुषत्व)	– मान (बुद्धिमान)
	– वान (दयावान) वती (गुणवती) आदि भी प्रत्यय लगते हैं।	

(ख) विशेषण बनाने वाले प्रत्यय

– आ	भूखा, सूखा, प्यासा
– आलु	दयालु, श्रद्धालु
– इक	शारीरिक (शरीर) (अ का–आ में परिवर्तन)
	वैज्ञानिक (विज्ञान) (इ का ऐ में परिवर्तन)
	भौगोलिक (भूगोल) (उ का "औ" में परिवर्तन)
– इत	पुष्पित, अंकुरित, पल्लवित
– ई	गुलाबी, ऊनी, बंगाली

नोट

– ईय	राष्ट्रीय, भारतीय, मानवीय
– ईन	नवीन, कुलीन, नमकीन
– ईला	रसीला, चमकीला, बर्फीला
– दायक	दुखदायक
– दायी	दुखदायी
– ऊ	बजारू, टिकाऊ
– मय	सुखमय, जलमय

कुछ प्रत्यय अरबी-फ़ारसी के भी हैं:

– दान	कलमदान
– दार	मालदार
– मंद	अक्लमंद
– नाक	खतरनाक
– आना	सालाना, रोज़ाना
– ची	चिलमची, अफ़ीमची

***(iii)* समास-प्रक्रिया द्वारा–**आप इसमें पहले पढ़ चुके हैं कि दो स्वतंत्र शब्दों (पदों) के योग से भी शब्द-निर्माण संभव है जिनको यौगिक कहा गया है, जैसे-सेनापति(सेना+पति) वस्तुत: ऐसे शब्दों को समास कहते हैं। समास का अर्थ है–संक्षेप। अनेक शब्दों को जोड़कर संक्षिप्त और छोटा शब्द बना लेना ही समास है। जैसे–"गंगाजल" (गंगा का जल), "पुस्तकालय" (पुस्तक+आलय)। समास रचना में समान्यता दो पद (शब्द) होते हैं–पहले पद को पूर्वपद (जैसे–गंगा, पुस्तक) तथा दूसरे पद को उत्तरपद (जैसे–जल, आलय) कहते हैं। समास रचना से बना हुआ शब्द समस्त पद कहलाता है। समास के प्रयोग से भाषा में सटीकता तथा संक्षिप्तता आती है। "राजा का महल" जैसे तीन पदों के स्थान पर राजमहल (दो पद) समास का प्रयोग अधिक स्पष्ट तथा संक्षिप्त है।

दो पदों (शब्दों) के संयोग की चार स्थितियाँ संभव हैं–

1. दोनों पद प्रधान हों। (द्वंद्व समास)
2. दोनों पद अप्रधान हों, मिलकर नए अर्थ का ही बोध हो। (बहुब्रीहि समास)
3. पहला पद गौण और दूसरा प्रधान हो। (तत्पुरुष समास)
4. पहला पद प्रधान और दूसरा गौण हो। (अव्ययी भाव समास)

इस प्रकार समास के चार भेद हैं:

1. द्वंद्व समास

द्वंद में स्पष्ट ही है कि दोनों पद प्रधान होते हैं, जैसे–

भाई-बहिन	=	भाई और बहिन
राम-कृष्ण	=	राम और कृष्ण
गाना-बजाना	=	गाना और बजाना

2. बहुब्रीहि समास

जिस समास के दोनों पदों में से किसी को प्रधानता नहीं दी जाती अर्थात् दोनों गौण पद किसी तीसरे अर्थ को प्रधानता देते हैं। जैसे–

त्रिनेत्र	=	तीन हैं नेत्र जिसके अर्थात् "शिव"
चतुर्भुज	=	चतुः + भुंज (चार हैं भुजाएँ जिनकी "विष्णु")

3. तत्पुरुष समास

जब दूसरा पद प्रधान होता है और पहला गौण तब वहाँ तत्पुरुष समास होता है। जैसे,

देशभक्ति	=	देश के लिए भक्ति
क्रीड़ाक्षेत्र	=	क्रीड़ा के लिए क्षेत्र (खेल का मैदान)
समाजद्रोही	=	समाज का द्रोही
रसोईघर	=	रसोई के लिए घर

तत्पुरुष के दो उपभेद हैं: कर्मधारय और द्विगु।

(क) कर्मधारयः में भी दूसरा पद प्रधान होता है, किंतु भिन्नता यह है कि इसमें पहला पद विशेषण या उपमासूचक होता है और दूसरा पद विशेष्य, जैसे–

महापुरुष	=	महा + पुरुष
महानिदेशक	=	महा + निदेशक
चंद्रमुख	=	चंद्रमा के समान मुख

(ख) द्विगुः द्विगु भी कर्मधारय के समान होता है किन्तु इसका पहला पद संख्यावाची विशेषण होता है, जैसे–

चौराहा	=	चार राहें (रास्ते)
तिमाही	=	तीन माह
त्रिभुवन	=	तीन भुवन

4. अव्ययीभाव समास

जब समास में पहला पद अव्यय होता है तो समस्त पद को अव्ययी भाव समास कहा जाता है। याद रखें कि इस कोटि का पूरा पद अव्यय होता है।

यथासमय	=	यथा + समय (समय के अनुसार)
अकेला-अकेला	=	अकेला + अकेला (बिल्कुल अकेला)
जल्दी-जल्दी	=	जल्दी + जल्दी (बहुत जल्दी)
भरपेट	=	भर + पेट (पेट भरकर)
बेखटके	=	बे + खटके (बिना रुकावट के)
आमरण	=	आ + मरण (मरने तक)
प्रतिदिन	=	प्रति + दिन (हर रोज़)

इस प्रकार ऊपर आपने समास रचना का जो वर्गीकरण देखा उसे आप इस प्रकार सकते हैं–

नोट

समास

द्वंद्व	बहुव्रीहि	तत्पुरुष	अव्ययी भाव
(दोनों पद प्रधान)	(दोनों पद अप्रधान)	(पहला पद गौण दूसरा प्रधान)	(पहला पद प्रधान दूसरा गौण)
भाई–बहिन	त्रिनेत्र	देश भक्ति	प्रतिदिन

तत्पुरुष:

कर्मधारय	द्विगु
(विशेषण प्रधान)	(संख्या प्रधान)
महाराज	तिराह
(विशेषण, चन्द्रमुख (उपमा सूचक)	

(iv) **संधि के द्वारा**

जब दो पद आपस में मिलते हैं तो प्रथम पद की अंतिम ध्वनि और द्वितीय पद की पहली ध्वनि के मेल से जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते हैं, जैसे,

स्व + अभिमान = स्वाभिमान

विद्या + आलय = विद्यालय

संधि की अवस्था में मुख्यतया तीन स्थितियाँ होती हैं

(1) पूर्व ध्वनि और परध्वनि दोनो में परिवर्तन होगा, जैसे,

देव + इन्द्र = देवेन्द्र

उत् + श्वास = उच्छ्वास

(2) पूर्व ध्वनि में परिवर्तन, किंतु पर ध्वनि में नहीं, जैसे

सत् + जन = सज्जन

गिरी + ईश = गिरीश

(3) परध्वनि में परिवर्तन, किंतु पूर्व ध्वनि में नहीं, जैसे,

मही + इन्द्र = महीन्द्र

यथा + अवसर = यथावसर

संधि के भेद

संधि के भेदों के लिए यह आरेख देखें

संधि

स्वर संधि	व्यंजन संधि	विसर्ग संधि
(स्वर + स्वर)	(व्यंजन + स्वर/ व्यंजन)	(विसर्ग + स्वर/ व्यंजन)
विद्या + आलय = विद्यालय	सत् + आचार = सदाचार	मन: + भाव = मनोभाव
	सत् + जन = सज्जन	नि: + कपट = निष्कपट

स्वर संधि

नोट्स एक स्वर के बाद दूसरे स्वर के आने के कारण जो परिवर्तन होता है वह स्वर संधि के अंतर्गत आता है। इस संधि के मुख्यत: दीर्घ, गुण वृद्धि और यण् उपभेद हैं।

1. दीर्घ संधि

ह्रस्व (अ, इ, उ) या दीर्घ (आ, ई, ऊ) के बाद क्रमश: ह्रस्व (अ, इ, उ) या दीर्घ (आ, ई, ऊ) आ जाए, तो **दोनों मिलकर** दीर्घ (आ/ई/ ऊ) हो जाते हैं। जैसे,

भोजन + आलय	=	भोजनालय	(अ + आ = आ)
महा + आत्मा	=	महात्मा	(आ + आ = आ)
गिरि + ईश	=	गिरीश	(इ + ई = ई)
मही + इन्द्र	=	महीन्द्र	(ई + इ = ई)
सु + उक्ति	=	सूक्ति	(उ + उ = ऊ)

2. गुण संधि

अ अथवा आ के बाद इ, ई/ उ, ऊ/ ऋ स्वर आ जाएँ तो **दोनों मिलकर** क्रमश: ए/ओ/अर् हो जाते हैं। जैसे,

देव + इन्द्र	=	देवेन्द्र	(अ + इ = ए)
रमा + ईश	=	रमेश	(आ + ई = ए)
पर + उपकार	=	परोपकार	(अ + उ = ओ)
महा + उत्सव	=	महोत्सव	(आ + उ = ओ)
राज + ऋषि	=	राजर्षि	(अ + ऋ = अर्)
महा + ऋषि	=	महर्षि	(आ + ऋ = अर्)

3. वृद्धि संधि

अ अथवा आ के बाद ए, ऐ/ओ, औ, स्वर आ जाएँ, तो **दोनों मिलकर** क्रमश: ऐ/औ हो जाते हैं। जैसे,

सदा + एव	=	सदैव	(आ + ए = ऐ)
मत + ऐक्य	=	मतैक्य	(अ + ऐ = ऐ)

4. यण् संधि

यदि इ, ई/ उ, ऊ/ ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो इ, ई/ उ, ऊ/ ऋ का क्रमश: य्/ व्/ र् बन जाता है, और तब परस्पर मात्रा रूप में जुड़ जाता है। जैसे

इति + आदि = इत्-य् + आदि = इत्यादि

अति + अधिक = अत्-य् + अधिक = अत्यधिक

उपरि + उक्त = उप-र् + उक्त = उपर्युक्त

सु + आगत = स्-व् + आगत = स्वागत

पितृ + आज्ञा = पित्र् + आज्ञा = पित्राज्ञा

नोट

टास्क शब्द निर्माण पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

व्यंजन संधि

किसी व्यंजन के बाद किसी स्वर अथवा व्यंजन के आने के कारण जो परिवर्तन होता है, वह व्यंजन संधि के अन्तर्गत आता है। इस संधि के कुछ प्रमुख परिवर्तन नीचे दिए जा रहे हैं।

1. क वर्ग–च आदि के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन:

दिक् + गज = दिग्गज	क् + ग = ग् + ग्
सत् + गति = सद्गति	त् + ग = द् + ग
षट् + आनन = षडानन	ट् + आ = ड् + आ
सत् + आचार = सदाचार	त् + आ = द् + आ

2. क वर्ग च वर्ग आदि के पहले वर्ण का, बाद में म, न आने पर पंचमवर्ण में परिवर्तन:

वाक + मय = वाङ्. + मय = वाङ्.मय

जगत् + नाथ = जगत् + नाथ = जगन्नाथ

3. त् के बाद में च (छ)/ ज (झ) आने पर क्रमश: च/ ज में परिवर्तन

उत् + चारण = उच् + चारण. = उच्चारण

सत् + चरित्र = सच् + चरित्र = सच्चरित्र

सत् + जन = सज् + जन = सज्जन

4. त् के बाद "श" आने पर त् का च् में परिवर्तन तथा "श" क "छ" में परिवर्तन:

उत् + श्वास = उच् + छ्वास = उच्छ्वास

विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद किसी स्वर अथवा व्यंजन के आने के कारण परिवर्तन होता है, वह विसर्ग संधि के अंतर्गत आता है। इस संधि के कुछ प्रमुख परिवर्तन नीचे दिए जा रहे हैं:

1. विसर्ग का ओ होना:

मन: + बल = मनोबल

तप: + भूमि = तपोभूमि

मन: + अनुकूल = मनोनुकूल

(विसर्ग के पूर्व "अ", तथा विसर्ग के बाद "अ" अथवा सघोष होने पर)

2. विसर्ग का र् होना:

नि: + अर्थक = निरर्थक

दु: + उपयोग = दुरुपयोग

नि: + धन = निर्धन

दु: + जन = दुर्जन

3. विसर्ग का स् होनाः

नमः + ते = नमस्ते

दुः + साहस = दुस्साहस (बाद में त्/ स्)

विसर्ग का श् होनाः

निः + चल = निश्चल

दुः + शासन = दुश्शासन (बाद में च वर्ग/ श)

4. विसर्ग का ष् होनाः

निः + कलक = निष्कलंक

निः + फल = निष्फल

परिः + कार = परिष्कार

(विसर्ग का ष् होता है यदि बाद में क, ख, प, फ, हो)

5. विसर्ग का लोपः (यदि बाद में "र" हो तो पूर्वस्वर दीर्घ हो जाता है)

निः + रोग = नीरोग

निः + रस = नीरस

हिन्दी के अपने संधि नियम

संस्कृत परम्परा से प्राप्त संधि नियमों के अलावा हिन्दी के अपने भी संधि नियम विकसित हुए हैं। इन नियमों को निम्नलिखित छः वर्गों में रखा जा सकता है।

1. महाप्राणीकरणः शब्द के अन्त में अल्पप्राण ध्वनि के आगे यदि "ह" ध्वनि हो तो अल्पप्राण ध्वनि महाप्राण हो जाती है, जैसे–

जब + ही = जभी

कब + ही = कभी

अब + ही = अभी

तब + ही = तभी

2. अल्पप्राणीकरणः कभी-कभी पहले शब्द की अंतिम महाप्राण ध्वनि का अल्पप्राणीकरण हो जाता है, जैसे–

ताख पर – ताक पर

दूध वाला + दूद वाला

3. लोपः कभी-कभी दो हिन्दी शब्दों की संधि में किसी एक ध्वनि (वर्ण) का लोप हो जाता है, जैसे–

वहाँ + ही = वहीं

यहाँ + ही = यहीं

वह + ही = वहीं

यह + ही = यही

किस + ही = किसी

जिस + ही = जिसी

नक + कटा = नकटा

नोट

4. ह्स्वीकरण: सामासिक पदों में पूर्वपद का दीर्घ स्वर प्राय: ह्स्व हो जाता है, जैसे–

(*i*) पूर्व पद के दीर्घ स्वर का ह्स्वीकरण–

आम + चूर = अमचूर

हाथ + कंडा = हथकंडा

कान + कटा = कनकटा

(*ii*) पूर्व पद के अंतिम स्वर का ह्स्वीकरण–

बहू + एँ = बहुएँ

डाकू + ओं = डाकूओं

लड़का + पन = लड़कपन

मीठा + बोला = मिठबोला

5. सादृशीकरण: दो भिन्न ध्वनियाँ एक रूप हो जाती हैं, जैसे–

पोत + दार = पोद्दार

6. स्वर-परिवर्तन: विशेष रूप से सामासिक पदों में, जैसे–

पानी + घाट = पनघट

घोड़ा + दौड़ = घुड़दौड़

छोटा + पन = छुटपन

इस प्रकार पनडुब्बी, घुड़सवार, छुटभैया।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. परंपरा से प्राप्त शब्दों में दो प्रकार के शब्द हिन्दी में मिलते हैं, एक तो संस्कृत के तत्सम शब्द हैं तथा दूसरे अंग्रेजी-अरबी के।
8. विसर्ग के बाद किसी स्वर अथवा व्यंजन के आने के कारण वह विसर्ग संधि के अंतर्गत आता है।
9. संस्कृत परम्परा से प्राप्त संधि नियमों के अलावा हिन्दी के अपने भी संधि नियम विकसित हुए हैं। इन निमयों को निम्नलिखित छ: वर्गों में रखा जाता है।

13.2 सारांश (Summary)

- शब्दों के अर्थ तथा उनकी ध्वनियों में परस्पर कोई संबंध नहीं होता इसलिए संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं में हमें एक वस्तु तथा उसके अर्थ के लिए अलग-अलग शब्द मिलते हैं जैसे-हिन्दी में पेड़, किताब, मेज़ तो अंग्रेजी में "ट्री, बुक, टेबल" आदि।

13.3 शब्दकोश (Keywords)

वायु-प्रदूषण : हवा का दूषित हो जाना

उपभोक्ता : ग्राहक, उपभोग करने वाला

नोट

13.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. शब्दों का वर्गीकरण कितने आधारों पर किया जाता है? उल्लेख कीजिए।
2. शब्द भंडार से क्या तात्पर्य है? उल्लेख कीजिए।
3. शब्द-निर्माण कितने प्रकार से किया जाता है? वर्णन कीजिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. रचना के आधार पर, स्रोत के आधार पर

2. योगिक	3. योग रूढ़	4. (*b*)
5. (*d*)	6. (*d*)	7. गलत
8. सही	9. सही	

13.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–14: मुहावरे : अर्थ एवं वाक्य निर्माण

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)
प्रस्तावना (Introduction)
14.1 मुहावरे का अर्थ एवं वाक्य निर्माण
14.1.1 मुहावरा और कहावत में अन्तर
14.1.2 हिन्दी के कुछ प्रचलित मुहावरे, उनके अर्थ तथा वाक्य प्रयोग
14.2 सारांश (Summary)
14.3 शब्दकोश (Keywords)
14.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)
14.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- मुहावरे का अर्थ एवं वाक्य निर्माण जानने में।
- मुहावरा और कहावत में अन्तर जानने हेतु।
- हिन्दी के कुछ प्रचलित मुहावरे जानने में।
- मुहावरे का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग समझने में।

प्रस्तावना (Introduction)

'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा का है–जिसका अर्थ है अभ्यास होना या आदी होना। इस प्रकार मुहावरा शब्द अपने-आप में स्वयं मुहावरा है, क्योंकि यह अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर असामान्य अर्थ प्रकट करता है। जैसे–हमें अमुक कार्य का मुहावरा हो गया है। हिन्दी और उर्दू में यह परिभाषिक शब्द है, जो ऐसे वाक्यांश का बोधक बन गया है, जिससे किसी सामान्य अर्थ की प्रतीति विलक्षण एवं प्रभावशाली ढंग से होती है। इनका अर्थ अभिधा शक्ति से विलक्षण होने के कारण लक्षणा या व्यंजना द्वारा प्रकट होता है। वाक्यांश शब्द से स्पष्ट है कि मुहावरा संक्षिप्त होता है, परन्तु अपने इस संक्षिप्त रूप में ही किसी बड़े विचार या भाव को प्रकट करता है। इस प्रकार **मुहावरा वह वाक्यांश है, जो अपने वाचिक अर्थ का बोध न कराकर, लाक्षणिक या व्यांग्यिक अर्थ का बोध करता है, और भाषा में सजीवता एंव अर्थ गौरव बढ़ाने में सहायक होता है।** जैसे–**'घी के चिराग**

जलाना' मुहावरे का अर्थ–**'घी के दीपक जलाना'** नहीं है बल्कि **'खुशी मनाना' है।** इस प्रकार अधिकांश मुहावरों में लाक्षणिक अर्थ निकलता है। किन्हीं-किन्हीं मुहावरों में व्यांग्यिक अर्थ भी निकलता है।

'कहावत' का अर्थ है–कही हुई बात। इसका मतलब यह नहीं है कि प्रत्येक कही हुई बात कहावत है, केवल उसी बात को कहावत कहा जाएगा, जिनमें जीवन के अनुभवों को संक्षिप्त एवं विलक्षण ढंग से व्यक्त किया गया हो, और वह समय की कसौटी पर खरी उतरती हो। कहावत को सूक्ति, सुभाषित और लोकोक्ति भी कहते हैं। इनमें से 'कहावत' शब्द ही अधिक उपयुक्त है, क्योंकि सूक्ति या सुभाषित का अर्थ है–सुन्दर उक्ति या बात, लेकिन बहुत-सी कहावतें फूहड़ या अश्लील भी हैं, उन्हें सूक्ति या सुभाषित कहना ठीक नही। लोकोक्ति शब्द इसलिये उपयुक्त नहीं है, क्योंकि लोकोक्ति का अर्थ है–लोक (जनसाधारण) की उक्ति, लेकिन बहुत-सी कहावतें बड़े-सी विद्वानों द्वारा कही गयी हैं, ऐसी कहावतों को लोकोक्ति कहना ठीक नहीं होगा। इस प्रकार **'कहावत'** शब्द ही सर्वाधिक उपयुक्त है।

14.1 मुहावरे का अर्थ एवं वाक्य निर्माण

14.1.1 मुहावरा और कहावत में अन्तर

मुहावरा वाक्यांश होता है, जबकि कहावत पूरे वाक्य में होती है। मुहावरे का प्रयोग स्वतंत्र रूप से न होकर वाक्य रचना के नियमानुसार होता है, कहावत पर वाक्य रचना का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मुहावरे के अर्थ अधिकतर लाक्षणिक ही होते हैं, कभी-कभी व्यांग्यिक भी; कहावत प्रसंगानुसार अभिधा, लक्षणा और व्यंजना, तीनों द्वारा ही व्यक्त होती है। मुहावरों का प्रयोग भाषा में सजीवता लाने के लिए किया जाता है। यदि इसे वाक्य से निकाल दिया जाये तो वाक्य निर्जीव जैसा हो जाता है। कहावत एक प्रकार का व्यावहारिक कथन् है जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यदि इसे निकाल दिया जाये तो कोई विशेष हानि नहीं होती। बहुत-सी कहावतें किसी सत्य घटना, प्रसंग अथवा अन्तर्कथा से सम्बन्धित होती हैं। मुहावरों का सम्बन्ध अन्तर्कथाओं से नहीं होता है। भाषा की समृद्धि और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता के विकास के लिए मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग उपयोगी होता है।

सामान्य बोल-चाल में बहुत से नये-नये मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग अनायास ही हुआ करता है। इनमें दीर्घ जीवन का अनुभव एवं किसी जाति के रीति-रिवाज, परम्परा और संस्कृतिक समाहित होती है। इन्हें मानव ज्ञान का घनीभूत रत्न कहा जाता है, इनमें गागर में सागर बन्द होता है। भाषा में इनके प्रयोग से सजीवता, प्रवाहमयता और लालित्य आ जाता है, परिणामस्वरूप पाठक या श्रोता शीघ्र ही प्रभावित हो जाता है। इनसे कार्य व्यापार ही स्पष्टता और भाषा को बल मिलता है। मुहावरे और कहावतों की दृष्टि से हिन्दी और उर्दू, दोनों भाषाएँ अत्यन्त सम्पन्न हैं। इन भाषाओं के मुहावरों एवं कहावतों को अलग-अलग बहुत कठिन है। इसका कारण यह है कि दोनों की वाक्य रचना एक-सी है, अत: जो एक की विशेषता है वही दूसरी की। हिन्दी और उर्दू, दोनों के पास मुहावरों एवं कहावतों का अक्षय कोष है। जिस भाषा में इनका जितना अधिक प्रयोग होगा उसकी अभिव्यक्ति क्षमता उतनी ही प्रभावपूर्ण व रोचक होगी।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. ········ वाक्यांश होता है, जबकि कहावत पूरे वाक्य में होती है।
2. कहावत एक प्रकार का ········ कथब् है जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

नोट

3. ········ की समृद्धि और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता के विकास के लिए मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग उपयोगी होता है।

14.1.2 हिन्दी के कुछ प्रचलित मुहावरे, उनके अर्थ तथा वाक्य प्रयोग

(1) **अंक में समेटना**–(गोद में लेना, आलिंगनबद्ध करना)

शिशु को रोता हुआ देखकर माँ का हृदय करूणा से भर आया और उसने उसे अंक में समेटकर चुप किया।

(2) **अंकुश लगाना**–(पाबन्दी या रोक लगाना)

राजेश खर्चीला लड़का था। अब उसके पिता ने उसका जेब खर्च बन्द करके उसकी फिजूलखर्ची पर अंकुश लगा दिया है।

(3) **अंग बन जाना**–(सदस्य बनना या हो जाना)

घर के नौकर रामू से अनेक बार भेंट होने के पश्चात् एक अतिथि ने कहा, "रामू तुम्हें इस घर में नौकरी करते हुए काफी दिन हो गये हैं, ऐसा लगता कि जैसे तुम भी इस घर के अंग बन गये हो।"

(4) **अंग-अंग ढीला होना**–(बहुत थक जाना)

सारा दिन काम करते रहे, अंग-अंग ढीला हो गया है।

(5) **अंडा सेना**–(घर में बैठकर अपना समय नष्ट करना)

निकम्मे ओमदत्त की पत्नी ने उसे घर में पड़े देखकर एक दिन कह ही दिया, "यहीं लेटे-लेटे अंडे सेते रहोगे या कुछ कमाओगे भी।"

(6) **अंगूठा दिखाना**–(इन्कार करना)

आज हम हरीश के घर 10 रु. माँगने गए, उसने अंगूठा दिखा दिया।

(7) **अंधे की लकड़ी**–(एक मात्र सहारा)

राकेश अपने माँ-बाप के लिए अंधे की लकड़ी के समान है।

(8) **अंधे के हाथ बटेर लगना**–(अनायास ही मिलना)

राजेश हाईस्कूल परीक्षा में प्रथम आया, उसके लिए तो अंधे के हाथ बटेर लग गयी।

(9) **अन्न-जल उठना**–(प्रस्थान करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाना)

रिटायर होने पर प्रोफेसर साहब ने कहा, "लगता है बच्चों, अब तो यहाँ से हमारा अन्न-जल उठ ही गया है; हमें अपने गाँव जाना पड़ेगा।"

(10) **अक्ल के अंधे**–(मूर्ख, बुद्धिहीन)

"सुधीर साइंस साइड के विषयों में अच्छा चल रहा था, मगर उस अक्ल के अंधे ने इतनी अच्छी साइड क्यों बदल दी?" सुधीर के एक मित्र ने उसके बड़े भाई से पूछा।

(11) **अक्ल पर पत्थर पड़ना**–(कुछ समझ में न आना)

मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गए हैं, कुछ समझ में नही आता कि क्या करूँ।

(12) **अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना**–(मूर्खतापूर्ण कार्य करना)

तुम हमेशा अक्ल के पीछे लट्ठ लिये क्यों फिरते हो, कुछ समझ-बूझकर काम किया करो।

नोट

(13) **अपनी खिचड़ी अलग पकाना**–(अलग-अलग रहना, किसी की न मानना)

सुनीता की पड़ोसनों ने उसको अपने पास न बैठता देखकर कहा, "सुनीता तो अपनी खिचड़ी अलग पकाती है, यह चार औरतों में नहीं बैठती।"

(14) **अपना उल्लू सीधा करना**–(स्वार्थ सिद्ध करना)

आजकल के नेतागण सिर्फ अपना उल्लू सीधा करते हैं।

(15) **अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना**–(आत्मप्रशंसा करना)

राजू अपने मुँह मियां मिट्ठू बनता रहता है।

(16) **अक्ल के घोड़े दौड़ाना**–(केवल कल्पनाएं करते रहना)

सफलता के लिए अक्ल के घोड़े दौड़ाने से नहीं परिश्रम से सफलता मिलती है।

(17) **अंधेरे घर का उजाला**–(इकलौता बेटा)

मयंक अंधेरे घर का उजाला है।

(18) **अपना सा मुँह लेकर रह जाना**–(लज्जित होना)

विजय परीक्षा में नकल करते पकड़े जाने पर अपना सा मुँह लेकर रह गया।

(19) **अरण्य रोदन**–(व्यर्थ प्रयास)

कंजूस व्यक्ति से धन की याचना करना अरण्य रोदन है।

(20) **अक्ल चरने जाना**–(बुद्धिमत्ता गायब हो जाना)

तुमने साठ साल के बूढ़े से 18 वर्ष की लड़की का विवाह कर दिया। लगता है तुम्हारी अक्ल चरने गई थी।

> *क्या आप जानते हैं* मुहावरा शब्द अपने-आप में स्वयं मुहावरा है, क्योंकि यह अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर असामान्य अर्थ प्रकट करता है।

(21) **अड़ियल टट्टू**–(जिद्दी)

आज के युग में अड़ियल टट्टू पीछे रह जाते हैं।

(22) **अंगारे उगलना**–(क्रोध में लाल-पीला होना)

अभिमन्यु की मृत्यु से आहत अर्जुन कौरवो पर अंगारे उगलने लगा।

(23) **अंगारो पर पैर रखना**–(स्वयं को खतरे में डालना)

व्यवस्था के खिलाफ लड़ना अंगारों पर पैर रखना है।

(24) **अंधे के आगे रोना**–(व्यर्थ प्रयत्न करना)

(25) **अंगूर खट्टे होना**–(अप्राप्त वस्तु की उपेक्षा करना)

अजय, "सिविल सेवकों को नेताओं की चापलूसी करनी पड़ती है" कहकर, अंगूर खट्टे वाली बात कर रहा है, क्योंकि वह परिश्रम के बावजूद नहीं चुना गया।

(26) **अंगूठी का नगीना**–(सजीला और सुंदर)

विनय घर की अंगूठी का नगीना है।

नोट

(27) **अल्लाह मियां की गाय**–(सरल प्रकृति वाला)

राजकुमार तो अल्लाह मियां की गाय है।

(28) **पेट में बल पड़ना**–(हँसते-हँसते पेट में बल पड़ना)

फिल्म में जानी वॉकर ने इतना हंसाया कि अंतड़ियों में बल पड़ गए।

(29) **अंधा बनाना**–(मूर्ख बनाकर धोखा देना)

अपने गुरु को अंधा बनाना सरल नहीं है, इसलिए मुझसे ऐसी बात मत करो।

(30) **अंग लगाना**–(आलिंगन करना)

प्रेमिका को बहुत समय पश्चात् देखकर रवि ने उसे अंग लगा लिया।

(31) **अंगारे बरसना**–(कड़ी धूप होना)

जून के महीने में अंगारे बरस रहे थे और रिक्शा वाला पसीने से लथपथ था।

(32) **अंटी करना**–(फटकार लगाना)

अध्यापिका ने शरारत करने पर छात्र को अंटी किया।

(33) **अक्ल खर्च करना**–(समझ को काम में लाना)

इस समस्या को हल करने में थोड़ा अक्ल खर्च करनी पड़ेगी।

(34) **अलाली चढ़ना**–(सुरत्ती आना)

हराम का माल खाकर उस पर अलाली चढ़ गई है।

(35) **अड्डे पर चहकना**–(अपने घर पर रोब दिखाना)

अड्डे पर चहकते फिरते हो बाहर निकलो तो तुम्हें देखा जाय।

(36) **अंधाधुंध लुटाना**–(बहुत अपव्यय करना)

उद्योगपतियों और बड़े व्यापारियों की बीवियां अंधाधुंध लुटाती हैं।

(37) **अपनी खाल में मस्त रहना**–(अपनी दशा से संतुष्ट रहना)

संजय 4000 रुपये कमाकर अपनी खाल में मस्त रहता है।

(38) **अन्न न लगना**–(खाकर-पीकर भी मोटा न होना)

अभय अच्छे से अच्छा खाता है, लेकिन उसे अन्न नहीं लगता।

(39) **अटका बनिया देय उधार**–(स्वार्थी और मज़बूर व्यक्ति अनचाहा कार्य भी करता है।)

कारखाने में श्रमिकों की हड़ताल होने से कारखाना मालिक अकुशल श्रमिकों को भी दुगनी तिगुनी मजूदरी दे रहा है। कहावत सही है–अटका बनिया देय उधार।

(40) **अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है**–(अपने घर में, क्षेत्र में सभी जोर बताते हैं।)

यहाँ क्या अकड़ दिखाते हो अपनी गली में तो कुत्ता भी शेर होता है।

(41) **अपना सोना खोटा तो परखैया का क्या दोष**–(हममें ही कमजोरी हो तो बताने वालों का क्या दोष)

लड़का बेरोज़गार है, सारा दिन आवागर्दी करता है; लोग ताना न मारें तो क्या करें। जब अपना सोना खोटा तो परखैया का क्या दोष।

(42) **अधर में लटकना या झूलना**–(दुविधा में पड़ा रह जाना)

कल्याण सिंह भाजपा में पुनः शामिल होंगे यह फैसला बहुत दिन तक अधर में लटका रहा।

नोट

(43) **अढ़ाई दिन की बादशाहत**–(थोड़े दिन की शान शौकत)

शत्रुघ्न सिन्हा मंत्री पद से हटा दिये गये, अढ़ाई दिन की बादशाहत भी, समाप्त हो गई।

(44) **अठखेलियाँ सूझना**–(हँसी दिल्लगी करना)

मेरे चोट लगी हुई है, उसमें दर्द हो रहा है और तुम्हें अठखेलियाँ सूझ रही हैं।

(45) **अंग न समाना**–(अत्यन्त प्रसन्न होना)

सिविल सेवा में चयन से अनुराग के अंग न समा रहे हैं।

(46) **अंगूठे पर मारना**–(परवाह न करना)

तुम अजीब व्यक्ति हो, सभी की सलाह को अंगूठे पर मार देते हो।

(47) **अंटा गुड़-गुड़ होना**–(बेखबर सोना)

मैच से लौटकर सारिका बैड पर अंटा गुड़-गुड़ हो गई।

(48) **अंटी मारना**–(कम तौलना)

बहुत से पंसारी अंटी मारने से बाज नहीं आते।

(49) **अंग टूटना**–(थकावट से शरीर में दर्द होना)

दिन भर काम करा अब तो अंग टूट रहे हैं।

(50) **अंधेर नगरी**–(जहाँ धांधली हो)

पूँजीवादी व्यवस्था 'अंधेर नगरी चौपट राजा' बनकर रह गई है।

(51) **अंकुश न मानना**–(न डरना)

युवा पीढ़ी किसी का अंकुश मानने को तैयार नहीं है।

(52) **अन्न का मन करना**–(बनी चीज को बिगाड़ देना)

अभी-अभी हुए प्लास्टर पर तुमने पानी डालकर अन्न का मन कर दिया।

(53) **अन्न-जल बदा होना**–(कहीं का जाना और रहना अनिवार्य हो जाना)

हमारा अन्न-जल तो मेरठ में बदा है।

(54) **अधर काटना**–(बेबसी का भाव प्रकट करना)

पुलिस द्वारा बेटे की पिटाई करते देख पिता ने अपने अधर काट लिये।

(55) **अपनी हाँकना**–(आत्म श्लाघा करना)

विवेक तुम हमारी भी सुनोगे या अपनी ही हाँकते रहोगे।

(56) **अर्श से फर्श तक**–(आकाश से भूमि तक)

अमेरिका ने साम्यवादी देशो को नीचा दिखाने के लिए अर्श से फर्श तक का जोर लगा रखा है।

(57) **अलबी-तलबी धरी रह जाना**–(निष्फल कोप होना)

बहुत ज्यादा परेशान करोगी तो तुम्हारे घर शिकायत कर दूँगा। सारी अलबी तलबी धरी रह जायेगी।

(58) **अस्ति-नास्ति में पड़ना**–(दुविधा में पड़ना)

दो लड़कियों द्वारा पसन्द किये जाने पर वह अस्ति-नास्ति में पड़ा हुआ है और कुछ निश्चय नहीं कर पा रहा है।

नोट

टास्क हिन्दी के कुछ प्रचलित मुहावरे उनके अर्थ तथा प्रयोग के बारे में लिखिए।

(59) **अंदर होना–**(जेल में बंद होना)

मायावती के राज में शहर के अधिकांश गुण्डे अंदर हो गये।

(60) **अरमान निकालना–**(इच्छाएं पूरी करना)

बेरोज़गार लोग नौकरी मिलने पर अरमान निकालने की सोचते हैं।

(61) **आग में घी डालना–**(और भड़काना)

बहुत से लोग सुलह सफाई करने के बजाय आग में घी डालने में प्रवीण होते हैं।

(62) **आग पर पानी डालना–**(झगड़ा मिटाना)

भारत व पाक आपसी समझबूझ से आग पर पानी डाल रहे हैं।

(63) **आग-पानी या आग और फूस का बैर होना–**(स्वाभाविक शत्रुता होना)

भाजपा और साम्यवादी पार्टी में आग-पानी या आग और फूस का बैर है।

(64) **आँख लगना–**(झपकी आना)

रात एक बजे तक कार्य किया, फिर आँख लग गई।

(65) **आँखों से गिरना–**(आदर भाव घट जाना)

जनता की निगाहों से अधिकांश नेता गिर गये हैं।

(66) **आँखों पर चर्बी चढ़ना–**(अहंकार से ध्यान तक न देना)

पैसे वाले हो गए हो, अब क्यों पहचानोगे, आँखों पर चर्बी चढ़ गई है ना।

(67) **आँखें नीची होना–**(लज्जित होना)

बच्चों की करतूतों से मां-बाप की आँखे नीची हो गई।

(68) **आँखें मूंदना–**(मर जाना)

आजकल तो बाप के आँखें मूंदते ही बेटे जायदाद का बँटवारा कर लेते हैं।

(69) **आँखों का पानी ढलना–**(निर्लज्ज होना)

अब तो तुम किसी की नहीं सुनते, लगता है, तुम्हारी आँखों का पानी ढल गया है।

(70) **आँख का कांटा–**(बुरा होना)

मनोज मुझे अपनी आँख का कांटा समझता है, जबकि मैंने कभी उसका बुरा नहीं किया।

(71) **आँख में खटकना–**(बुरा लगना)

स्पष्टवादी व्यक्ति अधिकांश लोगों की आँखों में खटकता है।

(72) **आँख का उजाला–**(अति प्रिय व्यक्ति)

राज अपने माता-पिता की आँखों का उजाला है।

(73) **आँख मारना–**(इशारा करना)

आजकल तो लड़कियाँ भी लड़कों को आँख मार देती हैं।

(74) आँखों पर परदा पड़ना–(सोच-समझ खत्म हो जाना)

(शर्मा जी ने सच्चाई बताकर, मेरी आँखों से परदा हटा दिया।

(75) आँखें बिछाना–(प्रतीक्षा करना)

रामचन्द्र जी की अयोध्या वापसी पर अयोध्यावासियों ने आँखें बिछा दीं।

(76) आँखों में धूल डालना–(धोखा देना)

सुभाषचन्द्र बोस अंग्रेजों की आँखों में धूल डालकर, अपने आवास से निकलकर विदेश पहुँच गए।

(77) आँख में घर करना–(हृदय में बसना)

विभा की छवि राज की आँखों में घर कर गयी।

(78) आँख लगाना–(चौकस रहना, निगाह रखना)

चोरी की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए यात्रा में सामान पर आँख लगाये रखनी चाहिए।

(79) आँखें ठंडी करना–(प्रिय वस्तु को देखकर सुख प्राप्त करना)

पोते को वर्षों बाद देखकर बाबा की आँखें ठंडी हो गई।

(80) आँखें फाड़कर देखना–(आश्चर्य से देखना)

ऐसे आँखें फाड़कर क्या देख रही हो, पहली बार मिली हो क्या?

(81) आँखें चार करना–(आमना-सामना करना)

आजकल आँखें चार करने में लड़कियाँ पीछे नहीं हैं।

(82) आँखें फेरना–(उपेक्षा करना)

जैसे ही मेरी उच्च पद प्राप्त करने की सम्भावनाएं क्षीण हुई, सब ने मुझसे आँखें फेर लीं।

(83) आँख भरकर देखना–(इच्छा भरकर देखना)

जी चाहता है तुम्हें आँख भरकर देख लूँ, फिर न जाने कब मिलें।

(84) आँख खिल उठना–(प्रसन्न हो जाना)

प्रेमी को बहुत दिनों बाद देखकर उसकी आँखें खिल उठीं।

(85) आँख चुराना–(कतराना)

जब से विजय ने अजय से उधार लिया है, वह आँख चुराने लगा है।

(86) आँख का काजल चुराना–(सामने से देखते-देखते उड़ा देना)

विवेक के देखते ही देखते उसका सामान गायब हो गया जैसे किसी ने उसकी आँख का काजल चुरा लिया हो।

(87) आँख निकलना–(विस्मय को प्राप्त होना)

अपने खेत में छिपा खजाना देखकर गोधन की आँख निकल आयी।

(88) आँखें तरेरना–(क्रोध से देखना)

पैसे न हों तो पत्नी भी आँखें तरेरती है।

(89) आटा गीला होना–(विपत्ति में पड़ना)

सुबोध को एक के पश्चात् दूसरी मुसीबत घेर लेती है, लगता है उसका आटा गीला हो गया।

नोट

(90) **आँचल में बाँधना**–(ध्यान में रखना)

पति-पत्नी को एक दूसरे पर विश्वास करना चाहिए, यह बात आँचल में बाँध लेनी चाहिए।

(91) **आकाश में उड़ाना**–(कल्पना क्षेत्र में घूमना)

बिना धन के कोई व्यापार करना आकाश में उड़ने के समान है।

(92) **आकाश-पाताल एक करना**–(बहुत प्रयास करना)

मैं व्यवस्था को बदलने के लिए आकाश पाताल एक कर दूँगा।

(93) **आकाश कुसुम होना**–(दुर्लभ होना)

ऐश्वर्य राय जैसी खूबसूरती तो आकाश कुसुम होकर रह गई है।

(94) **आसमान सिर पर उठाना**–(उपद्रव मचाना)

शिक्षक की अनुपस्थिति में छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

(95) **आगा पीछा करना**–(हिचकिचाना)

सेठ जी किसी शुभ कार्य को चन्दा देने के लिए आगा पीछा कर रहे हो।

(96) **आकाश से बातें करना**–(काफी ऊँचा होना)

दिल्ली में आकाश से बातें करती बहुत सी इमारतें हैं।

(97) **आवाज उठाना**–(विरोध में कहना)

वर्तमान व्यवस्था के विरोध में मीडिया में आवाज उठने लगी है।

(98) **आसमान से तारे तोड़ना**–(असम्भव काम करना)

प्रत्येक प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए आसमान से तारे तोड़ने की बात करता है।

(99) **आस्तीन का साँप**–(विश्वासघाती मित्र)

राज ने निर्भय की बहुत सहायता की लेकिन वह तो आस्तीन का सांप निकला।

(100) **आठ-आठ आंसू रोना**–(बहुत पश्चाताप करना)

प्रेमी को धोखा देकर पैसे वाले से विवाह करके शोभा आठ-आठ आँसू रोने लगी।

(101) **आसन डोलना**–(विचलित होना)

विश्वामित्र की तपस्या से इन्द्र का आसन डोल गया।

(102) **आग-पानी साथ रखना**–(असम्भव कार्य करना)

अहिंसा द्वारा भारत में क्रांति लाकर गांधीजी ने आग-पानी साथ रख दिया।

(103) **आधी जान सूखना**–(अत्यन्त भय लगना)

घर में चोरों को देखकर लालाजी की आधी जान सूख गयी।

(104) **आपे से बाहर होना**–(क्रोध से अपने वश में न रहना)

फिरोज खिलजी ने आपे से बाहर होकर फकीर को मरवा दिया।

(105) **आग लगाकर तमाशा देखना**–(लड़ाई कराकर प्रसन्न होना)

हमारे मुहल्ले के संजीव का कार्य तो आग लगाकर तमाशा देखना है।

नोट

(106) **आगे का पैर पीछे पड़ना**–(विपरीत गति या दशा में पड़ना)

भाजपा के दिन अभी अच्छे नहीं हैं, अब भी आगे का पैर पीछे पड़ रहा है।

(107) **आटे दाल की फिक्र होना**–(जीविका की चिन्ता होना)

पढ़ाई समाप्त होते ही तुम्हें आटे दाल की फिक्र होने लगी है।

(108) **आधा तीतर आधा बटेर**–(बेमेल चीजों का सम्मिश्रण)

सुधीर अपनी किताबों के साथ सिंगार का सामान बेचना चाहता है। अनिल ने उसे समझाया आधा तीतर आधा बटेर बेचने से बिक्री कम रहेगी।

(109) **आग लगने पर कुआँ खोदना**–(पहले से कोई उपाय न करना)

शर्मा जी ने मकान की दीवारें खड़ी करा लीं लेकिन जब लैन्टर डालने का नम्बर आया जो ऋण लेने की बात करने लगे। इस पर मिस्त्री झल्लाया-शर्मा जी आप तो आग लगने पर कुआँ खोदने वाली बात कर रहे हो।

(110) **आव देखा न ताव**–(बिना कारण)

शिक्षक ने आव देखा न ताव और छात्र को पीटना शुरू कर दिया।

(111) **आदमी करना**–(पति बनाना)

उस औरत का क्या उसने तो तीसरा आदमी कर लिया।

(112) **आँख मैली करना**–(दिखावे के लिए रोना, बुरी नजर से देखना)

अरुण ने अपने घनिष्ठ मित्र की मृत्यु पर भी केवल अपनी आँखें ही मैली की।

(113) **आँखों में धूल झोंकना**–(धोखा देना)

कुछ डकैत पुलिस की आँखों में धूल झोंककर मुठभेड़ से बचकर निकल गये।

(114) **आँखें दिखाना**–(डराने-धमकाने के लिए रोष भरी दृष्टि से देखना)

रामपाल ने अपने ढीठ बेटे को जब तक आँखें न दिखायीं तब तक उसने उनका कहना नहीं माना।

(115) **आँखों में खून उतरना**–(अत्यधिक क्रोधित होना)

पुत्री को अपने शत्रु के पुत्र के साथ घूमता देख, पिता की आँखों में खून उतर आया।

(116) **आग बबूला होना**–(क्रोधित होना)

कई बार मना करने पर भी जब दिनेश नहीं माना तो उसके चाचा जी उस पर आग बबूला हो उठे।

(117) **आसमान से गिरकर खजूर के पेड़ पर अटकना**–(उत्तम स्थान को त्यागकर ऐसे स्थान पर जाना जो अपेक्षाकृत अधिक कष्टप्रद हो)

बैंक की नौकरी छोड़ने के बाद किराना स्टोर करने पर दयाशंकर को ऐसा लगा कि वह आसमान से गिरकर खजूर के पेड़ पर अटक गया है।

(118) **आप मरे जग प्रलय**–(मृत्यु उपरान्त मनुष्य का सब कुछ छूट जाना)

रामदीन मृत्यु-शैया पर पड़ा अपने बेटों के कारोबार के बारे में रह-रह पूछ रहा था। उसके पास एकत्र मित्रों में से एक ने दूसरे से कहा, "आप मरे जग प्रलय, रामदीन को बेटों के कारोबार की चिंता अब भी सता रही है।"

नोट

(119) **आसमान टूटना**–(विपत्ति आना)

भाई और भतीजे की हत्या का समाचार सुनकर, मुख्यमंत्री जी पर आसमान टूट पड़ा।

(120) **आँखों का तारा**–(अत्यन्त प्रिय)

इकलौता बेटा अपने माँ-बाप की आँखों का तारा होता है।

(121) **आटे दाल का भाव मालूम होना**–(वास्तविकता का पता चलना)

अभी माँ-बाप की कमाई पर मौज कर लो, खुद कमाओगे तो आटे दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

(122) **आड़े हाथों लेना**–(खरी-खोटी सुनाना)

वीरेन्द्र ने सुरेश को आड़े हाथों लिया।

(123) **इधर-उधर की हाँकना**–(अप्रासंगिक बातें करना)

आजकल कुछ नवयुवक इधर-उधर की हाँकते रहते हैं।

(124) **इज्जत उतारना**–(सम्मान को ठेस पहुँचाना)

दीनानाथ से बीच बाज़ार में जब श्यामलाल ने ऊँचे स्वर में कर्ज वसूली की बात की तो दीनानाथ ने श्यामलाल से कहा, "सरेआम इज्जत मत उतारो, आज शाम घर आकर अपने रुपये ले जाना।"

(125) **इतिश्री करना**–(कर्त्तव्य पूरा करना/सुखद अंत होना)

अपनी दोनों कन्याओं की शादी करके रामसिंह ने अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली।

(126) **इल्लत पालना**–(बुरी विशेषता, खर्चीली आदत पालना)

बबूल ने अपने शराबी पिता से कहा, "पिताजी, कल मैं गुरुजी के प्रवचन सुनने गया था, वे बता रहे थे कि मनुष्य को शराब की इल्लत कभी नहीं पालनी चाहिए।"

(127) **इशारों पर नचाना**–(किसी की इच्छाओं का तुरन्त पालन करना)

बहुत से व्यक्ति अपनी पत्नी के इशारों पर नाचते हैं

(128) **इधर की उधर करना**–(चुगली करके भड़काना)

मनोज की इधर की उधर करने की आदत है, इसलिए उस पर विश्वास मत करना।

(129) **इन्द्र की परी**–(अत्यन्त सुन्दर स्त्री)

राजेन्द्र की पत्नी तो इन्द्र की परी लगती है।

(130) **इधर की उधर होना**–(प्रकृति के नियमों में परिवर्तन हो जाना)

चाहे दुनिया इधर की उधर हो जाये हमारा प्यार मिट नहीं सकता।

(131) **इन तिलों में तेल नहीं**–(किसी भी लाभ की आशा न करना)

कपिल ने कारखाने को देख सोच लिया इन तिलों में तेल नहीं और बैंक से ऋण लेकर बहन का ब्याह किया।

नोट्स हिन्दी और उर्दू में मुहावरा पारिभाषिक शब्द है, जो ऐसे वाक्यांश का बोधक बन गया है, जिससे किसी सामान्य अर्थ की प्रतीति विलक्षण एवं प्रभावशाली ढंग से होती है।

नोट

(132) **इधर-उधर की उड़ाना**—(व्यर्थ की बातें करना)

रीना में इधर-उधर की उड़ाने की बुरी आदत है।

(133) **ईंट से ईंट बजाना**—(नष्ट-भ्रष्ट कर देना)

असामाजिक तत्व रात दिन ईंट से ईंट बजाने की सोचा करते हैं।

(134) **ईंट का जवाब पत्थर से देना**—(दुष्ट के साथ दुष्टता करना)

दुश्मन को सदैव ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए।

(135) **ईद का चाँद होना**—(बहुत दिनों बाद दिखाई देना)

रमेश आप तो ईद का चाँद हो गए, एक वर्ष बाद दिखाई दिए।

(136) **ईंट-ईंट बिक जाना**—(पल्ले कुछ भी न रहना, कंगाल हो जाना)

"मम्मी, अमीरचन्द चाचाजी का व्यापार फेल हो गया और उनकी ईंट-ईंट बिक गयी।" छोटू ने अपनी मम्मी को बताया।

(137) **ईमान देना/बेचना**—(झूठ बोलना अथवा अपने धर्म, सिद्धान्त आदि के विरुद्ध आचरण करना)

महँगाई के दौर में लोग अपना ईमान बेचने से भी नहीं डर रहे हैं।

(138) **उंगली उठाना**—(इशारा करना, आलोचना करना)

सच्चे और ईमानदार व्यक्ति पर उंगली उठाना व्यर्थ है।

(139) **उंगली पर नचाना**—(वश में रखना)

कुछ प्रेमिकाएँ अपने प्रमियों को उंगली पर नचाया करती हैं।

(140) **उड़ती चिड़िया पहचानना**—(दूरदर्शी होना)

हमसे चाल मत चलो, हम भी उड़ती चिड़िया पहचानते हैं।

(141) **उंगलियों पर गिनने योग्य**—(संख्या में न्यूनतम, बहुत थोड़े)

भारत की सेना में उस समय उंगलियों पर गिनने योग्य ही सैनिक थे, जब उन्होंने पाकिस्तानी सेना के छक्के छुड़ा दिये थे।

(142) **उजाला करना**—(कुल का नाम रोशन करना)

आई.ए.एस परीक्षा में उत्तीर्ण होकर ब्रजलाल ने अपने कुल में उजाला कर दिया।

(143) **उल्लू बोलना**—(उजाड़ होना)

पुराने शानदार महलों के खंडहरों में आज उल्लू बोलते हैं।

(144) **उल्टी गंगा बहाना**—(नियम विरुद्ध कार्य करना)

भारत कला और दस्तकारी का सामान निर्यात करता है, फिर भी कुछ लोग विदेशों से कला व दस्कारी का सामान मंगवाकर उल्टी गंगा बहाते हैं।

(145) **उल्टी खोपड़ी होना**—(ऐसा व्यक्ति जो उचित ढंग के विपरीत आचरण करता हो)

"चौधरी साहब आपका छोटा बेटा बिल्कुल उल्टी खोपड़ी का है, आज फिर वह गाँव में उपद्रव मचा आया।" वृद्ध ने चौधरी को बताया।

(146) **उल्टे छुरे से मूंडना**—(किसी को मूर्ख बनाकर उससे धन ऐंठना या अपना काम निकालना)

यह पुरोहित यजमानों को उल्टे छुरे से मूंडने में सिद्धहस्त है।

नोट

(147) **उँगली पकड़ते ही पहुँचा पकड़ना**–(अल्प सहारा पाकर सम्पूर्ण की प्राप्ति हेतु उत्साहित होना)

रामचन्द्र ने नौकर को एक कमरा मुक्त में रहने के लिए दे दिया; थोड़े समय बाद वह परिवार को साथ ले आया और चार कमरों को देने का आग्रह करने लगा इस पर रामचन्द्र ने कहा तुम तो उंगली पकड़ते ही पहुँचा पकड़ने की बात कर रहे हो।

(148) **उल्टे बाँस बरेली को**–(विपरीत कार्य करना)

किशोर गांव जाते वक्त शहर से शुद्ध देसी घी लेकर गाँव पहुँचा तो पिताजी ने कहा भई वाह तुम तो उल्टे बाँस बरेली को ले आए।

(149) **उन्नीस बीस होना**–(दो वस्तुओं में थोड़ा बहुत अन्तर होना)

दुकानदार ने बताया कि दोनों कपड़ों में उन्नीस बीस का अन्तर है।

(150) **उल्टी पट्टी पढ़ाना**–(भुलावा देना)

तुम मैच खेल रहे थे और मुझे उल्टी पट्टी पढ़ा रहे हो कि स्कूल बन्द था और मैं स्कूल से दोस्त के घर चला गया था।

(151) **उड़न छू होना**–(गायब हो जाना)

रीटा अभी तो यहीं थी, मिनटों में कहाँ उड़न छू हो गयी।

(152) **उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई**–(सम्मान नष्ट हो जाने के बाद फिर किसकी चिन्ता करें।)

छोटे लाल एक बार जेल क्या चला गया अब तो धड़ल्ले से बदमाशी करने लगा है। सच है उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई।

(153) **उबल पड़ना**–(एकदम गुस्सा हो जाना)

सक्सेना साहब तो थोड़ी-सी बात पर ही उबल पड़ते हैं।

(154) **उल्टी माला फेरना**–(अहित सोचना)

अपने दोस्त के नाम की उल्टी माला फेरना बुरी बात है।

(155) **उखाड़ पछाड़ करना**–(त्रुटियाँ दिखाकर कटूक्तियाँ करना)

उखाड़ पछाड़ करने में ही तुम निपुण हो लेकिन त्रुटियाँ दूर करना तुम्हारे बस की बात नहीं है।

(156) **उम्र का पैमाना भर जाना**–(जीवन का अन्त नजदीक आना)

वह अब बूढ़ा हो गया है, उसकी उम्र का पैमाना भर गया।

(157) **उरद के आटे की तरह ऐंठना**–(क्रोध करना)

आप बहल पर उरद के आटे की तरह ऐंठ रहे हो, उसका कोई दोष नहीं है।

(158) **ऊँचे नीचे पैर पड़ना**–(बुरे काम में फँसना)

अनुज में बहुत-सी गन्दी आदतें आ गई हैं, उसके पैर ऊँचे-नीचे पड़ने लगे हैं।

(159) **ऊँट की चोरी झुके-झुके**–(गुप्त न रह सकने वाले कार्य को गुप्त ढंग से करने का प्रयास करना)

लाला जी लड़की की शादी रिश्तेदारों व मुहल्ले वालों से बचकर करना चाहते है ऊँट की चोरी और झुके-झुके।

(160) **ऊँट का सुई की नोंक से निकलना**–(असम्भव होना)

पूँजीवादी व्यवस्था में आम जनता का जीवन सुधरना ऊँट का सुई की नोंक से निकलना है।

नोट

(161) **एक ही लकड़ी से हाँकना**–(अच्छे-बुरे की पहचान न करना)
कुछ अधिकारी सभी कर्मचारियों को एक ही लकड़ी से हाँकते हैं।

(162) **एक ही थैली के चट्टे बट्टे**–(सभी का एक जैसा होना)
आजकल के सभी नेतागण एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं।

(163) **एड़ियाँ घिसना/रगड़ना**–(अपना काम निकालने या बनाने के लिए बार-बार दौड़-धूप करना)
इस दौर में अच्छे पढ़े-लिखे लोगों को भी नौकरी ढूँढने के लिए एड़ियाँ घिसनी पड़ती हैं।

(164) **एक म्यान में दो तलवारें**–(एक स्थान पर दो का होना)
रमेश ने दाढ़ी बनाने के लिए ब्लेड़ खरीदा। पॉकेट खोलकर देखा तो उसमें दो ब्लेड़ थे, वह अचानक कह पड़ा, वाह! एक म्यान में दो तलवारें।

(165) **एक ढेले से दो शिकार**–(एक कार्य से कई कार्यों की पूर्ति)
पुलिस दल ने बदमाशों को मारकर एक ढेले से दो शिकार किये। उन्हें पदोन्नति मिली और पुरस्कार भी मिला।

(166) **एक की चार लगाना**–(छोटी बातों को बढ़ाकर कहना)
बहुत सी औरतों की आदत एक की चार लगाना होती है।

(167) **एक आँख से देखना**–(सबको बराबर समझना)
राज्य का कर्त्तव्य है कि वह सभी नागरिकों को एक आँख से देखे।

(168) **एड़ी-चोटी का पसीना एक करना**–(घोर परिश्रम करना)
रिक्शे वाले एड़ी-चोटी पसीना एक कर रोजी कमाते हैं।

(169) **एक-एक नस पहचानना**–(सब कुछ समझना)
मालिक और नौकर एक दूसरे की एक-एक नस पहचानते हैं।

(170) **एक घाट पर पानी पीना**–(एकता और सहनशीलता होना)
राजा कृष्णदेवराय के समय शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे।

(171) **एक तो करेला और दूसरा नीम चढ़ा**–(एक साथ दो-दो दोष प्रतिकूलतायें)
भारतीयों में एक तो जातीय कट्टरता है दूसरे अंधविश्वासी हैं, एक तो करेला और दूसरा नीम चढ़ा, अतः व्यवस्था में परिवर्तन बहुत कठिन है।

(172) **एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है**–(एक बदनाम व्यक्ति अपने साथ के सभी लोगों को बदनाम करवा देता है)
मुहल्ले में जब से वो वेश्या आयी है, मुहल्ला बदनाम हो गया। सच है एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

(173) **एक पंथ दो काज**–(एक प्रयत्न से दो काम हो जाना)
आगरा में मेरी परीक्षा है इस बहाने ताजमहल भी देख लेंगे। चलो मेरे तो एक पथं दो काज हो जायेंगे।

(174) **एक और एक ग्यारह होते है**–(संघ में बड़ी शक्ति है)
भाइयों को आपस में लड़ना नहीं चाहिए क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।

नोट

(175) **ऐरा-गैरा नत्थू खेरा**–(बेकार या फालतू आदमी)

"हमने एक विशेष सभा का आयोजन किया है, जिसमें ऐरा-गैरा नत्थू खेरा को आमन्त्रित नहीं किया गया है। कृपया आप सभा में उपस्थित होकर हमारा मनोबल बढ़ाइये, धन्यवाद।" सभा के सदस्यों में से एक ने जिलाधिकारी को आमन्त्रित करते हुए कहा।

(176) **ऐसी-तैसी करना**–(बुरी दुर्दशा करना)

"भीमा मुझे बचा लो, वर्ना वह मेरी ऐसी-तैसी कर देगा।" लल्लूराम ने भीमा के पास जाकर गुहार की।

(177) **ओखली में सिर देना**–(जानबूझकर अपने को जोखिम में डालना)

"अपने से चार गुना ताकतवर व्यक्ति से उलझने का मतलब है, ओखली में सिर देना, समझे प्यारे?" राजू ने रामू को समझाते हुए कहा।

(178) **ओस पड़ जाना**–(कुम्हलाना, लज्जित होना)

आस्ट्रेलिया से एक दिवसीय श्रृंखला बुरी तरह हारने से भारतीय टीम पर ओस पड़ गई।

(179) **ओछे की प्रीति बालू की भीति**–(दुष्ट व्यक्तियों की मित्रता क्षणिक होती है)

कृष्ण के आड़े वक्त में सोनू ने उसकी मदद नहीं की बल्कि उसे हानि पहुँचाने का प्रयास किया। जबकि दोनों में मित्रता थी। सच है ओछे की प्रीति बालू की भीति।

(180) **ओस चाटे प्यास नहीं बुझती**–(बहुत कम वस्तु से आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती)

शिवकुमार ने सेठ जी से लड़की के ब्याह हेतु 50 हजार रुपये मांगे लेकिन सेठ जी ने दो हजार रुपये देने की बात कही; इस पर शिवकुमार बोला, "सेठ जी, ओस चाटे प्यास नहीं बुझती।"

(181) **औने-पौने करना**–(थोड़ा बहुत जितना लाभ हो बेच देना)

भाजपा सरकार ने औने पौने में सार्वजनिक सम्पत्तियाँ बेच दीं।

(182) **औंधे मुँह गिरना**–(धोखा खाना, नीचे देखना)

लेखक की कमी से प्रकाशक को औंधे मुँह गिरना पड़ा।

(183) **औंधी खोपड़ी**–(मूर्खता)

वह तो औंधी खोपड़ी है उसकी बात का क्या विश्वास।

(184) **ओढ़नी उतारना**–(कुल की मर्यादा छोड़ देना)

अलाउद्दीन ने घर की बहू को नाटकों में अभिनय करने की बात सुनकर बेटे से कहा–"तुम्हारी बीवी ने तो ओढ़नी उतार दी।

(185) **औकात पहचानना**–(यह जानता कि किसमें कितनी सामर्थ्य है)

"हमारे अधिकारी तुम जैसे नेताओं की औकात पहचानते हैं। चलिए, बाहर निकलिए।" चपरासी ने छोटे नेताओं को ऑफिस से भगाते हुए कहा।

(186) **और का और हो जाना**–(पहले जैसा ना रहना, बिल्कुल बदल जाना)

विमाता के घर आते ही अनिल के पिताजी और अकेले हो गये।

(187) **कंधा देना**–(अर्थी को कंधे पर उठाकर अंतिम संस्कार के लिये श्मशान ले जाना)

नगर के मेयर की अर्थी को सभी नागरिकों ने कंधा दिया।

(188) **कंचन बरसना**–(अधिक आमदनी होना)

आजकल मुनाफाखोरों के यहाँ कँचन बरस रहा है।

(189) कच्चा चिट्ठा खोलना–(वास्तविक किन्तु गुप्त विवरण बताना) **नोट**

"थोड़ी-सी बात बिगड़ने पर ही कल्लू ने अपने पड़ोसी मोहन का सारा कच्चा चिट्ठा खोल दिया, यह उसकी अच्छी बात नहीं है।" चौपाल पर मौजूद कुछ लोगों में से एक ने कहा।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. अक्ल के अंधे से क्या तात्पर्य है?
   (*a*) मूर्ख (*b*) बुद्धिमान
   (*c*) चतुर (*d*) पागल
5. अड़ियल टट्टू का क्या अर्थ है?
   (*a*) जिद् न करने वाला (*b*) एक जगह खड़े हो जाना
   (*c*) हिलना-जुलना (*d*) जिद्दी होना
6. अंटी मारने से क्या तात्पर्य है?
   (*a*) अधिक तोलना (*b*) सामान खराब देना
   (*c*) कम तौलना (*d*) या इनमें से कोई नहीं

(190) कच्चा खा/चबा जाना–(क्रोध में भरकर सहसा किसी व्यक्ति का अस्तिव मिटा देना)

जब से दोनों मित्र अशोक और नरेश की लड़ाई हुई है, तब से दोनों एक-दूसरे को ऐसे देखते हैं, जैसे कच्चा चबा जाना चाहते हों।

(191) कब्र में पाँव लटकना–(वृद्ध या जर्जर हो जाना, मरने के करीब होना)

सुनीता के ससुर की आयु काफी हो गयी है। अब तो उनके कब्र में पाँव लटक गये हैं।" सोनी ने अफसोस जाहिर करते हुए कहा।

(192) कलेजे पर पत्थर रखना–(घोर दुःख या शोक को कठोर ह्रदय के साथ सहन करना)

गरीब और कमजोर श्यामा को गाँव का चौधरी सबके सामने खरी-खोटी सुना गया, जिसको उसने कलेजे पर पत्थर रखकर सुना।

(193) कढ़ी का सा उबाल–(मामूली जोश)

उत्सवों पर उत्साह कढ़ी का सा उबाल बनकर रह गया है।

(194) कलम का धनी–(अच्छा लेखक)

प्रेमचन्द कलम के धनी थे।

(195) कलेजे का टुकड़ा–(बहुत प्यारा बेटा)

सार्थक मेरे कलेजे का टुकड़ा है।

(196) कलेजा धक से रह जाना–(डर जाना)

जंगल से गुजरते वक्त शेर देखकर मेरा कलेजा धक से रह गया।

(197) कलेजे पर साँप लोटना–(ईर्ष्या से कुढ़ना)

अरिहन्त की उन्नति देखकर बहुत से लोगों के कलेजे पर साँप लोटता है।

नोट

(198) **कलेजा ठण्डा होना**–(मन को शांति मिलना)
आशीष इन्जीनियर बन गया, माँ का कलेजा ठण्डा हो गया।

(199) **कखरी लरका गाँव गोहार**–(वस्तु के पास होने पर दूर-दूर उसकी तलाश करना)
अच्छी संगीत पार्टी के लिए शर्मा जी दिल्ली तक गये लेकिन मेरठ में ही कम पैसों में अच्छी संगीत पार्टी मिल गई तब मित्र बोले कि कखरी लरका गाँव गोहार।

(200) **कली खिलना**–(खुश होना)
विभा को देख नितिन के दिल की कली खिल जाती है।

(201) **कलेजा मुँह को आना**–(दु:ख होना)
घायल की चीत्कार सुनकर कलेजा मुँह को आता है।

(202) **कंधे से कंधा छिलना**–(भारी भीड़ होना)
दशहरा के त्योहार पर लगे मेले में कंधे से कंधा छिलता है।

(203) **कान में तेल डालना**–(किसी की बात पर ध्यान न देना)
राजेश से किसी बात को कहने का क्या लाभ वह तो कान में तेल डाले बैठा रहता है।

(204) **किए कराये पर पानी फेरना**–(अपने किसी अच्छे कार्य को अपनी ही गलती से खराब कर देना)
औरंगजेब ने मराठों से उलझकर अपने किए कराये पर पानी फेर दिया।

(205) **कान भरना**–(किसी की चुपचाप चुगली करना)
मंथरा ने कैकेई के कान भरे थे।

(206) **कान का कच्चा**–(हर किसी पर विश्वास कर लेना)
तुम तो कान के कच्चे हो।

(207) **कांटो पर लेटना**–(बेचैन होना)
जब तक बहू अपने घर से नहीं आयी श्याम कांटों पर लेटता रहा।

(208) **कांटा दूर होना**–(बाधा दूर होना)
राजीव के दूसरे प्रकाशन में जाने से बहुतों के रास्ते का कांटा दूर हो गया।

(209) **कोढ़ में खाज होना**–(एक दुख पर दूसरा दुख होना)
मंगली बड़ी मुश्किल से गुजर बसर कर रहा था। ऊपर से भंयकर रूप से बीमार हो गया। यह तो सचमुच कोढ़ में खाज होना ही है।

(210) **काटने दौड़ना**–(चिड़चिड़ाना)
विनीता बहुत कमजोर हो गई है। जरा-जरा सी बात पर काटने को दौड़ती है।

(211) **कान गरम करना**–(दंड देना)
शरारती बच्चों के तो कान गरम करने पड़ते हैं।

(212) **काम तमाम करना**–(मार डालना)
भीम ने दुर्योधन का काम तमाम कर दिया।

(213) **कीचड़ उछालना**–(निन्दा करना)
नेताओं का कार्य एक दूसरे पर कीचड़ उछालना रह गया है।

(214) **कोयले की दलाली में हाथ काले**–(बुरी संगति का परिणाम बुरा होता है)

वह जुआरियों के लिए बीड़ी सिगरेट ला देता है अतः एक दिन जब पुलिस ने उन्हें पकड़ा तो उसे भी हड़काया। सच है कोयले की दलाली में हाथ काले।

(215) **काला अक्षर भैंस बराबर**–(कुछ भी पढ़ना-लिखना न जानना)

राजेश से पत्र लिखवाने की कह रहे हो उसके लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर है।

(216) **कौआ चला हंस की चाल**–(किसी की नकल कर लेने से उसके समान नहीं हो सकते)

दूसरों की नकल करने से अच्छा हमें अपने रास्ते पर चलना चाहिए।

(217) **कानी के ब्याह को सौ जोखो**–(पग-पग पर बाधायें)

लोकेश के चुगली करने पर राधा का रिश्ता टूट गया, इस पर रामकली बोली, "बड़ी मुश्किल से रिश्ता हुआ था, सच कहावत है-कानी के ब्याह को सौ जोखों।"

(218) **कट जाना**–(शर्मिन्दा होना)

मेरी कड़वी बातें सुनकर वह मुझसे कट गया।

(219) **कदम उखड़ना**–(भाग खड़े होना)

कारगिल में बोफोर्स तोपों की मार से शत्रु के पैर उखड़ गये।

(220) **कान कतरना**–(मात करना)

राम चालाकी में बड़े-बड़ों के कान कतरता है।

(221) **काफूर होना**–(गायब हो जाना)

पेन किलर लेते ही मेरा दर्द काफूर हो गया।

(222) **काजल की कोठरी**–(कलंक लगने का स्थान)

मेरठ में कबाड़ी बाज़ार रेड लाइट एरिया काजल की कोठरी है, उधर जाने से बदनामी होने का डर लगा रहता है।

(223) **कूप मंडूक**–(सीमित ज्ञान)

झोलाछाप डॉक्टरों पर अधिक विश्वास मत करो, ये तो कूप मंडूक होते हैं।

(224) **किस्मत फूटना**–(बुरे दिन आना)

सीता का हरण करके तो रावण की किस्मत ही फूट गई।

(225) **कुत्ते की दुम**–(वैसे का वैसा)

वह तो कुत्ते की दुम है, कभी सीधा नहीं होगा।

(226) **कुएँ में ही भांग पड़ना**–(सभी लोगों की मति भ्रष्ट होना)

दंगों में तो लगता है, कुएं में ही भांग पड़ जाती है।

(227) **कौड़ी के मोल**–(अत्यंन्त सस्ता)

बिग बाज़ार में अत्यन्त सस्ता सामान मिलता है।

(228) **कान में डाल देना**–(सुना देना)

विनय ने लड़की के बाप के कान में डाल दिया कि वह मोटर साइकिल लेना चाहता है।

नोट

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. आँखें नीची होने का अर्थ गोरांवित होना होता है।
8. एक पंथ दो काज का अर्थ एक प्रयत्न से दो काम हो जाना।
9. कंचन बरसना मुहावरे का अर्थ है–अधिक आमदनी न होना।

14.2 सारांश (Summary)

- मुहावरा वह वाक्यांश है, जो अपने वाचिक अर्थ का बोध न कराकर, लाक्षणिक या व्यांग्यिक अर्थ का बोध करता है, और भाषा में सजीवता एंव अर्थ गौरव बढ़ाने में सहायक होता है। जैसे–'घी के चिराग जलाना' मुहावरे का अर्थ–'घी के दीपक जलाना' नहीं है बल्कि 'खुशी मनाना' है। इस प्रकार अधिकांश मुहावरों में लाक्षणिक अर्थ निकलता है। किन्हीं-किन्हीं मुहावरों में व्यांग्यिक अर्थ भी निकलता है।
- हिन्दी और उर्दू, दोनों के पास मुहावरों एवं कहावतों का अक्षय कोष है। जिस भाषा में इनका जितना अधिक प्रयोग होगा उसकी अभिव्यक्ति क्षमता उतनी ही प्रभावपूर्ण व रोचक होगी।

14.3 शब्दकोश (Keywords)

कहावत : कही हुई बात

आमदनी : धन कमाना, धन अर्जन करना

लालित्य : सुंदरता, खुबसूरती

14.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. मुहावरा और कहावत के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।
2. भाषा की समृद्धि और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता के विकास के लिए मुहावरों एवं कहावतों का उपयोग क्यों आवश्यक है?
3. हिन्दी और उर्दू के कुछ प्रचलित मुहावरे, उनके अर्थ तथा वाक्य प्रयोग लिखिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. मुहावरा	2. व्यावहारिक	3. भाषा
4. (*a*)	5. (*d*)	6. (*c*)
7. गलत	8. सही	9. गलत।

14.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–15: लोकोक्तियाँ: अर्थ एवं वाक्य निर्माण

विषय-वस्तु (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

15.1 लोकोक्तियाँ

15.1.1 लोकोक्तियाँ : 1 से 75 तक

15.1.2 लोकोक्तियाँ : 76 से 109 तक

15.2 सारांश (Summary)

15.3 शब्दकोश (Keywords)

15.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

15.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- लोकोक्तियों का अर्थ एवं वाक्य निर्माण जानने हेतु।
- लोकोक्ति प्रयोग का मुख्य उद्देश्य जानने में।
- लोकोक्ति और मुहावरे में अंतर जानने में।
- लोकोक्ति की किसी भाषा के उपयोग में महत्त्व को जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

बहुत-से लोग मुहावरे तथा लोकोक्ति में कोई अंतर ही नहीं समझते। लोकोक्ति लोक में प्रचलित उक्ति होती है जो भूतकाल का लोक-अनुभव लिए हुए होती है, जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता है। लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्य का अंश होता है। पूर्ण वाक्य होने के कारण लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र एवं अपने-आप में पूर्ण इकाई के रूप में होता है जबकि मुहावरा किसी वाक्य का अंश बनकर आता है। पूर्ण ईकाई होने के कारण लोकोक्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, जबकि मुहावरे में वाक्य के अनुसार परिवर्तन होता है।

नोट

15.1 लोकोक्तियाँ

15.1.1 लोकोक्तियाँ : 1 से 75 तक

(1) **अंधों में काना राजा**–मूर्खों के मध्य कुछ चतुर।

निरक्षरों के मध्य कुछ पढ़ा-लिखा आदमी अंधों में काना राजा के समान होता है।

(2) **अंधेर नगरी चौपट राजा**–अन्याय का बोलबाला।

अयोग्य अधिकारी होने पर सभी कामों में धांधली चलती है, ठीक ही कहा गया है अंधेर नगरी चौपट राजा।

(3) **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता**–अकेला व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता है।

शत्रुओं के बीच अकेले मत जाओ क्योंकि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता है।

(4) **अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग**–अपनी बात पर बल देना।

संगठन के अभाव में लोग अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग अलापते हैं।

(5) **अंधा बांटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों को दे**–स्वार्थी व्यक्ति पक्षपात करता है।

वर्तमान समय में नेतागण अंधा बांटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों को दे वाली उक्ति चरितार्थ करते हैं।

(6) **अंधी पीसे कुत्ता खाय**–जब कार्य कोई करे उसका फायदा व्यक्ति उठाये।

मज़दूर परिश्रम करता है लेकिन लाभ पूँजीपति कमाता है। सच है अंधी पीसे कुत्ता खाय।

(7) **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत**–अवसर निकल जाने के बाद पछताना व्यर्थ होता है।

साल भर तो पढ़ाई नहीं की, अब असफल होने पर रोते हो, इससे क्या लाभ? अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

(8) **अपनी करनी पार उतरनी**–अपने किये का फल भोगना।

जीवन में सफल होने के लिए स्वयं परिश्रम करो क्योंकि अपनी करनी पार उतरनी।

(9) **अधजल गगरी छलकत जाय**–कम ज्ञान, धन, सम्मान वाले व्यक्ति अधिक प्रदर्शन करते हैं।

जब कोई अल्पज्ञ अधिक बकवास करता है तब यह कहावत कही जाती है।

(10) **अक्ल बड़ी या भैंस**–

> *क्या आप जानते हैं* शारीरिक बल से बौद्धिक बल अधिक अच्छा होता है।

किसान पहले बहुत परिश्रम करता था लेकिन उत्पादन कम था। अब उन्नत बीज, खाद व उपकरणों की सहायता से अधिक उत्पादन करता है। सच है अक्ल बड़ी कि भैंस।

(11) **अंत भला सो भला**–परिणाम अच्छा हो जाये तो सब कुछ अच्छा माना जाता है।

भारतीय क्रिकेट टीम कशमकश के पश्चात् पाकिस्तान दौरे पर गयी और विजयी रही, सच है अंत भला सो भला।

(12) **अंधे की लकड़ी**–बेसहारे का सहारा।

राजकुमार पिता की अंधे की लकड़ी है।

नोट

(13) **अटकेगा सो भटकेगा**—दुविधा या सोच विचार में पड़ोगे तो काम नहीं होगा।

मैं तैयारी करूंगा चयन होगा या नहीं भूलकर तैयारी करो। कहावत है जो अटकेगा सो भटकेगा।

(14) **अक्ल का अंधा, अक्ल का दुश्मन होना**—महामूर्ख होना।

राजू से साथ देने की आशा मत रखना वह तो अक्ल का अंधा है।

(15) **अपना हाथ जगन्नाथ**—स्वयं का काम स्वयं करना अच्छा होता है।

लाला जी ने पहले खाना बनाने के लिए महाराज रखा हुआ था लेकिन वह अच्छा खाना नहीं बनाता था ऊपर से सामान चुरा लेता था। अब लालाजी स्वयं खाना बना रहे हैं। सच कहावत है अपना हाथ जगन्नाथ।

(16) **अपनी पगड़ी अपने हाथ**—अपने सम्मान को बनाये रखना अपने ही हाथ है।

अपने से छोटे से भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए अन्यथा वे भी अपमान कर सकते हैं। इसलिए कहावत अपनी पगड़ी अपने हाथ।

(17) **अपना रख पराया चख**—निजी वस्तु की रक्षा एवं अन्य वस्तु का उपभोग।

अपना रख पराया चख अब तो संजय की प्रकृति हो गई है।

(18) **अच्छी मति जो चाहो बूढ़े पूछन जाओ**—बड़े बूढ़ों की सलाह से कार्य सिद्ध हो सकते हैं।

मैं सदैव अपने बाबा से किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को करने से पहले सलाह लेता हूँ और कार्य सफल होता है। सच है अच्छी मति जो चाहो, बूढ़े पूछन जाओं।

(19) **अंधा सिपाही कानी घोड़ी, विधि ने खूब मिलाई जोड़ी**—दोनों साथियों में एक से अवगुण।

शोभित में निर्णय लेने की क्षमता नहीं है, पत्नी भी बुद्धिहीन है अत: दोनों मिलकर कोई कार्य सही नहीं कर पाते है। सच है अंधा सिपाही कानी घोड़ी, विधि ने खूब मिलाई जोड़ी।

(20) **अंधे को अंधा कहने से बुरा लगता है**—कटु वचन सत्य होने पर भी बुरा लगता है।

लाला जी परचून की दुकान करते हैं और सब चीजों में मिलावट करते हैं। जब कोई ग्राहक उनसे मिलावटी कह देता है तो वे भड़क उठते हैं। इसलिए कहावत है अंधे को अंधा कहने से बुरा लगता है।

(21) **अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता**—अपनी चीज को कोई बुरा नहीं बताता।

सब्जी वाला खराब और बासी सब्जियों को भी ताजी और अच्छी सब्जियां बनाकर बेच जाता है, कोई कहे भी तो मानता नहीं है। सच है अपनी छाछ को कोई खट्टा नही कहता।

(22) **अपनी चिलम भरने को मेरा झोपड़ा जलाते हो**—अपने अल्प लाभ के लिए दूसरे की भारी हानि करते हो।

आज का समय आ गया है अधिकांश व्यक्ति अपनी चिलम भरने के लिए दूसरे का झोंपड़ा जलाने में गुरेज नहीं करते।

(23) **अभी दिल्ली दूर है**—अभी कसर है।

मोहम्मद तुगलक सूफी निजामुद्दीन औलिया को दण्ड देना चाहता था और तेजी से दिल्ली की ओर बढ़ रहा था। इस पर निज़ामुद्दीन औलिया ने कहा अभी दिल्ली दूर है।

नोट

(24) अब की अब के साथ, जब की जब के साथ–सदा वर्तमान की ही चिंता करनी चाहिए।

भगवान महावीर ने वर्तमान को अच्छा बनाने का उपदेश दिया, भविष्य अपने आप सुधर जायेगा। सच है अब की अब के साथ, जब की जब के साथ।

(25) अस्सी की आमद नब्बे खर्च–आय से अधिक खर्च।

आजकल अधिकांश परिवारों का हाल है अस्सी की आमद नब्बे खर्च।

(26) अपनी नींद सोना, अपनी नींद जागना–पूर्ण स्वतंत्र होना।

मैं अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप पसन्द नहीं करता। कहावत है अपनी नींद सोना, अपनी नींद जागना।

(27) अपने झोंपड़े की खैर मनाओ–अपनी कुशल देखो।

मुझे क्या धमकी दे रहो हो अपने झोंपड़े की खैर मनाओ।

(28) अपनी टांग उघारिये आपहि मरिए लाज–अपने घर की बात दूसरों से कहने पर बदनामी होती है।

पहले तो तुमने अपने घर की बातें दूसरे से बता दीं, अब वे तुम्हारा मजाक उड़ाते हैं। कहावत भी है, अपनी टांग उघारिये आपहि मरिए लाज।

(29) आँख का अंधा नाम नयनसुख–नाम के विपरीत गुण।

उसके पास रहने की जगह नहीं है, नाम है पृथ्वीलाल। ठीक ही कहा गया है आँख का अंधा नाम नयनसुख।

टास्क लोकोक्ति का क्या अर्थ है तथा लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को किस प्रकार उपयोगी बनाता है? उल्लेख कीजिए।

(30) आँख के अंधे गांठ के पूरे–मूर्ख किन्तु धनी।

आजकल आँख के अंधे गांठ के पूरे व्यक्ति मुकदमेबाजी अधिक करते हैं।

(31) आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास–जब कोई व्यक्ति किसी अच्छे कार्य के लिये जाता है, किन्तु बुरे कामों में फंस जाता है; तब यह कहावत कही जाती है। कार्यकर्त्ता आये थे नेता संग चुनाव प्रचार को लेकिन जुआ खेलने लगे; इस पर नेताजी को कहना पड़ा आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास।

(32) आगे नाथ न पीछे पगहा–बिल्कुल स्वतन्त्र।

रहीम की बराबरी मत करो, क्योंकि उसके आगे नाथ न पीछे पगहा है।

(33) आटे के साथ घुन भी पिस जाता है–अपराधी की संगति से निरपराध भी दण्ड का भागी बनता है। संजय जुआरियों के पास खड़ा था पुलिस उसे भी ले गई। सच है आटे के साथ घुन भी पिस जाता है।

(34) आधी छोड़ सारी को धावै, आधी मिलै न पूरी पावै–अधिक लोभ करने से हानि ही होती है। कुछ लोग अधिक लाभ के लालच में आकर दूसरा व्यापार करते हैं। इसका फल यह होता है कि उन्हें लाभ के बदले हानि होती है, ठीक ही कहा गया है-आधी छोड़ पूरी को धावै आधी मिलै न पूरी पावै।

(35) आगे जाए घुटने टूटे, पीछे देखे आँख फूटे–जिधर जाएं उधर ही मुसीबत।

शापिंग माल में आग लगने पर जिस ओर से लोगों ने भागने की कोशिश की वहाँ आग लगी पाई।

(36) आसमान से गिरा खजूर में अटका–एक विपत्ति के बाद दूसरी विपत्ति का आ जाना।

चोरों ने मुकेश की पत्नी के गहने चुरा लिये, पुलिस ने किसी तरह चोरों को पकड़ा तो गहने पुलिस वालों ने दबा लिये। मुकेश तो बेचारा आसमान से गिरा खजूर में अटका।

(37) आस्तीन का साँप होना–निकट के व्यक्ति का विश्वासघाती होना।

मनुष्य को दुश्मनों से अधिक आस्तीन के साँपों से खतरा होता है।

(38) आई मौज फकीर की दिया झोपड़ा फूँक–मौजी और विरक्त आदमी।

किसी राजन ने खूब पैसा व्यापार में कमाया लेकिन मुकदमेबाजी में सारा उड़ा दिया। कहावत भी है आई मौज फकीर की दिया झोपड़ा फूँक।

(39) आप न जावै सासुरे औरों को सिख देत–कोई कार्य स्वयं तो न करे पर दूसरों को सीख दे।

नेताजी कार्यकर्त्ताओं से जेल जाने की पुरजोर अपील कर रहे थे लेकिन स्वयं नहीं जा रहे थे। इस पर एक कार्यकर्त्ता ने कहा नेता जी यह तो आप न जावै सासुरे औरों को सिख देत वाली बात हो गई।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. निरक्षरों के मध्य कुछ पढ़ा-लिखा आदमी अंधों में ········ के समान होता है।
2. राजकुमार पिता की अंधे की ········ है।
3. अच्छे समाज को एक बुरा व्यक्ति ········ कर देता है।

(40) आँख फूटी पीर गई–समूल किसी चीज़ का नष्ट होना।

उसकी बहू बदचलन थी, एक दिन पड़ोसी संग भाग गई तो पति ने सोचा आँख फूटी पीर गई।

(41) आया है सो जायेगा राजा रंक फकीर–सबको मरना है।

आज आदमी धन के लिये दूसरे की जान का दुश्मन बना हुआ है जबकि वह जनता है, आया है सो जायेगा राजा रंक फकीर।

(42) आदमी पानी का बुलबुला है–मनुष्य जीवन नाशवान है।

आदमी का जीवन तो पानी का बुलबुला है जाने कब फूट जाय।

(43) आम के आम गुठलियों के दाम–दुहरा फायदा।

कम्पटीशन की तैयारी हेतु मैंने नोटस तैयार किये थे बाद में पुस्तक के रूप में छपवा दिये। मेरे तो आम के आम गुठलियों के दाम हो गए।

(44) आम खाने से काम, पेड़ गिनने से क्या काम–अपने मतलब की बात करो।

राम ने अजय को दस हजार माँगने पर उधार दिये तो वह पूछने लगा कि तुम्हारे पास ये पैसे कहाँ से आये। इस पर राम ने कहा तुम आम खाओ पेड़ गिनने से क्या काम।

(45) आदमी की दवा आदमी है–मनुष्य ही मनुष्य की सहायता कर सकता है।

भोला ने नदी में डूबते आदमी को बचाया तो सभी कहने लगे, आदमी की दवा आदमी है।

(46) आ पड़ोसिन लड़े–बिना बात झगड़ा करना।

रीना से ज्यादा बातचीत ठीक नहीं, उसकी आदत तो आ पड़ोसन लड़े वाली है।

नोट

(47) **आसमान पर थूका मुँह पर आता है**–बड़े लोगों की निन्दा करने से अपनी ही बदनामी होती है।

महात्मा गाँधी की बुराई करना आसमान पर थूकना है।

(48) **आठ कनौजिसे नौ चूल्हे**–अलगाव की स्थिति।

पूँजीवादी व्यवस्था में समाज इतना स्वार्थी हो गया है कि आठ कनौजिये नौ चूल्हे वाली स्थिति दिखायी देती है।

क्या आप जानते हैं लोकोक्ति लोक में प्रचलित उक्ति होती है जो भूतकाल का लोग-अनुभव लिए हुए होती है, जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता है।

(49) **आई तो रोजी नहीं तो रोजा**–कमाया तो खाया नहीं तो भूखे।

फेरी वाले का क्या यदि कुछ माल बिक जाता है तो खाना खा लेता है वरना भूखा सो जाता है। सच है आई तो रोजी नहीं तो रोजा।

(50) **आयी है जान के साथ जायेगी जनाजे के साथ**–आजीवन किसी चीज से पिंड न छूटना।

दमे की बीमारी के विषय में कहा जाता है आयी है जान के साथ जायेगी जनाजे के साथ।

(51) **इतना खाए जितना पचे**–सीमा के अंदर कार्य करना चाहिए।

तुम सभी लोगों से पैसे उधार लेते रहते हो और खर्च कर देते हो। इससे तो तुम कर्ज में डूब जाओगे। सच है इतना खाए जितना पचे।

(52) **इस हाथ दे उस हाथ ले**–कर्म का फल शीघ्र मिलता है।

दूसरों का सम्मान करने से स्वयं को सम्मान मिलता है ठीक ही है-इस हाथ दे उस हाथ ले।

(53) **इसके पेट में दाढ़ी है**–उम्र कम बुद्धि अधिक।

अक्षित की बात क्या करनी उसके तो पेट में दाढ़ी है।

(54) **इधर न उधर, यह बला किधर**–अचानक विपत्ति आ जाना।

गाड़ी से अलीगढ़ जा रहे थे कि रास्ते में जाम लग गया और लोगों ने घेर लिया तब पिताजी को कहना पड़ा-इधर न उधर, यह बला किधर।

(55) **इमली के पात पर दंड पेलना**–सीमित साधनों से बड़ा कार्य करने का प्रयास करना।

लाला जी को कोई जानता नहीं और सांसद बनने के लिए खड़े हो रहे हैं। वे नहीं जानते कि इमली के पात पर दंड पेल रहे हैं।

(56) **इन तिलों में तेल नहीं**–किसी भी लाभ की सम्भावना न होना।

मैं जानता था इन तिलों में तेल नहीं है इसलिए मैंने तुमसे उधार नहीं लिया और बाज़ार से लेकर काम चला रहा हूँ।

(57) **इधर कुआँ उधर खाई**–हर हालत में मुसीबत।

बड़ी विपत्ति आने पर कोई उपाय नहीं सूझता।

(58) **ईंट की देवी माँगे का प्रसाद**–जैसा व्यक्ति वैसी आवभगत।

अनेक मंत्री आये लेकिन मेरठ वासियों ने ऐसा स्वागत नहीं किया जैसा मुलायम सिंह के भाई शिवपाल यादव का किया। सच है ईंट की देवी, माँगे का प्रसाद।

(59) **ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया**—संसार में कहीं दु:ख है कहीं सुख है।

किसी घर घी-दूध की बहार है और किसी घर सूखी रोटी भी नहीं है, ठीक ही कहा गया है-ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।

(60) **जिसकी की जूती उसी का सिर**—जिसकी करनी उसी को फल मिलता है।

शर्मा जी मुझे प्रधानाचार्य से कहकर आठवीं कक्षा दिलाना चाहते थे लेकिन प्रधानाचार्य ने उन्हें ही आठवीं कक्षा दे दी। इसे कहते हैं जिसकी जूती उसी के सिर।

(61) **उगले तो अंधा, खाए तो कोढ़ी**—दुविधा में पड़ना।

बीमारी में दफ्तर जाओ तो बीमारी बढ़ने का भय, ना जाओ तो छुट्टी होने का भय।

(62) **ऊँट के मुँह में जीरा**—अत्यन्त कमी।

सौ बीघे के खेत के लिये एक बोरी खाद ऊँट के मुँह में जीरा है।

(63) **ऊँट किस करवट बैठता है**—न जाने भविष्य में क्या होगा।

आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस या भाजपा में कौन जीतेगा, देखते हैं ऊँट किस करवट बैठता है।

(64) **ऊधौ का लेन न माधौ का देन**—किसी से कोई वास्ता न रखना।

मेरा क्या है रिटायरमेंट के पश्चात् मौज का जीवन गुज़ारूंगा, न ऊधौ का लेन न माधौ का देन।

(65) **एक अनार सौ बीमार**—एक ही वस्तु के अनेक आकांक्षी।

लोकसभा चुनाव में टिकट एक प्रत्याशी को मिलना है लेकिन टिकट माँगने वाले अनेक है। यहाँ तो एक अनार सौ बीमार वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

(66) **एक तो करेला फिर नीम चढ़ा**—दोहरा कटुत्व।

सुधा एक तो पढ़ने में कमजोर है और दूसरे शिक्षकों के प्रति उसका व्यवहार ठीक नहीं है, ऐसे लोगों के लिये कहा गया है-एक तो करेला फिर नीम चढ़ा।

(67) **एक सड़ी मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है**—अच्छे समाज को एक बुरा व्यक्ति कलंकित कर देता है।

सेठ जी के परिवार में एक लड़का डकैत निकल गया, जिससे पूरा परिवार बदनाम हो गया। ठीक ही कहा गया है, एक सड़ी मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है।

(68) **एक हाथ से ताली नहीं बजती**—झगड़े में दोनों पक्षों की गलती होती है, इसलिये कहा गया है-एक हाथ से ताली नहीं बजती।

(69) **एक पन्थ दो काज/एक ढेले से दो शिकार**—एक उपाय से दो कार्यों का होना।

रामू हिन्दी विषय में एम. ए. की तैयारी कर रहा था उसने साहित्यरत्न का भी फार्म भर दिया, इस प्रकार उसके एक पन्थ दो कांज हो गए।

(70) **एक आँख से रोवे, एक आँख से हँसे**—दिखावटी रोना।

दादी की मृत्यु पर बुआ एक आँख से रो रही थी, एक आँख से हँस रही थी।

(71) **एक टकसाल के ढले हैं**—सब एक जैसे हैं।

फैक्ट्री के कर्मचारियों को क्या कहोगे सब एक टकसाल के ढले हैं।

नोट

(72) **एक मुँह दो बात**–अपनी बात से पलट जाना।

पहले आप कह रहे थे, मैं तुम्हें सम्पादक बनाऊँगा अब कह रहे हो कि उपसम्पादक बनाऊँगा। ये तो आप एक मुँह दो बात वाली कर रहे हो।

(73) **एक और एक ग्यारह होते हैं**–एकता में बल है।

नोट्स हमें मिलकर रहना चाहिए अन्यथा लोग लाभ उठा लेंगे। कहावत भी है-एक और एक ग्यारह होते हैं।

(74) **एक ही लकड़ी से सबको हाँकना**–सबके साथ समान व्यवहार करना।

सेठ जी के लिए किसी की अहमियत नहीं वे तो एक ही लकड़ी से सबको हाँकते हैं।

(75) **ऐसे बूढ़े बैल को कौन भुस देय**–बुढ़ा और बेकार दूसरे पर बोझ हो जाता है।

भटनागर साहब बूढ़े हो गये और ठीक से कार्य नहीं कर पाते थे अत: सेठ ने उन्हें नौकरी से निकाल दिया। सच है बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. आम खाने से काम, पेड़ गिनने से क्या ....।

   (*a*) नाम   (*b*) पहचान

   (*c*) दाम   (*d*) काम

5. ईश्वर की .... कहीं धूप कहीं छाया।

   (*a*) माया   (*b*) अनुकम्पा

   (*c*) प्रतिज्ञा   (*d*) दया

6. एक .... के ढले हैं।

   (*a*) मायाजाल   (*b*) टकसाल

   (*c*) भ्रमजाल   (*d*) या उपरोक्त में से कोई नहीं

15.1.2 लोकोक्तियाँ : 76 से 109 तक

(76) **ओखली में सर दिया तो मूसलों से क्या डरना**–जब कार्य करना ही हैं तो आने वाली कठिनाइयों से नहीं डरना चाहिए।

टैस्ट प्लेयर बनना चाहते हो तो छोटी-मोटी चोट से मत घबराओ। कहावत भी है ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना।

(77) **ओढ़नी बदलना**–पक्की सहेलियां बनना।

विभा और पूनम ने आपस में ओढ़नी बदलकर सखीपन पर मोहर लगा दी है।

(78) **ओछे की प्रीति बालू की भाति**—दुष्ट व्यक्तियों की मित्रता क्षणिक होती है।

तुमने बुरे समय में साथ देने के बजाय मजाक उड़ाया वैसे दोस्ती का दम भरते थे। सच है ओछे की प्रीति बालू की भीति।

(79) **कबीरदास की उल्टी बानी, बरसैं कम्बल भीगे पानी**—उल्टी बात कहना।

जब भी तुमसे कोई बात कही जाती है तो तुम कबीरदास की उल्टी बानी, बरसैं कम्बल भीगे पानी वाली कहावत चरितार्थ कर देते हो।

(80) **कहीं की ईट कहीं का रोड़ा, भानुवती ने कुनबा जोड़ा**—इधर-उधर की सामग्री एकत्र करके कोई रचना करना।

आजकल लोग इधर-उधर की पुस्तकों से सामग्री लेकर पी. एच. डी. कर लेते हैं, ठीक ही कहा गया है-कहीं की ईट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा।

(81) **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली**—अत्यधिक अन्तर।

बृहस्पति तो एक धनी बाप का पुत्र है और तुम मज़दूर के बेटे हो, उसकी बराबरी कैसे करोगे? कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।

(82) **काठ की हाण्डी बार-बार नहीं चढ़ती**—अन्याय बार-बार नहीं चलता।

महेश बिना टिकट यात्रा के अपराध में पकड़ा ही गया, ठीक ही कहा गया है काठ की हाण्डी बार-बार नहीं चढ़ती।

(83) **काला अक्षर भैंस बराबर**—निरक्षर व्यक्ति के लिये पुस्तकें व्यर्थ हैं।

हमें किताब क्यों दिखाते हो, हमारे लिये काला अक्षर भैंस बराबर।

(84) **कच्ची गोली खेलना**—अनुभवहीन होना।

तुम हमें नहीं ठग सकते, हमने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं।

(85) **कर सेवा खा मेवा**—अच्छे कार्य का फल अच्छा मिलता है।

सुनील ने अजय से कहा, 'मेहनत से प्रकाशन में कार्य करो तरक्की पा जाओगे' कहावत सच है कर सेवा खा मेवा।

(86) **कभी घना-घना, कभी मुट्ठी भरा चना, कभी वह भी मना**—जो मिले उसी में संतुष्ट रहना अच्छा है।

तुम्हें जो काम मिले उतने में ही संतुष्ट रहते हो। तुम्हारे लिए कहावत सच है कभी घना-घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी मना।

(87) **कब्र में पाँव लटकाए बैठा है**—मरने वाला है।

वो कब्र में पाँव लटकाए बैठे हैं लेकिन मजाक भद्दी करते हैं।

(88) **कमली ओढ़ने से फकरी नहीं होता**—ऊपरी वेशभूषा से किसी के अवगुण नहीं छिप जाते है।

विवेक साइकिल चोर है लेकिन सूट-बूट में रहता है लोग उसे जानते हैं इसलिए उससे कतराते हैं। सच है कमली ओढ़ने से फकरी नहीं होता।

(89) **कोयला होय न उजाला सौ मन साबुन धोय**—दुष्ट व्यक्ति की प्रकृति में कोई परिवर्तन नहीं होता उसे चाहे कितनी ही सीख दी जाये।

नोट

संजय को मैंने बहुत समझाया कि शराब और जुआ छोड़ दे पर वह नहीं माना। सच है कोयला होय न उजाला सौ मन साबुन धोय।

(90) **कुत्ते भौंकते रहते हैं और हाथी चलता जाता है**—महान् व्यक्ति छोटी-सी नुक्ता-चीनी पर ध्यान नहीं देता है।

साधु महाराज पर सड़क पर गुजरते समय कुछ लोग छींटाकशी कर रहे थे लेकिन वे निरन्तर बढ़ते जा रहे थे। वहाँ ये कहावत चरितार्थ हो रहीं थी कुत्ते भौंकते रहते हैं और हाथी चलता जाता है।

(91) **काम का ना काज का दुश्मन अनाज का**—किसी काम का न होना।

वह 30 वर्ष का हो गया, बेरोज़गार है अत: सभी उसे कहते हैं काम का ना काज का दुश्मन अनाज का।

(92) **कोठी वाला रोवै छप्पर वाला सोवै**—अधिक धन चिन्ता का कारण होता है।

सेठ रामलाल सारी रात जागते रहते हैं, चोरों के भय से उन्हें नींद नहीं आती है। उनके घर का माली अपनी झोपड़ी में आराम की नींद सोता है। सच है कोठी वाला रौवे छप्पर वाला सोवै।

(93) **कहे खेत की, सुने खलिहान की**—कहा कुछ गया और समझा कुछ गया।

तुम भी बिल्कुल नमूने हो, कहे खेत की सुनते हो खलिहान की।

(94) **काम को काम सिखाता है**—काम करते-करते आदमी होशियार हो जाता है।

जब दिनेश इस प्रकाशन में आया था प्रूफ रीडिंग से अनजान था लेकिन काम को काम सिखाता है आज वह ट्रेंड प्रूफ रीडर हो गया है।

(95) **कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता**—हठी पुरुष समझाने से दूसरों का कहना नहीं मानता।

लड़की के सगे सम्बन्धियों ने लड़के के पिता से खाना खाने का अनुरोध किया लेकिन नहीं माना तब लड़के के ताऊ ने कहा कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता।

(96) **कोऊ नृप होय हमें का हानि**—किसी के पद, धन या अधिकार मिलने से हम पर कोई प्रभाव नहीं होता।

कांग्रेस की सरकार आये या भाजपा की इससे हमें क्या फर्क पड़ता है। हमारे लिये तो कोऊ नृप होय हमें का हानि वाली कहावत चरितार्थ होती है।

(97) **कौआ चला हंस की चाल**—दूसरों की नकल पर चलने से असलियत नहीं छिपती तथा हानि उठानी पड़ती है।

छोटे से प्रेस मालिक ने बड़े प्रकाशकों की नकल करते हुए मॉडल पेपर निकाल दिये लेकिन वे नहीं बिके जिससे भारी नुकसान उठाना पड़ा। जिनके पैसे डूब गये उन्हें कहना पड़ा कौआ चला हंस की चाल।

(98) **कुए की मिट्टी कुँए में ही लगती है**—लाभ जहाँ से होता है वहीं खर्च हो जाता है।

आशीष की नौकरी दिल्ली में लगी वहाँ पर मकान तथा अन्य खर्चे इतने अधिक हैं कि बचत नहीं हो पाती। सच है कुएँ की मिट्टी कुएँ में ही लगती है।

(99) **काजी जी दुबले क्यों शहर के अंदेशों से**—अपनी चिंता न करके दूसरे की चिंता में घुलना।

अपनी पढ़ाई तो करते नहीं हो रेखा के पास होने के लिए परेशान हो। सच तुम्हारा हाल तो काजी जी दुबले क्यों शहर के अंदेशों से वाला है।

(100) **कुंजड़ा अपने बेरों को खट्टा नहीं बताता**–कोई अपने माल को खराब नहीं कहता।
सब्जी वाले बासी सब्जी को भी ताजी बताकर बेचते हैं। कहावत सच है कुंजड़ा अपने बेरों को खट्टा नहीं बताता।

(101) **कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है**–सफाई सब को पसन्द होनी चाहिए।
तुम्हारी कुर्सी पर कितनी धूल जमी है कैसे आदमी हो तुम कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है।

(102) **किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान**–स्वाभिमान की रक्षा नौकारी में नहीं हो सकती।
सेठ ने डांट दिया तो क्या नौकरी छोड़ दोगे, किया चाहे चाकरी राखा चाहे मान।

(103) **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है**–जब कोई व्यक्ति अपने साथी के अनुसार आचरण करने लगता है तब यह कहावत कही जाती है।

(104) **खुदा गंजे को नाखून नहीं देता**–अयोग्य को अधिकार नहीं मिलता।
अकर्मण्य व्यक्ति को अधिकार नही मिल पाते हैं, क्योंकि खुदा गंजे को नाखून नहीं देता।

(105) **खेत खाए गदहा, मारा जाए जुलाहा**–जब किसी व्यक्ति के अपराध पर दण्ड किसी अन्य को मिलता है तब यह कहावत चरितार्थ होती है।

(106) **खोदा पहाड़ निकली चुहिया**–अधिक कार्य का अत्यल्प फल।
भाजपा के शीर्ष नेताओं ने यू. पी. में लोकसभा चुनावों में बहुत परिश्रम किया लेकिन दस सीटें ही मिल सकी। सच में यह कहावत चरितार्थ हो गई खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

(107) **खाक डाले चाँद छिपता**–अच्छे आदमी की निंदा करने से कुछ नहीं बिगड़ता।
महात्मा गाँधी की निंदा करना अनुचित है। खाक डाले चाँद नहीं छिपता।

(108) **खुदा की लाठी में आवाज नहीं**–कोई नहीं जनता कि भगवान कब, कैसे, क्यों दंड देता है।
तुम गरीबों का घोर शोषण करते हो जानते नहीं खुदा की लाठी में आवाज नहीं होती।

(109) **खग जाने खग की भाषा**–सब अपने-अपने सम्पर्क के लोगों का हाल समझते हैं।
व्यापारी एक दूसरे से इशारे ही इशारों में बात कर लेते हैं और आम इंसान कुछ नहीं समझ पाता। सच है खग जाने खग की ही भाषा।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. निरक्षर व्यक्ति के लिए पुस्तकें व्यर्थ हैं।
8. जो मिले उसी में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए।
9. महान व्यक्ति छोटी-सी नुक्ता चीनी पर ध्यान नहीं देता।

15.2 सारांश (Summary)

- पूर्ण वाक्य होने के कारण लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र एवं अपने-आप में पूर्ण इकाई के रूप में होता है जबकि मुहावरा किसी वाक्य का अंश बनकर आता है। पूर्ण ईकाई होने के कारण लोकोक्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, जबकि मुहावरे में वाक्य के अनुसार परिवर्तन होता है।

नोट

15.3 शब्दकोश (Keywords)

लोकोक्ति : कहावत, जनप्रवाद

नुक्ताचीनी : किसी पर टिप्पणी करना

विश्वासघात : धोखा देना, ठगना

15.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. लोकोक्ति का अर्थ एवं वाक्य निर्माण के विषय में बताइएँ।
2. लोकोक्तियों के उपयोग का महत्त्व बताइए।
3. संक्षित टिप्पणी लिखें–(1) मुहावरा (2) लोकोक्ति।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. काना राजा	2. लकड़ी	3. कलंकित
4. (*d*)	5. (*a*)	6. (*b*)
7. सही	8. गलत	9. सही

15.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–16: समानार्थक शब्द

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

16.1 समानार्थक शब्दों का उच्चारण एवं उनके अलग-अलग अर्थ

16.1.1 समानार्थक शब्द 1 से 74 तक

16.1.2 समानार्थक शब्द 75 से 135 तक

16.2 सारांश (Summary)

16.3 शब्दकोश (Keywords)

16.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

16.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- समानार्थक शब्द का उच्चारण एवं उसका भिन्न अर्थ जानने में
- समानार्थक शब्द की उपयोगिता जानने हेतु।
- समानार्थक शब्द के महत्त्व को जानने में।
- सम्मोचरित-भिन्नार्थक शब्द को जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

बहुत से शब्द ऐसे होते हैं जिनका उच्चारण समान-सा होता है, लेकिन उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, ऐसे शब्दों को समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। जैसे-**अनल,** और **अनिल** शब्दों का उच्चारण समान-सा है, लेकिन अनल का अर्थ है, **आग** और **अनिल** का अर्थ है, **वायु।** दूसरे शब्दों में हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि-ऐसे शब्द, जिनकी वर्तनी (Spelling) में थोड़ा अन्तर होने के कारण समानता का आभास होता है, परन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें कोई समानता नहीं होती है, समोच्चरित-भिन्नार्थक शब्द (Paronyms Words) कहलाते हैं। अंग्रेजी व्याकरणकार **Nesfield** ने लिखा है–

“ A word not spelt the same as another, but pronounced exactly alike as hair hare.”

नोट

16.1 समानार्थक शब्दों का उच्चारण एवं अलग-अलग अर्थ

16.1.1 समानार्थक शब्द 1 से 74 तक

समोच्चरित-भिन्नार्थक शब्दों को **'युग्म शब्द' समध्वन्यात्मक शब्द, समानाभास शब्द** भी कहते हैं। विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए समोच्चरित-भिन्नार्थक शब्दों की तालिका प्रस्तुत है–

क्र०स०	शब्द	अर्थ
1.	अकर	न करने योग्य
	आकर	खान, खदान
2.	अग	सूर्य, अचल
	अघ	पाप
3.	अचल	स्थिर
	अंचल	साड़ी का छोर, किनारा
4.	अंचित	गुथा हुआ, पूजित
	अचित्	जड़, चेतन रहित
5.	अजय	जो जीता न जा सके
	अजया	भाँग, बकरी
6.	अतप	शीतल
	आतप	धूप
7.	अनल	आग
	अनिल	वायु
8.	अंगना	स्त्री
	अँगना	छोटा, आँगन
9.	अंत	समाप्ति
	अंत्य	अंतिम
10.	अंतर	भिन्नता
	अनंतर	बाद में
11.	अपर	दूसरा
	अपार	असीम
12.	अम्बुज	कमल
	अम्बुधि	समुद्र
13.	अंश	भाग, हिस्सा
	अंस	कन्धा
14.	अतल	जिसका तल न हो
	अतुल	जिसकी तुलना न हो
15.	अपेक्षा	तुलना में, आशा
	उपेक्षा	त्याग, तिरस्कार

नोट

क्या आप जानते हैं अनल, और अनिल शब्दों का उच्चारण समान-सा है, लेकिन अनल का अर्थ है, आग और अनिल का अथ है, वायु।

16.	अगम	दुर्लभ
	आगम	शास्त्र, उत्पत्ति
17.	अणी	नोंक, अनी
	आणि	तलवार की धार
18.	अम्बुद	कमल
	अम्बुद	बादल
19.	अभिज्ञ	जानकर
	अनभिज्ञ	अनजान
20.	अभिसार	प्रेमी से छिपकर मिलना
	अभीसार	आक्रमण
21.	अरथी	टिकठी, झाँजी
	अर्थी	चाहने वाला
22.	अरबी	अरब की भाषा
	अरवी	कन्द या घुइयाँ
23.	अनिष्ट	बुराई, हानि
	अनिष्ठ	निष्ठाहीन
24.	अमित	बहुत, अधिक
	अमीत	दुश्मन
25.	अमूल	बेजोड़
	अमूल्य	अनमोल
26.	अभय	निर्भय
	उभय	दोनों
27.	अधूत	निर्भय
	अवधूत	योगी
28.	अब्ज	कमल
	अब्द	वर्ष
29.	अभिराम	सुन्दर
	अविराम	लगातार

नोट

क्र०स०	शब्द	अर्थ
30.	अभिहित	पीटा गया
	अभिहत	पुकारा गया
31.	अभियान	चढ़ाई
	अभिमान	घमंड
32.	अविरोध	मेल
	अवरोध	रुकावट
33.	अविलम्ब	तुरन्त
	अवलम्ब	सहारा
34.	अर्जन	संग्रह
	अर्चन	पूजा
35.	अर्घ	जलदान
	अर्ध्य	पूजाद्रव्य
36.	अजर	जो पुराना न हो
	अजिर	आँगन
37.	अलिक	ललाट
	अलीक	झूठ
38.	अली	भौंरा
	आली	सखी
39.	अवलि	पंक्ति
	आविल	गन्दा
40.	अशक्त	असमर्थ
	असक्त	उदासीन
	आसक्त	वासनायुक्त
41.	अपत	बिना पत्ते का
	अपट	वस्त्रहीन
42.	अपमान	तिरस्कार
	उपमान	तुलना
43.	आवृत	घिरा हुआ
	आवृत्ति	दोहराना
44.	आदि	आरम्भ
	आदी	अभयस्त

नोट

टास्क अभिज्ञ, अनभिज्ञ, अभी सार तथा अवधूत शब्दों के अर्थ लिखिए।

क्र०स०	शब्द	अर्थ
45.	अन्न	अनाज
	अन्य	दूसरा
46.	आकार	आकृति
	आकर	खान
47.	अचार	खाने वाला अचार
	आचार	स्वभाव, आचरण
48.	आसन	लेटने या बैठने का वस्त्र
	आसन्न	निकट
49.	आहूत	बुलाया हुआ
	आहूति	होम
50.	आभरण	आभूषण
	आवरण	पर्दा, पट
51.	आयत	लम्बा, चौड़ा
	आयात	बाहर से आया हुआ
52.	इति	अन्त
	ईति	आपदा
53.	इन्दिरा	लक्ष्मी
	इन्द्रा	इन्द्राणी
54.	उपकार	भलाई
	अपकार	बुराई
55.	उपल	पत्थर
	उत्पल	कमल
	उपला	कण्डा
56.	उबारना	बचाना
	उभारना	उकसाना, ऊँचा करना
57.	उपयुक्त	उचित
	उपर्युक्त	ऊपर कहा गया
58.	उद्धार	कष्ट से मुक्ति
	उधार	कर्ज
59.	उपेक्षा	तिरस्कार
	अपेक्षा	तुलना में

नोट

नोट्स अचार और आचार एक समान प्रतीत होते हुए भी एक-दूसरे से भिन्न हैं।

क्र०स०	शब्द	अर्थ
60.	इत्र	सुगन्ध
	इतर	दूसरा, चरम
61.	उद्धत	अक्खड़
	उद्यत	तैयार
62.	ऋत्	सत्य
	ऋतु	मौसम
63.	उपस्थिति	उपलब्धता
	उपस्थित	हाजिर
64.	ओर	तरफ
	और	तथा
65.	ओटना	बिनौले अलग करना
	औटना	खौलने की क्रिया
66.	करण	साधन
	कर्ण	कान
67.	कथा	कहानी
	कत्था	खैर का सत्त
68.	कड़ी	सख्त
	कढ़ी	दही और बेसन का सालन
69.	कटिबन्ध	नाड़ा
	कटिबद्ध	तैयार
70.	कड़ाई	कड़ापन
	कढ़ाई	कशीदाकारी
	कढ़ाही	लोहे का बर्तन
71.	कटौती	कमी
	कठौती	काठ का बर्तन
72.	कँटीला	काँटेदार
	कटीला	काटने वाला
73.	कंकाल	अस्थिपंजर
	कंगाल	दरिद्र
74.	किला	गढ़
	कीला	खूंटी, कील

नोट

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. अचल का अर्थ ········ होता है।
2. अतुल से तात्पर्य है ········ ।
3. कढ़ाई का अर्थ ········· से है।

16.1.2 समानार्थक शब्द 75 से 135 तक

क्र०स०	शब्द	अर्थ
75.	कुल	वंश
	कूल	किनारा
76.	कुच	स्तन
	कूच	प्रस्थान
77.	कुट	किला, दर
	कूट	पहाड़ की चोटी, व्यंग्य
78.	कुमार	बिना ब्याहा
	कुम्हार	बर्तन बनाने वाला
79.	कृति	रचना
	कृती	पुण्यात्मा, विद्वान
80.	कृपण	कंजूस
	कृपाण	तलवार
81.	केश	बाल
	केस	मुकद्दमा
82.	केशर	सिंह की गर्दन के बाल
	केसर	जाफरान, कुमकुम
83.	कोशल	अवध प्रदेश
	कौशल	नैपुण्य
84.	कोड़ी	बीस या बीस का समूह
	कौड़ी	कपर्दिका
85.	कोर	किनारा
	कौर	ग्रास
86.	कोश	शब्दकोश
	कोष	खजाना
	कोस	दो मील की दूरी

नोट

क्र०स०	शब्द	अर्थ
87.	खर्राच	अमितव्ययी
	खरोंच	छिल जाने या रगड़ का चिह्न
88.	ग्रह	सूर्य, चन्द्र आदि नक्षत्र
	गृह	घर
89.	गाड़ी	सवारी, यान
	गाढ़ी	घनी
90.	गिरि	पर्वत
	गिरी	बीज का गूदा
91.	गिरा	वाणी
	गिरा	पतित
92.	गेय	गाने वाला
	ज्ञेय	जो जाना जा सके
93.	गूँथना	सानना
	गूथना	पिरोना
94.	चरित	जीवनी
	चरित्र	आचरण
95.	चित्त	मन
	चित	पड़ा हुआ

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Mutiple Choice Questions)–

4. खरोंच से क्या तात्पर्य है?
   (*a*) छिल या रगड़ जाने का चिह्न (*b*) निशान पड़ जाने का चिह्न
   (*c*) कट जाने का चिह्न (*d*) या इनमें से कोई नहीं
5. जन्ता शब्द का क्या अर्थ है?
   (*a*) चक्की (*b*) लोग
   (*c*) प्रधान (*d*) पुरुष
6. तुरंग शब्द का क्या आशय है?
   (*a*) जिराफ (*b*) मोर
   (*c*) गधा (*d*) घोड़ा

नोट

क्र०स०	शब्द	अर्थ
96.	चिर	दीर्घ
	चीर	कपड़ा
97.	चपत	थप्पड़
	चम्पत	गायब
98.	चरस	गाँजा, अतर
	चरसा	चमड़े का थैला
99.	चक्रवाह	चकवा पक्षी
	चक्रवात	बवान्डर
100.	चिता	मुर्दा जलाने वाली
	चिन्ता	सोचनीय भाव
	चीता	हिंस्त्रपशु
101.	छत्र	छत
	क्षत्र	मुकुट
102.	छात्र	विद्यार्थी
	क्षात्र	क्षत्रिय
103.	जरा	थोड़ा, अल्प
	जरा	बुढ़ापा
104.	जन्ता	चक्की
	जनता	लोग
105.	जरठ	बूढ़ा
	जठर	पेट
106.	जूठा	उच्छिष्ट भोजन
	झूठा	असत्यवादी
107.	जुड़ा	संलग्न
	जूड़ा	केशों का बंधन
108.	जुआ	बैलों के कंधे की लकड़ी
	जूआ	द्यूत क्रीड़ा
109.	जगत्	संसार
	जगत	कुएँ का चबूतरा
110.	झर	पानी गिरने का स्थान
	छर	छर्रों के वेग से निकलने का शब्द
111.	टपक	बूँद-बूँद करके पानी गिरने का शब्द
	थपक	प्रेमवश किसी को हथेली मारना

नोट

क्र०स०	शब्द	अर्थ
112.	डोल	लोहे का बर्तन
	डौल	ढाँचा
113.	डीठ	नजर
	ढीठ	धृष्ट
114.	ढाल	रक्षक
	ढाल	उतराव
115.	ढलाई	ढालने की क्रिया
	ढिलाई	शिथिलता
116.	ताक	घूरकर देखना
	ताख	दीवार का आला
117.	तरिण	सूर्य
	तरणी	नाव
	तरुणी	युवती
118.	तोष	संतुष्टि
	तोश	हिंसा
119.	तरंग	लहर
	तुरंग	घोड़ा
120.	थति	धरोहर
	तिथि	दिनाँक
121.	दशा	हालत
	दिशा	तरफ
122.	दारू	शराब
	दारु	लकड़ी
123.	दशन	काटना
	दंशन	दाँत
124.	दिया	देना
	दीया	दीपक
125.	दिन	दिवस
	दीन	गरीब
126.	दीप	दीपक
	द्वीप	टापू
127.	देव	देवता
	दैव	भाग्य

नोट

क्र०स०	शब्द	अर्थ
128.	दारा	स्त्री
	द्वारा	मार्फत
129.	धन	सम्पत्ति
	धना	प्रीतम
130.	धान	अन्न विशेष
	धन्य	सराहना
131.	नन्दी	शिवजी का बैल
	नान्दी	मंगलाचरण
132.	नाइ	तरह, समान
	नाई	बाल काटने वाला
133.	नाड़ी	शिरा या नब्ज
	नारी	स्त्री
134.	नित	प्रतिदिन
	नत	झुका हुआ
135.	नीत	लाया हुआ
	नीति	सदाचार पद्धति

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. छर का अर्थ छर्रो के वेग से निकलने का शब्द है।
8. ढलाई का अर्थ ढालने की क्रिया से नहीं है
9. नीत से तात्पर्य है लाभ हुआ।

16.2 सारांश (Summary)

- ऐसे शब्द, जिनकी वर्तनी (Spelling) में थोड़ा अन्तर होने के कारण समानता का आभास होता है, परन्तु अर्थ की दृष्टि से उनमें कोई समानता नहीं होती है, समोच्चरित-भिन्नार्थक शब्द (Paronyms Words) कहलाते हैं।

16.3 शब्दकोश (Keywords)

चक्रवाता : बवान्डर

द्वीप : टापू

नित : प्रतिदिन

नोट

16.3 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. सामानार्थक शब्दों का भाषा में प्रयोग का क्या महत्त्व है? उल्लेख कीजिए।
2. समानार्थक शब्दों का उच्चारण समान होने के साथ अलग-अलग क्यों होता है? वर्णन कीजिए।
3. समोच्चरित-भिन्नार्थक शब्दों को युग्म 'शब्द' समध्वन्यात्मक शब्द तथा समानाभास शब्द क्यों कहते हैं? उल्लेख कीजिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. स्थिर	2. जिसकी तुलना हो सके	3. कशीदाकारी
4. (*a*)	5. (*a*)	6. (*d*)
7. सही	8. गलत	9. सही

16.4 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–17: विपरीतार्थक या विलोमार्थक शब्द

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

17.1 विपरीतार्थक या विलोमार्थक शब्द

17.1.1 विपरीतार्थक शब्द अ से च तक

17.1.2 विलोमार्थक शब्द छ से श्र तक

17.2 सारांश (Summary)

17.3 शब्दकोश (Keywords)

17.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

17.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- विलोम शब्द का उद्देश्य जानने हेतु।
- विलोम शब्द का उपयोग जानने हेतु।
- भाषा में भावों-विचारों की स्पष्टता को जानने में।
- विलोम शब्दों के प्रयोग से भाषा में अभिव्यक्ति शक्ति को जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

'विलोम' शब्द का अर्थ है–**उल्टा** या **विपरीत।** अत: किसी शब्द का उल्टा अर्थ व्यक्त करने वाला शब्द विलोमर्थक शब्द कहलाता है। उदाहरणार्थ **दिन-रात।** यहाँ रात शब्द, 'दिन शब्द का ठीक उल्टा (विपरीत) अर्थ व्यक्त कर रहा है; अत: यह विलोम शब्द है। विलोमार्थक शब्दों को **विपर्यायवाची, विपरीतार्थक, प्रतिलामार्थक** और **विलोम** शब्द भी कहते हैं।

भाषा में भावों-विचारों की स्पष्टता के लिए विलोम शब्द का ज्ञान उपयोगी होता है; जैसे–**अवरोह** शब्द का 'पतन' नीचे गिरना' की अपेक्षा **आरोह** शब्द अर्थात् उल्टा कहने से अर्थ की प्रतीति और भी स्पष्टता से हो जाती है। इस प्रकार विलोम शब्दों के प्रयोग से भाषा में अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ जाती है।

नोट

17.1 विपरीतार्थक या विलोमार्थक शब्द

17.1.1 विपरीतार्थक शब्द अ से च तक

विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु विलोमार्थक शब्दों की सूची प्रस्तुत है–

(अ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अंत	आदि	अकंटक	कंटकित
अंतरंग	बहिरंग	अक्षत	विक्षत
अंतर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व	अक्षम	सक्षम
अंतर्मुखी	बहिर्मुखी	अदृश्य	दृश्य
अंदर	बाहर	अस्तित्व	अनस्तित्व
अंधकार	प्रकाश	अर्हता	अनर्हता
अकर्मक	सकर्मक	अभिमुख	प्रतिमुख
अकाल	सुकाल	अभिप्रेत	अनभिप्रेत
अग्र	पश्च	अधिमूल्यन	अवमूल्यन
अगला	पिछला	अधीन	स्वतंत्र
अच्छा	बुरा	अवर	प्रवर
अधम	उत्तम	अनुदार	प्रतिक्रियाशील
अध्यवसाय	अनध्यवसाय	अवनति	उन्नति
अधोमुखी	ऊर्ध्वमुखी	अचल	सचल
अधोगामी	ऊर्ध्वगामी	अर्पण	ग्रहण
अति	अल्प	अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अथ	इति	अनागत	विगत
अनुकूल	प्रतिकूल	अधिकृत	अनधिकृत
अर्पण	ग्रहण	अथाह	छिछला
अनिवार्य	वैकल्पिक	अनाथ	सनाथ
अच्युत	च्युत	अविचल	ढुलमुल
अस्त	उदय	अविस्मरणीय	विस्मरणीय
अवनि	अम्बर	अनुराग	विराग
अवनत	उन्नत	अग्रज	अनुज
अनुलोम	प्रतिलोम	अवनि	अम्बर
अमित	परिमित	अस्त्रीकरण	निरस्त्रीकरण
अल्पज्ञ	बहुज्ञ	अस्तित्व	अनस्तित्व
अशक्त	सशक्त	अपना	पराया

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
असीम	ससीम	अपेक्षा	उपेक्षा
अपराधी	निरपराध	अत्यधिक	स्वल्प
अभिसरण	अपसरण	अनुरक्ति	विरक्ति
अवाक्	सवाक्	अर्जन	विर्जन
अग्नि	जल	अवकाश	अनवकाश
अग्र	पश्च	अक्षर	क्षर
अहिंसा	हिंसा	अमर	मर्त्य
अर्वाचीन	प्राचीन	अर्थ	अनर्थ
अल्पमत	बहुमत	अगम	सुगम
अपमान	सम्मान	अग्नि	जल
अज्ञ	विज्ञ	अमृत	विष
अलभ्य	लभ्य	अभ्यास	अनाभ्यास
अच्छा	बुरा	अमावस्या	पूर्णिमा
अधुनातन	पुरातन	अनुग्रह	विग्रह
अशन	अनशन	अनुलोम	प्रतिलोम
असम्भव	सम्भव	अर्वाचीन	प्राचीन
अभ्यस्त	अनभस्त	अधिक	कम
अनुमत	अननुमतु	अक्रूर	क्रूर
अमीर	गरीब	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अन्वय	अनन्वय	अल्प	प्रचुर
अनुक्रिया	प्रतिक्रिया		
		(आ)	
आकाश	पाताल	आकर्षण	विकर्षण
आहार	निराहार	आक्रमण	प्रतिरक्षण
आगत	अनागत	आस्तिक	नास्तिक
आगमी	विगत	आत्मीय	अनात्मीय
आचार	अनाचार	आत्मविश्वास	आत्मसंशय
आदर	अनादर	आलोक	तिमिर
आतुर	अनातुर	आवश्यक	अनावश्यक
आश्रित	अनाश्रित	आरोही	अवरोही
आध्यात्मिक	भौतिक	आय	व्यय
आविर्भाव	तिरोभाव	आयात	निर्यात
आरोहण	अवरोहण	आघात	अनाघात

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
आग्रह	दुराग्रह	आह्वान	विसर्जन
आधार	निराधार	आकीर्ण	विकीर्ण
आग	पानी	आकस्मिक	सामयिक
आशा	निराशा	आचार	अनाचार
आशावादी	निराशावादी	आमिष	निरामिष
आशिष	अभिशाप	आविर्भाव	तिरोभाव
आगमन	प्रस्थान	आनन्दमय	विषादपूर्ण
आकुंचन	प्रसारण	आभ्यांतर	वाह्य
आसक्त	अनासक्त	आर्ष	अनार्ष
आहत	अनाहत	आराध्य	दुराध्य
आस्था	अनास्था	आवर्तक	अनावर्तक
आरुढ़	अनारुढ़	आद्य	अंत्य
आजादी	गुलामी	आज्ञापालन	अवज्ञा
आभ्यन्तर	बाह्य	आरम्भ	अंत
आदर	निरादर	आलसी	कर्मठ
आदिष्ट	निषिद्ध	आहूत	अनाहूत
आदि	अन्त	आमंत्रित	अनामंत्रित
आय	व्यय	आहार्य	अनाहार्य
आवृत	अनावृत	आडम्बर	सादगी
आश्चर्य	अनाश्चर्य	आर्य	अनार्य
आर्द्र	शुष्क	आवश्यक	अनावश्यक
आरम्भ	अन्त		
	(इ)		
इच्छुक	अनिच्छुक	इज्जत	बेइज्जती
इष्ट	अनिष्ट	इधर	उधर
इच्छा	अनिच्छा	इहलोक	परलोक
	(ई)		
ईहा	अनीहा	ईश	अनीश
ईश्वर	अनीश्वर	ईप्सित	अनीप्सित
ईमानदार	बेईमान		
	(उ)		
उत्तम	अधम	उच्च	निम्न
उदय	अस्त	उपयुक्त	अनुपयुक्त

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उपमान	व्यतिरेक	उपादेय	अनुपादेय
उत्तर	दक्षिण	उल्लास	विषाद
उत्थान	पतन	उन्मुख	विमुख
उद्घाटन	समापन	उज्जवल	धूमिल
उत्पत्ति	विनाश	उचित	अनुचित
उन्नयन	पलायन	उस्ताद	चेला
उर्वरा	बंजर	उत्कृष्ट	निकृष्ट
उचित	अनुचित	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उक्त	अनुक्त	उन्मत्त	अवनत
उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उपरि	अद्य
उद्गम	विलय	उद्भव	अवसान
उद्धत	विनत	उदात्त	अनुदात्त
उषा	संध्या	उदार	कृपण
उदार	अनुदार	उचिछष्ट	अनुच्छिष्ट
उत्साह	अनुत्साह	उदित	अस्त
उष्ण	शीतल	उद्वेग	निरुद्वेग
उपमेय	अनुपमेय	उत्तेजन	प्रशमन
उत्कर्ष	अपकर्ष	उपसर्ग	प्रत्यय
उन्मूलन	रोपण	उपस्थित	अनुपस्थित
उधार	नकद	उल्लंघन	अनुल्लंघन
उग्र	सौम्य	उपार्जित	अनुपार्जित
उदयाचल	अस्ताचल	उदग्र	अनुदग्र
उद्यमी	निरुद्यम	उन्मत	अनुन्मत्त
उपयोग	अनुपयोग		
		(ऊ)	
ऊष्मा	शीतलता	ऊँच	नीच
		(ऋ)	
ऋजु	वक्र	ऋण	धन
ऋत	अनृत	ऋद्धि	विपन्न
		(ए)	
एकत्र	विकीर्ण	एक्य	अनैक्य
एक	अनेक	एकाधिकार	सर्वाधिकार
एड़ी	चोटी	एकेश्वरवाद	बहुदेववाद

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
एकाग्र	चंचल	एकार्थक	अनेकार्थक
एकता	अनेकता	एकाग्रचित	अन्यमनस्क
एषणा	अनैषणा	एकपक्षीय	बहुपक्षीय
एकांगी	अनेकांगी		
		(ऐ)	
ऐहिक	पारलौकिक	ऐन्द्री	इन्द्र
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक	ऐच्छिक	अनैच्छिक
		(ओ)	
ओजस्वी	निस्तेज	ओछा	गम्भीर
ओतप्रोत	विहीन	ओह	वाह
		(औ)	
औरत	मर्द	औरस	दत्तक
औपचारिक	अनौपचारिक	औषधि	अनौषधि
औचित्य	अनौचित्य	औदार्य	अनौदार्य
		(क)	
कर्कश	मधुर	कापुरुष	पुरुषार्थी
कलंकित	निष्कलंक	कसूर	बेकसूर
कनिष्ठ	ज्येष्ठ	कानूनी	ग़ैर कानूनी
काद्य	अकादय	कोलाहल	शान्ति
क्रय	विक्रय	क्रस्ट	अक्रस्ट
कुटिल	सरल	कामी	अकाम
कर्मठ	निकम्मा	कुंठित	अकुंठित
कुरूप	सुरूप	कुपथ	सुपथ
कृष्ण	शुक्ल	कुमारी	विवाहिता
काल	अकाल	कल्पनातीत	कल्पनीय
कुशल	अकुशल	कुव्यवस्था	सुव्यवस्था
कृतज्ञ	अकृतज्ञ	कुष्ठ	तीक्ष्ण
कृपण	दाता	कुलीन	अकुलीन
कृपा	अकृपा	कमी	बाहुल्य
कृत	अकृत	कार्य	अकार्य
कुफल	सुफल	करूण	निष्ठुर
कृश	पुष्ट	कटु	मधुर
कुख्यात	विख्यात	कड़ा	मुलायम

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
कुबुद्धि	सुबुद्धि	कपट	निष्कपट
कुकृति	सुकृति	कलयुग	सतयुग
कुलटा	पतिव्रता	कपूत	सपूत
क्रम	व्यतिक्रम	कृतज्ञ	कृतघ्न
कड़वा	मीठा	कोमल	कठोर
कीर्ति	अपकीर्ति	क्रोध	क्षमा
कोप	कृपा	क्रय	विक्रय
क्रोध	क्षमा	कर्मिष्ठता	अकर्मिष्ठता
कल्याण	अकल्याण	कर्मण्य	अकर्मण्य
कायर	साहसी	कीर्ति	अपकीर्ति
कारण	अकारण	कुटिल	सरल
कृपण	फिजूलखर्ची	कुष्ठ	तीक्ष्ण
कृष्ण	श्वेत	कर्षण	विकर्षण
क्रूर	सदय	कुलदीप	कुलांगर
कृत्रिम	प्रकृत	कुसुम	वज्र
	(ख)		
खण्डन	मण्डन	खेद	प्रसन्नता
खिलना	मुरझाना	खाली	भरा
खगोल	भूगोल	खुशकिस्मत	बदकिस्मत
खरीदना	बेचना	खुशमिजाज	बदमिजाज
खग	मृग	खूबसूरत	बदसूरत
खुश	नाखुश	खास	आम
खुला	बन्द	खीझना	रीझना
खल	साधु, सज्जन	ख्यात	कुख्यात
ख्यात	कुख्यात	खाद्य	अखाद्य
खंडन	मंडन	खेचर	भूचर
खर्च	आमदनी	खरा	खोटा
	(ग)		
गणतन्त्र	राजतन्त्र	गहन	विरल
गमन	आगमन	गुप्त	प्रकट
गम्भीर	वाचाल	गर्म	ठण्डा
गगन	पृथ्वी	गमन	आगमन

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
गहरा	छिछला	ग्रहण	त्याग
गति	अवरोध	गूढ़	अगूढ़
गद्य	पद्य	गनाहगार	बेगुनाह
गृही	त्यागी	गम्य	अगम्य
गृहीत	त्यक्त	गीला	सूखा
ग्राम	नगर	ग्राम्य	नागर
गोरी	साँवली	ग्रस्त	मुक्त
गहरा	उथला	ग्रथित	विकीर्ण
गाढ़ा	पतला	ग्रीष्म	वर्षा
गौरव	लाघव	गुरु	लघु
गृहस्थ	संन्यासी	गुण	दोष
गरल	सुधा	गुरुत्व	लघुत्व
गेय	अगेय	गूढ़	प्रकट
गरिमा	लघिमा	गीत	अगीत
गत	आगत	गेय	अगेय
गौरक्षक	गौभक्षक	गोचर	अगोचर
		(घ)	
घर	बाहर	घृणा	प्रेम
घटना	बढ़ना	घोषित	अघोषित
घना	विरल	घात	प्रतिघात
घटक	समुदाय	घना	छितरा
घात	प्रतिघात	घटित	अघटित
घोषित	अघोषित	घरेलू	बाहरी
घोष	निर्घोष, अघोष		

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. अकाल का विलोम ········ होता है।
2. अपमान शब्द के विलोम से आशय है ·········।
3. कल्याण के विलोम शब्द से तात्पर्य ········ है।

17.1.2 विलोमार्थक शब्द छ से श्र तक

नोट

(च)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
चर	अचर	चेतन	अचेतन
चतुर	मूढ़	चिकना	खुरदरा
चढ़ाव	उतार	चोर	साहूकार
चल	अचल	चाहा	अनचाहा
चर्चित	अचर्चित	चैन	बेचैनी
चाटुकार	स्वाभिमानी	चर	अचर
चारु	अचारु	चेस्ट	निश्चेष्ट
चित्र	विचित्र	विरायु	अल्पायु
चिर	अचिर	चल	अचल
चिरंतन	नश्वर	चिर	अचिर
चोर	साधु	चिंत्य	अचिंत्य
चोटी	एड़ी	चिरस्थायी	अल्पस्थायी
चिंतित	निश्चिंत		
	(छ)		
छल	सारल्य	छूत	अछूत
छली	निश्छल	छोटा	बड़ा
छादन	प्रकाशन	छोरा	छोरी
छाया	आतप	छुटकारा	बंधन
छात्र	छात्रा	छांह	धूप
छिन्न	संलग्न		
	(ज)		
जड़	चेतन	जाड़ा	गर्मी
जल	स्थल	जीवन	मरण
जटिल	सरल	जागरण	निद्रा
जन्म	मृत्यु	जागना	सोना
जंगम	स्थावर	ज्येष्ठ	कनिष्ठ
जय	पराजय	ज्वार	भाटा
जाति	विजाति	ज्योति	तम
जागृत	सुप्त	जेय	अजेय
जीत	हार	जीर्ण	अजीर्ण
जड़ता	चेतनता	जातीय	विजातीय
जल	थल	ज़ालिम	रहमदिल

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
जवानी	बुढ़ापा	जाली	असली
जारज	औरस		
		(झ)	
झगड़ा	शान्ति	झूठ	सच
झंकृत	निस्तब्ध	झोपड़ी	महल
झंझा	तूफान		
		(ट)	
टल	अटल	टीका	भाष्य
टकसाली	सामान्य	टूटना	जुड़ना
		(ठ)	
ठहरना	जाना	ठीक	गलत
ठंडा	गर्म	ठोस	तरल
		(ड)	
डर	निडर	डाल	पत्ती
		(ढ)	
ढंग	कुढंग/बेढंग	ढाढस	त्रास
ढरना	रुकना	ढाल	तलवार
ढालू	समतल	ढीठ	विनम्र
		(त)	
तरल	ठोस	तिमिर	प्रकाश
तरुण	वृद्ध	तप्त	शीतल
तट	मझधार	तृषा	तृप्ति
तल	अतल	ताजा	बासी
तन्वी	स्थूल	तीक्ष्ण	कुंठित
तन्द्रा	जागरण	तीव्र	मन्द
तृष्णा	वितृष्णा	तुलनीय	अतुलनीय
तर्कपूर्ण	कुतर्कपूर्ण	तुच्छ	महत्वपूर्ण
तृप्त	अतृप्त	तेज	धीमा
व्यक्त	ग्रहीत	तेजस्वी	निस्तेज
		(थ)	
थकावट	स्फूर्ति	थोक	फुटकर
थोड़ा	बहुत		

नोट

(द)

दयालु	निर्दयी	दुराचारी	सदाचारी
दृश्य	अदृश्य	दक्ष	अदक्ष
दृढ़	अदृढ़	दुर्गति	सुगति
दक्षिण	उत्तर	दुश्कर	सुकुर
दरिद्र	सम्पन्न	द्वैत	अद्वैत
दानी	कृपण	दुर्लभ	सुलभ
दिवा	रात्रि	द्वेष	सद्भावना
दीर्घायु	अल्पायु	देशभक्त	देशद्रोही
दीर्घ	लघु	दुरुप्राप्य	सुप्राप्य
दुर्बल	सबल	दाखिल	खारिज
देनदार	लेनदार	दीर्घ	ह्रस्व
दंड	पुरस्कार	दुष्ट	सज्जन
दैत्य	देव	दुराचार	सदाचार
दाता	सूम	देह	विदेह
द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व	देव	दानव
दुर्जन	सज्जन	देय	अदेय
दुष्ट	भला	देन	लेन
दूषित	स्वच्छ	देर	सवेर
दिव्य	अदिव्य		

(ध)

धरा	गगन	ध्रुव	अस्थिर
धवल	श्याम	धैर्य	अधैर्य
धनी	निर्धन	धर्म	अधर्म
धर्म	अधर्म	धनात्मक	ऋणात्मक
ध्वंस	निर्माण	धीर	अधीर
धीरता	अधीरता	धृष्ट	विनीत या विनम्र

(न)

नगद	उधार	न्याय	अन्याय
नश्वर	अनश्वर	न्यून	अधिक
नख	शिख	नागरिक	ग्रामीण
नवीन	प्राचीन	नर	नारी
नया	पुराना	निर्गुण	सगुण
निषिद्ध	विहित	निराशा	आशा

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
निश्चल	चंचल	निरोगी	रोगी
निकट	दूर	निशुल्क	सशुल्क
निरर्थक	सार्थक	निर्भय	भयभीत
निष्काम	सकाम	निर्दोष	सदोष
निर्मल	मलिन	नूतन	पुरातन
नत	उन्नत	निर्माण	विनाश
निरक्षर	साक्षर	निर्मल	मलिन
निरामिष	सामिष	निडर	कायर
नियमित	अनियमित	निर्धनता	धनाढ्यता
नियंत्रित	अनियंत्रित	निंदा	स्तुति
निर्भीक	भयभीत	निश्चित	अनिश्चित
निर्लज्ज	सलज्ज	नित्य	अनित्य
निष्ठा	अनिष्ठा	निर्दय	सदय
न्यायी	अन्यायी	नीरुजता	रुग्णता
नीति	अनीति	नेकी	बदी
न्यून	अधिक	नैतिक	अनैतिक
नीरस	सरस	नैसर्गिक	अनैसर्गिक
निर्दिष्ट	अनिर्दिष्ट		

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. प्रख्यात शब्द का विलोम है।

   (*a*) विख्यात (*b*) अख्यात

   (*c*) कुख्यात (*d*) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. खुशमिजाज़ शब्द का अर्थ है।

   (*a*) बदनसीब (*b*) बतदमीज़

   (*c*) बदअख्लाक (*d*) बदमिजाज़

6. गति शब्द का विलोम क्या है?

   (*a*) विरोध (*b*) क्षतिरोध

   (*c*) अवरोध (*d*) उपरोक्त में से कोई नहीं

(प)			
पंडित	मूर्ख	परुष	कोमल
परिचित	अपरिचित	परतंत्र	स्वतंत्र

नोट

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
प्रकट	गुप्त	परिश्रम	विश्राम
प्रवेश	निकास	पारितोष	दंड
परमार्थ	स्वार्थ	परा	अपरा
परार्थ	स्वार्थ	पेय	अपेय
पक्षपाती	निष्पक्ष	पूरा	अधूरा
पसन्द	नापसन्द	पैना	भोथरा
प्रसारण	संकुचन	पूर्ववर्ती	परवर्ती
प्रफुल्ल	म्लान	परिहार्य	अपरिहार्य
प्रगति	प्रतिगमन	परार्थ	स्वार्थ
पक्का	कच्चा	पटु	अपटु
परोक्ष	प्रत्यक्ष	पतन	उत्थान
प्रोत्साहित	हतोत्साहित	परिष्कृत	अपरिष्कृत
प्रधान	गौण	पार्थिव	अपार्थिव
प्रशंसा	निन्दा	पाक	नापाक
प्रत्यय	अप्रत्यय	पापी	निष्पाप
प्रभु	भृत्य	पूत	कपूत
पवित्र	अपवित्र	पूर्ण	अपूर्ण
पुरोगामी	पश्चगामी	प्रगल्भ	अप्रगल्भ
परिमित	अपरिमित	प्रतिष्ठा	अप्रतिष्ठा
परिणत	अपरिणत	प्राय:	बहुधा
परोक्ष	अपरोक्ष	प्रीति	द्वेष
पाच्य	अपाच्य	प्रौढ़	अप्रौढ़
पठित	अपठित	प्रतिपन्न	अप्रतिपन्न
परिग्रही	अपरिग्रही	प्राकृतिक	अप्राकृतिक

क्या आप जानते हैं विलोमार्थक शब्दों को विपर्यावाची, विपरीतार्थक, प्रतिलामार्थक और विलोम शब्द भी कहते हैं।

पोषित	अपोषित	पक्ष	विपक्ष
पृथक	संयुक्त	पात्र	कुपात्र
प्रजातंत्र	राजतंत्र	प्राचीन	आधुनिक
पदोन्नत	पदावनत	पावन	अपावन

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
प्रवेश	निर्गम	पाठ्य	अपाठ्य
प्रकाश	अंधकार	पालक	घातक
प्रतीची	प्राची	पारदर्शक	अपारदर्शक
प्रगतिशील	अप्रगतिशील	पिता	माता
प्रावैगिक	स्थैतिक	पुरस्कार	दंड
प्रगति	प्रतिगमन	पूर्ण	अपूर्ण
प्रशस्त	अप्रशस्त	पूर्णता	अभाव
प्रशिक्षित	अप्रशिक्षित	पूर्व	पश्चिम
प्रलय	सृष्टि	पौष्टिक	अपौष्टिक
प्रच्छन्न	अप्रच्छन्न	पूर्व (पहला)	उत्तर (बाद का)
प्रकृत	अप्रकृत	पूर्णिमा	अमावस्या
प्रतिबद्ध	अप्रतिबद्ध	पौरस्तय	पाश्चात्य
प्रत्याशित	अप्रत्याशित		

(फ)

फल	अफल	फूल	काँटा
फाटक	हाटक	फुल्ल	म्लान
फैलना	सिकुड़ना	फिरना	स्थिर
फायदा	नुकसान		

टास्क विलोम शब्द की परिभाषा दीजिए और भाषा में भावों-विचारों की स्पष्टता के लिए विलोम शब्द का ज्ञान क्यों उपयोगी होता है? उल्लेख कीजिए।

(ब)

बलवान	बलहीन	बंधन	मोक्ष
बलिष्ठ	दुर्बल	वृहत	लघु
बचपन	यौवन	बहिष्कार	स्वीकार
बड़ा	छोटा	बहिरंग	अंतरंग
बहुत	थोड़ा	बंध्या	स्वीकार
बढ़िया	घटिया	बोध्य	अबोध्य
बर्बर	सभ्य	बेडौल	सुडौल
बहुतायत	कमी	बिम्ब	प्रतिबिम्ब
बेमेल	संगत	बुढ़ापा	जवानी
बाधित	अबाधित	बुद्धिमान	मूर्ख

नोट

बंधुत्व	शत्रुत्व	बुराई	भलाई
बाढ़	सूखा	बोध	अबोध
बाहर	भीतर		

(भ)

भगवान	भगवती	भोला	चालाक
भय	साहस	भीषण	सौम्य
भव्य	अभव्य	भग्न	अभग्न
भद्र	अभद्र	भंगुर	अभंगुर
भक्ष्य	अभक्ष्य	भोग्य	अभोग्य
भंजक	योजक	भक्त	अभक्त
भारी	हल्का	भलाई	बुराई
भाग्य	दुर्भाग्य	भिन्न	अभिन्न
भाव	अभाव	भूत	भविष्य
भयभीत	निर्भय	भूगोल	खगोल
भीड़	छीड़	भोगी	योगी
भ्रांत	निभ्रांत	भोज्य	अभोज्य
भूषण	दूषण	भौतिक	आध्यात्मिक
भावी	अतीत	भाई	बहिन

(म)

महात्मा	दुरात्मा	मनुज	दनुज
मन्द	त्वरित	मौखिक	लिखित
मधु	तिक्त	मित	अपरिमित
मनोरम	असुन्दर	मानवीय	अमानवीय
मधु	कटु	मुसीबत	आराम
ममता	निर्ममता	मुख	प्रष्ठ
मानव	दानव	मार्जित	अमार्जित
मानवीय	अमानवीय	मूढ़	ज्ञानी
मानवता	दानवता, नृशंसता	मुनाफा	नुकसान
मालिक	नौकर	मृदुल	कठोर
मिलन	विरह	मिथ्या	सत्य
महीन	मोटा	मैत्री	अमैत्री
मत	विमत	मिश्रित	अमिश्रित
मस्त्रण	रूक्ष	मूर्त	अमूर्त
मेहमान	मेजबान	मित्र	शत्रु
मितव्ययिता	अमितव्ययिता	मूल	निर्मूल
मीठा	कड़वा	मूल्यवान	मूल्यहीन
मुदित	खिन्न	मौन	मुखर

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
मुसीबत	आराम	मोक्ष	बन्धन
मूक	वाचाल		
		(य)	
यश	अपयश	योग्यता	अयोग्यता
यति	गृहस्थ	यौवन	बुढ़ापा
यथार्थ	कल्पित	योग्य	अयोग्य
याद	भूल	योग	वियोग
युद्ध	शान्ति	याचक	अयाचक
योगी	भोगी		

नोट्स भाषा में भावों–विचारों की स्पष्टता के लिए विलोम शब्द का ज्ञान उपयोगी होता है।

		(र)	
रत	विरत	रूढ़िबद्ध	रूढ़िमुक्त
रक्षक	भक्षक	रूक्ष	मृदु
रचना	ध्वंस	रौद्र	अरौद्र
राग	विराग	रद्द	बहाल
राजा	रंक/प्रजा	रीता (खाली)	भरा
राक्षस	देवता	रूदन	हास्य
रोगी	नीरोगी		
रहमदिल	बेरहम	राहत	प्रकोप
राजतंत्र	जनतंत्र	रिक्त	पूर्ण
रागी	विरागी	रूप	कुरूप
		(ल)	
लक्ष्य	अलक्ष्य	लौकिक	पारलौकिक
लघु	दीर्घ	ललित	कुरूप
लचीला/लचकीला	कठोर	लाघव	गौरव
लम्बाई	चौड़ाई	लुप्त	व्यक्त
लाभ	हानि	लोहित	अलोहित
लिप्त	निर्लिप्त	लापरवाह	सावधान
लिखित	मौखिक	लुभावना	घिनौना
लेन	देन	लक्षित	अलक्षित
लोक	परलोक		

नोट

(व)

वर्तमान	भूत	वन	मरु
वंद्य	निंद्य	विश्लेषण	संश्लेषण
व्यस्त	अव्यस्त	व्यास	समास
व्यक्तिगत	सार्वभौम	वनस्थल	मरुस्थल
वाद	प्रतिवाद	विरत	निरत
विकारी	अविकारी	विशालकाय	क्षीणकाय
विपुल	स्वल्प	विदग्ध	अविदग्ध
विजय	पराजय	विचारित	अविचारित
विकास	ह्रास	विबुध	अविबुध
विशाल	क्षुद्र	विकृत	अविकृत
विशेष	साधारण	वसंत	पतझड़
विनत	उद्दण्ड	विकल	अविकल
विभव	पराभव	विद्यमान	अविद्यमान
वर	वधू	वर्ण्य	अवर्ण्य
विधवा	सधवा/सुहागिन	विभक्त	अविभक्त
विपन्न	सम्पन्न	विहित	अविहित
विदाई	स्वागत	वैदिक	अवैदिक
व्यष्टि	समष्टि	विश्वसनीय	अविश्वसनीय
विचलित	अविचलित	विलम्ब	अविलम्ब
विज्ञ	अविज्ञ	विनीत	धृष्ट
विपद	सपद	विस्तारण	संक्षेपण
विरल	सुलभ	विश्वास	अविश्वास
विराट	क्षुद्र	विस्मरण	स्मरण
व्याप्त	अव्याप्त	विषाद	हर्ष
व्यग्र	अव्यग्र	विशिष्ट	सामान्य
वैमनस्य	सौमनस्य	वीर	कायर
विश्वस्त	अविश्वस्त	विधि	निषेध
विस्तीर्ण	अविस्तीर्ण	विद्वान	मूर्ख
व्यवहृत	अव्यवहृत	वेदना	परमानन्द

(श), (ष), (श्र)

शकुन	अपशकुन	शयन	जागरण
शब्द	नि:शब्द	शान्ति	अशान्ति
शक्ति	क्षीणता	शायद	अवश्य

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
शरण	अशरण	शासक	शासित
शत्रुता	मित्रता	शालीन	धृष्ट
शस्त्र	अस्त्र	शिख	नख
शिष्ट	अशिष्ट	शोषक	पोषक
शिक्षित	अशिक्षित	शोभनीय	अशोभनीय
शिक्षा	अशिक्षा	शिष्ट	अशिष्ट
शिखर	तल	शीर्ष	तल
शिष्य	गुरु	शाप	वरदान
शीतल	ऊष्ण	श्लील	अश्लील
शुभ	अशुभ	शर्मदार	बेशर्म
शुद्धि	अशुद्धि	शुष्क	सरस
शुक्ल	कृष्ण	शूर	भीरु
शुल्क	नि:शुल्क	श्लाघा	निन्दा
शुचि	अशुचि	श्वास	उच्छ्वास
शेष	अशेष	शोहरत	बदनामी
शोभन	अशोभन	शोधित	अशोधित
	(स)		
संगत	असंगत	सहयोगी	प्रतियोगी
संपद्	विपद्	स्वदेश	विदेश
संकोच	नि:संकोच	सज्जन	दुर्जन
संयोग	वियोग	सत्कर्म	दुष्कर्म
संश्लिष्ट	विश्लिष्ट	स्थावर	जंगम
संत	असंत	सगुण	निर्गुण
संधि	विग्रह	सृजन	विनाश
सपूत	कपूत	सत	असत
सक्षम	अक्षम	स्थूल	सूक्ष्म
सभ्य	असभ्य	स्वामी	सेवक
सम्पन्न	विपन्न	स्वार्थी	परार्थी
सत्कार	तिरस्कार	स्वर्ग	नरक
शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
सबल	दुर्बल	स्पष्ट	अस्पष्ट
समावेश	अनावेश	संकल्प	विकल्प

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सनाथ	अनाथ	स्वजाति	विजाति
सनातनी	प्रतिवादी	स्वीकृति	अस्वीकृति
ससीम	असीम	सामयिक	असामयिक
सदाचार	दुराचार	सामिष	निरामिष
सरल	कठिन	साहस	भय
सवर्ण	असवर्ण	सात्विक	तामसिक
समूल	निर्मूल	साक्षर	निरक्षर
सत्य	झूठ/असत्य	साहचर्य	पृथक्करण
स्थिर	चंचल	सन्निविष्टन	निस्तारण
सित	असित	सातत्य	असातत्य
सुकृति	कुकृति	स्वदेशी	विदेशी
सुदूर	निकट	सुनाम	दुर्नाम
सुमार्ग	कुमार्ग	सुमुख	दुर्मुख
सुपथ	कुपथ	सेवित	असेवित
सुन्दर	असुन्दर	स्तब्ध	अस्तब्ध
सुपात्र	कुपात्र	सुसाध्य	दु:साध्य
सुशील	दु:शील	सुसंगति	कुसंगति
सुगन्ध	दुर्गन्ध	स्खलित	अस्खलित
सुधा	गरल	स्थिरचित्त	अस्थिरचित्त
सूक्ष्म	स्थूल	सुसमय	कुसमय
सुलभ	दुर्लभ	सुलक्षण	कुलक्षण
सौम्य	उग्र	सुकाल	दुष्काल
सचेत	अचेत	सुगति	दुर्गति
सजल	निर्जल	सुधार्य	असुधार्य
सुरीति	कुरीति	सैद्धान्तिक	असैद्धान्तिक
सूक्ष्म	स्थूल	स्पर्धा	सहयोग
स्पृश्य	अस्पृश्य	स्मरणीय	विस्मरणीय
सुबोध	दुर्बोध	स्वाभाविक	अस्वाभाविक
सौभाग्य	दुर्भाग्य	स्वार्थ	परमार्थ
स्थिर	अस्थिर	सुखांत	दुखांत
सुमति	कुमति	सुफल	कुफल
सुर	असुर	स्याह	सफेद
सुप्रबन्ध	कुप्रबन्ध	स्निग्ध	अस्निग्ध

नोट

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
समावेशन	अनावेशन	स्थैर्य	अस्थैर्य
स्वर्ग	नर्क	स्वावलम्बी	परावलम्बी
सन्तोष	असन्तोष		
		(ह)	
हर्ष	विषाद	हमदर्द	बेदर्द
हमारा	तुम्हारा	हत	अहत
हँसना	रोना	हिंसा	अहिंसा
ह्रस्व	दीर्घ	हास	रूदन
हित	अहित	ह्रास	वृद्धि
हेय	ग्राह्य	हार	जीत
होनी	अनहोनी	हानि	लाभ
		(क्ष)	
क्षर	अक्षर	क्षति	लाभ
क्षमा	दण्ड	क्षणिक	शाश्वत
		(त्र)	
त्रिकोण	षट्कोण	त्रिकुटी	भृकुटी
		(ज्ञ)	
ज्ञान	अज्ञान	ज्ञानी	मूढ़/मूर्ख
ज्ञेय	अज्ञेय	ज्ञात	अज्ञात
		(श्र)	
श्राप	आशीर्वाद	श्रोता	वक्ता
श्रद्धा	अश्रद्धा	श्रवण	दर्शन
श्रीमान	श्रीमति		

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. जीवन शब्द का विलोम कहलाएगा मरण।
8. देनदार शब्द का विलोम है कर्जदार।
9. नीरस शब्द का विलोम होगा सरस।

नोट

17.2 सारांश (Summary)

- भाषा में भावों-विचारों की स्पष्टता के लिए विलोम शब्द का ज्ञान उपयोगी होता है; जैसे–**अवरोह** शब्द का 'पतन' नीचे गिरना' की अपेक्षा **आरोह** शब्द अर्थात् उल्टा कहने से अर्थ की प्रतीति और भी स्पष्टता से हो जाती है। इस प्रकार विलोम शब्दों के प्रयोग से भाषा में अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ जाती है। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु विलोमार्थक शब्दों की सूची प्रस्तुत है।

17.3 शब्दकोश (Keywords)

अकाल : सूखा पड़ना

आजादी : स्वतंत्रता

शत्रुता : दुश्मनी

17.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. भाषा में भावों-विचारों की स्पष्टता के लिए विलोम शब्द का ज्ञान क्यों उपयोगी होता है?
2. विलोम शब्द क्या है और इनका भाषा में भावों-विचारों में क्या महत्त्व है?
3. विलोम शब्द का अर्थ और उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. सुकाल	2. सम्मान	3. अकल्याण
4. (*a*)	5. (*a*)	6. (*c*)
7. सही	8. गलत	9. सही

17.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–18: पर्यायवाची शब्द

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)
प्रस्तावना (Introduction)
18.1 पर्यायवाची शब्द
18.1.1 पर्यायवाची शब्द भाग-1
18.1.2 पर्यायवाची शब्द भाग-2
18.2 सारांश (Summary)
18.3 शब्दकोश (Keywords)
18.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)
18.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- पर्यायवाची शब्दों का उपयोग जानने में।
- पर्यायवाची शब्द व्यवहार में क्यों प्रचलित हैं जानने हेतु।
- इन शब्दों के प्रयोग से भाषा में पूर्ण अभिव्यक्ति कैसे आती है को जानने में।
- भाषा में समानार्थक शब्दों के अभाव को जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

पर्याय का अर्थ है– समान। अत: समान अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द (Synonyms words) कहते हैं। इन्हें प्रतिशब्द या समानार्थक शब्द भी कहा जाता है। व्यवहार में पर्याय या पर्यायवाची शब्द ही अधिक प्रचलित हैं। अंग्रेजी व्याकरणकार **Nesfield** ने लिखा है–

"A world having the same or nearly the same meaning as another."

अर्थात् वे शब्द, जिनसे समान अथवा लगभग समान अर्थ का बोध होता है, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

पर्यायवाची शब्द किसी भी भाषा की सबलता के प्रतीक हैं, जिस भाषा में जितने अधिक पर्यायवाची शब्द होंगे, वह उतनी ही सबल व सशक्त भाषा होगी। इस दृष्टि से संस्कृत सर्वाधिक सम्पन्न भाषा है। कहा जाता है कि संस्कृत में 'राजा' शब्द के एक हजार से भी अधिक पर्यायवाची हैं। इसी प्रकार 'सारंग' शब्द के पचास से ऊपर शब्द बन सकते हैं। भाषा में इन शब्दों के प्रयोग से पूर्ण अभिव्यक्ति की क्षमता आती है, साथ ही भाषा में वह आकर्षिण और

लालित्य आ जाता है जो वक्ता और श्रोता, दोनों के लिए ही अनिवार्य है। जिस भाषा में समानार्थक शब्दों का अभाव होगा, उसमें अभिव्यक्ति का सौन्दर्य नहीं होगा और न वह पुनरुक्ति दोष मुक्त हो पाएगी।

नोट

18.1 पर्यायवाची शब्द

18.1.1 पर्यायवादी शब्द भाग-1

विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए पर्यायवाची शब्दों की सूची प्रस्तुत है–

अंक – संख्या, गिनती, क्रमांक, निशान, चिह्न, छाप।

अंकमाल – अंकवार, आलिंगन, प्रेमालिंगन।

अंकुर – कोंपल, अँखुवा, कल्ला, नवोद्भिद्, कलिका, गाभ, कली, अंकुड़ा।

अंकुश – प्रतिबन्ध, रोक, दबाव, रुकावट, नियन्त्रण।

अंग – अवयव, अंश, कला, हिस्सा, भाग, खण्ड, उपांश, घटक, टुकड़ा।

अगाध – अथाह, गम्भीर, गहन, गहरा, असीम, अपार।

अग्नि – आग, अनल, पावक, जातवेद, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन, रोहिताश्व, वायुसुख, हव्यवाहन।

अंचल – पल्लू, छोर, क्षेत्र, अंत, प्रदेश, आँचल, किनारा।

अचानक – अकस्मात्, अनायास, एकाएक, दैवयोग।

अच्छा – उचित, उपयुक्त, ठीक, सही, बढ़िया, चोखा, बेहतर।

अजनबी – अपरिचित, अनजान, अज्ञात, गैर, नावाकिफ, अनभिज्ञ।

अटल – अडिग, स्थिर, पक्का, दृढ़, अचल, निश्चल।

अठखेली – कौतुक, क्रीड़ा, खेल-कूद चुलबुलापन, उछल-कूद, हँसी-मजाक।

अमृत – अमिय, पीयूष, अमी, मधु, सोम, सुधा, सुरभोग।

अयोग्य – व्यर्थ, बेकार, अनर्ह, योग्यताहीन, नालायक।

अर्थ – अभिप्राय, प्रयोजन, धन, निमित्त, प्रकार, फल, अभिलाषा।

अरुण – गरुड़, लाल रंग, लड़का, मजीठ।

अर्जुन – भारत, गुडाकेश, पार्थ, श्वेत कनेर, सहस्त्रर्जुन धनन्या।

अलसेट – विलम्ब, देर, ढिलाई, विघ्न, धोखाधड़ी, अड़चन, हेराफेरी।

अल्हड़ – अकुशल, अनुभवहीन, उजड्ड, उद्धत, गंवार, अनाड़ी।

अवज्ञा – अनादर, तिरस्कार, अवमानना, अपमान, दूतक।

अश्व – घोड़ा, तुरंग, हय, बाजि, सैन्धव, घोटक, बछेड़ा।

असुर – रजनीचर, निशाचर, दानव, दैत्य, राक्षस, दनुज, यातुधान।

अड्डा – निवास, डेरा, वेश्यालय, रहने का स्थान।

अड़ंगा – रुकावट, विघ्न, अवरोध, व्यवधान।

अतिथि – मेहमान, पहुँना, अभ्यागत, रिश्तेदार, नातेदार, आगन्तुक।

अतीत – पूर्वकाल, भूतकाल, विगत, गत।

नोट

अनाज	–	अन्न, शस्य, धान्य, गल्ला, खाद्यान्न।
अनाड़ी	–	नौसिखिया, अनजान, अनभिज्ञ, अज्ञानी, अकुशल, अदक्ष, अपटु, मूर्ख, अल्पज्ञ।
अनार	–	सुनील, वल्कफल, मणिबीज, बीदाना।
अनिष्ट	–	बुरा, अपकार, अहित, नुकसान, हानि, अमंगल।
अनुकम्पा	–	दया, कृपा, मेहरबानी।
अनुमान	–	अन्दाज, अटकल, कयास।
अनुरक्त	–	मग्न, व्यस्त, तल्लीन, आसक्त।
अनुपम	–	सुन्दर, अतुल, अपूर्व अद्वितीय, अनोखा, अप्रतिम्, अद्‌भुत, अनूठा।
अनुष्ठान	–	तप, योग, तपस्या, योगाभ्यास, साधन कार्यारम्भ।
अनुसरण	–	नकल, अनुकृत, अनुगमन।
अपमान	–	अनादर, निरादर, बेइज्जती।
अप्सरा	–	परी, देवकन्या, अरुणप्रिया, सुखवनिता, देवांगना, स्वर्वेश्या।
अबाध	–	अनिवारित, निर्विध्न, बाधारहित, अपार, असीम, निरंकुश।
अभय	–	निडर, साहसी, निर्भीक, निर्भय, निश्चिन्त।
अभागा	–	बदनसीब, भाग्यहीन, बदकिस्मत, कर्महीन।
अभाव	–	कमी, तंगी, न्यूनता, अपूर्ति।
अभिजात	–	कुलीन, सुजात, खानदानी।
अभिप्राय	–	प्रयोजन, आशय, तात्पर्य, मतलब, अर्थ, मंतव्य, विचार।
अभिज्ञ	–	जानकार, विज्ञ, परिचित, ज्ञाता।
अभिमान	–	गौरव, गर्व, नाज, घमंड, दर्प, स्वाभिमान।
अभियोग	–	दोषारोपण, कसूर, अपराध, गलती।
अभिलाषा	–	कामना, मनोरथ, इच्छा, आकांक्षा, ईहा, ईप्सा, चाह, लालसा, मनोकामना।
अभिवादन	–	नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत, राम-राम।
अभ्यास	–	रियाज़, पुनरावृत्ति, दोहराना, मश्क।
अमर	–	मृत्युंजय, अविनाशी, अनश्वर, अक्षर, अक्षय।
अमीर	–	धनी, धनाढ्य, सम्पन्न, धनवान, पैसेवाला।
अशोक	–	ताम्रपल्लव, हेमपुष्पक, कर्णपूरक, पिण्डपुष्पक, रक्तपल्लव, अँगनाप्रिय।
अनंत	–	असंख्य, अपरिमित, अगणित, बेशुमार।
अज्ञानी	–	अनभिज्ञ, अनजान, मूर्ख, मूढ़।
अगुआ	–	अग्रणी, सरदार, मुखिया, प्रधान, नायक।
अधर	–	रदन, छद, रदपुट, होंठ, ओष्ठ।
अध्यापक	–	आचार्य, शिक्षक, गुरू, व्याख्याता, अवबोधक।
अंधकार	–	तम, तिमिर, ध्वान्त।

नोट

अनल	–	धूमकेतु, पावक, कृशानु, हुताशन।
अघाना	–	छकना, तृप्त होना, संतुष्ट होना, पेट भरना।
अनुरूप	–	अनुकूल, संगत, अनुसार, मुआफिक।
अपकार	–	अनिष्ट, अमंगल, अहित।
आतुर	–	बेचैन, अधीर, उद्विग्न, आकुल।
अधिकार	–	सामर्थ्य, अर्हता, क्षमता, योग्यता।
अनोखा	–	विलक्षण, अनोखा, अद्भुत, अनूठा विचित्र।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. अंकवार, आलिंगन, प्रेमालिंग का पर्यायवाची शब्द है ....।
2. .... के पर्यायवाची हैं व्यर्थ, बेकार, अनर्ह, योग्यताहीन, नालायक।
3. विलक्षण, अनोखा, अद्भुत, अनूठा, विचित्र का पर्यायवाची शब्द है ....।

18.1.2 पर्यायवाची शब्द भाग-2

अन्तःपुर	–	रनिवास, भोगपुर, जनानखाना।
अदृश्य	–	अंतर्धान, तिरोहित, ओझल, लुप्त।
अकाल	–	भुखमरी, काल, कुकाल, दुष्काल, दुर्भिक्ष।
अशुद्ध	–	दूषित, गंदा, अपवित्र, अशुचि।
असभ्य	–	अभद्र, अविनीत, अशिष्ट, गँवार, उजड्ड।
अभिप्राय	–	आशय, तात्पर्य, उद्देश्य, मंशा।
अनुपम	–	अतुल, अपूर्व, अप्रतिम, निरूपम, अद्वितीय, बेजोड़।
अधम	–	नीच, निकृष्ट, पतित।
अवज्ञा	–	तिरस्कार, अवहेलना, अवमान, तौहीन।
अतीत	–	विगत, व्यतीत, गत, गुजरा हुआ, बीता हुआ।
अनिश्चित	–	भ्रामक, संदिग्ध, अनिर्णीत, भ्रामक।
अपकीर्ति	–	अपयश, बदनामी, निंदा अकीर्ति।
अध्ययन	–	अनुशीलन, पारायण, पठनपाठन।
अनुरोध	–	अभ्यर्थना, प्रार्थना, विनती, याचना, निवेदन।
अखंड	–	पूर्व, समस्त, सम्पूर्ण, अविभक्त समूचा, पूरा।
अपराधी	–	मुजरिम, दोषी, कसूरवार, सदोष।
अधीन	–	आश्रित, मातहत, निर्भर, पराश्रित, पराधीन।
अनुचित	–	नाजायज, गैरवाजिब, बेजा, अनुपयुक्त, अयुत।

नोट

अन्वेषण	–	अनुसंधान, गवेषण, खोज, जाँच।
अनबन	–	विवाद, झगड़ा, तकरार, बखेड़ा।
अमूल्य	–	अनमोल, बहुमूल्य, मूल्यवान, बेशकीमत।
अवनति	–	अपकर्ष, गिराव, घटाव, ह्रास।
अश्लील	–	अभद्र, अधिभ्रष्ट, बेशर्म असभ्य।
आकुल	–	व्यग्र, बेचैन, क्षुब्ध, बेकल।
आक्षेप	–	अभियोग, आरोप, दोषारोपण, इल्जाम।
आकृति	–	आकार, चेहरा-मोहरा, नैन-नक्श, डील-डौल।
आदर्श	–	प्रतिरूप, प्रतिमान, स्टैंडर्ड, मानक।
आलसी	–	ठलुआ, सुस्त, निकम्मा, काहिल।
आयुष्मान	–	चिरायु, दीर्घायु, शतायु, दीर्घजीवी।
आज्ञा	–	आदेश, निदेश, फरमान, हुक्म।
आश्रय	–	सहारा, आधार, भरोसा, अवलंब, प्रश्रय।
आख्यान	–	कहानी, वृतांत, कथा, किस्सा।
आचार्य	–	प्राध्यापक, प्रिंसीपल, गुरु, पंडित, प्रोफेसर।
आधुनिक	–	अर्वाचीन, नूतन, नव्य, वर्तमानकालीन।
आवेग	–	तेजी, स्फूर्ति, जोश, त्वरा, चपलता।
आलोचना	–	समीक्षा, टीका, टिप्पणी, नुक्ताचीनी।
आरम्भ	–	श्रीगणेश, शुरूआत, सूत्रपात, उपक्रम।
आराम	–	विश्राम, विश्रांति सुख, चैन, करार।
आवश्यक	–	अनिवार्य, अपरिहार्य, जरूरी बाध्यकारी।
आदि	–	पहला, प्रथम, आरम्भिक, आदिम।
आचरण	–	व्यवहार, बरताव, सदाचार, शिष्टाचार।
आपत्ति	–	विपदा, मुसीबत, आपदा, विपत्ति।
अरण्य	–	जंगल, कान्तार, विपिन, वन, कानन।
आकाश	–	नभ, अम्बर, अन्तरिक्ष, आसमान, व्योम, गगन, दिव, द्यौ, पुष्कर, शून्य।
आचरण	–	चाल, चलन, चरित्र, व्यवहार, आदत, बर्ताव।
आडम्बर	–	पाखण्ड, ढकोसला, ढोंग, प्रपंच, दिखावा।
आँख	–	अक्षि, नयन, नेत्र, लोचन, दृग, चक्षु, अक्षि।
आँगन	–	प्रांगण, बगर, बाखर, अजिर, अँगना, सहन।
आम	–	रसाल, आम्र, फलराज, पिकबन्धु, सहकार, अमृतफल।
आनन्द	–	आमोद, प्रमोद, विनोद, उल्लास, प्रसन्नता, हर्ष, सुख।
आराम	–	विश्राम, चैन, राहत, विश्रान्ति, शान्ति।

आशा	–	उम्मीद, तवक्का, आस।
आशीर्वाद	–	आशीष, दुआ, शुभाशीष।
आश्चर्य	–	अचम्भा, अचरज, विस्मय, ताज्जुब।
आहार	–	भोजन, खुराक, खाना, भक्ष्य।
आस्था	–	मान, कदर, महत्त्व, आदर।
इंदिरा	–	लक्ष्मी, रमा, श्री, कमला।
इच्छा	–	लालसा, कामना, चाह, मनोरथ, ईहा, ईप्सा, आकांक्षा, अभिलाषा मनोकामना।
इन्द्र	–	महेन्द्र, सुरेन्द्र, सुरेश, पुरन्दर, देवराज, मधवा, पाकरिपु, पाकशासन पुरहूत।
इन्द्राणी	–	शची, इन्द्रवधू, महेंद्री, इन्द्रा, पौलोमी।
इठलाना	–	इतराना, अकड़ना, ऐंठना, शान दिखाना, टशन दिखाना।
इन्कार	–	स्वीकृति, निषेध, प्रत्याख्यान।
इच्छुक	–	अभिलाषी, लालायित, उत्कंठित, आतुर।
इशारा	–	संकेत, इंगित, निर्देश।
इन्द्रधनुष	–	सुरचाप, इन्द्रधनु, शक्रचाप, सप्तवर्णधनु।
ईख	–	गन्ना, ऊख, रसडंड, रसाल, पेंडी रसद।
ईमानदार	–	सच्चा, निष्कपट, सत्यनिष्ठ, सत्यपरायण।
ईश्वर	–	पारमात्मा, परमेश्वर, ईश, ओ३म्, ब्रह्म, अलख, अनादि, अज अगोचर, जगदीश।
ईर्ष्या	–	मत्सर, डाह, जलन, कुढ़न।
उचित	–	ठीक, सम्यक्, सही, उपयुक्त।
उत्कर्ष	–	उन्नति, उत्थान, अभ्युदय, उन्मेष।
उत्पत्ति	–	पैदाइश, उद्‌भव, जन्म।
उत्पात	–	दंगा, उपद्रव, फसाद, हुड़दंग, गड़बड़।
उत्सव	–	समारोह, आयोजन, पर्व।
उत्साह	–	जोश, उमंग, हौसला, उत्तेजना।
उत्सुक	–	आतुर, उत्कंठित, व्यग्र, उत्कर्ण, रुचि, रुझान।
उदार	–	सदय, उदात्त, सहृदय।
उदास	–	उन्मन, विमनस्क, खिन्न।
उदाहरण	–	मिसाल, नमूना, दृष्टान्त।
उद्देश्य	–	प्रयोजन, ध्येय, लक्ष्य।
उद्यत	–	तैयार, प्रस्तुत, तत्पर।
उन्मूलन	–	निरसन, अंत, उत्सादन।
उपकार	–	*(i)* परोपकार, अच्छाई, भलाई, नेकी। *(ii)* हित, उद्धार, कल्याण।

नोट

उपस्थित – विद्यमान, हाजिर, प्रस्तुत।

उत्कृष्ट – उत्तम, श्रेष्ठ, प्रकृष्ट, प्रवर।

उत्थान – उत्कर्ष, उठान, उत्क्रमण, चढ़ाव, आरोह।

उल्लास – हर्ष, आनन्द, प्रमोद, आह्लाद।

उपमा – तुलना, मिलान, सादृश्य, समानता।

उपासना – पूजा, आराधना, अर्चना, सेवा।

उदासीन – विरक्त, निर्लिप्त, अनासक्त, वीतराग।

उद्यम – परिश्रम, पुरुषार्थ, श्रम, मेहनत।

उजाला – प्रकाश, आलोक, प्रभा, ज्योति।

उद्धार – मुक्ति, निस्तार, अपमोचन, छुटकारा।

उलझन – असमंजस, दुविधा, अनिश्चय, संभ्रम।

उपाय – युक्ति, ढंग, तरकीब, तरीका।

उपयुक्त – उचित, ठीक, वाजिब, मुनासिब, वांछनीय।

उपेक्षा – उदासीनता, विरक्ति, अनासक्ति, विराग।

उलटा – प्रतिकूल, विलोम, विपरीत, विरुद्ध।

उजाड़ – निर्जन, वीरान, सुनसान, बियावान।

उग्र – तेज, प्रबल, प्रचंड।

ऊसर – अनुर्वर, सस्यहीन, अनुपजाऊ।

ऊष्मा – उष्णता, तपन, ताप, गर्मी।

उपहार – भेंट, सौगात, तोहफा।

उपालंभ – उलाहना, शिकवा, शिकायती।

उल्लंघन – तिरस्कार, उपेक्षा, अवज्ञा।

उल्लू – उलूक, लक्ष्मीवाहन, कौशिक।

ऊँचा – उच्च, शीर्षस्थ, उन्नत, उतुंग।

ऊर्जा – ओज, स्फूर्ति, शक्ति।

ऋषि – मुनि, मनीषी, महात्मा, साधु सन्त।

एकता – एका, सहमति, एकत्व।

एहसान – आभार, कृतज्ञता, अनुग्रह।

ऐश – विलास, ऐय्याशी, सुख-चैन।

ऐश्वर्य – वैभव, सम्पन्नता, समृद्धि।

एच्छिक – स्वेच्छाकृत, वैकल्पिक, अख्तियारी।

ओज – दम, जोर, पराक्रम, बल।

ओझल – अंतर्धान, तिरोहित, अदृश्य।

नोट

और	–	(*i*) अन्य, दूसरा, इतर, भिन्न। (*ii*) अधिक, ज्यादा। (*iii*) एवं, तथा।
औषध	–	दवा, दवाई, भेषज, औषधि।
कंजूस	–	समू, अनुदार, कृपण, मक्खीचूस।
कपड़ा	–	चीर, वस्त्र, वसन, अम्बर, पट, चैल, दुकूल।
कपाट	–	पट, किवाड़, द्वार, दरवाजा।
कमल	–	सरोज, सरोरुह, जलज, पंकज, नीरज, वारिज, अम्बुज, अम्बोज अब्ज, सतदल, अरविन्द, कुवलय, अम्भोरूह।
कर्ण	–	अंकराज, सूर्यसुत, अर्कनन्दन, राधेय, सूतपुत्र, रविसुत, आदित्यन्द।
कली	–	मुकुल, जालक, ताम्रपल्लव, कलिका, कुडमल, कोरक, नवपल्लव, अँखुवा, कोपल।
कल्पवृक्ष	–	कल्पतरु, कल्पशाल, कल्पद्रुम, कल्पपादप।
कन्या	–	कुमारिका, बालिका, किशोरी, बाला।
कठिन	–	दुर्बोध, जटिल, दुरूह।
कंगाल	–	निर्धन, गरीब, अकिंचन, दरिद्र।
कंचन	–	सोना, स्वर्ण, सुवर्ण।
कृतार्थ	–	उपकृत, आभारी, धन्य।
कमजोर	–	दुर्बल, निर्बल, अशक्त, क्षीण।
कामना	–	अभिलाषा, आकांक्षा, मनोरथ, चाह।
कुटिल	–	छली, कपटी, धोखेबाज, चालबाज।
कृपा	–	अनुकम्पा, अनुग्रह, दया, मेहरबानी।
कामुकता	–	व्यभिचारिता, भोगासक्ति, विषयासक्ति, इंद्रियलोलुपता।
काक	–	काग, काण, वायस, पिशुन, करठ, कौआ।
कुत्ता	–	कुक्कर, श्वान, शुनक।
कबूतर	–	कपोत, रक्तलोचन, हारीत, पारावत।
कृत्रिम	–	अवास्तविक, नकली, झूठा, दिखावटी।
कल्याण	–	मंगल, योगक्षेम, शुभ, हित, भलाई।
कठोर	–	कड़ा, कर्कश, परुष, निष्ठुर।
कलह	–	विवाद, झगड़ा, बखेड़ा।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. अन्वेषण के पर्यायवाची शब्द हैं

   (*a*) अभिलाषा, आकांक्षा, मनोरथ — (*b*) गवेषण, खोज, जाँच

   (*c*) दुर्बोध, जटिल, दुरूह — (*d*) वैभव, सम्पन्नता, समुद्धि

नोट

5. आधुनिक के पर्यायवाची शब्द हैं अर्वाचीन, नूतन, नव्य, ...।

(a) सर्वकालीन (b) दीर्घकालीन

(c) अर्धकालीन (d) वर्तमान कालीन

6. .... के पर्यायवाची शब्द हैं किसान, काश्तकार, हलधर, जोतकार, खेतिहार।

(a) रक्षक (b) पशुपालक

(c) कशीदारकार (d) कृषक

कूल	–	किनारा, तट, तीर।
कृषक	–	किसान, काश्तकार, हलधर, जोतकार, खेतिहर।
किलिष्ट	–	दुरूह, संकुल, कठिन।
कायर	–	बुजदिल, भीरू, डरपोक़, कातर।
कौशल	–	कला, हुनर, फन।
कर्म	–	कार्य, कृत्य, क्रिया, काम, काज।
कलिका	–	कली, मुकुल, पंखुड़ी, कोरक।
कामी	–	विषयी, कामासक्त, कामुक।
कड़वा	–	कटु, तीखा, तीक्ष्ण, तेज।
कस्तूरी	–	मृगमद, मृगनाभि, मदलता।
कंदरा	–	गुहा, गुफा, खोह, दरी।
कथन	–	विचार, वक्तव्य, मत, बयान।
कटाक्ष	–	आक्षेप, व्यंग्य, ताना, छींटाकशी।
कुरूप	–	भद्दा, बेडौल, बदसूरत, असुन्दर।
कलंक	–	दोष, दाग, धब्बा, लांछन।
केवट	–	माँझाी, नाविक, मल्लाह, धीवर।
कोमल	–	मृदुल, सुकुमार, नाजुक, नर्म।
किरण	–	रश्मि, केतु, अंशु, कर।
कुशल	–	दक्ष, प्रवीण, निपुण, चतुर।
कसक	–	पीड़ा, दर्द, टीस, दुःख।
कोयल	–	कोकिल, श्यामा, पिक, मदनशलाका।
काल्पनिक	–	मनगढ़ंत, कल्पित।
कायरता	–	भीरूता, अपौरुष, पामरता, साहसहीनता।
कंटक	–	काँटा, शूल, खार।
क्षेत्र	–	प्रदेश, इलाका, भूभाग, भूखण्ड।
क्षणभंगुर	–	अस्थिर, अनित्य, नश्वर, क्षणिक।
क्षय	–	तपेदिक, यक्ष्मा, राजरोग।

नोट

क्षुब्ध	–	व्याकुल, विकल, उद्विग्न।
क्षमता	–	शक्ति, सामर्थ्य, बल, ताकत।
क्षीण	–	दुर्बल, कमजोर, बलहीन, कृश।
कामदेव	–	मनोज, कन्दर्प, आत्मभू, अनंग, अतनु, काम, मकरकेतु, पुष्पचाप, स्मर, मन्मथ।
कार्तिकेय	–	कुमार, पार्वतीनन्दन, शरभव, स्कन्ध, षडानन, गुह, मयूरवाहन, शिवसुत, षड्वदन।
किरण	–	रश्मि, मरीचि, अंश, कर, मयूख, पुंज।
किला	–	दुर्ग, कोट, गढ़, शिविर।
किंचित	–	(*i*) कतिपय, कुछ एक, कई एक (*ii*) कुछ, अल्प, जरा।
किन्तु	–	लेकिन, परन्तु, मगर, मुला, क्योंकि, पर।
किताब	–	पुस्तक, ग्रंथ, पोथी।
किनारा	–	(*i*) तट, मुहाना, तीर, पुलिन, कूल। (*ii*) अंचल, छोर, सिरा, पर्यन्त।
कीमत	–	मूल्य, दाम, लागत।
कुबेर	–	राजराज, किन्नरेश, धनाधिप, धनेश, यक्षराज, धनद।
कुमुदनी	–	नलिनी, कैरव, कुमुद, इन्दुकमल, चन्द्रप्रिया।
कृष्ण	–	नन्दनन्दन, मधुसूदन, जनार्दन, माधव, मुरारि, कन्हैया, द्वारकाधीश, गोपाल, केशव, नन्दकुमार, नन्दकिशोर, बिहारी।
कृतज्ञ	–	आभारी, उपकृत, अनुगृहीत, ऋणी, कृतार्थ।
केला	–	रम्भा, कदली, वारण, अशुमत्फला, काष्ठीला।
क्रोध	–	गुस्सा, अमर्ष, रोष, कोप, आक्रोश, गर्मी, ताव।
करुणा	–	दया, तरस, रहम।
कहानी	–	दास्तान, गाथा, कथा, किस्सा, आख्यायिका।
कायर	–	डरपोक, बुजदिल, भीरु।
खग	–	पक्षी, चिड़िया, पखेरू, द्विज, पंछी, विहंग, शकुनि।
खंजन	–	नीलकंठ, सारंग, कलकंठ।
खबर	–	जानकारी, सूचना, समाचार, सन्देश।
खल	–	शठ, दुष्ट, धूर्त, दुर्जन, कुटिल, नालायक, अधम।
खुला	–	स्पष्ट, प्रत्यक्ष, जाहिर।
खुशी	–	उल्लास, आनंद, हर्ष, प्रसन्नता।
खूबसूरत	–	सुन्दर, मनोज्ञ, रूपवान।
खोज	–	अन्वेषण, आविष्कार, शोध, अनुसंधान।
खून	–	रुधिर, लहू, रक्त, शोणित।
खिड़की	–	झरोखा, गवाक्ष, वातायन, अन्तद्वार।
खम्भा	–	खम्भ, स्तूप, स्तम्भ।

नोट

खतरा	–	अंदेशा, भय, डर, आशंका।
खत्त	–	चिट्ठी, पत्र, पाती।
खरा	–	शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, साफ।
खामोश	–	नीरव, शांत, चुप, मौन।
खोटा	–	झूठा, नकली, कृत्रिम।
खराबी	–	दोष, बुराई, अवगुण, विकार।
खीझ	–	झुंझलाहट, झल्लाहट, खीझना, चिढ़ना।
गरुण	–	खगेश्वर, सुपर्ण, वैतनेय, नागान्तक।
गर्व	–	घमंड, दर्प, अकड़, दम्भ, अभिमान।
गौरव	–	मान, सम्मान, महत्व, बड़प्पन।
गुरु	–	शिक्षक, आचार्य, अध्यापक।
गहन	–	अभेद, दुर्गम, अच्छेद।
गम्भीर	–	गहरा, अथाह, अतल।
गरीब	–	निर्धन, अकिंचन, दीन, कंगाल।
गीदड़	–	श्रृगाल, सियार, जम्बुक।
गुप्त	–	निभृत, अप्रकट, गूढ़, अज्ञात।
गति	–	चाल, रफ्तार।
गति	–	हाल, दशा, अवस्था, स्थिति।
गुस्सा	–	क्रोध, रोष, क्षोभ, कोप।
गंगा	–	भागीरथी, देवसरिता, मंदाकिनी, विष्णुपदी, त्रिपथगा, देवापगा, सुरसरि, पापछालिका।
गणेश	–	लम्बोदर, मूषकवाहन, भवानीनन्दन, विनायक, गजानन, मोदकप्रिय जगवन्द्य, हेरम्ब।
गज	–	हस्ती, सिंधुर, मातंग, कुम्भी, नाग, हाथी, वितुण्ड, कुंजर, करी द्विप।
गधा	–	गदहा, खर, धूसर, गर्दभ, चक्रीवाहन, रासभ, लम्बकर्ण, बैशाखनन्दन।
गाय	–	धेनु, सुरभि, माता, कल्याणी, पयस्विनी, गौ।
गलना	–	द्रवीभूत होना, द्रवित होना, पिघलना, नष्ट होना।
गहन	–	अगाह, अथाह, अगाध, गहरा।
गुलाब	–	सुमना, शतपत्र, स्थलकमल, पाटल, वृन्तपुष्प।
गुंडा	–	लोफर, शरारती, नंगा, बदमाश, लफंगा, उद्दंड।
गुनाह	–	गलती, अधर्म, पाप, अपराध, खता, त्रुटि, कुकर्म।
गोदाम	–	मालखाना, भंडार, कोठा, गोडाउन।
घट	–	कलश, घड़ा, कुम्भ, गागर, निप, गगरी, कुट।
घर	–	महल, सदन, निकेतन, भवन, गृह, गेह, ओक, हवेली, सदन, लाज, निवास, कुटी, मकान, आवास, आलय।

नोट

घूस – चाँदी का जूता, उपदानक, रिश्वत।

घी – घृत, हवि, अमृत।

> *क्या आप जानते हैं* पर्यायावाची शब्दों को प्रतिशब्द या समानार्थक शब्द भी कहा जाता है।

घाटा – हानि, नुकसान, टोटा।

धन – जलधर, वारिद, अंबुधर, बादल।

घृणा – जुगुप्सा, अरुचि, घिन, वीभत्स।

चंदन – मंगल्य, मलयज, श्रीखण्ड।

चाँदी – रजत, रूपा, रौप्य, रूपक।

चपलता – चंचलता, अधीरता, चुलबुलापन।

चरित्र – आचार, सदाचार, शील, आचरण।

चेतना – होश, एहसास, ज्ञान, सुधबुध।

चिन्ता – फ्रिक, सोच, ऊहापोह।

चौकीदार – पहरेदार, प्रहरी, गारद।

चोटी – शृंग, तुंग, शिखर, परकोटि।

चिक्कन – चिकना, मस्त्रण, स्निग्ध, स्नेहिल।

चक्र – पहिया, चाक, चक्का।

चमक – कांति, आभा, द्युति, दीप्ति।

चिकित्सा – उपचार, इलाज, दवादारू।

चतुर – कुशल, नागर, प्रवीण, दक्ष, निपुण, योग्य होशियार, चालाक, सयाना, विज्ञ।

चन्द्र – सोम, राकेश, रजनीश, राकापति, चाँद निशाकर, हिमांशु, मयंक, सुधांशु, मृगांक, चन्द्रमा, कला-निधि, ओषधीश।

चाँदनी – चन्द्रिका, ज्योत्सना, कौमुदी, कुमुदकला, जुन्हाई, अमृतवर्षिणी, चन्द्रातप, चन्द्रमरीचि।

चपला – विद्युत, बिजली, चंचला, दामिनी, तड़ित।

चश्मा – ऐनक, उपनेत्र, सहनेत्र, उपनयन।

चाटुकारी – खुशामद, चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा चिरौरी, चमचागिरी।

चिन्ह – प्रतीक, निशान, लक्षय, पहचान, संकेत।

चोर – रजनीचर, दस्यु, साहसिक, कभिज, खनक, मोषक, तस्कर।

छात्र – विद्यार्थी, शिक्षार्थी, शिष्य।

छाया – साया, प्रतिबिम्ब, परछाई, छाँव।

छल – प्रपंच, झाँसा, फरेब, कपट।

छटा – आभा, कांति, चमक।

नोट

छानबीन	–	जाँच-पड़ताल, पूछताछ, जाँच, तहकीकात।
छेद	–	छिद्र, सूराख, रंध्र।
छली	–	ठग, छद्मी, कपटी, कैतव, धूर्त, मायावी।
छलांक	–	उछाल, फांद, चौकड़ी, उछलकूद।
छाती	–	उर, वक्ष, वक्षःस्थल, सीना।
जुगनू	–	प्रभाकीट, खद्योत, पटबीजना।
जननी	–	माँ, माता, अम्बा, अम्मा।
जटिल	–	दुर्बोध, दुरूह, पेचीदा, किलिष्ट।
जवान	–	युवा, युवक, किशोर, तरुण।
जीविका	–	आजीविका, वृति, रोटी, रोजी।
जिद्दी	–	हठी, दुराग्रही, हठीला, दुर्दान्त।
जोश	–	आवेश, उफान, उबाल।
जीव	–	प्राणी, देहधारी, जीवधारी।
जानकारी	–	ज्ञान, बोध, विज्ञता।
जिज्ञासा	–	उत्सुकता, उत्कंठा, कुतूहल।
ज्योतिषी	–	दैवज्ञ, गणक, भविष्यवक्ता।
जंग	–	युद्ध, रण, समर, लड़ाई, संग्राम।
जग	–	दुनिया, संसार, विश्व, भुवन, मृत्युलोक।
जल	–	सलिल, उदक, तोय, अम्बु, पानी, नीर, वारि, पय, अमृत, जीवक, रस, अप।
जहाज	–	जलयान, वायुयान, विमान, तोप, जलवाहन।
जानकी	–	जनकसुता, वैदेही, मैथिली, सीता, रामप्रिया, जनकदुलारी जनकनन्दिनी।
जुटाना	–	बटोरना, संग्रह करना, जुगाड़ करना, एकत्र करना, जमा करना, संचय करना।
जोश	–	आवेश, साहस, उत्साह, उमंग, हौसला।
झंडा	–	ध्वजा, केतु, पताका, निसान।
झरना	–	स्त्रोता, स्त्रोत, उत्स, निर्झर, जलप्रताप।
झेंप	–	सकुचाहट, संकोच, तकल्लुफ, खिसी, हया।
झोपड़ी	–	कुटी, कुटिया, पर्णकुटी, कुंज।
झगड़ा	–	कलह, तंता, तकरार, क्तिंडा।
झुंड	–	जत्था, समूह, मंडली, पुंज।
झुकाव	–	रुझान, प्रवृत्ति, प्रवणता, उन्मुखता।
टीका	–	भाष्य, वृत्ति, विवृति, व्याख्या।
टक्कर	–	भिड़ंत, संघट्ट, समाघात, ठोकर।
टोल	–	समूह, मण्डली, जत्था, झुण्ड, चटसाल, पाठशाला।

नोट

टीस	–	साल, कसक, शूल, शूक्त, चसक, दर्द, पीड़ा।
टेढ़ा	–	(*i*) बंक, कुटिल, तिरछा, वक्र, (*ii*) कठिन, पेचीदा, मुश्किल, दुर्गम।
ठंड	–	शीत, ठिठुरन, सर्दी, जाड़ा, ठंडक।
ठेस	–	आघात, चोट, ठोकर, धक्का।
ठौर	–	ठिकाना, स्थल, जगह।
ठग	–	जालसाज़, प्रवंचक, वंचक, प्रतारक।
ठाठ	–	आडम्बर, सजावट, वैभव।
डगर	–	बाट, मार्ग, राह, रास्ता पथ, पंथ।
डर	–	त्रास, भीति, दहशत, आतंक, भय, खौफ।
डेरा	–	पड़ाव, खेमा, शिविर।
डोर	–	डोरी, रज्जु, तांत, रस्सी, पगहा, तंतु।
डकैत	–	डाकू, लुटेरा, बटमार।
डाह	–	ईर्ष्या, कुढ़न, जलन।
ढीठ	–	धृष्ट, प्रगल्भ, अविनीत, गुस्ताख।
ढोंग	–	स्वाँग, पाखण्ड, कपट, छल।
ढंग	–	पद्धति, विधि, तरीका, रीति, प्रणाली, करीना।
ढेर	–	राशि, समूह, अम्बार, घौद, झुण्ड।
तन	–	शरीर, काया, जिस्म, देह, वपु।
तपस्या	–	साधना, तप, योग, अनुष्ठान।
तरंग	–	हिलोर, लहर, ऊर्मि, मौज, वीचि।
तरकस	–	तूण, तूणीर, माथा, त्रोण, निषंग।
तरु	–	वृक्ष, पेड़, विटप, पादप, द्रुम।
तलवार	–	असि, खडग, सिरोही, चन्द्रहास, कृपाण, शमशीर, करवाल, करौली।
तस्वीर	–	चित्र, फोटो, प्रतिबिम्ब, प्रतिकृति, आकृति।
तालाब	–	जलाशय, सरोवर, ताल, सर, तड़ाग, जलधर, सरसी, पद्माकर, पुष्कर।
तारीख	–	दिनांक, मिती, तिथि।
तारीफ	–	बड़ाई, प्रशंसा, सराहना, प्रशस्ति, गुणगान।
तीर	–	नाराच, बाण, शिलीमुख, शर, सायक।
तुरन्त	–	तत्काल, तत्क्षण, सत्वर, अविलम्ब, जल्दी।
तोता	–	सुवा, शुक, दाडिमप्रिय।
ताकना	–	देखना, निहारना, झांकना, निरखना।
तत्पर	–	तैयार, कटिबद्ध, उद्यत सन्नद्ध।
तन्मय	–	मग्न, तल्लीन, लीन, ध्यानमग्न।

नोट

तालमेल	–	समन्वय, संगति, सामंजस्य।
तोष	–	तृप्ति, संतोष, तुष्टि।
तिरस्कार	–	अपमान, निरादर, उपेक्षा, अवमानना।
तकलीफ	–	रोग, अस्वस्थता, रूग्णता।
तरकारी	–	शाक, सब्जी, भाजी।
तूफान	–	झंझावात, अंधड़, आँधी, प्रभंजन।
त्योहार	–	उत्सव, समारोह, पूर्व।
तादात्म्य	–	तद्रूपता, अभिन्नता, सारूप्य, एकात्म्य।
त्रुटि	–	भूल-चूक, गलती।
थकान	–	क्लान्ति, श्रांति, थकावट, थकन।
थोड़ा	–	कम, जरा, अल्प, स्वल्प, न्यून।
थाह	–	अंत, छोर, सिरा, सीना।
दर्पण	–	शीशा, आइना, मुकुर, आरसी।
दया	–	तरस, करुणा, रहम, अनुकम्पा।
दास	–	चाकर, नौकर, सेवक, परिचारक, परिचर, किंकर, अनुचर।
दुःख	–	क्लेश, खेद, पीड़ा, यातना, विषाद, यन्त्रणा, क्षोभ, कष्ट।
दूध	–	पय दुग्ध, स्तन्य, क्षीर, अमृत।
देवता	–	सुर, आदित्य, अमर, देव, वसु।
दोस्त	–	सखा, मित्र, स्नेही, अंतरंग, हितैषी, सहचर।
द्रोपदी	–	श्यामा, पाँचाली, कृष्णा, सैरन्ध्री, याज्ञसेनी, द्रुपदसुता, नित्ययौवना।
दौलत	–	सम्पत्ति, सम्पदा, धन, द्रव्य, विभूति, वित्त।
दासी	–	बाँदी, सेविका, किंकरी, परिचारिका।
दैत्य	–	असुर, सुरारि, दनुज, रजनीचर।
दीपक	–	दीपक, प्रदीप, दिया।
द्रव्य	–	सम्पत्ति, दौलत, विभूति, सम्पदा, धन।
दुर्गा	–	सिंहवाहिनी, कालिका, अजा, भवानी, चण्डिका, कल्याणी, सुभद्रा, चामुण्डा।
दुष्ट	–	नीच, खल, दुर्जन, पिशुन।
दमन	–	अवरोध, निग्रह, रोक, नियंत्रण, वश।
दीर्घ	–	लम्बा, विशाल, बड़ा।
दिव्य	–	अलौकिक, स्वर्गिक, लोकातीत, लोकोत्तर।
दुर्लभ	–	अलम्भ, नायाब, विरल, दुष्प्राप्य।
दिलेर	–	साहसी, शूर, वीर, बहादुर।
दशा	–	अवस्था, स्थिति, हालत।

नोट

दर्शन – भेंट, साक्षात्कार, मुलाकात।

दंगा – उपद्रव, फसाद, उत्पात, ऊधम।

द्वेष – बैर, शत्रुता दुश्मनी खार।

दूत – एलची, राजदूत।

दरवाजा – किवाड़, पल्ला, कपाट, द्वार।

दया – करूणा, अनुकम्पा, रहम, तरस।

दाई – धाया, धात्री, अम्मा।

देवालय – देवमन्दिर, देवस्थान, मन्दिर।

दृढ़ – पुष्ट, मजबूत, पक्का, तगड़ा।

दुर्गम – अगम्य, विकट, कठिन, दुस्तर।

टास्क पर्यायवाची शब्द पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

धनुष – चाप, धनु, शरासन, पिनाक, कोदंड, कमान, विशिखासन।

धीरज – धीरता, धीरत्व, धैर्य, धारण, धृति।

धरती – धरा, धरणी, पृथ्वी, क्षिति, वसुधा, अवनी, मेदिनी।

धूप – आतप, धोत।

धनी – धनवान, धनाढ्य, दौलतमंद, मालदार।

धन्यवाद – कृतज्ञता, शुक्रिया, आभार, मेहरबानी।

धवल – श्वेत, सफेद, उजला।

धुंध – कुहरा, नीहार, कुहासा।

ध्वस्त – नष्ट, भ्रष्ट, भग्न, खंडित।

धूल – रज, खेह, मिट्टी, गर्द, धूलि।

ध्रुव – दृढ़ अटल, स्थिर, निश्चित।

ध्यान – एकाग्रता, मनोयोग, तल्लीनता, तन्मयता।

धाम – गृह, निकेतन, सदन, घर।

धंधा – रोजगार, व्यापार, कारोबार, व्यवसाय।

धनुर्धर – धन्वी, तीरंदाज, धनुषधारी, निषंगी।

धाक – रोब, दबदबा, धौंस।

नदी – सरिता, दरिया, अपग, तटिनी, सलिला, स्त्रोतस्विनी, कल्लोनी, प्रवाहिणी।

नमक – लवण, लोन, रामरस, नोन।

नया – नवीन, नव्य, नूतन आधुनिक, अभिनव, अर्वाचीन, नव, ताजा।

नायक – अभिनेता, सितारा, पात्र, कलाकार, अगुवा, प्रमुख पात्र।

नोट

नाश	–	(*i*) समाप्ति, अवसान, (*ii*) विनाश, संहार, ध्वंस, नष्ट-भ्रष्ट।
नित्य	–	हमेशा, रोज, सनातन, सर्वदा, सदा, सदैव, चिरंतन, शाश्वत।
नियम	–	विधि, तरीका, विधान, ढंग, कानून, रीति।
नीलकमल	–	इंदीवर, नीलाम्बुज, नीलसरोज, उत्पल, असितकमल, कुवलय, सौगन्धित।
नौका	–	तरिणी, डोंगी, नाव, जलयान, नैया, तरी।
नारी	–	स्त्री, महिला, रमणी, वनिता, वामा, औरत।
निंदा	–	अपयश, बदनामी, बुराई, बदगोई।
निमित	–	हेतु, उद्देश्य, ध्येय, प्रयोजन।
नरेश	–	नरेन्द्र, राजा, नरपति, भूपति, भूपाल।
निकम्मा	–	निठल्ला, अकर्मण्य, निखट्टू, बेकार।
निर्भय	–	निडर, दिलेर, निःशंक, बेधड़क।
निष्पक्ष	–	उदासीन, अलग, निरपेक्ष, तटस्थ।
नियति	–	भाग्य, प्रारब्ध, होनी।
निकट	–	समीप, करीब, आसन्न।
नवल	–	अद्भुत, विचित्र, विलक्षण, अनोखा।
नक्षत्र	–	तारा, सितारा, खद्योत, तारक।
नवीन	–	नव, नूतन, अभिनव, नवेला।
नाग	–	सर्प, विषधर, भुजंगा, व्याल, फणी।
नग	–	भूधर, पहाड़, पर्वत, शैली, गिरि।
नरक	–	यमपुर, यमलोक, जहन्नुम, दोज़ख।
नम्र	–	शिष्ट, सुशील, विनीत, विनयशील।
निधि	–	कोष, खजाना, भंडार।
नग्न	–	नंगा, दिगम्बर, निर्वस्त्र, अनावृत।
निधान	–	आश्रम, आधार, अवलम्ब।
नीरस	–	रसहीन, फीका, सूखा स्वादहीन।
नीरव	–	मौन, चुप, शांत, खामोश।
निरर्थक	–	बेमानी, बेकार, अर्थहीन, व्यर्थ।
निष्ठा	–	आस्था, श्रद्धा, विश्वास।
निर्णय	–	निष्कर्ष, फैसला, परिणाम।
निष्ठुर	–	निर्दय, निर्मम, बेदर्द, बेरहम।
नेकी	–	उपकार, भलाई, अच्छा, भला।
पत्ता	–	पर्ण, पल्लव, पत्र, पाती, पत्ती, दल।
पत्थर	–	पाहन, प्रस्तर, संग, अश्म, पाषाण।

नोट

पति – स्वामी, कांत, भर्तार, बल्लभ, भर्त्ता, ईश।

पत्नी – दुलहिन, अर्धांगिनी, गृहिणी, त्रिया, दारा, जोरू गृहलक्ष्मी, सहधर्मिणी, सहचरी।

पथिक – राही, बटाऊ, पंथी, मुसाफिर, बटोही।

पंडित – विद्वान, सुधी, ज्ञानी, धीर, कोविद, प्राज्ञ।

परशुराम – भृगुसुत, जामदग्न्य भार्गव, परशुधर, भृगुनन्दन रेणुकातनय।

पर्वत – पहाड़, अचल, शैल, नग, भूधर, मेरू, महीधर, गिरि।

पवन – समीर, अनिल, मारुत, वात पवमान, वायु, बयार।

पवित्र – पुनीत, पावन, शुद्ध, शुचि, साफ, स्वच्छ।

पान – ताम्बूल, पर्णलता, नागरबेल, नागबल्ली, सप्तशिला, नागिनीपत्र।

पार्वती – भवानी, अम्बिका, गौरी, अभया, गिरिजा, उमा, सती, शिवप्रिया।

पिता – जनक, बाप, तात, गुरु, फादर, वालिद।

पुत्र – तनय, आत्मज, सुत, लड़का, बेटा, औरस, पूत।

पुत्री – तनया, आत्मजा, सुता, लड़की, बेटी, दुहिता।

पृथ्वी – वसुधा, वसुन्धरा, मेदिनी, मही, भू, भूमि, इला, उर्वी जमीन, क्षिति धारती, धात्री।

प्रकाश – चमक, ज्योति, द्युति, दीप्ति, तेज, आलोक।

प्रतिष्ठा – गौरव, महानता, इज्जत, सम्मान, आबरू, कीर्ति, यश।

प्रभात – सवेरा, सुबह, विहान, प्रातःकाल, भोर, ऊषाकाल।

प्रथा – प्रचलन, चलन, रीति, रिवाज, परम्परा, परिपाटी, रूढ़ि।

प्रबन्ध – इन्तजाम, व्यवस्था, बन्दोबस्त।

प्रलय – कयामत, विप्लव, कल्पान्त, गजब।

प्रसिद्ध – मशहूर, नामी, ख्यात, नामवर, विख्यात, प्रख्यात, यशस्वी।

प्रार्थना – विनय, विनती, निवेदन, अनुरोध, स्तुति, अभ्यर्थना, अर्चना, अनुनय।

प्रिया – प्रियतमा, प्रेयसी, सजनी, दिलरुबा, प्यारी।

प्रेम – प्रीति, स्नेह, दुलार, लाड़ प्यार, ममता, अनुराग, प्रणय।

पैर – पाँव, पाद, चरण, गोड़, पग, पद, पगु, टाँग।

पूर्ण – निखिल, सम्पूर्ण, अखण्ड, समग्र।

प्रभा – छवि, दीप्ति, द्युति, आभा।

पाला – हिम, तुषार, नीहार, प्रालेय।

पंथ – राह, डगर, पथ, मार्ग।

परतंत्र – पराधीन, परवश, पराश्रित।

पंकिल – गंदला, मैला, मलिन।

परिवार – कुल, घराना, कुटुम्ब, कुनबा।

परमार्थ – भलाई, उपकार, परोपकार।

नोट

परछाई	–	प्रतिच्छाया, साया, प्रतिबिम्ब, छाया।
परिचर	–	सेवक, नौकर, भृत्य, चाकर।
पक्षी	–	विहग, निहंग, खग, शकुन्त।
पल	–	क्षण, लम्हा, दम।
पश्चाताप	–	अनुपात, पछतावा, ग्लानि, संताप।
परिष्कृत	–	परिमार्जित, प्रांजल, शुद्ध।
पताका	–	झंडा, ध्वज, निशान।
प्रचुर	–	पर्याप्त, बहुत, यथेष्ट।
पराक्रम	–	पुरुषार्थ, ताकत, शक्ति।
पट	–	कपाट, दरवाजा।
पटु	–	निपुण, प्रवीण।
परिवाद	–	निंदा, बुराई, अपयश, बदनामी।
परिताप	–	क्लेष, व्यथा, दु:ख, पीड़ा।
परख	–	छानबीन, परीक्षण, जाँच, पहचान।
परिणाम	–	परिपाक, नतीजा, फल।
पराजित	–	पराभूत, परास्त, विजित।
पाप	–	पातक, गुनाह, अपकर्म।
पागल	–	दीवाना, विक्षिप्त, उन्मत्त।
पाखंड	–	आडम्बर, ढोंग, प्रपंच, स्वांग, ढकोसला।
पादप	–	पेड़, वृक्ष, द्रुम, तरू।
पामर	–	पापी, दुष्ट, दुरात्मा, पातकी।
पाश	–	जाल, बंधन, फंदा।
पीड़ा	–	दर्द, व्यथा, वेदना, यंत्रणा।
पुकार	–	दुहाई, गुहार, फरियाद।
पुरातन	–	प्राचीन, पूर्वकालीन, पुराना।
पुष्ट	–	बलिष्ठ, हृष्टपुष्ट, तगड़ा, बलिष्ठ।
पूजा	–	आराधना, अर्चना, उपासना।
प्रथु	–	विस्तृत, चौड़ा, विस्तीर्ण।
प्रकांड	–	अतिशय, विपुल, अधिक भारी।
प्रगल्भ	–	अहंकारी, दम्भी, गर्वीला, अभिमानी।
प्रज्ञा	–	बुद्धि, ज्ञान, मेधा, प्रतिभा।
प्रचंड	–	भीषण, उग्र, भयंकर।
प्रणय	–	स्नेह, अनुराग, प्रीति, अनुरक्ति।

नोट

प्रथित	–	विख्यात, प्रसिद्ध, प्रख्यात, नामवर।
प्रताप	–	प्रभाव, धाक, बोलबाला, इकबाल।
प्रतिहार	–	दरबान, चोबदार, द्वारपाल, द्वाररक्षक।
प्रतिहिंसा	–	प्रतिशोध, बदला, प्रतिकार।
प्रतिज्ञा	–	प्रण, वचन, वायदा।
प्रशस्त	–	निर्विघ्न, निष्कंटक, निर्दोष।
प्रारब्ध	–	भाग्य, तकदीर किस्मत, नसीब।
प्रस्तावना	–	प्राक्कथन, भूमिका, पुरोवचन, आमुख।
प्रेक्षागार	–	नाट्यशाला, रंगशाला, अभिनयशाला, प्रेक्षागृह।
प्रौढ़	–	अधेड़, प्रबुद्ध।
फसाद	–	उत्पाद, दंगा, बलवा।
फुनगी	–	कोंपल, मंजरी, अंकुर, किसलय।
फणी	–	सर्प, सांप, फणधर, नाग।
फौरन	–	तत्काल, तत्क्षण, तुरन्त।
फूल	–	सुमन, कुसुम, गुल, प्रसून, पुष्प, पुहुप।
फौज	–	सेना, लश्कर, पल्टर, वाहिनी, सैन्य।
बलराम	–	हलधर, बलवीर, रेवतीरमण, बलभद्र, हली, श्यामबन्धु।
बाग	–	उपवन, वाटिका, उद्यान, निकुंज, फुलवाड़ी।
बन्दर	–	कपि, वानर, मर्कट, शाखामृग, कीश।
बट्टा	–	घाटा, हानि, टोटा, नुकसान।
बलिदान	–	कुर्बानी, आत्मोत्सर्ग, जीवनदान।
बर्बर	–	असभ्य, जंगली, अशिष्ट, उद्धत।
बेहलिया	–	अहेरी, शिकारी, व्याद्य, लुब्धक।
बंजर	–	ऊसर, परती, अनुपजाऊ, अनुर्वर।
बराबरी	–	समान, सदृश, तुल्य।
बड़प्पन	–	बड़ाई, महत्व, महत्ता, गरिमा।
बिगाड़	–	विकार, दोष, खराबी।
बगावत	–	विप्लव, विद्रोह, गदर।
बहादुर	–	वीर, सूरमा, शूर, जवांमर्द।
बिछोह	–	वियोग, जुदाई, बिछोड़ा।
बियावान	–	निर्जन, सूनसान, वीरान, उजाड़।
बेजोड़	–	अनुपम, अद्वितीय, अतुल।
ब्रह्मा	–	सृष्टिकर्त्ता, विधाता, चतुरानन।

नोट

बादल	–	मेघ, पयोधर, नीरद, वारिद, अम्बुद, बलाहक, जलधर, घन, जीमूत।
बाल	–	केश, अलक, कुन्तल, रोम, शिरोरूह, चिकुर।
बिजली	–	तड़ित, दामिनी, विद्युत, सौदामिनी, चंचला, बीजुरी।
भांग	–	विजया, भंग, शिवा, चपला, जया।
भाई	–	भ्राता, बन्धु, सहोदर।
भय	–	डर, त्रास, भीति, खौफ।
भगवान	–	परमेश्वर, परमात्मा, सर्वेश्वर, प्रभु, ईश्वर।
भगिनी	–	दीदी, जीजी, बहिन।
भंग	–	नाश, ध्वंस, क्षय, विनाश।
भांड	–	मसखरा, जोकर, भांड।
भारती	–	सरस्वती, ब्राह्मी, विद्या देवी, शारदा, वीणावादिनी।
भाव	–	आशय, अभिप्राय, तात्पर्य, अर्थ।
भाल	–	ललाट, मस्तक, माथा, कपाल।
भरोसा	–	सहारा, अवलम्ब, आश्रय, प्रश्रय।
भास्कर	–	चमकीला, आभामय, दीप्तिमान, प्रकाशवान।
भुगतान	–	भरपाई, अदायगी, बेबाकी।
भोला	–	सीधा, सरल, निष्कपट, निश्छल।
भोजन	–	आहार, खाद्य सामग्री, खाना।
भुवन	–	जगत, संसार, विश्व, दुनिया।
भूखा	–	बुभुक्षित, क्षुधातुर, क्षुधालु, क्षुद्यार्त।
भँवरा	–	भ्रमर, भृंग, मधुकर, मधुप, अलि, द्विरेफ।
भाई	–	अग्रज, अनुज, सहोदर, तात, भइया, बन्धु।
मछली	–	मीन, मत्स्य, सफरी, झष, जलजीवन।
मजाक	–	दिल्लगी, उपहास, हँसी, मखौल, मसखरी, व्यंग्य, छींटाकशी।
मदिरा	–	शराब, हाला, आसव, मद्य, मधु, सुरा।
महादेव	–	शंकर, शंभु, शिव, पशुपति, चन्द्रशेखर, महेश्वर, भूतेश, आशुतोष, गिरीश।
मंगल	–	महीसुत, भौम, लोहितांग।
मक्खन	–	नवनीत, दधिसार, माखन, लौनी।
मट्ठा	–	माठा, छाछ, गोरस।
मंडन	–	अलंकरण, श्रृंगार, रूपसज्जा।
मंगनी	–	वाग्दान, फलदान, सगाई।
मत	–	धारणा, सम्मति, मंतव्य।

नोट

मनीषी – पंडित, विचारक, ज्ञानी, विद्वान।

मतभेद – असहमति, मातद्वैध, असम्मति।

मुँह – मुख, आनन, बदन।

मित्र – सखा, दोस्त, सहचर, सुहृद।

मैना – सारिका, चित्रलोचना, कलहप्रिया।

मनोहर – मनहर, मनोरम, लुभावना, चित्ताकर्षक।

मंथन – बिलोना, विलोड़न, आलोड़न।

महक – परिमल, वास, सुवास, खुशबू।

महत्ता – बड़ाई, गरिमा, महात्म्य, गौरव।

महल – राजभवन, राजप्रासाद, राजमहल, प्रासाद।

मृत्यु – देहावसान, देहान्त, पंचतत्व, निधान।

महात्मा – महापुरुष, महामना, महानुभाव, महाशय।

माँझी – मल्लाह, नाविक, केवट।

मार्मिक – मर्मांतक, मर्मस्पर्शी, हृदयस्पर्शी, मर्मभेदी।

माया – छल, छलना, प्रपंच, प्रतारणा।

माधुरी – माधुर्य, मिठास, मधुरता।

मानव – मनुज, मनुष्य, मानुष, इंसान।

मानक – प्रतिमान, आदर्श, मानदंड।

मुलायम – मृदु, कोमल, स्निग्ध।

मुक्ति – निर्वाण, मोक्ष, परमपद, अमृतत्व।

मोती – सीपिज, मौक्तिक, मुक्ता, शशिप्रभा।

मेढ़क – दादुर, दर्दुर, चातक, मण्डूक, वर्षाप्रिय भेक।

मोर – मयूर, नीलकण्ठ, शिखी, केकी, कलापी।

मोक्ष – मुक्ति, निर्माण, कैवल्य, परमधाम, परमपद, अपवर्ग, सद्गति।

यम – सूर्यपुत्र, धर्मराज, श्राद्धदेव, कीनाश, शमन, दण्डधर, यमुनाभ्राता।

यत्न – प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम।

यश – कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि।

यामिनी – निशा, रजनी, राका, विभावारी।

युवती – तरूणी, प्रमदा, रमणी।

योग्य – कुशल, सक्षम, कार्यक्षम, काबिल।

यात्रा – भ्रमण, देशाटन, पर्यटन, सफर, घूमना।

याद – सुधि, स्मृति, ख्याल, स्मरण।

रक्त – खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित, रोहित।

नोट

रत – निमग्न, लिप्त, अनुरक्त, तल्लीन।

राधा – ब्रजरानी, हरिप्रिया, राधिका, वृषभानुजा।

रानी – राज्ञी, महिषी, राजपत्ती।

रावण – लोकेश, दशानन, दशकंठ।

राज्यपाल – प्रांतपति, सूबेदार, गवर्नर।

राय – मत, सलाह, सम्मति, मंत्रणा, परामर्श।

रोचक – मनोहर, लुभावना, दिलचस्प।

रूढ़ि – प्रथा, दस्तूर, रस्म।

रक्षा – बचाव, संरक्षण, हिफाजत, देखरेख।

रमा – कमला, इन्दिरा, लक्ष्मी, हरिप्रिया, समुद्रजा, चंचला, क्षीरोदतनया, पद्मा, श्री, भार्गवी।

राजा – नरेन्द्र, नरेश, नृप, भूपाल, राव, भूप।

नोट्स रामचन्द्र जी के विभिन्न पर्यायवाची शब्द हैं, जैसे–रघुवर, रघुनाथ, सीतापति, कौशल्यानन्दन, अमिताभ, राघव, रघुराज, अवधेश।

रात – रैन, रजनी, निशा, विभावरी, यामिनी, तमी, तमस्विनी, शर्वरी, विभा, क्षपा, रात्रि।

रिपु – बैरी, दुश्मन, विपक्षी, विरोधी, प्रतिवादी, अमित्र, शत्रु।

रोना – विलाप, रोदन, रूदन, क्रंदन, विलपन।

लक्ष्मण – अनंत, लखन, सौमित्र।

लग्न – संयुक्त, संलग्न, संबद्ध, संयुक्त।

लज्जा – शर्म, हया, लाज, व्रीडा।

लहर – लहरी, हिलोर, तरंग, उर्मि।

लालसा – तृष्णा, अभिलाषा, लिप्सा, लालच।

लुटेरा – डकैत, डाकू, बटमार, अपहर्ता।

लोलुप – लालची, लोभी, तृष्णालु।

लगातार – सतत्, निरन्तर, अजस्त्र, अनवरत।

लड़ाई – झगड़ा, खटपट, अनबन, मनमुटाव, युद्ध, रण, संग्राम, जंग।

लता – बेल, बल्लरी, लतिका, प्रतान, वीरूध, बल्ली, बेली।

वर्षा – बरसात, मेह, बारिश, पावस, चौमास।

वन – अरण्य, अटवी, कानन, विपिन।

वस्त्र – परिधान, पट, चीर, वसन, अम्बर।

वपु – देह, काया, तन, बदन।

वर्ग – श्रेणी, कोटि, समुदाय, सम्प्रदाय, समूह।

नोट

वर्ष	–	साल, बरस, वत्सर।
विकार	–	विकृति, दोष, बुराई, बिगाड़।
विपन्न	–	व्यथित, आर्त, पीड़ित, विपत्तिग्रस्त।
विष	–	गरल, माहुर, हलाहत, कालकूट।
विफल	–	व्यर्थ, बेकार, निरर्थक, निष्फल।
विभव	–	सम्पत्ति, धन, अर्थ, ऐश्वर्य।
विरूद	–	प्रशस्ति, कीर्ति, यशोगान, गुणगान।
विलक्षण	–	विचित्र, निराला, अद्‌भुत, अनूठा।
विस्मय	–	अचरज, आश्चर्य, हैरानी।
विविध	–	नाना, प्रकीर्ण, विभिन्न।
विभोर	–	मस्त, मुग्ध, मग्न, लीन।
विरक्ति	–	अनासक्ति, विराग, निर्लिप्तता।
विप्र	–	भूदेव, ब्राह्मण, महीसुर, पुरोहित।
विभा	–	प्रभा, आभा, कांति, शोभा।
विशारद	–	पंडित, ज्ञानी, विशेषज्ञ, सुधी।
विलास	–	आनन्द, भोग, संतुष्टि, वासना।
व्यसन	–	लत, वान, टेक, आसक्ति।
वृक्ष	–	द्रुम, पादप, तरु, विटप।
वक्ष	–	सीना, छाती, वक्षस्थल, उदरस्थल।
वेश्या	–	गणिका, वारांगना, पतुरिया, रंडी।
विवेचन	–	व्याख्या, वर्णन, टीका।
वसन्त	–	मधुमास, ऋतुराज, माधव, कुसुमाकर, कामसखा, मधुऋतु।
विद्या	–	ज्ञान, शिक्षा, गुण, इल्म, सरस्वती।
विधि	–	शैली, तरीका, नियम, रीति, पद्धति, प्रणाली, चाल।
विमल	–	स्वच्छ, निर्मल, पवित्र, पावन, विशुद्ध।
विमान	–	वायुयान, खग, उड़नखटोला, हवाईजहाज।
विष्णु	–	नारायण, केशव, गोविन्द, माधव, जनार्दन, विशम्भर, मुकुन्द, लक्ष्मीपति, कमलापति।
शपथ	–	कसम, प्रतिज्ञा, सौगन्ध, हलफ, सौं।
शहद	–	मधु, मकरंद, पुष्परस, पुष्पासव।
शब्द	–	ध्वनि, नाद, आश्व, घोष, रव, मुखर।
शराब	–	हाला, अम्रता, मद्य, अमृता, वीरा, मदिरा।
शरीर	–	कलेवर, देह, गात, वपु, तन, भूतात्मा।
शरण	–	संश्रय, आश्रय, त्राण, रक्षा।

नोट

शिष्ट	–	शालीन, भद्र, संभ्रान्त, सौम्य।
शेर	–	नाहर, केहरि, वनराज, केशरी, मृग्रेन्द।
शस्य	–	फसल, पैदावार, उपज।
शिरा	–	नाड़ी, धमनी, नस।
शुभ	–	मंगल, कल्याणकारी, शुभकर।
शायद	–	कदाचित्, सम्भवतः, स्यात्।
शिक्षा	–	नसीहत, सीख, तालीम, प्रशिक्षण, उपदेश, शिक्षण ज्ञान।
शिविका	–	पालकी, डाँडी, डोली।
श्वेत	–	सफेद, सित, धवल।
सब	–	अखिल, सम्पूर्ण, सकल, सर्व, समस्त, समग्र, निखिल।
संकल्प	–	वृत, दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा, प्रण।
संतुप्त	–	व्यथित, क्लेशित, वेदनाग्रस्त।
संग्रह	–	संकलन, संचय, जमाव।
संन्यासी	–	बैरागी, दंडी, विरत, परिव्राजक।
सजग	–	सतर्क, चौकस, चौकन्ना, सावधान।
संहार	–	अंत, नाश, समाप्ति, ध्वंस।
सतीत्व	–	पतिव्रत्य, सतीधर्मिता, सतीपन।
सन्नद्ध	–	तापर, कटिबद्ध, तैयार, प्रस्तुत।
सभ्यता	–	शिष्टाचार, शिष्टता, भद्रता, शीलवत्ता।
समसामयिक	–	समकालिक, समकालीन, समव्यस्क।
सदन	–	गृह, घर, निकेतन, आवास।
समीक्षा	–	विवेचना, मीमांसा, आलोचना, निरूपण।
समुद्र	–	नदीश, वारीश, रत्नाकर, उदधि, पारावार।
सखी	–	सहेली, सहचरी, सैरंध्री, सजनी।
सज्जन	–	भद्र, साधु, पुंगव, सभ्य, कुलीन।
स्तन	–	पयोधर, छाती, कुच, उरस, उरोज।
सुरभि	–	इष्टगन्ध, सुघान्दी, तर्पण।
सुन्दरी	–	ललिता, सुनेत्रा, सुनयना, विलासिनी, कामिनी।
सुबोध	–	सुगम, सुस्पष्ट, सरल, बोधगम्य।
सूची	–	तालिका, फेहरिस्त, सारिणी, सरणी।
स्वर्ण	–	सुवर्ण, सोना, कनक, हिरण्यच, हेम।
स्वर्ग	–	सुरलोक, द्युलोक, बैकुंठ, परलोक, दिव।
स्वामिकार्तिकेय	–	शिखिवाहन, महासेन, पार्वतीनन्दन, कार्तिकेय, महासेन।

नोट

स्वच्छन्द	–	निरंकुश, स्वतंत्र, निर्बंध।
स्वावलंबन	–	आत्माश्रय, आत्मनिर्भरता, स्वाश्रय।
स्नेह	–	प्रेम, प्रीति, अनुराग, प्यार, मोहब्बत, इश्क।
समुद्र	–	सागर, रत्नाकर, पयोधि, नदीश, सिन्धु, जलधि, पारावार, वारीश, अर्णव, अब्धि।
सरस्वती	–	भारती, शारदा, वीणापाणि, गिरा, वाणी, महाश्वेता, श्री, भाष्, वाक्, हंसवाहिनी, ज्ञानदायिनी।
सूर्य	–	दिनकर, दिवाकर, भास्कर, रवि, नारायण, सविता, कमलबन्धु, आदित्य, प्रभाकर, मार्तण्ड।
सम्पर्क	–	मिलन, भेंट, मिलाप, संयोग, मुलाकात।
सम्पूर्ण	–	पूर्ण, समग्र, सारा, पूरा।
सद्भाव	–	समन्वय, मेल-मिलाप, मेलजोल।
सर्प	–	भुजंग, अहि, विषधर, व्याल, फणी, उरग, साँप, नाग, अहि।
सुरपुर	–	सुलोक, स्वर्गलोक, हरिधाम, अमरपुर, देवराज्य, स्वर्ग।
सेठ	–	महाजन, सूदखोर, साहूकार, ब्याजजीवी, पूँजीपति, मालदार, धनवान, धनी, ताल्लुकदार।
हंस	–	मुक्तमुक, मराल, सरस्वतीवाहन।
हंसी	–	स्मिति, मुस्कान, हास्य।
दृढ़	–	जिद, अड़, टेक, दुराग्रह।
हित	–	कल्याण, भलाई, भला, उपकार।
हरिण	–	मृग, हिरण, कुरंग, सारंग।
हक	–	अधिकार, स्वत्व, स्वामित्व।
हिमालय	–	हिमगिरि, हिमाद्रि, गिरिराज, शैलेन्द्र।
हनुमान	–	पवनसुत, महावीर, आंजनेय, कपीश, बज्रांगी, मारूतिनन्दन।
हाथ	–	कर, हस्त, पाणि, भुजा, बाहु, भुजाग्र।
हाथी	–	गज, कुंजर, वितुण्ड, मतंग, नाग, द्विरद।
हार	–	(*i*) पराजय, पराभाव, शिकस्त, मात।
		(*ii*) माला, कंठहार, मोहनमाला, अंकमालिका।
हिम	–	तुषार, तुहिन, नीहार, बर्फ।
हिरन	–	मृग, हरिण, कुरंग, सारंग।
होशियार	–	समझदार, पटु, चतुर, बुद्धिमान, विवेकशील।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. कूल शब्द के पर्यायवाची शब्द हैं, अंधियारा, खीर, पट।
8. चिकित्सा के पर्यायवाची शब्द हैं उपचार, इलाज, दवादारू।
9. हित शब्द के पर्यायवाची शब्द हैं अधिकार, स्वत्व, स्वामित्व।

नोट

18.2 सारांश (Summary)

- पर्यायवाची शब्द किसी भी भाषा की सबलता के प्रतीक हैं, जिस भाषा में जितने अधिक पर्यायवाची शब्द होंगे, वह उतनी ही सबल व सशक्त भाषा होगी। इस दृष्टि से संस्कृत सर्वाधिक सम्पन्न भाषा है। कहा जाता है कि संस्कृत में 'राजा' शब्द के एक हजार से भी अधिक पर्यायवाची हैं। इसी प्रकार 'सारंग' शब्द के पचास से ऊपर शब्द बन सकते हैं। भाषा में इन शब्दों के प्रयोग से पूर्ण अभिव्यक्ति की क्षमता आती है, साथ ही भाषा में वह आकर्षिण और लालित्य आ जाता है जो वक्ता और श्रोता, दोनों के लिए ही अनिवार्य है। जिस भाषा में समानार्थक शब्दों का अभाव होगा, उसमें अभिव्यक्ति का सौन्दर्य नहीं होगा और न वह पुनरुक्ति दोष मुक्त हो पाएगी।

18.3 शब्दकोश (Keywords)

अजनबी : अपरिचित

कोशल : कला, हुनर, फन

किला : दुर्ग, कोट, गढ़

18.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. पर्यायवाची शब्द किसी भी भाषा की सबलता के प्रतीक क्यों हैं? उल्लेख कीजिए।
2. व्यवहार में पर्यायवाची शब्द प्रचलित क्यों हैं? संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. किसी भाषा में इन शब्दों के प्रयोग से पूर्ण अभिव्यक्ति क्यों आती है तथा भाषा में और आकर्षण क्यों आ जाता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. अंकमाल	2. अयोग्य	3. अनोखा
4. (*b*)	5. (*d*)	6. (*d*)
7. गलत	8. सही	9. गलत

18.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–19: अपठित गद्यांश

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

19.1 अपठित गद्यांश उदाहरण सहित

19.1.1 उदाहरण 1 और 2 तक

19.1.2 उदाहरण 3 और 4 तक

19.1.3 उदाहरण 5 से 7 तक

19.2 सारांश (Summary)

19.3 शब्दकोश (Keywords)

19.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

19.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- अपठित गंद्याश का अभिप्राय जानने हेतु।
- अपठित गंद्याश का उद्देश्य जानने हेतु।
- अपठित गंद्याश का वर्णन करने में।
- अपठित गंद्याश को विधिवत तरीके से समझने में तथा इसका अध्ययन करने में।

प्रस्तावना (Introduction)

'अपठित' अंग्रेजी भाषा के 'Unseen' शब्द का हिन्दीकृत रूप है। इस प्रकार अपठित से अभिप्राय गद्य या पद्य के एक ऐसे अवतरण से है, जिसे पहले देखा या पढ़ा न गया हो अर्थात् वह सर्वथा नया हो। ऐसे अवतरण प्राय: पाठ्यक्रमेतर पुस्तकों, समाचार-पत्रों, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से चयनित कर लिए जाते हैं। हो सकता है परीक्षा में आया हुआ अपठित किसी विद्यार्थी ने पहले कहीं पढ़ा हो, तो वह अपठित होते हुए भी उक्त परीक्षार्थी के लिए अपरिचित नहीं होता है। अत: अपठित का उद्‍देश्य विद्यार्थियों के स्वतंत्र अध्ययन तथा सामान्य ज्ञान की क्षमता का मूल्यांकन करना होता है। किसी भी अवतरण को पढ़कर विधिवत् समझना और उससे सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना-समर्थ, जागरूक और संवेदनशील पाठक के लिए ही सम्भव है। अपठित सम्बंधी कई प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं, जैसे-व्याख्या, सारांश, भावार्थ, आशय, मुख्यार्थ, संक्षेपण; विशिष्ट शब्दों या अंशों के अर्थ, अवतरण से सम्बंधित प्रश्न, शीर्षक निर्धारण इत्यादि।

नोट

व्याख्या (Explanation)– व्याख्या में किसी गद्यांश या पद्यांश की समस्त विशेषताओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उसमें व्यक्त विचार स्पष्ट और प्रांजल रूप में अभिव्यक्त हो जाएं। दूसरे शब्दों में, किसी गद्यांश या पद्यांश की विशेषताओं या सौष्ठव के उद्घाटन को हम व्याख्या कहते हैं। इसका आकार मूल अवतरण के आकार से बड़ा होता है। लेकिन व्याख्या का अर्थ दिए गए अवतरण को बढ़ा-चढ़ाकर कहना ही नही, अपितु उसका अभिप्राय यह है कि आप उस अवतरण को समझ गए हैं और समझी हुई बात को दूसरों को समझाने में सक्षम हैं। व्याख्या में दृष्टांत आदि का सहारा लिया जा सकता है। इसमें प्रसंग-निर्देश और विवेचित विषय की अनुकूल-प्रतिकूल समीक्षा भी हो सकती है।

सारांश (Summary)– अपठित गद्यांश या पद्यांश के मूल भाव को संक्षेप में प्रस्तुत करना या लिखना 'सारांश' कहलाता है। मूल अवतरण के दस पृष्ठों की कहानी को दस वाक्यों में भी प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार सारांश का मुख्य गुण 'संक्षिप्तता' है।

भावार्थ (Substance)– भावार्थ में अवतरण के मूल भावों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। भाव-लेखन में अवतरण का पुनर्लेखन इस प्रकार किया जाता है कि उसका भाव एकदम स्पष्ट हो जाए। सारांश के समान भावार्थ भी संक्षिप्त होता है, लेकिन यह अपनी परिधि में जकड़ा हुआ नहीं है। इसकी शैली मूल अवतरण की शैली के समान होती है, इसमें आवश्यकतानुसार प्रत्यक्ष कथन भी हो सकता है। भावार्थ में संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए मुहावरों, कहावतों, अलंकारों का समुचित प्रयोग किया जा सकता है।

आशय (Purpose)– आशय में सम्पूर्ण पदों या गूढ़ वाक्यों का स्पष्टीकरण किया जाता है। इसका आकार निश्चित नहीं होता है; यह मूल अवतरण से छोटा भी हो सकता है, बराबर भी हो सकता है और आवश्यकतानुसार बड़ा भी हो सकता है। इसका उद्देश्य अवतरण के मूल भावों, विचारों का आशय पूर्णरूपेण सरल एवं स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना है। अधिकांशत: परीक्षाओं में सारगर्भित वाक्यों या वाक्यांशों का आशय पूछा जाता है।

मुख्यार्थ (Gist)– मूल अवतरण के प्रमुख भावों को दो-चार वाक्यों में ही प्रस्तुत करना, जिससे उसका मुख्य अर्थ व्यक्त हो जाए। इसका आकार सारांश से भी छोटा होता है और इसकी शैली मूल अवतरण की शैली से काफी भिन्न होती है।

संक्षेपण (Precis Writing)– संक्षेपण में अपठित अवतरण के मूल भाव को एक तिहाई शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उसकी कोई भी महत्त्वपूर्ण बात छूटने न पाए तथा अनावश्यक बात का समावेश न होने पाए। संक्षेपण अपने आप में संक्षिप्त एंव पूर्ण रचना है, उसे पढ़ने-सुनने के बाद मूल अवतरण को पढ़ने-सुनने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। अपठित से सम्बंधित प्रश्नों को हल करने के लिए उसके मूल भावों को समझना अनिवार्य है। इसके लिए छात्रों को विशेष बल-बुद्धि का सहारा लेना पड़ता है।

आरम्भ में यह कार्य अवश्य कठिन प्रतीत होता है, किन्तु यत्किंचित् मानसिक व्यायाम और अभ्यास से इसे सरल बनाया जा सकता है। इसके लिए धैर्य व सावधानी की आवश्यकता है। अपठित में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर मूल अवतरण में ही उपस्थित रहते हैं; जिन्हें आसानी से खोजा जा सकता है।

अपठित के लिए महत्त्वपूर्ण अनुदेश–

(1) सर्वप्रथम अवतरण को भली-भाँति पढ़कर उसके मूल भाव को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। कम से कम चार-पाँच बार अवश्य पढ़ना चाहिए ताकि उसका मूल भाव भली-भाँति हृदयंगम हो जाए।

(2) मूल अवतरण के मूल भावों, महत्त्वपूर्ण विचारों और विशिष्ट शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए।

(3) कभी-कभी अवतरण में क्लिष्ट शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों की व्याख्या पूछी जाती है। ऐसे शब्द, वाक्यांश या वाक्य प्राय: रेखांकित, तारांकित अथवा मोटे अक्षरों में होते हैं। ये मूल भाव को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं, अत: इन पर विशेष ध्यान दें। इनकी व्याख्या अपने ही शब्दों में करें। कठिन शब्दों के मात्र पर्यावाची लिखना उपयुक्त नहीं होता है। अपनी भाषा में 'भाव' सरलता और स्पष्टता से व्यक्त होते हैं; अतएव अपने शब्दों में लिखना अत्यंत आवश्यक है।

(4) व्याख्या, सारांश, भावार्थ, आशय, मुख्यार्थ, संक्षेपण, इत्यादि की भाषा सदैव अपनी (मौलिक) होनी चाहिए।
(5) यदि रेखांकित/स्थूलांकित/तारांकित शब्द अनेकार्थक हैं, तो उनका अर्थ प्रसंग के अनुकूल ही लिखना चाहिए।
(6) प्रश्नों के उत्तर मूल अवतरण में ही विद्यमान होते हैं, अतएव उन्हें मूल अवतरण में ही ढूंढें, बाहर नहीं।
(7) प्रश्नों के उत्तर में मूल अवतरण के शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन भाषा-शैली अपनी ही होनी चाहिए।
(8) प्रश्नों के उत्तर प्रसंग और प्रकरण के अनुकूल ही संक्षिप्त, स्पष्ट और सरल भाषा में प्रस्तुत करने चाहिएँ। प्रश्नों के उत्तर में अपनी ओर से कुछ भी नहीं जोड़ना चाहिए और न ही कोई उदाहरण आदि देना चाहिए।
(9) प्रायः अपठित का शीर्षक पूछा जाता है, यदि न भी पूछा गया हो तो भी शीर्षक लिखने में कोई हानि नहीं है।
(10) शीर्षक सदैव मूल अवतरण के केन्द्रीय भाव के आधार पर ही निर्धारित करना चाहिए, इससे वह अवतरण के समग्र कथ्य को व्यक्त करने में सक्षम होगा।
(11) शीर्षक यथासम्भव संक्षिप्त, सरल एवं मूलभाव को व्यक्त करने वाला ही होना चाहिए। शीर्षक चयन में मूल अवतरण के शब्दों को लिया जा सकता है।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए अपठित के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

19.1 अपठित गद्यांश उदाहरण सहित

19.1.1 उदाहरण 1 से 2 तक

उदाहरण–1 (मूल अवतरण)

सुबह-शाम की प्रार्थना के बाद विनोबा जी प्रवचन करते थे। वे जो भी बोलते थे **वह ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग का निचोड़ होता था।** इसकी बानगी उनके 30-4-35 के प्रवचन से मिलती है–

"आज की समाज रचना इतनी बिगड़ गई है कि लोग एक-दूसरे की चिन्ता नहीं करते। यदि कोई प्रयोग करना चाहे तो अपनी चिन्ता छोड़कर दूसरों की चिन्ता करके देख ले कि क्या परिणाम आता है। मुझे कैसे सुख मिले, मुझे कैसे प्रतिष्ठा मिले, इत्यादि चिन्ताएँ छोड़कर दूसरों की चिन्ता करके देखो; उसमें कैसा आनन्द आता है।

जो अपनी चिन्ता छोड़कर दूसरों की चिन्ता करने लगता है, **उसकी भगवान को चिन्ता करनी पड़ती है।** मेरा ब्रह्मचर्य पालन का प्रयत्न है। यदि इस जन्म में सफलता न मिली तो चाहे दस जन्म भी क्यों न लेने पड़ें, मै धीरज नहीं छोड़ूँगा।"

फिर आगे बोलते हुए उन्होंने कहा, "जो अपनी चिन्ता करने लगता है, मैं उसकी चिन्ता से मुक्त हो जाता हूँ। मैं ही सब लाभ क्यों प्राप्त कर लूँ? **जो दूसरों के पास है, वह भी तो मेरा ही है।** अगर एक जेब में पैसे थोड़े हुए और दूसरी जेब में ज्यादा तो क्या हम घबराते हैं ? **दोनों जेबें हमारी ही तो हैं।"**

एक मित्र ने मुझसे कहा कि जवानी में पैसे कमाकर बुढ़ापे के लिए रख लेने चाहिएँ। मैंने उससे तो कुछ न कहा, परन्तु कौन कहेगा कि यह विचार-योग्य है? जो जवानी में सेवा करेगा, उसकी सेवा बुढ़ापे में समाजरूपी परमेश्वर करेगा। अगर किसी को विश्वास न हो तो करके देख ले। सेवामय जीवन बिताने में जो आनन्द है, वह अपने लिए चिंता करने में नहीं है। तुलसीदास जी ने कितना सुन्दर लिखा है–**"परहित बस जिनके मन माही, तिन कहँ जग दुलर्भ कछु नाहीं।"** यह बोलते-बोलते विनोबा जी का हृदय भर आया और वाणी रुक गई। हम सबके हृदय भी गद्‌गद् हो गये। कितना पावन था वह दिन।

शीर्षकः "परमार्थ चिंतन"

सारांश–विनोबा जी के प्रवचनों में ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग का सार तत्त्व मिलता है। उन्होंने कहा है–आज समाज में लोग एक-दूसरे की परवाह नहीं करते और निरंतर अपनी स्वार्थ-पूर्ति की चिंता करते हैं। हमें परहित चिंतन करना चाहिए। परहित चिंतक की चिन्ता स्वयं प्रभु करते हैं। जो जवानी में दूसरों की सेवा करता है, बुढ़ापे में उसकी सेवा

नोट

समाजरूपी प्रभु करते हैं। जो स्वार्थवश अपनी ही फिक्र करते हैं, प्रभु जी उनकी चिन्ता से मुक्त हो जाते हैं। परहित चिंतन और सेवा में असीम आनन्द है, परोपकारी के लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

रेखांकित/स्थूलांकित अंशों की व्याख्या

(*i*) वह ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग का निचोड़ होता था–प्रस्तुत गद्यांश में लेखक आचार्य विनोबा जी के प्रवचनों की विशेषता बताते हुए उनमें ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग के सार तत्त्व को महत्त्वपूर्ण माना है।

आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य की आत्मकेंद्रित स्वार्थी प्रवृत्तियों ने उसके भीतर और बाहर की सामाजिक दुनिया में विघटन पैदा किया है। परिणामत: उसके **ज्ञान** (चिंतन पक्ष), **भक्ति** (भाव पक्ष) और उसकी दैनिक जीवनचर्या में घटित होने वाले **कर्म पक्ष** में अलगाव उत्पन्न हुआ है। यही बीसवीं सदी के मनुष्य के निजी जीवन की समस्या है, जो समाज के विकास में सबसे बड़ा अवरोध भी है। इसका मूल कारण है–स्व का संकुचन। लेखक कहता है कि विनोबा जी के परमार्थ चिंतन में इसका न सिर्फ निषेध है, वरन् वे ज्ञान, भक्ति और कर्म की एकता पर पूरा बल देते थे। कामायनी में इसी समस्या को प्रसाद जी मनुष्य के माध्यम से कहते हैं–

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके,
यह विडम्बना जीवन की।"

इस प्रकार चिंतन पक्ष (ज्ञान), भाव पक्ष (भक्ति) और कर्म पक्ष की एकता ही लक्ष्य की प्राप्ति करा सकती है।

(*ii*) उसकी भगवान को चिन्ता करनी पड़ती है–प्रत्येक रचनाकार अपनी रचना की अच्छाइयों को देखकर प्रसन्न होता है। उसकी रचना सदैव अच्छी बनी रहे, यह उसकी सामान्य इच्छा होती है। सर्वव्यापी ईश्वर इस चराचर जगत का निर्माता है। स्वभावत: ईश्वर इसे सत्य, शिव और सुन्दर देखना चाहता है। जो इस दिशा में सहायक होगा, नि:सन्देह उस पर प्रभु की विशेष कृपा होगी। यदि लोग स्वार्थी प्रवृत्ति को त्यागकर एक-दूसरे के लिए चिंतन करें सहयोग करें तो निश्चय ही यह समाज सत्य, शिव और सुंदर बनेगा, जो ईश्वर की सामान्य इच्छा है। अतएव विनोबा जी ने कहा है–"जो अपनी चिंता छोड़कर दूसरों की चिंता करने लगता है, उसकी भगवान को चिंता करनी पड़ती है।"

(*iii*) जो दूसरों के पास है, वह भी तो मेरा ही है–परमार्थ चिंतक का दृष्टिकोण व्यापक होता है, उसकी सोच अभेदमूलक होती है, अतएव ऐसे लोगों के लिए सम्पूर्ण संसार अपने परिवार के समान होता है। संस्कृत में श्लोक है–

"अयं निज:परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

अर्थात् यह अपना है और यह पराया, ऐसी गणना संकुचित विचार वाले लोग ही करते हैं, उदार चरित्र वालों के लिए तो सम्पूर्ण पृथ्वी अपना परिवार है। आचार्य विनोबा जी महापुरूष थे, उनका चिंतन व्यापक था। 'भूदान यज्ञ' द्वारा उन्होंने परहित चिंतन को मूर्तरूप दिया था। अतएव उन्होंने अपने प्रवचन में कहा है–"जो दूसरों के पास है, वह भी तो मेरा ही है।"

(*iv*) दोनों जेबें हमारी ही तो हैं–सेवामय भावना से व्यक्ति के विचारों में व्यापकता आ जाती है। ऐसे लोगों के लिए अपना-पराया आदि नहीं होता है। अर्थात् वे समदर्शी होते हैं। इसी विचार को पल्लवित करते हुए विनोबा जी ने कहा है–"यदि हमारी एक जेब में पैसे कम हैं और दूसरी में ज्यादा तो हमें कोई चिन्ता नहीं होती, क्योंकि दोनों जेबें तो अपनी ही हैं।"

(*v*) "परहित बस जिनके मन माही, तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं"–गोस्वामी तुलसीदास जी की यह चौपाई सेवाभावना (परमार्थ चिंतन) के सुख को अभिव्यक्त करती है। इसका आशय है–परमार्थ चिंतक के लिए इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है अर्थात् उसे सब कुछ सुलभ है। चूँकि परोपकारीजनों की भावना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' होती है और वे नितांत पारिवारिकता की भावना से समाज सेवा करते हैं। इसलिए प्रत्युपकारवश समाज रूपी प्रभु उनकी सेवा करते हैं। जिसे प्रभुकृपा प्राप्त हो जाए, उसे इस संसार में कुछ भी पाने को शेष नहीं रह जाता है अर्थात् उन्हें सब कुछ मिल जाता है।

उदाहरण–2 (मूल अवतरण)

"वह जीव ही नहीं, जिसमें प्रेम की भावना नहीं। वह मानव नहीं, जिसमें देशभक्ति व प्रेम नहीं।" ऐसे विचार हैं, किसी महात्मा के। **वे तो प्रेम रहित प्राणी को पाषाण की उपमा देते हैं।**

भगवान ने सृष्टि के सृजन के साथ-साथ प्रत्येक प्राणी में एक ऐसी चीज़ का सृजन किया है, जिसे अंत:कारण, हृदय, मन, दिल आदि कोई भी संज्ञा दी जा सकती है। ईश्वर ने उसे द्रवणशील बनाया है। **प्राणिमात्र के जीवन में एक अवस्था ऐसी आती है कि वह द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता।** चाहे वह अवस्था स्वार्थवश आए अथवा परमार्थवश। प्राणिमात्र में उस अवस्था का आना अनिवार्य है। हाँ, मनुष्य नाम के प्राणी में वह अवस्था अधिक होती है। वह इसलिए कि वह सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। प्रेम की भावना चाहे संतान के निमित्त हो, चाहे स्थान के निमित्त, चाहे किसी वस्तु के निमित्त, चाहे अपने निमित्त हो, चाहे परहित के निमित्त; होती अवश्य है। किन्तु देशभक्ति की भावना जिस मनुष्य में नहीं, वह पशु एवं पाषाण से भी गिरा हुआ है। जहाँ जन्म लिया, पले, बढ़े, चलना, दौड़ना, खेलना, हँसना, खाना-पीना आदि करते रहे जिसके कण-कण को गंदा-मैला, कलुषित किया और वह सदा मुस्कराती रही। यदि हमें उस माँ (जन्म-भूमि) से प्रेम नहीं तो धिक्कार है हमारे जीवन पर। आज तो इस भावना की विशेष आवश्यकता है, परंतु स्वदेश प्रेम का यह अर्थ नहीं कि हम भारत माँ की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करें या **'भारत माता की जय' का नारा लगाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री करें।** देश के प्रति हमें अपना कर्त्तव्य भी पूरा करना चाहिए।

यदि हमें देश से सच्चा प्रेम है तो हमें देश का योग्य नागरिक बनना होगा। हमें देश की एकता की रक्षा करनी होगी। यह तभी हो सकता है जब हम मन के सम्प्रदाय-भेद, भाषा-भेद, जाति भेद, स्पृश्यता-अस्पृश्यता भेदों को भुला दें। देश की बनी चीजों से ही प्यार करें विदेशी चीजों से बचें। स्वतंत्रता से पहले खादी को जो प्यार मिला था, अब उसका नामोनिशां नहीं है। **हम आपस में दंगे-फसाद में सारा श्रम नष्ट कर रहे हैं। अपने देश के अधूरे कामों को करने का समय नहीं दे रहे हैं।** केवल नारों से, संघर्षों से देश मज़बूत नहीं होते। इसका सीधा उत्तर है–देश के हित में भेदभाव भुलाकर कर्त्तव्य मार्ग पर जुट जाना, अपने दीन-दु:खी भाइयों के हितार्थ कार्य करना, देश की बनी वस्तुओं का, देश के सपूतों का, देश की मिट्टी का सम्मान करना। यदि आप कारखाने में काम करते हैं, यदि आप दफ्तर में कार्य करते हैं, यदि आप समाज की सेवा करते हैं, कर्म को देश के लिए निर्देशों के अनुसार अपनी सामर्थ्य से कीजिए। **देशप्रेम देश के प्रति कर्त्तव्य पालन का दूसरा रूप है।**

नोट्स अपठित गद्यांश का उद्देश्य विद्यार्थियों के स्वतंत्र अध्ययन तथा सामान्य ज्ञान की क्षमता का मूल्यांकन करना होता है।

शीर्षक: "देशप्रेम"

सारांश–प्रेम रहित जीव और देशप्रेम रहित मनुष्य पाषाण तुल्य है। ईश्वर ने प्रत्येक जीव में 'मन' सृजित किया है, जो प्रेमवश द्रवित होता है। मानव मन सर्वाधिक द्रवणशील होता है, अतएव वह सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। प्रत्येक व्यक्ति में देशप्रेम और कर्त्तव्य बोध की भावना होनी चाहिए। जिसे अपनी मातृभूमि से प्यार नहीं, उसका जीवन धिक्कार है। आज देश धर्म, जाति, भाषा, छुआछूत जैसी विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। ऐसे में प्रत्येक नागरिक को

नोट

पारस्परिक भेदभाव भुलाकर, कर्त्तव्य पालन द्वारा देश की सेवा करनी चाहिए। स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना, दीन-दुखियों की सेवा करना और अपने कार्यों को सुचारु रूप से करना ही देशभक्ति है। वस्तुतः कर्त्तव्य पालन ही सच्चा देशप्रेम है।

रेखांकित/स्थूलांकित अंशों का आशय–

(*i*) वे तो प्रेम रहित प्राणी को पाषाण की उपमा देते हैं–प्रेम व्यक्ति का आंतरिक और वास्तविक सौन्दर्य है; जिसमें प्रेम नहीं, उसमें सौन्दर्य नहीं। ऐसा व्यक्ति असंवेदनशील एवं पाषाण तुल्य होता है। किसी कवि ने कहा है–

"भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं, वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।"

जैसे पत्थर स्पंदनहीन, कठोर, गतिहीन होता है, वैसे ही देशप्रेम विहीन व्यक्ति असंवेदनशील, क्रूर एवं कृतघ्न होता है। उसका देश और समाज से कुछ भी लेना-देना नहीं होता है। वह अपनी स्वार्थ पूर्ति में संलग्न पृथ्वी पर भार स्वरूप होता है। प्रेम दैवीय गुण है, जो लोगों को जोड़ता है, उनमें सहयोग और सहानुभूति की भावना उत्पन्न करके नवनिर्माण करता है। जबकि प्रेम रहित व्यक्ति में दूसरों की पीड़ा की अनुभूति नहीं होती है, अतएव प्रेम रहित व्यक्ति को सुधीजन पाषाण की उपमा देते हैं।

(*ii*) प्राणिमात्र के जीवन में एक अवस्था ऐसी आती है कि वह द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता–ईश्वर ने सृष्टि-रचना के साथ ही प्रत्येक प्राणी में मन (अंतःकरण) का सृजन किया है। मन द्रवणशील होता है वह सदैव प्रेम के वशीभूत होकर द्रवित हो जाता है। प्रेम चाहे स्वार्थवश हो या परमार्थवश; प्रत्येक प्राणी में होता अवश्य है। प्रेम में द्रवित प्राणी सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाता है, क्योंकि प्रेम ही ईश्वर है। ईश्वर मिलन के क्षण सभी सांसारिक वस्तुएँ नगण्य हो जाती हैं। संसार के सभी प्राणी कभी न कभी, किसी न किसी से प्रेम अवश्य करते हैं और द्रवित होते हैं। अतएव कहा गया है कि प्राणिमात्र के जीवन में एक अवस्था ऐसी आती है कि द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता।

(*iii*) 'भारत माता की जय' का नारा लगाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री करें–अपनी मातृभूति से प्रेम करना हम सबका कर्त्तव्य है। इसके लिए हमें साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद और छुआछूत का भेदभाव मिटाकर, विदेशी वस्तुओं का त्याग और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाकर देश-सेवा करनी होगी। देशप्रेम का अर्थ यह नहीं है कि हम भारत की तस्वीर लगाकर उसकी पूजा करें और भारत माता की केवल जय-जयकार करें। यह देशभक्ति नहीं, वरन् दिखावा होगा। आज के बदले हुए परिवेश में लोगों का मानवीय दृष्टिकोण बदल गया है।। लोग त्याग, सेवा, परोपकार की भावना को भूलकर देश-सेवा का ढोंग रचते हैं और स्वार्थ सिद्ध करते हैं। जिन पूर्वजों (महापुरुषों) का नाम लेते हैं, उन पर फूल-माला चढ़ाते हैं; व्यवहार में उन्हीं महापुरुषों के आचरण के विपरीत कार्य करते हैं। ऐसे लोग देशभक्ति के नाम पर 'भारत माता की जय' का नारा लगाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री करते हैं।

(*iv*) हम आपस में दंगे-फसाद में सारा श्रम नष्ट कर रहे हैं। अपने देश के अधूरे कामों को करने का समय नहीं दे रहे हैं–हमारा देश साम्प्रदायिकता, जातीयता, भाषा-विवाद और छुआछूत जैसी संकीर्णताओं में उलझा हुआ है। हमारे राजनेता सम्प्रदाय और जाति का गणित लगाकर कुर्सी की राजनीति कर रहे हैं, देश दंगों से झुलस रहा है। आज आवश्यकता है–धर्म, जाति, भाषा और छुआछूत का भेदभाव मिटाकर लोगों को जोड़ने की।

क्या आप जानते हैं अपठित गद्य में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर मूल अवतरण में ही उपस्थित रहते हैं; जिन्हें आसानी से खोजा जा सकता है।

नोट

दीन-हीन गरीबों की मदद करने की और अपने कर्त्तव्य पालन की। कर्त्तव्य पालन ही देश सेवा है। दंगे-फसादों में संलग्न लोगों की धन-जनशक्ति को देश के रचनात्मक कार्यों में लगाने की; जिससे देश का विकास हो सके। लेकिन लोग दंगे-फसाद में सारा समय और श्रम नष्ट कर रहे हैं, अपने देश के अधुरे कामों को पूरा करने का समय नहीं दे रहे हैं।

(*v*) देशप्रेम देश के प्रति कर्त्तव्य पालन का दूसरा रूप है–कर्त्तव्य पालन ही देशप्रेम है। व्यक्ति चाहे खेत-खलिहान में काम करता या किसी कारखाने में या किसी कार्यालय या सेना आदि में। जो व्यक्ति जहाँ जो भी कार्य करता है, यदि वह अपने मौलिक कर्त्तव्यों को ध्यान में रखकर कार्य को सुचारु रूप से करता है तो वह देश-सेवा ही करता है; क्योंकि उसका कार्य रचनात्मक एंव देश व समाज के लिए कल्याणकारी ही होगा। वस्तुत: कर्त्तव्य पालन ही सच्चा देशप्रेम है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. आज की समाज रचना इतनी बिगड़ गई है कि लोग एक-दूसरे की ········ नहीं करते।
2. सेवामय भावना से व्यक्ति के विचारों में ········ आ जाती है।
3. देश प्रेम के प्रति ········ का दूसरा रूप है।

19.1.2 उदाहरण 3 से 4 तक

उदाहरण–3 (मूल अवतरण)

हिन्दी हमारी सजीव भाषा है। इसी कारण इसने अरबी, फ़ारसी आदि भाषाओं के सम्पर्क में आकर इनके तो शब्द ग्रहण किए ही हैं, अब अंग्रेजी के भी शब्द ग्रहण करती जा रही है। इसे दोष नहीं, गुण ही समझना चाहिए; क्योंकि अपनी इस ग्रहण शक्ति से हिन्दी भाषा अपनी वृद्धि कर रही है, ह्रास नहीं। ज्यों-ज्यों इसका प्रचार बढ़ेगा, त्यों-त्यों इसमें नए शब्दों का आगमन होता जाएगा। **क्या भाषा की शुद्धता के किसी भी पक्षपाती में यह शक्ति है कि वह विभिन्न जातियों के पारस्परिक सम्बंध को न होने दे ? यह कभी सम्भव नहीं।** हमें तो केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अनेक भाषाओं के शब्दों के सम्मिश्रण के बावजूद भी हमारी भाषा हिन्दी अपने स्वरूप को विकृत नहीं कर रही है। उसका विकास निरंतर हो रहा है।

प्रश्न

1. *उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि हिन्दी में विदेशी भाषाओं के शब्दों का आगमन क्यों उचित है?*
2. *उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर सजीव भाषा को परिभाषित कीजिए।*
3. *उपर्युक्त स्थूलांकित शब्दों की व्याख्या कीजिए।*

उत्तर

1. हिन्दी में विदेशी भाषाओं के शब्दों का आगमन इसलिए उचित है, क्योंकि विदेशी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करके हिन्दी अपनी शक्ति में निरंतर वृद्धि कर रही है।

2. जो भाषा नए-नए शब्दों को विदेशी भाषाओं के शब्दों से ग्रहण करके अपनी शक्ति में वृद्धि करती रहती है, उसे सजीव भाषा कहते हैं।

3. **(अ) हिन्दी हमारी सजीव भाषा है।**

वृद्धि एक जैविक गुण है। हमारी हिन्दी नित्य नए-नए शब्दों को ग्रहण करके निरंतर अपने शब्द-भण्डार में वृद्धि कर रही है, अतएव हिन्दी हमारी सजीव भाषा है।

नोट

(ब) क्या भाषा की शुद्धता के किसी भी पक्षपाती में यह शक्ति है कि वह विभिन्न जातियों के पारस्परिक सम्बंध को न होने दे ? यह कभी सम्भव नहीं।

कुछ लोगों के मतानुसार-किसी भाषा में केवल उसी भाषा के शब्द रहने चाहिएँ, उसमें अन्य भाषाओं के शब्द न आने पाएँ, इसे वे भाषा की शुद्धता मानते हैं। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि सामाजिक जीवन के निर्वाह के लिए अन्य जातियों एवं उनकी सभ्यताओं से सम्पर्क आवश्यक है। सम्पर्क का लक्षण भावों-विचारों का आदान-प्रदान होता है। प्रत्येक भाषा-भाषी के लिए आवश्यक है कि वह अन्य सभ्यताओं से सम्बंधित भाषाओं के शब्दों को अपनाए और अपनी भाषा के शब्द-भण्डार को निरंतर समृद्ध करे, तभी वह भाषा सजीव रह सकेगी। इसी प्रकार यदि किसी जाति को जीवित रहना है तो उसे अन्य जातियों से सम्पर्क स्थापित करना होगा और उनसे विचारों का आदान-प्रदान करना होगा। सामाजिक जीवन में यह सम्भव ही नहीं है कि कोई जाति एकदम अकेली रहे और अन्य जातियों के सम्पर्क में न आए।

टास्क अपठित गद्यांश का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उदाहरण–4

यह तो आप जानते ही हैं कि भारत एक बहुभाषी देश है। **हमारे संविधान द्वारा यहाँ की 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।** हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त हुआ है, वह इस कारण से नहीं कि यह देश की बहुसंख्यक लोगों की भाषा है, बल्कि इसलिए भी कि हमारे देश की भाषाओं की जननी संस्कृत के यह अधिक समीप है और **हमारी पुरातन परम्पराओं की अभिव्यक्ति तथा आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।** हमारी कुछ भाषाएँ संस्कृतजन्य हैं, कुछ पंच-द्रविड़ भाषाएँ कहलाती हैं; जैसे–तेलुगु, कन्नड़, तमिल, मलयालम, तुलू। इन दोनों परिवारों का साहित्य समृद्ध और प्राचीन है, परन्तु जब हम इन भाषाओं का बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृत से न्यूनाधिक मात्रा में ये प्रभावित हुई हैं। इस नाते उनमें विभिन्नता होने पर भी एक सामीप्य स्थापित हो जाता है। इसके अंतरंग में उसी सलिल सरिता की शीतल एंव निर्मल धारा प्रवाहित है, जिससे प्राय: हमारी सभी भाषाएँ फली-फूली हैं। इस बात से कौन इंकार कर सकता है कि **सहस्त्रों वर्षों की अर्जित आध्यात्मिक सम्पदा इन भाषाओं ने संजोकर रखी है।** वह सम्पदा इन्हीं के माध्यम से भारतीय जनमानस को लाभाविन्त करती रही है। हिन्दी का चयन एक राष्ट्रीय भावना से किया गया था और यह कल्पना की गई थी कि इसके प्रतिनिधित्व में भारत की प्रांतीय भाषाएँ समृद्ध और उन्नत होंगी। आज हम अनुभव करते हैं कि वह स्वप्न साकार होता जा रहा है। मुझे वह समय स्मरण है कि **जब हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की बातें जोरों पर थीं।** इसे उच्च आसन पर सुशोभित करने का श्रेय हिन्दी भाषियों से कहीं अधिक देश की अन्य भाषाओं के नेताओं की सूझ-बूझ और दूरदर्शिता को प्राप्त है।

प्रश्न

1. *ऊपर लिखे गद्यांश के स्थूलांकित अंशों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।*
2. *ऊपर के गद्यांश का सार लगभग 100 (एक सौ) शब्दों में लिखिए।*

उत्तर

1. स्थूलांकित अंशों का अर्थ

(*i*) हमारे संविधान द्वारा यहाँ की 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है।

भारत बहुभाषा-भाषी देश है। यहाँ लगभग दो सौ भाषाएँ व्यवहृत हो रही हैं, इनमें से 22 भाषाओं को हमारे संविधान ने राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में स्वीकृत किया है अर्थात् इन 18 भाषाओं में से किसी भी भाषा में, किसी भी राज्य

सरकार या केंद्रीय सरकार से पत्राचार किया जा सकता है। लोकसभा या राज्यसभा में इनमें से किसी भी भाषा में अपनी बात प्रस्तुत की जा सकती है।

(*ii*) हमारी पुरातन परम्पराओं की अभिव्यक्ति तथा आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।

हिन्दी एक पूर्ण और समर्थ भाषा है। इसके माध्यम से हम अपनी प्राचीन परम्पराओं, विचारधाराओं को व्यक्त करते हैं और आधुनिक प्रयोजनीय, वैज्ञानिक और तकनीकी विचारों, आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति सफलातापूर्वक करते हैं। इसके लिए हिन्दी की शब्द सम्पदा पूर्णरूपेण सक्षम है।

(*iii*) सहस्त्रों वर्षों की अर्जित आध्यात्मिक सम्पदा इन भाषाओं ने संजोकर रखी है।

हजारों वर्षों से भारतीय चिंतकों, विचारकों, मनीषियों ने लोक-परलोक एंव सूक्ष्मजगत् के बारे में गम्भीर चिंतन-मनन किया है, उनके विचार एवं निष्कर्ष विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य में आज भी अध्ययन हेतु उपलब्ध हैं।

(*iv*) जब हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने की बातें जोरों पर थीं।

उन दिनों हिन्दी को शासकीय कामकाज की भाषा के रूप में और भारत की सर्वमान्य भाषा अर्थात् राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कराने की माँग चारों ओर से उठाई जा रही थी और इस दिशा में सफलता के लिए पूर्ण प्रयास किए जा रहे थे।

शीर्षकः "राष्ट्रभाषा हिन्दी"

सारांश-हमारे संविधान में 18 भाषाएँ मान्यता प्राप्त हैं। इनमें हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। हिन्दी हमारी प्राचीन परम्पराओं की अभिव्यक्ति तथा आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सक्षम है। कुछ भारतीय भाषाएँ संस्कृतजन्य हैं, कुछ पंच-द्रविड़। पंच-द्रविड़ भाषाएँ भी संस्कृत से प्रभावित हैं, अतएव सभी भारतीय भाषाओं में सामीप्य है। इनके सम्पन्न साहित्य से भारतीय जनमानस सदैव लाभान्वित होता रहा है। राष्ट्रीय भावनावश हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अहिन्दी भाषियों को योगदान अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण रहा है। राष्ट्रभाषा के विकास के साथ ही अन्य प्रांतीय भाषाएँ भी समृद्ध और उन्नत हो रही हैं।

(सारांश की शब्द संख्या = 100)

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. कुछ लोगों के मतानुसार किसी भाषा में केवल उसी भाषा के .... चाहिए, उसमें किसी अन्य भाषाओं के शब्द न आ पाएँ, उसे वे भाषा की शुद्धता मानते हैं।

   (*a*) अर्थ (*b*) भण्डार

   (*c*) सम्पर्क (*d*) शब्द

5. हमारी कुछ भाषाएँ संस्कृतजन्य हैं, कुछ पंच-द्रविड़ भाषाएँ कहलाती हैं, जैसे–तेलगु, कन्नड़ .... मलयामल, तुलू।

   (*a*) मराठी (*b*) उड़िया

   (*c*) गुजराती (*d*) तमिल

6. भारत बहुभाषी देश है, यहाँ लगभग कितनी भाषाएँ व्यवहृत हो रही हैं।

   (*a*) पाँच सौ (*b*) आठ सौ

   (*c*) चार सौ (*d*) दो सौ।

नोट

19.1.3 उदाहरण 5 से 7 तक

उदाहरण–5

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक सांस्कृतिक धरोहर होती है, जिसके बल पर वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। मानव युग-युग से अपने जीवन को अधिक सुखमय, उपयोगी, शांतिमय और आनन्दपूर्ण बनाने का प्रयत्न करता रहा है। इस प्रयास का आधार वह सांस्कृतिक धरोहर होती है, जो प्रत्येक मानव को विरासत के रूप में मिलती है और इस प्रयास के फलस्वरूप मानव अपना विकास करता है। कुछ लोग सभ्यता और संस्कृति को एक ही मानते हैं, यह उनकी भूल है। यों तो सभ्यता और संस्कृति में घनिष्ठ सम्बधं है, किन्तु संस्कृति मानव-जीवन को श्रेष्ठ एवं उन्नत बनाने की साधनाओं का नाम है और सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध हुई जीवन प्रणाली का नाम है। सभ्यता के अंतर में बहने वाली विचारधारा को हम संस्कृत कह सकते हैं। संस्कृति अच्छी या बुरी हो सकती है। किसी राष्ट्र की सभ्यता का मूल्यांकन हम उसकी संस्कृति के आधार पर कर सकते हैं। प्रत्येक राष्ट्र की संस्कृति वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर है। **प्रकृति का मानव-जीवन को प्रभावित करने में बड़ा महत्त्वपूर्ण हाथ रहता है।**

प्रश्न

(क) *उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर सभ्यता और संस्कृति का अंतर स्पष्ट कीजिए।*

(ख) *किसी राष्ट्र की सभ्यता के मूल्यांकन में संस्कृति का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।*

(ग) *उपर्युक्त गद्यांश के स्थूलांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।*

उत्तर

(क) मानव-जीवन को श्रेष्ठ एवं उन्नत बनाने वाली साधनाओं को 'संस्कृति' और उन साधनाओं से प्राप्त जीवन पद्धति को 'सभ्यता' कहते हैं। 'संस्कृति' जीवन को सुख-शांतिमय और उपयोगी बनाने की विचारधारा और 'सभ्यता' उसका व्यावहारिक स्वरूप है। इस प्रकार 'संस्कृति' मानव-जीवन का आंतरिक पक्ष और 'सभ्यता' बाह्य पक्ष है।

(ख) सभ्यता में अंतर्निहित विचारधारा ही 'संस्कृति' कहलाती है, अतएव किसी राष्ट्र की सभ्यता का मूल्यांकन उसकी संस्कृति के आधार पर किया जाता है। बिना संस्कृति के सभ्यता का मूल्यांकन किया ही नहीं जा सकता है।

(ग) **स्थूलांकित अंशों की व्याख्या–**

(*i*) प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक सांस्कृतिक धरोहर होती है–आरम्भ से ही मानव अपने जीवन को श्रेष्ठ, सुखमय और उन्नत बनाने का प्रयास करता रहा है। इसके लिए वह अपने पूर्वजों के उन्नत संस्कारों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं का अनुसरण करता है। इस प्रकार ये संस्कार, रीति-रिवाज, परम्पराएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती हैं और मानव-जीवन के विकास में सहायक होती रहती हैं। प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थिति और जलवायु विभिन्न प्रकार की होती है, परिणामत: विभिन्न देशों की भाषा, संस्कार, रीति-रिवाज आदि में भी विभिन्नता होती है। इन संस्कारों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों आदि को ही हम 'संस्कृति' कहते हैं। अत: प्रत्येक देश की अपनी एक संस्कृति होती है, जो उसे अपने पूर्वजों से धरोहर के रूप में मिलती है।

(*ii*) प्रकृति का मानव-जीवन को प्रभावित करने में बड़ा महत्त्वपूर्ण हाथ रहता है–प्रकृति और मानव-जीवन का अन्योन्याश्रित सम्बंध है। आदिकालीन मानव ने जब अपने नेत्र खोले होंगे तो उसका सर्वप्रथम प्रकृति का ही सहचर्य और सहयोग प्राप्त हुआ होगा। इसलिए कहा गया है-प्रकृति मानव की आदिम सहचरी है। प्रकृति की गोद में ही मानव का पोषण और विकास होता है। अत: मानव-जीवन को प्रकृति से अलग नहीं किया जा सकता है। डार्विनवाद के अनुसार-"जीवन का अस्तित्व ही प्रकृति के अनुकूल में है। जो प्राणी प्रकृति के अनुकूल होते हैं, वे ही जीवित रहते हैं" और जो अपने को प्रकृति के अनुकूल नहीं बना पाते हैं, वे मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रकृति सभी प्राणियों को प्रभावित करती है तो मनुष्य उससे कैसे अछूता रह सकता है? मानव-जीवन को प्रभावित करने में प्रकृति का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

नोट

> नोट्स अपठित गद्यांश से संबंधित प्रश्नों को हल करने के लिए उसके मूल भावों को समझना अनिवार्य है।

उदाहरण–6

आज का जीवन सर्वथा विशृंखलित और अव्यवस्थित है। जीवन मूल्यों की इतनी भयंकर अराजकता पहले शायद ही कभी सामने आई हो। राजनीतिक दुर्व्यवस्था के साथ सांस्कृतिक और दार्शनिक उलझनों ने मिलकर जीवन में अगणित गुत्थियां डाल दी हैं, जिनमें आज का विचारक फंसकर रह जाता है। इस प्रकार के राजनीतिक विप्लव तो पहले भी आए, किन्तु मानव चेतना पर उनका इतना सर्वव्यापी प्रभाव नहीं पड़ा। इसका कारण यह है कि पहले राजनीति और संस्कृति प्राय: स्वतंत्र थीं, किन्तु आज वे एक-दूसरे से गुंथ गई हैं। **राजनीतिक विप्लव ने भयंकर आध्यात्मिक विप्लव को जन्म दिया है।** आज न तो अध्यात्म-दर्शन में विश्वास है, न भौतिक-दर्शन में। **विज्ञान ने ईश्वरीय विश्वास तो हिला दिया, परन्तु अपने में विश्वास जमाने में असफल रहा है।** समाज की प्राचीन व्यवस्था भंग हो गई है, परन्तु नवीन व्यवस्था दूर तक दिखाई नहीं देती।

प्रश्न

(अ) *आज का जीवन विशृंखलित क्यों हो गया है?*

(ब) *उपर्युक्त गद्यांश का तात्पर्य अपने शब्दों में लिखिए।*

(स) *उपर्युक्त गद्यांश में स्थूलांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।*

उत्तर

(अ) वर्तमान राजनीतिक दुर्व्यवस्था के फलस्वरूप मनुष्य के जीवन-आदर्श अस्त-व्यस्त हो गए हैं, अतएव आज का जीवन विशृंखलित और अव्यवस्थित हो गया है।

(ब) वर्तमान राजनीतिक स्थिति अनियंत्रित एवं अस्त-व्यस्त है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर पड़ा है। मनुष्य के सोचने के ढ़ंग, आचरणगत परम्पराएँ, विचारादि प्रभावित होने से उसके जीवन-मूल्यों में गिरावट आई है। इससे उसका जीवन अव्यवस्थित और विशृंखलित हो गया है। पहले राजनीतिक और संस्कृति प्राय: स्वतंत्र हुआ करती थीं, अतएव इससे पूर्व जो भी राजनीतिक विप्लव आए तो उसका इतना व्यापक प्रभाव नहीं पड़ा। आज संस्कृति और राजनीति एक्-दूसरे से उलझ गई हैं, अत: राजनीतिक दुर्व्यवस्था का प्रभाव आध्यात्मिक दर्शन पर पड़ा। वैज्ञानिक आविष्कारों से आस्तिकता को धक्का लगा है, प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में दरार पड़ गई है, लेकिन नई व्यवस्था का सृजन नहीं हो सका है।

(स) **स्थूलांकित अंशों की व्याख्या–**

(*i*) राजनीतिक विप्लव ने भयंकर आध्यात्मिक विप्लव को जन्म दिया है–वर्तमान राजनीति जगत् की एक निर्मय वृत्ति बन गई है। इसमें लोग साम, दाम, दंड, भेद आदि द्वारा अपनी स्वार्थ-पूर्ति करते हैं। जबकि धर्म भाव-जगत् की एक अत्यधिक संवेदनशील वृत्ति है। धर्म का प्राण परमार्थ है और राजनीति का प्राण है–स्वार्थ। अतएव अधिकांश विद्वान धर्म को राजनीति से दूर रखने की सलाह देते हैं। लोकतंत्र में वोट का महत्त्व सर्वाधिक है। वोट की राजनीति ने जीवन-मूल्यों और सिद्धान्तों को तिलांजलि दे दी है। वोट पाने के लिए राजनेता विभिन्न प्रकार के हथकंडे अपना रहे हैं। हिंसा, भ्रष्टाचार व अन्य अनैतिक तरीकों को अपना रहे हैं। इनमें धार्मिक भावनाओं को उभारकर वोट पाना भी सम्मिलित है। यही कारण है कि राजनीति में तथाकथित धार्मिक भावना बढ़ती जा रही है और धर्म तथा राजनीति दोनों के स्वरूप बिगड़ते जा रहे हैं। इस प्रकार राजनीतिक उथल-पुथल के साथ ही धार्मिक उथल-पुथल मची हुई है। अत: विद्वान ने कहा है– राजनीतिक विप्लव ने भंयकर आध्यात्मिक विप्लव को जन्म दिया है।

नोट

(ii) विज्ञान ने ईश्वरीय विश्वास तो हिला दिया, परन्तु अपने में विश्वास जमाने में असफल रहा है–आज विज्ञान का युग है। विज्ञान की नई-नई चमत्कारपूर्ण खोजों से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई है। विज्ञान की प्रगति से लोगों के सोचने का ढंग भी वैज्ञानिक हो गया है, अत: लोग किसी विषय या बात को तर्क की कसौटी पर कसते और विवेकपूर्ण निर्णय लेते हैं। नई-नई वैज्ञानिक खोजों और रीति से सोचने के कारण ही अंधविश्वास और ईश्वर के प्रति विश्वास में कमी आई है।

चूँकि आरम्भ से ही मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता रहा है। यहाँ तक उसकी धारणा रही है कि ईश्वर की मर्जी के बिना एक पत्ती भी नहीं हिल सकती; तो ये वैज्ञानिक उपलब्धियाँ बिना ईश्वर की कृपा के कैसे सम्भव हैं? अतएव लोग वैज्ञानिक चमत्कारों को भी ईश्वर की देन मानते हैं। स्पष्ट है कि वैज्ञानिक चमत्कारों ने ईश्वरीय विश्वास तो हिला दिया, किन्तु अपने में विश्वास जमाने में असफल रहा है।

क्या आप जानते हैं अपठित गद्यांश या पद्यांश से अभिप्राय गद्य या पद्य के एक ऐसे अवतरण से है, जिसे पहले देखा या पढ़ा न गया हो अर्थात् वह सर्वथा नया हो।

उदाहरण–7

यह एक सच्चाई है कि निर्धनों और धनवानों, दोनों में बेकार लोग होते हैं और परिश्रमी निर्धन तथा कर्मशील भी होते हैं। अनेक भिखारी इतने सुस्त होते हैं कि जैसे उन्हें एक लाख की वार्षिक आय हो, और कुछ अति-भाग्यशाली लोग अपने उद्देश्यों से भी अधिक व्यस्त होते हैं और बाहर की बेकार की बातों में कोई रुचि नहीं रखते, क्योंकि व्यस्त और बेकार लोगों के बीच का अंतर समस्त पदों और स्थितियों के मनुष्यों में मानसिकता तथा अत: प्रकृति से सम्बद्ध होता है। अमीरों और गरीबों दोनों में एक ऐसा कर्मशील परिश्रमी वर्ग होता हैं, जो सशक्त और प्रसन्न होता है। दोनों में बेकार वर्ग भी होता है, जो नि:शक्त और दु:खी रहता है। दोनों वर्गों में निकृष्टतर गलतफहमी उस दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य से उत्पन्न होती है, जब एक वर्ग के बुद्धिमान लोग आदतवश दूसरे वर्ग के मूर्खों के बारे में सोचने लगते हैं। यदि व्यस्त धनवान लोग अपने ही वर्ग के बेकार धनवान लोगों की निगरानी करें और उन्हें फटकारें जो उनमें सब ठीक ही चलता रहेगा, और यदि व्यस्त निर्धन बेकार निर्धनों पर ध्यान दें और उन्हें बुरा-भला कहें, तो भी उनमें सब ठीक ही चलता है, किन्तु प्राय: सब एक-दूसरे के दोषों को जाँचते हैं। एक परिश्रमी सम्पन्न व्यक्ति बेकार भिखारी के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है तथा एक सुव्यवस्थित कार्यशील किन्तु निर्धन व्यक्ति धनवानों के भोग-विलास के प्रति अनुदार होता है। निर्धनों में कोई आचारहीन व्यक्ति ही धनवानों को अपना सहज शुभ मानता है और धनवानों में भी कोई लम्पट व्यक्ति ही निर्धनों के दोषों और गलतियों के लिए अपशब्द प्रयोग करता है।

प्रश्न

(1) *परिश्रमी धनवान व्यक्ति किस बात से चिढ़ता है?*

(2) *मेहनती निर्धन मनुष्य को किस बात से चोट पहुँचती है?*

(3) *दोनों के द्वारा वास्तव में किस बात की उपेक्षा होती है?*

(4) *धनवानों और निर्धनों में कौन-से दो वर्ग होते है?*

(5) *धनवान और निर्धन के बीच किस कारण गलतफहमी उपजती है?*

उत्तर

(1) परिश्रमी धनवान व्यक्ति भिखारी से चिढ़ता है, क्योंकि वह भिक्षावृत्ति के अतिरिक्त अन्य कुछ भी काम करने का प्रयास नहीं करता है।

(2) मेहनती निर्धन मनुष्य को धनवानों के भोग-विलास को देखकर चोट पहुँचती है।

(3) दोनों अर्थात् परिश्रमी धनवान और मेहनती निर्धन द्वारा बेकार वर्ग की उपेक्षा होती है।

नोट

(4) धनवान और निर्धनों में दो वर्ग मिलते हैं–

(*i*) कर्मठ और परिश्रमी वर्ग, जो सशक्त और प्रसन्न रहता है।

(*ii*) बेकार वर्ग, जो नि:शुक्त और दु:खी रहता है।

(5) धनवान और निर्धन के मध्य गलतफहमी उत्पन्न होने का मुख्य कारण यह है कि जब एक वर्ग के बुद्धिमान लोग स्वभावत: दूसरी वर्ग के मूर्खों के बारे में सोचने लगते हैं और वे अपने ही वर्ग के बेकार लोगों को कर्मठ और परिश्रमी बनने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं।

अभ्यासार्थ अवतरण

1. निम्नलिखित अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पुछे गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखिए–

पुस्तकों की वृद्धि हेतु ही मुद्रण कला का आविष्कार हुआ, यद्यपि समाचार-पत्र विज्ञापन और व्यावसायिक पर्चो की मुद्रण कला मेरे क्षेत्र के अंदर नहीं आते, जिसमें मुद्रक अपनी कला और जेब भरने के अवसर ढूँढते हैं। इस आविष्कार का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम यह हुआ कि इसने ग्रंथकारिता को बड़े पैमाने पर महान और (जब प्रकाशन व्यापार का उदय हुआ) अधिक लाभदायक बनाया। मुद्रण काल से पूर्व और मुद्रण कला के प्रारम्भिक दिनों में लेखक उस 'महान घर' का नौकर था-पूर्व गवैया के पद का पुन: अवतरण। गेयत्व से हस्तलेखन तक, हस्तलेखन की वृद्धि के तंग मार्ग से मुद्रण कला तक, इसी तरह यह कार्य जारी रहा, जिसने ग्रंथकारिता को खुले बाज़ार में महत्त्व एवं ग्रंथकर्त्ता को स्वतंत्रता प्रदान की। एलिजाबेथ काल में ग्रंथकर्त्ता एक संरक्षक से अर्धबंधित रहा, जो मुद्रक और पुस्तक विक्रेता से पेशा अथवा सेवावृत्ति के रूप में अधिक पाने की आशा करता रहा। डॉ. निकोल स्मिथ के अनुसार एक पुस्तिका का सामान्यतया चालीस शीलिंग मूल्य था। प्रतिफल देने का एक आम तरीका, लेखक को पुस्तक की कई प्रतियाँ देना ही रहा, जिन्हें विक्रय करके वह लाभ ले सके। कभी-कभी लेखक को पुस्तक और पैसे दोनों दिए जाते थे। उदाहरणार्थ जॉन स्टो ने दी सर्वे ऑफ लन्दन के लिए तीन पौंड और चालीस प्रतियाँ प्राप्त कीं।

प्रश्न

(क) *लेखक को मुद्रणालय द्वारा प्रदान की गई स्वतंत्रता की रीतियों का उल्लेख कीजिए।*

(ख) *मुद्रणालय के आविष्कार का क्या कारण है? इसने क्या-क्या अवसर प्रदान किए।*

(ग) *मुद्रणालय के आविष्कार से पूर्व पुस्तक-प्रकाशन से सरंक्षक की भूमिका क्या थी? उनके नीतिकरण का क्या स्थान है?*

(घ) *गेयत्व से हस्तलेखन तक के परिवर्तन से लेखक को क्या लाभ मिला?*

(ड.) *मुद्रणालय के आविष्कार के पूर्व और पश्चात् की स्थिति का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत कीजिए। विशेषरूप से लेखक की आमदनी पर।*

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. प्रत्येक राष्ट्र की संस्कृति वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर नहीं है।
8. विज्ञान की नई-नई चमत्कारपूर्ण खोजों से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई है।
9. यह एक सच्चाई है कि निर्धनों और धनवानों, दोनों में बेकार लोग होते हैं और परिश्रमी निर्धन तथा कर्मशील भी होते हैं।

नोट

19.2 सारांश (Summary)

- अपठित का उद्देश्य विद्यार्थियों के स्वतंत्र अध्ययन तथा सामान्य ज्ञान की क्षमता का मूल्यांकन करना होता है। किसी भी अवतरण को पढ़कर विधिवत् समझना और उससे सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में देना-समर्थ, जागरूक और संवेदनशील पाठक के लिए ही सम्भव है। अपठित सम्बंधी कई प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं, जैसे-व्याख्या, सारांश, भावार्थ, आशय, मुख्यार्थ, संक्षेपण; विशिष्ट शब्दों या अंशों के अर्थ, अवतरण से सम्बंधित प्रश्न, शीर्षक निर्धारण इत्यादि।

19.3 शब्दकोश (Keyworrds)

अपठित गद्यांश : जिसे पहले देखा या पढ़ा न गया हो

विदेशी भाषा : किसी देश की भाषा

19.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. अपठित गद्यांश पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. अपठित गद्यांश से विद्यार्थियों कौन-सी क्षमता बढ़ती है? वर्णन कीजिए।
3. अपठित गद्यांश कहाँ से चयनित किए जाते हैं तथा इनका उद्देश्य क्या होता है? उल्लेख कीजिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. चिन्ता	2. व्यापकता	3. कर्त्तव्य-पालन
4. (*d*)	5. (*c*)	6. (*d*)
7. गलत	8. सही	9. सही

19.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

इकाई–20: अनुवाद : अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

20.1 अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद

20.1.1 खण्ड-I भाषा का अनुवाद करते समय कुछ मुख्य बातें

20.1.2 खण्ड-II हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद

20.1.3 खण्ड-III अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद

20.2 सारांश (Summary)

20.3 शब्दकोश (Keywords)

20.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

20.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- अंग्रेजी से हिन्दी का अनुवाद का अध्ययन करने हेतु।
- हिन्दी से अंग्रेजी का अनुवाद को समझने में।
- अनुवाद का उद्देश्य तथा महत्त्व जानने हेतु।
- भाषा के अनुवाद का महत्त्व क्या है इसको जानने में।

प्रस्तावना (Introduction)

आपकी परीक्षा में एक छोटा-सा (लगभग 100 शब्दों का) हिन्दी में एक passage दिया जायेगा जिसका अनुवाद आपको अंग्रेजी में करना होगा। Translation के लिए दिया जानेवाला passage सब मिला-जुलाकर सरल होगा।

20.1 अंग्रेजी से हिन्दी तथा हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद

20.1.1 खण्ड-I भाषा का अनुवाद करते समय कुछ मुख्य बातें

हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करने में कुछ विशेष ध्यान देने योग्य बातें

1. Translation करते समय सबसे पहले वाक्य के Subject (कर्त्ता) को पहचानना चाहिए। अंग्रेजी के वाक्यों में (Interrogative Sentences को छोड़कर) पहले Subject और उसके बाद Verb (क्रिया) का स्थान रहता है। जैसे:

नोट

पटना एक शहर है।	*Patna* is a city.
मेरे पास एक कलम है।	*I* have a pen.
धनी हमेशा सुखी नहीं होते।	The *rich* are not always happy.
तैरना लाभदायक है।	*Swimming* is useful.
इसे दूर करना कठिन हो जाता है।	To *remove* this is difficult.
कहते हैं तुलसी को भीख तक माँगनी पड़ी।	*It is said* Tulsi had even to beg.

2. अंग्रेजी के वाक्यों में Subject– Verb Agreement का नियम लागू होता है अर्थात् अगर Subject Singular होगा तो उस वाक्य का Verb भी Singular (एक-वचन) होगा और अगर Subject Plural होगा तो उस वाक्य का Verb भी Plural होगा। जैसे:

यह घड़ी अच्छी है।	This *watch is* good.
ये लड़के लम्बे हैं।	These *boys are* tall.
तुम्हारे पिताजी आये हैं।	Your *father has* come.
वे बहुत दयालु हैं।	*He is* very kind.
जो लड़के परिश्रम करते हैं सफल होते हैं।	Those *boys* who *labour succeed.*

3. अंग्रेजी अनुवाद में Articles पर ध्यान देना चाहिए। जैसे:

गाय चर रही है।	*The* cow is grazing.
हमें गरीबों की मदद करनी चाहिए।	We should help *the* poor.
पटना बिहार की राजधानी है।	Patna is the capital of Bihar.
रामायण हिन्दुओं का धार्मिक ग्रन्थ है।	*The* Ramayana is *a* sacred book of the Hindus.
हल्ला मत करो।	Don't make a noise.

4. अंग्रेजी अनुवाद करते समय सही Prepositions का प्रयोग करना चाहिए।
जैसे:

यहाँ से बाजार बहुत दूर नहीं है।	The market is not very far *from* here.
मैं ट्रेन से दिल्ली गया।	I went to Delhi *by* train.
मैंने अपनी कलम से लिखा।	I wrote *with* my pen.
वह अपने पिता से डरता है।	He fears his father.
सीता कल से बीमार है।	Sita has been ill *since* yesterday.
परीक्षा मंगलवार से शुरू होगी।	The examination will begin *on Tuesday*.
मैच तीन बजे से होगा।	The match will start *at* three o'clock.
सीता की शादी राम से हुई।	Sita was married *to* Ram.
गाड़ी समय से पहले आयी।	The train came *before* time.
मैं आपको सफलता पर बधाई देता हूँ।	I congratulate you *on* your success.

नोट

वह दो सप्ताह से उपस्थित है।	He has been present for two weeks.
मैं हरि से बातें कर रहा था।	I was talking *to* Hari.

5. अनुवाद करते समय अंग्रेजी के वाक्यों में Position of words (शब्दों के क्रम या स्थान) पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि अंग्रेजी के वाक्यों में शब्दों का वहीं order (क्रम) नहीं होता जो हिन्दी के वाक्यों में रहता है। जैसे:

तुम गाना गाते हो।	You sing a song.
वह कलम है।	That is a pen.
वह अच्छा लड़का है।	He is a good boy.
तुम अच्छी किताब पढ़ते हो।	You read a good book.
मैं उसे बहुत अच्छी कहानी कहता हूँ।	I tell him a very good story.
वह धीरे-धीरे खाता है।	He eats slowly.
आप सफल हों!	May you be successful!
वह क्यों नहीं पढ़ता?	Why doesn't he read?

टास्क अनुवाद क्या है? उल्लेख कीजिए।

6. अंग्रेजी अनुवाद करते समय Forms of the Verbs (क्रियाओं के रूप) के प्रयोग पर ध्यान देना आवश्यक है। जैसे:

यह कलम उपयोगी है।	This pen *is* useful.
तुम घबड़ाये हुए हो।	You *are* nervous (or, puzzled).
दूध मीठा होता है।	Milk *is* sweet.
वह साधु था।	He *was* a saint.
वह आदमी नेता होगा।	That man *will be* a leader.
वे जाने को हैं।	They *are to go.*
मैं बोलने को था।	I *was to speak.*
तुम जाने पर थे।	You *were about to go.*
रामू कल आने वाला है।	Ramu *is to come* tomorrow.
आजकल दिन छोटे होते हैं।	These days days *are* short.
वे लोग बहुत स्वच्छ रहते हैं।	They *are* very neat and clean.
उन्हें जाना है।	They *have* to go.
उसको जाना पड़ेगा।	He *will have to go.*
रेखा को जाना पड़ा।	Rekha had to go.
उसे गोली मार देनी पड़ी।	He had to be shot dead.

नोट

7. अनुवाद करते समय Tense पर ध्यान देना अत्यावश्यक है। वास्तव में, हिन्दी क्रियाओं के अनुवाद में सबसे अधिक दिक्कत होती है Tense को लेकर। अत: यह समझने की चेष्टा करें कि अर्थ के अनुसार वह क्रिया अंग्रेजी के किस Tense में है और तद्नुसार ही उसका अंग्रजी में अनुवाद करें। जैसे:

(*i*)	मैं पढ़ता हूँ।	I *read*.
	तुम दौड़ते हो।	You *run*.
	वह नहीं खेलता है।	He *does not play*.
	वे नहीं लिखते हैं।	They *do not write*.
	क्या वह आता है?	*Does he come ?*
	क्या वे नाचती है?	*Do they dance.*
(*ii*)	मैं पढ़ रहा हूँ।	I *am reading*.
	तुम दौड़ रहे हो।	You *are running.*
	वह नहीं खेल रहा है।	He *is not playing.*
	वे नहीं लिख रहे हैं।	They *are not writing.*
	क्या वह आ रहा है?	*Is* he *coming ?*
	क्या वे नाच रही हैं?	*Are they dancing ?*
(*iii*)	मैं पढ़ चुका हूँ।	I *have read*.
	तुम दौड़ चुके हो।	You *have run.*
	उसने मेरी मदद की है।	He *has helped me.*
	उसने चिट्ठी नहीं लिखी है।	He *has not written a letter.*
	क्या वह आया है?	*Has* he *come ?*
	क्या उसने मुझे गाली दी है?	Has *he she abused me.*
(*iv*)	मैं एक घण्टे से खेल रहा हूँ	I *have been playing for an* hour.
	तुम शाम से ही गा रही हो।	You have been singing since evening.
	हम लोग दो वर्षों से यहाँ रह रहे हैं।	We *have been living here for two years.*
	वे गत रविवार से यहीं हैं।	They *have been here since Sunday last.*

क्या आप जानते हैं अंग्रेजी के वाक्यों में (Interrogative Sentences को छोड़कर) पहले Subject और उसके बाद Verb (क्रिया) का स्थान रहता है।

(*v*)	मैं गया।	I went.
	मैंने पत्र लिखा।	I *wrote* a letter.
	सीता ने कहानी सुनाई।	Sita *narrated* a story.
	मैं नहीं गया।	I *did not go.*
	मैंने पत्र नहीं लिखा।	I *did not write* a letter.

नोट

	सीता ने कहानी नहीं सुनाई।	Sita *did not narrate* a story.
	क्या मैं गया?	*Did* I *go*?
	क्या मैंने पत्र लिखा?	*Did I write* a letter?
	क्या सीता ने कहानी सुनायी?	*Did* Sita *narrate* a story ?
(*vi*)	तुम लिख रहे थे।	You *were writing.*
	मैं रेडियो सुन रहा था।	I *was listening* to the radio.
	बच्चे हल्ला कर रहे थे।	Children *were making* a noise.
	तुम नहीं लिख रहे थे।	You *were not writing.*
	रानी नहीं रो रही थी।	Rani *was not weeping.*
	क्या हरि गा रहा था?	*Was* Hari *singing*?
	क्या वे खेल रहे थे?	*Were* they *playing* ?
(*vii*)	हम लोग क्रिकेट खेलेंगे।	We *shall play* cricket.
	लड़कियाँ नाचेंगी।	Girls *will dance.*
	वे लिखने जा रहे हैं	They *are going to write.*
	रमेश नहीं दौड़ेगा।	Ramesh *will not run.*
	लड़के आज नहीं पढ़ेंगे।	Boys *will not read* today.
	क्या वे लिखेंगे?	*Will* they *write*?
	क्या आज हम लोग वहाँ जायेंगे?	*Shall* we go there today?
(*viii*)	मैं पढ़ता रहूँगा।	I *shall be reading.*
	तुम सोये रहोगे।	You *will be sleeping.*
	क्या मैं पड़ता रहूँगा?	*Shall* I *be reading* ?
	क्या रूबी गाती रहेगी?	*Will* Ruby *be singing* ?

8. अंग्रेजी अनुवाद करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि हिन्दी की क्रिया Active Voice में है या Passive Voice में। उसी के अनुसार अंग्रेजी अनुवाद Active Voice में होगा या Passive में। जैसे :

पाटिल से टहला नहीं जाता।	Patil *cannot walk.*
साँप मारा गया।	The snake *was killed.*
हरि को सूचित किया गया है।	Hari *has been informed.*
तुमको सभी जानते हैं।	You *are known* to all
यह किताब पढ़ी जा रही है।	This book *is being read.*
खेत जोते जा रहे हैं।	Fields *are being ploughed.*
पत्र पढ़ा जा रहा था।	The letter *was being read.*
लेख लिखा गया।	The essay *was written.*

नोट

यह काम किया जा सकता है।	This work *can be done.*
यह नहीं कहा जा सकता।	It cannot be said.
उसे पढ़ाया जाना है।	He *has to be taught.*
मदन को पटना भेजा गया।	Madan *was sent* to Patna.
वह काम नहीं किया जा सका।	That work *could not be done.*
बच्चों को प्यार किया जाना चाहिए।	Children *should be loved.*

9. ***(i)*** हिन्दी के वाक्य अगर Direct Narration में रहें या Indirect में, उनका अंग्रेजी अनुवाद करते समय उस वाक्य को Direct Narration में अनुवाद करें। इससे आपको अनुवाद करने में सुविधा होगी। जैसे :

उसने कहा "मैं पढ़ रहा हूँ।"	He said, *"I am reading".*
या, उसने कहा कि मैं पढ़ रहा हूँ	Or, He said *that he was reading.*
उसने उत्तर दिया कि मैं आई. ए. में पढ़ता हूँ।	He replied, *"I read in the I.A. class".* Or, He replied *that he read in the I.A. class.*

(ii) कभी-कभी आपको हिन्दी वाक्य को Indirect Narration में भी अनुवाद करना पड़ेगा। वैसी हालत में आपकों अंग्रेजी में Narration के सारे नियमों का ध्यान रखना पड़ेगा। जैसे :

हरि ने कहा कि मैं जाऊँगा।	Hari said *that he would go.* Or, Hari said, *"I shall go".*
राम ने उससे कहा कि वहाँ मत खेलो।	Ram *asked* him *not to* play there. Or, Ram *said 'to* him, *Don' t play there".*
शिक्षक ने छात्र से पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है।	The teacher *asked the student what his name was.* Or, The teacher *said to the* student, *'What is your name?"*

> *नोट्स* अंग्रेजी अनुवाद करते समय Articles पर ध्यान देना चाहिए तथा सही Prepositions का प्रयोग करना चाहिए।

10. अंग्रेजी अनुवाद बनाते समय Sequence of Tense पर ध्यान देना चाहिए। (*i*) अंग्रेजी में अगर Reporting Verb Tense में रहे तो Reported Speech का Verb भी Past Tense में रहेगा। (*ii*) Reporting Verb अगर Present या Future Tense में रहे तो Reported Speech का Verb किसी भी Tense में रह सकता है। (*iii*) किन्तु Universal truth वाला वाक्य हमेशा Present tense में ही होता है। जैसे:

मैंने कहा कि राम बीमार है।	*I said that* Ram *was* ill.
हरि कहता है कि वह लम्बा है।	Hari *says* that he *is* tall.
सीता कहती है कि टॉम वहाँ था।	Sita *says* that Tom *was* there.
उसने कहा कि गाड़ी आ रही है।	He *said* that the train *was coming.*
मैंने सोचा कि हरि पढ़ेगा।	I *thought* that Hari *would* read.

उसने देखा कि बाघ दौड़ रहा है।	He *saw* that the tiger *was running.*
शिक्षक ने कहा कि पृथ्वी गोल है।	The teacher *said* that the earth *is* round.

11. कभी-कभी हिन्दी के वाक्यों में मुहावरे या मुहावरेदार वाक्य रहते हैं। उनका शाब्दिक अंग्रेजी अनुवाद करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। पहले उनका अर्थ अच्छी तरह समझें और उस अर्थ का समुचित अनुवाद करें। जैसे:

वह लड़का गाय है।	That boy is *meek* (or, *gentle.*)
मैं रातभर तारे गिनता रहा।	I *passed a sleepless night.*
वह झूठ बोलता है।	He *tells* a lie.
वह मुझे मूर्ख कहता है।	He *calls me fool.*
मैं बात का पक्का हूँ।	I *am a man of word*
मेरा सिर चक्कर खा रहा है।	I *feel giddy.*
मेरा दिल बाग-बाग हो गया।	I *was overjoyed.*
आखिर बात क्या है?	What is the matter after all?
यह झूठी बात है।	It is false.
यह सच्ची बात है।	It is true.

12. अंग्रेजी अनुवाद में हिन्दी के शब्दों का यथासम्भव सही अंग्रेजी समानार्थक शब्द देने का प्रयास करना चाहिए। हिन्दी के एक प्रकार के शब्द के लिए अंग्रेजी में अलग-अलग शब्द हो सकते हैं। जैसे:

(*i*) बहुत

बहुत खूबसूरती–great beauty; बहुत गर्म–very hot; बहुत बुखार–high fever; बहुत बातें–lots of things; बहुत हल्ला–a great deal of noise; बहुत दर्द–acute pain; बहुत मजा–great fun; बहुत नफा–enormous profit; बहुत नुकसान–huge loss; बहुत दुःख–profound sorrow; बहुत खुशी–great delight; बहुत जल्दी–very soon; बहुत वर्षा–heavy rain; बहुत दूर–far away; बहुत बढ़िया–exceedingly fine; बहुत प्रशंसा–high praise.

(*ii*) बड़ा

बड़ा लड़का–the elder son; बड़ा आदमी–a rich man, a great man; बड़ा जंगल–a big forest; बड़ा मकान–a large house; बड़ा भय–great fear; बड़ी बात–a serious matter; बड़ी उम्र–a long life; बड़ा बाबू–head clerk; बड़ा साहब–the big boss.

(*iii*) पक्का

पक्का मकान–a brick-built house; पक्का रंग–fast colour; पक्का आदमी–a reliable man; पक्का चोर–a veteran thief; पक्की धुन–firm determination; पक्की सड़क–metalled road; पका फल–ripe fruit; पके केश–white hair; पक्का दोस्त–bosom friend.

(*iv*) कच्चा

कच्चा फल–unripe fruit; कच्चा मांस–raw meat; काले बाल–black hair; कच्चा मकान–amud-built house; कच्चा भात–under-cooked rice; कच्ची सड़क–unmetalled road; कच्ची रोटी–under-baked bread; कच्ची उम्र–tender age.

नोट

(v) मीठा

मीठी मुस्कान–sweet smile; मीठी बात–sweet words; मीठी जुबान–silver tongue; मीठा दर्द–mild pain; मीठी नींद–sound sleep; मीठा सपना–pleasant dream; मीठी यादें–happy memories.

(vi) पतला

पतली कमर–slender waist; पतली आवाज–faint voice; पतला दस्त–loose motion; पतली हालत–critical conditions; पतली लड़की–thin (or, slim) girl; पतली नींद–light sleep; पतला दूध–diluted milk.

(vii) मोटा

मोटा आदमी–fat man; मोटी तनखाह–fat salary; मोटा कपड़ा–coarse cloth; मोटा कागज–thick paper; मोटी लाठी–thick stick; मोटा रहन-सहन–unrefined living.

(viii) खोलना

स्कूल खोलना–to found (or, establish) a school; भेद खोलना–to disclose a secret; बटन खोलना–to unbutton; कपड़ा खोलना–to undress; ताला खोलना–to unlock; रेडियो खोलना–to switch on the radio; दुकान खोलना–to set up a shop; जूता खोलना–to take off the shoes; नल खोलना–to turn on the tap.

(ix) रखना

रखना–to keep, to put, to place; नौकर रखना–to employ or to engage a servant; बात रखना–to keep a promise; ध्यान रखना–to pay attention; याद रखना–to remember; नाम रखना–to name, to give a name to; टेबुल पर चीज रखना–to place a thing on the table; जेब में चीज रखना–to put a thing into the pocket; बक्से में चीज रखना–to keep a thing in a box; हिसाब रखना–to keep accounts; गाड़ी रखना–to maintain a car; नाम रखना (प्रतिष्ठा बनाये रखना)–to keep up the reputation.

(x) देना

देना–to give; अनुमति देना–to allow, to permit; शिक्षा देना–to teach; गाली देना–to abuse; दोष देना–to blame; (जान से) मार देना–to kill; खर्च देना–to meet the expenses; आश्रय देना–to give shelter; जहर देना–to poison; छोड़ देना–to give up; दण्ड देना–to punish; हुक्म देना–to order; जेल देना–to jail; स्थान/जगह देना–to make room; किराया देना–to pay rent/ fare; गवाही देना–to give evidence; राय देना–to give opinion, to advise; धक्का देना–to push; ध्यान देना–to pay attention; गिरा देना–to fell, to knock down; काट देना–to cut off; कर्ज देना–to lend, to give a loan; परीक्षा देना–to sit for an examination, to appear at an examination; दरखास्त देना–to send an application, to apply, to submit a petition; सूचना देना–to notify; इस्तीफा देना–to resign; बढ़ा देना–to increase; घटा देना–to reduce; नौकरी देना–to give employment; डरा देना–to frighten; धमकी देना–to threaten; घर जलाना–to burn a house; लैंप जलाना–to light a lamp; बल्ब जलाना–to switch on (electric light); बिगाड़ देना–to spoil; संवाद देना–to send word; वचन देना –to give word, to make a promise; दवा देना–to administer medicine; सूई देना–to administer injection; निकाल देना–to expel; सहायता देना–to help; घूस देना–to bribe; भीख देना–to give alms; दान देना–to give charity; आशीर्वाद देना–to bless; शाप देना–to curse.

(*xi*) करना

करना–to do; अस्वीकार करना–to refuse; अभ्यास करना–to practise; अवहेलना करना–to ignore; अधिकार करना–to possess; अपमान करना–to insult, to humiliate; अभिवादन करना–to greet; असर करना–to affect; अलग करना–to separate; आक्रमण करना–to attack; आविष्कार करना–to invent; आशा करना–to hope; आत्महत्या करना–to commit suicide; आदर करना–to respect; आराम करना–to rest; उन्नति करना–to progress, to improve; उपाजन करना–to earn; उपवास करना–to fast, to observe fast; कसरत करना–to have exercise; काम करना–to work; खून करना–to murder.

खर्च करना–to spend; खरीद करना–to buy; खेती करना–to cultivate; ग्रहण करना–to accept; गुणा करना –to mulitiply; घमण्ड करना–to have pride; चोरी करना–to steal; जाँच करना–to inquire; झगड़ा करना–to quarrel; तय करना–to decide; तंग करना–to vex; दया करना–to show kindness; देर करना–to make delay; नष्ट करना–to ruin; नाश्ता करना–to have break-fast; नकल करना–to copy, to imitate; पश्चात्ताप करना–to repent; प्रदर्शन करना–to show off; पैदा करना–to produce; प्रतिज्ञा करना–to promise, to make a promise; प्रेम करना–to love; पूजा करना–to worship,पैरवी करना–to do 'pairavi'; बहस करना–to argue; बराबरी करना–to equal; बड़ा करना–to expand; बहाना करना–to pretend; विश्वास करना–to believe.

विरोध करना–to oppose; बिक्री करना–to sell; बदनाम करना–to defame; विकास करना–to develop; भोजन करना–to eat; भोज करना–to hold a feast; मेहनत करना–to labour; मुलाकात करना–to meet; याद करना–to remember, to memorise; रक्षा करना–to protect, to defend; विवाह करना–to marry; शिकार करना–to hunt; सभा करना–to hold a meeting; हल्ला करना–to make a noise; हत्या करना–to murder; हल करना–to solve; हड़ताल करना–to strike; प्रश्न करना–to put a question; क्षमा करना–to forgive, to pardon.

(*xii*) लेना

लेना–to take; कर्ज लेना–to take a loan; उधार लेना–to borrow; ले लेना–to take away; झपट लेना–to snatch away; भीख लेना–to receive alms; दान लेना–to receive charity; उपहार लेना–to receive a gift; खरीद लेना–to buy off; घूस लेना–to accept bribe; दम लेना–to take rest; श्वास लेना–to breathe; गोद लेना –to adopt; आफत मोल लेना–to invite trouble; परीक्षा लेना–to examine; हिसाब लेना–to ask for accounts; जुरमाना लेना–to charge a fine, to charge penalty; किराया लेना–to charge rent/fare; मजदूरी लेना–to receive wages; तनखाह लेना–to receive pay/salary; शपथ लेना–to take an oath; अनुमति लेना–to take permission; बदला लेना–to avenge, to take revenge.

(*xiii*) में (हिन्दी के 'में' का अंग्रेजी में कई तरह से अनुवाद होता है।)

भारत में– in India; दो भाइयों में– between the two brothers; विद्यार्थियों में–among the students; एक घंटे में–within an hour; कमरे में आना–to come into the room; रात्रि में–at night; सिर में बाल–hair on the head; पाँच रुपये में–for five rupees; गर्मी की छुट्टी में–during the summer vacation; सुनने में मधुर–sweet to hear; इस विषय में–about this matter.

(*xiv*) पर (इसके लिए अंग्रेजी में विभिन्न तरह के शब्दों का प्रयोग किया जाता है।)

टेबुल पर–on the table; पाँच बजने पर–at five; पूछताछ करने पर–on inquiry; ठीक समय पर–in time, on time; उनके अनुरोध पर–at his request; छुट्टी पर–on leave.

नोट

(xv) से

यहाँ से–from here; गाड़ी से–by car; कलम से–with a pen; मार्च से–since march; एक सप्ताह से–for a week.

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. अनुवाद करते समय सबसे पहले वाक्य के ········· को पहचानना चाहिए।
2. अंग्रेजी अनुवाद में ········· पर ध्यान देना चाहिए।
3. लेना का अर्थ to take, उधार लेना to borrow, ले लेना को ········· कहते हैं।

20.1.2 खण्ड-II हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद

अनुवाद : हिन्दी से अंग्रेजी

1. किसी गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उसके चार बेटे थे। पर चारों के चारों बड़ें आलसी थे। वे दिन भर कुछ नहीं करते थे। वे केवल गप्पें हाँकते। बेचारा किसान बड़ा दुःखी रहता था। एक दिन उसने अपने बेटों को अपने पास बुलाया। उसने कहा कि मेरे खेत में गड़ा हुआ धन है। मैं तो अब बूढ़ा हो गया हूँ। मैं अधिक मेहनत नहीं कर सकता।

There lived a poor farmer in a certain village. He had four sons. But all the four were very idle. They did nothing all day long. They indulged only in boastful gossip. The poor farmer was very sad (or, deeply distressed). One day he called his sons to himself. He said to them that there was a treasure buried in his field. I have grown old now. I cannot work hard.

2. तुलसीदास के जीवन से हमें एक बड़ी अच्छी सीख मिलती है। तुलसीदास का जन्म एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन में ही उनके माँ-बाप चल बसे और बालक तुलसी की देखभाल करनेवाला कोई न रहा। कहते हैं, तुलसी को भीख तक माँगनी पड़ी। तुलसीदास की रामायण हिन्दी भाषा में सबसे लोकप्रिय ग्रन्थ है। इससे हम तरह-तरह की शिक्षा ग्रहण करते हैं।

The life of Tulsidas teaches us a very good lesson. Tulsidas was born in a poor Brahmin family. His parents died in his very childhood, and there was none to look after the child Tulsi. It is said that Tulsidas has to beg even. The Ramayana by Tulsidas is the most popular work in Hindi. We learn different kinds of lessons from this book.

3. एक चींटी नदी की धारा में बहती जा रही थी। वह किनारे आने की कोशिश कर रही थी, लेकिन आ नहीं पाती थी। किनारे के वृक्ष पर बैठा एक तोता यह सब देख रहा था। उसे चींटी पर दया आ गयी। उसने वृक्ष से एक पत्ता तोड़कर चींटी के पास गिरा दिया। चींटी पत्ते पर जा बैठी। कुछ समय बाद पत्ता किनारे लग गया। इस तरह चींटी की जान बच गयी।

An ant was being carried along the current. It was trying to reach the bank but was unable to (reach the bank). A parrot sitting in a tree on the bank was watching all this. It took pity on the ant. It plucked a leaf from the tree and dropped it close to the

ant. The ant climbed the leaf. After some time the leaf touched the bank. In this way the life of the ant was saved.

4. मन और शरीर में घनिष्ठ सम्बन्ध है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है। छात्रों को चाहिए कि वे केवल मन को ही नहीं, बल्कि अपने शरीर को भी विकसित करें। दुर्बल स्वास्थ्य रखकर हम कोई भी कठिन काम नहीं कर सकते। अत: हमारे लिए स्वास्थ्य उतना ही आवश्यक है जितनी शिक्षा। इसलिए आजकल स्कूलों में शारीरिक शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया जाता है।

There is an intimate relationship between mind and body. A healthy body has a healthy mind. Students should develop not only their minds but their bodies also. We cannot do any hard job if we have poor health Therefore, health is as necessary for us as education. That is why these days in schools great importance is attached to physical education.

5. अपनी मातृभाषा को निकृष्ट समझना हमारी भूल है। हमें संसार के साथ रहना और चलना है। अतएव संसार की अन्यान्य भाषाओं को सीखने की जरूरत है। हम अंग्रेजी भाषा और साहित्य के विद्वान् हो सकते हैं, पर शेक्सपियर या मिल्टन कदापि नहीं हो सकते। एक अँगरेज हिन्दी भाषा और साहित्य का विद्वान् हो सकता है पर वह सूर या तुलसी कभी नहीं हो सकता। अच्छी किताबें हम अपनी मातृभाषा में ही लिख सकते हैं। हमारे स्कूलों में भी अब भारतीय भाषाओं पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। अपनी मातृभाषा का अच्छा ज्ञान करना हमारा कर्त्तव्य है।

It is a mistake on our part to look down upon our mother-tongue. We have to live in and move with the world, Therefore, we need to learn other languages of the world. But it is very necessary to be aware of the importance of the mother-tongue also. We may become scholars of the English language and literature but we can never be a Shakespeare or a Milton. An Englishman may become a scholar of the Hindi language and literature but he can never be a Soor or a Tulsi. We can write good books only in our mother-tongue. In our schools, too, sufficient attention is now being paid to the Indian languages. It is our duty to acquire a good knowledge of our mother-tongue.

6. वसंत आ गया है। मार्च और अप्रैल के दो महीनों का नाम वसंत है। यह ऋतु बड़ी सुहावनी होती है। इस ऋतु में न तो अधिक गर्मी रहती है और न अधिक ठण्डक। पेड़ों में नयी-नयी कोंपल निकल आती हैं। उपवनादि आकर्षक हो जाते हैं। खेतों में फसलें पकने लगती हैं, जिससे किसान और मजदूर बड़े प्रसन्न रहते हैं। इसलिए वसंत को ऋतुओं का राजा कहा गया है। इस ऋतु पर कवियों ने अनेक कविताएँ लिखी हैं।

Spring is come. The two months–March and April are known as spring. This season is very pleasant. It is neither too hot nor too cold in this season, tender buds come out in the trees. Orchards and gardens become attractive. In the fields crops begin to ripen and it gives great delight to the peasants and the labourers. That is why spring is called the king of seasons. Poets have composed many poems in praise of this season.

7. यात्रा शिक्षा का एक साधन है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य चरित्र-निर्माण है। जब हम यात्रा करते हैं, अपनी चीजें संभालनी पड़ती हैं, अपना टिकट खरीदना पड़ता है और ठीक समय पर गाड़ी पकड़नी पड़ती है। धनी व्यक्ति अपने नौकरों से यह सब करा सकते हैं। लेकिन हिन्दुस्तान गरीबों का देश है। यात्रा में हमें अपनी मदद अपने आप करनी पड़ती है। यदि हमें अपरिचित लोगों से मिलने-जुलने की कला नहीं मालूम हो तो सफर में हमें बहुत तकलीफ उठानी पड़ेगी। भिन्न-भिन्न स्थानों को देखने और सभी तरह के लोगों से बातें करने से हम बहुतेरी नयी चीजें सीखते हैं। यूरोप में यात्रा के बिना शिक्षा अधूरी समझी जाती है। प्राचीन भारत में भी तीर्थयात्रा को बड़ा महत्त्व दिया जाता था। अनेक नदियों और पहाड़ों के इस देश में भ्रमण बड़ा आनन्दप्रद हो सकता है।

नोट

Travelling is a means of education. The real aim of education is the formation of character. When we travel, we have to look after our luggage, to book our tickets and to catch the train on time. The rich people can get all this done by their servants. But India is a land of the poor. During travels we have to depend on ourselves. If we do not know the art of mixing with strangers, we will have to experience many hardships in our travels. By visiting different places and talking to people of all kinds we learn lots of new things. In Europe, education without travelling is considered incomplete. In ancient India, too, great importance was attached to pilgrimage. Travelling can, indeed, be very pleasant in this land of many rivers and mountains.

8. एक प्रसिद्ध कहानी है: एक राजा था। उसके तीन बेटे थे। तीनों आपस में हमेशा लड़ा करते थे। एक दिन जब राजा मरने के करीब था, तो उसने अपने बेटों को बुलावा भेजा। उन्होंने अन्दर आकर देखा कि एक मेज पर तीन लकड़ियाँ रस्सी से बँधी रखी हैं। राजा ने छोटे बेटे से कहा कि इन बँधी हुई लकड़ियों को तोड़ दो। वह तोड़ न सका। राजा ने लकड़ियाँ खोल दीं और छोटे बेटे को उन्हें तोड़ने के लिए कहा। उसने बात ही बात में तीनों लकड़ियाँ तोड़ डालीं। इस प्रकार राजा ने उन्हें समझाया कि एकता ही सच्ची ताकत है।

There is a well-known story of a king who had three sons. The three of them were always quarrelling. One day, as the king lay dying, he sent for his sons. As they came into the room they saw three sticks lying on table, tied together with a rope. The king asked his youngest son to break the bundle of sticks. He could not. Then the king untied the bundle and asked the youngest son to break the sticks. He broke the three sticks quite easily. In this way the king showed his sons that it is in unity that real strength lies.

9. बोस्टन में एक नवयुवक नौकरी की खोज में इधर-उधर भटकता किसी होटल में पहुँचा। थका-माँदा तो था ही, जाकर सोफे पर लेट गया। थोड़ी देर बाद वहाँ एक वृद्ध महिला आयी और सहानुभूति प्रकट करती हुई बोंली, "बेटा! क्या तुम बीमार हो?" "नहीं, धन्यवाद! बस थोड़ा थक गया हूँ?" युवक ने उत्तर दिया।

यह सुनकर वृद्ध गुस्से में आ गयी और बोली– "बड़े बुद्धू हो तुम! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि बोस्टन में जब तक लोग बीमार न हो तब तक दिन के समय नहीं लेटते?"

Wandering about in search of a job, a young man reached a hotel in Boston. Being exhausted, he lay down on a sofa. After a while an old lady came to him and said in a sympathetic tone, "O, my child! Are you ill?" "No, thanks; I am just a little tired," replied the youth. On hearing this the old lady lost temper and said, "You are an idiot. Don' t you know that in Boston nobody lies down during daytime unless he is ill?"

10. भारत गाँवों का देश है। भारत की उन्नति उसके गाँवों की उन्नति के ऊपर निर्भर करती है। गाँवों की उन्नति के लिए यह जरूरी है कि उनके निवासी पढ़े-लिखे हों। शिक्षा के बिना मनुष्य अपने-आपको सही ढंग से नहीं समझ सकता है। शिक्षा ही मनुष्य को पशु से भिन्न करती है। इसलिए यह एकदम जरूरी है कि हम अपने बच्चों की शिक्षित बनायें। साथ ही, हम अपनी बच्चियों की शिक्षा की ओर भी जागरूक हों।

India is a country of villages. The progress of India depends on the progress of the villages. For the progress of the villages it is essential that their inhabitants be educated. Without education a man cannot understand himself properly. It is education that distinguishes human beings from animals. Therefore, it is imperative that we educate our children; at the same time we should be conscious of the education of our daughters, too.

नोट

टास्क हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

11. जिन्दगी काम करने के लिए है। मार्ग की कठिनाइयों को देखकर निराश मत होना। ये तुम्हारे हितचिन्तक हैं। ये जीवन को सफल बनाने के साधन हैं। अपने जीवन का उद्देश्य निश्चित कर लो। यह ठीक है कि उसकी प्राप्ति में अनेक बाधाएँ आयेगी। पर इनको दूर करने के साधन भी यहीं मौजूद हैं। इन साधनों का जानना, इसका उचित उपयोग करना, यही सच्चा जीवन है।

Life is meant for work. Do not be disappointed by the obstacles in your way. They are your well-wishers. They are the means to make life successful. Fix the aim of your life. It is true that there would be many hurdles in its realisation. But the means to remove them, too, are present here. To know these means, to use them properly–that is true life.

12. अजय से भी कनक अधिक शरारती है। वह दिनभर खेलता रहता है। पढ़ने-लिखने में उसका मन लगता ही नहीं। इसलिए उसके माता-पिता उस पर नाराज रहते हैं। उसको अपने शिक्षकों का भी डर नहीं है। कहता है, बहुत करेंगे तो विद्यालय से निकाल देंगे। मुझे इसकी परवाह नहीं। फिर भी, उसके पिताजी का विश्वास है कि वह सुधर जायगा। ईश्वर करे, ऐसा ही हो।

Kanak is more naughty than Ajay. He plays all day long. He has absolutely no interest in studies. Therefore, his parents are always angry with him. He is not afraid of his teachers even. He says, "The worst they can do is to turn me out of school. I care a fig for that." Still his father believes that he would be reformed. May God see to it that it is so!

13. असफलता से हमें निराश नहीं होना चाहिए। सफलता और असफलता बहनें है। असफलता हमारी आँखें खोलती है। वह हमारी कमजोरियों को दिखलाती है। उन्हें दूर कर हम पुनः सफल हो सकते हैं। बड़े-बड़े वैज्ञानिक अप ने प्रयोग में असफल होते है। बड़े-बड़े योद्धा युद्ध के मैदान में पराजित होते हैं। महान नेता चुनाव हार जाते हैं। पर वे फिर चेष्टा करते हैं। अन्त में वे अवश्य सफल होते हैं। विद्यार्थियों को इससे शिक्षा लेनी चाहिए।

We should not be disappointed by failures. Success and failures are sisters. Failure opens up our eyes. It reveals our weaknesses to us. We can succeed again by removing them. Great scientists fail in their experiments. Great warriors are defeated on the battlefield. Great leaders lose in elections. But they try again. In the end they invriably succeed. Students should take a lesson from this.

14. पुस्तकालय से अनेक लाभ है। इनके द्वारा हमारे ज्ञान की वृद्धि होती है। विभिन्न विषयों के ग्रन्थों के अध्ययन से हमारे ज्ञान का क्षेत्र बढ़ता है। हमारे देश के देहातों में पुस्तकालयों की बड़ी आवश्यकता है। देहात के लोगों के पास पुस्तक खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। अतः पुस्तकालय उनकी अज्ञानता को दूर करने में बड़े सहायक होते हैं। गाँव के पुस्तकालय शिक्षा के केन्द्र बन सकते हैं।

There are several advantages of a library. It develops our knowledge. The sphere of our knowledge increases by the study of books on different subjects. Libraries are greatly needed in the villages of our country. The people of villages have no money to buy books So, libraries are of great help in removing their ignorance. The libraries of the village can be the centres of learning.

नोट

15. भारत में सबसे बुरी चीज़ जातीयता है। हम अपनी योग्यता पर सम्मान पाना नहीं चाहते। हम अपने पूर्वजों की योग्यता पर सम्मान पाना चाहते हैं। इसका परिणाम बहुत बुरा हुआ है। यहाँ सच्ची एकता होने नहीं पाती। प्रत्येक व्यक्ति दूसरी जातियों का छिपा हुआ शत्रु बन जाता है। कोई दूसरी जातियों का विश्वासपात्र सेवक नहीं बन सकता। अतएव, कोई भी पूर्ण रूप से जनप्रिय नहीं हो सकता। इसी से हमारी उन्नति नहीं हो रही है। इस जातीयता की भावना को दूर करना हमारा कर्त्तव्य है।

Casteism is the worst thing in India. We do not want to get respect by virtue of our ability. We want to be respected on the ability of our ability. We want to be respected on the ability of our ancestors. Its consequence has been very bad. Genuine unity does not materialise here. Everyone becomes the secret enemy of the other castes. None can become a faithful trustee of other castes. Therefore, none can be perfectly popular. This is why we are not progressing. It is our primary duty to root out this feeling of casteism.

16. हमारे गाँव में एक मन्दिर है। मन्दिर के समाने एक बड़ा तालाब है। तालाब के निकट ही एक खुला मैदान है जहाँ गाँव के छोटे-छोटे लड़के खेलते हैं। जाड़े में गाँव के लोग प्रसन्न रहते हैं। दिन छोटे होते हैं, रातें लम्बी। रात में लोग मन्दिर के पास इकट्ठे होते हैं और देर तक बातें किया करते हैं। लोगों का स्वास्थ्य जाड़े में अच्छा रहा करता है। मैं जाड़े के मौसम में अपने गाँव में ही रहना चाहता हूँ।

There is a temple in our village. There is a big pond near the temple. There is an open field near the pond where the small village boys play. Villagers are happy during winter. Days are short; nights are long. People gather by the temple at night and they go on talking till late hours. The health of people remains good in winter. I want to live at my village during the winter season.

17. पटना बिहार की राजधानी है। प्राचीनकाल में इस नगर का नाम पाटलिपुत्र था। उन दिनों मगध के राजा यहाँ निवास करते थे। आज का पटना नगर आठ-दस मील लम्बा है, किन्तु इसकी चौड़ाई आधा मील भी नहीं है। नगर के उत्तर में गंगा नदी बहती है। दक्षिण में पुनपुन नदी। गौतम बुद्ध ने एक बार कहा था कि पाटलिपुत्र नगर को आग और पानी की बराबर भय बना रहेगा। गौतम बुद्ध के युग में यहाँ लकड़ी के मकान थे। आज यहाँ ईंट के मकान हैं।

Patna is the capital of Bihar. In ancient times, the name of this town was pataliputra. In those days the kings of Magadh lived here. The Patna City of today is eight to ten miles long, but its width is not even half a mile. The river Ganga flows to the north of the city. The Punpun flows to the south. Once Gautam Buddha said that Pataliputra would ever be in danger of fire and water. There were wooden houses here during the age of Gautam Buddha. Today we have brick-built houses here.

18. कुछ लोग खेलकूद को बुरा मानते हैं। वे समझते हैं कि इसमें समय नष्ट होता है। किन्तु यह उनका भ्रम है। खेलना एक प्रकार का व्यायाम है। इससे शरीर में बल आता है। हमारा शरीर मजबूत न हो तो हम कोई काम नहीं कर सकते। दुबले-पतले आदमी बहुधा रोगी होते हैं। खेलना एक प्रकार का मनबहलाव भी है। इससे दिमाग की थकावट दूर होती है। जो खेलने में मन लगाते हैं वे पढ़ने में भी अच्छे होते हैं। शहरों में जगह की कमी होती है। अत: वहाँ ऐसे खेल खेले जाते हैं, जहाँ कम जमीन की जरूरत होती है। भविष्य में भारतवर्ष का स्थान खेलकूद में कम महत्त्व नहीं रखेगा।

Some people consider games and sports bad. They think that time is wasted in them. But this is their mistake. Play is a kind of exercise. It gives strength to the body. We cannot do any work if our body is not strong. Lean and thin persons are generally

sickly. Play is a kind of recreation, too. It removes mental tiredness.Those who are good at play are good at studies also. There is want of space in towns. So such games are played there as do not require much land. In future, the place of India in games and sports will not be less important.

19. हमारा प्यारा देश आज स्वतंत्र है। यह गाँधीजी की कोशिशों से संभव हुआ। देश के लिए उन्होंने अपनी जान तक दे दी। हम उन्हें कभी भुला नहीं सकते। महात्मा गाँधी सच्चाई के पुजारी थे। प्रेम और अहिंसा में उन्हें विश्वास था। उनके दिल में सभी के लिए प्रेम था। एक दिन युवकों का एक दल उनसे संदेश माँगने गया। उन्होंने कहा— "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।"

Today our beloved country is free. It was made possible through the efforts of Gandhiji. He sacrificed even his life for the country. We can never forget him Mahatma Gandhi was a worshipper of truth. He had faith in love and non-violence. He had love for all in his heart. One day a group of young men went to him for his message. He said, "My life is my message.

20. हम लोगों को अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए। केवल स्वस्थ आदमी ही अपना काम ठीक से कर सकते हैं। आजकल विद्यार्थी अपने स्वास्थ्य पर उचित ध्यान नहीं देते। वे बड़े नगरों में रहते हैं। वहाँ उन्हें अच्छा भोजन, खुली हवा और सूर्य का प्रकाश नहीं मिल पाता। नतीजा यह होता है कि हमारे विद्यार्थी अपनी तंदुरुस्ती खो बैठते हैं गाँव में रहने वाले बालक-बालिकाओं की दशा भी बहुत अच्छी नहीं होती। गाँव में भी आज दूध और फल का अभाव है। वहाँ अच्छे डाक्टर नहीं मिलते। लेकिन निराश होने का कोई कारण नहीं। स्थिति धीरे-धीरे सुधर रही है।

We should take care of our health. A healthy man alone can do his work properly. Students of these days do not pay attention to their health. They live in big cities. There they do not get good food, open air and sunlight. So our students lose their health. The condition of the boys and girls living in villages also is not very good. Even in villages, there is want of milk and fruit. Good doctors are not available there. But there is no reason to be desperate. The situation is improving gradually.

21. मेरे गाँव में एक हाथी है। गाँव के सबसे धनी आदमी ने सोनपुर मेले में उसे खरीदा था। हाथी बड़ा उपयोगी जानवर होता है। बरसात में वह आसानी से हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है। उन दिनों गाँव की सड़कों पर मोटर गाड़ियाँ भी नहीं दौड़ सकती हैं। लेकिन हाथी कभी-कभी पागल भी हो जाया करता है। कुछ दिन पहले राष्ट्रपति भवन का उदयगिरि नामक हाथी पागल हो गया। इसलिए उसे गोली मार देनी पड़ी। हमारे गाँव का हाथी अब तक कभी पागल नहीं हुआ।

There is an elephant in my village. The richest man of the village purchased it in the Sonepur fair. The elephant is a very useful animal. During the rains, it very easily takes us from one place to another. During those days even motor-cars cannot ply along roads. But sometimes the elephant goes mad. Some days ago, the elephant named Udayagiri of the President's House went mad. So it had to be shot dead. The elephant of my village has not gone mad so far.

22. पुराने जमाने में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध बड़ा अच्छा होता था। उन दिनों विद्यार्थी अपने गुरु के घर में रहते थे। गुरु के परिवार के साथ वे सारा विद्यार्थी-जीवन बिताते थे। पढ़ने-लिखने के अलावा वे गुरु की सेवा अपना कर्त्तव्य मानते थे। जंगल से लकड़ी लाते, भोजन पकाते या परिवार के अन्य कामों में हाथ बँटाते। गुरु भी अपने शिष्यों को प्यार करते थे। एक चतुर पिता की तरह वे अपने शिष्यों के दैनिक जीवन पर निगरानी रखते थे। नतीजा यह होता था कि शिष्य केवल विद्वान् ही नहीं होते थे, वे चरित्रवान् भी होते थे।

नोट

In ancient days the relation between the teacher and the taught was very good. The students used to stay with their teacher in those days. They spent their whole student-life with the family of the teacher. Apart from receiving education, they considered service to their teacher to be their own duty They used to bring fire wood, cook food or participated in other household work. The teacher also loved his students. Like a tactful father, he kept watch over the everyday life of his students. The result was that the students became not only scholars but they were also men of character.

23. हम लोगों को सरल जीवन व्यतीत करना चाहिए। लेकिन यह बात आसान नहीं है। एक उदाहरण लें। हम सभी जानते हैं कि हमें सादा भोजन करना चाहिए तथा बहुत अधिक कभी नहीं खाना चाहिए। लेकिन हमलोग इस नियम का पालन सर्वदा नहीं कर पाते। इस कारण, हम बीमार पड़ जाते है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमें अपने भोजन में नियमित होना चाहिए। कोई भी आदमी बिना स्वास्थ्य के संसार में कुछ भी नहीं कर सकता।

We should live a simple life. But it is not an easy thing. Let us take an example. We all know that we should take simple food and that we should never eat too much. But we are not able to follow this rule all the time. We fall ill because of this. We should be regular in our food in order to enjoy good health. Nobody can do anything in the world without good health.

24. कल मेरी भेंट एक रिक्शा–चालक से हुई। उसका नाम रामू है। उसका परिवार बहुत बड़ा है। उसकी हालत दयनीय है। उसे सुबह से शाम तक रिक्शा खींचना पड़ता है। उसके स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा असर पड़ा है। कभी–कभी वह खाँसता और खून थूकता है। पर वह लाचार है। उनका कोई सहायक नहीं है। अगर वह काम छोड़ दे तो उसके परिवार के लोग भूखे मरने लगेंगे।

I met a rickshaw-puller yesterday. His name is Ramu. He has a large family. His condition is pitiable. He has to pull the rickshaw from morning till evening. It has affected his health very badly. At times he coughs and spits out blood. But he is helpless. He has no helper (or, supporter). If the stops work, the members of his family will die of hunger.

25. एक कौआ बहुत प्यासा था। वह पानी की खोज में इधर-उधर भटक रहा था उसने कुछ दूरी पर एक घड़ा देखा। वह वहाँ गया। घड़े की तह में बहुत थोड़ा पानी था। उसने पानी पीने की चेष्टा की, परन्तु उसकी चोंच वहाँ तक नहीं पहुँच सकी। तब उसने घड़े को उलट कर या तोड़कर पानी पीना चाहा। पर, सभी प्रयास बेकार हो गये। उसे दूर पर पड़े कुछ कंकड़ दिखाई दिये। उसने उन्हें उठाया और उन्हें एक-एक कर घड़े में डालने लगा। पानी का तल ऊपर उठ आया। कौए ने जी-भर पानी पीया और अपनी प्यास बुझायी। जहाँ शारीरिक शक्ति काम नहीं करती है, वहाँ बुद्धि सफल होती है।

> *टास्क* किसी समाचार पत्र या पत्रिका में से कोई एक पेराग्राफ लेकर उसका अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए।

A crow was very thirsty. It was flying about in search of water. It saw a pitcher at some distance. It went there. There was some water at the bottom of the pitcher. It tried to drink water but its bill could not reach there. Then it wanted to drink water by over turning or breaking the pitcher. But all its efforts failed. It saw some pebbles lying nearby. It began to pick them and drop them into the pitcher. The level of water

rose up. The crow drank water to its heart's satisfaction and quenched its thirst. The brain succeeds where the body fails.

नोट्स हिन्दी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिन्दी का अनुवाद विद्यार्थीयों के मस्तिष्क की उन्नति के लिए एक अच्छी कसरत है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)–

4. बड़ा लड़का का अर्थ the elder son, बड़ा आदमी का a rich man, बड़ा जंगल का अर्थ क्या होगा?
   (*a*) A great wild (*b*) Long Forest
   (*c*) Wild Forest (*d*) big Forest
5. खोलना का अर्थ–to found, भेद खोलना का to disclose a secret, ताला खोलना का अर्थ क्या होगा?
   (*a*) to disclose (*b*) to free
   (*c*) to unlock (*d*) to toke off.
6. देना का अर्थ to give, शिक्षा देना का to teach दोष लगाना to blame, खर्च देना का क्या अर्थ होगा?
   (*a*) to meet the expenses (*b*) to give the expensens
   (*c*) to arrange the expeses (*d*) to complete the expenses

20.1.3 खण्ड-III अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद

अनुवाद : अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद

EXERCISE 1

In democracy every citizen has the right to vote. This is a duty to be exercised with discretion. It is your responsibility to see that the right people are elected. But unless you are fully aware of what you want and what your local needs are, you cannot choose the right man. So it is equally important for the people to be in touch with the current problems of their country, to read newspapers and to take a lively interest in life around them.

Aid–discretion = विवेक, responsibility = उत्तरदायित्व, aware = भिज्ञ, परिचित, local needs = स्थानीय आवश्यकताएँ, equally = समान रूप से।

EXERCISE 2

When we read the life stories of great men and woman we wonder at what they did for mankind, they did not get up one fine morning and find themselves famous. Life to

नोट

them meant hard struggle. They had some noble mission before them. Finding pain and ignorance around them, they devoted their lives for removing the ill of mankind. They did not care for personal comfort and prosperity. In fact, they faced dangers and hardships in the search for new ideas and new lands. That is why they are remembered as benefactors of humanity.

Aid–mankind = मानव जाति, struggle = संघर्ष, mission = लक्ष्य, prosperity = सम्पन्नता, in fact = वास्तव में, hardships = मुसीबतें, benefactors = उपकारक।

EXERCISE 3

The village woke up to find itself enveloped in a death–like silence unutterable and unknown grief. Sorrow overhung it. The village knew that it has lost its best son. It did not know exactly how he was lost. And that was why the British were saved from the wrath that would have descended them. If only the village has known that day how exactly Kumaran died, an angry flood would have been let loose on the British Kumaran became a martyr like many others. We in free India today can only shed tears for those souls, who shed their blood to give us freedom.

Aid–unknown = अज्ञान, exactly = सही रूप से, wrath = क्रोध, martyr = शहीद, shed tears = आँसू बहाना, freedom = स्वतन्त्रता।

EXERCISE 4

His principle of ‘simple living and high thinking had won him a pean in the hearts of his country men. His career shows that poverty and hardship cannot stand in the way of a man who is determined to spur in life. He nobly served as India’s Prime Minister for a year and a half at the most critical period in her history and died as a martyr to peace at Tashkent on llth January, 1966 leaving behind him a name that will ever be written in letters of gold.

Aid–principle = सिद्धान्त, नियम; simple living & high thinking = सादा जीवन उच्च विचार, hardship = कर्मठता, determined = दृढ़, critical = उलझा, या उलझनों में भरा martyr = शहीद, अमर letters of gold = सुनहरे अक्षरों में।

EXERCISE 5

May I congratulate our officers and jawans on the fornt for their courage, heroism and sacrifice and express to them gratitude of the whole nation. They have not only displayed gallantry and valour in the field, they have also shown chivalry. There can be no dignity without magnanimity, valour and honour go together. We are proud of our soldiers, our airmen, nawal ratings, their achievements, and their valour, but above all we are proud of their nobility, which is a great part of the gift of life.

Aid—courage = साहस, gratitute = कृतज्ञता, gallantry = वीरता, magnanimity = उदारता, achievements = उपलब्धियां, nobility = श्रेष्ठा, proud = स्वाभिमानी।

EXERCISE 6

Science is both a friend and an enemy. It is a blessing and a curse. It is an angle in peace time but a devil in war. There is no doubt that it has brought us many comforts

and has made our life happier. But at the same time it has increased human sufferings. Today people condemn it. Today it has become the main cause of many evils. It has brought the world on the verge of ruin. Modern wars are the wars of science. Wars of today are more deadful than those of yesterday.

Aid—curse = अभिशाप, angle = देवदूत, peace = शान्ति, devil = शैतान, comforts = आराम, sufferings = मुसीबतें, कण्ट evils = बुराइयां, verge = किनारा, ruin = विनाश, dreadful = भयानक।

EXERCISE 7

"Stand forth! thou Persian dog, and learn thy fate," said Omar fiercely. "Thou shalt die and die within an hour. Neither prayers nor promises can save thy life."

"No Persian trembles at the throught of death," the Chieftain answered, "I ask not for my life, thou mayest take it now and when thou welt. I beg but one boon before I die– a cup of wine to quench my burning thirst."

Aid—trembles = कांपता है, Chieftain = सरदार, quench = बुझाना, thirst = प्यास।

EXERCISE 8

Perhaps we are living in one of the great ages of mankind and have to pay the price of that privilege. For the great ages have been full of conflict and instability, of an attempt to change over from the old to something new. There is no permanent stability and security. At the most we can seek a relative stability. Life is a continuous struggle of man against man, of man against his surroundings, a struggle of the physical, intellectual and moral plane out to which new things take shape and fresh ideas are born.

Aid—mankind = मानवता, privilege = विशेष अधिकार, instability = अस्थिरता, attempt = प्रयास, security = सुरक्षा, struggle = संघर्ष, surroundings = वातावरण।

EXERCISE 9

It is your duty to train and develop your mind and acquire knowledge as much knowledge as you can possibly obtain. Knowledge is like a deep well fed by perennial springs and your mind is the little bucket that you drop in to it. You will get as much as you can assimilate. The brain, which is physical organ of the mind really distiguishes you from the animals. Many have very powerful sense-organs–the eagle, the ant and the dog have keener senes than man. But no animal has a more evolved brain and higher intelligence. If you do not develop and use the brain to the utmost of your power. You are more akin to the beast than to human beings.

Aid—acquire = प्राप्त करना, perennial = स्थायी, bucket = बाल्टी, drop = डालना, assimilate = पचाना, distinguishes = भिन्न करता है, evolved = विकसित, akin = समान।

EXERCISE 10

Many people complain that they have broken down through overwork. In the majority of such cases the breakdown is more frequently the result of foolishly wasted energy. If you would secure health, you must learn to work without friction. To become anxious or excited or to worry over needles details is to invite a breakdown. Work, whether

नोट

of brain or body, is beneficial and health giving, and a man can work with a steady and clam consistency, freedom from all anxiety and worry, and with his mind utterly oblivious to all but the work he has in his mind, will accomplish for more than the man who is always hurried and anxious.

Aid—complain = शिकायत करना, overwork = अत्यधिक कार्य, frequently = बहुधा, friction = चिन्ता, excited = उत्तेजित, beneficial = लाभदायक, steady and calm consistency = दृढ़ तथा शान्त स्थिरता, anxiety = चिन्ता, utterly oblivious = पूर्णरूपेण भूलना, accomplish = पूर्ण करना।

EXERCISE 11

Poverty is due to several cause, the chief among them being idleness, extravagance and misfortune. The love of ease leads one to acquire the habit of idleness and idleness makes one shrink from work and any kind of labour. One cannot expect to earn any think without working and so an idle man for his own faults, has to struggle with poverty and is ever in want. Extravagance is yet another cause of poverty. A man who spends his money recklessly soon exhausts his resources and is faced with want.

Aid—poverty = निर्धनता, several = अनेक, extravagance = फिजूलखर्ची, acquire = प्राप्त करना, shrink = जी चुराना, expect = आशा करना, want = कमी, recklessly = carelessly = असावधानी से, exhausts = समाप्त कर देता है।

EXERCISE 12

If we notice a river we will find that there is a current in it and that the water is constantly changing. If this were not so, the water would be bad and unfit to be used. We also see that there is something besides this. There is sunshine but this sunshine is never constant. It is followed by clouds. Clouds, again are followed by rain and after the rain there is sunshine again.

EXERCISE 13

To expect permanent succes without self-help is simply building castles in the air. Many people attribute their failure to others. They think that fear, envy, anger, selfishness and the like on the part of others are the cause of their failure. A man of self-help thinks and acts in different way. He never blames others for his failure and analyses his own actions till he finds out the real cause.

Aid—to expect = आशा करना, permanent = स्थायी।, building in the air = हवाई किले बनाना, attribute = आरोप लगाना, failure = असफलता, envy = ईर्ष्या, selfishness = स्वार्थ, blame = दोष लगाना, actions = कार्य, real = असली, failure = असफलता, blames = दोष लगाता है, analyses = विश्लेषण करता है।

EXERCISE 14

Work and play are the complements of each other. Infact each is incomplete without the other. “All wok and no play makes jack a dull boy” is true to the core, but the contray, “if all working days has been playing holidays to play would have been as

difficult as to work" holds equally good. Hence, a suitable admixture, a due proportion of both is what should be aimed at in a school. For there is no denying the fact that play plays no less important a part in a child's education than work.

Aid—complements = पूरक, incomplete = अपूर्ण, to the core = पूर्ण रूप से, contrary = विपरीत, holds good = सत्य है, suitable = उपयुक्त, admixture = मिश्रण, due = उचित, proportion = अनुपात।

EXERCISE 15

The problem of unemployment means the problem of providing work to those who are willing to work. A large number of educated and uneducated people,who are capable of work and are also willing to do it, roam here and there without any job. So the problem of unemployment is involuntary joblessness. In our country this problem has assumed a large and acute form. There is a large number of people who are either partly employed or wholly unemployed. The lives of such people as well as of their families are extremely miserable. India cannot claim to be a welfare state as long as this problem remains unsolved.

Aid—problem of unemployment = बेरोजगारी की समस्या, willing = इच्छुक, educate = शिक्षित, roam = घूमना, job = कार्य, involuntary joblessness = अनिच्छित बेकारी, assumed = धारण करना, acute = तीव्र, form = रूप, extremely = अत्यधिक, miserable = दयनीय, welfare stake = कल्याणकारी राज्य।

EXERCISE 16

The gigantic problems, which face the world today, make the responsibilities of the modern scientist quite burdensome. It is only they who can preserve world peace. They have always been devoted to the service of mankind. So far their efforts have been successful in placing at the feel of men such comforts and luxuries as once even emperors could not dream of. At the same time they have placed such destructive weapons in the hands of rulers and politicians that threaten to destory the world itself. They have now to devote their energies to inventive persuits which promote the happiness and welfare of mankind and save it from complete extinction.

Aid—gigantic = बहुत बड़ी, problems = समस्याएं, face = सामना करना, responsibilities = उत्तरदायित्व, exceedingly = अत्यधिक, preserve = सुरक्षित रखना, devoted = समर्पित, mankind = मानव जाति, efforts = प्रयत्नों, comforts = सुविधाएं, luxuries = विलासताएं, destructive = विनाशकारी, weapons = हथियार, threaten = डराना, energy = शक्तियां, inventive means = मौलिक साधन, welfare = कल्याण, extinction = विनाश।

EXERCISE 17

Now real happiness is the result of rest after somthing we have achieved of balance of mind and body. Our modern habits of hurry and worry are not likely to bring us much of this deeper feeling of satisfaction. Those people whose minds are not overworked always seem happier then we. Today people in countries which are supposed to be

नोट

most highly civilised seem to have lost the purer kinds of happiness in simpler things. Morden cities have darkened our lives, and in many countries young people are farming habits of escaps back into the wild life of nature. It seems as though the more we learn the less we are able to laugh.

Aid—balance = सन्तुलन, modern = आधुनिक, satisfaction = सन्तोष, civilised = सभ्य, escape = बचना, hurry = जल्दी करना, worry = चिन्ता, farming = बनाना, Nature = प्रकृति, have darkened = दु:खी बना दिया है, over work = क्षमता से अधिक काम करना।

EXERCISE 18

Shivaji, the great Maratha warrior and one of the heroes of the world, was born in 1627. His father was Shivaji, a Jagirdar and Shivaji was his second son. Jija Bai, a lady of remarkable character, was Shivaji's mother and the fact that mothers are the makers of men was amply illustrated by her in Sivaji's case. It was from his mother that Shivaji derived his profound religious instincts and his exceptional strength of character.

Aid—warrior = योद्धा, remarkable character = अद्‌भुत चरित्र, amply = पर्याप्त, derived = प्राप्त की, profound = गहन, instincts = अन्त:प्रेरणा, strength of character = चरित्र की शक्ति, illustrated = उदाहरण प्रस्तुत किया, exceptional = असाधारण।

EXERCISE 19

Life in this world is a constant struggle. Every man tries to outstrip his fellow-men in the race of life. He who is active and has the capacity to act with promptness, comes out successful. He who wavers, is left for behind and wakes to find himself hopelessly beaten, like the hare, in the story of the "The hare and The Tortoise". A hesitating man is never successful in life.

Aid—Constant struggle = लगातार संघर्ष, outstrip = आगे बढ़ गया, capacity = सामर्थ्य, wavers = डांवाडोल रहता है, hare = खरगोश, tortoise = कछुआ, hesitating = झिझकने वाला, हिचकने वाला, successful = सफल, promptness = तत्परता, fellowmen = साथियों।

EXERCISE 20

If there is one thing which more than all others is likely to increase happiness in the world, it is the movement which is making Boy Scouts and Girl Guides all over the world. For it is making also for brotherliness and love and mutual help. It is discovering happiness again, as it has been said that there is not a man in the world but something improves in his soul the moment he loves. Goodness and forgiveness and help are the truest causes of happiness, and men may yet come to realize that it is not more knowledge but more real happiness that the world needs today.

Aid—movement = आन्दोलन, brotherliness = भाईचारा, mutual = पारस्परिक, goodness = भलाई, forgiveness = क्षमाशीलता, to realize = महसूस करना।

EXERCISE 21

Boys and girls who are living today have far more to learn than children who lived hundreds of years ago. At the present time, by steamships, aeroplanes and express trains, a man can travel round the world in few days. In the old days, when there were no trains or aeroplanes or motorcars,a traveller throught it was a long journeys to go eighty or ninety kilometre. Do you know how men made journey and carried things from land to another in the days before such wonderful things as aeroplanes and steamships were known? Thousands of years ago man had to walk and carry things themselves, just as they must do now when they are in a part of the country where there are no roads.

Aid—aeroplane = हवाई जहाज, traveller = यात्री, carry = ले जाना।

EXERCISE 22

The population problem is another major present day world problem which is regional Indian problem as well. Population is increasing at an inordinate rate now as a result of our having succeeded in reducing the world's death rate without having achieved up-to-date, a proportionate education in birth rate. The Government has faced this problem frankly and has been taking steps to cope with it is a titanic educational enterprise to try to convince millions of wives and husbands that they can and should limit the number of their children.

Aid—regional = क्षेत्रीय, inordinate rate = अत्यधिक दर, death rate = मृत्यु दर, proportionate = आनुपातिक, reduction = कमी, न्यूनता, titanic = अत्यधिक विशाल आकार वाली, convince = सन्तुष्ट करना, limit = सीमित करना, enterprise = जोखिम से भरा हुआ कार्य, to cope = काबू पाना।

EXERCISE 23

I would like to say one word about the education of the heart. I do not believe that this can be given through books. It can only be done through the living touch of the teacher. And who are the teachers is school? Have they themselves received the training of the heart? Do the teachers get even the living wage? And we know that teachers are not selected for their patriotism. They alone come who cannot find any other employment.

Aid—education = शिक्षा, patriotism = देशभक्ति, employment = रोज़गार, living wage = गुजारा करने लायक वेतन।

EXERCISE 24

The sun is a great source of energy it only we could find a good way of using it. Its energy is stored in food by plants and animals which feed on plants. In this way is the source of life. No one has yet invented a suitable way of using its rays to drive large machines directly. But this is not impossible.

Aid—Source = स्त्रोत, suitable = उचित, rays = किरणों, impossible = असम्भव, drive = चलाना, to store = जमा करना।

नोट

EXERCISE 25

Your body, is undoubtedly, the grandest and most complete machine ever built. It is also the most familiar–each one of us lives with his model every moment of his life. Yet most of us take our bodies for too much for granted–we don't think twice about them unless something goes wrong. Naturally, we pay a price for such ignorance, by remaining unaware of the marvels of the human body, we fail to appreciate our own magnificence. And even more importantly, there's little question that a knowledge of one's body, its various organs and systems and how they work can be used to maintain health and fitness and thus prolong our enjoyment of our lives.

Aid—Complex = जटिल, familiar = परिचित, undoubtedly = निःसन्देह, too much for granted = वैसे ही मान लेना, marvels = चमत्कार, organs = अंग या भाग, prolong = बढ़ाते हैं, enjoyment = आनंद, unaware = असावधान, to appreciated = प्रशंसा करना, magnificence = शान, systems = प्रणालियाँ।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. अनुवाद का मुख्य उद्देश्य भाषा को सुन्दर बनाना होता है।
8. Translation करते समय सबसे पहले वाक्य के Subject को पहचानना चाहिए।
9. अंग्रेजी अनुवाद में Articles पर ध्यान देना चाहिए।

20.2 सारांश (Summary)

- Translation अनुवाद करते समय सबसे पहले वाक्य के Subject (कर्त्ता) को पहचानना चाहिए। अंग्रेजी के वाक्यों में (Interrogative Sentences को छोड़कर) पहले Subject और उसके बाद Verb (क्रिया) का स्थान रहता है।

20.3 शब्दकोश (Keywords)

बाग-बाग : अत्यधिक खुश होना

धार्मिक ग्रंथ : किसी धर्म की धार्मिक पुस्तक

सूचित : किसी को किसी बात का समाचार देना

20.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. अनुवाद की परिभाषा दीजिए तथा अनुवाद करने में ध्यातव्य बातें कौन-सी हैं?
2. भाषा अनुवाद के क्या लाभ हैं? वर्णन कीजिए।
3. अनुवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

नोट

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. Subject (कर्त्ता)   2. Articles
3. Forms of the verbs (क्रिया के रूप में)
4. (*d*)   5. (*c*)   6. (*a*)
7. गलत   8. सही   9. सही

20.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

नोट

इकाई–21: निजी पत्र-लेखन

अनुक्रमणिका (Contents)

उद्देश्य (Objectives)

प्रस्तावना (Introduction)

21.1 निजी पत्र-लेखन कला

21.1.1 पारिवारिक तथा सामाजिक पत्र-लेखन

21.1.2 व्यवसायिक एवं संपादकीय पत्र-लेखन

21.1.3 आवेदन पत्र एवं सरकारी कार्यालयों के पत्र

21.2 सारांश (Summary)

21.3 शब्दकोश (Keywords)

21.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

21.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी योग्य होंगे–

- निजी पत्र-लेखन की कला को जानने हेतु।
- पत्र-लेखन कितने प्रकार के होते हैं वर्णन करने में।
- पत्र-लेखन का अध्ययन करने हेतु।
- पत्र-लेखन का महत्त्व और उद्देश्य जानने हेतु।

प्रस्तावना (Introduction)

मनुष्य स्वभावत: सामाजिक है। समाज में रहकर उसे सर्वदा आपस में विचार-विनिमय करना पड़ता है। वर्तमान युग में यह संभव ही नहीं है कि परिवार के सभी सदस्य तथा अन्य सगे सम्बंधी एक साथ रहें। आज एक ही घर के लोगों को रोज़गार, अध्ययन या अन्य कारणों से विभिन्न स्थानों पर रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उन्हें एक-दूसरे का कुशलक्षेम जानने की आवश्यकता होती है। दूरस्थ व्यक्तियों के साथ अपने भावों विचारों के आदान-प्रदान हेतु ही पत्र-व्यवहार का प्रचलन हुआ है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ पत्र-व्यवहार का भी विकास हुआ है, आज इसका क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि सभी का वास्ता इससे पड़ता है। पत्र-व्यवहार ऐसा साधन है जो दूरस्थ व्यक्तियों की भावना को एक संगम भूमि पर ला खड़ा करता है और दोनों में आत्मीय सम्बंध स्थापित करता है।

सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक जेम्स हाडल का कथन सच ही है कि "जिस प्रकार कुँजियां मंजुषाओं के अंतराल को खोल देती हैं, उसी प्रकार पत्र हृदय के विभिन्न पटलों को खोल देते हैं।"

क्या आप जानते हैं पत्र सामान्यत: छ: प्रकार के होते हैं–1. पारिवारिक पत्र 2. सामाजिक पत्र 3. व्यावसायिक पत्र 4. सम्पादक के नाम पत्र 5. आवेदन पत्र 6. सरकारी कार्यालयों के पत्र।

21.1 निजी पत्र-लेखन कला

21.1.1 पारिवारिक तथा सामाजिक पत्र-लेखन

पारिवारिक पत्र

पारिवारिक पत्रों का आदान-प्रदान परिवार के सदस्यों तथा अन्य सम्बन्धियों के मध्य होता है। इन पत्रों में प्रेम-भाव, दया, सद्भावना और आत्मीयता के दर्शन होते हैं। पारिवारिक पत्र की सामान्य रूपरेखा निम्नवत है–

प्रेषक का पता: 19 गुलाब नगर
बरेली

दिनांक: 15 अप्रैल, 2004

सम्बोधन: पूज्य पिताजी,

अभिवादन: सादर प्रणाम"[1]।

कलेवर: आपके आशीर्वाद से मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा है आप भी स्वस्थ एवं आनन्द से होंगे। समाचार यह है कि.........

स्वनिर्देश: आपका बेटा

हस्ताक्षर: अमित गुप्ता

उपर्युक्त रूपरेखा के अनुसार ही पत्र लिखना चाहिए। ज्ञातव्य है कि पत्र भेजने वाले तथा पाने वाले के पारस्परिक सम्बंध के अनुसार सम्बोधन, अभिवादन और स्वनिर्देश में परिवर्तन हो जाता है। पत्र प्रेषक और पाने वाले के सम्बंध के अनुसार यथायोग्य सम्बोधन, अभिवादन और स्वनिर्देश इस प्रकार हैं–

सम्बंध	**सम्बोधन**	**अभिवादन**	**स्वनिर्देश**
पिता-पुत्र	प्रिय बेटा	शुभाशीष	तुम्हारा शुभाकांक्षी
पुत्र-पिता	पूज्य पिताजी	सादर प्रणाम	आपका प्रिय बेटा,
	या आपका		स्नेहाकांक्षी
माता-पुत्र	प्रिय बेटा	शुभाशीष	तुम्हारी शुभाकाँक्षिणी
पुत्र-माता	पूजनीय माताजी	सादर प्रणाम	आपका प्रिय बेटा
मित्र-मित्र	मित्रवर रमेश जी	सप्रेम नमस्ते	आपका अपना ही
गुरु-शिष्य	प्रिय राजीव	शुभाशीष	तुम्हारा शुभचिन्तक

1. पूज्यजन (माता-पिता और गुरु आदि) को पत्र में अभिवादन शब्द सादर प्रणाम के स्थान पर सादर चरण स्पर्श भी लिखा जाता है।

नोट

शिष्य-गुरु	श्रद्धेय गुरुजी	चरण स्पर्श	आपका शिष्य
अग्रज-अनुज	प्रिय अनिल	शुभाशीष	आपकी प्रिय बेटी
अनुज-अग्रज	पूज्य भाई साहब	सादर प्रमाण	आपका की स्नेहाकाँक्षी
दो अपरिचित	प्रिय महोदय	सप्रेम नमस्ते	भवदीय

इसके अलावा पता लिखना भी पत्र का आवश्यक अंग है। पत्र पाने वाले (प्रेषिती) का पता कार्ड या लिफाफे पर इस प्रकार लिखा जाता है। सबसे पहले प्रेषिती का नाम, दूसरी पंक्ति में मकान संख्या, गली-मुहल्ला आदि, तीसरी पंक्ति में गाँव शहर और डाकघर का नाम लिखा जाता है। अन्तिम पंक्ति में जिले और राज्य का उल्लेख रहता है। जैसे–

श्री रामलखन वर्मा	आर. पी. बाजपेई
ग्राम-मौजीपुरा	15-विकास नगर
पोस्ट-क्योंटी बादुल्ला (बिसवा)	सीतापुर (उ. प्र.)
जिला-सीतापुर (उत्तर प्रदेश)	पिन-261001

नमूना–1

(पिता का पत्र पुत्र को)

प्रिय भइया अजय,

पोखर खाली
अल्मोड़ा
दि. 10-4-2004

शुभाशीष।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी लिखित परीक्षा के दो प्रश्न-पत्र हो गए हैं और तुमने दोनों प्रश्न-पत्रों को बहुत अच्छे ढंग से किया है। मैंने आज ही 500 रु. का मनीआर्डर तुम्हारे नाम भेज दिया है। आशा है पत्र के साथ वह भी मिल जाएगा। अपनी पढ़ाई का विशेष ध्यान रखना और इन पैसों का सदुपयोग ही करना। तुम्हारी माताजी ने तुम्हारे लिए प्यार और भाई बहनों ने नमस्ते कहा है।

तुम्हारा शुभचिन्तक
क ख ग

नोट्स पारिवारिक पत्रों में प्रेम-भाव, सद्भावना, दया और आत्मीयता के दर्शन होते हैं।

नमूना–2

(मित्र का पत्र मित्र को)

प्रिय सुमन जी,

5, विकास नगर
सीतापुर उ. प्र.
दि. 4-3-2004

सप्रेम नमस्ते।

आपका पत्र मिला, समाचार विदित हुआ। खुशी की बात है कि आप अपने निवास स्थान पर कवि गोष्ठी कराने जा रहे हैं। मैं अवश्य ही आऊँगा। स्थानीय कवियों के अलावा और कौन-कौन से कवि आ रहे हैं? मयंक जी को

आमन्त्रित किया है या नहीं? यदि किसी चीज की आवश्यकता हो तो लिखें, मैं ले आऊंगा। शेष यहाँ पर सब शुभ है। आशा है आप भी स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपका अपना ही

मुनीश कुमार

सामाजिक पत्र

सामाजिक पत्रों के अन्तर्गत निमन्त्रण-पत्र, संस्तुति-पत्र, परिचय-पत्र, बधाई या शुभकामना पत्र और शोक पत्र आदि आते हैं। इन पत्रों में प्रेषक का नाम या तो सबसे ऊपर लिखा जाता है या सबसे नीचे। सामाजिक पत्र-लेखन की कई विधियाँ हैं। विभिन्न प्रकार के सामाजिक पत्रों के नमूने इस प्रकार हैं–

नमूना–1
(विवाह के उपलक्ष्य में)

निमन्त्रण पत्र

।। श्री गणेशाय नमः ।।

भेज रहा हूँ नेह-निमन्त्रण प्रियवर! तुम्हें बुलाने को।

हे मानस के राजहंस! तुम भूल न जाना आने को।

श्री/श्रीमति..................

परम पिता परमेश्वर की कृपा से मेरे ज्येष्ठ पुत्र चि. गिरीश का विवाह पिथौरागढ़ निवासी श्री बंशीधर तिवारी की सौभाग्यकांक्षिणी सुपुत्री प्रभा के साथ दिनांक 8-4-2004 को होना निश्चित हुआ है। आप सपरिवार पधारकर वर-वधू को आशीर्वाद देकर अनुग्रहित करें।

दर्शनाभिलाषी | विनीत

प्रमोद जोशी | पूरनचन्द जोशी

सतीश जोशी

एवं समस्त परिवार

नमूना–2
परिचय पत्र या संस्तुति पत्र

10, दरभंगा कोठी

इलाहाबाद (उ.प्र.)

दि. 10-4-2004

आदरणीय डॉ. साहब,

पत्र वाहक ज्ञानेन्द्र वर्मा आपके पास आ रहे हैं। यह मेरे प्रिय शिष्य एवं मेधावी छात्र रहे हैं। इन्होंने इसी वर्ष लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में एम. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। यह 'महात्मा नारायण दास और उनका साहित्य' विषय पर पी.एच.डी. करना चाहते हैं। इन्हें आप अपने निर्देशन में ले लें। यह अपनी योग्यता एवं परिश्रम से आपको अवश्य ही सन्तुष्ट करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। यहाँ पर सब ठीक है। आप भी स्वस्थ एवं आनन्द होंगे।

आपका शुभेच्छु

प्रवेश जैन

नोट

टास्क सामाजिक पत्र-लेखन का क्या उद्देश्य है? वर्णन कीजिए।

नमूना–3
बधाई या शुभकामना पत्र

15, विजय लक्ष्मी नगर

सीतापुर (उ.प्र.)

दि. 1-4-2004

प्रिय दीक्षित जी,

आपका पत्र मिला। आपकी नियुक्ति विद्युतकार अनुदेशक पद पर जी. आई. टी. आई. रायबरेली में हो गयी है। आपने कार्यभार ग्रहण कर लिया है। मैं इस सुखद समाचार से आनन्दित हूँ। इस सफलता पर मेरी बधाई स्वीकार करें। मेरी भगवान आशुतोष से प्रार्थना है कि आप जीवन में सफल हों। यहाँ शुभ है।

आपका मित्र

धर्मेन्द्र

नमूना–4
शोक पत्र

15, स्वरूप नगर
पीलीभीत (उ.प्र.)
दि. 1-4-2004

प्रिय बिष्ट जी,

आपकी पुत्र-वधु की असामयिक मृत्यु की सूचना पाकर अपार दुःख हुआ। मृत्यु पर किसी का वश नहीं है। आप धैर्य धारण करें। मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को शोक वहन करने की शक्ति दे।

भवदीय

उमेश सिंह

क्या आप जानते हैं सामाजिक पत्रों में प्रेषक का नाम या तो सबसे ऊपर लिखा जाता है या सबसे नीचे। सामाजिक पत्र-लेखन की कई विधियाँ हैं।

नमूना–5
परिवाद पत्र

15, ढूंगाधारा

अल्मोड़ा (उ. प्र.)

263602

सेवा में,

पोस्ट मास्टर

उप डाकघर पोखर खाली

अल्मोड़ा

महोदय,

मैं आपका ध्यान मुहल्ला ढूँगाधारा के पोस्टमैन की कर्त्तव्य-विमुखता की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस मुहल्ले के निवासियों की शिकायत है कि यहाँ डाक कभी भी समय से नहीं बँटती है, अत: यहाँ के निवासियों को बड़ी असुविधा है।

आपसे निवेदन है कि इस मामले की जानकारी करके उचित कार्यवाही करने की कृपा करें, ताकि इस समस्या का निराकरण हो सके।

सधन्यवाद!

भवदीय

प्रमोद पन्त

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. पारिवारिक पत्रों का ········ परिवार के सदस्यों तथा अन्य सम्बन्धियों के मध्य होता है।
2. पूज्यजन (माता-पिता और गुरु आदि) को पत्र में अभिवादन शब्द ········ के स्थान पर सादर चरण स्पर्श भी लिखा जाता है।
3. ········ के अंतर्गत निमंत्रण-पत्र, संस्तुति-पत्र, परिचय पत्र, बधाई या शुभकामना पत्र और शोक पत्र आदि आते हैं।

टास्क निजी पत्र-लेखन में कौन-से पत्र आते हैं तथा इनका क्या महत्त्व है? संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

नोट

21.1.2 व्यासायिक एवं संपादकीय पत्र-लेखन

व्यावसायिक पत्र

आजकल व्यापार तथा व्यवसाय में काफी वृद्धि होने के कारण व्यावसायिक पत्रों में भी वृद्धि होती चली जा रही है। दो व्यापारिक संस्थाओं अथवा व्यापारिक संस्था और ग्राहक के मध्य होने वाला पत्र व्यवहार व्यावसायिक पत्राचार कहलाता है। व्यावसायिक पत्र-लेखन भी एक कला है, इसकी विशिष्ट शैली होती है। इन पत्रों में शिष्टता, सहजता, सहृदयता के दर्शन होते हैं। व्यावसायिक पत्र-लेखन विधि इस प्रकार है–

(1) व्यावसायिक पत्र में सबसे ऊपर दाहिनी ओर भेजने वाले (प्रेषक) का नाम, पता, दिनांक, टेलीफोन नम्बर आदि लिखा जाता है।

(2) बायीं ओर पाने वाले का नाम-पता लिखा जाता है।

(3) बायीं ओर ही पाने वाले को सम्बोधन 'प्रिय महोदय' लिखा जाता है।

(4) व्यावसायिक पत्रों में अभिवादन शब्द लिखने की परम्परा नहीं है, अतः अभिवादन शब्द नहीं लिखना चाहिए।

(5) संबोधन के बाद नए पैराग्राफ से विषय-वस्तु का उल्लेख किया जाता है।

(6) विषय वस्तु लिखने के बाद स्वनिर्देश शब्द 'भवदीय', 'आपका सद्भावी', 'आपका सुहृदय', या 'आपका विश्वासभाजन' आदि ही लिखे जा सकते हैं।

(7) स्वनिर्देश शब्द लिखने के बाद प्रेषक अपने हस्ताक्षर कर देता है।

नमूना-1

नन्द कुमार
19- कौशलपुरी
कानपुर (उ.प्र.)
दि. 15-5-2004

सेवा में,

सर्वश्री व्यवस्थापक

नागरी प्रचारिणी सभा,

वाराणसी (उ.प्र.)।

प्रिय महोदय,

निवेदन है कि मुझे निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। कृपया इन्हें शीघ्र ही वी. पी. डाक द्वारा ऊपर लिखे पते पर भेज दें। वी. पी. आते ही छुड़ा ली जायेगी।

पुस्तक का नाम	**लेखक**
एक प्रति हिन्दी शब्दानुशासन	आचार्य किशोरीदास बाजपेई
एक प्रति हिन्दी व्याकरण	पं. कामता प्रसाद गुरु

नोट

एक प्रति हिन्दी का सरल भाषा विज्ञान	गोपाल लाल खन्ना
एक प्रति चरित चर्चा और जीवन दर्शन	डॉ. सम्पूर्णानन्द
एक प्रति हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

सधन्यवाद।

भवदीय

नन्द कुमार

संपादक के नाम पत्र

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं हमारे ज्ञानवर्द्धन बौद्धिक तुष्टि और मनोरंजन के साधन हैं। इनमें हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बंधित अनेक सूचनाएं, विज्ञापन और सुझाव भी प्रकाशित होते रहते हैं। हमें लेख, कविता और कहानी आदि प्रकाशित कराने, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं को प्रकाशित कराकर जन-जन तक पहुँचाने के लिए संपादक से संपर्क करना पड़ता है। इसके लिए हमें उन्हें पत्र लिखना पड़ता है, ऐसे पत्र 'संपादक के नाम पत्र' कहलाते हैं। इन पत्रों में निबन्धात्मकता का समावेश रहता है।

संपादक के नाम पत्र लिखने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(अ) सबसे पहले कागज के बायीं और 'सेवा में' लिखने के बाद प्रेषिती के लिए संपादक, पत्र का नाम तथा शहर का नाम लिखा जाता है।

(ब) संबोधन के लिए 'महोदय' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(स) जिस विषय-वस्तु को प्रकाशनार्थ भेजा जाता है, उसे अलग कागज पर लिखकर संपादक के नाम पत्र के साथ संलग्न कर दिया जाता है।

(द) स्वनिर्देश के लिए 'भवदीय' अथवा 'आपका सद्‌भावी' शब्द का प्रयोग किया गया है।

नमूना-1

12-पन्त सदन, ढूंगाधारा

अल्मोड़ा (उ. प्र.)

दिनांक 15-1-2004

सेवा में,

संपादक

दैनिक 'स्वतन्त्र भारत'

विधान सभा मार्ग,

लखनऊ (उ. प्र.)

नोट

महोदय,

आपके दैनिक समाचार-पत्र में 'अल्मोड़ा में पानी की समस्या' पर अपने विचार प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ। आशा है आप इसे प्रकाशित कर हमें अनुगृहीत करेंगे।

भवदीय

मुकेश श्रीवास्तव

'अल्मोड़ा में पानी की समस्या'

पिछले दो हफ्तों से यहाँ पानी की बड़ी समस्या हो गयी है। नलों में पानी नहीं आता है। यदि आता भी है तो बहुत कम मात्रा में आता है। एक बाल्टी पानी के लिए काफी समय बरबाद हो जाता है। स्त्रोतों पर बड़ी भीड़ होती है, पानी की पूर्ति न होने से घण्टों इन्तजार करना पड़ता है। आजकल अल्मोड़ा में ऐसा लग रहा है जैसे पानी का अकाल पड़ गया हो।

जलकल विभाग के कर्मचारियों से सम्पर्क करने पर कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिलता है। कर्मचारी बात को लापरवाही से टाल देते हैं, अत: अधिकारी वर्ग से निवेदन है कि नगरवासियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए जलापूर्ति की उचित व्यवस्था कराने की कृपा करें, जिससे समय पर पानी मिल सके।

–मुकेश श्रीवास्तव

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

बहु-विकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Question)–

4. आजकल व्यापार तथा व्यवसाय में काफी वृद्धि होने के कारण किन पत्रों में वृद्धि होती चली जा रही है।
   (*a*) सामाजिक पत्रों में (*b*) पारिवारिक पत्रों में
   (*c*) आवेदन पत्रों में (*d*) व्यवसायिक पत्रों में
5. व्यवसायिक पत्र में सबसे ऊपर दाहिनी ओर ········ का नाम, पता, दिनांक, टेलीफोन नम्बर आदि लिखा जाता है।
   (*a*) मिलने वाले का (*b*) अभिवादक का नाम
   (*c*) भेजने वाले का नाम (*d*) इनमें से कोई नहीं
6. संपादक के नाम पत्र लिखने में संबोधन के लिए ········ शब्द का प्रयोग किया जाता है।
   (*a*) भवदीय (*b*) सदभवी
   (*c*) प्रेषिती (*d*) महोदय

21.1.3 आवेदन पत्र एवं सरकारी कार्यालयों के पत्र

आवेदन पत्र (Applications)

आवेदन पत्र या प्रार्थना पत्र किसी फर्म-अधिकारी या किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय के अधिकारी को लिखे जाते हैं। स्कूल अथवा कालेज के प्रबन्धक अथवा प्रधानाचार्य को लिखे गए पत्र भी आवेदन पत्र कहलाते हैं। चूंकि

आवेदन पत्र अधिकारियों को लिखे जाते हैं अत: इन्हें 'आधिकारिक पत्र' भी कहा जाता है। आवेदन पत्रों का प्रारूप अन्य पत्रों से भिन्न होता है। इन पत्रों के लिखने के सामान्य नियम इस प्रकार हैं–

(1) सर्वप्रथम कागज के बायीं ओर 'सेवा में' लिखने के बाद प्रेषिती का पद और पता लिखा जाता है।

(2) संबोधन के लिए 'महोदय' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

(3) आवेदन पत्रों में अभिवादन नहीं लिखा जाता है, सीधे 'निवेदन में' या 'सविनय निवेदन है' लिखकर वर्ण्य-विषय लिखा जाता है।

(4) स्वनिर्देश तथा हस्ताक्षर सभी पत्रों की भांति पत्र के नीचे दायीं ओर लिखे जाते हैं। स्वनिर्देश के लिए 'प्रार्थी', 'भवदीय' अथवा 'आपका विश्वसपात्र' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(5) आवेदन पत्रों में दिनांक पत्र के नीचे बायीं ओर लिखी जाती है। आवेदन पत्रों के कुछ नमूने इस प्रकार हैं–

नमूना-1
(नौकरी पाने हेतु)

सेवा में,

निदेशक,

राजकीय संग्रहालय,

अल्मोड़ा।

महोदय,

आपके 15 जनवरी, 2004 के दैनिक 'हिन्दुस्तान' में प्रकाशित विज्ञापन के अनुसार मैं 'हिन्दी आशुलिपिक' के पद के लिए अपनी सेवाएं प्रस्तुत करता हूँ। मेरी योग्यता तथा अनुभव इस प्रकार हैं–

शैक्षिक योग्यताएं–

1. हाईस्कूल यू.पी. बोर्ड	प्रथम श्रेणी 1995
2. इण्टरमीडिएट यू.पी. बोर्ड	द्वितीय श्रेणी 1997
3. बी.ए. कुमाऊँ वि.वि	द्वितीय श्रेणी 1999
4. आई.टी.आई (हिन्दी आशुलिपि)	बी ग्रेड 2002

व्यावहारिक योग्ताएँ–

1. हिन्दी आशुलिपि गति 120 शब्द प्रति मिनट।
2. हिन्दी टंकण गति 30 शब्द प्रति मिनट।
3. अंग्रेजी टंकण गति 40 शब्द प्रति मिनट।

नोट्स आवेदन पत्र अधिकारियों को लिखे जाते हैं अत: इन्हें आधिकारिक पत्र भी कहा जाता है।

अनुभव–

मैंने विगत 18 महीनों तक उननिदेशक पशुपालन विभाग नैनीताल के कार्यालय में हिन्दी आशुलिपिक के पद पर कार्य किया है।

योग्यता और अनुभव के अतिरिक्त मुझे पाठयेत्तर कार्यकलापों में बड़ी रुची रही है। मैं फुटबाल का अच्छा खिलाड़ी हूँ और कॉलेज की टीम का विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व कर चुका हूँ। मेरी जन्म-तिथि 10-7-80 है।

नोट

यदि उक्त पद पर सेवा करने का सुअवसर मिला तो मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि अपने कार्य एवं व्यवहार से सदैव सन्तुष्ट रखूँगा।

प्रमाण-पत्रों की अनुप्रमाणित प्रतिलिपियां इस आवेदन पत्र के साथ संलग्न हैं।

भवदीय

सुरेश सक्सेना

3, शान्ति निकेतन नैनीताल-2

दिनांक 17-1-2004

संलग्नक संख्या-7

नमूना-2
(अवकाश हेतु)

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान,

बरेली।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे गाँव में अपने पैतृक पुराने मकान की मरम्मत करवाना है। आगामी बरसात में और अधिक क्षतिग्रस्त होने पर उसके गिर जाने की आशंका है, इसलिए उसकी मरम्मत अत्यावश्यक है। अतएव आपसे अनुरोध है कि मुझे दिनांक 4-3-2004 से 5-3-2004 तक 30 दिनों का उपार्जित अवकाश (E. L.) प्रदान कर कृतार्थ करें। साथ ही दिनांक 3-3-2004 को कार्यकाल के उपरान्त मुख्यालय छोड़ने की भी अनुमति प्रदान करें।

दिनांक.......... सधन्यवाद।

अवकाश के दिनों में आपका विश्वासपात्र

घर का पता– धीरेन्द्र अवस्थी

ग्राम-हेतमापुर अनुदेशक टर्नर

पोस्ट-भिटौली (फतेहपुर)

जिला-बाराबंकी (उ. प्र.)

क्या आप जानते हैं प्रार्थना पत्र या आवदेन पत्र किसी फर्म-अधिकारी या किसी विभाग, मंत्रालय या कार्यालय के अधिकारी को लिखे जाते हैं। विश्वविद्यालय तथा विद्यालयों के प्रबंधक अथवा प्रधानाचार्य को लिखे गए पत्र भी आवेदन पत्र कहलाते हैं।

नमूना-3
(अपने गाँव में पाठशाला खुलवाने हेतु)

ग्राम-नारायणपुर
पोस्ट-रामनगर,
जिला-बहराइच (उ. प्र.)

सेवा में,
अध्यक्ष
जिला परिषद्
बहराइच।
महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे गावँ में एक प्राइमरी पाठशाला की बड़ी आवश्यतकता है। गाँव के आस-पास दो मील तक कोई विद्यालय न होने से बहुत से बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। सुदूर विद्यालय जाने में छोटे-छोटे बच्चों को बड़ी परेशानी होती है। हमारे गाँव की जनसंख्या भी अच्छी है। अत: आपसे प्रार्थना है, कि हमारे गाँव में एक प्राइमरी पाठशाला स्थापित कराने की कृपा करें, ताकि हमारे गाँव के तथा आस-पास के ग्रामवासी बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सकें।

हमें आशा ही नहीं, वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप इस विषय पर सहानुभूतिपूर्ण विचार करके हमारे गाँव में एक प्राइमरी पाठशाला स्थापित करायेंगे।

सधन्यवाद।
प्रार्थीगण
1...................
2...................
3...................

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

निम्न कथनों में सही/गलत (True/False) छाँटिए–

7. आवेदन पत्र या प्रार्थना पत्र किसी फर्म-अधिकारी या किसी मंत्रालय, विभाव या कार्यालय के अधिकारी को लिखे जाते हैं।
8. चूंकि आवेदन पत्र अधिकारियों को लिखे जाते हैं। अत: इन्हें अधिकारिक पत्र भी कहा जाता है।
9. आवेदन पत्रों में दिनांक पत्र के नीचे बायीं ओर नहीं लिखी जाती हैं।

21.2 सारांश (Summary)

- पत्र-व्यवहार ऐसा साधन है जो दूरस्थ व्यक्तियों की भावना को एक संगम भूमि पर ला खड़ा करता है और दोनों में आत्मीय सम्बंध स्थापित करता है। सुप्रसिद्ध अंग्रेज लेखक जेम्स हाडल का कथन सच ही है कि "जिस प्रकार कुँजियां मंजुषाओं के अंतराल को खोल देती हैं, उसी प्रकार पत्र ह्दय के विभिन्न पटलों को खोल देते हैं।"

नोट

21.3 शब्दकोश (Keywords)

संतोषजनक : जिस काम को करने से शांति प्राप्त करें

प्रशिक्षण संस्थान : प्रशिक्षण देने का केन्द्र

21.4 अभ्यास-प्रश्न (Review Questions)

1. निजी पत्र-लेखन का उद्देश्य तथा महत्त्व लिखिए।
2. पत्र-लेखन विधि का उल्लेख कीजिए।
3. पत्र-लेखन का प्रयोग आज के युग में कितना महत्त्वपूर्ण है? प्रकाश डालिए।

उत्तर : स्व-मूल्यांकन (Answer: Self Assessment)

1. आदान-प्रदान	2. सादर प्रणाम	3. सामाजिक पत्र के
4. (*d*)	5. (*c*)	6. (*d*)
7. सही	8. सही	9. गलत

21.5 संदर्भ पुस्तकें (Further Readings)

पुस्तकें

1. व्याकरण भारती (डा. सुरेन्द्र कुमार जैन/डा. वीणा मनचन्दा) जयंती प्रकाशन, काबुल नगर, शाहदरा, दिल्ली।

इकाई–22: पारिभाषिक शब्दावली

(क) जनसंचार माध्यम संबंधी शब्दावली

1. Announcer: उद्घोषक

   जो व्यक्ति रेडियो, टेलीविजन या सार्वजनिक कार्यक्रमों में घोषणा करता है या कुछ पढ़ता है।

2. Artistic: कलाकारों जैसा विशिष्ट

   विशेषण के रूप में इसका संबंध कलात्मक या कलाप्रेमी से भी है। कला या कलाकारों की विशेषता जो सौंदर्य के मानकों और संवेदनशीलता को मनभावन स्तर पर पहुँचाता है।

3. Audio-Visual: दृश्य-श्रव्य या श्रव्य-दृश्य

   जिसे देखा एवं सुना जा सके।

4. Banner: झंडा, ध्वजा या पताका

   किसी कपड़े या कागज़ की लम्बी पट्टी जिसे सजावट या विज्ञापन के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

5. Biographer: जीवनी लेखक

   ऐसा व्यक्ति जो किसी अन्य व्यक्ति के जीवन से संबंधित तथ्यों या घटनाओं को लेखनबद्ध करता है।

6. Biweekly: अर्द्ध साप्ताहिक

   सप्ताह में दो बार घटने वाली या सम्पन्न होने वाली कोई चीज

7. Bulletin: बुलेटिन, जन सूचना पत्रक

   संज्ञा के रूप में इसका प्रयोग किसी पत्रिका, विज्ञप्ति, जन सूचना पत्रक, सरकारी विज्ञप्ति, सरकारी समाचार, सरकारी सूचना, स्मरण पत्र, गजट आदि के लिए किया जाता है।

8. Catalogue: कैटलॉग, सूचीपत्र

   संज्ञा के रूप में इसका प्रयोग पुस्तक-सूची, सूची, तालिका, नाम सूची, नामावली आदि के लिए किया जाता है, जबकि क्रिया के रूप में इसका प्रयोग सूची या सूचीपत्र बनाने के लिए किया जाता है।

9. Calligraphy: कैलिग्राफी, सुलेखन

   सुलेखन से तात्पर्य अच्छे या सुन्दर लेखन से है।

10. Caption: कैप्शन–अनुशीर्षक

    किसी भी परिच्छेद का शीर्षक या उपशीर्षक।

11. Cartoonist: कार्टूनिस्ट–कार्टून बनाने वाला

    कोई भी कार्टून या हास्य-चित्र का रेखांकन करने वाला।

12. Columnist: स्तम्भ लेखक

    किसी भी विषय या घटना पर लिखने वाला स्तम्भ लेखक कहलाता है। यह एक पत्रकार या सम्पादक भी हो सकता है।

नोट

13. Choreography: नृत्य कला

    नृत्य से संबंधित विशेषताओं को स्पष्ट करने वाला।

14. Commentator: टीकाकार या विवरणकार

    ऐसा विशेषज्ञ जो किसी भी घटना या विषय से संबंधित विवरण प्रस्तुत करता है, उसे अर्थकार, भाष्यकार, वृत्तकार, समालोचक या विवरण प्रसारक के रूप में भी जाना जाता है। यह दिन-रात की घटनाओं एवं रिपोर्ट का विश्लेषण करता है।

15. Composition: संयोजन या संयुक्त

    संज्ञा के रूप में इसका अर्थ संयोजन या यौगिक से है, जबकि विशेषण के रूप में इसका अर्थ मिश्रित, संग्रहित, संयुक्त, समिश्र, मिला हुआ, जुटा हुआ, अनेक भागों से बना हुआ आदि से है।

16. Communication: सम्प्रेषण

    दूसरों के सामने किसी बात या भावनाओं की अभिव्यक्ति करना। इसके लिए संचार, संदेश, पत्र-व्यवहार, संवाद, संसर्ग, संचारण आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।

17. Creation: सृजन, सृष्टि, रचना या निर्माण

    मानव के द्वारा अस्तित्व में लाई गई नई रचना। मानव द्वारा किया गया नया कार्य।

18. Correspondent: संवाददाता, पत्र व्यवहारी

    किसी समाचारपत्र में या प्रसारण मीडिया में समाचार प्रदान करने वाला, पत्रों के माध्यम से संचार या संवाद स्थापित करने वाला।

19. Information Technology: सूचना प्रौद्योगिकी

    ऐसी प्रौद्योगिकी जिसका प्रयोग सूचना क्षेत्र में किया जाता है।

20. Interview: साक्षात्कार

    किसी व्यक्ति के साथ बातचीत के द्वारा की जाने वाली पूछताछ।

21. Interruption: बाधा या रुकावट

    किसी चल रही गतिविधि में आकस्मिक घटना। इसके लिए अवरोध, विध्न, रुकावट, हस्तक्षेप, व्यवधान आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।

22. Journalist: पत्रकार

    अखबारों, पत्रिकाओं या प्रसारण-मीडिया के लिए समाचार संग्रहित करने वाला व्यक्ति।

23. Magazine: पत्रिका

    कई प्रकार के चित्रों, कहानियों, लेखों, समाचारों आदि से युक्त प्रकाशित पुस्तक या पुस्तिका।

    इसका एक अर्थ बारूद आदि रखने का स्थान यानि पिस्तौल का पेट आदि भी होता है।

24. Source Language: स्रोत भाषा

    ऐसी भाषा जो अन्य किसी भाषा या जानकारी का स्रोत हो।

25. Transliteration: लिप्यंतरण

    किसी लिपि में बद्धमूल की जाने वाली रचना।

(ख) शिक्षा, सभा और सम्मेलन सम्बंधी शब्द

1. Abstract: अमूर्त या कल्पना

   ऐसी अवधारणा जो केवल मन में मौजूद है और उसका कोई प्रत्यक्ष स्वरूप नहीं है।

   इसे सार, सारांश, तत्त्व आदि के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है।

2. Academic Goal: शैक्षिक लक्ष्य

   किसी भी शिक्षा से संबंधित निर्धारित किया गया उद्देश्य शैक्षिक लक्ष्य कहलाता है।

3. Address: पता या भाषण या संबोधन

   नाम-पते के लिए प्रयुक्त होने वाले इस शब्द का अर्थ भाषण, व्याख्यान, संबोधन, निवेदन आदि के संदर्भ में भी प्रयुक्त होता है। जैसे–एक प्रोफेसर छात्रों की भीड़ को संबोधित (Address) कर रहे थे।

4. Adult Education: व्यस्क शिक्षा या प्रौढ़ शिक्षा

   व्यस्क या प्रौढ़ लोगों को दी जाने वाली शिक्षा।

5. Agenda: कार्यसूची

   किसी भी काम की सफलता के लिए एक कार्यसूची का निर्माण करना सार्थक होता है, अर्थात् कार्यों की सूची बनाना जिसके अनुसार कार्य को सम्पादित किया जाए।

6. Anniversary: वर्षगांठ या वार्षिकोत्सव

   किसी भी घटना के निर्धारित दिन या समय के आधार पर प्रत्येक वर्ष उसका आयोजन करना।

7. Authology: पद्य-संग्रह या संकलन

   किसी भी पद्य का संकलन या संग्रह पद्य-संग्रह या कुसुमावली कहलाता है।

8. Appraisal: मूल्यांकन या समीक्षा

   किसी भी तथ्य, विचार या घटना का मूल्य निरूपण करना मूल्यांकन या समीक्षा या आगणन कहलाता है।

9. Attestation: अनुप्रमाणन या साक्ष्यांकन

   किसी भी तथ्य या प्रमाण को उपयुक्त ठहराने के लिए उसका अनुप्रमाणन या साक्ष्यांकन किया जाता है।

10. Audience: श्रोता या दर्शक

    विधिपूर्वक औपचारिक बैठक में वक्ता को सुनने वाले लोग श्रोतागण कहलाते हैं। सार्वजनिक रूप से सुनने वालों या देखने वालों की एक सभा।

11. Autonomous: स्वायत्त

    ऐसा निकाय जो बाहरी किसी भी शक्ति द्वारा नियंत्रित या संचालित नहीं होता हो बल्कि वह स्वतंत्र हो। जिसकी कार्यवाही मुक्त रूप से होती हो।

12. Bibliography: ग्रंथ-सूची या संदर्भ ग्रंथ-सूची

    किसी रचना को लिखे जाने के दौरान प्रयुक्त किए जाने वाले ग्रंथों को संदर्भ ग्रंथ कहते हैं एवं ऐसे ग्रंथों की सूची को संदर्भ ग्रंथ-सूची या ग्रंथ-सूची कहते हैं।

13. Bachelor: अविवाहित या कुंवारा व्यक्ति

    ऐसा व्यक्ति जिसका विवाह नहीं हुआ है।

नोट

14. Closing Speech: समापन भाषण

    चल रहे भाषण की प्रक्रिया के समापन को समापन भाषण कहते हैं।

15. Conference hall: सम्मेलन हॉल

    ऐसा कमरा जहाँ व्यक्तियों का सम्मेलन होता है।

16. Conclusion: अंतिम निर्णय या निष्कर्ष

    किसी भी कार्य या रचना संबंधी अंतिम निर्णय या निष्कर्ष उपसंहार कहलाता है।

17. Document: प्रलेख या दस्तावेज़

    लेखन या किसी सोच या सूचना की जानकारी देने वाला या प्रमाण प्रस्तुत करने वाला लेख दस्तावेज़ कहलाता है।

18. Draft: प्रारूप या मसौदा

    किसी भी प्रकार का प्रारूप तैयार करना या रेखाचित्र बनाना जिसमें उसकी मुख्य विशेषताएँ आ सकती हों।

19. Guardian: अभिभावक

    ऐसा व्यक्ति जो अपने आश्रित का रक्षक या संरक्षण करने वाला हो।

20. Humanity: मानवता या इंसानियत

    मानव जाति के मूल्यों को ध्यान में रखते हुए दया दिखाना या उसके अन्दर की भलमनसाहत की प्रवृत्ति या स्वभाव।

21. Hypothesis: परिकल्पना

    किसी तथ्य या टिप्पणी की व्याख्या करने के लिए प्रस्तावित इरादा या परिवर्तित होने वाला कथन परिकल्पना कहलाता है।

22. Inauguration: उद्घाटन

    एक नया कार्य शुरू करने संबंधी अभ्यास या क्रियान्वयन की शुरुआत।

23. Informal: अनौपचारिक

    बिना किसी विधि या नियम-कानून के अनियमित रूप से होने वाली वार्तालाप या तरीका या संगठन।

24. Symposium: विचार गोष्ठी या परिसंवाद

    किसी भी मुद्दे पर कुछ व्यक्तियों द्वारा रखे जाने वाले विचार जिस पर मौजूद सभी लोग विचार-विमर्श करते हैं, विचार गोष्ठी या परिसंवाद कहलाता है।

25. Viva-Voce: मौखिक परीक्षा

    मौखिक रूप से एवं वाचिक रूप से लिया जाने वाला मौलिक परीक्षण।

(ग) कार्यालय एवं बैंक संबंधी शब्द

1. Acknowledgment: रसीद, स्वीकृति, कृतज्ञता

   कार्यालय एवं बैंक संबंधी संदर्भ में इसका अर्थ रसीद या स्वीकृति से है। किसी प्रकार के जमा, नकदी या दस्तावेज के लेन-देन के संदर्भ में इसका प्रयोग किया जाता है।

2. Accidental Profit: आकस्मिक लाभ

   किसी भी प्रकार की दुर्घटना होने पर भुक्तभोगी के पक्ष को जो लाभ प्रदान किया जाता है, उसे आकस्मिक लाभ कहा जाता है।

3. Account: लेखा, खाता

   किसी भी धारक के लेखा-जोखा को जिस जगह व्यवस्थित रखा जाता है उसे खाता कहते हैं। इसमें उस धारक द्वारा किए जाने वाले लेन-देन का विवरण दर्ज रहता है। यह सामान्यतया दो प्रकार का होता है—चालू खाता एवं बचत खाता।

4. Act: अधिनियम, विधान, विधि, कानून आदि

   कार्यालय एवं बैंक संबंधी कार्यों के अन्तर्गत Act शब्द का अर्थ अधिनियम या कानून आदि से संबंधित होता है।

5. Acceptance: स्वीकृति या मंजूरी

   किसी प्रकार के दस्तावेज़ या प्रस्ताव को स्वीकृत या मंजूर किए जाने के संदर्भ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

6. Advnace: अग्रिम या पेशगी

   किसी भी प्रकार की स्वीकृति या लेन-देन को उपयुक्त समय से पहले ही स्वीकार करना या अस्वीकार करना। बैंकों आदि में इस शब्द का प्रयोग अग्रिम राशि देने के संदर्भ में किया जाता है।

7. Ad hoc: तदर्थ, अनौपचारिक

   इसका अर्थ है कि अनौपचारिक तरीके से बिना किसी नियम-कानून की बारीकियों में गए किसी प्रकार का निर्णय लेना।

8. Article: धारा, लेख या वस्तु

   कार्यालय एवं बैंक संबंधी कार्यों में article शब्द का प्रयोग किसी धारा, दफ़ा या अनुच्छेद को व्यक्त या इंगित करने के लिए किया जाता है।

9. Audit: लेखा-परीक्षण

   इसका अर्थ है कि किसी भी कार्यालय या बैंक संबंधी विविध कार्यों को सम्पादित करने पर उसका समय-समय पर किया जाने वाला निरीक्षण। इसमें मुख्यत: उसके आय-व्यय का लेखा-जोखा जाँचा जाता है कि जितनी राशि किसी कार्य के लिए उपलब्ध कराई गई उतनी ही राशि उस पर व्यय की गई अथवा नहीं। साथ ही, जो राशि किसी काम के लिए आहरित की गई वह उपयुक्त है अथवा नहीं।

10. Bridge Loan: अंतरिम ऋण

    किसी भी बैंक अथवा कार्यालय द्वारा किसी व्यक्ति को दिया जाने वाला एक अनुमानित ऋण, जो किसी कार्य हेतु आवश्यक हो।

11. Boom: मूल्य वृद्धि

    किसी भी वस्तु या उत्पादन या शेयर बाजार में किसी के मूल्य या उत्पादन या भाव में आने वाली आकस्मिक मूल्य वृद्धि को Boom कहा जाता है। यह अचानक तेजी से बढ़ती है एवं अप्रत्याशित लाभ देती है।

नोट

12. Cash Credit: नकदी उधार या नकदी ऋण

किसी भी व्यक्ति या संस्था को बैंकों द्वारा दिया जाने वाला नकद रूप से उधार या ऋण नकदी उधार या नकदी ऋण कहलाता है।

13. Constitution: संविधान या विधान या बनावट

किसी भी संस्था को सही ढंग से संचालित करने के लिए कुछ नियम-कानून व्यवस्थित किए जाते हैं, जिसके अनुसार संस्था से जुड़े सभी व्यक्ति अपनी भूमिका निष्पादित करते हैं ताकि संस्था के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। इन्हीं नियमों-कानूनों की बनावट या संरचना को संविधान कहा जाता है।

14. Counter Foil: प्रति पन्ना

किसी भी प्रकार का दस्तावेज या नकदी जमा करने पर कार्यालय या बैंक संबंधित पक्ष को प्रति पन्ना या प्रति पर्णक देता है जिससे यह गारंटी होती है कि उक्त पक्ष ने संबंधित दस्तावेज या नकदी जमा किए हैं।

15. Envelope: लिफाफा या थैला

किसी दस्तावेज या किसी भी प्रकार की चीज़ को सुरक्षित रूप से रखने के लिए लिफाफे का प्रयोग किया जाता है।

16. Eraser: खुरचनी या रबर

कार्यालयों या बैंकों में किसी कागज पर गलती से कुछ लिख देने पर उसे हटाने या मिटाने की आवश्यकता होती है। इस कार्य हेतु प्रयोग की जाने वाली वस्तु को रबर या खुरचनी कहते हैं।

17. Ex-gratia: अनुग्रहपूर्वक

किसी कार्यालय या बैंक द्वारा किसी व्यक्ति या संस्था को उदारतावश दी जाने वाली राशि या सुविधा को व्यक्त या स्पष्ट करने के लिए Ex-gratia शब्द का प्रयोग किया जाता है।

18. Growth rate: विकास दर या वृद्धि दर या संवृद्धि दर

किसी भी संस्था या संगठन के द्वारा वर्ष भर किए जाने वाले कार्यों को जाँचने या मूल्यांकन करने के बाद यदि वह धनात्मक दिशा में अग्रसर प्रतीत होता है तो कहा जा सकता है कि उसकी विकास दर अच्छी है। वास्तव में, यह शब्द किसी संस्था या संगठन या राज्य या राष्ट्र के विकास की गति को दर्शाता है।

19. Ledger: खाता-बही या लेखा बही

किसी भी कार्य से संबंधित दस्तावेज को खाता-बही या लेखा बही के माध्यम से व्यवस्थित रखा जाता है। किसी भी धारक या उपभोक्ता से संबंधित सभी प्रकार के लेन-देन या गतिविधियों को इसमें सुरक्षित रूप से संभाल कर रखा जाता है।

20. Modus Operandi: कार्य-प्रणाली

कोई भी कार्यालय या संस्था या संगठन अपने कार्यों का संपादन करने के लिए एक सुनिश्चित विधि-विधान या नियम-कानूनों का पालन करते हैं, जो उसकी कार्य-प्रणाली कहलाती है।

21. Promotion: पदवृद्धि या पदोन्नति या प्रोत्साहन

किसी कार्यकर्त्ता या व्यक्ति के द्वारा सम्पादित किए जाने वाले अच्छे कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु उसकी पदोन्नति या पदवृद्धि की जाती है।

22. Stamp Seal: सील टिकट

सरकारी या गैर-सरकारी कार्यालयों एवं बैंकों द्वारा किसी भी प्रकार के लेन-देन या दस्तावेजों की प्रामाणिकता को सिद्ध करने के लिए संस्था द्वारा सील टिकट का प्रयोग किया जाता है, जिससे यह स्पष्ट रहता है कि उक्त संस्था संबंधित दस्तावेज पर अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करती है।

23. Status Quo: यथास्थिति

इससे तात्पर्य किसी भी प्रकार के क्रिया-कलापों या गतिविधियों का उसी स्थिति में बने रहने से है, जिस स्थिति में वह पूर्व में थी।

24. Tentative: प्रयोगात्मक

किसी भी प्रकार का अंतिम निर्णय लेने से पूर्व कोई व्यक्ति या संस्था उससे संबंधित पक्ष को अवसर देने के अंतर्गत कोई प्रयोगात्मक निर्णय लेता है ताकि वह व्यक्ति या संस्था अपने मूल उद्देश्य से भटके नहीं। इसका अर्थ यह भी है कि प्रयोग के रूप में लिया जाने वाला निर्णय या किया जाने वाला कार्य।

25. Top Priority: सर्वोच्च प्राथमिकता

जब किसी कार्य, उद्देश्य, लक्ष्य या समूह को दिए जाने वाले लाभ को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है और शेष सभी कार्य या उद्देश्य पीछे हो जाते हैं तो उसे सर्वोच्च प्राथमिकता कहते हैं।

(घ) पदनाम सम्बंधी शब्द

1. Accountant: लेखापाल या लेखाकार

जिस व्यक्ति के पास लेखा संबंधी हिसाब रखने वाला गणक हो और व्यक्ति लेखा-जोखा को भली-भाँति समझ सकता है वही लेखापाल या लेखाकार बन सकता है। पहले इसी कार्य को करने वाले व्यक्ति को मुनीम कहा जाता था।

2. Adviser: परामर्शदाता या सलाहकार

किसी भी प्रकार के कार्य को करने के संदर्भ में सलाह देने वाला विशेषज्ञ सलाहकार या परामर्शदाता कहलाता है।

3. Advocate: अधिवक्ता या पक्षकार या रक्षक

किसी भी प्रकार संबंधित पक्ष की पैरवी करने वाला या उसके निमित्त बोलने वाला या उसके हितों की रक्षा करने वाला पक्षकार वकील या अधिवक्ता कहलाता है। न्यायालय के संदर्भ में इसका बहुतायत से प्रयोग किया जाता है।

4. Cashier: खजांची

कोष या खजाने को संचालित करने वाला, कोष के सदुपयोग या दुरुपयोग दोनों के लिए जिम्मेदार या उत्तरदायी व्यक्ति खजांची कहलाता है। कोष या खजाने का सही ढंग से क्रियान्वयन हो, यह खजांची की ज़िम्मेदारी होती है।

5. Custodian: अभिरक्षक या संरक्षक

किसी भी व्यक्ति, वस्तु या कीमती चीज़ की रक्षा करने के लिए नियुक्त व्यक्ति, संरक्षक या अभिरक्षक कहलाता है। यह उसका स्वामी या मालिक नहीं होता बल्कि वह केवल उसकी रखवाली करता है।

नोट

6. Councillor: सभासद या पार्षद

किसी भी परिषद् या सभा का सदस्य सभासद या पार्षद कहलाता है।

7. Director: निदेशक या निर्देशक

किसी भी कार्य को करने के लिए निर्देश देने की भूमिका निभाने वाले व्यक्ति को निर्देशक कहते हैं। यह अत्यधिक उच्च पद होता है, जिसके द्वारा वह संस्था या संगठन की दिशा निर्धारित करता है एवं उसकी गतिविधियों को नियंत्रित करता है। इसकी भूमिका सभी संबंधित व्यक्तियों या पक्षों को निर्देश देने की होती है।

8. Executive Engineer: कार्यपालक अभियन्ता

ऐसा अभियन्ता या इंजीनियर जो किसी क्षेत्र-विशेष में कार्यकारी दृष्टि से उत्तरदायी हो अर्थात् किसी क्षेत्र या स्थान विशेष में संचालित होने वाले निर्माण संबंधी सभी कार्यों के संबंध में उसे नियंत्रण रखना होता है।

9. Foreign Secretary: विदेश सचिव

ऐसा व्यक्ति जो विदेश संबंधी मामलों में अधिकारियों का प्रमुख होता है। किसी भी देश या राज्य के विदेश या अन्य देशों के साथ किस प्रकार के संबंध निर्मित करने हैं और कब संबंधों को नियंत्रित किया जाना है और कब उसमें छूट दी जानी है, इन सब मामलों में ज़िम्मेदारीपूर्ण भूमिका निभाता है। आधिकारिक रूप से यह विदेश विभाग का प्रमुख होता है।

10. Governer: राज्यपाल

केन्द्र में जिस प्रकार राष्ट्रपति कार्यपालिका का अध्यक्ष होता है, वैसे ही राज्यों में राज्यपाल कार्यपालिका का अध्यक्ष होता है। राज्यपाल अपनी शक्तियों का उपयोग मुख्यमंत्री एवं मंत्रिमंडल की सलाह से करता है। परन्तु संविधान राज्यपाल को कुछ विशेषाधिकार भी प्रदान करता है। इन अधिकारों का उपयोग करते समय वह राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी होता है।

11. His Majesty: महामहिम या उच्चाधिकारी

यह शब्द किसी भी संवैधानिक प्रमुख के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जैसे–राष्ट्रपति, राज्यपाल आदि। सामान्यतया यह शब्द राष्ट्रपति के लिए प्रयुक्त किया जाता है। राष्ट्रपति पूरे राष्ट्र का प्रथम व्यक्ति होता है एवं वह कार्यपालिका का प्रमुख भी है, जो प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद् की सलाह के अनुसार कार्य करता है। राष्ट्रपति तीनों सेनाओं का सर्वोच्च कमांडर होता है। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बिना कोई भी अधिनियम कानून नहीं बन सकता।

12. Investigator: अन्वेषक या जाँचकर्त्ता

एक ऐसा व्यक्ति जो किसी भी क्षेत्र में किसी भी प्रकार की गतिविधियों की जाँच करता है। यह बिल्कुल अनछुए क्षेत्र में भी अपनी तहकीकात कर सकता है, जिसका परिणाम कभी-कभी किसी खोज या आविष्कार के रूप में भी सामने आता है।

13. Manager: प्रबंधक

किसी भी संस्था या संगठन के प्रबंधन को नियंत्रित करने वाला व्यक्ति प्रबंधक कहलाता है। यह संबंधित संस्था या संगठन के सभी कार्यों को दिशा-निर्देश देता है तथा उसका निरीक्षण करता है।

नोट

14. Member of Legislative Assembly: विधान सभा के सदस्य

संविधान द्वारा भारत के प्रत्येक राज्य में एक विधानमंडल की व्यवस्था की गई है। विधानमंडल के अंतर्गत अधिकतर राज्यों में विधानसभा है जबकि कुछ राज्यों में विधानसभा एवं विधान परिषद् दोनों हैं। विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है, जो राज्य के नागरिकों के हितों की रक्षा एवं पूर्ति करने वाले कानूनों का निर्माण करते हैं जिससे राज्य की शासन प्रणाली चलती है।

15. Member of Parliament: संसद सदस्य या सांसद

संघीय व्यवस्था में निम्न सदन को लोकसभा एवं उच्च सदन को राज्यसभा कहा जाता है। संसद के सदस्य सांसद कहलाते हैं, जिनका निर्वाचन प्रत्यक्ष रूप से मतदाताओं द्वारा किया जाता है, जो संसद के अन्दर देश की शासन-प्रणाली को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए विविध कानूनों का निर्माण करते हैं एवं देश के नागरिकों के हितों की रक्षा एवं संवर्धन करते हैं।

16. President: राष्ट्रपति

भारत की शासन व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रपति कार्यपालिका का औपचारिक रूप से प्रधान होता है। यह तीनों सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति एवं देश का प्रथम व्यक्ति होता है। इसके हस्ताक्षर के बिना कोई भी अधिनियम कानून का स्वरूप नहीं ले सकता।

17. Prime Minister : प्रधानमंत्री

संविधान के अनुच्छेद 74 (1) में कहा गया है कि "राष्ट्रपति को उसके काम में सहायता एवं सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद् होगी, जिसका अध्यक्ष प्रधानमंत्री होगा।"

संसदीय शासन प्रणाली में कार्यपालिका का वास्तविक अध्यक्ष या प्रमुख प्रधानमंत्री होता है जिसकी सलाह के बिना राष्ट्रपति सामान्यतया कोई भी निर्णय नहीं ले सकते। प्रधानमंत्री के त्यागपत्र का अर्थ है पूरे मंत्रिमंडल का पतन।

18. Registrar: रजिस्ट्रार

किसी भी कार्यालय या संस्थान के दस्तावेजों या रिकार्डों को रखने वाला रजिस्ट्रार कहलाता है। यह विभिन्न प्रकार के अभिलेखों को संरक्षित रखता है तथा पंजीयन संबंधी दायित्वों का भी निर्वाह करता है।

19. Speaker: अध्यक्ष या सभापति

किसी भी सदन के अध्यक्ष या सभापति को (Speaker) कहा जाता है लेकिन भारतीय शासन-प्रणाली में यह शब्द लोकसभा के अध्यक्ष के लिए रूढ़ हो गया है। लोक सभाध्यक्ष के पास धन विधेयक से संबंधित विशेष अधिकार होते हैं जो किसी अन्य सदन के अध्यक्ष के पास नहीं होते। लोक सभाध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों द्वारा ही किया जाता है।

20. Stenographer: स्टेनोग्राफर या आशुलिपिक

किसी भाषण या गतिविधियों या कार्यवाहियों का संक्षेप में पूरा विवरण लिखे जाने वाले व्यक्ति को आशुलिपिक या स्टेनोग्राफर कहते हैं। इसकी लिपि आशुलिपि होती है जो एक प्रकार की संक्षिप्त सांकेतिक भाषा होती है जिससे वह किसी कार्यवाही को शीघ्रता से वर्णित करता है।

21. Superintendent: अधीक्षक

इसका प्रयोग सामान्यतया पुलिस अधीक्षक के संदर्भ में किया जाता है। जिला स्तर पर पदस्थापित होने वाले ये अधिकारी भारतीय पुलिस सेवा के माध्यम से पुलिस विभाग के उच्चाधिकारी होते हैं। प्रत्येक पुलिस

नोट

अधीक्षक के उपर एक जिले के पुलिस प्रशासन का सम्पूर्ण भार होता है एवं जिले के अन्य पुलिस अधिकारी उसके संरक्षण में कार्य करते हैं।

22. Treasurer: कोषपाल या कोषाध्यक्ष

किसी भी कोष या खजाने का स्वामी या मालिक कोषाध्यक्ष या कोषपाल कहलाता है। कोष में जमा की जाने वाली राशि एवं निकाली जाने वाली राशि दोनों पर इसका नियंत्रण होता है।

23. Under Secretary: उपसचिव

यह सरकारी विभागों में सचिव के अन्तर्गत या मातहत कार्य करता है। सचिव द्वारा आवंटित कार्यों को सम्पन्न करने की जिम्मेदारी इसी की होती है। यह उच्च अधिकारियों के श्रेणी-क्रम में निम्न स्थान ही रखता है।

24. Vice-Chancellor: उप-कुलपति

यह किसी भी विश्वविद्यालय का सर्वोच्च अधिकारी होता है जिसके नियंत्रण में विश्वविद्यालय की सारी गतिविधियाँ संचालित होती हैं। विश्वविद्यालय स्वायत्त संस्था होने के कारण उप-कुलपति को अपने विश्वविद्यालय से संबंधित क्रियाकलापों के लिए अत्यधिक स्वतंत्रता प्राप्त रहती है।

25. Warden: संरक्षक या निगहबान

किसी भी हॉस्टल यानि छात्रावास या किसी जेल के अधीक्षक को वार्डेन कहा जाता है। यह संबंधित छात्रावास या जेल परिसर का प्रमुख होता है जिसकी निगरानी में सभी गतिविधियाँ सम्पन्न होती हैं।

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY
Jalandhar-Delhi G.T. Road (NH-1)
Phagwara, Punjab (India)-144411
For Enquiry: +91-1824-300360
Fax.: +91-1824-506111
Email: odl@lpu.co.in